# संयुत्त-निकाय

## पहला भाग

[ संगाधा वर्गे, निहान वर्गे, सम्ध वर्गे ]

अनुवादफ

भिक्ष जगदीश काश्यप एम ए. त्रिपिटकाचार्य भिक्ष धर्मरक्षित

धकाशक

महावोधि सभा सारनाथ, वनारस

प्रथम संस्करण ) ११००

बु० सं० २४२८ ई० सं० १९५४

## प्रकाशकीय निवेदन

आज हमें हिन्दी पाटकों के सम्मुख संयुत्त-निकाय के हिन्दी अनुवाद को टेकर उपस्थित होने में यदी प्रसन्तत हो रही है। अगले पर्य के लिए 'विश्वद्विममा' का अनुवाद तैयार है। उसके पदचात, 'अंतुत्तर निकाय' में हाथ कमाया वायेगा। इसके अग्रितिक हम और भी क्तिने ही प्रसिद्ध जीव-अन्मों के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करवा चाहते हैं। हमारे काम में जिस प्रकार से कितने ही सरवानों ने आर्थिक सहायता और कसाह प्रदान किया है, उससे हम बहुत उत्साहित हुए हैं।

आर्थिक किताइयाँ एवं शनेक अन्य अन्यां के कारण इस प्रन्य के प्रकाशित होने में जो अनपेक्षित विलम्य हुआ है, उसके लिए हमें स्वयं दु.ख है। भविष्य में इतना विलम्य न होना—ऐसा प्रयस्न किया जायेगा। इस अपने सभी झानाओं एवं सहायकों के क्वतज्ञ है, जिन्होंने कि सहायता देकर हमें इस महस्वपूर्ण कार्य को सम्यादित करने में सफल यनाया है।

विनन्न

सिक्षु एम० संघरत्न मन्त्री, महाबोधि-समा सारवाथ, बनारस

5 g-8-48

#### प्राक्कथन

संयुत्त निकाय सुत्त-पिटक का तृतीय प्रत्य है। यह आकार में दीव निकाय और मिछस निकाय से यहा है। इतमें पाँच वह-बड़े वर्ग हैं—सगाया वर्ग, निज्ञान वर्ग, खन्य वर्ग, सज्ज्ञयतन वर्ग और महायां। इन वर्गों का विभाजन नियमानुस्तार हुआ है। संयुत्त निकाय में ५४ संयुत्त हैं, जिनमें देवता, देवपुत्र, कोरसल, बार, ज्ञास, प्राह्मण, सक्क, अभिसमय, पात्त, अवस्त्रस्ता, कामसक्कार, राहुळ, जनखण, काम्य, राण, दिहि, सज्ज्ञयतन, वेदना, माहासाम, असंख्यत, मगा, वोक्सक, स्तियहान, हन्द्रिय, सम्बच्धान, बल, इद्धिपाद, अधुक्क, ह्यान, आनायान, सोतायिक और सक्क---वह २२ सयुत्त वर्गों में विभक्त है, किनकी छुक सक्या २७२६ है। दोय सयुत्त वर्गों में विभक्त नहीं हैं। सयुत्त निकाय में सी आणवार और ७७१३ सुत्त हैं।

सबुत्त निकाल का हिन्दी अनुवाद प्रत्य भदन्त अगदीश काश्यप जी में आज से उन्हींस वर्ष पूर्व किया था, किन्तु अनेक वाशाओं के कारण यह अभीतक प्रकाशित न हो सका था। इस दीर्घकाल के भीच अनुवाद की पाण्डुलिपि के बहुत से पन्ने—कुछ पूरे संयुत्त तक खो गये थे। इसकी पाण्डुकिपि धनेक प्रेसों को दी गई और नायस ली गई थी।

गत वर्ष पूज्य काश्यप जी ने संयुत्त विकाय का भार युक्ते सौंप दिया। मैं प्रारम्भ से अन्त तक इसकी पाण्डकिपि को हुदरा गया और अपेक्षित सुधार कर डाका। सुसे ध्यान सपुज, अनुसद्ध संयुत्त शादि कई सुद्धतों का स्वतन्त्र अनुबाद करना पदा, क्योंकि अनुवाद के वे भाग पाण्डकिपि में न थे।

मैंने देखा कि पूज्य कादयद शी ने न तो सुत्तों की संक्षा दी थी और न सुत्तों का नास ही लिखा या। मैंने इन दोमों बातों को आवश्यक समझा और प्रारम्भ से अन्त तक सुत्तों का नाम तथा सुत्त-संस्था को लिख दिया। मैंने प्रारवेक सुत्त के प्रारम्भ में अपनी और से विषयानुस्तर वीर्षक लिख दिये हैं, जिनसे पाठक को इस प्रम्य को पढ़ने में किंग्रेस अविस्तित होती।

मन्य में आये हुए स्थानों, तदियों, विद्वारों आदि का विदेश्य पादित्यिकीयों में यथासम्भव का दिया नया है, इसके छिए कछन से "बुद्धाकोंन मारत का भौगोतिक वरित्या (लिस दिया गया है। इसके साथ ही एक कदम में दे दिया गया है। आशा है, इनसे पाठनों की विदोध छान्न होता।

पूरं प्रम्य के छय काने के प्रधात इसके दीर्धकाय को देखकर विचार किया गया कि इसकी विरवस्त्री दो भागों में ज्याई बाय । अब पहले भाग में सगाधा वर्ग, निवास वर्ग और स्क्रम्य धर्म तथा दूसरे भागों में सक्ष्यपन वर्ग और महावर्ग विभक्त करके जिक्द्यबन्दी करा दी बाई है। प्रत्येक भाग के साथ विषय-चुनी, वस्मा-चुकी, वाम-जुक्रमणी और शब्द-अनुक्रमणी दे दी गई है।

सुच-पिटक के पाँचों निकारों में से दीन, सिड्सम और संशुच के प्रकाशित हो जाने के पक्षाय, अंगुचर निकार समा सुरक्त निकाय अवसीय रहते हैं। सुरक्त निकाय के भी सुरक पाट, यस्मयर, उदान, सुच निपात, येरी भाषा और जातक के हिन्दी असुवाद प्रकाशित हो सुके हैं। इतितृत्वक, सुन्दरंस और चरियापिटक के भी अनुवाद मैंने कर दिये हैं और ये प्रस्थ प्रेस में हैं। अंगुत्तर निकाय का मेरा दिन्दी अनुवाद भी प्राप्त समानन्त्रा ही है। संयुक्त निकाय के पक्षाण करावाः निमुद्धिसमा और अंगुत्तर निकाय को प्रकाशित करने का कार्यक्रम बचाया पाया है। आजा है कुछ वर्षों के सीतर पूरा सुक-पिटक और अभियास-विटक के कुछ प्रेथ हिन्दी में अनुवित होकर प्रकाशित हो वार्षों।

सारतीय सहाबोधि समा वे इस प्रत्य को मकावित काके तुब-शासन पूर्व हिन्दी-जगन् का बहुत बहा उपकार किया है। इस सहावपूर्व कार्य के किए समा के मधान मन्त्री भी देवितय विक्रितिह तथा महत्व संस्रातकों का प्रयास स्तुत्य है। ग्रावमण्डक यन्त्रास्य स्त्राती के स्पवस्थापक भी कोसदन्तर कपूर की तत्यरता से ही यह प्रत्य पूर्णक्य से सुद्ध और सीम सुनित हो सका है।

महाबोधि समा सारवाय वदारस १३-ए-५१

मिसु धर्मरहित

#### आमुख

संयुत्त विकाय युत्त-विद्यक का सीसरा प्रन्य है। दीव निकाय में वन सूत्रों का संप्रद्र में भी भाकार में वर्ग हैं। उसी सरह, प्राय- महोशे आकार के सूत्रों का सम्रह मिख्यम निकाय में है। संयुत्त निकाय में ही। स्वाद मिया प्रत्य के स्वाद के स्वाद के स्वाद के स्वाद के ही। विद्या के स्वाद के ही। विद्या के स्वाद की हो। स्वाद में स्वाद के स्वाद

सञ्चल निकाय के पहले धर्मे—समाधा वर्ग को पड़कर ब्रह्मभारत में स्थान-स्थान पर आये प्रश्नोत्तर की दीली से सुन्यर गायाओं में गम्भीर से गम्भीर विषयों के विवेचन को ट्रेफकर इस निकाय के दार्ह्मनिक तथा साहित्यिक दोनों पहलुकों का आमास मिलता है। साथ-साथ तकालीन राजनीति और समाज के मी स्पष्ट चित्र उपस्थित होते हैं।

दूसरा वरौ—निदान वर्ग बोद्ध सिदान्स 'प्रतीरय समुख्याद' पर भगवान् बुद्ध के अस्यन्त महस्त्र-

पूर्ण सूत्रों का सबह है।

तीसरा और चौथा वर्ग स्कन्धवाद और भायतनवाद का विवेचन कर अगवान बुद्ध के अनारम सिद्धान्त्र की स्थापना करते हैं। पाँचवाँ—महावर्ग 'मार्ग', 'बोध्वंग', 'स्मृति-प्रस्वान', 'हन्द्रिय' आदि महत्वपूर्ण विषयों पर मुकाश क्षात्रता है।

सन् १९६५ में पेनाग (महावा) के विक्यात जीती महाविद्यार 'जांग हा तास्त्र' में रह मैंने,
'निक्तित्र महत' के अतुवाद करने के बाद ही सदुत्त निकार का अदुवाद मारम्म किया था। दूवरे वर्ष
कंता का वरनाव करणत में विदास में हुद मम्प्र का अदुवाद पूर्ण किया। तब से ग कालो तिवतनी बाद
कंता का वरनाव करणत में हुई, वाण्डुलिए हेस में भी दे दी गई और किर वापस चढ़ी झाई। मैंने तो
ऐसा समझ हिला या कि कदाचित्र देत मम्प्र के भाग्य में प्रकाशन दिल्ला ही नहीं है, और हस और से
उदासीन-दा हो गया था। अब पूरे उजीस वर्षों के बाद यह मम्प्र मकाशित हो सका है। भाई
विपिठकावार्ष मिश्च प्रमाशित वी ने सार्थ पाण्डुलिए को हुहरा नर छुद्ध कर दिया है। संतुत्त विकाय
आब हतना अच्छा प्रकाशित न हो सकता, यदि मिश्च अमेरिशत वी हतनी उत्परता से हसके पूम देखने
और हतना अच्छा प्रकाशित करने की हगा म करते।

में महावोधि समा सारताय सवा उसके मन्त्री थी मिश्च संवरत जी को भी अनेक धन्यवाद हेता हूँ जिन्होंने पुस्तक के प्रकाशन में इतना उत्साह दिखाया।

नव नाकन्दा महानिद्वार नाकन्दा ३. ∫ २४९० छु० छ०

शिक्ष जगदीश काइयप



## भूमिका

### बुढ़कालीन भारत का भौगोलिक परिचय

बुद्धकाल से भारतवर्ष तीन मण्डलां, पाँच प्रदेशों और खोलह सहाजनपदी में विभक्त था। महामण्डल, मध्यमण्डल, जीर अन्तर्मण्डल—ये तीन मण्डल थे। जो कमदाः ६००, ६००, ६०० योजन विस्तृत थे। सम्पूर्ण भारतवर्ष (= कम्बृद्धीप ) का देखलक १०,००० योजन था। मण्यम देश, उत्तरापथ, अपरान्तक, दक्षिणापथ और प्राच्य—ये पाँच प्रदेश थे। हम यहाँ इनका संक्षेप में वर्णन करेंगे, जिससे बुद्धकालीन भारत का मीगोलिक परिचय प्राप्त हो खें।

#### § १ मध्यम देश

भागवाल बुज, ने मध्यम देश में ही विचरण करके बुज्यभ्ये का उपदेश किया था। तथागत पद् चारिका करते हुए परिश्वम में मादुर्ग और कुर के बुल्डकोद्विन नगर से आमे नहीं पढ़े थे। प्रत्य में कजगळा निगम के मुखेल वर्ग और पूर्व-दक्षिण को सळळवती नहीं के तरि को नहीं पार किय या। दक्षिण में सुद्धागरिगिरिं आदि विष्यायाक के आसपास बाले निगमों सक ही गरे थे। उत्तर में दिमालय की तळहरीं के सापुर्ग निगम और उस्तिरध्वन पूर्वत से क्यर बाते हुए नहीं दिखाई दिये ये। विनय पिटन में मध्यम देश की सीमा हुत मकार वसकाई गई है—'पूर्व दिसा में कजगळा निगम )। पूर्व दक्षिण दिशा में सल्कवती नदी।। दक्षिण किया में सेतकणियक (निगम ।। पदिचम दिशा में पूर्वा नामक माद्याणों का प्रामः'। उत्तर दिशा में उसीरध्वन पर्वतः। (\*\*\*)

सत्यम देश ६०० योजन कन्ना और २५० योजन खोड़ा था। इसका परिसण्यक ६०० योजन था। यह जन्युरीय (= भारतवर्ष) का एक सुरह् भागा था। तत्काळीत सीक्षड जनवर्षी में से ये १४ जनपद हमों में थे—काशी, कीशक, अग, मगघ, वजी, सक्क, चेदि, नत्व, कुद, पद्माक, मस्त्य, घूरसेन, अहबक और अवन्ति । सोप दो जनपद गन्धार और काशोक उत्तराप्य में पदसे थे।

#### § काशी

काशी जनपद की राजधानी वाराणसी (वनारस ) थी। बुन्काल से पूर्व समय-समय पर

- र जागुत्तर निकाय ५ २. १०। इस सूत्र मे मधुरा नगर के पाँच दोप दिखाये गये हैं।
- २ मिल्सम निकाय २ ३ १२ । दिल्ली के आसपास सोई तत्कालीन प्रसिद्ध नगर ।
- ३ मिल्हाम निकाय ३ ५ १७। कक्खील, संथाल परगना, विहार।
- र बाज्यान विकास र ( रजा क्रमानाक, समान बर्गाना, व्यक्तर
- ४. वर्तमान सिल्हं नदी, हजारी बाग और बीरभूमि ।
- ५ चुनार, जिला मिर्जापुर ।
- ६ अगुत्तर निकाय ४ ४ ५ ४।
- ७. इरिद्वार के पास कोई पर्वत ।
- ८ हजारीवारा जिले में कोई स्थान ।
- ९ आधुनिक यानेश्यर।
- १०, विनय पिटक ५, ३ २।

वारावासी के पास माविपतन सुगदाव (सारावाय ) में आपवाय हुद्ध ने अर्मवक प्रवर्तत करके इसके आरच का वहा दिया। ऋषिपतन सुगदाय बीज धर्म का एक अक्षातीर्थ है ।

सारागांनी रिक्ट न्यसाय निधा आदि का पहुत वदा केन्द्र था। इसका न्यासायिक सन्वन्य आदस्ति उत्तरीका राजपुत भावि नगरों स था। काशी का चन्त्र जीर काशी के रीमियरी वस्त्र बहुत प्रसिद्ध थे।

#### § फोबास

कासस की राजकानियों धावस्ती और साकेत कार थे। सबोच्या सरपू नहीं के कियार स्थित १६ कन्या था किन्दु सुकास में इसकी मीडिक य थी कहा वाता है कि आवस्ती नामक क्रीये कें नाम पर ही आवस्ती नगर का नाम पड़ा वा किन्दु पर्यक्रस्त्रण के अनुसार 'सब कुछ होन के कारण (अ सब+नारित) इसका नाम आवस्ती पढ़ा था।

सावस्ती नगर वहा समुद्धिसासी एवं सुन्दर था। इस बगर को बावादी साठ करोड़ थी। समनात पुत्र मे पहाँ २५ वर्षात्रस दिया या और निविकांत वर्षोस वहीं पर किया था। कमामितिक वहाँ का बहुत बढ़ा सढ़ या और स्थारमाठा विद्याब्य वहीं सन्दावान् वर्षात्रिका थी। पदाचारा कसा रीठारी नगर, कंटा रेवड और कोसक नरेश की वहिन सुमना हंसी बगर के मनवित स्पन्ति के।

प्राचीन कोशक राज्य दी मार्गों में विमन्त था। सरमू नदी दीकों भागों के मध्य स्थित थी।

उत्तरी माग को उत्तर-क्रीशक और वृक्षिणी माग को वृक्षिण क्रीशब बहा बाहा वा !

कोशंक जनपर में ननक प्रसिद्ध निगम और माम थे। कोशंक का प्रसिद्ध आवार्ष पोरकसारि कहा नगर में रहना था जिस प्रसेननिग ने बसे प्रशान किया था। कोशंक जनपर के शासः नगरिनेन्द्र और बेनागद्र प्रामी में जाकर धंगाना दुव्द ने बहुत में कार्गों को दीखित किया था। बादरी के स्मक का प्रसिद्ध अप्यापक था को दीकशायन में जाकर गोहाबरी नदी के कियारे स्थान स्थास जनावा था है

हम करर कर लावे हैं कि काशक और मगय में बारावामी के किए प्रायः शुक्र दुवा करता वा किन्तु बाद में दानों में सन्धि हो गाँद थी। मन्ति के वधान् काशक करेश सर्वेक्षक्रित के काशवी श्री वितार वा विवाह मगय नश्य वजावन्तात्र से कर दिवा वा। कोशक को कर्या श्रीमा वर स्थित वितर्भे वानु के गावत प्रमेतिन्द के वयीन ये कार वे कोशक मोश्रा मसेवनिन्द से वर्ष ईस्त्रों रक्के थे।

हरहहरू मनहात शास्त्रकार्य और बहासवन-में कोशान जनवर के प्रसिद्ध प्राप्त से अहाँ वर आपवान समय-समय पर समें भीर जयदश हिंदे हैं।

#### म्

अप्र वयदर की राजवानी काण नगरी थी को काण और गंगा के संगम पर बसी थी। काण जिलिया में ६ वीजन दूर बी। और वयदद वर्गमान आगमपुर आद वैदेश विजी के साथ उपर में कामी बर्गा नक केण पुत्रा था। कभी वह माग्य वयद के अमार्गत था और राज्यता समुद्र के दिनाने नक रिम्पृन था। कम की अर्थाय राज्यामी के मैंददद सम्माति आगमपुरके विकट काण नगर और चम्पापुर--- हन यो गाँवा में विकासान है। महापरिनिर्वाण सुन्त के अनुसार चम्पा युद्ध काल में भारत के छः वहें नगरों में से थी। चम्पा से सुवर्ण-सूमि ( लोकर बर्मा) के लिये च्यापारी नहीं और समुद्र-मार्ग से बाते में। अंग जनवर में ८०,००० गाँव में। जाएण आंग का एक असिन्त व्यापारिक नगर था। महागीविन्द सुन्त से प्रायट हैं कि आंग भारत के सात वहें राजगीतिक भागों में से एक गा भागवान युद्ध से पूर्व अंग एक अधिकाली राज्य था। जातक से हात होता है कि किसी समय मगथ भी आंग करेंस के अर्थान था। खुद्ध के पक्षा मार्ग नरेंस से विव कीर एक सुद्ध के पक्षा होगा प्राया नरेंस से निव विविद्धार के अपीन हो गया। चन्या भी राजी गम्पर द्वारा माराय-पुन्ति लीवाय है गई थी। भगवान खुद्ध भिक्षसंघ के साथ वहाँ गर्व थे और उसके किनार सास किया था। भंग जनवर क एक हुसरा नगर अस्वपुर था, जहाँ के बहुत से हुलपुत्र भगवान है पास जानक सिक्ष हो गये थे।

#### § मगध

सत्तप जनपद वर्तसान गया और पटना निर्का के अन्तर्गत फैला हुआ था। इसकी राजधानी तिरिट्यं अथवा राजगृह भी, जो पहाजियों से विभी हुई थी। इन पहाजियों के नाम थे—करिपीनिंक, वेयुक्क, वेभार, पाण्डव और गुंजक्ट। इस नगर से होकर तथीदा नदी वहती थी। सेनानी निगास भी सप्तप का ही एक रस्तियं वन-प्रदेश था। एक-तर्का गालकप्रास, जालुसन, और अन्य-पिवन्द इस सम्पद के पित्त साम थे। विज्ञ और सम्य जनपदों के बीच गागा नदी सीमा थी। उस पर दोनों राज्यों का समान अविकार था। अग और साम में समय-समय पर खुद हुआ करसा था। एक बार वाराणती के राजा में माम और भी प्रांत दुन इस इस प्रांत था। अञ्चलक्त से अंग साम के अचीन था। साम और कोण के मी प्रांत दुन इस इस कर था। पीछे अज्ञतकाल से अंग साम के अचीन था। साम और कोण के मी प्रांत दुन इस इस कर था। पीछे अज्ञतकाल से विच्याचियों के अद्यान को कोलक पर विज्ञ पाई थी। साम के जा जीवक कोमारक्ष्य भारत-प्रतिद्ध वैच था। उसकी विकास को सिक्षा वक्षिक्त के इहे थी। राजगृह में बेलुमन कलन्दक निवाद प्रविद्ध हुद्ध विद्यार था। राजगृह में से प्रथम समित हुई थी। राजगृह में विक्रमन कलन्दक निवाद प्रविद्ध हुद्ध विद्यार था। राजगृह में विक्रम कलन्दक निवाद प्रविद्ध हुद्ध विद्यार था। राजगृह में विक्रम कलन्दक निवाद प्रविद्ध हुद्ध विद्यार था। राजगृह में विक्रम कलन्दक निवाद प्रविद्ध हुद्ध विद्यार था। राजगृह के पास ही नाकन्दा एक छोटा प्राप्त था। साम का एक सुप्तिव्ह किटा था, जितनी स्वासक की राजधानी पाटकिन्द्र जारार हुआ था। अपके को क्षा करके वैदिक आप ४००,००० कारायेण थी।

#### § वज्जी

पञ्जी जनपद की राजधानी वैद्याकी थी, जो इस समय विद्यार प्राप्त के मुजफ्करपुर क्रिक्ठे के बसार गाँच में नाजी बाती है। बज्जी जनपद में ठिज्जिबियों का सफतक्य सासक था। वहाँ से खोदाई में प्राप्त केंकों से वैद्याकी नगर प्रमाणित हो चुका है। इस नगर की कसर्राव्या की बृद्धि से मगरमाजर को तीत बार विश्वाक करने के ही कारण इसका वैद्याकी नाम पहा था। वैद्याकी समृद्धिवाकी नगरी थी। उसमें ठक्क प्राप्तार, ७००० प्रस्तार, ७००० प्रस्तार, ७००० प्रस्तार, ७००० प्रस्तार, ७००० प्रस्तार (कारण ) बीर ७००० प्रस्तार (कारण ) बीर ७००० प्रस्तार (कारण प्रस्तार (कारण प्रस्तार के विष्य में एक सरसागार (संस्य-सवन ) था। मगर में उदयन, गीतमक, ससानक, बहुद्यक, और कार्यद भी भागत सुद ने वैद्याकी के ठिज्जियों की उपमा सावित्र कोच के देवी से को थी। वेद्याकों की असिन्त पिका कम्मणाकी ने चुक के भोजन दान दिया था। विस्तक, सिंसर, वासिक्टी, अस्क-पाकों की प्रसिद्ध पिका क्षान के स्थान के स्थान प्रस्तार प्रसार के साथ अस्तार प्रसार प्

थी। वैसासी में ही बुस्ती संगीति हुई वी। वैसासी यनतप को सुद-परिनिर्योण के तीन वर्ष वाद ही, दूर बास्कर माम्य-नरेश कवातमञ्ज ने इत्य किया था।

#### § मस्ळ

#### 8 चेति

चेदि समाय पश्चमा के पास कुर समयह के विकर था। यह मर्गसाम सुम्युक्तकार को किये हुए दिल्लु या। इसकी राजयानी सोरियक्ती मगर था। इसके दूसने प्रशुख पगर सहसाति और जियुरी थे। वेदका सातक से प्राप्त कोता है कि कमसी और बीच के बीच बहुत सुदेरे रहते थे। जनुमर नगर से चेदि राष्ट्र वेशका बुर मा। सहसाति में प्रशासन्त के उपदेश दिल्ला या । यह मौजून्य कार्यक प्रक कहा केट्र मा। महुस्माय कुत्रक में चेदि राज के प्राचीनकंश सुगायन में रहते हुए क्ट्रैंब प्राप्त किया था। सहस्रविक भी केदि नगरद ना एक प्रसिद्ध प्राप्त वा सहां भाषान सुद्ध गुरे थे।

#### **६** धलन

बास बनपद मारत के सोखड वह जनपहीं में से एक या । इसकी राजवानी वासानी भी । इस समय कराके नामचेय इकाहावाद से १ मीक परिवम प्रमुगा वहीं के किमारे कोसम वासक माम में दिवाद हैं । सुरामारीक कार्य राज्य वास कवाद में ही पहता था। केसावती उद्यक्तकीय वहीं कार्य में। विधियों के नेता वावती के लीसावारी की बाजा की थी। कीमाव्यों में योपितारास उन्ह्यासम कीर पावादिकारास कीव मधिद्व विदार में जिल्हें क्रमारा वहाँ वे मधिद्य संद प्रदेशित उन्हर्ण कीर पावारिक वे बदवाये थे। मगावाद शहर में इब दिवारों में विवास किया कीर मिस्त संव को उपयोग दिवा या। पार्षी पर संव में क्ष्य की दंद हुई भी को पीछे सामस हो गई थी। शुदकाक में राज्य बदवान वहाँ राज्य करता था असकी मामन्दी स्वामावती और वासुन्वच्या सीव शनिवारों भी जिल्हों हिसामतारी

#### र्वे <del>प्र</del>च

प्राचीन साहित्य में दो इस अनवहीं का वर्धन मिकना है-ज्यार पुर और महिला पुर ।

मत्येषु में गणित कुर नम्भवत उत्तर कुर ही हैं। पाकि साहित्य में प्रणित हुर जनवर्ट ८००० योजन विस्तृत या। कुर अनपट के राजाओं को कौरत्य कहा जाता था। कम्मासब्मम् कुर जनपट का पूर प्रसिद्ध नगर था, जहाँ युक्त में महासतिपहान और महानिदान जीने महत्वपूर्ण एव गम्भीर सूत्रों का उपदेश किया था। इस जनपट का मृस्तर प्रमुग्य नगर शुरुकोहित था। राष्ट्रपाल स्थाविर हमी नगर से प्रयक्तित हुए प्रसिद्ध निश्च थे।

हुर सनपट के उत्तर मरस्वती तथा टक्षिण ट्ययती निवर्गे यहती थीं। यतमान सोवपत, क्षिमा, कर्नोल और पानंपत से किले कुछ अनपद में भी पन्ने हैं। महासुतसोम जातक के अनुसार कुछ जनपद ३०० पोजन विम्मृत था। इसकी राजधानी इन्द्रपहन (इन्द्रप्रस्थ) नगर था, जो सात पीक्षन में फैला नभा था।

#### ६ पञ्चाल

पद्धाल जनपर भागीरथी नहीं से दी भागों में विभक्त था—उत्तर पञ्चाल और दक्षिण पञ्चाल । उत्तर पञ्चाल की राजधानी अहिस्टम नगर था, जहाँ पूर्व जा मामक राजा स्तर्म कर ता पा। वर्तमान समय में परेली जिले का रामनगर ही अहिस्टम माना जाता है। वृक्षिण पञ्चाल की राजधानी कामियल नगर था, जो फर्एमावान जिले के एशिष्ट के स्थान पर दिन्स था। समय-समय पर राजाओं की हुन्डा के अञ्चलार वाधियल नगर में भी उत्तर पञ्चाल की राजधानी रहा करती थी। पञ्चाल-नरेश की भीगी का पुत्र विलाल प्रावन्ती जानर सगयान के पास विश्व हुआ और उ जार प्रविश्व की भीगी का पुत्र विलाल प्रावन्ती जानर सगयान के पास विश्व था। पञ्चाल जावद में प्रतिमान प्रवार्क, करण्यावाद, और उत्तर प्रदेश के समीववर्षी को वेचन प्राव

#### § मत्स्य

मस्य जनवह वर्तमान जवपुर राज्य में पहला था। इसके अन्तर्गत पूरा अव्वयुर राज्य और मरतपुर का कुछ आग भी पहता है। समस्य जनवद की गजधानी विराट नगर था। मादिका के गिळिनकावसथ में बिहार करते हुए भगवान खुद ने मास्य जनवद का वर्णन किया था। यह हम्ममस्य के दक्षिण-पश्चिम नीर सर्पन के मुक्तिण स्थित था।

#### § श्ररसेन

ष्ठारतेन जनवण की राजधानी मधुरा नगारी (मधुरा) थी, जो कीनास्वी की माँति यसुना के किनारें सती थी। यहाँ पर भगवान बुद्ध गये के और सधुरा के विहार में वास किया था। सधुरा मदेश में महा-कालायन ने सुमन्द्रम कर बुद्ध धर्म का प्रचार किया था। उस समय बुरसेन का राजा अधिन्तपुत्र था। वर्तमान मधुरा से "भांक रक्षिण परिचम स्थित कहीं की वासक स्थान प्राचीन मधुरा नगारी मानी मानी है। दक्षिण सारत में भी आचीन काल में सधुरा नामक एक नगर था, जिसे दक्षिण मधुरा कहा जाता या। यह पाण्यत राज्य की राजधानी था। उसके नशावतेष इस समय महास प्रान्त में हैनी नशी के विनारी विवासन हैं।

#### § अदवक

काइयक कतपट की राजधानी पोजन नगर था। व्यवक-नरेश अहाकात्यायन द्वारा प्रविज्ञात हो गया या। जातक से जात द्वीया है कि इन्छाद नरेश कार्किंग और व्यवस्थ वरेश में पहले समये हुआ करता या, किन्तु पीछे दोनों का मेंगी सम्बन्ध हो गया था। पोजन करती कार्या राज्य में भी गिगा जाता था। यह व्यवस्थ गोदावरी के किमारे तक विस्तृत था। वापरी योदावरी के किनाने व्यवस्थ कतपद में दी जाधम बना कर रहता था। पर्यमान पैठन किना ही अश्वक कपपन माना जाता है। वहाँ संन्तारक वरेश का एक पिकापेटा भी मान हो जुना है। सहागोपिन्य सुन्त के अनुसार पह सहागोपिन्य हाता निर्मित हुआ था।

#### 🕯 भयन्ति

समित जवपन को राजधानी कजीयी नगरी भी जो अच्छुतगामी हारा बसाधी गई भी। अवस्ति बनपन में बर्तमान माठ्य मिमार और मध्यमारत के निकरवर्षी मदेश पहते थे। अवस्ति बनपद दो मारों में दिसक था। उन्हों गाग की राजधानी उजीनी में थी और दक्षिणे माग की राजधानी मादियाती में , महास्तित शुक्त के अचुतार अवस्ति की राजधानी मादियाती भी कहीं का राज्य कैस्त्रम् मा। इन्हार और सुदस्ति गुल्त के मिलक जवपन के मिलक नगर थे।

अवस्य करपर बीक्समें का महत्वनूष्णे केन्द्र था। अमयक्रमार हसियासी इसियस क्षेत्रकृति करण और महत्वस्थापन जवस्यि करपर की महाविम्सियों थीं। महत्वस्थापन उजीवी-महेस वर्षक मधील के द्वोदित पुत्र थे। यण्डमयोत की महत्वसम्बायन ने ही बीक्स ववाया था। मिस्स हित्रच अवस्थि के बेजुमास के रहते बाध थे।

कीसान्ती और जनस्य के राजवाशमाँ में चैवादिक सम्बन्ध या। चन्द्रधारीत तथा उद्देशन में कई बाद बुद हुए : क्लाक में चन्द्रमानी जे अपनी पुषी वासवद्त्रा का विवाह उद्देशन से कर विदा मा और दोगों शिक्ष हो गये थे। उद्देशन ने समझ के साथ मी वैदादिक सम्बन्ध स्थापित कर किया था जिससे कीसान्त्री होनी और से मुश्लित जी।

भवन्ति की राजवानी उरजैंगी से मसीक का एक शिकाकेक सिक लुका है।

#### हुँ भगर, प्राप्त और कस्बे

अपूर गया---मगवान् उक्केका सं संवा गर्वे थे और गया छ अपर-गक्त कहाँ उन्हें नागराज्ञ सुक्केंब वे मिमन्तित किया था।

अस्थानम्ब---शक्युद के पूर्व अन्यसम्ब नामक पुत्र नाक्षण मान भा र

भारक्रक्तित्र — साम के सम्बद्धितम् आस में सगवात् रहे से वहाँ सहस्पति जहां ने उचका दुर्वत करके १५ति की थी।

अयोज्या—वहाँ जगवाद गवे वे बीर वास्न किया था। वास्त्रि साहित्य के कनुसार वह संगा नदी के कियारे स्थित था। फिर भी वर्तभाग जयोजना नगर दी माना बाता है। उदकास में यह बहुत स्रोत नगर था।

अन्धपुर--वह एक नगर वा जो तेकवाह नहीं के किनारे बसा बांध

आस्त्री—मानवी में समास्त्रम बामक प्रसिद्ध चैत्व वा वहाँ बुद ने वास विधा था। वर्त मान समय में उत्तर महेस के उत्तान क्षित्रे के नवक (वा नैवक) को साहबी माना बाता है।

अनुपिया— यह मरक बनपद का एक अशुक्ष किशम (कस्वा) था। वहीं पर सिवार्ष कुमार में ममिला दोने के बाद पुरू शहाह विवास किया था और वहीं अनुरह महिल किरिक प्रंतु देवदक आनन्य और बपार्क ममिला हुए थे। त्यासका धी वहीं महक्ति हुए थे। वर्णमान समय में देवदिया किसे में हात के बास माझन नदी के कियारे का लैंबहर ही अनुपिया नगर सावा काता है जिसे आक-कक 'वीद्या' कहते हैं।

कास्मापुर--राजा चीते के तमकों में इतिवादर अवस्ता सिंहदुर उत्तर पंजाक और दरादार नगरों को बमाबर था। इतिवादर ही बीके इतितमापुर हो गया था और इस समाच हाटके मध्यक्षेत्र और निळे की मनान तहसील में विश्वमान हैं। सिंहपुर हुष्नसाग के समय में तक्षणिला सं १७७ मील

पुरव स्थित था । अन्य नगरों का कुछ पता नहीं ।

अस्त्रस्तर् —वैशाली के िल्यानियों, मिथिला के विटेशं, कपिलवस्तु के शायवां, रामग्राम के कीलियों, संसुमार्गारि के मार्गों और पिष्यस्थित के मीर्यों की मौति अल्लक्ष्य के दुलियों का भी अपना स्ततन्त्र राज्य था, किना बहुत लाकिशाली न था। यह 30 योजन विस्तृत था। इतका सम्बन्ध वेहदीय के राजवास के था। श्री बील का कम्बत है कि नेउदीय का होण बाह्या का हाशबाद लिले में मसार से बैशाली आनेवाले मार्ग में रहता था। अत. अल्लक्ष्य वेटवीय से यहूत तरून रहां होंगा। अल्लक्ष्य के प्रतिकार के सुलियों को ब्रह्मपाह का एक लक्ष मिला था, क्षित्रपर उन्होंने स्तुष बमबाया था।

4 हिय-अद जनपद के महिय नगर में महोपासिका विशाखा का जन्म हुआ था।

वेस्त्रवद्राम-यह वैशाली मे या।

मण्डमाम-पह बजी जनपट में स्थित था।

धर्मपाल प्राम-यह काशी जनपट का एक ग्राम था ।

एकशाला-यह कोशक जनपद में एक झाझण आस था।

पक्रताला— यह सगध के दक्षिणाधिरि प्रदेश में एक प्राक्षण प्राप्त था, अहाँ भगवान् ने साम क्रिया था।

परकच्छ-यह इसण्य राज्य का एक नगर था।

ऋषिपत्तन-पड ऋषिपतन स्वादाय वर्तमान सारताय है, जहाँ भगवाम् ने धर्मचक्र प्रकृति किया था ।

गया—नाया मं भगवाल जुद्ध ने सूचिकोम यक्ष के प्रकृतों का उत्तर दिया था। प्राचीन गया वर्षमान साहयगज माना जाता है। यहीं से ६ मीक दक्षिण शुद्धगया स्थित है। गयातीय शुद्धकाल में स्नामतीय के रूप में प्रसिद्ध था और यहाँ बहुत से लक्षिक रहा करते थे।

हस्तिप्राम—यह वज्जी जनपद का एक झाम था। स्वायान् हुन् वैवाली से इसीतार वाते हुए देशियान से होन्द एजरे थे। पत्तिमान समय में यह बिहार प्रान्त के हथुवा से ८ मील पश्चिम रिगयुर कोडी के पास अवस्थित है। अजकक उसके तप्तविद्योग को हावीख्युरू कहा जाती है। हस्तिप्राम का बगाव पुष्टपति सवसेवजी में सबसे बदकर था, जिसे हुन् ने अग्र की उपाधि दी थी।

स्टिह्यसन — यह कोकिय अनवद का एक ग्राम था। वहाँ भगवान, बुद गर्यथे। कोकिय मनद ती राजधानी रामग्राम मी और यह जनपद साथन वाववह के पूर्व तथा सक्छ जनवट के विक्रम होनों के स्था विकास था।

हिमबन्त मदेश—कोशल, शावध, कोलिय, सल्ल और वजी अवरहों के उत्तर में फैली पहाड़ी ही हिमबन्त प्रदेश कहलाती है। इसमें नेपाल के साथ हिमालय प्रदेश के सभी दक्षिणी प्रदेश सम्मालित है।

युच्छानपूरु—क्षेत्रक समपद में यह एक झाक्षण 'आम या । सगवान् में हच्छानशक्ष वनसन्द में वास किया था।

जान्तुमास—चालिका प्रदेश के चालिका पर्यंत के पास अन्युप्रास था। अववान् के प्राष्टिका पर्यंत पर विद्दार करते समय सेधिय स्थविर जन्युप्रास में निष्ठाटन करने गये थे और उसके बाद किसिकाला नदी के तीर जाकर विद्वार किया था।

कळवाळमामक-व्यव समय सं एक झाम था। यहाँ पर मौद्रस्यायन एक्षीवर को अहाँग्य की प्राप्ति हुई था। कार्यास — यह मध्यम देश की पूर्वी सीमा पर स्थित प्रकास था। पहाँ के वेत्रवन और मुख्युदन में तबागत ने विहार किया था। मिकिन्द भएन के अधुसार यह एक नाक्षण प्राप्त था और हती प्राप्त में नागास का कथा हुआ था। वर्तमान समय में विहार प्राप्त के शंकाक परगण में कंक्रमेक नामक स्नाप को ही कार्य गक्ष माता काता है।

कोटिग्रास—यह वजी बनएइ में एक ग्रास वा । समवाद पाटकि-मास से यहाँ आने में, वहाँ से मारिका गये थे जीए शरिका से बैशायी ।

किपिछयस्तु—यह सास्य कवपद की राजवानी थी। सिद्धार्थ पांतम का कम्म किपक्यस्तु के ही सास्य राजवानी में हु जा जा। सास्य वस्पद में चातुमा सामगाम बस्तुम्म सम्बन्ध स्वीकारी कीर जीताहरूस मंदिर प्राप्त पूर्व चार थे। इसे कोशकपरित विहुद्ध में बात्तमण करके यह कर दिया था। वर्तमान सम्प्र सुतके मध्यक्षेत्र नेपाक की तराई में यस्ती जिके के सुद्दरतगढ़ रदेशन में १२ मीछ बचर तीकिक्स सामा के पास विशोगकों काल से विकासन हैं।

स्रोप्राधानी-यह खेमनरेश के राज्य की राजवानी जी।

सम्बद्धास-नद नगव में एक शास वा ।

प्रकारमा—पह प्राप्त में राजपुर से 3 क्षेत्रन की हूर्त पर स्थित था। वहाँ के पाजारिक-धान-वह में समझ्या ने विद्यार किया था। वर्षेप्रान समय में यह परवा कि के शाजपुर से क श्रीक उत्तर परिवार में स्वरियत है। इसके विशाक लग्डहर वर्षेशंव है। यह करी और सावधी शावादर्श हैली में प्रवास मीत-विधानित्र सा।

मासकः—मह राज्याद के बास स्थाव में इक प्राम था। इसी प्राम में शारिपुत्र का करन हुआ था और वहीं बणका परिविधीय भी। वर्तमान समय में राज्याद के पास का वासक मान भी प्राचीन मातक माना बाता है।

सादिका-चह नजी जवपत्र का सुक साम था । पाटकिसाम से शंगा पार कर कोटिमास श्रीर सादिका में सगवाय गढ़े के और कहाँ से बैझाकी 1

पिष्यस्मितन सह सीवों की राजपानी थी। यहाँ के शीवों न भगवाय हुन की विडा से मास भंगार (कोपका) पर न्यूप वश्ववाया था। वर्तमान समय से इसके वहायमेर जिला गीरकपुर के इसुनी रहेशन से 32 लीक वक्षिन स्पत्तीरों नासक स्थान में मास हुन है।

रामप्राम-काडिय पत्रवर्ष के दो मसिड वगर ये रामप्राम और दंशदर। सामान के दरि विदांत के बाद रामप्राम के कोडियों से अपकी करिव पर रुप्य बनावा वा। सी प्रसी एक कारखायक ने वर्तमान वागपुर-देवरिया को रामग्राम प्रमाणित किया है को कि सरचा ताळ के कियार बस्ती मिळे में स्थित है, किन्तु सहार्षक (६०, २५) के वर्णन से ज्ञात है कि रामग्राम भविस्तर्ता (राही) नहीं के किनारे या और बाद के समय चहुँ का चैल्य हुट यथा था। सम्भवतः सौरखपुर के पास का रामगाँत तथा रामगढ़ ही रामग्राम है।

सामगाम- यह माक्य जनपद का एक भ्राम था। यहीं पर भगवान् ने सामगाम सुन का रुपदेश दिया था।

सापुग-पह कोडिय जनपद का एक जिमम था।

शोभावती-यह शोभ-नरेश की राजधानी थी।

सेत्दर—पह कोशल जनपव में एक नगर था। इसके पास ही उक्टूर थी और वहाँ से सेतस्य सक एक सबक जाको थी।

संकरस्य-भगवान् वे आवस्तों में यसक प्रातिहार्य कर, त्रुपित-भवन में वर्षावास करके महा-प्रवारण के दिन संकरत चनार में स्वर्ग से जूमि पर पवार्षण किया था। संकरस वर्तमान समय में संकिता-बसन्तपुर के जाम से कारिकन्दी वहीं के उन्हरी तट पर विद्यमान है। यह पृटा जिले के फतेहगड़ से २३ मीक प्रीक्षम कीर कनीज से ७५ मील उन्दर-पश्चिम दिश्य है।

सालिन्दिय-वह राजगृह के पूरव एक ब्राह्मण प्राप्त था।

सुंसातिगरि नगर— यह असं राज्य की एतकानी या । बुद्धकाल में उदयन का पुत्र वोधि-राजकुमार यहाँ राज्य करता था। को शुद्ध का परम अद्भाल अक था। किन्तु, अर्ग राज्य पूर्णकरेण प्रजातकर राज्य था, क्योंकि जणतक्त्र राज्यों में इसकी भी सणका की बासी थी। अर्ग आजकल के सिकांपुर जिले का गंगा से दक्षिणी भाग कीर कुछ आस-पास का प्रदेश है, इसकी सीमा गंगा-दोस-कमीमाशा मदियों पूर्व विक्पापक पर्वत का कुछ आस रही होगी। बुंधुमारियरि नगर मिकांपुर जिले का वर्षमाल खुलार करवा जाता बाता है।

सेनापति त्राम-यह उरुवेका के वास एक शाम था।

थूण—मह एक बाह्यण प्रास था और अध्यक्ष देश की पश्चिमी क्षीमा पर स्थित था। भाषुतिक यानेक्षर ही यूण माना लाता है।

उद्भाषेळ—ृषद् बजी ननपद में गंगा नद्यों के किनारे स्थित एक प्राप्त था। टक्काचेळ विद्वार प्राप्त के वर्तमान सोनपुर या हालीपुर के अस्तरास कहीं रहा होगा।

उपतिस्लग्राम-यह राजगृह के निकट एक ग्राम था।

उप्रतगर—उप्रकार का सेट उम्र आवस्ती में म्यापार के कार्य से आया था। इस नगर के सम्बन्ध में अन्य कोई जानकारी प्राप्त गहीं है।

उसीरध्वज-यह मध्यमदेश की बत्तरी क्षीमा वर स्थित एक पर्वत था, जी सम्मवतः कनसङ के उत्तर पदता था।

वेररुजा नमर—सगवान् आवस्ती से वेरत्रज्ञा वजे थे। यह नवर कसीज से संकल्प, सोरेटव होते हुए महुरा वाचे के जार्ग में पक्ता या । वेरला सोरेटव और महुरा के मध्य कहीं रियत था।

वें अवती---यह नगर वेज्ञवती नदी के किवारे क्या या। वर्तमाम वेतना नदी ही पेश्रवती मानी आती है।

वैणुवजाम--वह कीशास्मी के पास एक छोटा माम था। वर्तमान समय में इलाहाबाद से २० मील पहिचम फोसम से घोषी वृर उत्तर-पूर्व स्थित वैषयुरवा को ही बेंखुवमाम माना जाता है।

#### ६ नवी और **जखा**दाय

पुरकाक में मध्यम देश में जो नहीं चकाशय और पुष्परिणी थीं वमका संदिक्त परिचय इस प्रकार कावणा चाडिया—

अधिरवती इसे वर्तमान समय में शसी कहते हैं। यह मारत की पाँच महाभदियों में एक

र्या । इसी के किनारे कोशस की राजधानी बावस्ती वसी थी ।

अनोमा—इभी पत्री के किनारे सिद्धार्ण कुमार ने प्रश्नका प्रदूध की थी। की कांत्रधम ने गोर्प्य पुर बिक्के की भामी नहीं को अमोमा माला है और भी कारकापक से शस्त्री बिक्के नी कुइना नहीं की। किन्नु इस पंश्चिमी के केणक की दार्थ में नेवारिया बिक्के की माझन नहीं हैं। अमोमा नहीं है। (देखी कुमीनगर का इतिहास, पक्षम मकरण पुद्व ५८)।

बाहुका-इदकाल में यह एक पवित्र शकी साथी बाली थी। वर्तमान समय में इसे तुमेल

नाम से प्रकारते हैं। यह शही की सहाबक कही है।

यद्भिती—वर्तमान समय में इसे भागमती कहते हैं को नेपाछ से दांती हुई विदार प्राप्त में भारी है। इसी के किमारे काउमांह नगर कहा है।

सम्पा-- वह मगव और अंग सतपूर्त की सीमा पर बहती वी ।

**छड्-त---पट्ट** दिमाकप में स्थित एक धरोवर था।

र्गगा-चव मारत की प्रसिद्ध कही है। इसी के किगारे वरिद्वार प्रचार और धाराजधी स्थित हैं। गम्मरा पुष्करियी—वंग कथवव में कथा नगर के वास थी। इसे राजी गमारा ये कोव वाका था।

हिरण्यसंदी—कुसीनारा और सक्की का शाकाम उपवचन दिरण्यवदी नदी के किनारे स्थित थे। देवरिया क्रिके का सोतरा नाका हो दिरण्यवदी नदी है , यह कुककुका स्थान के पास प्राचुमा नदी में मिकती है। इसी को डिरमा की नारी और क्षसमी नारा भी कहते हैं को 'क्षसीनारा' का अपने सु है।

कोसिकी-नद गंगा की एक सहायक नदी है। वर्षसाय समय में इसे इसी नदी बहते हैं। केन्द्रत्या-वह नदी पाना और हुन्नीमारा के बीच दिवत थी। वर्षसाम यापी नदी ही क्यारता

मात्री बाती है। (देखी कुसीनगर का इतिहास प्रक १ )।

कड्सदब--इस नदी के किनारे महाकारणायन ने कुछ दिली तक विदार किना था ।

किमिकासा-चड नदी चाक्रिका में थी। मैथिक स्वक्ति में जन्तामार्ग में मिक्सार्ट कर इस नदी के किनारे विदार किया था।

र्मगळ पुण्करिकी —इसी के किमारे वैदे हुद तवामत को शहरू के परिविद्यांग का समाधार मिका वा

मही--वह भारत की पाँच बड़ी गरिकों में सा एक थी। बड़ी गण्डक को ही मही बहते हैं। इसकार--वह विभाजन में तक सरोवर था।

रोहिकी---यह सापन और क्रीमिय क्यायर का सीमा पर पहली थी। वर्षमान समय हैं भी इस रोडिगी ही बदन हैं। यह मानलहर के पास सामी में निरसी है।

स्राप्तिमी—वंड नदी राजगृह के पास वहती थी। वर्तमान प्रशास नदी ही सरमवता स्राप्तिमी नदी है।

र्मुत्तु-इस वर्षा के किनार आयुष्माम् अनुदश् में दिशार विका था ।

नि द्वाना-वह नरी करदेता महेचा में वासी थी। इसी के किनारे सुवाना रिनर है। इस समय इसे विवादना नरी वहने हैं। विवादना और ओहना नदियों मिल्टर दो वस्तु नरी वही खाती है। निवादना नरी इकरावना किने के सिमीविंग नानक न्वान के नाम ने निक्तारी है। सन्दरिका-यह कोतल जनपद की एक नदी थी। समागधा-यह राजग्रह के पास एक प्रत्रहिणी वी।

सरभू-इम समय इसे सरयू कहते हैं। यह भारत की पाँच चड़ी नदियों में में एक थी। यह हिमालय से निकल कर बिहार प्रान्त में गया से मिलती हैं। प्रमी के दिनारे अयोध्या नगरी बसी है।

स्मान्यती--वंगा की भाँति यह एक पवित्र नदी है, जो शिवालिक पर्यंत से निकल कर अस्ताला

के-आदि-पही में मैदान में वतरती हैं।

चेत्रवासी-इक्षी नदी के किनारे पेत्रवती नगर था। इस समय इसे वेतवा नदी कहते हैं और इसी के किनारे भेलसा ( प्राचीन विदिधा ) नगर यसा हुआ है।

क्षेत्ररणी-इसे यस की नदी कहते हैं। इसमें नारमीय प्राणी दु स भोगते हैं। (देदी, संयुक्त निकाय, पृष्ठ २२ )।

यमता-यह भारत की पाँच बड़ी निर्देशों में ने एक थी। वर्तमान समय में भी हने यसना

ही कहते हैं।

#### पर्वत और ग्रहा

सिञ्चकट--- इसका वर्णन अवदान में मिलता है। यह हिमालय से काफी दूर था। वर्तमान समय में चुन्डेकुलुण्ड के फ्राम्पतनाथ गिरि को ही चित्रफूट माना जाता है। चित्रफुट स्टेशन से ४ मील दर स्थित है।

चोरपपात-वह राजगृह के पास एक पर्वत था।

शस्त्रमादन-यह हिमालय पर्वत के कैलाश का एक भाग है।

रायाङ्गिय- यह पर्वत गया से था । यहीं से सिद्धार्थ गीतम उरुवेला में गये ये और यहीं पर ध्रद ने जटिलों को उपदेश दिया था।

गृद्धकृष्ट--- यह राजगृह का एक पर्वत था। इसका शिखर गृद्ध की भाँति था, इसी विसे इसे गृञ्जकृद कहा जादा था । यहाँ पर भगवान ने बहुत दिनों तक विहार किया भीर उपदेश दिया था ।

विमयस्त-हिमालय को ही हिमयस्त कहते हैं।

इन्ट्रचास्त्र गृहा--राजगृह के पास अन्वसण्ड नामक बाह्मण प्राम से थोदी दूर पर चैदिक पर्वत से इन्द्रशाल गुहा थी।

इस्ट्रकृट-यह भी राजगृह के पास था।

क्रांचेशिक्टि—राजगृह का एक पर्वत ।

कररधर—यह अवस्ति जनपद में था। महाकात्मायन ने क़ररघर पर्वत पर विद्वार किया था।

कालजिला-यह राजगृह में थी।

पाचीनवंश-यह राजगृह के वैषुत्य पर्धत का पौराणिक नाम है।

पिफ्फल्डि गृहा-यह राजगृह में थी।

संचपण्णी गुहा-प्रथम संगीति राजगृह की संचपण्णी गुहा में ही हुई थी।

सिनेश-यह चारों महाद्वीपों के सध्य स्थित सर्वोच्च पर्वत है। सेह और सुमेर भी इसे ही कहते हैं।

इवेत पर्वत-यह हिमालय में स्थित है। कैलाश को ही इवेच पर्वत कहते हैं। (देखो. सयस निकाय. प्रष्ट ६६ )।

संस्मारिकिर-ग्रह मर्ग प्रदेश में था । चुनार के शासवास की पहावियाँ ही संसु-मार गिरि हैं है

सप्पतोपिकक प्रधार—शबप्र वे । वेपुरस्य—राजप्र वे । वेसार—राजप्र वे ।

#### **ँ वादिका और** धन

आस्त्रधन—साम के वने बाग को काकावन कहते हैं। तीन आकावन असिन् हैं। पुरू राजपूर में बीवक का जाजबन वा। बुसरा कड़कार बड़ी के किवारे पावा और कुसीवारा के बीच, बीर ठीसरा कामका में तोदेव्य आहण का जाधवन था।

श्रासका जिल्ला-यह वैद्याची में था।

कारपारक युन—बह बजी बवपह में था। अम्बारक वच के मध्यिक अस्पार में बहुत से मिलाओं के विदार करते समय बिच गृहपति में उनके पास आकर समी-बचों की बी।

बाजिय-राज्यस्त-वह सरकराह में बहरिया में वा।

शक्तमध्य - यह साथत में था । अञ्चलक सुगदाय में समजान के बिहार किया था ।

क्षरुद्धसन-- वह सावस्ती के पास था।

ह्य-जानक्षर धन-संपद्य-धर कोचल कावपद में ह्य-जार्थगढ़ माह्य प्राप्त के पास था। जेतवन-पद जावस्ती के पास था। क्तंमान महेट ही केतवन है। कोदाई से सिकार्यक नारि माह हो तके हैं।

कानियसस-ना मनिय शस्य मैं था।

कप्पासिय वश-सब्द---चीस अञ्चर्योची वे इसी वच-सब्द में तुद्ध का इसी किया या।

क्रम्प्रकृतिकार- वह राजगृह में था। यिकहरियों को जसव दान देने के बारस ही क्रम्प्रकृतिकार करा बाता था।

स्रतिसम-कडियम में ही मिनिक्सार ने ब्रह्मकर्म को प्रहण किया था।

द्धुंत्यती यन-पडी पर सिदार्च गीठम का बच्च हुआ या । वर्षमान् इमिमनदेहं ही प्राचीन इसिजी है। यह गौरकपुर मिके के गीठनवा स्टेशन से १ मॉक पविमा नेपाक राज्य में स्थित है।

सङ्गादन-पद कपिकवस्तु से केतर हिमाक्य के कियारे-विकार वैद्याकी तक सीत वहाँ सं समझक तक विस्तृत महाकन का।

महक्ति स्वादाय-वह राजपृह में था।

भीर विद्याप-यह राजपुर की समागवा प्रप्यतिकों के विकास निवस कर ।

ज्ञासम्बद्धाः वास्त्री सम्बद्धाः में हरिश्रमास के वास या ।

पाचारिकाधवन-यह भावन्या में था।

मेसकबावन-मर्ग प्रदेश के शुंधुमारगिरि में शंशकबावन क्रापान था।

सिसपायन—वह नोवक कवाद में सैतक कार के पास उत्तर दिला में वा । कीक्षाओं और बाहबी में भी सिसपायन के । सीसम के वन को ही सिसपायन कहते हैं ।

द्गितवन-वह राजपृक्ष में था।

उपधेत्तन शास्त्रजन—यह सरकरात्र में हिरण्डमधी नहीं वंतर कुसीमारा के पाम उत्तर सोर था।

चेखुधन—यह शबगृह में का।

#### 🖁 बैत्य और विद्वार

इंद्रकांक में को प्रसिद्ध चैत्व और विदार थे, वनमें से वैद्याकों में वाश्वक चैत्य श्रद्धाप्रक चैता,

सारत्वद चैत्य, उद्दवन चैत्य, बीतमक चैत्य जीर यहुपुत्रक चैत्य थे। कुशमार जाला, बालुकाराम और महावन विहार वैद्याली में ही थे। राजगृह में काद्यपत्रहासम, विग्रोचरामा और परिज्ञातकाराम थे। पारक्षिपुत्र में ज्ञानेकाराम, शिद्धकंगवस्य और कुमकुशामा थे। कीदास्थी में यदरिकाराम, वीपितारामा और कुमकुशसम थे। दालेज में काककाराम था। उन्जीनी में दिस्सनागिरि निहार या। और त्रावस्ती में पूर्वाराम, सक्कागार और जेतवन महाविहार थे।

#### ६ २. उत्तरापथ

उत्तराप्य को पूर्वी सीक्षा पर थूण प्राह्मण आम या और यह उत्तर में हिमालत्र तक फैला हुआ था। उत्तराप्य हो महा जलपदों में विभक्त था—गण्यार और कम्योज। पूरा पंजाय और पश्चिमोत्तर सीमाशास उत्तराप्य में ही पढ़ता था।

#### **६ राज्यार**

गम्यार जनपद की राजधानी तक्षशिका नगर था। क्लभीर और सक्षशिका के प्रदेश इसके क्षम्तर्गत थे। वर्तमान पेशाधर और राजकिपण्डों के किले गम्यार कमरण में पकृते थे। सीसरी सगीति के पक्षात् गम्यार जनपद में पेक्षते थे। सीसरी सगीति के पक्षात् गम्यार जनपद में पोक्षकों के प्रधारां भिक्ष भेने गये थे। सक्षशिका नगर बारागकी से २००० बोजन दूर था। यह एक प्रधान ध्यारारिक केन्द्र था। यहाँ दूर-दूर प्रदेशों से स्थापारी काते थे। बुद्धकाल में पुरुक्ताति सक्षशिका का राजा था। वह मैत्री भाव के लिए सगाध नरेश को पत्र और स्थार मेंना करता था।

#### § कम्योज

कस्थीज जनपण का विस्तृत वर्णन उपकत्थ नहीं है। यह पश्चिमोण्य भेरित में पदवाथा। हुद्दर के लेज से केवल नन्दिपुर कार का ही कस्थीज जनपद में नाम सिका है। हुपमदाता के वर्णन और आसीक्तियाललिय के आधार पर माना वाता है कि वर्षमान राजीरी पश्चिमोण्य सीमामान्त का हमारा बिला कस्बीज जनपद था। क्रयोज बोदों का उपवित्याल माना जाता था। जयोज-कार में स्थापन की सिका कस्बीज जनपद था। क्रयोज नोहीं को उपवित्याल माना जाता था। जयोज-कार में स्थापन की सीमक सहर्शिक्ष स्थापन की वर्षमाण किया था।

#### ६ तगर और श्राम

गन्धार-कश्चीच जनपद में इन्छ प्रसिद्ध नगर और प्राम थे। उनका सक्षिप्त परिचय इस प्रकार है ---

सन्दितुर-पह विश्वि जनपद की राजधानी थी। पनाय का वर्तमान कोरकोट प्रदेश ही शिक्षि नभव सामा पार्य है। इस अनयद में नियोध के पास जेतुनर नामक एक और भी नगर था।

कदमीर — कदमीर राज्य गल्धार जनपट् के अन्तर्गत था। अक्षोक-काल में यहाँ बुद्धधर्म का

प्रचार हुआ था।

त्तरहिल्ला यह गन्यार कागव भी राजधानी थी। यह प्राचीन भारत का प्रधान शिक्षा-केन्द्र या। बीवक, प्रमुख मल्ल प्रसेनविष्य, महालि जादि भी शिक्षा तक्षत्रिला में ही हुई थी। वर्तमान समय में पंजाब के रावलिष्णिक्षी जिले में तक्षत्रिला के नशबक्षेप विद्यमान हैं।

स्तानळ-यह सह देश की राजधानी था। वर्तमान समय में इसे स्वाळकीट कहते हैं और यह प जात में पहता है। कुतानती के राजकुमार कुत का विषाह महाराजकुमारी ममापती से हुआ था। प्राचीत काल में मह की दिवर्ष कावजिक सुन्दरी मानी जाती वीं और प्राय लोग मह-कन्याओं से ही विषाह करना चाहते थे।

#### § ३ अपरान्तकः

- परान्तक प्रदेश में वर्तमान सिन्ध परिचनी राजपुताना गुजरात और नर्मदा के मेरिय के इक्क साम पहरें हैं। सिन्ध गुजरात और पक्षती तीन राज्य अपरान्तक के अस्तर्गत थे। अपरान्तक की राज्य सामी गुजरात करन में थी। वाजिजनाता, पदीच प्रदारात गासिक सूरत और कार राष्ट्र अपरान्तक समित मेरिय पूर्व और कार राष्ट्र अपरान्तक समित मेरिय पूर्व भीर कार तीन मेरिय मेरिय प्रदेश मे

#### ६ मगर और प्राप्त

सरकोरहा—यह समुत्र के किनारे स्थित एक कन्द्रसाह था। आगारी मार्ड से बीका हारा विदेशों के विजे सरमान करते थे। खंबा, पनन देख सादि में बाने के किये पहीं नीका निकरी थी। मुक्तें सुति (कोमर कर्मा) को भी ज्वापारी वहाँ से खाना करते थे। काकिनावाद प्रदेश का वर्धनान सहीव मी प्राचीन मरकवात्र है।

महाराष्ट्र-वर्तमान मराध्य पदेश ही महाराह है। यह अवर गोहावरी और कृष्णा विदेशों के बीच फुँका हुआ है। यहाँ पर अमें मजारार्थ महाजमेरकित स्वकिर गये थे।

होति।—सीवीर राज्य की राज्य की राज्य की राज्य कार्या होता थी। वर्तमाव समय में गुजरात मदेस के पदेर को वी सोजीर मावा वाला है।

सुप्पारक:--यह भी पढ़ नम्बरशाह था। वर्तमान सोपारा ही सुप्पारक है। यह अस्वहूँ से ३० सीक क्षण और वसीन से 8 सीक अवस-पिकार कामा किसे में दिवल है।

शुरदु~-वह एक ग्रह का जिससे होकर खातोषिक वही बहुती थी। वर्तमाव करिवाबाद और पुजारत का कन्य माग की सुरह ( व्यक्ताह ) माना व्यक्त है।

काकरकु—इसे ही कारराज्य भी कहते हैं। सभ्य और हस्तिम प्रवस्त काकरकु माना कारा है।

#### ६ ४ दक्षिणाप्य

महनक भीर व्यवस्थि अञ्चानगवर भी विद्यालाय में तिले करते हे । महन्यभिकार हुए के अहरूसर अवस्थि की राज्याची माहित्यसी भी को विद्यालय में पहली भी। इसीकिये क्यांति को नामित पृष्टि वायत कहा जाता था। अवस्य राज्य गीवायती के किमारे वा और यह भी विद्यालय में कार्यात या। महाक्रीयक नामक मानगव भी वृद्धिकायम में वा निक्रका वर्षन प्रवास के नामित महाक्रीयक नामक मानगव भी वृद्धिकायम में वा निक्रका वर्षन प्रवास के नामित निक्रका वर्षन प्रवास के वृद्धिकायम प्रवास के नामित निक्रका वर्षन प्रवास के वृद्धिकायम प्रवास के वृद्धिकायम नामित निक्रका वर्षन प्रवास के वृद्धिकायम के वृद्धिकायम निक्रका निक्रका नामित निक्रका निक्रका नामित निक्रका निक्रका निक्रका नामित निक्रका निक्रका नामित निक्रका निक्रका नामित निक्रका नामित निक्रका निक्रका नामित निक्रका निक्रका निक्रका नामित निक्रका निक्रका नामित निक्रका निक्रका निक्रका निक्रका निक्रका निक्रका नामित निक्रका निक्

#### है नगर और प्राप्त

अमरावती—इस नगर में पूर्वज्ञक में बोधियान कालक हुए ये। वह काश्वविक समय में बरनीकीह नहीं के रास अमरावती बास से विकासन है। इसके व्यक्तित स्तृत बहुत संस्तित है।

मीज-रोहिताहर भोक्युक कृषि मीजात्म् के रहने बाके थे। समागती किने के पृक्षिपपुर के विकामपूर्व व मीक मी वर्ष पर स्थित समागत को श्रीक माना काल है। टमिळ रट्ट—द्वाविङ् राष्ट्र को ही दमिळरट्ठ कहते हैं । इस शस्ट्र का कावेरी पटन वन्टरनाह वड़ा प्रसिद्ध नगर था, जो माळावार के आखपास समुद्र के किनारे स्थित था ।

फलिक्स—कॉर्टिय राष्ट्र इतिहास-प्रसिद्ध कर्डिय ही है। इसकी राजवानी दन्तपुर नगरी थी। यनदासी—रक्षित रूपीवर वनवासी में धर्म-प्रधारार्थ मेजे गये थे। उत्तरी कारारा ही बनवांसी कहा जाता था। यह तुसमङ्गा और वहीटा के सच्य स्थित था। आधुनिक मेसूर के उत्तरी भाग को वनवासी वात्तरा जाहिए।

#### § ५. ब्राच्य

मन्यमदेश के प्रय प्राच्य देश था। इसकी परिचयी सीमा पर कजगळ निगम, अग और माथ कतपढ थे। प्राच्य प्रदेश से पण जनवर पहला था। वंगम्य कापड में इसका ही गांग था। प्रसिद्ध ताम्य क्षित साथ कापड पहला हो। त्या जा कि से सुराज हो गांग था। प्रसिद्ध ताम्य क्ष्मित के सिद्ध के स्वाप्त के सिद्ध के स्वाप्त के सिद्ध के सि

संक्षेप में प्रदक्षालीन भारत का यही भौगोलिक परिचय है।

सारताथ, धनारस

भिश्र धर्मरचित

## सुत्त (=सूत्र)-सूची

## पहला खण्ड

## सगाथा वर्ग

## पहला परिच्छेद

	१. देवता संयुत्त		
	पहला भाग ः नल	वर्ष	
ਜ	विषय		Ú
(त) भीसतरण सुल  (त) तिमीच्या सुल  (त) या विकास सुल  (त) भारतीय सुल  (त)	क्ष्णा की बाद मोक्ष सासारिक भी सासारिक भी पाँच से कारे पाँच से छाठी सर्पण डाव स्वाम डाव स्वाम डाव स्वाम डाव स्वाम डाव स्वाम डाव स्वाम डाव	धाकारयागः : 	******
10 dies Au		न वर्ग	
<ol> <li>मध्यन सुष</li> <li>नन्ति सुप</li> <li>नन्ति सुप</li> <li>निया सुप</li> <li>निया सुप</li> <li>नियान्य सुप</li> <li>नियान्य सुप</li> <li>नियान्य सुप</li> <li>कुम्म सुप</li> <li>कुम्म सुप</li> <li>कुम्म सुप</li> <li>कुम्म सुप</li> <li>कुम्म सुप</li> <li>सिस्ति सुप</li> <li>समिबि सुप</li> </ol>	सम्बन्ध वर्ग विश्वा रहित अपने ऐसा व शुद्ध केंद्रि सान्ति से क्षा निद्धा कीर त कलुका के स पाप से रूज सोपक्षी का	न्द्रा का व्याया भाग रक्षा ाग भो व्याय ा है, काम-भोगों का व्याय	
	तीसग भाग : शरि सस्ताय-इष्टि	के वर्ग का महाव	

२ फुसवी सुच		तिहींच को दोच महीं क्यता	11
१. वस सुच	ŧ	महा भीन सुकता सकता है 🕈	11
<ul> <li>मनानिकारण सुक्त</li> </ul>		श्रम की शेकना	14
५ अरहस्य सुत्त		धार्राण	14
९, प्रजात सुच		प्रचीत	15
• सरा सुर्च		माश क्य का निराध	15
८ महत्रम सुत्त		मुख्या का त्याग	1"
९ क्युपन्ड सुन		भाषा थेसे श्रोगी	10
१ प्रिज्ञह सुच		हुत्व से सुव्धि	14
	र्बोचा भाग ।	सतुत्स्वपकायिक वर्ग	
१ सकिम शुच		संस्कृती का साथ	15
र, सर≢री <del>पुत्र</del>		<b>कं</b> असी का स्थान	
६ साइ सुच		काम देना उत्तम है	31
४ नसस्ति छ्रच		क्रम विच नहीं	44
५, डाग्रहमण्डी सुत्त		सवागत हराह्यों से वहे हैं	4.8
६ सदा श्रुष		प्रशांच का स्थारा	84
• समय भ्रुच		मिशु सम्मेकन	9.5
८ कक्रिक श्रुच		शरावाम् के पैर में पीका देवताओं का आ	तस्य २०
९, पञ्जबनीतु सुच		वर्ग प्रदेश से स्वर्ग	34
<ol> <li>जुक्तपरहच्चीतु स्</li> </ol>	ī	<b>इद वर्ग का</b> सार	~ 85
	पाँचवाँ माग	ः वस्ता वर्ग	
१ मादिस सुन		क्रीक में नाम क्यी है	- 1
२. कि वर्ष छुत्त		ै क्या देनेपाका क्या पाका <b>है</b> 🔋	R.
३, जबसूत्त		<b>अक्ष सबको थिय है</b>	3,1
४ एकम्ब सुत्त		युक्त नष्ट पाका	1,1
५, धनोमनाम श्रुष		खर्ष-प <del>ूर्व</del>	1,1
६, व्यवस्य द्वष		राष्ट्र किसे करेगी ह	1,4
• वनशेप सुख		किनके पुष्य संशा कारों हैं ?	44
८ इर्र वि ग्रुष		जैसमय वर्ष	11
५, स्थार श्रुष		वंब्सी के इंद्रक	II.
। वडीकार प्रच		इस-वर्ग से वी सुन्दि, करून से नहीं	3,%
	छटौँ भाग	ः अराक्ष्मी	

पुष्प जुराया गर्ही था सकता

शका सञ्चली का रज 🖁

मित्र

माचार

रैदा दोना (1)

Q٠

3,0

1.

1,6

14

। बरा सुच

९, वजस्या सुक

३, भिच सुच

४ वस्तु सुक ७ वहीते सुक

६. जनेसि सुत्त		पेश होना (२)	\$6
०, जनेति सुस		पंदा होना (३)	2,4
८. उपाध सुत्त		चेराह	3,4
९. दुतिया सुन		માંચી	33
१०, कवि सुन		कविता	¥ e
		•	
	सातवाँ भाग	' अङ वर्ग	
६. सम मुत्त		नाम	80
>, चित्र सुत		चित्त	40
३ तण्हा सुना		<b>मृ</b> ग्णा	80
४ सयोजन सुक्त		খন্থৰ ,	83
<ul> <li>बस्यन सुत्त</li> </ul>		<del>पार्</del> स	43
६ भण्भाहत सुस		सत्ताया जाना	81
<ul> <li>उद्दित सुन</li> </ul>		स्राँबा गया	53
८ थिहित सुत्त		छिपा देंका	85
९ इच्छा सुत्त		<b>इ</b> च्छा	e 8
१०, सोक सुल		ভীক	४२
	आटवॉ भाग	' झस्वा वर्ग	
१, झत्वा सुल		नाव	8.5
२ रथ सुत्त		स्थ	ak
३ वित्त सुत्त		धन	ષ્ઠક
४ ष्रुष्टि सुन्त		बृध्दि	8.8
⊍ भीत सु <b>ल</b>		दरना	88
६ न जीरति सुच		पुराना न होना	8.8
७ इस्तर सुन		<b>गृ</b> श्वर्थ	છ ખ્
८ काम सुस		अपने की व टे	8.5
९ पाथेच्य सुस		शह-सर्च	5 4
१० पञ्जीत सुस		प्रचीत	86
११ अरण सुत्त		म्हेम से रहित	80
	दूसरा	परिच्छेद	
	२. दे	वपुत्त संयुत्त	
	पहला भाग	ः प्रथम वर्ग	
३ कस्खप सुन्त		थिखु-अधुवासम (१)	84
२ अस्सप सुन्त		भिधु-मनुशासन ( २ )	3.5
३ माघ सुत्त		किसके नाम से सुख ?	84
% राजाधा संदर्भ		न्तर प्रशीम	

चार प्रयोस

४९

४ मागध सुत्त

	(	8 )	
५ दासकि सुच		माझण कृतकृत्य वै	8
६ कामद सुच		सुदाब सम्तोप	ч
» पद्याध्यण्ड सुरु		स्यृति-काम से धर्म का साक्षात्कार	ч
८ वायन सूच		दिविकता न करे	ч
२. चित्रम मुच		चन्द्र-घट्टल	ч
। सुरिय श्रुच		सूर्य-प्राप्त	4
	क्सरा भाग ।	मनाथपिनिष्टक वर्ग	
। वन्धिमस धुक		भाजी पार कार्येंगे	ч
२ वेग्द्र सुच		ध्यानी यून्यु के बस नहीं स्थाने	ч
<ol> <li>श्रीवकडि सुन्त</li> </ol>		मिश्च- <b>अनु</b> धासव	ч
४ तस्त धुक		चीकवाल् कीम ?	4
५ जन्मव सुच		कीन वहीं हवता !	4
६ बासुबच सुच		काञ्चकता का शहाण	ч
• सुबक्ष सुन्त		चित्र की वचदाहर कैसे दूर हो !	u;
<b>८ कक्</b> ष सुच		मिश्व का कावन्द भीर विन्दा नहीं	щ
९ डचर सूच		सांसारिक भीग की त्यारो	ч
१ जनायगिन्डिक सुक्त		जेत्वन	5
	तीसरा भाग	ः भामातीर्थं वर्ग	
९ सिव भुष		सन्तुक्षों की धंगति	U I
र लेश सुच		पाथ कमें न करें	45
३, सरि भुच		न्म का सद्दाधन	•
४ वडीकार सुच		तुद्धवर्गसे दी शुक्ति अल्य से वहीं	<b>E</b>
भ अन्द्र सुच		अनुमानी को मनाब्	41
६ रोहितसा शुच		कोक का अन्त चक्कर वहीं पाचा बा	
		सकता निना मन्त्र पाप सुक्ति भी नहीं	Ę:
• वन्द सुक्त		समय बीख रहा है	C)
८ मन्दिविसास सुच		पात्रा कैसे होगी ?	4.8
९ सुसिम सुच		वासुच्याम् सारिश्वत्र के गुज	<b>K1</b>
१ अपना विलिय सुक	t	भागा वीची के मत हुद अगुवा	41
	तीस	रा परिच्छेद	

## रे कोसल संयुच

		पह्रसा भाग	ः प्रथम वर्ग
1	दहर सुभ		चार की छोधा व समझे
	परिम सक		aller sellerene med

. २८ जार के काश न काश न १४ १ दुनि मुक्त प्रेम महिन्द स्था ६४ १, राजरप मुक्त सम्बन्ध दुराम महीं होता ६९

८, विष मुन		भवना च्यारा कान !	30
. भारतिमास सुरा		धपार्व बरावान्त्री	
६. सप्पक्ष मृत		निर्देश पंदे ही है	30 00
<ul><li>अभक्तम सुत</li></ul>		क्वारों में संद्र मीटने का फल हु सह	9.1
_		अवने से ध्याम कोई नहीं	91
८, मल्टिया सुप			
९, यज्य सुत		पाँच प्रकार रे यहा, पाँटा और दिसा-रहित	
		री िसरव	ა ⊅
१० यन्थम सुना		रुट यमान	95
	हुनरा भाग	• हिनीय चर्ग	
१. जटिल सुस		उपरी रूप-रंग में जानना कटिन	28
», पश्चराज सुना		को लिम बिय है, बारी उमें मचला है	34
३ दीणपात्र सुल		सात्रा से भीजन करें	৩६
४, पटम स्याम स्व		रुकाई की दो याने, प्रसेनजित की हार	७६
", दुतिय लगाम सुन		भवासमञ्ज की दार, लुटेस खुडा जाता है	99
६ घीतु सुस		नियाँ भी पुरुषा ने श्रेष्ठ होती है	96
७, अपसाह मुत्त		अधमार के गुण	06
८, दुतिय अध्यमाट सुत्त		अप्रमाद के गुण	υg
९ अपुत्तक मुत्त		क ज़न्दी न वर	60
१०, दृतिय अपुत्तक सुत्त		कज्नी त्याम कर प्रचय करे	63
	तीसग भाग	ः वृतीय वर्ग	
१ प्रमाळ मुक्त		चार प्रकार के व्यक्ति	68
<ul> <li>अध्यका सुत्त</li> </ul>		मृत्यु भियत है, पुण्य करे	48
३ कोक सुत्त		तीन अहितकर धर्म	હપ
४ इस्मत्य सुरा		दान किसे दे ? किसे देवे में महाफल ?	64
५, पव्यत्पम सुत्त		मृत्यु घेरे वा रही है, धर्माचरण करे	60
	चौथा	परिच्छेद	
		गर संयुत्त	
	0. 1	ાર સંકુપ	
	पहला भाग	• प्रथम वर्ग	
१ तपोकस्म सुत्त		कठीर तपश्चरण येकार	৫৭
<ul> <li>नाग सुन्त</li> </ul>		हायी के रूप में सार का धाना	०५ ९०
३ सुभ सुत्त		समर्भी मार के बका में नहीं जाते	90
४ पास सुन्त • पाक कल		युद्ध मार के जाल से मुक	30
· पास सुश्र		बहुजन के हित्त-सुख के लिये विचरण	93

	(	<b>1</b>	
६ सप्य <b>सु</b> च		पृक्षामतवास स विश्वक्षित म हो	44
• सोम्पसि <del>द्व</del> ा		যিলুফা <b>স্তুৱ</b>	44
4 भागम्य <u>स</u> च		भगासक चिन्तित नहीं	44
९ मानु सूच		शासुकी शस्पता	48
१ आयुद्धत		भायुक्त क्षय	4.9
1 413 84			
	वूसरा माग	। द्विसीय वर्ग	
। पासाम धुन		पुर्वो में करकता गरी	9,4
२ सीइ मुच		बुद्ध समार्थी में गरवते हैं	54
३, सबक्षित सूत्र		पत्थर से पैर करवा तीन वेदमा	44
<b>४ पविकप श्रुच</b>		बुद्ध जनुरोध-विरोध से शुक्त	9.5
५ मानस सुच		इच्छाओं का नाश	50
६ पत्त सुत्त		सार का वैक वनकर माना	3.0
<ul> <li>भाषत्व सुत्त</li> </ul>		धायतमी में ही भय	96
4 पिण्ड श्रुप		हुद् को सिक्षान सिकी	54
९ कस्तक भ्रूष		सार का कृतक के कप में आवा	44
१ स्वयुत्त		सांशारिक कार्नो की विजय	2
	वीसरा भाग	ः वतीय वर्गे	
१ सम्बद्धक सुत्त		सार का पहकाना	1 1
९ समित्रि धुच		सञ्ज्ञिको बराबा	1 3
६ गोबिक सुच		गोजिक की भारतकृत्या	1 3
१ सचरस्यानि सुच		आर द्वारा खात साक पीड़ा किया बाता	3.8
५ भारबुहिचा सुच		मार कम्पानों की परावय	1 4
	पाँच	वाँ परिच्छेद	
	4 f	मेश्रुणी संयुच	
१ माकविका शुच		कास मोग धीर बैसे दि	1 4
२. सोमा सुच		श्वी-साम क्या करेया ?	1 6
६, किसा गोवमी सुच		अञ्चलकार का शंस	1.5
क विक्रमाञ्चल		काम-सूच्या का बास	1.5
५, उपाक्षका सुच		उत्पक्षणां भी भूति(अधा	11
ৰ ৰাধ্য মুখ		बन्या-प्रदेश के श्रीय	11

कोक सुक्रम-धनत्र रहा है

हेतु सं करपणि और निरोध

इद धासन में इदि

चारमा का जगाव

111

111

111

113

वपश्चाका सुच

९ सेकासुव

१ वितराञ्चल

८ सीशुपचांका सूच

## छठाँ परिच्छेद

## ६. झहा संयुत्त

	पहला भाग	ः प्रथम वर्ग	
९, आयाचम सुन्त		बहार हारा युद्ध की धर्मीपरेश के लिये	
		टरसाहित करना	398
२, गारय सुत्त		युद्ध हारा धर्म का सत्कार किया जाना	990
३ व्याप्रदेव सुत		आहुति बह्या को नहीं मिलती	336
४, वकवला सुत्त		यक बह्या का मान-मर्टन	996
५. अपरादिष्टि युक्त		ब्रह्मा की बुरी दृष्टि का नाश	999
६, पमाद सुत्त		ग्रह्मा को सविश्न करना	303
७, कोकालिक सुन		कोकालिक के सम्प्रमध में	122
८- तिस्सक सुक्त		तिस्सक के सम्बन्ध म	388
९ तुदुमहा खुक्त		कोकाकिक को समझाना	325
१०, कोकाछिक सुस		फोकाकिक हारा अग्रश्नावकों की निन्दा	१२३
	दूसरा भाग	। डितीय वर्ष	
१ सनक्रमार सुत्त		युद्ध सर्वेश्रेष्ट	1 24
२ टेवदस्य सुक्त		सल्कार से खोटे पुरुष का विनाश	9 24
<ul> <li>अस्थकविन्द सुक्त</li> </ul>		सघ-वास का महात्त्र्य	900
<ul> <li>अरुणवती सुन्त</li> </ul>		अभिभ् का ऋदि-अदर्शन	१२६
<ul><li>परिनिध्यान सुन्त</li></ul>		<b>सहापरिनिव</b> रेण	976

## सातवाँ परिच्छेद

	૭. ગ્ર	ासण संयुत्त	
<ol> <li>पाञ्जाति सुन</li> <li>लक्कोत सुन</li> <li>लक्कोत सुन</li> <li>लक्कित सुन</li> <li>तिकक्कित सुन</li> <li>लाहितक सुन</li> <li>स्ता सुन</li> <li>स्ता सुन</li> <li>स्ता सुन</li> <li>स्ता सुन</li> <li>स्ता सुन</li> <li>सुन</li> <li>सुन</li> <li>सुन</li> <li>सुन</li> <li>सुन</li> </ol>	पहला भाग	: अर्हेस् वर्गे  क्रीप का नाश करे  यानिकर्या का दाल  वर्ग के दाल  वर्ग के दीप पर्दी क्याता  अर्हिसक कीन ?  क्रात के सुक्काने वाका कीन हुद्ध दीता है ?  प्रावाण कीन ?  दिविणा के पीरम प्रस्प  विज्ञा की वांच	12 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2

CONTRACT

	दूसरा भाग	ः उपासक यग	
९ कसि सुच		पुद्ध की सेवी	114
२ ठदम सुच		वाप-भार सिक्षादम	114
<b>व वेवदित सुच</b>		हुद्ध की दम्मता बाब का पांच	11
२ महासास सुव		पुत्रों द्वारा निष्क्रांसित पिता	181
५ मानत्वद् सुच		जीभमान म करे	185
६ पण्यविक सुन्त		द्यागदा भ करे	188
• नवकास सुच		र्थगक कर शुका है	188
८ कहरार पुच		विजीन पन में बास	144
• माद्वपोसक सुच		माहा-विहा के पोषक में पुष्क	384
१ निक्पक सुच		निशुक्त सिझ् वर्षी	184
१। संपारव सुत		स्मान से छुक्ति नहीं	125
१० प्रोमदुस्तक प्रच		सन्त की पहकान	195
	জাত	वाँ परिच्छेद	
	6	धक्रीश संयुष	
९ निरुक्तम्य सुरा		वंतीय का दह संकरन	184
२ जरित मुच		राग छोदे	174
३, अविज्ञण्यता सूच		श्रमिमाण का स्थाप	184
४ जानम्द्र सुच		कासराग से मुक्ति का अपाय	15
५ मुमासित मुच		शुजानित के कक्षम	151
६ मास्त्रिच सुन		धारिपुत्र की शुर्वि	141
० पदारमा मुख		शकारमा <i>न</i> ्यमें	148
८ शोसहस्य श्रुच		सद-स्पृति	148
९ कोण्डम्म सुक		भाजभावनेग्डळन के गुण	358
<ol> <li>भोनाक्चाम शुक्त</li> </ol>		सदामीप्रक्षाचम 🕏 गुच	1 "
१३ गमारा मुच		<b>হৰ-লু</b> নি	444
1२ वडीम सुत्त		र्मगीस के उत्तान	9 15 15
	म	वाँ परिच्छेव	
	•	<sup>२</sup> वन संयुत्त	
१ विवेक मुक्त		विवेक में सरावा	140
• वयद्वाम गुन		बद्यो सीमाधीको	940

महक्रिया को उपनेश मिशुओं का स्वराहरू विद्वार प्रसाद थं कर्या

मेम्बारी की अविश्वसा

944

र अनुस्य गुल

(	<b>ং</b> )	
	टेर तक गाँचों में रहना अच्छा नहीं	3 8
	सह लेना उत्तम है	3 €
	भिक्ष-जीवन के सुख की स्मृति	\$ 5
	स्वाध्याय	9 4
	उचित विचार करना	9 6
	जन्म में मंगळ	3.6

बिना दिये पुष्प सुँघना भी चोरी है

9 & ?

965

## दसवाँ परिच्छेद

हुराचार के हुर्गुण

७. नागदत्त सुत्त ८ कुलघरणी सुत्त ९. बन्जियुत्त सुत्त १०. सञ्झाय सुत्त .१. अयोगिस सुत्त १२. मजझन्तिक सुत्त

१३ पाकतिन्द्रिय सुत्त

१३ पहुमपुष्क सुस

### १०. यक्ष संयुत्त

9	इन्द्रक सुन्त	वैदाइप	98
	सक्क सुत्त	उपवेश वेना वन्धन नहीं	98
	स्चिकोम सुत्त	सुचिलोम यक्ष के प्रश्न	9 5, 5
	मणिमश् सुत्त	स्वृतिमाच् का सदा कल्याण होता है	3 8 1
	साबु सुत्त	डपोसथ करने वाले को मक्ष नही पीडित करते	981
	विश्वक्षर सुन्त	विशाच-वोनि से मुक्ति के उपाय	941
	पुनव्यसु सुत्त	धर्म सबसे प्रिय	98,4
	सुदत्त मुत्त	जनायपिण्डिक द्वारा बुद्ध का शयम दर्शन	98
٩	सुक्का सुन्त	शुक्रा के उपदेश की प्रशसा	989
90	सुक्का सुन्त	शुका की मोजन-दान की प्रशंसा	180
99	चीरा खुन्त	चीरा को चीवर-दान की प्रशसा	300
9 9	জাতদক স্তুন	आल्धक-द्मन	9 19 1

	११. शक संयुत्त				
		पहला भ	ग ः	प्रथम वर्ग	
٩	सुयीर सुत्त		उस्स	ाह और वीर्थ की प्रशसा	গু ত ই
٦,	सुसीम सुत्त		परिश	त्रम की प्रशसा	3 9 2
ą	धजन्य सुत्त		देवा	सुर-समाम, त्रिरत्न का सहातम्य	3 10 2
8	वेपचिचि सुत्त		क्षम	। बीर सीजन्य की महिमा	301
ч	सुभासित जय सुन		सुभ	पित	908
٩	कुळावक सुच		ધર્મ	से शक की विजय	900
ঙ	न दुष्टिम सुत्त		घोर	।। देना महापाप है	300
6	विरोचन असुरिन्द सुत्त		सक	ल होने तक परिश्रम करना	300
٩	आरञ्जकद्दसि सुत्त		হাবি	की सुगन्ध	209
90	समुद्रकद्दसि सुत्त		चीर	ो करनी वैसी भरनी	300

हुस	राभाग ः द्वितीयथग	
१ परम शत मुन	दाक्ष के स्थात ग्रह संस्पुद् <b>य</b>	141
१ द्रतिप वत सुन	इन्त्र के सात नाम और उसके प्रत	141
३ द्वतिय वस सूच	इन्द्र के नाम भीर यत	143
र दक्षित्र शुण	पुद्ध मक्त वृशिष्ठ वहीं	148
च क्षामारवस्त्र मृत्य	रमधीय स्थान	143
	माधिक दान का सहारम	168
६ सबसान सूत्र ७ सन्दर्भामुख	मुख् पन्युमा का बंग	144
४ वन्द्रमा गुप्त ४ वन्द्रमा सहस्रमासमा गुप्त	श्रीश्रवाम् शिशु और गृहस्थी को गमस्थार	168
<b>्र दुनिय मह</b> त्रमस्याना सुण	मर्वश्रीष्ठ मुख् का कारकार	164
् दुरिय सद्देशसम्बद्धाः सुन	सिश्च-र्यक की असरशार	145
·		
र्सा	सराभाग द्वतीय वर्ग	
१ झन्स भुत	क्रीच का मध करन रा सुरा	340
<ul> <li>क्रक्किय गुण</li> </ul>	कोच व करने का गुण	144
३, माना सुन	मध्य(। साया	166
<ul> <li>अरवद गुण</li> </ul>	भवराय भार समा	744
भ, ब्रह्मेबन शुण	क्षांच्य क्या श्वीत्य	145
	दूसरा खण्ड	
	निदान वर्ग	
	पत्ना परिच्छद	
	१२ अभिगयय गंपुश	
হুৰুদা মাণ	ः गुद्ध चर्म	
५ देवन ग्रुम	प्रणीत्य सम्बुत्या द	15%
+ विश्वत गुण	क्षणे जनामुक्ता को स्टाल्यर	148
<ul> <li>वर्षक्षा स्व</li> </ul>	क्रियम अपी भार शास्त्रकारी	344
• दिश्यमी मूच	विषया वृद्ध का धनी वरासुनाव का आम	394
" But da	निक्ती नम् यो सर्गान्तरामुक्तन् का क्राय	344

वेश्वन् पुर के प्राप्तिमधुन्तन् का प्राप

म'न नुदर को बर्गन्यसमुगान् का प्राप्त

عياسة واهداء عيدة الشاء ۾ راسيند

भाशार बग

क्रमून्त प्रधीनार केन्द्र

11.

150

14+

111

र केलस् स्व

4 manual alan

Lute mas

१ - प्रत्यत्र स्ट्रेय कर्ण स्ट्रेयवर्थ

<ul> <li>फासुन सुत्त</li> </ul>	चार आहार और उनकी उत्पत्तियाँ	18
३ पठम समणवाद्यण सुच	यथार्थ नामके भविकारी श्रमण-प्राक्षण	20
४. दुतिय समणदादाण सुच	परमार्थ के जानकार श्रमण-धाहाण	₹0
५. करवानगोत्त सुत्त	सम्बद्ध इप्रिकी न्यास्या	200
६, धन्मकथिक सुत्त	धर्मोपटेशक के गुण	201
० अचेक सुन	प्रतीत्व समुत्पाट, अचेल काङ्यप की प्रधारमा	202
८, तिम्बरक सुत्त	सुल-दू ल के कारण	508
९ शासपिडत सुन	सूखें और पण्डित में अन्तर	208
१०, पद्मस सुत्त	प्रसोत्य सञ्चलाद की व्याख्या	ঽ৹৸
तीसराः	-	
	****	
१ पदम वसवछ सुन्त	बुद्ध सर्वोत्तम कहलाने के अधिकारी	₹०७
॰ दुतिप इसवरु सुन	प्रज्ञज्या की सफलता के लिये बचीग	200
३ उपनिसासुल	भाश्रव-स्था, प्रतीत्यसमुत्पाद	200
४ अम्ब्रतिस्थिय द्वन	दु ख वर्तात्वसमुत्पन है	208
<ul> <li>भूमिल सुत्त</li> </ul>	सुज-दु ल सहेत्क है	533
६ डपशन सुत्त	दु स समुखन है	262
७ पदसय सुन्त	कार्य-कारण का सिद्धान्त	ন্ণুই
८, भिक्तु सुच	कार्य-कारण का सिद्धान्त	245
९ पटम समणशहाण सुन	परमार्थ ज्ञतः अमण-प्राह्मण	288
<ol> <li>वृद्धिय संसणवाक्षण सुन</li> </ol>	सस्कार-पारशत श्रमण-शाह्यण	218
चौथा भाग	ः कलार धात्रिय वर्ग	
१ भूतिमद चुत्त	ययार्थ ज्ञाम	Þģu
» क्छार सुच	प्रतीत्यसमुत्पाद, सारिपुत्र का सिंहासन	298
६ पटम आणवाशु सुत्त	ञ्चान के बिपय	296
४ दुतिय नागवत्यु दुशा	ज्ञान के विषय	299
५ पठम अनिजा परवया सुत्त	अविद्या ही दुशों का मूल है	Pgg
६ दुतिय अविकापच्चयासुत	अधिया ही दुलांका मुल है	220
७, न गुम्ह सुल	कारीर अपना नहीं	223
८ पठम चेतना सुच	चेतना जीर संकट्प के अभाव में मुक्ति	229
९ दुतिय चेतना सुत्त	चेतना और सकत्य के सभाव में मुक्ति	245
१० ततिय चेतना सुत्त	चेतवा और संकटप के अभाव में मुर्तिः	222
पॉचबॉ भाग	• गृहपति वर्ग	
१ एडम पञ्चनेरमय सुक्त	पाँच वर-भय की छान्ति	ə સ્ટ્
२. दुतिय पद्मवेश्मय सुत्त	पाँच वेर-सय की शान्ति	223
३. हुक्स सुत्त	दु स और उसका स्थ	225
४. लोक सुन	डोक की उरपत्ति और स्य	20.
५, जातिका सुत्त	कार्यन्कारण का सिद्धान्त	२२५
६, अञ्चतर सुत्त	मध्यम-सार्गं का उपदेश	२१६

<ul> <li>अन्यस्थित स्था</li> </ul>	मध्यम मार्ग का उपहेत	275
र राष्ट्रपश्च मुन	कांक्रिक मानीं का स्थात	224
<ul> <li>पश्म भरिपमादक मृत</li> </ul>	भार्यधानक को प्रशीरपश्चम् पात्र में सम्बद्ध गर्दी	220
<ol> <li>दुनिय सरियमायक गुन</li> </ol>	सायभावक का प्रतीन्यममुत्राद्में सन्दर नहीं	२२७
छर्ग भाग	१ शुक्त यम	
१ परिविभगा गुभ	मर्चेगः हु तः शय क किय प्रतीत्त्रममुत्पाद का मनन	444
<ul> <li>उपादनगुन</li> </ul>	मेमारिक आवर्षयों में पुराई देखन में बु:छ का नारा	444
३ परम मान्त्र अन गुल	आस्वाद्-याग म नृष्णा का बाज	2.5
<ul> <li>पुनिव गरायत्रत्र सुना</li> </ul>	भाग्याद-त्याम से मृत्या का भाषा	93,0
५. परम भरादरण सुन	नृष्ण सहायुद्ध है	22.
६ दुनिय सदारत्य सुल	मृष्मा सहार्थ है	221
सरत गुग	मृश्या तदम इस के समान है	221
८ नामका गुन	मोमारिक मारवाष्ट्रपूर्वन सं विज्ञान की उत्पन्ति	441
ू दिन्यभागुल	गोगारिक भाग्याए-दुर्शन से विज्ञान की प्राप्तीय	281
s শিহনে যুল	धनीत्रममुत्पात् भी सम्बद्धिता	222
मानचौ	भाग ः महायग	
५ परम मागुत्रशासुन	विका सम्पूर जना है	122
१ युनिय भागाचा गुग	पश्चम्यन्य के बैरारच में शुन्द्र	*12
३ भूतर्भागम्य	वाद अकार के कादार	424
<b>क कथिरास गुन</b>	पार मकार के अपहार	824
भ, बारर मुख	मार्च क्रशंतिक सार्ग वार्याम बुद्ध-मार्ग है	125
६ नामसभागं गुज	नाप्यास्त्रिक सम्बद्ध	984
• मतदगण गुन	व्यासम्बद्धी उत्तरित का निवस	415
< कलाको सूच्य	मन का विश्वच ही विचीन	2.4
<ul> <li>अवकृति गृतः</li> </ul>	महामरत का द्वारा	***
३ मृतसम्म	भंगे स्थान राज्य के बहुवान निर्वाश का ज्ञान	\$45
भारती भाग	1 धमण मासन स्थ	
१ वरमय मुळ	वश्याचीराचा ध्रमानामध्यम्	444
इ१ वस्तव श्रीत	पश्चामीयामा धानाम साम्राम	EAA
१३ वस्तव सूच	पश्चार्णसम्बद्धाः अध्यक्षः अन्तरम्	***
	र अभाग गरमान	
	व राजेलक के विके पुत्र की क्षेत्र	984
	dadied of the tem yes	444
	कार्यकृष्य में हिला कृत्यु कृत्या	944
	to in a few you game	144
	सक्तर के यू एक के मुन्दे के कुर्र के बार के स्वता के स्व	11
	Committee and the state of the	386

## ( 13 )

■ आतष्य सुत्त	यथार्थज्ञान के लिये उद्योग करना	286
८ विरिय सुच	ययार्थज्ञान के लिये वीर्य करना	२४०
९, सातच सुत्त	यथार्थज्ञान के लिये परिश्रम करना	ર્ષ્ટ
०. सति सुन	यथार्थज्ञान के जिये स्पृति करना	280
१ सम्पन्डभ सुत्त	ययार्यज्ञान के लिये संप्रज्ञ होना	286
२ अपमाद सुत्त	यशार्थज्ञान के लिये अप्रमादी होना	586
दसवाँ भाग	: अभिसमय वर्ग	
१. मखसिख सुस	स्रोसत्पद्ध के हु ख अस्यल्य हैं	840
२. पोक्खरणी सुन्त	स्रोतापन्न के दु ख अत्यहप हैं	200
३ सम्मेजाउदक सुन	महानित्यों के सगम से गुलवा	2140
४ सम्भेजाउनक सुत्त	महानदियाँ के खगम से चुलना	१५१
<ul> <li>पठवी सुच</li> </ul>	पृथ्वी से सुलमा	Rug
६ पडवी खुक्त	<b>पृ</b> ष्वी से तुलमा	249
<ul> <li>समुद्द सुन्त</li> </ul>	समुद्र से तुलना	२५१
८. समुद्द शुक्त	ससुद्र से तुलना	219
९ पव्यत सुन्त	पर्वत की उपमा	prid
९० पटवत सुक्त	पर्यंत की उपसा	नप्
११ पत्रवत सुत्त	पर्वेत की उपसा	શ્પાય
	दूसरा परिच्छेद	
	१३ धातु संयुत्त	
पहला भाग	ः नामात्व वर्ग	
१ भातु पुत्र	धासुकी विभिन्नता	२५६
९ सम्प्रस्स सुन्त	रपर्शं की विभिन्नता	<b>२५</b> ३
३ नोचेत शुक्त	धातु विभिन्नता से स्पर्श विभिन्नता	રપર
४ पठम बेदना खुक्त	वैषना की विभिन्नता	રપછ
५ दुतिय वेटना सुस	वैदना की विभिन्नतः	<b>२५</b> ४
द धातु सुस	धातु की विभिन्नता	કપૂપ
७ सम्बा सुन्त	संज्ञाकी विभिन्नसा	2014
८, भी चेतं सुत्त	धातु की विभिन्नता से सजा की विभिन्नता	544
९ पठम फस्स सुन	विभिन्न प्रकार के लाम के कारण	२५६
१० द्वतिय भस्स सुच	घातुकी विभिन्नता से ही सन्ताकी विभिन्नता	2146
दूसरा भाग	: इितीय वर्ग	
1 सलिम सुत्त	सात धातुर्वे	206
॰ सनिदान सुत्त	कारण से ही कार्य	२५८
३ गिअकावसय सुच	धातु के कारण ही सज्जा, हिंह तथा वितर्क की उत्पत्ति	200
<ul> <li>हीनाधिमुत्ति सुन्त</li> </ul>	धातुओं के अनुसार ही मेलजोड़ का होना	260

## ( 88 )

	भातु के महसार ही सर्जों में अंखबोळ का होगा	*1
., बद्रमं शुच	बाहु के ब्युसार ही ग्रेक्कील का होगा	251
६ सगामा सुच	पासु के बशुसार हो ग्रेक्कोस का होगा	२११
• बसव मुक	बातु के अनुसार हो शेकबोल का होना	* \$ \$
−१ यद्य मुचन्द्रा	and a state of state of the	
दीसरा भाग	ः कर्मपथायर्ग	
) असमाहित सुच	बसमाहित का असमाहितों से मेक होना	२६६
	हुत्सीक का हुत्सीकी से मैस दोना	सदर
२ बुस्सीय सुच १. वज्रसिक्कापद सुच	हुरे हुएँ। इस साथ करते तथा अच्छे अच्छी का	468
•	सात कर्मपण वार्की में मेकबीक का दौना	258
४ शतकस्मापम सुत्त	व्स करीवय बार्जी में मेकबीक का हीना	व्यक्ष
<ul> <li>इस्तरसम्बद्धः</li> </ul>	अलुस्तिकों में मैक्कोक का दोना	288
६ महिदिकसुत्त	न्यांगों में मेक्सील का दोना	२६४
<ul> <li>इसद सुष</li> </ul>	determ a amount of all the	
वीषा मार	ः चतुर्धं वर्ग	
	चा बाहर्वे	१६५
1 42 Be	पूर्वज्ञान चातुओं के आस्ताद बीर हुप्परिकास	114
२ पुरुष शुक्त	भातुमीं के भारतादम में विभाग करना	154
३, अवरि धुत	धातुमां के वधार्यकाव से ही सकि	244
४ की केई शुक	बातुओं के बवार्षशान से मुक्ति	255
५, पुरस्त प्रुच	भाग्नजी की चिरकि से ही चुन्त्र से सक्ति	250
६ असिनन्दन सुच	बाह-विराव से दी दुन्य-मिरोध	२६७
• बन्सद् सुन	चार बालुयें	240
८ पदम समनमाक्षत्र गुच	चार चातुर्वे	250
९ शुविष समयबाइन सुच	शार धानुचे	284
<ul> <li>हतिय समजप्राद्धम सुन्तः</li> </ul>	4131	
	<b>भीसरा परिष्णेष</b>	
	१४ अनमतग्ग संयुच	
पदला	भाग ः प्रथम् थग	
१ वित्रवह मुख	संसाद के प्रारम्भ का बता नहीं धास-कड़बी की कपमा	* 5.5
<ul> <li>पश्ची सुन</li> </ul>	र्गमाए के बारम्म का पता नहीं पूर्णी की करका	* 50
रू. अस्तुः <del>सुन्</del>	र्ममार के भारतम का पता नहीं चाँखू की जपमा	स्ट्र
५ भीर गुण	र्मगार के प्रारम्भ का बता नहीं क्षूब की बचसा	7.0
🕶 पश्चम गुण	चक्य भी चीर्यता	84
६ साम्ब सुन	पक्त की बीर्धता	7+1
• साबह गुन	नीते हुए वजा आक्य दे	241
< नेवा <del>ग्र</del> ू	बीते हुए बस्त आरम्ब है	4=1
4. चन्द्र सुन	नीमार के प्रारम्भ का वक्त नहीं	4+4

## ( १५ ) संसार के प्रारम्भ का पता महीं

:

हितीय वर्ग

१०. पुग्गल सुत्त

दूसरा माग

₹७२

१, दुगात सुत्त	हु·खी के प्रति सहाचुमृति करना	२७३
२, सुखित सुत्त	सुखी के प्रति सहानुभूति करना	२७३
३, तिसति सुत्त	आदि का पता नहीं, समुद्रों के जल मे ख़न ही अधिक	২৩%
४, माता सुरु	माता स हुए सस्य असम्भव	२७६
५-९, पिता सुन्त	पिता व हुए सरव असम्भव	२७६
१०. बेपुल्लपब्बत सुत्त	बेपुस्कपर्वंत की प्राचीनता, सभी संस्कार अनित्य हैं	२७१
	चौथा परिच्छेद	
	१५ काञ्चप संयुत्त	
१, मन्तुह सुस	प्राप्त चीवर आदि से सन्तुष्ट रहना	হ্ ৩
», अमोत्तापी सुत्त	आताची और जोचापी को ही जान-प्राप्ति	२७१
३ चन्दीपम सुधा	चाँद की तरह कुछा मे जाना	२७
४. इल्प्पा सुत्त	कुठों में जाने योग्य भिक्षु	₹ ७ ०
५. जिण्ण सुत्त	आरण्यक होने के लाभ	२७४
इ, पटम लोबाद श्रुप्त	धर्मोवदेश सुमने के लिये अयोग्य भिक्षु	২৩
७ दुतिय ओबाद सुत्त	धर्माववेषा सुमने के लिये अयोग्य भिक्ष	200
८. ततिय शोबाद खुत्त	धर्मोपदेश खुनमें के लिये अयोग्य भिक्ष	26
९. झानाभिङ्जा छुत्त	ध्यान-अभिका में काइपय युद्ध-सुख्य	20
१०, उपस्तय धुक्त	धुरुलतिस्ता भिक्षणी का संघ से बहिएकार	961
११ चीवर सुस	आनन्द 'कुमार' जैसे, धुस्छनन्दा का सब से बहिक्कार	24
१२ परस्मरण झुक्त	भन्याकृत, धार आर्य-सस्य	36
१६. सङ्ग्मपतिरूपक सुक्त	नक़की भर्म से सन्दर्भ का कीप	२८
	पाँचवाँ परिच्छेद	
	१६. लामसत्कार संयुत्त	
पहला भाग	ः प्रथम वर्ग	
s दारुण <del>धुत</del>	काससत्कार चारण है	260
- बालिस सुत्त	काससरकार धारण है, वशी की उपमा	२८।
३ फ्रम्म सुत्त	लामादि मयानक हैं, कछुषा और व्याधा की उपमा	200
४ दीचछोमी सुस	रुम्बे बाछवाछे भेंदे की उपमा	30
<ul><li>वंद्यस् सित्र</li></ul>	रूपसरकार से मानन्दित होना महिसकर है	260
६ असनि सुत्त	बिजली की उपमा और छाशसरकार विपेका तीर	24
७ दिश्व सुत्त ८, सिमाक सुश	ावपञ्जा तार रोगी शरमास्त्र की उपमा	261
ं, त्यमाक सुच	राजाः रक्षाल का समझा	₹61

९. बेरम्ब सुच	इन्द्रिकों में संयम रक्षता बेरम्ब बायु की बचमा	244
१ संगाभा सुच	सामसल्बार वादण 🖁	₹₹+
वूसरा मार	ा । व्रितीय वर्गे	
१ पटम पात्ती सुत्त	कामसन्तर की मर्वकरता	253
२ दुविय पाठी सुच	काभसरकार की भवंकरता	881
६३० सिडी सुच	काससद्भार की सर्वकरता	351
तीसरा भा	ग ः द्वतीय वर्ग	
९ मातुगाम श्रुच	कामसन्त्रार शस्य है	२९२
२ कम्बामी सुत्त	कामसत्त्वार शहन है	242
३ प्रच सुत्त	कामसत्कार में न पैसमा जुद्ध के आधुर्स माधक	252
<ul> <li>प्रकारत सुच</li> </ul>	कामसरकार में न पेंसना हुद की भावते भाविकार्ने	959
५, पदम समजनाञ्चल सुच	कामसल्कार के प्रधार्व दोप-झान से मुक्ति	258
९ हुतिय समयग्रहाण सुक	कामसन्कार के दक्षार्थ श्रीप-श्राम से मुक्ति	152
<ul> <li>विद समनत्राहल मुच</li> </ul>	शामसन्त्रात् के प्रधार्व शोप-जाब से मुक्ति	252
८ छवि श्रुच	ब्रामसत्का काक को सेव देता है	958
९ रस्त्र श्चर	कामसम्बन्ध की इस्सी खाक की केंद्र देशी है	252
१ मिक्सुसुक्त	कामसम्बार वर्षेत् के किए सी विम्पकारक	१९४
चौधा मार	ग । अनुचै वर्ष	
९ मिमि सुच	कामसन्कार के कारण श्रीष में पूर	754
१ सूक श्रुष	पुण्य के सुक का करना	224
३ वस्स सुध	कुमाय मन्नी का करला	254
र सुक्कवस्य सुच	धुरक धर्म का करना	994
५ प्रकार सुच	वृत्रवृत्त के कब के किए कामसत्कार का उत्पन्न होना	**4
६ स्य द्वर	वैभवस का कामसरकार उसकी शांति के किए	225
<ul><li>भावा श्रुच</li></ul>	कामसकार शहम है	225
८–१३, पिता <del>शुव</del>	कामभावार वृक्ति है	256
	छठाँ परिष्णेव	
	९७ राहुङ संयुच	
प	इसा भाग ः प्रथम थर्गे	
। वस्तु सुच	इतिवर्षी में अभित्य बुत्रा जशास के सवन से विसुन्ति	***
र कप शुक्त	का न नागल प्राप्त <b>अनामा क्षेत्राला से किल्ली</b>	220
३. विक्रमण सुन	निश्चान में अनित्य पुत्रम्, जभारम के सनन से मुन्धि	220
<ul><li>भ सम्बद्धर भृतः</li></ul>	संस्था का जनक	315

संरक्षी का सकत

चंद्रना का समय

मंत्रा का अनम

५, बेर्मा लुल

६ सहया सुच

296

954

\*\*4

## ( ୧૭ )

र्यचेतमा का सनन

296

	mermir :	का सनग	26%
दं. तव्हा सुत्त	_		59%
९ धातु सुत्त	_	न्न सम्म	२९८
१०. सन्ध सुत्त	स्कन्ध	का सनन	• •
दूर	तरा भाग	· हिनीय वर्ग	
१ मन्तु सुन		अनित्य-हु ख-आनात्म की भाषना	२९९
२-१०, ह्रद सुत्त		भनित्य-हु ख-अवास्म की भावना	<b>२</b> ९९
११, अनुसय सुत्त		सम्यक् मनन से मानानुशय का नाश	२९९
१२. अपगत सुत्त		ममन्त्र के त्याग से मुक्ति	800
	सात	वाँ परिच्छेद	
	8<	८. लक्षण संयुत्त	
,	पहला भाग	प्रथम वर्ग	
१ महिपेसि सुच		अस्थि-जंकाल, गीहत्या का दुष्परिणाम	803
<ul> <li>गोघातक सुक्त</li> </ul>		मासपेशी, गीहत्या का बुध्परिणाम	३०२
१ पिण्डसाकुणी सुत्त		पिण्य और चिडिमार	Bok
४ निष्ठवीरविभ सुत्त		'खाल उत्तरा और भेड़ों का कसाई	३०२
५, असिस्करिक सुत्त		तलवार और सूभर का कसाई	ã° र
६ संचिमागवी सुच		वर्छी-बेसा लोम और बहेकिया	३०२
७ उसुकारणिक सुत्त		याण-जैसा क्रोम और अन्यायी द्दाकिम	३०२
<ul> <li>स्चि सारथी सुन्त</li> </ul>		सुई-जैसा कोम मोर सारथी	ह ∘ ह
९ ब्रूचक सुत्त		सुई-जैसा क्रीम और स्चक	見の見
१० सामझ्टक सुत्त		दुष्ट गाँच का पश्च	३०३
	दूसरा भाग	डिसीय वर्ग	
१ कृपनिसुगा सुन		परसी-गमन करतेवाका कृपे में गिरा	808
२ गृथसाडी सुस		मृह साने वाला दुष्ट वाद्यण	808
३ निच्छवित्यी सुप्त		खाल उतारी हुई छिनाक स्त्री	208
४ मगिकस्यी सुन्त		रमछ फेंकने वाली मगुली स्त्री	३०४
५ मीकिटिनी सुन		सूखी—सीत पर अगार फॅक्नेवाखी	इंब्ध
६ सीसछित्र सुन		सिर कटा हुना जान्	ই০৬
० भिष्यु सुन		भिञ्च	304
८ भिषयुनी सुना		शिश्चणी -	\$ o u
९ सिष्कमाना सुन		दिश्चमाणा श्रामणेर	304
१० सामणेर सुच ११ सामणेरी सुच		श्रामणर श्रामणेरी	ર્ <b>૦</b> ૫
11 सामगरा स्र		Set at set if i	३०५

## आठवाँ परिच्छेद

## १९ औपम्प संयुत्त

१ कर शक

४ नदसुच

५. सुद्रात सुच

६ भदिव सुच

८ नम्बस्य

५ दिस्स सुच

१ भेरनाम सुख

११ कप्पिन संच

१९ सहाव सुख

• विसाच श्रुच

समी अक्सक विचासका है

विविश्वता से विर्वाण की मासि नहीं

हुन हारा सुमात की प्रचंसा

शारीर से नहीं काल से बचा

**जबैका रहते वाका कील** है

भावुत्मान् कृष्यिव के गुर्भों की मश्रंशा

धर्म का उपरेक्त करे

नहीं विषयमा उत्तम

वो कविमाव मिल्ल

मन्त्र को सपरेच

111

212

111

148

794

294

215

214

310

२ नकसिक सूच	मशाव्य अकामा	R 5
३ इक संच	मेची-भाषमा	3.5
४ कोरका श्रुष	मैची-भावना	2 0
<b>५ स्वि<u>ध</u>त्त</b>	मैत्री भाषवा	2.0
र पतुमार छूच	भगमाय के शाध विहरना	3 .
<ul> <li>भागी सुर</li> </ul>	शस्त्रीर कर्मी में सन क्यांना सहित्य करन	3 6
८ कसिंगर सूच	क्रकड़ी के जने तक्त पर सोवा	2 6
९ मागञ्ज	काककरहित भोजन करना	1.5
। विकार सुच	संगम के साथ निकारन करणा	3, 5
११ पदम सिगाक सुच	भगमाद के शाम विदरणा	3,1
१२ वृतिय सिगाक सुरु	कृतस्य क्षीमा	3,1
	भर्षों परिच्छेद	
	२० मिश्रु संयुत्त	
। कोकित सुच	आमें और-साव	211
१ वपविस्स श्रुक	शारिएक की सीक वही	211
र, घर सूत्र	ममधावकों की परस्पर स्तुति कारध्य-वीर्व	828
-		4,1,1

## तीसरा खण्ड

## खन्घ वर्ग

## पहला परिच्छेद

## २१ं. स्कन्ध संयुत्त

#### मूल पण्णासक

पहला भाग	नकुरूपिता वर्ग	
१. नकुळपिता सुत्त	चित्त का आतुर न होना	३,२ १
२ देवदृह सुत्त	गुरु की दिक्षा, छन्द-राग का दमन	1,22
<ul> <li>पटम हालिहिकानि सुत्त</li> </ul>	मागन्दिय-प्रश्न की व्याख्या	<b>ક્</b> રધ
४ शूतिय द्वासिद्देशनि सुन	यक्त-प्रदन की व्याख्या	३२६
५ समाधि सुत्त	समाधि का अभ्यास	३२६
६ पडिसस्कान सुत्त	ण्यान का अभ्यास	१२४
७ पडम डपादान परितस्तना सुन	डपादान और परितस्सना	8,2 थ
८ दुविय उपादान परितस्तना सुत्त	उपादाम और परितस्सना	880
९, पटम अवीतानागत सुन	भूत और भविष्यत्	220
१० दुतिय असीतानागत सुन्त	भूत और भविष्यत्	३,२९
११ वतिय अतीवानागत भ्रुत	भूत और भविष्यत्	8,00
वृत्तरा भाग	अमित्य वर्ग	
) अन्दिष्य हुन्त	<b>अमि</b> रयता	330
२ दुक्स सुक्त	दु स	880
३ अनस सुस	वनस्भ	120
<ul> <li>पठम धदनिश्च सुन्त</li> </ul>	अभित्यता के गुण	3,8,0
५ दुतिय यदनिरुच सुन्त	दु स के गुण	229
६, ततिय यदनिस्च सुन्त	<b>भ</b> नातम के गुण	3 8, 9
० पटम हेतु सुन	हेतु भी अनित्य है	及及9
८ दुतिय देतु सुन्त	हेतु भी दु स है	2,2,2
<ul> <li>स्तिय हेन्द्र सुन्त</li> </ul>	हेतु भी अनादम है	8,8,9
१० अनम्य सुक्त	निरोध किसका ?	ક્ર્ક
तीसरा भाग	- भार चर्म	
३ भार सुत्त	मार को उतार फॅकवा	इह
२. परिष्मा <del>द्य</del> स	परिक्षेय और परिक्षा की व्यास्या	E B S
३ अभिजान सुक	रूप को समझे विनादु सका क्षय नहीं	28.6

छम्ब्बाग का स्थाम

४. छन्दराग सुच

	( 30 )	
५, वस्म बस्माद् शुक्त	कृपाणि का भारताव	227
६ वृतिप भस्साद सुच	भारताद की जोन	224
<ul> <li>वविय जस्साद ग्रुच</li> </ul>	मास्वाद से ही जासकि	R\$4
८ समिनन्द्रन सुच	अभियन्द्रम से दुःव की उत्पत्ति	इद्देश
९, डप्पार् सुच	क्य भी जलकि हुन्य का करपाद है	225
१ ध्रममूख सुच	greg का सूच्य	221
११ पर्मग्र सुच	<b>भवर्मगु</b> रवा	121
नौधा माग	ः स तुम्हाकः धरौ	
१ परम व सुम्हाक सुच	को अपना नहीं उसका त्याग	220
१ बुविय न तुम्हाक सुच	क्षो अपना वहीं उसका स्वाम	220
६, पठम मिरब सुच	बहुशय के बहुसार समझा कामा	110
<ul> <li>बुविव मिन्तु पुष</li> </ul>	संतुत्तव के कनुसार मापना	114
५, पटम भागन्य सुच	किनका अस्पाच काथ और विपरिचास 🕈	114
<ul> <li>बुविय ध्यानन्द पुण</li> </ul>	क्षित्रका बल्ताम् काय और विपरिभास ?	885
• पदम अञ्चलम भुच	निरक्त दोकर निवरना	1111
८ हृतिप अनुपन्न सुच	व्यक्तिस्य सम्बद्धाना	1.7
९ विविध अनुबन्स सुच	हुन्य समस्र	1,1
🥫 चतुत्प अनुसम्म धुन	चक्का समझना	3,10
पाँचयाँ भाग	भारमञ्जीप सर्ग	
a, भचतीय शुच	जपना भाषार भाष वनवा	1,111
१ पडिपदा सुच	सत्त्राच की बस्पचि और निरोध का सार्य	3,91
३, पडम धनिष्यता सुन	व्यविस्पता	194
४ द्वतिद अनिष्यता सुक	अविक्यता	288
भ, समनुपस्तवा सुच	बायमा मानने से 🚮 व्यस्ति की अविद्या	188
६ चन्य प्रुच	पाँच स्कन्ध	545
• पडम सोण सुच	यमानै का अस्त	141
< शुविय सीम सुच	समय और शाक्षण कीय ह	588
६, दुविय वश्वित्त्वय द्वाच	व्याचन्त्र का श्रंप की ?	244
१ बुदिय गम्बिक्सब सुक	क्षय कर वंगाचे मनग	8 84
,	रूसरा परि <del>च्</del> येव	
	मन्त्रिम पण्णासक	
पह्या मान	ा खप्य खर्ग	
१ डएव सुच	<b>अगसक विसुन्त है</b>	4 2 3
२, बीज सु <sup>ख</sup>	पाँच प्रकार के शीख	111
्र बदान सुख	शासमी ना श्रम सैरी १	540

वयादाय स्वन्त्री की व्याच्या

६, बहान मुख इ इपादान वरिवत्त मुख

	( " )	
	मात स्थामाँ में फुझल ही उत्तम पुरुष है	३४९
५ - सत्तद्वान सुत्त	मुद्द और प्रज्ञाविसुक्त भिक्षु में भेद	રૂપક
६. ब्रस् सुन	समित्य, पुःख, समाता का उपटेका	243
• - पाउवस्मिय <b>सु</b> त्त	सत्वीं की छुद्धि का हेतु, पूर्णकाश्यप का अहेतु-वाद	345
८ महािक सुत	इतादि जल रहा है	३५३
९, आदित सुत्त	सीन निरुक्तिपथ सदा एक-सा रहते हैं	३५३
१०. निस्तिपय सुत		
दूसरा भाग	. अर्द्धत् वर्गे	
१डपादिय सुच	उपादान के स्थास से मुक्ति	३५४
१. भडनमान सुत्त	मार से सुकि कैसे ?	ર્પછ
३. अभिनन्दन सुन	अभिनन्दन करते हुए मार के धम्धन में	३५५
४. अनिच सुस	स्टम्द् का त्याग	800
४, दुक्त सुत्त	कुम्द् का स्यास	इए५
४, दुरल छुण ६. अनन छुच	क्रम्य का स्थान	द्रप्रय
७, अनसनेटर दुस	छन्द का स्थाय	ક્ષુપ્રપ
८. राजनीयसण्डित <del>युव</del>	छन्द का स्याग	३५५
९, राध सुत्त	शहंकार का नाश कैसे ?	इपद
१७, सुराय सुत्त	अहंकार से चिश्व की विमुक्ति कैसे ?	ই ৭ ই
	. खज्जनीय वर्ग	
त्रीसरा भाग		
३, अस्साद सुत्त	सास्त्राद का थथार्थ ज्ञान	\$140
२. पठम समुद्रय सुत्त	करपत्ति का ज्ञान	8,40
६, दुतिय समुदय सुन	बरपत्ति का ज्ञान	840
४ परम अरहन्त सुच	षहेत् सर्वश्रेष्ठ	३५७
५, दुतिय सरहन्त सुन्त	नहंत् सर्वधेष्ठ	१५८
६ पठम सीह सुन	खुद का उपदेश सुन देवता भी भवसीत हो जाते हैं	३५८
७. दुतिय सीह खुक	पेवता धूर ही से प्रणाम करते हैं	१५९
८. पिण्डोल सुस	को मी की सुर्वादी से तुकना	263
९ पारिलेख्य सुत्त	आधर्मी का क्षय कैसे ?	<b>१११</b>
१०. पुष्णमा सुन	पञ्चस्कर्ग्धी की ब्यास्या	इद्ध
चौधा भाग	ः स्थविर वर्ग	
१. शानम्द सुन	उपादान से जईभाव	農養田
२. तिस्स सुत्त	राग-रहित को क्षोक नहीं	₹६७
३. थमक सुच	स्त्यु के बाद अईत् क्या होता है ?	\$ 13
४. अनुराध सुत्त	द्वुच का निरोध	<i>३७२</i>
प, पक्किंश सुन्त	जो धर्म देखता है, वह बुद्ध को देखता है, वरुक्टि द्वारा	D 10.0
· verselle ause	बात्म-इत्या बेदमाओं के प्रति आसंक्ति नहीं रहती	\$ 10 E
६. अस्सजि सुक ७ योमक सुत	बद्दमाना के अन्त आसाक नहीं रहता उदय-ध्याय के समन से भुक्ति	१७५ १७५
a suma an	And a start of Olim	400

	( 44 )	
८ वस सुच	इद का मध्यम सार्ग	2 = 9
९ पढम राद्वक सुच	पश्चरकम्थ के शाब से आईकार से मुक्ति	2.4
<ul> <li>इतिय सङ्घळ शुक्तः</li> </ul>	किएके जान से मुक्ति !	14
पाँचवाँ माग	ः पुष्प यम	
१ नदी सुच ~	निरयता के जान से पुनर्जन्म नहीं	141
<ul> <li>प्रण प्रच</li> </ul>	बुद्ध संसार से अनुपक्षिष्ठ रहते हैं	141
१. केम सुच	शरीर में कोई सार नहीं	249
<ul> <li>गोमव धुन</li> </ul>	सभी सहकार व्यक्तिस ै	248
५ वक्रसिक द्वर	समी संकार भनित्य 🖁	244
<b>१</b> सामुर्क धुन	मग्री संस्कार अभिस्प 🖥	144
<ul> <li>पदम यर्दुल घुत</li> </ul>	व्यविद्या में पड़े शामियों के दुःश का भन्द नहीं	244
८ दुविय गर्फ पुर	विरम्तर वारमचिन्तन करो	264
९ नाम भुक	भावना से जासचीं का क्षप	264
१ सम्बासुर	श्वनित्य-संज्ञा की सावना	344
ŧ	ीसरा परिच्छेद	
	चूळ पण्पासक	
पहला भाग	ः सन्त वर्ग	
१ अन्त श्रुच	चार भन्त	145
२ <b>हर्ग्य</b> प्रव	चार आयेसन्य	269
३, सरकार पुरु	सम्बद्ध	89
<ul><li>वरिष्ण्येव सुत्त</li></ul>	परिद्येष धर्म	89
भ, पढ्न समज सुच	र्मीच बपादान स्थल्य	RS.
६ दुवित समय सुच	र्थीय अपादाम स्वम्य	3.5
<ul> <li>स्रोतापन्त सुच</li> </ul>	चोवापच की परमञ्जान की प्राप्ति	3.5
<ul><li>वरहा शुच</li></ul>	<del>श्रा</del> व	441
९ वडम अन्दराय सुच	धन्त्रराथ 🕶 त्याय	243
१ शुक्रिय क्रम्प्रसम् सुन्त	क्षम्पुराग का त्यास	191
रूखरा माग	म् धर्मकथिक वर्ग	
। पश्च मिन्तु शुक	मनिया प्रया है ?	232
२ बुदिव भिन्तु श्चय	विधा क्या है है	३६२
१, परम क्या सुच	कीई वर्गक्रमिक वैसे दोशा ?	299
<ul> <li>हतिय कविक छुण</li> </ul>	कोई वर्मकपिक कैसे होता ?	198
५, बन्धव सुच	चन्यम	141
् वस्म वरिमुचित सुच - किन परिमुचित सुच	कप के बचार्य भाग से पुत्रज्ञेग्य नहीं	111
<ul> <li>हृतिय परिमुखित सुख</li> </ul>	क्य के वर्षार्थ शाम सं पुलर्शनम वर्षी	191
<ul> <li>सम्बोदन ग्रुप</li> </ul>	र्यधोजन	454

		રૂલ્ય
<, द्वपादान सुत्त	उपादान	
५०, सीक <b>सु</b> न	शीलवान् के सनन-योग्य धर्म	368
११, सुतवा सुत्त	ध्रुतधान् के मनन-योग्य धर्म	364
१२. पटम कृष्य सुत	अहंकार का त्याग	इदप
१३, द्रुतिय कप्प सुप्त	भाइंकार के त्याग से मुक्ति	ક્રું લુખ
14. 2		
तीसरा भाग	: अविद्या वर्गे	
१, पदम समुद्रयधन्म धुत्त	मविद्या क्या है १	३९६
२, दुविय समुद्रयधम्म सुन	मविद्या क्या है ?	३९६
३. तसिय समुद्यधम्म सुत्त	विद्या क्या है ?	३९६
४. पठम अस्साद सुत्त	अविद्या क्या है 7	\$ 40
५. दुसिय भस्साद सुच	विधा क्या है ?	340
६. पटम समुद्रय सुन	अविचा	३९७
७ दुतिय समुदय सुध	विद्या	इ९७
८. पटम कोहित सुन	अविद्या स्था है ?	त्देश
९ दुतिय कोहित <del>दुन</del>	बिद्या	१९८
१० ततित्र कोहित सुच	विद्या स्रोर सविद्या	३९८
	2	
चौधा भाग	: कुक्कुल वर्ग	
१, कुम्कुङ सुन्त	क्रम अधक रहा है	३९९
२, पटम अभिन्न सुत्त	<b>अ</b> नित्य से इष्ठा हटाओ	3 4 9
६-४ द्वतिय-ततिय-अनिश्व सुत्त	अनित्य से छन्दराग इडाओ	इ९९
५-७, पठम-दुतिय-तिश्य दुक्ख सुक्त	दु स से शग हटाओ	₹ લ ૧
८१० पठम-दुतिय-ससिय अनस सुका	अनास्म से राग इटाओ	800
१९. पटम कुलपुत्त श्रुत	वैराय्य-पूर्वक विहरना	800
१२, दुतिय कुळपुत्त खुत्त	अनित्य बुद्धि से विहरना	800
१३ दुक्त खुल	अमारम-बुद्धि से विद्यना	800
पॉचवॉ भाग	ः द्दप्रिवर्ग	
१, अञ्चलिक सुन्त	अध्यात्मिक सुख-दु ख	808
२, एव मस सुज	'यह मेरा है' की समझ क्यों ?	808
३. एसी असा सुत्त	'आरमा छोक हैं' की मिय्यादिष्ट क्यों ?	४४ २
४, नी च में सिया सुत्त	'न मैं होता' की मिथ्यादिष्ट क्यों ?	805
५ मिण्छ। सुक्त	सिष्या-दृष्टि क्यों उत्पन्न होती है ।	805
६. सक्काम पुरा	सकाय इप्टि क्यों होती है ?	४०२
७ शन्तातु सुत्त	आयम-इष्टि भर्यो होती है ?	, ४०३
८ पठम अभिनिवेस सुस	सयोजन धर्यो होते हैं 9	Bog
<. दुतिय मभिनिवेस सु <del>च</del>	संयोजन क्यों होते हैं ?	80#
1 • . সাব <b>ল্द স্তু</b> ম	समी सस्कार अनित्य और द्वु-ख ईं	४०३

## वृसरा परि**च्छे**व

## २२ सध संयुक्त

वह्ळा भाग	ः प्रथम बर्ग	}
१ मार सुच	मार क्या है ?	804
१ सच पुत	भासक कैसे होता है ?	804
३ मक्नेचि सुच	संसार की डोरी	* 4
<ul> <li>परिज्लेष्य सुन्तः</li> </ul>	वरिक्वेच परिकाकार परिक्रासा	8 4
५, पदम समज सुन्त	वपापान-रहन्तीं के शासा ही समय-माद	লে ভঙ্
६ बुटिय समज सुरु	डपादान स्कन्मों के काता श्री शमन-याहा	य १७
<ul> <li>सोवायम्ब सुक्तः</li> </ul>	स्रोतापन्य निरूपय ही हान प्राप्त करगा	8 *
८ अरहा सुच	क्यानाथ-स्क्रमंथि क्याची शावती नर्वत्यक्री	। मासिष्ट • •
९ परम कन्द्रशय धुक	कप के छन्त्राम का लाग	
३ दुविष प्रम्यसम् सुच	कर के कन्द्रशाम का स्थाय	7+4
<b>दू</b> खरा माग	ः द्वितीय वर्गे	
१ मार चुच	मार चना है !	* 5
२ सारमस्य प्रुच	सार वसे क्या है १	* *
६, पहल वनिषय प्रुत	जनित्य क्या है ह	* 5
४ दुतिब अभिष्य पुण	<b>अ</b> नित्म अर्जे क्या <b>है</b> ?	* 5
५-६ वडम-दुविय दुश्य श्रुष	क्य दुःका दे	9.5
•—८ पड़म-बुविय बनच श्रुष	क्य व्यास्त है	91
•्र चपवम्मं सुच	सम्बर्ग नया है ?	88
१ व्यवस्य सुच	म्मम धर्म क्वा है १	*1
११ समुद्रयसमा ध्रुष	बसुरम बर्ग क्या है ?	*1
१२. विरोधसम्बर्धाः श्रुष	निरोध वर्ग क्या है !	99
तीसच भाग	ः भाषाचन वरी	
३ मार पुच	मार के प्रति शुष्या का स्थान	989
६. मारबस्म सुच	मारचर्मं के प्रति सम्बराय का स्थाय	711
३-४ पदम-दुतिय अनियम श्रुण	व्यक्तित्व और व्यक्तित्व सभी	**1
५-६, परम-बुविव हुन्छ सुच	शुःख और शुःस-धर्म	*11
•— ६ परम-शुविष व्यक्त सुक्त	सभारम और समारम-मधी	*11
९१ - रावबस्म-वर्वबस्म सुन्त	सम चर्म और व्यच चर्म	911
11 बसुरववस्य सुव	समुद्रम यसे के प्रति सम्बद्धारा का स्वास	917
१६ निरोधकमा सुष	निरोध धर्म के धित कम्प्राम का न्याम	117
र चीया भाग	ः वपनिसिक्त धर्म	
1 सार भुक	मार से इच्छा इहाओ	TIR

•		
२, सारभःम सुतः  ३-४, परमञ्जीतम अभिष्य सुतः ६, परमञ्जीतम दुष्य सुतः ८, परमञ्जीतम दुष्य सुतः ८, परमञ्जीतम अन्ता सुत्तः ११, रावपसम्बसुद्य सुतः  १२, निरोधपमम सुतः	मारचर्म में द्वारा हराओ अनित्य और अनित्य-धर्म द्वारा और द्वारा घर्म अनात्म और अवाधा-धर्म हरा, व्यय और महुत्य निरोध-धर्म से हुन्छ हराओ	892 832 832 832 834
तीस	रा परिच्छेट	
२३,	दृष्टि संयुत्त	
पद्धला भाग  १, वात कुत  १, व्रत सम द्धत  १, तो व से दिवा द्धल  ४, तो व से दिवा द्धल  ४, तो व से दिवा द्धल  ४, तोव दुत  ६, करोतो सुत  ७, देतु सुत  १, मगदिह सुत  ११, भनवा सुत  ११, सनवा सुत  ११, सनवा सुत  ११, सनवा सुत  ११, सं वीचं त सरीर सुच  १५ संति तवासो वस्मणा सुत  १६ में होति वसासो वस्मणा सुत  १६ में होति व म सहीत वसायो वस्मणा	. जोतापत्ति वर्गे  क्रिप्या-एष्टि का मूल  क्रिप्याव्याव्य  क्रिप्याव्याव्याव्य  क्रिप्याव्याव्याव्य  क्रिप्याव्याव्याव्याव्याव्याव्य  क्रिप्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव	# 5 5 4 5 6 6 6 6 6 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7
दूकरा भाग  1 कात सुन  2-14, सन्ने सुनन्म पुत्ये आमता येथ  14, स्ट्री अचा होति सुन  25, स्ट्री आता होति सुन  21, स्ट्री व अस्ट्री व माता होति सुन  22, विदस्यों वास्त्री बना होति सुन  22, एक्ट्री सुन्ने असा होति सुन  24, एक्ट्री सुन्ने असा होति सुन  24, एक्ट्री सुन्ने असा होति सुन	हिसीय गमन भिण्यादृष्टि का मूल  'आसा इपनान् होता है की सिष्यादृष्टि  'अस्पवान् शासा है' की सिष्यादृष्टि  रूपनान् और जहरानान् जाता  रूपनान्, न अस्पनान्  आसा प्रकान्त सुनी होता है  आसा प्रकान्त सुनी होता है	3

३५ सुच-दुनकी गता होति सुक्त	भारमा धु <b>व-तुःच</b> ी होता है	#11
🕦 अदुक्समधुकी सत्ता होति सुत्त	<b>भारमा शुक्र-गुःख से रहित होता है</b>	**1
सीसरा भाग	ः तृतीय गमन	
१ बात सुच	मिय्याचिष्ट का सुक	***
२-२५, सम्बे सुचन्ता पुरुषे आगवा येथ	-	***
१६ अरोगो होति परम्मरणा ग्रुच	'भारमा चरोग होता है की सिम्बादहि	***
चौचा माग	ः चतुर्थं समन	
३ वाट सुच	निश्याचीत का सूच	293
र∽११ सम्बे सुक्तन्ता पुरने भागता बेव	-	***
चौ	था परिच् <b>छेद</b>	
२४	ओकन्त संयुच	
१ बस्तु द्वर	चश्च व्यक्तिस्य है	***
३ कप सुच	क्रम व्यक्तिस्य है	248
३, विज्ञान सुच	चश्च-विद्यान धनित्य है	***
४ <b>च</b> स्स <b>धुच</b>	चसु-विद्यान अविस्य द	848
५ वेड्डासुत्त	वेदमा व्यक्तित्व है	***
६ सम्बर्धसुत	कर संज्ञा अगित्व है	884
<ul> <li>चेतनः प्रच</li> </ul>	चेतना भनित्य है	854
८ तन्हा सुख	गुण्या जनित्व है	**4
९. यातु शुच	प्रकारी चाद्य समित्य है	**4
१ चन्यभुक्त	पञ्चस्त्रम्य जनित्य हैं	***
ঘাঁ	चर्यों परिच्छेद	
74	चत्पाद संयु <b>च</b>	
। बाह्य प्रक	च्छा-निरोध स शुःश्र-विरोध	**!
१ क्या सुन	क्ष्य-निरोध से दुःब-निरोध	7.58
३ विज्ञाण सुन	चप्तु विद्यान	**4
▼ कास सुच	क्पार्थ -	**4
भ, बेरमा गुच	<b>वे</b> एसा -र	254
६ सम्बर्धसूच	र्मग्रा चेतमा	260
<ul> <li>चेदना सुच</li> </ul>	चतना मुख्या	440
< तरहा शुन ९. बातु सुन	पुरुत पानु	***
্ব, মান্ত প্রণ ১০ অসম স্থান	rere	46.A
4	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	417

## छडाँ परिच्छेद

## २६. क्लेश संयुक्त

1, चश्यु सुन	चञ्च का छन्द्राम चित्त का उपक्लेश है	४२८
२. रूप सुरा	स्रव	886
३, विज्ञाण सुप्त	<b>चित्रान</b>	828
४ सम्बस्य मुन	स्पर्दों -	854
u, वेदना सुस	घेदमा	854
६, सम्जा सुत्त	শঁলা	880
७, सचेतना सुत्त	चेतना	85%
८, तण्हा ध्रुस	<del>पृष</del> ्णाः	४२९
९ भादु सुत्त	था <u>त</u>	%⇒ द
१०, सम्ध सुत्त	स्कम्ध	४२९

## सातवाँ परिच्छेट

		२७. सारिपुत्र संयुत्त	
1	बिवेक सुच	व्रथम प्यान की अवस्था मे	89.0
Ą	अधितक्क सुत्त	द्वितीय ध्यान की अवस्था मे	8ई व
3	पीति सुत्त	नृतीय ध्यान की अवस्था में	ধর্ণ
8	वपेक्ता सुत्त	<b>चतुर्थे</b> स्थान की अवस्था में	853
u	आकास सुत्त	भाकाशानन्त्यायसम् की सवस्था में	४३१
Ę	बिज्जाण सुत्त	विज्ञानानस्यायतन की अवस्था से	883
	आकिन्नज्ञ सुत्त	आक्रिस्थन्यायतन डी अवस्था में	853
	नेवसञ्ज सुत्त	नैयसज्ञानासज्ञायतन की अवस्था में	8 है 9
٩	निरोध सुस	सकाबेद्धितनिरोध की अवस्था में	. ધરૂર
90	सूचिमुखी सुस	शिक्ष धर्मपूर्वक आहार प्रहण करते हैं	<b>४</b> ६२

## आठवाँ परिच्छेद

२८,	नाग-संयुत्त	
मुलिक सुन्त     पणीतवर सुन्त     पणीतवर सुन्त     पटम स्पोतसम सुन्त     पटम स्पोतसम सुन्त     पटम तप्तसम सुन्त     पटम तप्तसम सुन्त     पटम तप्तसम सुन्त     पटम तप्तसम सुन्त     पटम तप्तसम्बन्नसम्बनसम्ब	चार नाम-योनियाँ चार नाम-योनियाँ कुछ माग उपोध्यम रखते हैं कुछ माग उपोध्यम रखते हैं नाम योनि में उरपल होने का कारण नाम-योनि में उरपल होने का कारण नाम-योनि में उरपल होने का कारण माम-योगि में उरपल होने का कारण माम-योगि में उरपल होने का कारण	8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8 8

## नयाँ परिच्छेद २९ सर्वात-संस्क

		र २ श्रुपण-संभुष
1	सुद्र सुच	चार सुपर्य-योगियाँ
ŧ	इरन्ति श्रुत	इर के बाते हैं
		1 30 ~

सुपर्व-होमि में अलब हाने का कारण ६. प्रध्म इयकारी सुक

s−६ द्वतिय-ततिब-चतुत्थ इयकारी <del>ध</del>क्त पक्ष्म दानुषकार सुन्त

८-१ दुविष-दविष-चतुत्व दानुपकार सूच

एान बादि देने से सुवर्ध-बोनि में कान काकि वेंगे से सवल-बोति में

# दसवाँ परिच्छेद

३० गन्धवंकाय संयुक्त राज्यचंद्राय तथ कीय हैं ? । सुद्रक सुच

शम्बर्व योगि में शत्यब होने का कारण १ सुचरित सुक्त भाग स शक्तवं-वोति से बल्दिन

६ परम दावा सुक्त दाव से सम्बर्ग-सोनि में उत्पत्ति प−1९ दावा सूच बाम से यन्त्रवं-योगि में उत्पत्ति १३ पडम बासुपकार सुध

दाब से पञ्चर्य-बोनि में बत्परि 14-२३ त्तुपकार सुच ग्यारहवाँ परिच्छेव

## ३१ वलाइक-संप्रच

वकाहक देव कीम हैं ( १ देखना सुच

वकाहक-बोनि में उत्पन्न होये का कारन १ प्रश्रीत पुण

रे. **रदम शतुरस्यर शु**च

४-७ शहरकार मुच

गर्जी होने का कारण ९ डब्ब् सुन ३ मध्य पुत शासक होने का कारण

11 वात सूच १३ वस्य शुक्त

पारहर्वों परिच्छेद

२२ बस्सगोत्र-संयुच नजान भ नामा प्रकार की सिप्पारविकों की अत्यक्ति १ अञ्चाम सुरा

२-५, अध्याम सुत्त ६-१ अइस्पन भुक्त ११-१५, अवभिमसय सुक्त

< श्रीत सुच

वान से नकारक योगि में उत्पत्ति दान ॥ वकाइफ-वानि में बराजि सीस होन का कारण

प्रपर्ककोनि में उत्पन्न होंगे का कारण

चायु होने का कारण वर्षा होने का कारल

वज्ञान से सिरवा-दक्षियीं की बस्पधि

अवर्षात से जिल्लान्दविषी की उत्पत्ति

शाम न दोने से मिच्या-एपियों की उत्पत्ति \*\*\*

\*14

**9** 14

**814** 

724

215

\*1 \*

810

w fix

216

vl4

214

224

212

218

258

કો્ય

3.5

989

१६-२० अननुयोध सुत्त >१--२५ अप्पटिवेध सुरा क्ष एक्षक्र व ह⊷३६ ३५-३५ अवपद्यवस्यण सुन ३६-४० अषच्चुवस्तवस्त्रण सुन ४१-४५, असमपेक्खण सुत्त ४६-५० अपच्युपेक्सण सुच ). अवद्ययस्क्रम्म स्त्रः ५१-५५ अपच्छपेक्खण खुत्त

मळी प्रकार न जानने मे मिच्या-दृष्टियों की उत्पत्ति अप्रतिबेध न होने से मिथ्या-दृष्टियाँ भक्षी प्रकार विश्वार न करने से मिथ्या-दृष्टियाँ अनुपरक्षण से मिष्या दृष्टियाँ अवरथपरुक्षण से मिथ्या-दृष्टियाँ अत्रत्योप-प्रेक्षण से सिष्या-दृष्टियाँ अत्रखोप-जेक्षण से शिष्पा-दृष्टियाँ अव्यत्यक्ष कर्म ने मिथ्या-इप्टियाँ अप्रस्थक्ष कर्म से मिथ्या-दृष्टियाँ

## तेरसयाँ परिच्छेद

### ३३. ध्यान-संग्रत्त

१ समाधि समापत्ति सुत्त २. हिति<sup>™</sup>सुत्त 3. ब्रह्मान सुन **४ क**रिष्ठत सन्त ५ आरम्भण सुत्त ६. गोचर सुत्त ७ भिनाहार सत्त ८ सङ्घन सूत्र ९, सातब्च सुन्त १० सप्पाय सच ११, डिति सुत्त १२ ब्रहान सुन १३ कहिल्त सत्त १४. आएम्मण सुत्त १५ गोचर सुत ९६ अभिनीहार सत्ता ९७ संस्करच सुत्त १८, सात्रच्य सूत्र १९ सप्याय सुश २०, डिति सुत्त २१-२० पुन्त्रे जागत सुत्तन्ता येव २८-३४ बुद्दान सुत्त ३५-४० करिटत सुत्त ४१-४५ आस्ट्रमण सुत्त ४६-४९ गोचर सुन uo-५२ अभिनीहार <u>स</u>त

५३--५४ संबंधच सत्त ५० सातच सुच

न्याची चार है स्थिति क्षदान्य ध्यायी श्रेष्ट व्युरवान कुशक ध्याची उत्तम क्यम समारू ध्यायी श्रेष्ट भाकम्बन क्षशक ध्याची गोचर क्रशरू ध्याची अभिनीहार-क़श्र ध्यायी गौरव करनेवाका ध्यायी निरन्तर लगा रहनेबाला ध्यायी समायकारी ध्यायी ध्यायी चार हैं स्थिति करारू ক্ত্য-ক্রহান্ড আক্রমন ক্রমল गोचर-क्रवल अभिनीद्वार-कुशल गौरव करने में कराल

निरम्तर लगा रहने पादा

ध्यायी चार है

सप्रायकारी

स्थिति-कुशस्

# मंयुत्त-सूर्पी

	77
१ देवना शंयुक	1-14
६ रेबपून श्रीकृत	71-11
६ कामच र्गानुच	10-66
४ सप संयुष	c1-1++
५ जिश्लुकी संयुक्त	3 4-111
a सक्ष्यांन्त	111-110
• अन्यस्य गेर्भ	114-114
बद्रास संयुष	\$74-346
वस संयुष	144-11
१ वस संदूष	149-141
१३ सम्बर्भपुण	\$48-145
१४ अधिमध्य संयुक्त	598-243
1হ খালু মুবুল	339-174
१४ अस्तर्भा संयुक्त	259-104
१५ चर्चा संयुक्त	755-768
1६ लाभगावार मेतुम	*c=-191
५७ शहन शेवुल	4 1-075
१८ कश्च संतुत	R 1-2 H
१९, भारतप गंतुम	₹ <b>(-</b> \1
र विश्व लंबुल	111-110
६६ सम्बन्धानुष	\$ 42-4 A
६० राज र्राष्ट्रण	A ,4-A1A
१६ धींट मंधुन	***-***
२४ भीवडला गं <del>युत</del>	<b>₩₹₩</b> ₩₽₹%
१५, बाबाद मेंतुच	464-260
६६ वण्या शंद्रुष	#3c-#34
६० गारिपुत्र मंतुश	2325
६४ मात मेंतुच	455-254
६६, गुपर्व गेंबुश ६	244-254
६ गन्धर्वकाय मं <del>युष</del>	aja-sja
३१ वकाहक सेंगुल ३२ वागगीत सेंगुल	456-44
११ च्यान मंबुध	441-445
Ad and office	#84-46%

## खण्ड-सूची

## ≠को तस्म भगवतो अरहतो सम्मा सम्बद्धस्स

# संयुत्त-निकाय

## पहला भाग

### चल वर्श

## § १. ओघतरण सुत्त (१११)

#### मध्या की बाद से पार जाना

पेसा मैंने सुना-एक समय भगवान् श्रावस्ती में अताथिषिष्टक के जेतवन बाराम में विद्वार कर रहेथे।

तब, कोई देवता रात बीतने पर अपनी चमक से सारे जेतवन को चमकाते हुये जहाँ भगवान् थे, वहाँ आया और भगवान् का लभिवादन कर एक और खड़ा हो गया।

एक और खबा ही वह देवता भगवान से बोला - भगवान ! बाद (= ओव) को भला. आपने कैसे पर किया।'

आबस ! मैंने बिना रुकते और बिना कोशिश करते बाद को पार किया । भगवान ! सो कैसे अपने बिना रकते और बिना कोश्विश करते बाद की पार किया ?

आयुक्त । यदि कहीं रुकने लगता, सो उय जाता, यदि कोशिश करने लगता, तो यह जाता। भावस । इसी तरह मेंने बिना रुकते और बिना कोशिश करते बाद को पार किया ।

#### विवता- ]

अहो ! चिरकाङ के बाद देखता है. ब्राह्मण की, जिसने निर्वाण पा लिया है. विना रुकते और विना कोशिश करते. जिसमें संसार की तृष्णा<sup>1</sup> को पार कर किया है ॥

जाती है।"--अहकया।

१ यह चार है-काम की बहुद अब की बहुद मिथ्या-एप्टिकी बहुद और अविद्या की बहुद । पाँच काम गुणों ( = रूप, जब्द, ग्रन्थ, रस और स्पर्श ) के प्रति तृष्णा का होना 'काम की बाढ' है। रूप और अरूप ( देवताओ ) के प्रति सुणा का होना भव की वाद है। जो बास्ट ( देखो---टीपनिकाय, ब्रह्मजारुसत्र ) मिथ्या धारणाएँ हैं। उन्हें 'दृष्टि की बाद' बहते हैं । चार आर्थ सत्यों के जान का न होना 'अविद्याकी बाद' है।

२ बौद्धधर्म दो अन्तों का वर्जन कर मध्यम मार्ग के आचरण की जिक्षा देता है। कहा एक रहने से काममीग और बहुत कोशिय करने से जात्मपीयन वाले तपश्चरण का निर्देश किया गया है। बुद्धने इन दोनो अन्ती को त्याग मध्यम मार्ग से बदत्व का लाग किया।

विसिक्तिक — "ह्मादि आल्म्यनों में आसक्त-विसक्त होने के कारण तुम्मा विसक्तिका कही

इस देवता ने यह कहा । धाएता ( ≔तुवा) ने स्थीमर किया ।

त्रव यह देवता सारता की श्रीहरित को बाब समयान् को असियान्त आर प्रवृक्षिण कर नहीं पर कस्तर्यान हो गया ।

💲 २ निमोक्छ सुत्त (११२)

मोझ

भावस्ती में।

वह देवता सगवाल् में बोकाः— सगवास १ धीवों के तिसींहा∞समोहः∞विवेक' का नगा आप बावते हैं १

नादुस ! बीचों के निर्मोहाळामोकळीवनेक को में बानता हूँ।

भारतात्र ! सो कैसे अगर जीवों के मिर्सोध≔प्रसोध≔विवेठ को कामते हैं !

्री सी क्रेसे जाप जीवी के निर्माश्चन्त्रमध्यानिक को नक्तरसम्बद्ध कर्मवर्थन के नष्ट हो जाने से

संज्ञा और विकास के भी सिंह कामें से

वदमाओं का जो निकद तथा चान्य हो जाना है।

बाबुस } मैं ऐसा बानता हैं,

बीवों का निर्मोक, प्रमोक कीर विकेस क

> § वे उपनेष्य सुच (११३) सांसारिक भोग का स्थान

बह वैदल सगवान के सम्मय यह गाना बोद्धाः—

हर्ष विद्या सगवान् के अन्ध्रुल यह गांवा वास्ता—

् किल्द्रशी जीव रही है जल मोड़ी है। इद्यापा से जबने का कोई अपाय नहीं।

्यून्यु के इस शत को देखते हुने सुन्द देवेगार्क प्रच्यों को करे॥

[ भगपान्—]

जिल्ला बांत रही है उन्न योदी है। इदायां से यचने का कोई उपाय नहीं। क्ष्मु के इस सब का देखते हुये

सामित चाहने अस्य सौनारिक माँगा छोत् है ॥

६ ४ अच्चेन्ति सुच (११४)

खाँखारिक माग का स्वान बह देवता मगवान् के सम्मुल यह गावा बोका---

बन्द्र गुजर रहा दे राजें बीत रही हैं। जिल्ह्यों के जमाने एक पर शुक्र निरुद्ध रहे हैं।

र "तमी का अर्थ निशंत ही है। निर्मात को पाकर वास निमुक्त, प्रमुक्त, विकिक्त को पाठे हैं। इसस्टिप् मारो सिमोग्र प्रमोध और विक्त एक ही बॉल है। "---वाहक्या।

मृत्यु के इस मय को देखते हुये। सुख देनेबाले पुण्यों को वर्ने॥

#### [ समधान्-]

वक्त गुजर रहा ह, रहें बीत रही है , जिन्मी के जसाने एक पर एक विप्रक रहें है । सुखु के इम भय को नेमते हुये, शानित चाहुनेवाला मामारिक भोगा छोड़ दे ।

## § ५. कतिछिन्द सुत्त (१.१.५)

#### पाँच को कार

#### भिगवान- ]

पाँच को काटे, पाँच की छोड़ है, पाँच ओर अधिक का अन्यास करे, पाँच सर्गों को पार कर निक्षु, ''बाद पार कर गया?' कहा जाता है॥

## § ६. जागर सुत्त (१. १. ६)

#### पॉच से ग्रुडि

यह देवता भगवान् के सम्प्रुतः यह शाधा योद्याः — जानी हुआं से किती सीचे हैं 9 सीचे हुआं से किनने जागे हैं 9 कितने से सैट दमा जाता है ? कितने से परिमुख हो जाता है 9

#### ि समवान--- 1

जागे हुओं में पाँच सीचे हैं, भोवें हुओं में पाँच जागे हैं,

र "पाँच अवर-मामीय वन्धन ( धयोखन ) को कारे, पाँच उष्वै-मामीय वन्धन छोने, यहाँ कारने और जेडने का एक ही अर्थ है…।

<sup>&</sup>quot; अदा आदि पाँच इन्द्रियों का अम्यास करे। पाँच सग ये ई--राम, इंप, मोह, मान, हिए।"--अहकया।

र्योच में ग्रेज कर करता है पाँच से परिवाद हो जाता है।

§ ७ अप्पटिषिदिस सत्त (११७)

सर्वेद्य वक

बह देवता सरावान् के सम्मुख यह गाया बोकाः----

विवने धर्मी को ( व्यार्थ सस्त ) नहीं जाना बा जैसे तैसे के अब में परकर बहक गये हैं। सीये हये वे नहीं अगाते हैं.

दमके बातने का सब नक्षय का गया ह

#### [भगवान्--]

जिनने धर्मों को पूरा पूरा जान किया का कैस देत के सद में पहतर नहीं बहुक गये ह वे सम्बद्ध हैं सब बढ़ जानते हैं विपास अवास में भी जसका आवारण सभा रहता है **ह** 

८८ ससम्बद्ध सच (१ ९ ८)

प्रवाद प्रद

बह देवता भगवान क सम्मूच बह गामा व साः---

को करों के दिपन में विरुद्धा सुद है र्जन रीते इ. मण में पहकर बहक गये हैं। सीचे इसे वे नहीं काग्त

क्षतकी कार्या के समय का समय का स्थान

[ भगवान-- ] को यभी के बियम में श्रद नहीं हैं र्जास सेसे के मत 🖺 प्रकार बढ़ी बढ़क गये ॥ में सम्प्रज हैं सच कर जानते हैं

विपम क्यान में भी बनका आकाल सक रहता है।

६९ नपानकाम सुपा (११९)

मत्य क राज्य से पार बह इंबना भराबाब् क मस्मुप्त वह गांधा बीन्धा---

मिमान चाइनेवामा भएना एमम नहीं कर स्टब्स

र अहा आहे याँच इन्द्रिमी के जान रहत पाँच जीवरण नीये रहा है इसी सरह पाँच मोपाली के तीचे रहते पान इ बहुबा जानी बहुती हैं पान भी प्रची ( नकामध्यन्त, स्पान समानसूत्र, भाजाम की हार विभिद्या ) न निज त्या जाता है।" पाँच इन्हियाँ (त्याजा, बीचे प्रजा, स्मृति समाधि) में फीतक से बना है। --अहरणा ।

विना समाधिस्त्र हुए चार मार्यो का ज्ञान भी नहीं हो सकता, जंगल में अनेला प्रमाद के साथ विहार करते हुये, कारत के राज्य को पार नहीं कर सकता ॥

#### [ मगवान्— ]

मान को छोड़, अच्छी तरह समाधिस्थ, प्रसन्त चित्त वाळा, यर्जवा विसुक्त हो, काराळ में अकेळा सावधान हो निहार करते हुये, मृत्यू के राज्य को पार कर जाता है ॥

### § १०. अरब्ज सत्त (१ १. १०)

#### चेहरा खिला रहता है

••• वह रेवता भगवान् के सम्मुख वह पाधा बोला — जगल में विहार करने वाले, दाल्त, श्रहाचारी, तथा एक बार ही भोजन अरनेवालों का चेहरा कैसे खिला रहता है ?

#### ^[भगवान— ]

वीते हुए का वे शोक नहीं करते, आनेका पर बड़े अनवूले नहीं बॉचने, को मौजूद है उसी से गुजारा करते हैं, इसी से उनका चेहरा किया रहता है। आने बाले पर यहे अनसूत्वे बॉच, बीते हुए का शोक करते रह, सूखं लोग फाँक पड़े रहते हैं, हरा नरफट जैसे कह खाने वर।।

नल वर्ग समाभ

## दूसरा भाग

#### नन्दन दर्ग

### **११ नन्दन सुरा** (१०१)

#### नन्द्रभ-वम

पुना मिने भुता-पुक समय सगवाम् श्रावस्ती में अनाधारिष्टिक के खेतकन जाराम में विदार करने ने । वहाँ मारावाम् वे मिश्रुओं को नामन्त्रित क्रिया--- "मिश्रुओं ! "मयन्त ! वर्षकर वन मिश्रुओं ने सगवाम को उत्तर दिया ।

#### भगवाम् वोकः---

मिनुसी | बहुत पहक जयसिंका कोठ का कोई देवता जन्मनन्यस में अध्यसमें से हिक मिनकर दिप्प पाँच कामगुली का भीग विकास करते हुने अस समय यह गांचा बोस्प :----

थे सुरामही काव सकते हैं जिनने शन्दन को नहीं देखा। जिल्हा लोक के बहारवी देवताओं के नावास को स

मिश्चर्ण ! इसक गमा कहने पर जिस्सी हुमरे देवता ने उसकी बात में कगाकर वह गामा कही-

सूर्य | तुस नहीं जानने असा फाइँच क्षेम बदाते हैं । समी शंक्षण क्षीत्रण हैं बच्च होगा और कब हो जाना बनका स्वयाण है ऐसा होकर के तुस्त वादे हैं उनका विकास क्षात्रण हो काना हो परस-पड़ हैं ॥

## १२ नन्दविद्वच (१२०)

#### धिम्ता-रहित

[ प्रमापाम्—] पुर्वेशाला पुर्वे की शिला में रहता है की की सीवीवाला सीवीवी शिला में रहता है सांसारिक वस्तुओं से ही मनुष्य को चिन्ता होती है , जिसे फोर्ड वस्तु नहीं उसे चिन्ता भी नहीं ।

§ ३. नित्य पुत्तसम सुत्तं (१. २. ३)

अवने वेसा कोई ग्याम नहाँ

••• बह देवता भगवान् के सम्युग यह गाया बोला —

पुत्र के ऐसा कुछ प्यारा नहीं, सीदों के ऐसा कुछ घन नहीं, सूर्य के ऐसा कोई प्रकास नहीं, समह सबसे महानु अल्लाजि ह ■

[ अगवान् — ] अवने के ऐसा हुए प्यता नहीं, धान्य के ऐसा कुट पन नहीं, प्रजा के ऐसा कोई प्रकाश नहीं, 7हि सबसे महास करवाजि हैं॥

६ ४. खत्तिय सत्त (१२४)

वह श्रेष्ठ है

मनुष्यों में क्षत्रिय श्रंप्ट हैं, चीपायों में पलिवर्द, भाषांओं में कुमारी श्रेष्ट ह, जीर, युद्रों में यह जो जेटा है।

[ भगवान् — ] सम्दुद्ध मृतुत्वां में श्रेष्ट हैं, अच्छी तरह स्थितावा गया जातवर चावाचो में, सेवा करने वाली भावांशों में श्रेष्ट है, और, पुत्रोंसे वह जो नहना माने॥

§ ५. सन्तिकाय सुत्त (१२५)

शान्ति से आनस्ट

हुपहरिया के समय, पक्षियों के ( छिप कर ) चैठ रहने पर, सारा जगळ झाँब-साँच करता है, उससे सुप्ते बड़ा दर खगता है।

[ भगवानः — ] हुपहरिया के समय, पश्चिमों के बैठ रहने पर, सारा बंगान झॉब-गॉब करता है। बसस मुझे बड़ा बानन्द माता है।

### **६६ निशासन्दी सुरा** (१२६)

निवा और तस्त्रा का स्थाग

विश्वा तन्त्रा वैसाई छमा जी महीं कमना जोजन के बान मशा सा वा वाना; इससे ससार के बीना को कार्य-सार्ग का साखानकार नहीं होता प्र

#### [ सगवाय - ]

विक्रा तान् वार्याह सेमा की नहीं कराना भीका के बाद नशा सा मा वाना; अत्याद-पूर्वक दुन्हें पूजा देने में नार्य-मार्ग क्षत्र हो काता है ॥

१७ हुम्म झुच् (१२०)

कक्कमा के समान रक्षा

करता कदित है सहना भी बड़ा कठिय है जो भूगों है उससे भ्रमण-भाव का पास्ना भी। महाँ बाबाएँ बहुत है उहाँ मुले कीग हार कठे हैं ह

[ मगवाम् -- ]

कियते दिनों एक ध्यान-माव को पास यदि करने चित्र को बाद हैं नहीं का मानता; पर-एक हैं दिव्यक खायां हृद्यामा के कार्यन विशेषाता है बादुमा बैटा मंत्री को अपनी गीववां में की दी निश्च करने में ही मान के कितानों को समेह, कारण हैं गया कियों की मेरी निश्चा नहीं करता है ह

#### \$८ दिस्मित (१ ° ८)

पाप भ सजारा

संगार हैं बहुत कम येथे गुरूप हैं का बाद कमें बरने न समाने हैं, वे किएत से बेचे दी बीड रहते हैं किये सिरावा हुआ पोदा बायुक हा ह [भगवान--]

थोदे में भी पाप करने में भी लजाते हैं, मदा स्मृतिसाल होकर विचरण करते है. वे द मां का अन्त पाकर.

य दु पा का जन्म पाकर, शिपम स्थान में भी तम आवस्य करते हैं ॥

§ ९. क्रहिम्स (१,२ ९)

जांपटी का भी स्थाम

पया आपको कोई गोपको नहीं १ बया आपको कोई घामका नहीं १ प्रया आपको कोई यार-पर्स्स ( स्पंतान ) नहीं १, प्रया जन्मन से नुद्रे हुए हैं १

[ सगधान्— ] नहीं, मुझे कोई स्रोपर्श नहीं,

नहीं, मुझे कोई घांसला नहीं, नहीं, मुझे कोई वाल-प्रच्चे ( =स्सान ) नहीं,

हों, में यन्त्रन से छूटा हुआ हूं॥

[ देवता— ] आपकी कोपनी में किने कहन, है ? अपका वॉसहरा में किने कहन, है ? आपकी वन्सान में किने कहना, हे ? आपका वन्नन के किने कहना है ?

[ सगवान्— ]

भारत। को मान कर तुम क्षोपटी कहने हो, भाषां को मान कर तुम धाँमका कहते हो, दुर्शन को मानकर तुम धन्यान कहते हो, वृद्या। की मानकर तुम धन्यान कहते हो ॥

ि देवता- ]

ठीक है, जापको कोई होपड़ी नही, टीक है, जापको कोई बांसला नहीं, ठीक है, जापको कोई मन्तान नहीं, आप बन्धन से सप्तमुख मुक्त है।

§ १०. सिमाद्धिः सुत्त (१२ १०)

काळ बहात है, काम मोर्गो का त्याग

ऐमा मैंने क्षुवा। एक समय भगवाम् राजगृह के तपोदाराम में विहार कर रहे थे। २ सक बादुमान् समृद्धि रात के मिनसारे बढकर गात चीने क स्थिप वहीं तारीदा (म्नामी-पुण्ड ) दे बहीं गये | सरोप्त में गात को एक ही कोवर पहने द्वाप वाहर दाहे गात सुखा रोपे थे ।

तन कोर श्वत रत कतने पर अवशी चमक से सारे तवोदा को धमअवे हुए नहीं आयुप्तान् समृद्धि पे बहाँ अथा। सारुर, शाजस में प्रदा हो पह गया वीका :---

> नित्तु दिना भोगा दिये आप भिन्नाटन करते हैं भोग करते आप भिन्नाटन नहीं करते हैं मिल्लाो आग करके आप भिन्नाटन करों पाठ पा भेगे ही सत्त गवाहें है

[ समृति— ]

कार को में वहीं उत्तवा कार को करान है इतका पता नहीं इमीने विना भोग किए विश्वा करता हैं, मेरा सरक नहीं भी का है इ

तर उस देवतान दूची पर उतर का बायुमान् साहित के पहां—सिहानी । मापने वहीं एँगी भारता में प्रमानता है की है। अपकी ता कभी कुमांग्यरणा हो है। आपके वेण करते हैं। इस बहुतां उस में अपने समार के कामों का काइ तक नहीं दिया है। मिहानी ! अपर अभी सोच के एण प्रपास पहें। सामने की बात को छाड़कर मुहत में होनेव की के पीछे मत वृद्धें।

गहीं अजुम । में सामने की कात की छोड़ कर मुस्त में हानेशकों के पीछ नहीं दक्ता हूँ। अगुन में तो बक्के मुस्त में हानेशकी कात की छाड़ सामने की बात के के से में साग हूँ। भागवान ने मा क्या है—सांगरिक काम भाग मुस्त का जीज है। जनक केर में पाने सा पदा पुरस करना पदता है वहीं पदा मी हती है। काम के दें पर्टी। अब यह पर्म देंगत हो बेसने कछ इनेश मा ह (क्यांगरिक ) विमा कियों देंग का चड़े हुग धर्म को जन्मा नाकना है। यह पर्म प्रमाद तह के छी प्रीप्तक्ष हैं ( स्मीप्तिका) विकासी हम पर्म का अपने ही आप अनुसद करते हैं।

भिनुत्री है साराज्य से सामांत्राहिक काल भीत को ख़ुरत की चीत कैसे वत है है है बस कि दे से पत्रों ता कर्त बहर तुल्य बढ़ामा पहार है कैसे यही परेश मी हाती है है जमसे कैस वहे-यहे ऐक है है वर्ष ऐसी हो त्याह करी करते हैं है है | वर्ष कर्त वहार नह सा वाला है है बिता रोगा धार्म को मार्ज ही अप बहुत मार्थ करता है है

भणुन ! में जाने ना। एसना ही जान जर हुमा हैं। इस धार्म विकाय का में विस्तरत्याक नहीं यह गड़ना । यह मनान्यू मार्थ तायक मानुख बाजायुक के तथाहारामा में विकार कर रह है। तो जरुर पुरा करह हुछ कम को पूर्व | जिला मनाव्यू कामरें बना हो सामों।

ितानुवां देश नेतों के निर्दे भगवान् में सिनामा आमान नहीं। यूनरे अदनदे तकाची देवता कहें भरे सदे दहन है। निर्देशी विदेश का वी भगवान् के बाग आवर दूस बात की दों तो अस्त्रक्षा प्रियो हमन नदरे के दिने का बावना हैं।

"मापूर्व बहुन अका" वह अनुस्तान् राशु द्ध ने प्रशासिनाः को उत्तर दिशाः दिए बहीँ अगर नुभ नद्र क की वर्षकार्ते वृद्ध की दिश्लका

र परविषयण शहाराणे | ---सावार |

<sup>। &</sup>quot;स्पूर्यभादे (तार में बहा है। —साम्बन्धः ।

एक और बैट धालुम्बान् सामुद्धि मागवान् से थोले :— मन्ते ! मैं रात के भिनसारे उटकर गात घोने के लिये कहाँ तथीवा दें वहाँ नया । तपोदा में गात घो एक ही चीवर पहने हुवे घादर खरे-खडे गात सुदा रहा था। मन्ते । तन, कोई देवता शत वीवने पर अपनी चमक से सारे तपोदा को पमकात हुवे नहीं में था यहाँ आया। आकर आकास में सदा हो यह गाथा थोला :—

सिश्च, चिना भोग किये आप सिक्षाटन करते हैं , भोग करके आप सिक्षटन नहीं करते। सिश्चली। भोग करके आप सिक्षटन करें , काल को ऐसे ही मत गवार्खें ॥

भन्ते । उसके ऐसा कहने पर मैंने देवता को इस गाया में उत्तर दिया .-

काल को भें नहीं जानता, काल तो अझ त है, इसका पता नहीं, इसोसे, बिना भोग किये भिक्षा करता हूँ, मेरा समय नहीं खो रहा है।

भन्ते, तर उस डेबता ने एटबी पर उत्तर कर हुसे कहा—पिक्षुओं । आपने दही छोटी अवस्था से मज्या के की है। आपनो तो कांधी कुमारावस्था ही है। अपने देंग अभी कार्के है। इस चढ़ती उस में अपने सावार के कार्मों का स्वाद तक वर्षों किया है। सिक्षुओं । आप अभी कीरू के ऐदा-आराम करें। सामने की पता को छोपकर खुदत में होनेपारकों के पीछे सब दांचें।

भन्ते । उसके ऐवा कहने पर भैने यह उत्तर दिया—नहीं आजुस । मैं सामने की यात को छोए कर ग्रुहत में होनेवाली के पीछे नहीं जीवता हूँ। आजुम । मैं तो बल्टे ग्रुहत में होनेवाली याता को छोव सामने की बात के फेर में लगा हूँ। भगवान ने तो कहा है—सासादिक काम-मोग ग्रुहत की चीज है, उनके पीछे एको से बवा हु का इंड्याम पदात है, वादी परेताली होती है, जममें बढ़े-बढ़े पूर्व हैं। और यह भर्म प्रेजत हो देखते फ्ल हेनेवाला है, विका किसी देरी के, जो चाहे हम बर्म को जजमा सकता है, यह धर्म परम-पर तक के जनेवाला है, विका लोग दूस धर्म को अपने आप ही अनुभव करते हैं।

अन्ते। मेरे ऐसा फहने पर उस देवता ने कहा [ऊपर के जीता] तो अरुक्ता में धर्म-देवाना खुनने के किए जा सकता हैं। अन्ते ! बादे उन देवता ने सच कहा है तो यह अवहय वहाँ कहाँ एस में चढ़ा होता !

इस पर उस रेवता ने अ युष्पान् समृद्धि को वह कहा, "हाँ भिक्षुजी, प्छें। सै पहुँच गया हूँ ।' सब भगवान ने उस देवता को गाया में कहा—

> सभी जीव कहें जानेवाछे संज्ञा भर के हैं, उनकी स्थिति कहें जाने भर में हैं<sup>2</sup>, इस धात को बिना समझें, छोम मृत्यु के अवीच हो जाते हैं। जो कहें भर को समझता है,

१ अक्प्लेटय-सङ्जिनो---पाँच स्कन्यों के आधार पर किसी जीव की स्थाति होती है। इन स्कन्यों के परे कोई ताल्विक आरमा नहीं है।

मिलाओ 'मिलिन्द प्रश्ने' की रच भी-उपमा । जैसे चक्र, घरा, प्रसा इत्यादि खदयवाँ के आधार पर 'रथ' ऐसी खता होती है, जैमे ही नाम, रूप, वेदना, चक्रा और सस्क्रार इन पीच रक्रमों को लेकर कोई जीव जाना जाता है। —अमारमचाद का खादेश विश्वा गया है।

बह भारता की तिम्पा-दक्षि में नहीं पहलां, इस ( श्लोताहरू ) निस्तु को देशा कुछ रह नहीं बाता क्रिममं उस पर कोई होप आरोपित किया कार्या ॥

मक्ष ! वदि पैसे किसी (क्षीणाभव) को आनते हो तो कही ।

सन्ते ! सगवान् क इस संक्षेप से वहे गवे का क्ष्में में विस्तार पूर्वक गर्डी समझता । पनि कुरा कर सगवान् इस संक्षेप से बहे गये का क्षमें विस्तारहर्येक बतावें तो में समझ सर्व्हें ।

[ भगवान्-- ]

किमी के बराबर हैं, किसी स कैंवा हैं, अबबा नीवा हैं, जो पेसा सभ में काल दे बहु उसके बराज क्राय सकता है, जो तीनों प्रकार से करने विच्न को निवर रफता है उस बराबर वा कैंवा होने का स्थाक नहीं सकता है

पस ! यदि ऐसं कियी को जानते हो तो कही ।

सन्ते । समजान के संबोध से बड़े गय इसका भी वर्ष में विस्तारपूर्वक नहीं समझता । विद इस कर समजान इस संबोध से बड़े गये का अर्थ विस्तार पूर्वक बतावें तो में समझ सर्हें ।

भगवान—]

बिम्मि राग प्रेप और माह को होड़ दिवा है को फिर साता के गर्म में नहीं पढ़ता है नाम कर के मिंड दोनेवाकी मारी तुम्बा को काट इस्ता है उस करे गाँउ करके दुम्बस्मुक्त, तृष्ण -रहित की जीवते हके पा भी नहीं गते देवता को ना मानुष्य हस ओक में या परस्पेक में कर्मों में का समी काकों में त

बाहा ! बादि पूनी किसी को जानते हो तो बाही । मनते | मगवान के संहोप से बादै शर्म का विस्ताहार्थ में जो बातता हैं—

> पाप नहीं करें कथन से बा अस से या कुछ भी वारीन से सारे संसार में स्मृतिमान् बार संपन्न हो। कामों को छोड समर्थ करनेताले कुलों को व बकाव ब

> > नन्दन वर्ग समाप्त

रे पाँच स्कार्यों न पर कोइ आस्मा महा है। इन बात को जितने अच्छी तरह जान किया है। इन स्कारों के अनित्व समाप्त और तुल्य स्वामात का नामास्वार कर को उनके प्रति तर्यया तृष्ण-रहित हो चुका है।

धीमा कोर कारण महा ग्रहता क्रिमंग तम श्रीकाशक महाग्या के विषय में कार यह कर लोक कि यह सामें एक होत से किह का मोद से मृत है।" — अहरूका ।

६ मार्न भज्यामा---निवास के बार्ग में सम्मु-चुकि सी 'सान से शमनी जा नकती है।---भडक्या।

## तीसरा भाग

शक्ति (= भारा) वर्ग

**६१. स**त्ति सुत्त (१. ३. १)

ध्यस्काय-रूपि का प्रशाप

#### थायस्ती में।

अबह डेबता अगवान के नस्युत यह गांथा घोला — आला लेकर जैने कीई चढ़ आया हो , जैसे शिर के उत्पर आग लग गई हो , काम-ता के प्रहाण के लिने,

स्मृतिमान् होकर भिक्षु विश्वरण करें ॥

[ सगवान — ] भाला केकर जैसे कोई चर आया हो ,

जैसे दिए के जयर आग लग नई हो , सहकाय-इष्टि के प्रहाण के लिये स्प्रहिसास होकर भिक्ष विचरण करें॥

§ २. फुसती सुच (१३२)

तिदाँच को दोप नहीं लगता

नहीं ज़नेवाले की नहीं सुना है, सूने वाले को छ्वा है, इसलिए, सूनेवाले को छ्वा हैंस, जिल्होंप पर डोप छवानेवाले को ॥

#### [ भगवाम् -- ]

जी निर्जेष पर जोष छगाता है, जो शुद्ध पुरुष निष्मुष है उस पर । तो सारा पाण उसी सूर्ख पर एउट जाता है, उल्हेरी हवा से फेंकी गई जेसे बतली पुरु ॥

६ जिस (अर्हत्) को किसी कमें के प्रति आसक्ति नहीं है, अससे उस कमें का विपाल ( =जल ) भी नहीं इनाता । आविक्त के आप कमें करोगाले समारी जीव को उसका विपाक खनता है। "फर्क के स्थान व उस्तेनाले को विपाक भी स्थान नहीं वस्ता, जो कमें को स्थान करता है उसे विपाल भी स्थान करता है।" ──बद्धान्य ।

## § ३ खटासच (१३३)

बटा कौन संख्या सकता है है

मीतर में अयस क्या है बाहर भी बाह्य ही बाह्य हैं। स्त्रमी जीव अदा में बेलाब अवसे वसे हैं। इसलिय वे गीवस ! काल से पछता हैं. कीर इस बारा की भागवा सकता है ?

#### भिगवान-- 1

धीस पर प्रविधित हा प्रज्ञाकान् मञ्जूषा विच और प्रजा की सावना करते हैंच. तरस्थी भीर विवेकसीक मिस बड़ी इस बढ़ा की सबझा सकता है ॥ विसक्षे रागशेष और श्रविका विस्त्रय इत लागी हैं का शीकाशय गईत है बनकी बार्ट सुक्का जाती हैं ॥ करों बास और बज विकास निका हो पान हैं प्रतिक भीर क्रय-श्रंबा<sup>3</sup> भी पहाँ यह सद्धं कर करती है ह

**६ ४ मनोनियारम सच** (१ **१** ४)

#### श्रम को शेक्स

बर्डी बर्डी से गय को इस केता है वहाँ वहाँ से कस कुछ बड़ी होता: की सभी बगह से सब को इस बेसा है बह सभी बगह राख से छह अ ता है ॥

क्रमोप का विकास शत्य किस के सभार हती प्रक्रोचर को पूरी तरह तमकता है।

१ 'जाब पैकाने वाली तथ्या ही बढा कही गई है । वह अपति कालकानों में उत्पर तीचे वार वार क्षमा होने और गुष बाने के कारण बाँस इत्यादि की साथ की तरह आसी बाटा कैसी हो । इसी से बाटा **नहीं सभी है। वही यह** रशकाय-परिण्डार पर-परिण्डार श्वास्त्रमान परमाना-भाव **भाष्या**रमानदान मक्राप्तरन इरवादि में उत्पन्न होने से गतर की चटा और बाहर की चटा कही गई है।'

२. <sup>ध</sup>समाकिकार विक्योंश की प्राकास कारी।

मित्रच एका से काम मन किया गया है। कप-संज्ञा ते कप-मव । इन दोनों के के किये वाने ते भक्त मार सौ धार्मिक कर होना चाहिने 1 --- महत्त्वचा।

 <sup>&#</sup>x27;ठल देवता को पैसी मिश्वा वास्त्र हो गई थी कि अच्छे वा हो कौकिक या होकोचर समी विच का निवारण करना कादिए, उन्हें जलाई नहीं करना कारिए ! ---आइक्या !

#### [भगवान्—]

सभी जगह से उस मन को हटाना नहीं है, जो मन अपने घरा में जा गया है, जहाँ जहाँ पाप है, चहाँ वहाँ से भव को हटाना हैं!

### § ५. अग्रहन्त सत्त (१. ३ ५)

अर्हत्य

जो भिक्ष कतकृत्व हो अहँव हो गया है, श्लीणाश्रम, जो अपने अस्तिम देह को धारण कर रहा है, 'मैं कहता हूं' ऐसा भी यह कहता है, 'मों कहते हूं' ऐसा भी यह कहता है'॥

#### िभगवान -

को निश्च कुतकाय हो जाईत हो गण है, श्लीणाश्रम, जो जबने अन्तिम देह को चारण कर रहा है, 'मैं कहता हूँ' ऐसा भी वह कहता है, 'मुद्दे कहते हैं' ऐसा भी वह कहता है। (किन्तु) वह पण्डित छोगों की वोटचाट के कारण ही, केवट जयकर-मात्र के लिये ऐसा मचीन करता है।।

#### दिवता— }

जो सिक्क कुत्तकुरव हो अर्देश हो गया है, श्रीणाश्रव, को अपने शन्तिम देह को भारण कर रहा है, बचा बहु अभिम्राल के कारण, 'मैं कहता हूँ' ऐसा और 'में कहता हूँ' ऐसा भी करता है ?

र ''देवता की मिष्या धारणा को इंटाने के किए मगवान ने बह गाथा कही। कुछ चित्र तिवारण करने योग्य भी हैं, और कुछ चित्र अस्पात करने योग्य भी। 'दान बूँगा, शील की रहा बर्लना' इत्यादि रूप से जो चित्र सरव हो गया है, उत्यक्त निवारण नहीं किन्द्र अस्पात करना चाहिए। अहाँ-जहाँ पानमा वित्र उत्पक्त होता है, श्वीं-वहाँ से उत्ते हराना उचित्र हैं ''—अदस्वार।

२ किसी अरस्य में निवास करने वाले एक देखता ने बुक्त शीणश्रव आईत् मिलुओं को आपस में 'मैं कहता हूँ, मुझे कहते हैं, मेरा पात्र, मेरा चीवर' आदि कहते सुना। यह सुनकर उसे शक्ता हुई कि जब पन रुक्त्य से परे कोई 'जाला वा जीव' नहीं है तो ये आईत् 'में, मेरा' का व्यवहार क्यों करते हैं !

रे ''लोके समञ्ज कसको चिदित्वा वोहारमचेन सो चोहरेकाति"

जनवारारण के व्यावहारिक प्रयोग के करावार ही वह 'कें, मेरा' कहता है। इसने यह नहीं सम-सना चाहिए कि उठकी दार्विनिक 'जातम-दृष्टि' हो गई है। 'इकल्ब' मोजन वस्ते हैं, स्कन्ध दैवने हैं, स्कन्धों का पात्र है, हमन्बों का चीचर है आदि वहने से व्यवहार नहीं चळ सकता। कोई उनसेसा भी नहीं। ह्रोंटिए ऐसा न कर्ड केंकिक व्यवहार के जन्हण्य ही प्रयोग करता है।

[ भगवान्— }

विनक्त सान प्रदीन हो गया ह कर्षे कोई गाँउ नहीं उनके मारे पान भीर प्रत्यिम नद्य हो चुकी है, बहु परिवस नुका से क्यर कर बाता है, 'में कहता हुँ ऐसा भी बहु कहता है

'म कहता हू' प्रशासा वह कहता है 'मुझे कहते हैं' प्रेसा भी वह कहता है (किस्तु) वह कोगों की बोकचाक के कारण ही केडक स्ववहार माम के किये पेमा ध्रयोग करता है है

§६ पज्जोत सुच (१३६)

प्रचाित

संसार में कितन प्रयोध हैं विवस काफ प्रकाशमान होता हैं ? पूक्तने के किये भगवान के पान्य आयं इस उस कैंग कार्ने ?

[सगवान्--]

स्तेक में बार प्रचात हं प्रिकार वहीं गएँ हैं दिन में प्रमुख पंपता है रख में बारें मोगरता है बार दिन और राज दोगों समय बार-बागह पर पोस्तों ने नेप हैं बार अस्ता समी प्रकारों में नेप हैं बार अस्ता समीपक होता हैं।

§ ७ सरामुच (१३७)

नाम रूप का निरोध

संभार की धारा कहाँ पहुँच कर असी महीं बदली है कहाँ भीवर नहीं चकर काटना है कहाँ नाम भीर रूप दानों विश्वचन ही नियन हो जान है है

[भगपान्—]

अहाँ बार प्राणी अग्नि गीर बाबु प्रतिक्षित वहीं होत बहाँ बारा रूक अली है

र ''तुस को कामा क्या दे। मान, मृति अहा या प्रवक्षा आदि का जो कालाब है तसी बना है मुद्रमार में बारन जनमा रीन वर्गा मालोक बुनामा ही दे। —महक्षा।

यही भैवर नहीं चकर बाटना, यहाँ नाम और रूप दोनों, बिस्कुल ही निरुद्ध हो जाते हैं।

§ ८. महद्रन मुत्त (ूर. ३८)

तृष्णा का त्याग

महारान वाले, सहाभोग बाले, टेवा के अधिपति राजा भी एक क्षत्रे की मक्पिल पर लोभ करते हैं, कामों में उनकी कृषि नहीं होती ॥ उनके भी लोक के प्रति उन्सुक बने रहने, श्रीर संसाद की धारा के बहुते रहने पर, भाषा क्षित केता होंगे जिनने अधुसुक हों, समाद की तथा। की स्वीक दिवा हो ?

िभगवान--- 1

्युम को छोद, प्रमणित हो, पुत्र, पशु शीर प्रिय को छोद, राग और हेय को भी छोद, अविद्या को सर्वथा हटा कर, जो क्षीणाध्यव अहँद सिक्षु है, बही लोक में अनुसम्बर्ध हैं।

- ६९, चतचक सत्त (१.३.९)

यात्रा देसे होगी

चार चक्कों वाला, नव व्यवाजों वाला, देः श्रञ्जिन्युर्ण, लोस से भरा है। हे सहावीर ! ( सार्ग ) कीचव कीचड़ हो गया ई, कैसे बादा होगी ?

[भगवान्—]

ą

‡ "चार चकों वाला' से अर्थ है जार इरियापय (=खडा होना, बैठना, सोना और चलमा ) बाला ।"—अडरूमा ।

क निद्ध = उपनाह । "पहलें कोप होता है, वही आगे बदकर बैरमान ( ≈उपनाह ) हो जाता है।"—अडफ्या ।

## §१० एणिज**ह** सुच ( र ३ १० )

दुःब से मुक्ति

पूर्ति सूरा क समान कांध वाले कुश नीर अस्पादारी कोम-रिहत सिंह के समान अफेल करने वाले नियाप कार्मों में अनेका-पाल सिंसके मिट गर्थ हैं बेस आपने पास आकर बुक्ता हूँ— कुल से कुरवार केंद्र हो सक्या है ?

[ भगवाम् — ]

संसार में पाँच काम-गुज हैं कमों मन कहा पाना है। इसमें बरपक होने पाकी हकामणें को हस इसमें बरपक होने पाकी हकामणें को हस

वाकि वर्ष समाप्त

## चौथा भाग

## सतुद्धपकायिक वर्ग

## § १. सन्भि सुत्त (१. ४ १)

### ूं सत्पुक्षीं का साथ

ऐसा मैंने सुना । एक समय भगवान् श्रायस्ती में अनार्थापिण्डक के जेतघन आराम में विहार करते थे । सब, कुछ स्तुहुबकायिक देवना रात बीतने पर अवनी चमक से सारे जेतघन को चमकाते

हुमै जहाँ भगवान् थे वहां आये ओर अगवान् का अभियादन कर एक और खड़े हो गये।

एक ओर राडे हो, उनमें में एक देवता भगवान् को यह गाथा बोला.— सरार्ख के ही साथ घेटे.

सत्पुरपा क हा साथ घठ, मत्पुरुपों के ही साथ मिले जुले, मत्पुरुपों के अच्छे धर्म जानने में, करुपाण होता है, अहित नहीं ॥

तय, दूसरा देवता भगवान के सम्मुख यह गाथा योखा —

सरपुरणे के ही साथ बैठे, सरपुरुषों के ही साथ मिले खुळे, सन्तों के जच्छे घर्म जानने से ही, मज़ा मास होती है, अन्यथा नहीं॥

तत्र, वृसरा देवता अगवान् के सस्मुख यह गाथा वीळा ---सन्तों के अच्छे धर्म वामने से.

शोक में पढ़ कर भी शोक नहीं करता ॥

वय, तूसरा देवता भगवान् के सम्मुख यह गाथा बोला ---

सन्तों के अच्छे धर्म जामने से, बान्यकों में सबसे अधिक वेज वाला होता है ॥

तब, दूसरा टेवता भगवान् के सम्मुख यह गाथा वोला —

सन्तों के अच्छे धर्म जामने से, जीवों की अच्छो गति होती है।

तम, दूसरा देवता भगवान् के सम्मुख यह गाया योछा ---

' सन्तों के अच्छे घर्म जानने से, सत्व बदे सुख से रहते हैं॥

तम, तूसरे देवता ने भगवान् से यह कहा- भगवान् । इनमें किसका कहना सबसे डीक है १

पक्र-एक इस से सभी का कहना ठीक है। तो भी मेरी भार से सनो :---

सराइयों के साथ बैंडे सत्पद्धों के ही साम मिश्र क्रक क्रमतें से भारते गर्म बालते से समी द्वाला से छूट जता है ॥

मगवान ने यह कहा । संतुष्ट दो ने देवता भगवान का अभिवानन और प्रदक्षिणा कर वहीं मन्त्रदाव हो गए।

### § २ यच्छती संच (१४२)

#### कंजुसी का स्थाग

पुत्र समय भगवान श्राबस्ती में समाचपिण्डिक के जेतवम भाराम में विद्वार करते थे । तब कुछ सत्तालपकाशिक देवता रात बीतमें पर वापनी कमक से भारे खेलसम की बमकारी इयं जहाँ मगवान ये वहाँ आये शीर मगवान का जनिवादन कर एक और अदे हो गर्ने।

युक्त और प्रचे हो। जनमें से युक्त वृषता मगवान् की वह गावा बीधा ।---

सास्त्रचे से बीर प्रमाद मे सन्तरम बाथ वहीं करता है। पुरुष की भाकांका रकते वासे काशी प्रकार की दान करना चाडिए ॥

तब इसरा देवता भगवान के सम्बन्ध यह गाया बीकाः---

कंत्रस विसके वर से दान नहीं देता है नहीं तने स उसे वह यब कमा दी रहता है। मुख और प्वास-जिससे बंजून दरता है बहु उस मूर्ज की नत्म प्रम्मान्तर में क्या रहता है ह प्रसक्तिय क्वंबनी करना कीव पाप हजाने शाका प्रण्य-कर्म दान करे परक्रोक में केवस मध्या किया प्राथ ही प्राचित्री का सामार शीला है ॥

तव कुसरा देवता भगवान् व सम्मुख वह गाया बीका---

मरे हुओं में ने नहीं भरते को साद अवसे साविनो की तरह मोड़ी सी भी भीत की आपस में वॉड कर ( लासे हैं ): बड़ी समात्रथ वर्ग है। मोदा सामे वर भी किसल दान देते हैं बहुत रहते पर भी किशने बान नहीं वेते। भीवा रहते वर जी जी बाज विद्या जाता है बद इजार दिवे गर्वे भी भी बरावरी करना है ह

तव, दूसरा देवता भगवान् के सम्मुख यह गाथा बीला ---

किंद्रम से किंद्रम रान कर देने वाले, दुष्कर काम को भी कर डालने वाले का, मूखं लोग अनुकरण नहीं करते; मन्तों की यात आसान नहीं होती ॥ इसीलिये, सन्तो की और मूखों की, अलग अलग गति होती है, मूखं नरक में पड़ते हैं, और सन्त क्यों-गानी होते हैं ॥

तब, दूसरे देवता ने भगवान् से पुछा, "भगवन् । इनमें किसका कहना ठीक है ?" एक-एक ढंग से सभी का कहना ठीक है, तो सी मेरी ओर से खुनो —

वह वडा धर्म कमाता है जो यहुत तारी से रहते भी, श्री की पोसते हुने अपने थोड़े ही से कुछ दान करता है, हुनारों दाता के सैठको और हजारों का दान - वैसे की करुप भर भी बरावारी कहीं कर सकसा ॥

सब, दूसरे देवता ने भगवान को गाथा में कहा--

क्यों उनका वटा महार्च टान, उसके दान की वरावरी नहीं कर सकता ? हुजारें टाता के सैकड़ों और हुजारों का टरन, चैमें की कळा भर भी बरावरी क्यों नहीं कर सकता ?

तव, भगवान् ने उस वेवता को गाथा में कहा ---

मार, काट, दूसरोको सता, तथा जीर अञ्चलित कर्म करानेवाले, जो धान करते हैं, उनका यह, राज और मारपीट कर दिवा दान, सांति दे दिये गए दान की बराबरी नहीं कर सकता ॥ इसोल्डिये, हमारों दाला के सैकडों और हजारों का दान भी, बैसे डाम की कला भर बराडगी मार्टी कर राजता ॥

## § ३. साध सच (१.४.३)

दान देना उसम है

#### श्रावस्ती में !

तम, कुठ स्तुपुरूप्रधायिक देशवा रात शीतने पर । एक और खड़े हो, उनमं में एक देवता ने भगवान के सम्मुख यह उदान के शब्द कहें —

> भगवन् ! वान कर्म सचमुन् में बडा उत्तम है । कजूसी से और प्रमाद से,

समुख्यों को दान नहीं दिवा जाता; पुरुष की जार्जाद्वा रधने वाले दानी पुरुष को दान करना चाहिए ॥

तन, एक वृसरे देवता ने मगवान् के सन्धुय यह जनान के सन्द नही-

भगवन् । बाव-कर्म बद्दा उच्छा है पोट्टे स भी दान देना बदा उच्छा है कितने पोट्टे रहमे पर भी दान करते हैं, बहुद रहमे पर भी कितने नहीं गेठे पोट्टे में से निकाल कर को दान दिया जाता है बहु हका के बान के प्राप्त है व

तत एक दूसरे देवता ने भगवान के सन्भूक अदाव के वह शब्द करे---

भगवम् । वास-क्से वहा कत्तत हैं
धीदें से भी एमर देश बचा कत्तत हैं
आदें से भी एमर देश बचा कत्तत हैं
धर्म से कसोबें मेरे का शुन भी बचा क्यम है
धर्म से कसोबें मेरे का शुन भी बचा क्यम है ह
धो पर्मातुक्क कमाकर पान देश हैं
क्याह-मूर्यंक परिधान करने करित कर
बाह-मूर्यंक परिधान करने करित कर
दिस्म क्यांत्री की करिंद
दिस्म क्यांत्री की महा होता है ॥

तम एक तुमरे देवता ने अगवान के सम्मुक बन्नान के यह सब्द करे।---

स्थायन् | बान-क्से बढ़ा उत्तम हैं
कोई से जी दान देश बढ़ा उत्तम है
कहा से दिवा गया दान भी बढ़ा उत्तम है
कहा से दिवा गया दान भी बढ़ा उत्तम है
कीर, समाये गये का दान भी बढ़ा उत्तम है
कीर, समाये पढ़े कर दिवा गया दान भी बढ़ा उत्तम है
कास दुक्त कर दिवे गये दान की हुद्ध में मसंदा की है
सेसर में को दक्षिया के पात है
कासो दिये पत्ते दान कर बढ़ा तक होता है।

हांव एक बुधरे वैच्छा में भगवान् के सम्भ्रक बद्दान के यह सम्ब क्योस्वापन् । वाम कर्म बद्दा बच्छम है

क्षोदे से भी दान देवा जदम बच्चम है

क्षाहर से दिया गया दान भी बद्दा बच्चम है

क्षाहर से दिया गया दान भी बद्दा बच्चम है

क्षाम से क्षाप्त भने कर दान भी बद्दा क्षाम है

क्षाम से क्षाप्त भने कर दान भी बद्दा क्षाम है

क्षाम स्वी के प्रति संदर्भ एक्सम भी वद्दा क्षाम है।

क्षेम सिक्षों के विद्या कर है हुई दिवसा है।

निन्दा से दरता है, और पाप-कर्म नहीं करता, पाप के सामने जो दरपोक है वही प्रशसनीय है, यह सूर नहीं, सन्त लोग दरते हैं और पाप नहीं करते ।।

स्य. एक दूसरे देवता ने भगवान् से पुत्र ---

भगवन् । ज्नांस कितका कृतना टीक है ? एक-एक दम से सभी का कहना टीक है, वो भी मेरी और में सुनी .— श्रद्धा से दिये गये दान की यदी प्रदाई है, दान में भी यह कर घमें का जानना है, पहले, बहुत पहले जसानों से, सन्त होन, पहले, बहुत पहले जसानों से, सन्त होन,

# ३ ४. नसन्ति सुस (१४४)

## काम नित्य नहीं

एक समय भगवान् श्रावस्ती में अनाथिपिङिक के जेतस्वन आराम में विहार करते थे। तर हुछ सतुत्वरूपकायिक देवता । एक और खड़े हो, उनमें में एक ने भगवान् के सम्मुख यह गाया करी---

> सनप्यों से काम निस्य नहीं हैं. ससार में लकाने वाली चीज़ें है जिनमें वस जाते हैं जिनमें पब कर मनुष्य मुख जाते हैं. मृत्युके राज्य से छट कर निर्याण<sup>१</sup> नहीं पाते ॥ प्रचला धषाने से पाप होते हैं. इच्छा बदाने से हु प होते है, इच्छा को हवा देने से पाप दव जाता है. पाप के दय जाने से दू रा भी टब जाता है।। ससार के सुन्दर पदार्थ ही काम नहीं है, राग-युक्त मन हो जाना ही पुरुष का काम है, ससार में सुन्दर पदार्थ वैसे श्री पन्ने रहते हैं। किन्त, पण्डित क्रोग उनमे हच्छा उत्पन्न नहीं करते ॥ श्रीध की छोद है, मान को विस्कृत हुटा है, मारे प्रमाना को कारकर रिश है. नाम-रूप के प्रति अनासक्त रहनेवाले. स्यामी को दु सा नहीं छगते ॥ काक्षाओं को छोय दिये, मनस्ये नहीं याँचे, नाम और रूप के प्रति होनेवाडी तृष्णा की काट दिये. उस गाँउ-कटे, निप्पाप और वितृष्ण की, खोजते रहने पर भी नहीं पाते.

१,अपुनरागमन=निर्वाण, जहाँ से फिर कीटना नदी है।

नंबतः कार सञ्जय कांक में वा परश्राक से स्थार्ग में वा सभी कोंकों में ॥

भाषुप्मान् मोधराज्ञ ने क्या--

पदि मेंसे मुक्त पुरुष को नहीं बेक पाय बेक्टा मीर सनुष्य आक ना परकीक में, परसार्य बानये बाके उस महोत्तम का, जो उन्हें बसम्बार काते हैं वे बन्स हैं ॥

भगवान् ने कहा---

मोबराज । वे सिशु चन्त्र हैं जो वैसे मुक्त पुरुष का बसस्कार करते हैं। पर्म को कल संस्कृत की मिछ वे सिश्च सभी बन्तामों के कपर वट बात हैं।

४५ उच्मानसम्बा**स्च (**१४५)

तवागत दुसदर्गे से परे 🕏

पुरू समय भगवाम् आयरती में अनायपिणिकः व जेतवन नाराम में विदार करते से । एव कुछ उन्याननांत्री देवता सम् बीतने पर अपनी बसक से सारे जेतवन को बसका वहाँ समयाम् से वहाँ यापु । जाकर बाकास में कहे हो गये । आकास में नदे हो एक देवता ने समावान् को गावा में कहां—

> हुन बूनरा हो होते हुए करने को को हुक बूनरा ही बचाता है बस बूर्ग देश बचा का को बुट मोश-स्थार है वह बोरी से होता है व को सब में को बहा बोके को नहीं को बहु सब बोके विगा करते हुने बहुने बस्तों की प्रशिद्या सारी हुने कहने पहलें की

# [ सगवान्--- 1

— ] यह केवल कर्ने भर से या केवल सुन मर की से आस वार्ट कर किया का सकता है जो वह साम इतना कर्मर हैं। मिमने छात्री दुष्य सुन्न हो करा हैं च्या करामि बार्ट सार में जन्मन से स वमे छात्री दुष्य कर्मा गई कर्ने भंगार की गाँग-विधि बान कर, प्रज्ञा पर पण्डित लोग मुक्त हो जाते हैं, इस सीहर अपसागर की पार कर छेते हैं ॥

त्तर, उन देवसाओं ने पृथ्वी पर उत्तर भगवान के चरणों में किर में प्रणाम, कर भगवान, को कहा ----

अन्ते ! इस टोवों से आरी भूक हो गईं। सूर्य जसं, सुद्र जेसे, वेबज़फ जैसे हो फर हम छोगी ने सगरान को निष्याम चाहा ।

भन्ते । भगवान् हमारे अपराध को क्षमा करें, सविष्य में ऐसी संख नहीं होगी ।

हमपर भगवान में मुस्करा विया ।

नय, ये टेवता बहुत ही जिद्र कर आकाश में उठ गर्ट हो गये। एक देवता भगवान के सम्मुख यह गाधा रोला —

> अपना अवराध आव स्वीकार करने चारते को, को क्षमा नहीं कर देता है, भीतर ही भीतर कोप रराने वास्त, महाहेची, यह बैंद को आर भी बॉध देना है। यह कोई भी उराई नहीं हो, श्रीत मंगार में कोई भूछ भी न करे, और यदि बेर भी सारत न हो जाब, नो भठा, फील बानी वन स्कता है ? खुराई फिरमें नहीं है ? भठा, किराये चूल नहीं होती ? कान गफरत गई। कर देवता ? कान परिवार मटा स्वृदिमान, रहता है ?

िसरावान---

जी तवागत खुड है,
सभी जीषी पर अनुकर्मा रखते हैं,
उनमें कोई दुराई नहीं रहती,
वे कमी भी राफकत नहीं करते,
वे कमी भी राफकत नहीं करते,
वही पथिदत स्वा स्कृतिमान् रहते ॥
अपना अपराच आप स्वीकार करने चालों को,
जी क्षमां नहीं कर देता है,
भीतर ही भीतर कोप रखने चाला, महाहेपी,
उस संद को और भी बाँच देता है।
ऐमा कहने वाले के मति सै बैंद नहीं रखता,
गुम्हरे अपराध को में समा चर तेता हैं।

# § **६. सद्धा सुत्त (**१. ४. ६ )

प्रमाद का त्याग एक समय भगवान् श्रावस्ती में अनाथिपिडक के जेतवन आराम में विहार कर रहे थे। तम इ.उ. मतुपुरुषण्याधिकः वेबशा रात के बीतने पर व्यवनी व्यस्त से सारे क्रेतरण को वसकाते हुये वहाँ भगवान् वे वहाँ वाचं और सनवान् का विभावन कर एक ओर लाई हो गये। एक भार पार हा उनमें से एक वेबता ने सनवान् को गावा में कहा —

> विस्त प्रकप को सन्। कहा वनी रहती व भार को समझा में कसी गहीं पहता उससे उसकी कीर्ति भार नदाह हस्ती हैं सचा सारित हुटने के पाद सीचे स्वर्ग को काता है।

तत बूसरा देवता भगवान् के सम्मुख यह गावा बोकाः— प्रोप दर करें समिमान को छोड़ दें.

सारे बन्धमाँ को खाँच कार्य मास बीर रूप में नहीं फूँसवे वास उस ध्यानी के पास सुच्या नहीं कारी ॥

#### भिगयान--

प्रसाद में क्ये रहत है मुखे दुईदि कोग ताली दुवर मप्रसाद की बढ़ घन के एसी रक्षा करता है ॥ प्रसाद में सब कमो काम-राग का साव जोव हो प्रसाद रहित हो ज्यान क्याल बाला परस सफ पाता है ॥

६७ सम्म सुच (१४७)

विश्व सम्मेष्टन

ण्मा सैवे सका ।

पुरु समय मात्राज्यों को समी जहाँग मिहुआं के एक यह भेव के साथ शास्य (कापर) में करिक्यम्मु के महाका में विहार करते थे। भगवान कीर मिहु-संघ के दर्शवार्य इसे काठ के बहुद देशना था इक्टो कर थे।

ता पुराप्तास के बार देवताओं क सम में वह हुआ। 'यह समावान पाँच सा सामी माँग निह्याओं के एक वह संघ क साथ द्वारूप (जनवह) में करियद्धवस्तु के सहायम में विदार करते हैं। समावान बीर सिद्धानंत्रक के पर्याणां बातों कोच के वहन वैवता था इस्हे हुए हैं। से इस सीमा भी पत्ती वार्ष भागना रिताकों हैं चकार समावान के पहल प्रमाण करें।

तत के देवता जीते कोई वस्त्राम् पुरुष समग्री गाँड को धरार दे कीर प्रमारी गाँड को समेर कर्षमें ही ट्रायापास स्रोक में अन्तवान हो अध्यान् के सामने सगर हुने। तब वे देवता प्रमागन्त्री प्रमान कर एक भीड शह हो गये।

पद कार राहे हो। एक देवता अवदान् इ सम्बुग्र यह गांधा बोक्या---

बन-गण्ड में यही सभा वर्गा है प्रकार भीत आवर हड़े हुने हैं। इस वर्ग-मधा में हम लीत भी बाव है बरशांजित निशुस्त्य के स्तीवार्थ ॥ तव, दूसरा देवता भगवान् के सम्मुख यह गाथा बोला.—
वन भिश्चलां में समाधि कगा ली,
अपने चित्र को पूरा एकाध कर दिया,
मार्थों के जैमा लगाम को परण,
वे चानी इन्हियों को घन में रखते हैं ॥
तय, वूसरा देवता भगवान् के हुम्मुख यह गाथा बोल्य —
(राग-दूप-मोह) के धावरण,
तथा दक बन्धन को नष्ट कर, वे खिर चित्रवाहे,
हुद्र और निर्मेख (हुंसार्य पर) चल्ले हैं,
रोगिवार, तिलाये गर्थ तक्य नाम जैसे ॥
तथ, वूसरा देवता भगवान् के तम्मुख यह गाथा योला —
को पुरुष बुद्ध को नराण से आ गर्थ है,
वे दुर्गातिक में नहीं पद नकने,
मत्य गरीर डोक्न के चाट.

देश-लोक में उत्पन्न होते हैं ॥

# § ८. सकलिक सुत्त (१. ४. ८)

# भगवान् के पैर में पीड़ा, देवताओं का आसमन

ऐसा सैने सुना।

एक समय भगवान् राजगृह के महकुत्रि नामक स्राज्य में विहार करते थे।

उस समय भगवान् का पैर एक पत्थर के हुन्हें से कुठ कर गया था। समावान् को यही बेठना हो रही थी—पारि को बेवना हु जब, तीम, कटोर, परेशान कर वेनेवाजी। भगवान् किराचिक्त से स्मृति-मान् और समग्र हो उसे सह रहे थे।

तव भगवाल समावी को चौपेत कर विख्वा, डाहिनी करवट सिंह-शच्या खगा, कुछ हटाते हुए। पैर पर पैर रख, स्वृतिमान् और सप्रज हो लेट गये।

तब सात की स्तुतक्षप्रकाशिक देवता रात शीतने पर अपनी चमक से सारे महकुक्षि को चमकाते हुये जहाँ मगधान् थे वहाँ आये और अगवाल का अभिदावन कर एक ओर खहे हो गये। एक और खदा हो, एक देवता ने मगबान् के पास उदान के यह फटर कहें —

जरें । श्रमण गीतम चाग है, बे अपने नाग-वरू से युक्त हो, द्वारीरिक बेदना, हु अह, तीब, कटोर को, स्थिरिक से स्मृतिमान् और स्पन्न हो सह रहे हैं॥

तत्र, वृक्षरे वेवता ने भगवान् के पास उदान के यह सब्द कहें —

जरें। प्रमण गौतम सिंह के समान है। अपने सिंह-वळ से युक्त हो बारीरिक वेउना ' की स्मृतिमान् और सब्ब हो स्थिर चिन से सह रहे हैं।

o अपाय=दुर्गति चार है--नरक, प्रेतलोक, असुरकाय, तिर्मग् योनि ।

<sup>ी</sup> मगबान टेटते समय पैर की विक्यों की एक दूसने से योटा सा इटाकर रखते के, उसे ही "पाटे पाट अवाधाय" कहा गया है।

तम तुसरे देवता ने भगनाम् के पास बदान कं यह सम्द कई 🛌

भरे ! ग्रमण गीवम भागानीय हैं ! अपने जाजानीय-पण से - जियर-चित्त से सह रह हैं !

त्रव तुमरे देवता में भगवान के पास बदान के यह शब्द कहे :---

मरे । भ्रमण गीरम बेजोब हैं। मध्य बेजोब बस में स्थित-चिक्त से सह बड़े हैं।

तप नृत्रों नेवना ने भगवान के पास तथान के बढ़ शस्त्र कहें:---

भारबाहरू शान्त करे-मो केवल सपनी मुर्जला से कहता है।

भरे ! अमन नांतम पढ़े भारी भार बाहक हैं। स्थिर-चिरा में सह रह है।

तव गुमरे देवता ने भगवान के पास उनान के यह सन्त्र कहैं।---

बरे ! समय गीतम बड़े ताला है । ज़िंद-चित्त स सह रहे हैं।

तम पूसरे देवता ने मगबान वे पास अवान के यह शास कही-समाधि के मन्यास सं इस विश्वक विश्व को देखों ! न दो उटा है न दवा है और न कोई कांधिय करमें पारता गया है। किन्तु कहा हो जामादिक है। को पूरी को पुरुष नाम सिंह, बाजानीय वेडोड़

> पञ्चार चेत्र को साक्षण सक्षेत्री चारण कर सी बारों तक शक ही नपत्या करता रहे किन्तु उसम विश्व दूरा विसन्त हो नहीं सकता बीन बाहर बाले पार नहीं का सकते व मुख्या संग्रीतिम जस अगति के फेर में पड़े सा वर्ष क्योर तपल्या करते हुने भी बनका चित्त पुरा विश्वक नहीं होता शीन करन व से पार नहीं का सकते ह भारत-रहि रक्षने वाके प्रदय की भारत नेपस नहीं हो सकता मसमाहित पुरुर को मुनि भाव नहीं था सकता जंगक में अबेका शमावनुष्क विदार करते हुय कोई शृत्यु के राज्य की पार नहीं कर सकता ह मान क्रोप बाधी तरह समाहित हो सुन्दर विश्व बाब्ज सभी तरह स विश्वक, साबधान है। बंगक में सकेश्वर विद्वार करते हुने यह धरम के शाम के पार चका करता है ॥

## §९ प<del>≆क्रमपीत सच</del>(१ ४ ९ )

### धर्म-प्रहण से स्वय

ऐसा मैंबे भूना ।

एक समय भगवान् वैशासी में महायन की कृतागरणास्त्रा में विहार करते थे। तम प्रदारन की नेही क्रोकनदा रात नीतने पर भवनी नामक से सारे सहायन की नामकाती प्रदे पहीं मगनान् थे वहीं नाई, भोर संगवान् का कशिवादव कर एक और सही हो गई !

मुक्त कोर न्यक्षी बह वेतता कोकशया प्रयास्त की वेडी सगवान के सम्मुख बह गामा

बोकीः--

चेशासी के बन में बिहार करते हुये, मर्बश्रेष्ट भगतान् बुढ को, में कोफनदा प्रणाम् करती है, फोफनटा प्रदा रन की वेटी । मेने पहले धर्मके विषय में शनाही था, जिसको सर्वञ्च अञ्चने साक्षान किया ए*,* आज में उसे साक्षान जान सही है. मृति सुगत (=3ह) से उपटेश किया गया ॥ जो कोई इस अर्थ धर्म को. मुर्च निम्दा करते फिरते है. थे धोर शीरब नरक में पडते हैं, चिर काल तक हु ग्रें। का अनुभव करते ॥ " भीर जो इस आर्थ धर्म म धीरता और गान्ति के नाथ अने है. चे सहप्र-गरीर को छोउ कर. देव-कोक में उत्पन्न होते हैं॥

## § १०. चुछपञ्जनधीत सुत्त ( १. ४ १०)

बह धर्म का सार

ऐसाभैने सुना।

पुरु करान भागान, बेहााली में महाचन भी क्टामारणाला में विहार करते थे। सन, छोटी कीक्तवा प्रदादन की येटी रात शैसने पर अपनी चसक से सारे प्रहाचन को चम-कारी हुई जहाँ भगवान् ये वहाँ आहें और अगवान् का अभिवादन कर एक और खड़ी हो गई।

काती हुन जहां भनायान् ये वहां आहं आंर भनायान् का अभिवादन कर एक ओर खड़ी हो गईं। एक ओर लड़ी हो वह देवता छोटी-कोश्वतदा प्रद्युक्त की बेटी भगरान् के सम्झुप्त गर्ह गाथा बोजी ---

यह से आई है, तिमली की चक्रक जैसी कान्ति वाली, कोस तहा प्रयुक्त को येटी, खुद कीर पर्म को नमस्त्रार करती हुई, मैंने यह अर्थेसती माध्य कही । चतार्थ अर्थेसती माध्य कही । चतार्थ अनेक हम से में कह सकती हुँ, ऐसे ( महान् ) भर्म के विस्पत्र में, (त्यापि) सखेण से उसके सार को कहती हूँ, जाई तक मेरी खुदि की जीस्त्रार्थ है ॥ सारे ससार में कुठ भी पाप न कुने, वारीर, वचन या अग्ले करीने को देश हम से सारे सम्रा, अन्य कार्नों को देश स्वरित्तान् और सम्रज, अनर्थ करीसोल है ह को मेरी चतुर्वा कार्में कार्नों के होंगे, स्वरित्तान् और सम्ज, अनर्थ करीसोल है ह को मेरी चार पहांच ॥

सतुब्छपकायिक वर्ग समाप्त ।

# पाँचवाँ भाग

#### जलता धग

# ६१ आदिच सुच (४५१)

कोष: मैं भाग खगी हैं

मेना मैंबे सुवा ।

एक समय मार्गण, आखरती में अभावपिषिक के जेतवल बातम में विदार करते थे। तब कोई देवता रात बीतने पर अपनी चमक से मार्थ अंतवल की बमकस्ते हुये। वहाँ मार्गवाद में

वहाँ जाया भीर भगवान् का अभिवान्त कर एक बोर जहा हो गया । एक भीर प्रशा हो वह त्रेवता अगनान के सन्साप वह गावा थीका:—

> बर में भाग कर बाले पर जो अपने मस्त्रपाब चाहर निकाल केता है बह उसकी अलाई के किये होता है;

नहीं दो नह वहीं सककर राज हो जाता है प्र इ.मी प्रकार हम सारे कोज में भाग लग गई है करा की भाग जीत सर बाने की अग

दान देकर भाइर निजान की बात विचा गया भारती तरह रक्षित रहता है ॥

नान हैंने से मुख्य की प्राप्ति दोती हैं भारी दर्श से उसे पेतन ही होता हैं। चोर जुस करी हैं, या राज्य दर केले हैं या अध्या कम जाती हैं या मण हो जाना है ह और खालिए में तो सम्ब हो पुर खाता है

बह गारि भी भीर साथ साथ सारी सम्पत्ति इसे जाम वृध कर पण्डिम शुक्रम भीग भी करने हैं और वृत्तम भी वृत्ते हैं ॥

अपने मामध्ये के अनुसूत्र नेकर और जीव कर निम्मा रहित ही स्वर्ग में स्थान पाता है ॥

इ.२ किंददं सुच (१ ०)

क्या दन वासा क्या पाता है ?

च्या देने बाला श्रस देता है ? च्या देने बाला बर्ज देता है ? क्या देने बाला सुन्य देना दे ? क्या देने बाला ऑप्ट देना ह ? फीन सब पुढ़ देने बाला होता है ? से कड़ता है, फुपया बनार्वे ॥

#### [ भगवान - ]

अस देने पाला उरू दता है, परत देने बाला ६ण देता है पाहन देने पाला सुपा देता है, प्रकृषि देने बाला औप देता है, और, पह सब तुरु देने वाला है, जो आअस ( ज्या ) देता है,

> आर अमृत देने वाला तो वह होता ह, जो एक पार धर्म का उपटेश कर है ॥

§ ३. अन्न सच ( १. ५, ३ )

अब सबको बिय है

एक अन्न ही हैं जिसे सभी चाहते हैं, देवता और मनुष्य लोग दोनां, भाज पूना फान-या प्राणी हैं, जिसे अब प्यता न काता हो ?

जो उस अज का श्रहा-पूर्वक बान करते हैं, अध्यन्त प्रसन्न चित्त सें, उन्हों को वह अज शास होता है, इस कोठ में और परलोक से भी।

> हमिलये, कज़्ती करना छोट, पाप इंडाने वाला पुण्य-कर्म दान करे, परकोक से पुण्य ही (केयल) प्राणियों का काशार होता हैं॥

§ ४. एकमूल सुच (१. ५. ४)

एक जडवाला

एक नद बाला, शे मुंह बाला, सीन मल बाला, पाँच फेलाव वाला, अरह मैंबर वाला समुद्र, और पाताल, सभी को ऋषि पार कर क्वेर्र ॥

 <sup>&</sup>quot;अविधा तृग्णा की जब है, तृग्णा अविधा की । यहाँ (एक जब् से ) तृग्णा ही अभिमेत है।
 वह तृग्णा शास्त्रत और उच्छेद दृष्टि के मेद से दो प्रकार (च्युँ दे) की होत्ती है। उत्तर्मे राग, द्वेष और

\_

5

# 8ु ५ अनोमनाम सुत्त (१५५)

# मध-पूर्ण

धनोम नाम बाके स्वम द्रष्टा द्यान वेने बाके कामों में धनापकः द्वन सर्वत्र पण्डित का वेसी कार्य-मार्ग पर बक्ते दुवे महर्षि का b

६६ अ**ष्ट्रशास्**च (१ ⊀ ६)

राद्य कीसे कटगी 🕻

अप्तराजी के गण से बहुध पहंच गण पिसाचा कंगण से संबित्त सुपाये में बाक पेन गाठा<sup>3</sup> वह बन (नन्द्रन) है गाह कैसे करेगी गैं

## [मगवान्—]

बाहिये। —भहक्या।

बह सागै बहा सीधा है बह स्थान वर भव से घूटन हैं कुछ भी आवाज न निश्लकन नाका रच हैं जिसमें बर्म के चक्के को हैं" अ

> हो उसकी बच्चन है स्कृति जम पर निर्का व्यवस है सभै को में सारची बनावा हूँ सन्दर्भ रहि आगे करा संदर्भ काका (समार ) है ह

जिसके पास इस प्रकार की संवारी है जिसी सी के पास वा किसी पुरूप के पास बहु इस पर कीकर ज़िब्बोण तक पार्टी जाता है है

भोह तीन सक होते हैं। "। जैंक कामपुष न्यांक देशक है। वह गुण्या कमी पूरी नहीं होती है इत अर्थ में अगृत कहीं गण है। अप्यास्य कार बाहर के बावह म करन भैंवर कहें गई है "। गुण्या को ग्राहरण का हद नहीं है इसकिये पाताक कहां गण है।—अन्नक्षा।

- र काहर नहीं है इसीक्य प्रांत्रक कहा: १ सम्बद्धांचन । 'सोहर्स पर्ने पार्टिं।
- र कर्च काला अधिरमति---वैशे प्रशास शांगा क्रेसे सुक्ति होगी है
- ६ निवान को सध्य कर नहां गया है। अद्रक्ष्या।
- ४ हारीरिङ-बीविजङ बीचे गेएगान पर-बन्ध से कुछ-अङ्ग्रह मा । ५ फी मीतिब रच में जरार किंग्ड्रा का गिरन से कलाने के लिये कहनी का पटए बना दिया क्का है, देशे ही इस मार्ग के रच में करपास और बाब होनेवाओं बी-पाप करने से लगा स्वसन्ता

# ६ ७, बनरोप सुत्त (१, ५, ७)

## किनके पुण्य सदा बढते हैं ?

किन पुरुषों के दिन और रात, भारा पुण्य बद्दे रहतें हैं ? भर्म पर इद रहने बाले शील से सस्पन्न, फ्रोन स्वर्ग जाने बाले हैं ?

#### भिगवान-ो

— ]
बागि ओर उपवन लगाने वालं,
तो लोग पुरु बंधवाते हैं,
पीसाला धडाने वालं, हुँव खुडधाने वालं,
राह्गीरो को शरण देने वालं,
राह्गीरो को शरण देने वालं,
उन पुरुरों के दिन और रात,
महा पुष्प वहते रहते हैं,
धर्म पर यह रहने वालं, वालं में सम्पन्न,
वे ही करों की मार्ज में ही

# § ८. इदं हि सुत्त (१, ५, ८)

जेतवन्

ऋषियों से सेवित यह ग्रुभ-स्थान जैत्वन, जहाँ धर्मराज (=बुद्ध ) बास करते हैं, ग्रुझमें भारी श्रद्धा उत्पन्न कर देता है ॥

कर्म, विद्या, जार धर्म, शील और उसम जीवन । इन्हीं से मनुष्य गुद्ध होते हैं, न तो गोग्र से और न धन से ॥

> इसहिन्ये, जो पण्डित पुरुष है, अपने परमार्थ की दृष्टि में रण, द्रीक तीर से धर्म कमाने हैं, इस मक्तर उनका चिन्न छुड़ हो जाता है ॥ स्तारिपुत्र की तरह मजा से, सील से और मन की सान्ति से, जो भी निष्ठु पर चठत गया है,

§ ९. मच्छेर शुत्त (१. ५. ९) कंज्रसीके कफळ

जो ससार में कज़म कहे जाते हैं, मक्सीचूस, चिद्रकर गालियाँ देने धारे,

۹

18 4.

दसरों को भी दान दर्ग देग का प्रस्प जन्द्र बद्धका वर्ग वास ह जनके कर्ज कर फल कीमा शासा है है जनका वस्त्रोक कैया होता है ? भाग को चारते के किये आग.

प्रम करेश जर्म केंग्रे धमझे १

# [भगवान--]

जो समार में बंजम बहे व ते ह मक्तीकम किरदार शाकियाँ पने बाक हमार को भी ताल नेते बेग भो उन्हें बहका देव शाये हैं वे नरक में सिरक्रीन पोनि में वा बमस्रोक में पैदा हाते हैं। पति व समस्य कोति में भाते हैं हो किसी परित एक में सम्म केते हैं करना खाना पेश आराम केक-रामाचाः उन्द्र प्रश्नी लगी में शिक्त हैं। मुख किसी वसरे पर भरोसा करने हैं सब करो भी ने कीजें नहीं सिक्टी माँचीर के राजते ही वेश्वत जगना यह फक हाता है परकोक में कनकी बड़ी बगति होती है ॥

# [ वंधता— ]

इसने इसे पेशा जान किया अब हे गीतम । एक इसरी वात पुक्रत है---को वहाँ महुप्त-बोलि में बन्म केने हैं। हिंदमें-जिसमें वाले लड़ दिस बाले हुद्ध के प्रति अक्टाब्स्'और चर्म के प्रति संब के प्रति बका गाँउन एमने बाके। क्षत्रके कर्ज का फल कैंगा होता है र क्रमा परकीक कीता होता है ? भाग को प्रजने के किये भाग. इस कोग बसे कैम समझे 7

# [ भगवान-]

का बड़ों मलुष्य-बोलि में बल्स खेते हैं डिसने-शिकने वाले शुक्ते विक वाके कुद के प्रति सद्धानु और वर्शक प्रति संब के प्रति बदा गीरण रक्षाने क्षाक्र च व्यर्ग में शोधित होते हैं

वहाँ वे जन्म देते हैं ॥
यदि फिर मनुष्य-गोति में आते है,
तो किसी यदे घताव्य कुछ में जन्म पाते हैं,
रूपदा, प्रावा, ऐहा-जारम, खेळ-तमाव्या,
जहां खर मन भर मिलते हैं,
मनवाह भीगों को पा,
चदावर्ती देवां के ऐपा आनम्म करते हैं,
अंदें, के देखते हो यह फळ होता है,
और परकोठ में बडी कड़ी गाइडी गिह होती हैं,

§ १०. घटीकार सुत्त (१, ५, १०)
यद्ध धर्म से ही मुक्ति, अन्य से नहीं

घटीकार देवना--- ]

अधिष्ठ लोक में उत्पन्न हुये, सात मिश्रु विश्वक हो गये, राग, हेंग (और मीह ) नष्ट हो गये, इस अवनागर को पार कर गये॥

बे कीन थे जो कीचढ़ को कॉब गये, मृत्यु के उल यहे दुम्तर राज्य की, जो मनुष्य के प्रारंत को छोड़ कर, सर्वोच्च म्थान की ग्राप्त हुने १

उपक्त, पछत्त्वच्छ और पृक्कुस्ताति ये नीमां महित्र और साण्डदेव, वाहुर्राधा और पिद्गिय, यही क्षोग मनुष्यनेह को छोब, सम्बोच स्थान की प्राप्त हुये ॥

## [ सगवान्—]

उनके विषय से तुम विस्कुछ ठीक कहते हो, जिन्होंने सार के जाल को काट बाला, हे किसके धर्म की जान कर, भय-यन्यान तोइने में समर्थ हुये ?

#### िदेवता--- ]

भगवान् को छोड़ कहीं और नहीं, आपके धर्मको छोड़ कहीं और नहीं, आपके धर्मको छोड़ कही और नहीं, जिन आपके धर्मको जान कर, ये भग्न-भग्नाको चोच सकें॥ अहाँ नाम और रूप डोनों, क्लिकुक ही निक्ह हो चाले है, आपके उप धर्मको यहाँ जान, ये मान-स्थान को नोड सकें॥ पहले सिक में ह सो मं इन्ह जानता हैं, विश्वास हुन सात सिह्नां का राग होप (बार ओह ) नष्ट हो यम हैं और सन-मागर को पार वर जुने हैं ह एसे ही उस समय आप क ससे भगवान, नडते ह पहले आप एक हुन्सार भं वहाँ से गिर पहले पहले स्व

निर्मी का नाम बुधा या क्षेत्री व्यक्तिगत्माओं का क्षेत्रिय शरीर भारण करन वास्त का ॥

सेथुण धर्म सं विरत्न सक्काचारी पूरा न्यागी एक डी गॉंच में रकने कालं ध

( भगवान् ) कार्यप का उपायक वा ॥

25 ]

जलना यग प्रभात ।

# छठाँ भाग

## जरा वर्ग

## § १. जरा सुत्त ( १. ६, १)

पृण्य खराया नहीं जा सकता

कीन सी चीज़ हैं जो उद्भाष तक ठीक हैं ? स्थितना पाने के लिये क्या जीक है ?

ममुख्यें का रत्न क्या है ?

म्या चोरों ने नहीं चुराया जा सकता ? शील पालना युद्रापा तक शीक हैं ? स्थिरता के लिये अज़ा टीक हैं , प्रज्ञा अनुष्यां का रज ह

# पुण्य चोरें में नहीं चुराया जा मकता ॥ 8 रे. अजरसा सत्त (१, ६, २)

प्रका मनुष्यों का रत्न हैं बुदापा गई। आने में भी क्या दीवा है ?

कीन नी अधिष्ठित घन्तु टीक है ? सन्दर्भों कारक क्या हे ?

फ्या चोरों से नहीं चुराया जा सकता ? शील तुदापा नहीं आने से भी ठींक हे,

अधिष्ठिन श्रद्धा वडी ठीक है, श्रज्ञा मनुद्धों का रस है, पुण्य चोरों से नहीं चुराया जा सकता ॥

§ ३. मित्त स्रत्त (१.६.३)

#### धित्र

राहरीर का क्या मित्र है ? अपने घर में क्या भित्र हैं ? काम पड़वे पर क्या मित्र हैं ? परलोक में क्या मित्र है ?

स्थियार राहमीर का मित्र है, माता अपने घर का मित्र है, सहायक काम आ पढ़ने पर, बार-बार मित्र होता है, जपने किसे जो पुण्य-कर्म हैं.

वे परलोक से सिन्न होते हैं ॥

```
हुष्ठ वस्यु सुच (१६ ८)
```

भाषार मनुत्यों का जाधार चया है ? यहाँ सचस चया सन्ता कीन है ? किससे सभी जीते हैं ? पुरुषी पर त्रितने प्राची चनते हैं ॥

जितने प्राणी बसते हैं ॥ पुत्र प्रतुष्मों का साधार ह भावों शबसे बडी माबिन हैं बृष्टि होने में मागी जीते हैं पुरुषी पर जितने प्राणी बसते हैं ह

हु**ं बनेवि सुत्त** (१६ ⊀)

पैदा द्वीना (१) समाय को क्या पंता करता दें ?

उपना क्या है जो जाइता रहना है ? कान भाषांगमन के कहन में पहता है ?

उसका सबसे बंदा संग नगा है 🖔 👚

भूच्या समुख्य को पैदा करती हैं। जनका चित्त नीचता गाता है

प्राणी भ/बागमन के बक्कर में पहला है शु:ख उसका संबंध बंबा मंद्र है ह

६६ **अनेति स्च** (१६६)

नाव शुप ( र २ पैदा होना (२)

समुख्य को थया पता करना है ? दसका क्या है जो दादना दहना है ? कीन नानासम्बद्ध व्यक्त में पहला है ? दिसम धरकार। नहीं होना है ?

> नुष्या अनुष्य की पैता करती है बस्पमा चित्र तुष्यता रहता है शामी भाषागध्यत क चक्रप में प्रयत्त है कुत्य स बस्पका शुरुकारी नहीं हीता है

> > ३७ जनेति मुच (१६७) पैका शाना (३)

सबुत्व का क्या पैता करता है ? कर्मका क्या है सा नाइना रत्ना है ? कीम भाषानासन के क्या से पहला है ? कमका भाषान क्या है ?

मृत्या मणुष्य का देश बर्गा है उपना विक नीदमा श्रमा है

```
ग्राणी आधारासन के चकर में पदता है.
          कर्म ही उसका आश्रय है ॥
          ६८. उपाध सत्त (१.६.८)
                         चेगाह
किस राह की छोग थेराह कहते हैं ?
रात-दिन क्षय होने वाला क्या है १
राज्यको का मल क्या है ?
विना पानी का कौन स्नान है ?
            शम को लोग बेराह कहते है.
            आय सन-दिन क्षय होने वार्छा है.
            स्ती ब्रह्मचर्य का मल है.
            जिसमें सभी जाणी फेंस जाते हैं.
            तप और बहाचर्य शह विना पानी का स्नान है।
            ह ९. द्वतिया सूच (१. ६. ९)
                           काशी
  प्ररूप का साधी क्या होता है १
  कीन त्रम पर नियम्यण करना है १
  किसमें अभिरत होकर मनुष्य,
  सब द सो से मक्त हो जाता है 9
              श्रद्धा पुरुष का साधी होता है,
              वज्ञा उस पर नियन्त्रण करती है.
              निर्वाण से अभिरत डोकर सन्दर्य.
              सब दुखों से मुक हो जाता है॥
             ६ १०. कवि सत्त (१. ६. १०)
                            कविता
    गीतक कैसे होती है ?
```

गतिक क्यान शर्वा है ?

उसका बागार क्या है ?

औत का आक्षय क्या है ?

और का आक्षय क्या है ?

जन्द में गीत होती है,

अक्षर उम्मके ज्वान है,

नम के आधार पर तीत बनती है,

कि विश्व का आधार पर तीत बनती है,

जरा वर्ग समाप्त ।

# सातवों भाग

# अञ्चलर्ग

६१ नाम सुत्त (१७१)

माम

च्या है जो मानी को जपने मीतर रणता है है किसस अधिक कुछ नहीं है है किस एक चर्म के सानी कुछ कम में काले आते है है

> नाम सभी को अपने मीतर रूपता के नामसे अधिक कुछ नहीं हैं नाम ही एक चर्म के मभी कुछ कम में को कार्च हैं मन

हर चिच <u>स</u>च (१७)

क्रिप

किमाने कोक निवनिता होता है ? किस से वह शव को मास होता है ? किस एक बर्म के मानी वहा में कश करते हैं ?

> चित्त सं क्षेत्र निवन्त्रित होता है है चित्त संही झव को प्राप्त होता है चित्त ही एक धर्म क सभी वस में चले धारे हैं #

६३ तन्द्रासच (१७३)

तुष्पाः

मसी बच्च में बच्चे आते हैं ? तृष्ट्या ही एक धर्म के सभी बच्च में क्यां आते हैं ॥

किस्त एक वर्श क

क 'चीइ बीद वा चीक ऐसी नहीं है को नाम से रहित हो! ( नहीं तक कि ) किम वृद्ध ना परथर का नाम मही गोता है उसका नाम अनोमक ( व्यं-नामक्का) व्या येते है।

# § ४. संयोजन सुत्त (१, ७, ४)

ਰਵਯੁਜ

लोक किस बन्धन में वेघा है ? इसका विचरना क्या है ? किसके प्रहाण होने में,

'निर्वाण' ऐसा कहा जाता है 9
'संसार में स्वाद छेना' यही छोऊ का यन्थन है, वित्तक इसका विचरना है, गृष्णा के प्रहाण होने से, (निर्वाण' ऐसा कहा जाता है।

६ ५. बन्धन सुत्त (१. ७. ५)

फॉस कोक किस फॉस में फंसा है ? इसका विचरना क्या है ? किसके प्रहाण होने से,

सभी फॉस कट वाते हैं ? "ससार में स्वाद छेना" जहीं छोक का बन्धन है, वितर्क इसका विचरना है, रूपमा के प्रहाण होने से, सभी फॉम कट बाते हैं ॥

६६. अ**व्भाहत सत्त** (१. ७. ६)

स्ताया जाना कोक किससे सताया जा रहा है ? - किससे घिरा पदा है ? किस तीर से जुभा हुआ है ? किससे सवा जुना रहा है ?

शृत्यु से लोक सताया जा रहा है, बरा से बिरा पदा है, तृष्णा की तीर में चुमा हुआ है, इच्छा से संदा डॉबा रहा है।

Ę

§ ७. उड़ित सुत्त (१, ७, ७)

लॉघा गया लोक किससे लॉव लिया गया है ? किससे चिरा पड़ा है ? किससे लोक ढॅका छिपा है ? लोक किममें प्रतिष्ठित है ?

```
नच्या स स्रोक काँच किया गया है
जारा से बिस प्रका बं
सन्य ॥ कोक राँका क्रिया ह
वुक्त में कोक प्रतिक्रित है ॥
           ६८ पिक्कि सच ( ( ७ ८ )
                        क्रिया-क्रिका
            किसमां कोड किया-क्षम है ?
            किसमें काक प्रतिद्वित हैं ?
            किमसे कोक साँच किया शया है ?
            किसमा क्रिया प्रका है ?
 मृत्य म काउ वैका-किया ई
 कार्यमें कोक प्रतिक्रित है
 तप्तासे कोच काँच किया तथा ह
 करा से किया बचा है ॥
            §९ इच्छा सुच (ं१ ७ ९)
                            इच्छा
             कोक किसमें कशता है 🕈
             किसको एका कर छट बासा है ?
             किसक प्रदाण होना स
             सभी अञ्चल कार वता है है
 इच्छा में छोड़ बसता है
  इच्छा को दबा कर इन्द्र बाला है
  इच्छा क महाम होते स
  सभी बल्बन कार हैता है ब
            ८१० सोकसुच(८७१०)
              विजय हाने स स्रोक पेंदा दोगा है ?
              फिसमें नाथ शास है ?
              क्षेत्र किराको केवर होता है ?
              जिसके कारण द्वारा अकता है ?
  कास क हाने से क्रोक पैता होगा है
  कः में साथ रहता है
   कः श्रीका केंगर हाता दें
   स कथारव दुल्य होस्सता है
                      भक्र वय समाप्त ।
```

# आठवॉ भाग

# अत्वा वर्ग

३१. झस्वासत्त (१.८.१)

#### नाश

एक और खडा हो वह हैपना नगवान ने वस्तुत्व यह गावा पोला —

किसको नाश कर सुध्य से सोता है 9 किसको नाश कर शोक नहीं करता 9 किस एक धर्म का

यथ करना गोतम बनाते हैं ? क्षोप को नारा कर सुन्य में मोता र्रं, क्षोप को नारा कर टोक नहीं करता, महाविष के मुक्त क्षोप के, वो पारुके तो अच्छा रुगता, हैं गेवत । क्य की पण्डिल लीग प्रकला उत्तरी हैं, क्यों की पण्डिल लीग प्रकला ।

# ६२, स्थ सुच (१,८,२)

#### रध

क्या देरकर रथ का आता साख्द्र होता है ? क्या देखकर कहीं अधिका होना आगा आता है ? किसी शद्रका खिद्दा क्या है ? कोई की किस्से पह्चानी आसी ए ? भवाको देखकर रूपका आगा साख्द्र होता है,

भ्वजाका व्यक्तर स्थका आना सारहम होता है, भूमको देखकर कहीं अग्निका होना जाना जाता है, राजा किसी राष्ट्रका चिह्न होता है, कोई की अपने पतिसे पहचानी जाती है।

## § ३. वित्त सूत्त (१. ८. ३)

#### श्चन

समारमं पुरुषका सक्ष्मे श्रेष्ट विका क्या है ? किमके उपार्धन करने से जुख मिलता है ! रमों में सबसे स्वादिष्ट पदा है ? मजुप्पके कैमे जीवनको कोग श्रेष्ट कहते हैं ? संसारमें प्रत्यका सबस श्रेष्ठ विश्व श्रद्धा है धर्मके कपार्जन करमन साप मिलता है रसीं में सब में स्थाविष्ट मध्य है प्रजापर्वक जीवन का लोग क्षेत्र काले हैं ॥

६ ४ यद्भिसम् (१८४)

चि

दगन बाकों में श्रेष्ट क्या है ? गिरने बास्ते में सब में अच्छा क्या है ? क्या है बमते रहने बासी में १ बोक्रते रहने बाका में उत्तम प्या है ? बीज जाने बाला में ओप है बहि गिरने शकों में सब स भएकी है गीर्वे पुस्ते रहन बाकों में पुत्र वोक्ते रहने वाका में उत्तम हैं। विका अगने वालों में श्रेष्ट ह गिरने वाकों में कविया गय में बड़ी है सिद्धानंत्र भूमते रहने बाका में

इक बन्धमा में मर्बोच्छम है ॥

६ ४ भीत सुत्त (१ ७

दरता

र्ममार में इतने क्रोग करे हुये क्यों है ? भनेक प्रकार से आर्ग कहा गया है ह है महाकाशी गायस ! मैं बाप स दुक्ता 🐔 कर्वों क्या रह परकोच्छ से सब नहीं को ?

क्चन और सन को बीक रास्ते स समा भरीर के पापाचर**ल वहीं करते हुने** अस-पान में मरे बर में स्वृते हुने प्रकाल पूर्, चाँट-चूँट कर मोग करनेवाका हिलवा-शिलवा इब चार घर्मी पर कहा रह परकोच्ड में शुक्र कर न करें ॥

§ ६ न सीरित सत्त (१८६)

पुराना न द्वीना क्या पुराना होता है। क्या पुराना नहीं होता है 🎙

इस का बहुत बोचना भारत। पिता को बुरा नहीं कमता ।

क्या बेराह में के जाने वाला कहा जाता है ? धर्म के काम में क्या वाधक होता है ? क्या रात दिन क्षम्य की प्राप्त हो रहा है ? श्राह्मक्यें का गरु क्या है ? स्वा दिना पानी का नहाना है ? लोक में किसने कि हैं हैं, जहाँ विक्त स्थिद नहीं होना ? आपको पूर्वने के किये आगे, हम लोग हुने केने नममें ? इस चुराना होता है,

इस लोग इसे कैंगे ममले ? सत्तुच्यों का रूप दुराला होता है, उसके मास और गोश दुराले नहीं होते, राग देरह में जाने वावल कहा जाता है, होंगे घसे के काम में वाधक होता है, शासु राम-शिन क्षण को मास हो रही है, शासु राम-शिन क्षण को मास हो रही है, स्त्री महाचर्य का मल है, यहाँ होंग फॅम जाते हैं, तप और महाचर्य, यही विना पानी का बहाना है,

यही विभा पानी का नहाना है, लोक में छिट छ है, जड़ों बिच स्थिर नहीं होता॥

> आहरूय और प्रमाद, उत्साह-हीनता, असयम, निद्रा और सन्द्रा यही छ छिद्र हैं, उनका सर्वेथा धर्मन कर देना चाहिये॥

## ६ ७. इस्सर सच ( १. ८. ७ )

पिश्वर्धं स्तार में ऐदवर्ष क्या है ? कीन सा सामाक स्वार करना है ? कीक में शास्त्र का मठ क्या है ? कोक में शास्त्र का फरण क्या है ? किसको के आने से लोग रोकते हैं ? ' के जाने साके में कीन प्यारा है ? फिर भी जाते हुवे किसका, पण्डित कीम जामिनन्द्र करते हैं ? स्तारमें वहा पेपारे है,

स्त्री सभी सामानसे बच्छी है, क्रोध कोकमें शासका में है, चोर कोकमें विभाशके कारण है; चोरको है जानेमें लोग शेकते हैं, भिष्टु के बानेवाक्षीमं प्यारा है बार-बार बाते कुए भिष्टुका परिवृत्त क्षोग असिनम्बल बस्त हैं ॥

६८ काम सुच (१८८)

अधनेकान वे

परमार्थकी कामना रजनेवाका क्या नहीं है है महत्त्व किसका परित्याना क करे है

किय करणाणका निकास ? भार किय ब्राहेको नहीं निकास ?

परमार्थको कामना रक्षणेकास्य अपनेको नहीं ने काले प्रापुष्य अपनेको परिश्वाम न करे करेनामध्यनको निकास

दुरे को नहीं निकास । ६९ पायेच्या सुसा (१८०)

शह-कथ

क्या राह-लर्ज बॉधवा है ? भोगॉक्स बास फिरमें है ? मञुज्यको क्या सरीड के बाता है ? संसारों क्या स्रोपना बच्च कडिन है ? इतने बॉथ किसमें की हैं

हिसे बाक्में कोई पति ? बादा राष्ट्र-कर्ष वॉक्टों है क ऐक्सेंमें सभी मोरा बसारे हैं इच्छा अञ्चलको सभीड के बसारी है अंसरस्म इच्छा कोवता जब कदिन है इसारे बीच इच्छारें मैंसे हैं और कस्में कोई कोई पड़ी ह

इ**१ पजोतसुन** (१८**१**)

प्रधोत

सीक में कीच कारने वाक्त है ? प्राचिपों में बीच काम के समावक है

लोक में मधोत क्या है ?

क्या नाम कर सुग्य में सोना है ? प्या नाम कर घोक नहीं करना ? किय एक धर्म का,

चथ करना गांतम को भ्योकार है ? क्रोथ को नादा कर खुख से सोता है, क्रोथ को नादा कर खोक नहीं करता, आगे अस्टा कराने बाले नया चल्ला की हराने वाले ! विष के मूल क्रोथ करा, कर करना परिवर्त से प्रशनित ...

क्रमी को कार कर श्रीक नहीं उस्ता ॥

## ८ ४. मागध सुत्त (२. १. ४)

चार प्रशोत

एक और राज्ञ हो, सामाध्य देवपुत्र भगवान् ने यत् गाथा योह्य--होक से किनने प्रचोत्त हैं,
जिनमें लोक प्रकाशित होता है ?
आप को पट्टों के लिये आगं,
हम कोगा जमें कैये जाने ?
होत को पट्टों के लिये आगं,

होक से चार मधीत है, , पाँचया कोई भी नहीं, दिन में खुरक तपदा है, शत से बाँद गोभना है, श्रोद शना तो दिन रात नहीं वहाँ प्रकाण देती है, बन्दुड सम्बेबाकों में नेष्ट है, उनका तेश अक्षीफिक ही होता है।

## § ५**. दामिल सुत्त** (२१५) आक्षण कतकत्व है

आधस्ती में ।

निवस्ता की निवस्त वीतने पर अवनी चमक से सारे जेतथन को चमका नहां भगवान् थे चहुँ अला और मगवान् का असियाइन कर पुरु और खडा हो गया । पुरु और खड़ा हो दामिक हेचपुत्र भगवान् के सम्प्राल यह गावा जीका—

> यहाँ अवक परिश्रम से शाहाण को अध्यास करना चाहिये, कामी का पूरा प्रहाण करने से फिर अन्म अहण नहीं होता ॥ प्राह्मण को कुछ करणा नहीं रहता,

हे शमिल । भगवान् ने कहा, प्राप्ताण को तो जो करना था कर किया गया होता है, जय तक कि प्रतिद्या नहीं पा केता ॥ नदियों में जन्तु सब अगों से तैरंगे का प्रयत्न करवा है.

१ वत्र नामक असर की हराने वाला, इन्द्र ।

# दूसरा परिच्छेद

# २ देवपुत्त-सयुत्त

# पहला भाग

# <sup>§</sup>१ कस्सद्भ सुच (२१४)

मिस्रु अनुशासम (१)

पुना मैंने खुना।

एक ममन भगवान् भावस्ती में समाधिपिण्डक के जेतवन धाराम में विदार करते थे।

तव देव-द्वन काष्ट्रपण रात बीतान पर अपनी चरक का मारे जीतवान को कामको हुए वहाँ सरावाद में बहाँ मामा और अगावाद का कीम्बादन कर एक और पड़ा हो तथा। एक और बड़ा हो काष्ट्रपप देवाक मगावाद से बीक्स—"मगावाद ने सिद्ध को प्रकाशित किया है किया सिद्ध के अनुसारको नहीं।"

वो कास्पर ! तुन्हीं बताओं बागा तुमने समझा है ।

"मध्ये बपहेस और

धमध्ये 🕶 सल्लंग

पुर्वात में बदका वास

दवा विच की सान्ति ना भागास करें ॥

काश्यप देवपुत्र ने यह कहा । भगवान् सहमय हुए । तन काहपप देवपुत्र क्षक् को सहसय क्षव मगवान् का बन्तना और प्रदक्षिणा कर वहीं कलायांत्र हो गता ।

# <sup>§ २ कस्सप सुच ( ^ १ २)</sup>

भिभु-अनुशासन (५)

भागस्ती में । एक भार भवा ही काइयुव ववपुत्र महावाद के सम्भाग वह शावा बाला--

यदि मिह्नु प्यामी विशुक्त चित्तवाला अपनी दिश्मी चाह (अश्वरिपद) को मास करना चाह ता संमार का उपच होना और नष्ट होना (श्वमाव) जानवर पवित्र सनवाला और जनासक हो उसका वह गुन है।

> <sup>§</sup> ३ माध सुत्त (२ १ ६) किसके नाता के सम्प*्*

आयम्मी में । नव मार्ग पेवपुत्र राज बंजने पर लवशी बसंद न बार अंतवल का बसदात हुये वहाँ मारावा भे वहाँ आवा और समायान् वा अधिवादन वह एक आर लदा हो गया। वृद्ध अंत लदा ही मार्ग पंत्र पुत्र से भारान की गावा है वहर---- ध्यान-प्राप्त, ज्ञानी, निरहट्वार, श्रेष्ट, सुनि, तम से भी जगह निकाट हैते हैं।

हे पद्मारुचण्ड ! भगवान वोरे---जिनमें स्मृति का लाभ कर दिया. वे अच्छी तरह समाहित हो. मिर्वाण की प्राप्ति के लिए. धर्म का साधासकार कर लेते हैं।

# § ८. तायन स्रच (२. १. ८)

## शिथिलमा न करे

तब, तायन देवपुत्र, जो पहले जन्म में एक तीर्वपुर या, रात दीतने पर अपनी समक में सारे जैतवन को चमकाते हुये जहाँ भगवान ये वहाँ आया ओर भगवान का अभिवायन कर एक ओर खबाही गया।

एक और खड़ा हो, तायन देवपुत्र भगवान के सम्मुख यह गाया बोला --

सोता को काट हो, पराजम करो, हे बाह्मण ! कामो को दर वसी. कामों को बिना छोवे हुए अनि, क्रमाता को नहीं प्राप्त होता ॥ स्रवि करना है तो करता चाहिये. उसमें इद पराक्रम करे. को प्रस्रजित अपने सहोत्य में जिथिल है. बह और भी अधिक रील चंदा लेता है ॥ एक दम नहीं करना अरी तरह करने से अच्छा है, त्ररी तरह करने से पीछे अनुताप होता है. करे तो जरही तरह ही करना अच्छा है. जिसके करने पर पछतावा नहीं होता ॥ भव्छी तरह न परुचा गया क्रया. जेसे हाथ को ही काट देता है. वैसे ही, दिश्विकता से ब्रहण किया गया श्रमण-भाष. गरक को भी से जानेवासा मोता है ॥

को छुछ शिथिङ कास है, जो बत सक्रिष्ट है. शुरु को बहावर्य है, यह अच्छा फल नहीं देता ॥

तायन देवपुत्र ने यह कहा । यह कह, भगवान् को प्रणाम् और प्रदक्षिणा कर यहीं अन्तर्धान शी गया।

तव, रात शीतने पर भगवान् ने भिक्षुको को आमधित किया—भिक्षुको । इन्य रात को तासन देवपुत, जो पहले जन्म में एक तीर्थहर था, मेरा अभिवादन वर एक ओर खदा हो गया । एक और खड़ा हो. तायन देवपुत्र मेरे सम्मुख वह गाथा वोला---

किया, बसीन क उपर आकर वादी काशित नहीं करता, बहु तो सब पार कर जुका छ सुम्मिल ! माइण की पाही उपमा है श्रीजायन चतुर भार प्यानी की कम्म और सुन्तु के बन्दा की पाकर बहु कीमिली गढी करता बहु तो पार कर जुका क

# §६ फापद सुच (॰ १६)

सुमद सम्तोप

युक्त आहं कहा ही काम्यद वृत्तपुत्र में अगवान् को यह कहा-

मगनन् ! यह धुष्कर है बदा ही दुष्कर है।

दुष्पर होने पर भी खोग कर धेरो हैं

दे धामक | भगवान् बोध---

भीवन श्रीकों के कम्पासी स्थिताया मनदित को संवि सुदाद सन्तोप होता है ॥

भगवन् ! यह सन्तीप बता बुक्स है।

दुसम होने पर भी काग पा बेत हैं

दै कामद ! भगवान् योसे ---

E 4144 1 44414 AMP -

चित्र को शान्त फरने में रत जिनका दिन और रात

भावना करने में कगा रहता है।

मगवन् ! क्लि का पूना कराना क्ला करिन है।

विच बगाना कठिन होन पर भी कोग समा करे हैं

इ कासद ! भगवान वासे---

इन्द्रियों का सान्त करने में रत

में मृत्यु क धारू को कार कर

इ कासर ! पण्डित छोग चल बाते हैं ॥

मगरन् । हुगम इ मार्ग शहर है।

पुर्गम रह घणना थीहरू

दे नामद् ! अर्थ नोग परे जाते हैं

भनार्च लोग इस बोहद गार्ग में

शिर के बल गिर पहते हैं

आर्थी 🕸 मिथे तो सार्ग वरायर 🖁

आर्थ कार विषय मार्ग में भी बहादर पेर चलते हैं ॥

६७ प्रयास्पण्ड मुस (२१७)

वस्ति-शाम वा घ्यम का शाशास्त्रार कुछ कार कहा हो सम्बास्थ्यक हेक्युव माराज्य व स्तरास वह सामा बोला-- में भारी विषक्ति में आ पड़ा हूँ, मो मुद्दे आप अपनी शरण दें ॥

सब, भगवान ने खुर्य देवपुत्र के लिए असुरेन्द्र सहु की गाथा में कहा-

अर्एन, बुद्ध की धरण में, सूर्य चळा आया हैं, हैं साहु। सूर्य को छोण टो, बुद्ध मान्नी के प्रति अञ्चलक्षण रस्तों हैं ॥ को राले अञ्चलक्षण स्त्रा हैता है, समकत्ते वाला, मण्डल वाला, उस सह स्त्रा वाला, आकास में चलने वाला, उसे साहु! मत निवालो, राष्ट्र । सेने पुत्र मुख्ये की ग्रीड हो।

हन, अञ्चरेन्द्र राहु सूर्य रेपचुन को छोद, ठरा हुआ-सा जहाँ बेपस्थिसि असुरेन्द्र था बहाँ आया और सबेत से भरा, रोर्चे सका क्रिये एक और सड़ा हो गया।

एक और खटे असुरेन्द्र राष्ट्र को घेपचिक्ति असुरेन्द्र ने गाथा से कहा-

नमं इतना दरा-सा हो, गहु ने सुर्थ को छोड दिया ? मनेग में भरा हुआ आकर, तुम इतने भयभीत क्यों खडे हो॥

मरे जिन के सात दुजडे हो जायें, जन्म भर खुबे कभी खुब नहीं मिले, दुद में आजा पाकर में, पति खुबें को नहीं ठोड़ हूँ॥

पहला भाग समाप्त ।

भिशुमी ! तायन देवपुत ने पह कहा । यह कह सुने प्रणाम् और प्रवृक्षिण कर वहीं जन्यवांव हो गया । मिशुमी ! तायम की गायाओं को सीराी - उन्हें बम्बान करो । भिशुमी ! तायम की गायायें वहीं मुख्य की ग्राव्य की गायों हैं ।

§९ चन्दिम शुच (२ १९)

चस्य-प्रहुण

श्रायम्ती में।

उस समय खरूज़ा देव पुत्र अमुरन्त्र राहु से पक्ष्य किया गया था। तव खरूज़मा देवपुत्र भगवान् को स्मर्थ काते हुवे उस समय यह गाथा पोका—

> महाबीर बुद्ध ! आप का नमस्कार इ आप मजी प्रकार से बिसुक हैं। में भारी बिचित्त में भा पता हूँ, मो माने बाद सदली घरण दें।

तव भगजान् न शस्त्रमा ववपुत्र क सिप् अमुरेन्त्र पाहु को गाया में बदा-

महत तुद्ध की शरण में धन्द्रभा कला भाग है गांधु चौंद को छाड़ हो तुद्ध मधी के प्रति भन्नकरण स्वत है ॥

नव अमुरन्द राष्ट्र शब्दका १५०५० को छात्र वर्षा हुन्छ-मा अहाँ धेपश्चित्ति अमुरन्द्र भा वहीं जावा और मंदर स अंतर रार्थे गदा किय पुढ और पहा हो रावा ।

एक भार रात्रे हुव असुरस्त्र राष्ट्र को दोष्धियिन असुरस्त्र ने वाका में कहा-

क्या उनका दश-या हो राष्ट्र ने चन्द्रभा का पाव दिवा १ संका रह कश दुआ माउर तुम इतन अवसीत क्यों गड़े हा १

मेर शिर क मान दुरुहे हो वॉव अन्य भर शुझे कभी लुग कहीं शिर्म बुद्ध व माता या कर हैं पदि चन्त्रमा का नहीं छाड़ कृ<sup>त</sup> ॥

ь १० मुरिय मु<del>रा</del> ( १ १०)

स्यं-प्रदण

उप गस्त प्राप्ति देवपुत्र अमृत्यह राष्ट्र स यहद लिया गवा था । तव वर्ष अगवान को वसस्य बर्बर दुवै प्रग सक्कव यह गाथा काणा :----

> महार्थ १ जुरू १ धनाका ममञ्जात द जन्म गारी ग्रहन्तु ते विमुल 🖁

तव, दीर्घयष्टि वेचुन्न शत बीतने पर जहाँ भगवान् थे वहाँ आया और भगवान् का अभिवादन कर एक ओर खडा हो गया। एक ओर खड़ा हो, टीर्घयष्टि देवपुत्र अगवान् के सम्मुख यह गाथा योखा—

> बिट सिक्कु 'आची, चिमुक्त चित्त वाळा हो, और मन की भीतर्रेग चाए ( =ळाईन फ़ल) को प्राप्त करना चाई, तो ससार का उत्पन्न होना और नष्ट होना ( स्वभाव ) जान कर, पवित्र मन वाळा और कागानक हो, उनका यह गुण है ॥ॐ

# ६४. नन्दन सुत्त (२,२४)

#### शीलचान कौन ?

एक और खड़ा हो सन्दल देवपुत्र भगवान के सम्मुख यह गाथा घोला-

है शीतम ! भाप महाज्ञानी को में प्रथ्रता हूँ, सगवाग् वा ज्ञान-दर्गम खुळा है, गैसी को छोग शीळवान् कहते हैं ? कैसी को छोग प्रजाबन्त कहते हैं ? कैसा सुरुप हु लो के पर रहता है ? कैस पुरुप हो वोचा भी चुला करते हैं ?

श्रो द्रांकवान् , महावान् , आवितात्म, समावित, श्रामत्त, इस्तिमान् , समावित, श्रामत्त, स्ट्रांतमान् , स्रिमावित, श्रामत्त स्ट्रांतमान् , क्षिमा हो भ्रो होगा प्रावेचवान् क्रदते हैं, विने द्वी को लोगा प्रशावान् क्रदते हैं, विने द्वी को लोगा प्रशावान् क्रदते हैं, विने द्वी को लोगा प्रशावान् क्रदते हैं, विने द्वी कुर कुर हो के वरे हो जाता है, विस्त द्वी पुरुष हु लो के वरे हो जाता है,

## § ४. चन्दन सत्त (२.२.५)

## कीन नहीं इवता ?

एक भीर खड़ा ही सन्द्रम देवपुत्र अगवान् के सम्मुख यह गाना बोळा— रात दिन तस्पर रह, कीन यह की तर खाता हं ? अप्रतिदिस शीर जनाळ्य, गहरे ( जळ ) से कीन ह्वता नहीं है ? जो सदा हीळ-सस्पर्ध, प्रकायान्, एकास-पिक, उस्साद्यीक तथा स्वसी हे, यह दुस्सर वाह की तर जाता है ॥

जो काम सज़ा से विस्त,

७ यही गाया २ १ २ में भी।

## दसरा भाग

# अनाधविण्टिक-वर्ग

# **११ चन्दिमस** सुच (२२१)

ध्यामी पार जार्चेंगे

भाषस्ति में।

यत्र व्यन्तिमस् वैष्युत्र रात वीत्रवे पर वहाँ मगवान ये वहाँ नगवा और मगवान् का क्षिम बादन कर एक और न्या हो गया। एक और एका हो चिन्तिमस् विष्युत्र भगवान् के सस्मुन वर्ष ग्रावा कोका—

> वे ही करवाण को प्राप्त होंगे अच्छ-रहित करार में पहु के मसाव ; कारों की प्राप्त प्रकार महाधाय कीर स्कृतिसान हैं व वे ही पार कारोंगे सम्मी के समाम जाक का पाट कर को च्याची की प्राप्त

8 २ वेण्<u>द्र स</u>च(२ २ ⊀)

ध्यानी सहय के धहा नहीं जाते

पुरु और प्रदा हो संबद्धु ( = दिव्यु ) स्वयुत्र संगवान् ने संस्मुप्त पह गाथा श्रीका---

थे मनुष्य शुप्ती हूं जो शुक्त की उपासना कर

गीतम के शासन में करा भगमन शास्त्र शास ग्रहण करते द ह

है केन्द्र १ भगवाद वार्ग---मेरी शिक्षाओं का की ध्यामी पापन करते हैं

वयोचित काम में प्रभान नहीं करत हुए ये मृत्यु के वहा में जानेपाने नहीं होता प

६ ३ दीवलिंह मुच (२ २ ३)

मिधु भागासन

र्षमा मेरे सुन्ता । एक रामच सरावात बाह्मसूर व श्वादश्या सामारण्या निर्माण में विद्वार करते थे । तव, दीर्घर्षाष्ट देवपुत्र रात बीतने पर डाहों भगवान् वें वाहों आया आर भगवान् का अभिवादन कर एक और राडा हो गया । एक ओर नवहा हो, दीर्घयुटि देवपुत्र भगवान् के सम्मुग्य यह गावा घोळा—

यदि भिक्षु ध्यानां, विद्युक्त वित्त बाला हो, और सन की भीतरीं माएं (=>प्रदेत् पूक्त) को प्राप्त करना चाटे, तो स्वस्तर का उद्यत टोन्स आर नष्ट टोनां (स्वसाध) जान कर, सेने मन बाला और धनासक हो, उपका यह गण है। ॥१९

## ६ ४. नन्द्रन सत्त (२, २ ४)

## शीखवान, कोन ?

एक और खदा हो सन्द्रम देवसुत्र भगवान् दे सम्युदा यह नाथा पोला-

हे गोतम । आप महाज्ञानी जो में पहाता हूँ, भगवाम् का छान-पूर्वन पुरुत टे, कैसे को कोम शीववान् कहते हैं ? कैसे को लोग प्रजावान् कहते हैं ? कैसा कुरुत हु जो 3 परे रहता है ? कैसे कुरुत हु जो 3 परे रहता है ?

को शीख्यान् , प्रश्नावान् , शाधितास्य, प्रमादित्तं, प्रान्तरः, स्ट्रिसान् , क्षीण्यत्य, भित्तम वेद्ववादी सर्वकोर-वर्त्वण ह ॥ वेसे हो को छोग शीख्यान् कहते हैं, पसे ही को छोग प्राचान् कहते हैं, बेस ही सुरुप हु को के परे हो बाता ह, बैसे ही सुरुप की देखता में पूजा करते हैं ॥

## ५५. चन्दन सुत्त (२.२.५)

#### फीन वहीं डबता ?

एक और खदा हो चन्छन देवपुत्र भगवान् कं नम्मुख वह गाथा वोला---

रात दिन तरफर रह, कीन बाद को तर आता है ? अप्रतिष्ठित और अनालस्व,

गहरे ( जल ) में कौन ह्यता नहीं हैं ?

जो सदा घीड-सम्पन्न, प्रज्ञावान्, प्रकाम-चित्तः उत्सादकील तथा सवमी है, वह हुस्तर बाद को तर नाता है ॥ ओ फाम सज्ञा से विरत्त,

क्ष यही गाया २ १ २ में भी।

क्य-अन्यन को पारं कर गया मंसार में स्वाद गड़ीं कथा तथा वसे रहन की जिस इच्छा नहीं रही ; यही राहरे अरु में गड़ीं इकता है।

§६ **वासुदत्त सुत्त** (२६)

कामुकता का प्रदाण

एक भीर जहां हो सुक्स इंबपुत्र धगवान् क सम्मुल यह गांधा बोला ~

जैसे मास्त श्रुम गया हो या सिर क अपर जाग क्रम गई हो

क्से ही आग-विकाप की इच्छा के प्रहाल के किये स्सुतिमान् हो भिशु विकास को ॥

१७ सुन्**स**स्च (२२७)

विश्व की मयबाहर कैसे दूर हा ?

वक् भीर राज्य हा स्युश्रह्मा प्रवपुत्र अगवान् क सम्भुक्त वह गावा बोका---

यह जिल्ल क्षत्रा धवनाया रहता है सन सत्ता अहेग से मरा रहता है भाते बाके कार्मी का स्वाक कर्

आह आप हुने वासों को करने में । मैं पूजना हूँ, आप बटायें कि न्या काइ ऐसा (बपाव) है जिसस विक्त अववादा नहीं है ह

बोच्यद्र व जन्माम

. वृत्त्रिय-संवर तथा सारे मंसार य विरत्त होना छोड

र्मे किसी वृसरी तरह प्राणियों का कम्बाज वहीं देशरता हूँ ॥ मुम्राह्म देवपुत्र वहीं अन्तर्धांन क्षा गया ।

> १८ कडूच सुच (००८) सिश्च को भागन्य और जिल्ला नहीं

देशासैने सुनाः

नुक समय समयान् साकत ४ अञ्चनपत सम्माप्त में विहार करते थे।

ताह क्यूट्य देवपुत्र वहाँ माराण ये वहाँ आधा और माराज्य अभियादन कर एक और क्या हो क्यूट्य देवपुत्र ने माराज्य का यह कहा---

शिक्षु की जानन्द्र से हैं ? भावूस पदा पासर ? शिक्षु की ती पदा विनदा कर रहे हैं ? भावूस श्रद्धां मरा पदा विगदा है ?

```
भिक्षु जी, सो पया आनन्त्र मी नहीं कर रहे हैं और न चिन्ता ?
आपन । ऐसी ही धात हैं।
```

[फकुश्र—]

भिक्षु जी, य भी आप जिल्लिन हैं, य मां आपको कोई आनन्द हैं, अवेन्य पैटे आप पा,

क्या मन उदास नहीं होता ? भिराधान— ]

रें दक्ष । न तो में चिन्तित हैं, न तो भुन्ने कोई आनन्द हैं, अकेला पैठे मेरा मन, बदास नहीं होता है ॥

কিজখ— ]

भिद्ध जो, आप को चिन्ता परो नहीं ? आपको आनन्द्र भी रेवी नहीं हैं ? अक्ता थेडे आप का, भन उद्यास पर्यो नहीं होता ?

[ भगवान्— ]

चिन्तित पुरूप को ही आनन्द होता है, आगन्दित पुरूप को ही चिन्ता होता है, अश्व को न चिन्ता है आर न आनन्द, अप्रम ! इसे पूना ही समझे ॥

[फक्रध—]

चिरकाछ पर देग्य रहा हूँ, चुक्त हुए प्राक्तण को, जिम भिक्ष को न किन्मा है और न आनम्ब, को मकसागर को पार कर गये हैं॥

§९. उत्तर सत्त (२ २ ९)

सासारिक भोश को त्यांगे

राजगृह में।

एक और सब्ध हो उत्तर देवपुत भगवान के सम्मुख यह गाया यौका— श्रीवन पीत दहा है, आदु थोती है, दुसाम में बचने का लोहेंद दाया नहीं, मृत्यु में यह गय देवते हुये, सुत काने पाले पुण्य कर्म करें। [ मानावान]

> जीवन बीत रहा है, आयु थोडी है, बुदापा से बचने का कोई उपाय नहीं,

मृत्यु में वह मय देखते हुये सामारिक भोग छोड़ वे निर्वाण की लोज में अरु

§ १० अनाथपिण्डिक सुच ( = > १०)

#### जेतवर

पुरु और कहा हा क्रमाधापिण्डिक देवपुत्र भगवान के सम्मुख वह गावा बीमा---

यही यह जेतधन है च्चपियों से सकित चर्मराज (=बुद्ध ) वहाँ पसते हैं। मुद्ध में बढ़ी श्रद्धा पैदा करता है ॥ करी विद्या और पर्ने स्रोत पासन करना और उत्तम जीवन इसी में संगुष्ण श्रद होते हैं का लो सोल से और न भाग से ब इसकिये परिवत पुरुष धवनी मकाई का रूपाछ करते हुये बच्ची तरह से धर्म कमाने क्षम तरह यह विद्याद क्षेत्रा है ॥ खारिपुच की तरह महा से श्रीक संबीर विश्व की शान्ति से को मिझू पार चका स्राता है

बड़ी परम-पत्र पाना है हो

काताधाविनिक्रक देवपुत्र ने यह कहा । यह कहा भगवान, को अभिनातून और प्रतृक्षिया कर के वडीं सन्तर्वात हो गया।

सब उस रात के बोतने पर मगनान् ने भिक्कमों को व्ययन्त्रित किया---

मिह्नजो ! आज की राठ । यह वेगतुत्र मेरे सम्ब्रुक्त करा हो यह गावा बोका---वर्श वह जेतवन है वहीं परम-पद पाना है ॥

बह कह असे वानिवादन और प्रदक्षिणा करके वहीं अन्तावांच हो रावा ।

इतवा करें बाने पर भावुष्माम् आनन्त् में मगवान् को कहा-- मन्ते । वहां अभाधाविविञ्चक वैवयुत्र हो गथा है ? अवाधिरिकेक सहपति जायुष्माक सारियुत्र के प्रति वदा सन्तास का ।

डीक कहा आनन्द ! को तर्थ से समझा का सकता है उसे तुमने समझ किया। जानन्द ! समाधरिष्डिक ₩ वेब्रुव हुना है।

मनाचपिणिकक वर्ग समाम ।

वही गामार्थेट ६ ३ में ।

<sup>ो</sup> बही समावे १५८ है।

## तीमरा भाग

## नानातीर्थ-वर्ग

8 १. सिंग सत्त (२.३.१)

सत्पृष्ठवीं की संगति

ऐमा मैने सुना।

एक समय भगवान् श्राचस्ती में अनाथपिपिञ्ज के जेतवन भाराम में बिहार करते थे। तब जिल्हा हैवजुर एक और खदा हो भगवान के सन्मख यह गाथा घोटा—

> सत्पुरुपों के ही साथ रही, सत्पुरुपों के ही साथ मिली-जली.

सन्तों के कैंचे धर्म को जान,

भला ही होता है, बुरा नहीं ॥
• सन्तों के केंचे धर्म को जान,

''सन्ता क कच घम का जान, इनन का माझात्कार करता है, जो दूसरी तरह से नहीं होता ॥

सन्तों के जैंचे धर्म को जाग, शोक के बीच में रह शोक नहीं करता॥

सन्तों के केंचे धर्म की जात,

षाण्ययों के बीच शोभता है॥

सम्बंधि कें कें चे धर्मको जान, सत्त्र सुगति को शास होते हैं॥

सन्तों के ऊँचे धर्म को जान.

संख परम-भुख पाते हैं।

तय, भगवान् ने शिव देवपुत्र को गाथा में उत्तर दिया---

सलुरुपों के ही साथ रहे, सलुरुषों के ही साथ मिछे जुळे,

सन्तों के ऊँचे वर्म को जान,

सभी हु खों से छूट जाता है ॥ 🕸

§ २० खोम सुच (२ ३०२)

पाप-कर्म न करे

एक ओर खबा हो, क्षेम वेषपुत्र भगवान् के सम्मुख वह गाधा बोळा---मूखं हुर्युद्धि छोग विचाण करते हैं

क्षे वे समी भाषावं १ ४ १ में ।

अपना सन्न आप ही हो कर पाप कर्म किया करते हैं जिनका कुछ नवा कुट होता है ।। दस बाग का बरना शब्दा नहीं विसक्ते करके अनुसाय करना पहे बिसका गाँस क साथ रोते हुए. च्छा भोरामा प्रकार है अ क्रमी बाग का बरमा मध्या है जिसे करके अनुवाप न करना परे क्रियका धानस्य और संसी संसी से ( भव्ता ) यह गिक्ता है ॥ पहछे ही इस काम की कर जिसमें भएना हिस होना जाने गाजीवाय की तरह विन्ता में न पड़ भीर प्रकृप पूरा पराक्रम करे ॥ र्जने कोई गाड़ीवान् समतक प्रश्नी सदक को धीद करेंची बांची राह में सा पुरा इट बाने से किन्ता में पह जाता है ॥ वंसे की धर्म को छोप अधार्म में पद अभी थे सर्व सन्द के सार में विश् बर जरा हर जाने बाढ़ जैसा बिन्दा में एवं जाता है ॥

### ३ सेरिसच (० १ १)

वान का महारम्य

एक और लड़ा हो। मेरी देवपुत्र भगतान् को वह गाया केका-

श्रम को ती गानी चाहते हैं इत्तों देवता और शतुष्य अना वैमा कीन प्रत्यों है जिसके श्रम नहीं जाता हो ?

[मगपान्—]

को सक अदार्थक राव वरते हैं अन्यक्त प्रशास किया से उन्हों को अफ साह शास है इस मोक हैं और कारोक हैं है इसमिन के मूर्या धाई ऐहर वर गुल दान करे पुल्ब हूं। वर्शोक हैं हा साधाह होना है ह भन्ते । आक्षर्य है, अवस्त है ! भगवान् ने यह टीव ही यहा है कि-

को अस ध्रहापर्यक दान करते हैं।

भन्ते । यहन पहले में खेरी नाम का एव राजा था । में वानी, वानपति और टान की प्रशसा करतेवाला था । चारी फाटन पर भेरी और में दान दिया जाता था-अमण, माताण, गरीय, राती, ज्यातार और जिस्टारेसी की ।

भक्ते । जब में जनात में जाता तो से बहुने रुपतीं—आप सो बान दे रहे हैं, हम नहीं दे रही हैं ।

भव्दा होता कि हम लोग भी आप वे चलते टान करनी और प्रण्य बमासी ।

भन्ते । तय भेरे भन में या तथा—में दानी, जानपनि और दान की प्रशास वरने पाला हैं। 'दान क्रांति' सेमा कप्रसेवाली सिवी की में क्या कहें। अस्ते । तम, मेंने पहले फाटम की उनके लिये छीट दिया । यहाँ शिया की और से बाब दिया जाने स्या. भेश दान सीट आता था ।

भक्ती । हार मेरे बहुतर किये अधिया ने मेरे पास आकर कहा-महाराज की और से दान दिया जाता है और ज़ियों की ओर में भी दान दिया जाता है, विस्त एम लीगे। की ओर में नहीं। महा-राज के चलते हम लोग भी डान दें और पुण्य कमायें।

असी ! को मैंने तमारे फाटफ को उन क्षत्रियां के लिये छोट दिया । यहाँ क्षत्रियां की ओर से अन्य दिवार जाने लगा. मेरा दान कीर आता था ।

भक्ते । तय मेरे मिपाहियां ने । सो मेने तीयरे फाइक की उन निपाहियां के लिये छीट दिया . । मेन राम होत जाता था।

भन्ते । तप, बाग्रण और गुल्पतियां में ... । सी मेंने चीये फाटक को उन बाहाण और गृहपनियां के किये छोड दिया । भेरा दान काट आता या ।

भन्ते । तय. लोगों ने मेरे पान आपर यह कहा-भन्न तो सहाराज की ओर से कोई भी दान नहीं दिया जाता है।

भन्ते ! इस पर मेंने उन लोगां को कहा-लोगां । धारर के प्रान्तां से जी आमदमी उदसी है उसका आधा राजमहरू में ले आओ और आधे की यहीं दान पर तो-धमण, बाहाण, गरीय, राही, लाचार और मिखमगाँ थो।

सन्ते ! इस प्रकार थहत दिनां तक बान दे कर सेंसे जो पुण्य कसाये हैं उसकी कहीं हट नहीं पाता-इतना पुण्य है, इतना उपका फल है, इतने काल तक न्वर्ग में रहना होगा।

भन्ते । आहचर्य ए. अद्भुत है । भगवान् ने ठीक ही कहा है-

जो अन्न श्रद्धा-पूर्वक दास करते हैं. अत्यन्त प्रसन्न चित्त से. उन्हीं को अन्न शास होते हैं. इस न्होंक में और परलोब में ॥ इमिकिये, कजुमी छोट, छट कर खुष दान करे. पुण्य ही पुरस्तोक के प्राणियां का आधार होता है।।

§ ४. घटीकार सुच (२. ३. ४) व्रस्थर्म से दी मक्ति. अन्य से नहीं

एक और खडा हो घटीकार टेवपुत्र भगवान् के सम्मूख यह गाथा बोळा---

मनिह कोक में उत्पन्न हवे (twits 4.1.)

§ ५ अन्तसभा (२ ३ ५)

मधमाची को प्रणाम

पेसा मैंब सुवा ।

पड़ समय कुछ निश्न ब्रिज़बल्त 🕏 पास कोशान्त्र दे ब्रांगओं में विकार करते थे। वे बज्रत 🙉 🙉 चयक बक्जावी अरी बात निकासने वासे अर व्यक्ति बासे धर्माता स्वयमादित पंचन विच पापे सर्सवत इत्रियों बास्त्रे थे।

तम जन्म रंक्पन पृथ्विमा के उपीसक की नहीं व किहा थे वहाँ बाया । साकर उसने उन

सिक्ष में। को गामाने में क्या-

पहले एक से रहते वे भिन्न गांतम के आवक । कोम-रहित मिशादन करते थे कोम-रहित रहवे की बगह । र्रासार की अमिन्यका बाम काने बाखों का वाना कर किया व कर तो अपने को निगाड गाँच में कमीशतार के पैसा। हैंस कर काते और वह रहते हैं। हमारी के बर की चीकों के कोशी। संच क प्रति हाम चोड इनमें कितवीं को प्रचास करता हैं ॥ क्ट्रे इने वे अनाव जैसे जैसे प्रवा क्रिया हो वैसे । भी प्रश्नम शोकर साथे हैं। उनके मति में ऐसा बहता है। भीर भी मजनाब से विकार करते हैं इन्हें सेश अच्चान है ॥

## ६६ तोकितस्स सत्त (०३६)

कोक का शन्त वसकर नहीं पाया जा सकता विना भन्त पाये मुक्ति भी नहीं आवस्ति में।

एक और करा ही दोहिलरूम वैवयुत्र मंगवान में वह बोका-धानो ! कहाँ न बोई बनसरा है म बढ़ा होता है न सरता है न शरीर कोइकर फिर क्यांक होता है ! सन्ते ! पना पक पककर फीफ का संस्त भाषा देखा था पात्रा का संकता है ?

काशस ! बहाँ व कोई करमता है न बुका होता है न मरता है न सरीर कोक कर फिर उत्पक्त हीता है। कीक के उस बान्त को चक चककर बावा वेका या पाना जागर में नहीं बताया ।

सारों । भारवर्ग है अरुपुत है ! जो भगवान् ने इतना डीक कहा- होक के इस धरत की

चक्र-चक्रकर बाना देका वा पाना जाका में नहीं वंदाता ।

भन्ते ! बहत पहके में चेहितसम् बाम का एक जानि भोजपुत्र वदा ऋदिमान् आवास में कियाम कामेदाका था । भारते ! कस समय मेरी पेसी गति शक्ति थी केसे कोई होतियार शीरत्याह —सिवाबा प्रभा जिसका दान साफ हो गया है नियुक्त अध्यासी—युक्त इस्के शीर की बड़ी जासाबी में शाब की प्राण तक चेंक है।

धाना जास समाय मेरा हैगा पैसा पहता था. जैसे पूरव के समाह से केवर पश्चिम के समाह तक । पाने ! तब सरे बित में वह बनाक आया-में बढ-बग्रहर क्रोफ के अन्य तम पहेंचेंगा ।

भन्ते । सी में हुम प्रकार की गृति में, हम प्रकार के देश भरते, खाना-धीना छोड़ , पारवाना-पेशाय होर, मोना और भाराम करना होत, यी वर्ष की आयु तक जीना रह बराबर चलते रहकर भी लोक के अन्त को विना वाये जीच ही में मर गया।

भन्ते । आध्ये हं, अद्भुत हैं । जो भगवान् ने इतना ठीक कहा- ' लोक के उस अन्त को श्रद-घलकर आसा, देखा या पात्रा जाना में नहीं बताता ।

भारम ! में कहता हैं कि-विना लोक का अन्त पाये हु यो का अन्त करना सम्भव ना है। अत्यम । आर यह भी हि-इमी स्थास भर खला धारण करने वाले बलंबर (= शरीर ) में लीक. होत को उत्पत्ति, लोक का निरोध और लोक के निरोध करने का मार्ग, सभी मीजूट हैं।

चन चनकर नहीं पहुँचा जा सकता, छोक का अन्त कभी भी. और धिना लोक का अन्त पाये, हु न से छुटकारा नहीं है ॥ इमित्रये, उद्धिमाग् कोक को पहिचाने, सीक के अन्त को पानैवाला, प्रशासर्व धारण करनेवाला, होक के अन्त को ठीक मे जान. म लोक की भागा करता है और न परख्येक की ॥

६ ७. नन्द सुस ( २. ३. ७ )

#### समय बीत रहा है

एक और खदा हो सम्द्र देवपुत्र अगवान् के सम्मुख यह गाथा बोला---समय बीत बता है, रातें निकल रही हैं, ' (देखी १ १ ४)

६८. नन्दिविसाल सत्त (२.३८)

## यात्रा कैसे होगी?

पक और खना हो मस्टिधिद्याल देवपुत्र ने भगवान् को गाथा में कहा-चार चक्ने बाला, नव दरवाजी वाला."" (देखो ३ ३ ६)

६९. सुसिप सुत्त (२३.९)

#### बायुप्मान् सारिपुत्र के गुण

#### श्रावस्ती में ।

तत्र, आयुष्मान् आनम्त् अहाँ भगवान् ये वहाँ आवे और मगवान् का अभितादन कर एक ओर र्वेठ गये। एक ओर बेठे हुये आयुष्मान् आनस्द को भगवान् ने कहा--धानन्तः तुम्हं सारिपुत्र सुहासा है न ?

भन्ते ! मूर्च, दुष्ट, मूढ़ और समके आवभी को छोड़ कर सरूा ऐसा कौन होगा जिसे वायुष्मान सारिपुत्र नहीं सुद्दार्थ । सन्ते । बायुष्मान् सारिपुत्र महाज्ञानी हैं, महाप्रज्ञ हैं, बढ़े पण्डित हैं। आयुष्मान् सारिपुत्र की प्रज्ञा अत्थन्त प्रसन्न है। उनकी प्रज्ञा चड़ी तील है। उनकी प्रज्ञा यही तील्ण है। उनकी प्रज्ञा में पैठना आसान नहीं । अन्ते ! आयुप्मान् सारिपुत्र बढ़े अरपेच्छ हैं, सतोधी हैं, विवेकी हैं,

भनासक है उत्साही है बता है बचन-कुमल है बताने बाले हैं पाप की निज्या करने बास है। भन्ते । मूर्ण हुए, मूद और सनवे आदमी का छोद वर भक्षा पेमा बीन द्वीमा जिसको आवुष्मान् सारियत्र नहीं सहार्थे ।

मानन्द ! पेसी ही बात है । अका पैमा कांत्र होगा जिसको सारिएल नहीं सुद्दाये !

भागन्त ! सारियक महाजानी है सहाप्रज है ।

क्षत्र सुस्तिम देवपुत्र बायुच्यान् सारिपुत्र क गुण कहै जाने के समय देवपुत्रों का वड़ी मारी प्रश्वकों के साथ कहाँ भगवान थे कहाँ आया और संग्रहान का अभिवासन कर एक और अवा हो। गया ।

एक और कहा हो सुसिम बंबपुत्र में मगनाम् का नहा-

भगवान ! भगत ! पूसी ही बात है । अका पैसा कीन होगा किसको आधुप्मान् सारिपन गर्डी सहायें।

अन्ते ! कायद्यान सारिपण जनावानी हैं महाप्रज हैं ।

तब सुसिम देवपुत्र की मण्डकी ने आयुष्मान् आदिपुत्र के गुण कहे बाने के समय संतुष्ट प्रमुश्ति सीर प्रीति-युक्त हो प्रसन्न कान्ति भारण की । कसे सूध अच्छी कातिवाका अच्छी तरह काम किया गया पीक क्रमी कपड़ में सपेट कर रक्ता वैद्या मिल भासता है। तपता है और असकता है-नगं क्री ससिम देवपत्र की सन्दर्भी थे। प्रसन्त कान्ति धारण की ।

बैसे करके सोने का बासका दक सबर्गकार से वहीं कारीगरी के साथ गढ़ा गया पीले करी कपने में कपेर कर रक्ता मासता है तपता है और बमकता है—वैसे ही सुसिम संबद्ध की मण्डकी

वे प्रसद्ध काल्य बारण की।

कैमें राज के मिनसारे औपधि-शारका (बात तारा ) वैसे <equation-block> सुश्चिम देवपुत्र की सरवसी हे प्रसम्ब कालिन चारता करें।

जसे द्वारतकाल में वादक के हट आने और आकास सुक आने पर शुरव आकाद में पर सारी र्वेभियारी को दर कर के भासता है। तपता है। जीर जसकता है-- वैसे ही सासम देवपत की सन्दर्भी में असब कान्ति बारण की।

तव सुलिस दैवपुत्र ने बालुप्पान् सारिपुत्र क विषय में भगवान् कं पास वह गावा कहा— वरिश्व और वदा ज्ञानी क्रोब-रहित सारिपुत्र

अस्य का सामा काण काणि कितने तुत्व के तेज का काम किया है ज तव असवान ने अल्ब्स्यान सारिपुत्र के निपन में सुसिम वैनपुत्र को गावा में पह बद्धा-

यन्तित और वदा सानी औय-रहित सारियन

भारतेष्ण, भारत बाला अपनी सक्रवारी भी राह वेण रहा है ॥

8 <sup>१०</sup> नाना तिरिध्य सत्त (२ ३ १०)

नामा तीर्थों के मत बुद्ध अगुआ

पैसा मैने सवा ।

एक समय संगवाद राजपुद्द के वेलुवन कक्काव्या निवास में विदार करते थे।

त्रव कुत्र तृसरे सदयक्ष कावक वेवपुत-सासम नाहसी निक, आकोटक वेदस्वरी और माणप गामिय—सत बीतने पर अपनी जमक से सारे जेल्लबन को जमका जहाँ मगवाब से वहाँ जाने और मगवान का अभिवादन करक एक जार लड़े हा हारी।

पुत्र और पाना हो अन्तम देवपुत्र पूरण करसाय के विश्व में मगुनान के सम्मुख वह गाथा कोका---

शिंद कोई पुरुष भारे वा कोट, या किसी को वर्जाट रूर टे— नो कस्पप उनमें अपना कोई पाप, या पुण्य नहीं देशके ॥ इसे क्षार समाज है भाजन है ।

तय, सहस्त्री देवपुत्र मञ्चलाळि-गोस्तरक के विषय में भगवान के लग्मुख यह गाथा बीला-

कठिन तपइचरण और पाप हुगुष्पा से संवत, सान, कल्ह-स्थागी,

गान्त, तुराह्ये। से विरत, मध्यवार्ग, उन जैसे कभी पाप नहीं कर सकते ॥

त्य, लिंक देवपुत्र निगण्ठ सालवृत्र के बिपय में भगवान् के बन्मुख बह गाथा बोला-

पाप में घुणा करने वाले, चतुर, मिश्च, बारी बाम में सुमबृत रहमें वाले, देले सुने की कहते हुये, उनमें भला न्या पाप हो सकता है ?

त्तव. शाकीटक देवपुत्र नाना तीयों के विषय में भगवान के सम्मुख यह गावा बोला-

पकुष कातियान, निगण्ड, और भी जो वे हैं सक्खिल, पुरण, आसण्य पाने वाले वे गण के नायक हैं, ये भटा मखरुषां में दूर कैमे हो सकते हैं ?

तय. चेटरवरी देवपुत्र ने आकोटक देवपुत्र की गाथा में कहा-

हुँ ओं हुँभा कर रोने बाला अवना मिचार, सिंह के समान कभी नहीं हो सकता, नगा, हहा, पद गण का गुरु, जिसकी चलन में मन्देह किया वा सकता है, सामों के सरीखा एकटम नहीं है।

तव, पापी मार बेटस्वरी देवपुत्र में पैट मगवान् के सम्भुख यह गाया बोका----

तम और हुएकर किया करने में जो छने हैं, जो उनको निचार पूर्वक पाछन करते हैं, और जो सांचारिक रूप में आसफ हैं, टेबरोंक में मजे उदानी चाछे, वे हीं खोरा पराडोध वजने का, अच्छा उपवेस देते हैं।

तय, भगवान् ने 'यह पापी भार है' जान उसे गाथा में उत्तर दिया— राजगृह के पहार्कों में, विवुत्स घंड क्या ज्ञाह ह हमेता हिमाध्य में मेंड है, बाजाव में पत्ने पाठों में सूरव, बाजावों में समुद्र कोड है बावावों में सम्ब्राम, हैसे ही प्रवासी के साथ सारे लोज में बुद्ध ही कमुका कहे जाते हैं।

वंबपुष स्युच समार

# तीलरा परिच्छेद

## ३. कोशल-संयुत्त

## पहला भाग

प्रथम्य दर्श

६ १. इहर सच (३. १. १)

चार को छोटा न समझे

पेसा येंगे सना।

एक समय मगदान् श्रावस्ती में असाथिपिण्डिक के जेनबन भाराम में बिहार करते थे। तन, कोजङनाज प्रतिमजित् नहीं भगवान् थे पहाँ जागा और मगदान् ने साथ समीवन कर निपमनत के व्यक्त समाप्त कर एक और गैठ गया।

एक ओर पेठ, कोराक-राज प्रस्तेनजिल् ने धगवान् को यह कहर--आप शौतम क्या अनुत्तर पूर्ण-प्रसुख्य प छने का बाबा नरीं करते ?

महाराज! यदि कोई किसी की सचमुख सम्बक् देहे तो वह मुख ही को कह सकता है। महाराज! मैंने ही उस शहर पूर्ण-बुद्ध का साक्षारकार किया है।

हे गीतम । जो वृत्तरे अमण और जाहाण हैं—सचवाले, गणी, गणावारी, विष्यात, महास्त्री, तीर्यहर, पहुत लोगों से सस्मामित जैसे, पूरण-करताप, अवलिल-गोस्ताल, निगण्ड मातपुत्र, संत्रप वेलिहु पुत्र, पड्डाध क्यायन, अजिन केस करवली—वे भी श्रुव से पूर्ण जाने पर अनुसर सम्मण्ड सम्प्रदेश्य पाने का नामा नहीं करते हैं। आप गीतल तो आयु में भी छोडे हैं और नमें नरे ममलित भी हरी।

सहाराज । चार ऐसे हैं जिनहीं 'टीटे हैं' समझ अवज्ञा था अपभान करना उचित नहीं। कौन से चार १(3) छित्रिय जो 'छोटा है' समझ अवज्ञा या अपनान करना उचित नहीं, (२) साँच जो , (१) आग को , और (३) मिश्रु को । श्रह्मराज इन चार को—'छोटे हैं' समझ अवङ्गा या अण्यान मराग द्वित नहीं।

संगवान् ने यह कहा । यह कह कर समवान् शुद्ध में फिर भी कहा-

डेंचे कुळ में उराज, बने, वज्रस्यी सजिय को,
'केटा टै' बान कम समझे, उमका कोई अपमान न रूरे ,
राज्य पारह सहित्य नरेन्द्र-पर एक आइन होता है,
यह कुटू होकर राज-शिका से अपना धड़का से लेता है,
इस्रिक्टिंग, अपनी जान की रता करते हुए बेना करने से नाल आबे ॥
गाँव में, पा अबक में, कहीं भी वो सींप को देखे,
'जीटा है' अन उसे फन म ममले, उसका कानदुर न करे,

रंग किरंग के बने तेज साँप विकास हैं असाववान रहने बाबे को टैंग हेरो हैं कभी पुरुष या की की इसकिये कवली जान क्याते जबे बैसा करने से नाम आने छ क्रवरों में सब बाद क्रमा नने बासी बाले मार्ग पर चसने बाली भाग की "साटा है" जान कम न समझे कोई उसका अवादर न करे जन्मवन पाकर वह बहुत गड़ी हा जाती है श्चरकर समाध्यान रहने वासे का सन्तर देती हैं. की वा पुरुष की इसहिये अपनी कात्र बचाते हुने बैमा करने में नात्र आहे ॥ बाड़े मार्ग पर बसने बाकी भाग जिस बब को बसा देती है करों अन्य काल रवलील कोने पर वरियाकी किए की करा बाली है अ किल कियं प्रतिसम्बद्ध सिक्ष अपने तेव स बका नेता है बह प्रक्र पश्च दायाद या घन कुछ भी नहीं पाता विश्वानात विश्वत हिर कर साकश्वाना हो बासा ह । इमसियं पविनन गुरुर अपनी समाई का रुपाख कर माँच आग और बतको स्रिय **भार जीव्यक्तक किल क याथ टीक से पेश आहे ॥** 

बह बहुने पर कोसलाज प्रश्चेन किस जानाम् स योग्य — मन्य ! यहा डॉक कहा ! सन्ते ! जीसे उक्तर का सीमा कर ये के को उचार दे भरड़ को शह दिग्य है, कैंपियारे में वेस-प्रशेष दिया है— कॉल बाते कर दार में—बन ही आगावाम् न सबेत प्रकार ने पम की प्रकाशित कर दिया है। सन्ते ! यह में मावान् की सत्य जाता है, बसे की बार मिशु-संघ की। मन्ते ! बात से जम्म भर के किये हुस सालागत का मावान् व्यासक व्यासक रंगे।

## इ २ पुरिस सुच (३ १ २)

#### नीम महिनकर धन

भापली में।

त्तव कीतान्त्राज प्रत्येमजित् वहीं संगवाल ये वहा सावा और संगवाल का अभिवादन कर एक और कि गांगा।

पक्र कीर बैद, कार्याल्यात प्रतिशक्तिम् ने मगशम् कः वहः कहा—भन्न ! युरुप के किससे पून क्षणात्र यमें उत्तक होन हैं या उसके नहिन कार्य कीर वह कि विश्व हाते हैं है

सहारात्र ! पुरूष के लील ज्या अच्या साथ प्राप्त होता है जो हनक अहित हुन्य और कह क रिन्दू है। कान तीन १ (१) सहारात्र ! पुरुष वा स्त्रोध अध्याप्य धर्म उपच होता है जा उसके कहित । (६) अहारात्र १ पुरुष का उपच अप्याप्त पार्थ । (६) सहारात्र ! पुरुष को सोह कप्याप्य यार्थ ।। साथ पार्थ हुन्य कहां नाव नेया अध्याप्य पार्थ प्रत्यक हाने र जा उसके अहित बुश्य और कह के रिन्दू है।

> भोग शुप भीर माह पारिषण बाद पूरण का भागे ही भीगेर उपन्न हाकर मान्यह हैंस है असे मामा ही पाम फेर्ट में सेंड को ह

## ६३. गजस्य सुत्त (३ %.३)

### सन्त-धर्म प्रगमा नहीं होता

आवस्ती से ।

एक और दिशामिक संज प्रस्नेनिहानू न भगवानु न। यह कहा—भन्ते ! प्रवा ऐसा एउ है जो अन्य ऐकर न एनचा होता हो और न मरना हो !

मतारात । ऐसा हुए नहीं है जो न पुराना होता हो और न मरवा हो । महाराज ! जो पट्टेन्यहें के चे क्षत्रिय-परिवार के !'—प्यनात्र, यो मारवार, सहामोगवारे, जिनके पास सोमा-चौदी अफरात है, विता उपराण, ता शोर पास्य के मास्या-चे भी जन्म रोका विमा बड़े हुए और मरे नहीं राजे ।

महाराज ! जो प्रदे केचे शावाण-परिवार के हैं में भी जन्म हैनर िना बुढ़े हुए और सरे

नहीं सकता ।

सारागण ! की आर्गा भिक्षु रे-अक्षाणाध्यक्ष, जिनका माराज्यवेन्यस्य पुरा हो गया है, जिनके जो एक सत्ता वा दर किया है, जी त्याल आर्थ कर खुका है, जो व्यमार्थ को आहा हो खुके हैं। जिसका सब-स्वयम कह गया है, कुम लाम प्राप्त कर जा विद्युत्त हो गये हे—इनका भी धारीर छुट जाता है और वैकार हो जाता है।

> घड़े डाट-पाट के राजा के रथ भी पुराने में जाने हे , पर सरीर भी खुराषा को प्राप्त में जाना ए, परमी का धर्म पुराना नहीं होना, सन्त होना साकुरा। से ऐसा कहा करने हैं॥

## ६ ४. विय सुत्त (३. १. ४)

#### अपना प्यारा जीन ?

आयस्ती सः।

एक और येट, कीयाक-गात प्रसेतनिकाल में अगवान की यह कहा — अन्ते। यह, अकेळा घंड ध्वाल फले के सम में ऐत्या विवर्ध बठ-— "दिनकों अपना प्यारा है और किनकों अपना प्यारा महीं है।" मन्ते। तम में यह हुआ- "की स्पीर से हुगचार करते हैं, बच्च में दुराचार करते हैं, बच्च में दुराचार करते हैं, बच्च से दुराचार करते हैं, बच्च से दुराचार करते हैं, बच्च से सुराचार करते हैं अपना प्यारा नहीं है। अपना प्यारा नहीं है। अपना प्यारा नहीं है। से भी, सच्छान में बच्चे का स्वारा प्यारा नहीं हैं।

नी नयों ? भी शतु शतु के प्रति करता है, बही में अपने प्रति आप करते हैं। इसिलेयें, उनकी

भपना प्यारा नहीं हे।

भीर, भी दारीर ले सवाचार करते हैं, बचन से सदाचार करते हैं, सम से सदाचार करते हैं, उनकों अपना पहारा है। यदि से ऐना कहें भी—"मुझे अपना प्यारा नहीं हैं" सी भी प्रचमुच उनकों अपना प्रचा पहारा है।

सो क्ये. ? जो सित्र सित्र फें प्रति करता है, वहीं वे अपने प्रति आप करते हैं। इसिक्षिए उनको अपना बड़ा प्यारा है।

महाराज ! गथार्थ में ऐसी ही बात है। जो सारीर से दुशाचार करते हैं उसलिए, उनको अपना ज्यारा नहीं है। जीर, जो सारीर से नावाचार करते हैं हसलिए, उनको अपना चएा जारा है।

जिसे अपना प्यारा है वह अपने को पाए में मन कगावे,

हुरुमी करवेवाओं की सुक्ष सुक्ष गई होता व मबुष्य-धारीर की छोड़ कासु के यहा में का गये का मखा, क्या करवा होता ! अस्ता यह क्या केवर वाला है ! क्या बसते पीछे पीडे काता है साम व छोड़ने वाली छाया क्रेम ? पाप और युव्य दोनों जो मखुष्य यहाँ करता है वही बसरा करवा होता है कीर उसी को क्षेत्रर यह जाता है वही बसरा करवा होता है कीर उसी को क्षेत्रर यह जाता है वही बरावे पीछ-पीछे बाता है साम क छोड़न याथी छरया जरा ॥ इसकिये क्याक कर करना परकोड़ क्याचे हुई !

## § ५ अचरक्खित सुच (३ १ ५)

#### मपनी एकवाछी

एक भीर देव कोशल-राज प्रदेशिक्षित् में सगवान् को बह कहा----सन्ते ! यह बडेका यह ध्यान बरते मरे सब में प्रसा वितर्ज कहा "विवये जरती रखवाकी कर की है और विवये गरमी रणवाकी नहीं की है ?"

सन्ते ! तक मेरे सब में बहु हुका—ो बार्रार स मुताबार करते हैं यक्त से दुराबार करते हैं सन से दुराबार करते हैं जनने कपकी रक्तवासी कर्षों कर की है। असे ही कनकी रसा के लिये रायां स्थ भीर पैक्टर प्रेवाल हों किन्दु की भी कनकी रखवाओं कर्षों हुई है।

सी क्यों ? बाहर की की बनारी रक्षा बर्ड हैं आध्यान्य की नहीं । इसकिये वचनी अपनी रख

वाकी महीं हुई है।

भो सारीर से सक्तापार वरते हैं वयने भगमी रखवाकी कर औँ है। मने दी पैरक छनात न हों किन्तु को भी बचकी वरणी रखवाकी हो गई है।

को क्यों ? बाच्यारितक रक्ता उनकी हो गई है बाहर की नहीं हुई है। इमकिये उनकी अपनी

रक्षतामी हो यह है।

(ल.नामा हा भड़ का सहाराख ! बयार्थ में पंसी हो बाव है। यो सरीर से हुराबार करते हैं इसकिये उनका अपनी रखबाजी नहीं हो है ब्रीट को हारोर से सराबार करते हैं इसकिये उनकी बयबी रचवाली हो गई है।

पारीर का संबंध डीक हैं चक्क का संग्रह दीक हैं सब का संबंध डीक हैं सभी का संबंध डीक हैं पूर्व संबंधी कामाबाव, रहा कर किया गया कहा जाता है ह

१६ अप्पद्धस्य (११६)

#### किटीमी कोर से हैं

भावस्ती में ।

पूर्व की दें के कोवकराज प्रदेशिक हैं ने माणान को कहा—मन्त वह करेटा वेट प्यान करने मरे मनमें ऐसा विद्ये कड़ा—"कुसार में बहुद कोई ही देने हैं जो बहे कई भीग पा मतवार्ध नहीं हो जासे हों सक्त नहीं हो बादे हीं बड़े कोना मही वह कावे ही जोगों में दुरायाल नहीं परने कम प्राप्त हों बहिद संसार में ऐसे ही होण बहुद ह को बड़े-बड़े भीग पा सदवाब हो बाते हैं मन्त हो वासे हैं वह कोमी बड़ मते हैं भीर कोगों में दुरावाय करने कम कावे हैं। सहाराज । यथार्थ से एंग्रा ही यात है। सत्यार से बहुत थोडे ही ऐसे हैं । काम-भोग में आरक, कामों के ठाम में अन्या बने, किसी हुए की परवाह नहीं करते, सूग जैसे फैठाये जाल की, नतीजा कर्जा होता है, उसका फल हु बट होता है ॥

## ६ ७ अस्थकरण सूत्त (३.१ ७)

## कचहरी में झट वोलने का फल दुःखट

एक और बैट, कीजरूराज प्रसेनजित् ने भगवान् को यह कहा—"भन्ते । कचहरी में इन्साफ कारों, में क्षेत्रे कुछ के अधिव, बाह्यण, गुरुपति,—यह धनावत्र, माङ्ग्रात, महाभीम बाले, जिनके पास मीमा-योंडी अफरात हैं, वित्त, उपकरण, त्रन और यान्य से सम्पन्न—सभी की सातारिक कानों के चलते जान-यूग कर कुठ त्रीलने देखता हूँ। भन्ते । वब, भेरे मन में यह विचार हुआ, "कचहरी करना मेरा यस स्है। अब मेरे अनायश श्री कचहरी लगायें।"

मताराज ! जो ऊँचे कुछ के क्षत्रिय, प्राराण, गृहपति जान-वृज्ञ कर क्ष्ठ योछते हैं, उनका चिरकाल तक अहित और द्व पा होगा ।

> कास-भोग में आरक्त, कार्सों के लोश में अन्या वने, फिली हुट की प्रवाह नहीं करते, मछलियाँ जैसे पढ़ राये जाल की, मनीजा कड्जा होता है, उसका फळ हु खद होता है ॥

### § ८. मिछिका सत्त (३. १. ८)

#### अपने से प्यारा कोई नहीं

#### थायस्ती ने ।

उस समय कोशकराज प्रस्तेमजिल् अपनी राजी मिहिका देवी के साथ महक के ऊपर बाके सक्टे पर गया हुआ था। तब, कोशकराज प्रस्तेमजिल् ने मिहिका देवी की कहा—महिको। क्या हुन्हे अपने से भी पह कार कोई दमस जारा है?

नहीं महाराज मुझे अपने ले भी यद कर कोई दूसरा प्यारा नहीं है। क्या आप की महाराज, अपने से भी बद कर कोई दूसरा प्यारा है?

नहीं मिलिके ! मुझे भी अपने से बढ़ कर कोई दूसरा ज्यारा नहीं है ।

तथ, कोशकराज असेनिजित् सहल से बतर वहाँ भगधान् थे वहाँ गया, भीर भगवान् का अभिवादम करके एक और धैठ गथा। एक और धैठ, कोशकराज असेनजित् ने भगवान् को पह कहा—

भन्ते । में अपनी रानी मल्जिका टेडी के साथ महरू के अपर बाले तक्ले पर गया हुआ था। • हम पर मैंने मस्लिका देवी को कहा—नहीं मस्लिके ! सुसे भी अपने से वह कर कोई दूसरा प्यारा गर्दा है।

इसे जान, भगवान् के शुँह से उस समय यह गाया निकल पड़ी.— यभी दिवानों में भवने मन को होता, कहाँ भी अपने से पारा दूसरा कोई गहीं मिल, मैसे ही, दूसरों को भी अपना यहा प्यारा है, इसम्ब्रिये, अपनी मकाई पाइने वाटन दूसरे को भन सताने ॥

## § ९ यम्ज सुस (३१९)

पाँच प्रकार के यह चीका और हिसानहित यह ही हितकर

धावमी भ ।

दस मनय को सकराज महोत्रक्षियु धी जीर माण्य महायज हाने वास्त्र था। याँच सी धैर पाँच सी मछड़ पाँच सी पकड़ियाँ याँच भी यक्तियाँ कार पाँच भी ओड़ मसी बाउ के किए सूत्र में सैंच के। जो दास भीकर और अज़मूरे थे वंशी छाठी जोर शव में यसराय बारर औस् गिरास रीत ठैया निर्मो कर मेरे थे।

तब कुछ भिम्न सुबद में पहन और पाछ-वीपर के आध्यस्त्री में पिण्डपास के मिप पँउ। शावसी में पिण्डाकरण से कार, भावन कर केनं पर धार्श मगवान् वे वहाँ आवे कार अगवान् का बोसेबाइन कर एक बोर पँठ गरे।

पुरु कोर बैड उस शिक्षुयों से समावान का बहु कहा—सलो ! कोसकराज प्रस्नेन जिस् की जीर से पुरु सहायक हाने बाका है । जाँच निराते रोते एवारियों कर रहे हैं ।

इसे जान मगवान के हुँह स उस समय यह गाधार्थे विकक पर्या---

कर्ष-मेक पुरुष-मेथ सम्बद्ध पारा बाजपथ निर्माल कोर पेनी ही बड़ी-बड़ी करामानें सभी का बड़्या कर नहीं होता है है

भेड़ बकरे और गीवें तरह-तरह के कहीं जारे आसे हैं सुमारों पर कारक महरी कोग पूरी पक्त नहीं बताते हैं ॥ जिस पक्त में पूर्वी गुर्कें गुर्कें होंगे हैं सह कार्युक्त पत्र करते हैं मेड़ बकर कीर गीवें तरह-त्यह के कहाँ नहीं मारे कारे सुमारों पर आक्रड महर्षे कीग ऐसे ही यह बसते हैं इतिमान, पुकर मेमा ही गड़ करें हमा वह का महाएक हैं इस पत्र करनेवाले का करवान होता है अहित नहीं बहु पत्र महत्त्व होता है पेक्टन महत्त्व

#### **१**रे० वाधन सच्च (३ १ १०)

#### रह श्रम्यत

कस समय कीसकराज प्रदेश जिल् ने बहुत कीयों की गिरक्तीर अनवा किया या । फितने रस्सी में और फितने सीकड़ में बॉब विधे गये थे।

त्व कुछ निश्च भुवद में पहन थोर पात-वीवर के आवस्त्री में निश्वास्त्र के किए पेंद्रे। आवस्त्री में निश्वास्त्र सा कीर, मोजल कर सेने पर वहाँ मागवान् ने वहाँ वाचे भीर समावान् का अनिवादन कर एक सोर दिर तथा

एक और बैड उन मिलुओं ने भगवाय को यह कहा—मन्ते ! कोशकरात प्रदेशक्तित् ने बहुत कोगा को गिरक्तार करवा किया है। कितने रस्मी से और किगने सीवक से बाँच दिये गये हैं।

इसे काव अगवान् के हुँ इ से उस समय वह गावापु निवक पडी---

इत्तां रंग-दल से मसुष्य जाना नहीं जाता, ऐयर देरा दर ही किसी में विशास मत करे, यहें संयम का भड़क दिग्या कर, हुए होता भी विचरण किया करते हैं ॥ नकरों, मिट्टी का उना अड़कदार कुण्डल के समान, या लोड़े का चना और सोने का पानी चहाया जैन्से हो, क्तिने मेंच चना कर विचरण करते हैं, भीतर में मेला की की जाहर में नमकने ॥

#### २. पश्चराज सुत्त (३. २. २)

#### जो जिसे प्रिय हैं. वही उसे अच्छा है

आवस्ती में ।

उस समय, प्रस्तेनजिस् प्रमुख पाँच राजाओं के बीच, पाँची काम-गुणी का भीग करते हुये, यह बात चली---अम-भोगी में सचले बविजा कोन है ?

उनमें से एक ने कहा—रूप कास-भोगों में सबसे यहिया है। उनमें में एक ने कहा—राव्द काम-भोगों में सबसे बढ़िया है। गण्य बढ़िया है। रस बढ़िया है। स्पर्ण बढ़िया है। ये राजा एक इसने को समझा नहीं सके।

त्रव, कोत्तरू-राज प्रस्नेनजित् ने उन राजालां को कहा—हमलोग चर्ले । वहाँ भगवान् हे बहाँ भाक्त भगवान् से इन बाव को पुर्छे । जैसा भगवान् वताचे बसा ही हमलोग समझे ।

"बहुत अरहा" वह, उन राजाओं ने कीशलशब प्रसेनजिस् को उत्तर विया ।

सद प्रमेनजिन्-प्रमुख वे राजा जहाँ भगवान् थे वहाँ आये श्रीर भगवान् का अभिवादन कर एक भोर बैठ गये।

एक जोर पेंट, कोराज्याज प्रसेमजिए ने भरावाम् को कहा—भरते । हम पाँच राजाओं के श्रीच, पाँचों काम-गुणे का सीत करते हुए, यह वात चळी—काम-भोगों में सबसे वहिया कीन है ? एक ने कहा—च्या कान्त्र गम्ब एस स्पर्श । अन्ती । सी आप बतार्वे कि काम-भोगों में सबसे बहिया कीन है ।

महाराज! मैं कहता हूँ कि पांच काम-गुजों में जिसको जो अच्छा क्रमे उसके किये बही बहिबा है। महाराज। जो रूप एक के किये अव्यक्त क्षित्र होता है, वहीं रूप दूसरे के क्रिये अव्यक्त अनिय होता है। कित रूप से एक सन्तुष्ट हो लाता है और उसकी हच्छायें पूरी हो जाती हैं, उस रूप से कहीं यह-बहुकर भी दूसरा रूप उसे नहीं आता है। वहां रूप उसके किसे सर्वाचक और अलीनिक होते हैं।

महाराज ! जो शब्द, गन्ध, रस, स्पर्श एक के लिये कत्यन्त प्रिय ।

उस समय, चान्द्रनङ्गलिक उपासक उस परिषद् में बैठा था। तन, चान्द्रनङ्गलिक उपासक कार्य आसन से उठ, उपासी की एक कम्बे पर सेंगाल, सगवान् की ओर हाथ ओद कर चीठा—सगवन्। सुधे कुछ कहने की एकल हो गर्दी हैं।

मगवान् बोले—सो चन्दनङ्गळिक ! कहो।

सब धन्दनङ्गिक उपासक ने मगवान् के सम्मुख चतुरूप गाथाओं मैं उनकी स्तुति की ।

र्वसे सुन्दर कोकनद पद्म,

मात काळ किछा और सुगन्ध से भरा रहसा है,

## दसरा भाग

### द्वितीय वर्ग

## ९१ घटिस सुच (३ २ १)

#### कपरी इप-रंग म जानना कठिन

एक समय भगवान् धावस्ती में सुगारमाता के पूर्वाराम मासाद में विदार करते थे।

उस समय साँस की ज्यान से वह मगवान बादर निकळ कर बैढे थे ।

तम कोसक-राज प्रस्तेनक्षित् वहाँ अधवान् वे वहाँ आधाः और भगवान् का व्यक्तिवादव कर एक भोर वैद गया ।

बस समय सात बक्कि सात विगन्ध सात नागे, सात प्रकारिक धीर सात परिवादक कींच के रोवें और नास्त बसावे अपने विविच प्रकार के सामाय किए प्रमावान के पास से ही गुकर रहे ने 1

त्र मस्तिहित् है बासव में बठ पुत्र कम्बे पर उपरश्ची की सँगाक वाहिने हुटने को बसीव पर हैं≨ बिकर वे सास बढिक वे सबर हाव बोहकर तीन बार क्षपका साम सुनावा—अन्ते } में राखा मसंबद्धिक क्ष"

तह राज्य वन सात वरिकों के निकल करने के बाद दी वहीं भगवान् ये वहीं ध्याय और भगवाद का जमिवादन कर एक और फैंड गुवा।

एक मोर वेट राज्य में मगवान की यह कहा-अन्ते । क्रीक में की अर्दत हैं या कही-मार्ग पर नाकर प्रवर्म ये एक हैं।

सहाराज | आपनी—को पूरस्य काम मोगी वाक-वाची में स्ट्रेशको बावी के कन्द्र को कमाने वाके माक-गन्द और उपस्य का इस्तेमांक करवेवाके, स्वयं-पीने बडोरने वाके हैं—यह गक्ड समस् किया कि ये वर्षन् या मर्ट्य-मार्ग पर काकम हैं।

महाराज ! साथ रहते ही से किसी का सीख जाना जा सकता है , तो भी नहुत काल तक रह, पूर्व नहीं ; सो भी सदा ज्वान की रचने से पैम नहीं , सो भी प्रशासन्त पुरुष से ही आस्त्रासन्त से नहीं ।

महाराज । स्पन्नहार ही स किसी की हूँगावहारी का पता कराता है। सी भी बहुत करक के बाद पूर्ण नहीं, सी भी सदा प्याद में रणके से पैस नहीं, सी भी अञ्चानम् दुष्य से ही क्यावानम् से नहीं।

महाराज ! विपक्ति पहने पर ही मञुष्य की विवासा का पता कारता है। कारणाना से नहीं । महाराज ! बात चीठ करने पर ही मञुष्य की महा का पता कारता है। असहाराज से वहीं ।

भानी ! व्यापर्व है अनुगुर है ! अपनान् वे डीक बताबा कि- यह गकत समझ किया कि वे अर्देग वा मर्बग् के मार्ग पर जाकर हैं । साथ रहने ही से "जबताबान से नहीं !

अन्ते [ वे पुरुष मेरे गुरावर हैं भेदिया है। किसी बगह का भेद केजर आते हैं। उससे पहले मैं भेद केजर पांध पैता हो समझतान्यसता है।

भन्ते । क्या में उस सम्म अवृत को यो, स्तान कर अवस्य बसा जाक भवना यजने वस्त नहय, मॉच कार्य-गुर्मी का जोग करेंगे।

इसे जान अगवान् के हुँद से अस समय यह शावार विकल पड़ी-

कोजन्दराज प्रत्मेनजित् ने सुना कि मगधराज अजानशात्रु घेटेहिपुत्र ने धाया मार टिया है।

तम कोशलराज प्रस्नेनजित् भी अनुग्रहिणी सेना छे काशी में ममध्यराज अजातरात्र के

मामने भा दरा। त्य दोनों में वर्डी मारी लढाई छिड़ गई। उस लटाई में मगधराज ने कोशलराज ' को हरा

दिया । गार खा. कोशन्यात प्रमेनविन अपनी राजधानी श्रावस्ती को नौट गया ।

तय कुछ भिक्ष सुप्रह में पहन और पाप जीवर के शावस्तों में भिक्षाटन के किये पेटे। भिक्षाटन में सोट भोजन कर हैंसे के बाद बहाँ भगवान थे यहाँ आये, और भगवान का अभिवादन करके एक और र्यंड गये। एक और यंड, उन भिक्षको, ने भगवान को कान-

अस्ते । सरावराज में काङ्गी पर धाता मार दिया । 'हार खा, कोदालराज प्रसंगजित अपनी शतकाली धावसी को छाँर भागा।

भिक्षुओं ! मगधराज अजातराजु चेंदेहिपुत्र पुरे लोगों से भिलने जुलने वाला और बुराइयाँ को प्रहण करने बाला है। ओर कोजलराज प्रसेनजित भले लोगों में मिलरे-जुलने वाला और भलाइयों को प्रहण करने वाला है । भिक्षकों । दिन्त, हार न्याये कोशलगत प्रमेनजिन की यह रात भागी गम में बीतेशी ।

जीत होने में बंद यदता है. हारा हुआ गम से सोता है. शास्त हो गया पुरुष सुख से रहना है, इत-जीत की वार्ता की स्वीद ॥

## ६५ दतिय सदाम सत्त (३२५)

अजातराष्ट्र की हार, लुटेग **लटा जाता** है

सत्र मगधराज अजातदात्रु चेडेहिपुत्र ने बतुरद्विणी मैना को माज कोशकराज प्रसेमजित के विरुद्ध काजी पर बाबा मार दिया।

कोशकराज प्रमेनजित ने सुना कि मगधराज अञ्चातशञ्ज बेटेहिएय में भावा मार विया है।

तव, कोशल्सान प्रसेनजित भी चतुरद्विणी सेना ले काशी में मगधराज अज्ञातकान के सामने आ दर। तव. डोनी में वदी भारी लड़ाई छिड़ गई । उस लड़ाई में कोशलराज प्रसेनजित ने मगध्रगज को हरा विया और जीता गिरफतार भी कर ळिया ।

इस पर, कोशलराज प्रसेनजित के मन से यह हुआ—शके ही मगधराज अजातशबु बंदेहिएस ने कुछ भी नहीं करने बाले मेरे बिरुड कुछ करना चाहा, तो भी तो मेरा भाश्रा होता है। तो, क्यों न मे इसकी चतुरक्रिणी सेना को छीन उसे जीवा ही छोड़ हैं।

तथ, कोशलराज ने सगधराज को जीता ही छोड़ दिया।

तय. कुछ मिश्र भगवान् के पास आये, और मगवान् का अभिवादन कर एक ओर बैठ गये। एक और बैठ, उन भिक्षकों ने भगवान को कहा---

भन्ते ! तत्र, कोशलराज प्रसेनजित् ने संगधराज अजातशत्रु को जीता ही छोड दिया । इसे जान, भगवान के मुँह से उस समय यह गायार्थ निकल पर्दी-

अपनी सरजी भर कोई लटता है किन्तु, जब दूसरे छटने लगने हैं. तो वह लूटने वाका लूटा जाता है, बसंदी 'कन सामते हुप अज्ञीरसङ को पैको माकाश में तपते हुये वातित्य के पेसा छ

ठव उन पाँच राजाओं ने सान्त्रमङ्गाक्षिक वपासक को पाँच वक्क मेंट किये। इव उन पाँच बक्कों को सान्त्रमङ्गाक्षिक ने मगवान को सेवा में वर्षण किया।

## § ३ दोगपाक सुच (३ २ ३)

#### मात्रा से मोजस करे

म(वस्ती में ।

कस समय कोहाकराज प्रदेशिकित् होण भर घोषण करता था। तब कोसकराज प्रसेशिकित् भोषन कर सम्बोक्तमदी साँस केरे वहाँ भगवाम् ये वहाँ जाया और भगवान् का प्रमिचाहम करते एक भीर कि गाता।

तव कोशस-राज प्रमानित को भोजन कर अञ्ची-क्रम्बी माँस केते दंशकर आगवात् के मुँह से उस समय यह भाषा निकल पड़ी—

> मदा स्कृतिमान् रहने बाक्र मास मोजन में मात्रा बानने बाक्रे उस मानुष्य की बेदनाएँ कम होती हैं

( वह ओडन ) कलु को पाकरा हुना धीरे धीरे इबस हांगा है ।

उस समय सुन्देति माणकक शजा के पीछे शवा का।

तद गडा है सुदर्शन भाजक को जायन्ति किया—शास मुक्तन । धराबान् में तुम यह गाथा मीन को । मेरे सीसन करने के समय यह गाथा पड़ना । इसक किये बरादर प्रतितिन तुम्हें सी बहायन ( ⊯धर्यायक ) मिन्य करेंगे ।

"सहराज । बहुत अच्छा" कह सुर्वेदाल सामावक ने राजा को उत्तर व धरावान् में उस सामा की मीरि राजा के मोदल करते के समय कहा करता—

> नका स्मृतिमान् रहने वाले मात ओजन में मात्रा वानने वाळ जन्म मञ्जूष्य की वचनायें कम होती हैं।

( यह मीजन ) मायु को पामना हुमा चीर-चीरे बजस होता है ॥

नव राजा कमसः माख्यि भर दी भोजन करने सगा ।

नव कुछ समय के बाद राजा का सरीर वहा सुबीक और गरीका हो गया । जबने गार्की पर हाथ भरते हुवें राजा के हुँद से उस समय क्यान के वह शहद निजन पदे—

मरे । भगवान् ने दोनों तरह में मुख पर अनुकाया की है---इस संस्थ की वासा में और परमंत्र की कारों में भी।

इ.४ परम सङ्गाम सुन्त (३ २ ४)

मदाई की दा वार्ते अमेनजिन की हार

धायस्त्री में।

नव समयमात्र अज्ञानशायु चदेशियुज ने चपुरक्षिकी समा का साथ क्षेत्रक्रमात्र प्रसंत्रज्ञिन् के विनय काणी पर चाचा सार दिया।

भद्रीरतच्यापण नाष्ट्रण : भिनने श्रंगी में शंबारों विक्यती हु—अहम्या ।

हमीलिए, हारी का पैर पदा रोने से सक्ता अधुआ माना जाता है। मराराज ! हमी तरह, यह एक धर्म क्रीक और परलेक दोनों की बात में मसान रूप से शावश्यक ब्रहस्ता है।

> आयु, आरोम्य, पर्ण, स्वर्ग, उचकुर्तमना, और अधिकाधिक सुन्य पाने की इन्द्रा रमने धानों के लिये, युव्य कर्मों में पणिवत लिंग अप्रमाद की प्रतिया परते हैं, अप्रमत्त पण्डित होना अर्थों को पर लेता है, को अर्थ किंक्टिक हैं और जो अर्थ पार्ट्यक्रिक है, को क्षे की जाव होने ने पह पीर गुरूत पण्डित कहा जाता है।

## s ८. इतिय अप्पमाह सूत्त (३. २.८)

## अप्रमाद के गुण

थायस्ती में।

एक और घंट, कोमलनाज प्रसेनजित् वे भगवान् को करा। भन्ते ! एकान्त में ध्यान करते मेरे मन में ऐपा वितर्क उदा-भगवान् ने धर्म को घटा अच्छा प्रमुख्यादा है। किन्तु, बार मेरे लोगों के साथ इस्ते तथा मिकने बुलने बालों के लिए ही है। बुरे कोगों के साथ रहने तथा मिलने-बुलने बार्कों के किए नहीं हैं।

महाराज ! डीक में ऐसी ही बास है । मैने धर्म को धड़ा अच्छा समझाया है । किन्तु यह भछे" "।

महाराज । पुरु समय में पालय-जनपद में शाल्यों के एक करवे में विहार करता था। तब, आतान्द्र सिक्षु जहाँ में था वहीं आया और सेश अभियादन करके एक और श्रेट गया। महाराज । एक और बैठ, आतन्द्र सिक्षु ने शुक्रे कहा—

"मन्ते ! ब्रह्मचर्य का करीय आधा तो मछे छोगो के साथ मिलनेजुलने और रहने मे ही होता है।"

सहाराज । इसपर केने आवन्द निश्च को कहा----प्रेसा सत कहा आनन्द । ऐसी बात नहीं है। महाचर्च का पिल्डक हो भके कोगों के साथ मिलने-जुकने ओर रहने में दिका है। आनन्द ! मछे कोगों के साथ मिकने-जुकने और रहनेवाळे निश्च में ही आर्य अद्यक्तिक सार्य के विचारपूर्ण अध्यास करने की आरा की जा सकती है।

भागन्त्र । मार्च छोगो के साथ मिलने-गुरुने और रहने बार्का निश्च आर्थ अव्विक्त मार्ग का कैसे अन्यास करता है ?

आनन्द्र ! सिश्च विवेक, वैराश्य, विरोध तथा तथा छात्रे वाली सम्यक् दृष्टि की भावता करता है, सम्यक् संकरप की भावता करता है, सम्यक् वाक् की भावता करता है, सम्यक् समोन्त की भावता करता है, सम्यक् वाक् की भावता करता है, सम्यक् वालि की भावता करता है, सम्यक् वालि की भावता करता है, सम्यक् वालि की भावता करता है, सम्यक् समाधि की भावता करता है—पियेक-दायक, यंताव्य-दायक, विरोध-दायक वारायात्म-दायक । आनन्द्र ! इसी तरह, अछे छोगो के साथ मिछने-वुल्के और रहने बाला मिछु आर्थ अष्टाहिक मार्ग का कम्यास करता है।

कानन्द ! इस प्रकार, यह समझ छेना चाहिये कि ब्रह्मचर्य का बिल्कुछ ही भछे लोगों के साथ मिलने-ज़लने और रहने में टिका है।

आनन्द ! सुझ हो गले क्षित्र (=कस्वाण-सिन्न ) के साथ रह, जन्म प्रहण करने वाले प्राणी जन्म से मुक्त हो जाते हैं, बुड़े होने बाले प्राणी सुहापा से सुक्त हो जाते हैं, श्लीण होने वाले प्राणी क्षय से सुक्त हो जाते हैं, सरने पाले प्राणी सुखु से सुक्त हो जाते हैं, शोक करने पाले, रोने पीटने पाले, दु स और मूर्ल समझता है—बाय भार किया ! यारी तक कर तक असका पाप वहीं कठता है ; किया, कर पाप अपना नगीज़ा करता है ; वस मूर्ल हुं जुल पादा है ॥ भारते वाके को मारते बाका सिक्ता है बीतने बाके को जीवने बाका सिक्ता है वाकों पूर्व बाके को मार्की देवे बाका (बीर) विमाइने बाके को मार्की वें बाका (बीर) विमाइने बाके को किया करें के केर में पह स्ता तरह अपने किये कमें के केर में पह स्ता तरह अपने किये कमें के केर में पह

हु६ चीतुसुच (३२६) कियाँ भी पर्स्पों से क्षेत्र कोली ≸

भाषस्ती में ।

तव कोसकरत्व प्रस्तेत्रकृत् वहीँ समवान् ये वहीं अथा और समवान का कासिवादन कर एक बार बेंद्र गया।

तर, कोई भारती बार्ड कोसकराज असेतनिय या वार्ड गया और काम में कुम्यकुक्ता कर बोक्त— महाराज ! मस्टिक्स देशों को क्यकी पण हाई है ।

उसके पैसा बक्रम धर क्षेत्रकराज का सम गिर गना ।

कोसक्याब प्रसेनबिद के मनको गिरा देश अगवान् के श्रुँह में उस समय यह गावाने निकक पर्ने-

राज्ञम् । धोर्ड्-कोड्डे कियाँ भी पुरुषों से बड़ी कही बुद्धितारी जोकवरी मान की सेवा करवे वाजी और परिवक्ता द्वारी हैं, कारा पाज्य-रोज्य कर ॥ दिसामा को कीटने बाका महा सुरबीर उससे पुत्र पैदा होता है.

वैसी कथकी भी का पुत्र राज्य का अनुसासव करता है ह

६७ अप्पमाद <u>स</u>त्त (३२७)

- सप्रमाद के गुप

भाषस्ती में ।

पुक्र कोर केंद्र, कोराक्साम प्रसेशजिल्ला ने अगवान को कहा----मन्ते । क्या ऐसा कोई पुक्र वर्स है की कोक बीर परकोक दोनों की बाद में समान कर से बावहरक उदरता हो ?

हाँ महाराज ! ऐसा एक वर्ग है थो बोक और परानीक दोनों की जात में समाव कम से जाव इनक स्थारत है।

भागी ! यह कील-मा पार्म है को क्षीक जीर परसीक दोनों की जात में समाथ कर से आवश्यक दहरता है !

महराज ! समग्रह एक वर्ष है जो बोक कीर वर्तकोड दोनों की वात में समान क्या से व्यवस्थक इन्हरता है। महराज ! एपनी वर रहवेवाके जितने जीव हैं सभी के पैर बाधी के पैर में बाक जाते हैं। में आवे वेकार हो नए हो जालगा। महाराज ! दुर्मा तरह, तुरे होता बहुत भोग पास्र भी उनमें सुप्र नहीं उठा सकते । जिना भोग किया गया पन वेकार में नष्ट हो जाना है ।

महाराज । भहें लोग पहुत भोग पानर उससे नाय सुप उदारों है, साता-पिना को सुप देते हैं, ' ध्रमण ब्राह्मणों को बना-दक्षिणा पेते हैं ' । इस प्रवार, उनके भर्मा सोति भोग किये पन को न तो राजा है जाने हैं, न चंह चुस हिते हैं, न आग '। महाराज । ऐसा होने से, उनका मन्नी भोति सोग किया

शया धन सफल होता है, बैजार नहीं जासा ।

महाराज ! हिन्सी गाँच वा करने के पान्य ही एक बावजी हों समणीय । उनके कार को आहरी है जारे 'धार प्रशोग के कार्य । महाराज ! हम तरह उसका जल काम से आते रहने में नफल होता है वेकार नहीं जाता है। सहाराज ! इनी तरह अले लोग यहुल ओग पाकर उनमें क्या सुख उसते हैं। माता पिता को सुध के हें । महाराज ! ऐसा होते से खनता नहीं भीति औस किया गया अब नफल होता है, बेकार नहीं जाता ।

अ-सनुत्य (=्यूक् भेत ) चाले च्यान में जैसे द्वीसक जर, दिना बीमा जानर ही बूद जाता है, ऐसे ही, ग्रेरे लेगा धन पफर, न तो अदने भेगा करते हैं और न द्वान टेने हैं ॥ जी धीर और पिड़ा दुरूप मोगों की पा, भोगा करता और फामों में हजाता है, यह उत्तम दुरूप अपने जाति-स्वसूक्त का पोपण करते, निन्दा रहित हो रागे-स्थान की जाता है ॥

## s १०. दतिय अपुत्तक सत्त (३ २ १०)

## कंजूसी त्याग कर पुण्य कर

श्रावस्ती में ।

त्तम, कोशालराज प्रसेमजिल् हुमहरिये ने अहाँ कागवान् थे वहाँ आया, ओर भगवान् का अभिवादन कर एक ओर पेट गया। एक ओर पेट हुये कोशल्याज प्रसेनजिल को भगवान् ने कहा— महाराज! इस हुमहरिये में अला, आप कहाँ में बा रहें हैं ?

भन्ते। यह श्रावन्तीका सेट सी छास्त्र अशर्फियाँ, रूपयो की तो बात क्या? पत्तो की

छायनी बाले जर्जर रथ पर निक्ला करता था ।

महाराज । डीक में ऐसी ही बात है। सहाराज । बहुत पहले, उस सेट में तगर सिक्षि नाम के प्रत्येष्ठ दुद्ध को मिदा दिल्लाई थी। "अमण को भिक्षा हो" कह, वह वत कर चल गया। बाद में, उस प्रशासाय होने कमा—अन्या होता कि नीचर-वाकर ही निक्षा में दिये गये इस अल को खाते। इसकें कलाने, उसने भन के लिये वपने माई के इसकोसे पुत्र की हत्या कर वाली थी।

महाराज ! उस सेठ ने तमारसिक्षि नाम के अत्येक शुद्ध को जो निश्रा दिछवाई थी उस पुण्य के फहस्वरुज उसमें सारा बार स्वर्ग में जन्म छेकर सुगति पाई । उस पुण्य के श्रीण हो जाने पर उसमें

सात धार इसी आवस्ती में सेठाई की।

महाराज ! निक्षा देने के बाद, उसे जो बन्नाचाव हुआ--अच्छा होता कि नीकर पाकर दी निक्षा में दिये गये इस बन को चतरे |- उसी के सक-सक्य उसका पित अच्छे-अच्छो भोजनीं की और नहीं हकता है, अच्छे-अच्छे बक्कों की और नहीं हुकता है, अच्छी-अच्छी सव्यक्तियों की ओर नहीं हुकता है, अच्छे-अच्छे प्रप्त काम-मुणां को ओर नहीं हुकता है। केचेनों में यह बहुने बाक परक्षांनी में यह रहते बाक प्रार्था झाक परसाणी स मुख्य हा मात है। मानन्य ! इस मफार से आन कना चाहिये कि ब्रह्मचर्य का विरुद्ध ही भस न्येगों इंगाय मिमने-जुनने और रहन में रिकार्ट !

सहाराज ! इसकिय वाज भी वहां जीतें । शह जीता के साथ ही मिसें-हर्लांग अके कार्य क साथ ही रहेंगा । सहाराज ! इसकिये आप का कुसक-धुनों स वस्ताव स रहने के किय सीजना चाहित्रे !

सहाराज ! भारके क्ष्मभान-पूर्वक विहार करने मा नमना र तिवार करने पहिल्ला के साम में बहु होगा--राज्य अमसार पूर्वक विहार करने हैं. तो क्षा लोगा को मी अध्यान-पूर्वक ही विहार करने व्यक्ति !

महाराज ! भागके सर्वातक्ष्य शक्तियाँ क भी ग्रत श यह होगा ।

सहररात ! गाँव और सहर बाका के भी मन में बह हागा । सहरात ! इस तरह माथक अममाद पूर्वक बिहार करने में माथ म्वयं स्वान रहता सिवीं मी संवन रहेगी नवा साथ कर कवाणा और स्वारत भी संवन रहेगा ।

> अधिकारिक संशा की हुक्का रखने बाका क लिय पुरूष किमाओं में पणित कोग अप्रसाद की प्रश्नेमा करने हैं अम्मरण पणिता दोनों अबों का कास करता है इस काक में को को है और वो पारखीकिक अर्थ है और पुरूष जाने को को हो जाने में एपिटन कार बाता है ॥

### ३६ अध्यक्त स्य (३ ९)

#### कंशसी न कर

भाषस्त्री में ।

त्रं कोन्यस्य प्रसेनस्त्रित् हुपहरिने में वहाँ आगवान् व वहाँ आया और प्रसदान् का क्रीम वाहन कर एक कोर कैठ गया।

पण भीर हैंदे हुन कोसकात प्रमनकित् को भगवान् ने कहा-भहाराव । इस वुपहरिये में काम मका कहाँ से का प्रति हैं ।

भन्ते ! वह भावत्ती वा संद सूचपित प्रताता है। उस विपूते क बन को शक्तहक सेवा कर में बा रहा हूँ। मन्ते ! मस्ती काक नहिंदाँ, दगरों को यो नवा वास ! भन्ते उस संद का वह मीका होता था—का होता महा के साथ जाही का मात काता था। वह देशा करवा पहनता था—धीत वीचा कर यह पहनता का। दशकी देसी भवारी होती की—पता की कावती वाके वहाँ रहा पर विकास करता था।

हाँ महाराज । श्रीक ऐसर्ग हो नाम ह । साहाराज । दूर कोग बहुत भोग पर का भी जनसे सुक्ष वीडी प्रकासकरें हैं ग भागा पिया का सुका देशे हैं न की-वर्षों को सुका देगे हैं व नीमर व्यवस्थे को सुका देशे हैं न शोरण-मुश्लिम को सुका देशे हैं न कारक-माहाया को यान पश्चिमा देशे हैं जिससे कच्छी गाँठ हो कीर स्वर्ग एका सुक्ष जिला । इस सम्बद्ध बनके बिना भीग जिये कम को वा गों एजा के कार्य हैं वा और इसरें एकेंद्रों हैं वा कारा का देशों हैं या पानी वहां के जागा है वा कार्यन कोगी का हो कार्या है ! महाराज ! ऐसा होने से विना भागा किया गांच कम केवार में तक हो कारा है !

सहराज ! कोई विजन स्थान में एक बावजी हो स्थव्य जरू वाजी सीमक वक बाजी सामकर सक्वाकी साथ घोटों वाजी राजीव । उसके वक को न वी कोई व्यवसी के जाव न एनिं; न उससे स्वान करें न उसकी जीर किसी प्रवोग में कोई कावे । प्रवासन है वस नगर कमना जरू दिवा किसी कास

## तीसरा भाग

## तृतीय वर्ग

## § १. पुग्गल सूच (३. ३. १)

चार प्रकार के व्यक्ति

ध्रावस्ती में।

सय फोक्सलराज प्रदेतिजिल् अर्ही भगवान् ये वहाँ आया, और भगवान् का अभिवादन कर एक और कैट गया ।

प्रक और बैटे हुए कोशकराज प्रसेनिजय को भगवान् ने कहा—सहाराज ! ससार में भार प्रकार के होना पाने आते हैं। कोन से चार प्रकार के हैं (१) तस-तस-पराचण, (२) तस-व्योति-पराचण, (२) ज्योति-तस-पराचण, (७) ज्योति-ज्योति-पराचण । सहाराज । कोई पुरुप तस-सम-पराचण कीत होता हैं है

सहराज । कोई पुरुष भीच कुछ में पैता होता है, चण्डाल-कुल में, वेब-कुछ में, निपाय-कुछ में, रफ्जार-कुछ में, पुण्डुस-कुछ में, दरिदा और वदी तथी से रहनेवाले निर्धन-कुछ में। जहाँ खाना-पीना पची तंती से मिलता है। यह हुचैया, न देखने लायक, नाटा और सरीज होता है। वह काना, खूछा, कींगढ़ा या खूस होता है। उसे अब, पान, वस, सवारी, आरका, गांच, विलेपन, सप्या, घर, प्रदीप कुछ नहीं प्राप्त होता है।

बह सारीर से दुराचरण करता है, बचन से हुराचरण करता है, मन से दुराचरण करता है। इन हुराचरण के कारण पहाँ से सर कर अधाव में यद बढ़ी दुर्गित को पाता है। महाराज! जैसे कोई दुख्य पुक अन्यवार से निकट कर दूखरे अन्यवार में पदता है, पुक तम से निकटकर दूसरे तम में पदता है, एक खुन के मक से निकटकर दूखरे में पटता है, चिता ही गति इस पुरुप की होती है। महाराज! पैते ही कोई पुरुप तम-तम-परावण होता है।

महाराज ! कोई प्ररुप तम-ज्योति-परायण कैसे होता है ?

महाराज ! कोई पुरुष नीच-कुछ में वैदा होता है कुछ नहीं प्राप्त होता है ।

बह सरीर से सवाचार करता है, जधन के सवाचार करता है, मन से सवाचार करता है। इन सवाचार के कारण, वहाँ से मर कर स्वर्ग में इत्यक्ष हो सुगति को प्राप्त करता है। महाराज ! जैसे कोई पुत्र वसीन से साद पर चढ़ जाय, त्याद से धोवें की पीठ पर, धोवें की पीठ से हायी के हींदें पर, हायी के हीटे से महल पर, बेसी ही बात इस पुरंप की है। महाराज ! इसी तरह कोई पुरंप तम-जोति-पराण होता है।

मद्दाराज ! कोई पुरुष ज्योति-सम-परायण केसे होसा है ?

महाराज । कोई गुरूप कैंबे कुल में तथाब्र होता है, कैंबे शात्रिय-कुल में, प्राक्षाण-कुल में, गृहपति-कुल में, प्राचाल्य, महायम, महामोग वाले कुल में। यह शुन्दर, वर्षोगीय, साफ और बचा रूपदान होता है। अप-पान वर्षोच्छ काम असा है।

महाराज ! उस सेंड ने चन के किए जो अपने आई के इकसीते पुत्र की इस्पा कर डाफी पी दसके फ्रम्प्स्टर कर बकारों कार कालों क्यें तक तरक हैं। एकता रहा । जारी के फ्रम्प्सक्रप निका रहकर कसका पन सालवें बार राज बीच में कहा राजा । अहाराजा जास सेठ का पूज्य समाप्त हो गया 📞 भीर मचा भी कुछ संचित नहीं है । महाराज ! काज यह सेठ महा चीरव नरक में यक रहा है ।

मन्ते ! इस तरह वह सेठ महा रीरव परक में बस्पन हजा है ? र्षों सहाराज ! इस तरह कह मेठ सहा रीरक मरक में प्रतास हता है। घर घान्य चाँती सोता सीर भी को सक सामान है बीकर चाकर, अज़बर तथा और भी बमरे सहारे रहने बाढ़े हैं प्रक को साथ केवन नहीं काना होता है सभी को बार्री होड़ काना होता है ॥ मो कर सरीर से करता है क्या से या विश्व से बड़ी दसका अपना होता है कीर प्रसी को क्षेत्रर काता है

बारी उसके वीचे-वीसे काला है। वीचे-वीदे काले बाबी काया के समाज D इसकिये पुरुष करे, परकोक बनाये.

परकोड में पुरुष ही प्राणियों का साधार होता है ह

विलीय वर्षे समाप्त

## तीसरा भाग

## तृतीय वर्ग

## ११, प्रमूल सुच (३.३.१)

#### चार प्रकार के व्यक्ति

थावस्ती में।

सय कोशलराज प्रह्मिजिस् वर्हो भगवान् थे पहाँ भाषा, और भगवान् का अभिवादन कर एक और वैट गया ।

एक और बैठे हुए कोशकराज प्रतेनजिए को भगवान् ने कहा—महाराज ! संसार में चार प्रकार के होग पांचे जाते हैं। कोन से चार प्रकार के ? (१) तम-सम-परायण, (२) तम-ज्योति-परायण, (२) जोति-सम-परायण, (४) ज्योति-ज्योति-परायण । सत्तराज । कोई पुरुष तम-तम-परायण क्षेत्र होता हैं ?

सहाराज । कोई पुरुष गीच कुछ में पैदा होता है, चण्डाल-कुछ में, विनानुछ में, भिपाद-कुछ में, रथकार-कुछ में, प्रपक्त-कुछ में, चित्र और चड़ी तथी से रटनेवाळे निर्धन-कुछ में। जहाँ जाना-पीना पड़ी तथी से मिलता है। वह दुवंणे, न देपने शायक, नाटा और सरीज होता है। वह कामा, छूछा, लैंगाइग पा छुन होता है। उसे अज, पान, वख, सवारी, माल्य, गांध, विछेपन, सब्स, घर, प्रदीप कुछ नहीं प्राप्त नीता है।

यह सरीर से दुराचरण करता है, ध्यन से दुराचरण करता है। इन हुराचरण कर ता है। इन हुराचरण के कारण पट़ों से मर कर अधाय में पढ़ बढ़ी दुर्गित को पाता है। महाराज! जैसे कोई दुस्य पुरूष अभ्यकार से निकल कर पूरारे कन्यकार में पढ़ता है, एक तम से विकलकर दूसरे तम में पढ़ता है, एक खुन के मल से निकल कर पूरारे कन्यकार में पढ़ता है, बैसी ही शति इस दुख्य की होती है। महाराज! ऐसे ही कोई पुरुष तकन्तम-पायण होता है।

मद्दाराज । कोई पुरुष तम-ज्योति-परायण कैसे दोता है ?

सहाराज । कोई पुरुष नीच-कुछ में पैदा होता है कुछ नहीं प्राप्त होता है।

वह सारीर से सदाचार करता है, बचन से सदाचार करता है, मन तो सदाचार करता है। इन सदाचार के कारण, वहाँ से मर कर स्था में जरपन्न हो सुगति को प्राप्त करता है। महाराज! जैसे कीई पुरुष वर्गान से सार पर पह अवय, सार से घोषे की पीठ पर, घोषे की पीठ से हाथी के हीदे पर, हाथी के हीरे से सहल पर, मेसी ही बात इस पुरुष की है। महाराज! इसी तरह कोई पुरुष तम-ज्योति-परायण होता है।

महाराज ! कोई पुरुष ज्योति-तम-परायण कैसे होता है १

महाराज । कोई पुरुष कँचे कुल में उत्पन्न होता है, कँचे शत्रिय-कुल में, ब्राह्मण-कुल में, गृहपति-कुल में, भनाव्य, महाभन, महाभोग वाले कुल में । वह सुन्दर, दर्शनीय, साफ और वया रूपदान् होता है। व्यव-वाल थयेच्छ लाम करता है। महाराज ! यह शरीर से बुशायरण करता है । इन धुशायार के कारण यहाँ से मर कर भगाप

सहाराजा ! यह शरीर संबुश्यरण करता है । इन बुशचार के कारण यहां संसर कर अप। से एक बर्गति को मान शेता है।

महाराज | वैसे कोई पुरुष महरू से हाजी के हीये पर बतर आजे शांची के हीये से जीवे की पीठ पर धोदे की पीठ से स्वाट पर काट से कमीन पर, बमीय से अन्यकार में; येसी ही जात इस पुरुष की है। महाराज | हसी साह कोई पुरुष क्वोति-सम-सरावण होता है।

सहारात । कैसे कोई प्रथप अवेति-उपीति-प्रशायण होता है ?

सहरात (कोई पुरुष केंचे कुक में तथाय होता है। यह शरीर से सहाचार करता है हमा में उपय हो सुपति को मान करता है। सहरात | कोई पुरुष करता है। सहरात | कोई पुरुष क्रमीय से लाट पर का बाद सहस्व पान केंद्री पुरुष क्रमीय से लाट पर का बाद सहस्व पर, केसी ही लाट हस पुरुष की है। सहस्तक | इसी तरह कोई पुरुष ज्योठि-ज्योठि-प्राच्या होता है।

अधाराज ! संसार में बसने सवार के प्रवप बोते हैं-

हे राजन् ! (जो कोई) वरिज पुरुष अवाराहित कंग्रस सम्बीच्या पाप-संकर्मोपाका इते सत सानने वाका पुण्य कर्मों में भार्र-परित होता है असम बाहाय क्यावा बुसरे सी मायकों को बॉस्ता भीर गाविक्यों तेता है कोची गारितक होता है साँगने वार्कों को सोजन वेते हुए रोक्या है।

हेराबन्! हे जना चिप ! कस प्रकार का पुरुष समन्तम परायच है। यह यहाँ से सर के बीर

भरक में पहला है।

हे दुरावण् ! (वो कोई) विति पुरुष अवासु अंबुली-रहित होता है तान देता है अह संकर्णा बाह्य जलप्र मन बाह्य पुरुष असभ जाह्मण बणवा दुमरे पाणकों को भी उटकर समिवादन करता है संयम का अन्यास करता है सींगने वाकों को भीवण देते हुए समा वहीं करता ।

हेराजन् ! कस प्रकार का पुरुष तम-अमोति-पराचण है। यह पहाँ से प्रर कर स्वर्गकोक में करवड़ होता है।

हे राजन्! (वो कोई) चनाक्य पुरुष शकारिक कंत्रस होता है सरक्षीचूस राय-उंकरमें बाजा कुट्टे मत मानने बाक्स पुण्य बन्तों में कावर-पहित कामण, बाक्य अथया दूसरे भी बाक्यों को वॉट्टा बीर माहिकों देता है ओवी वारितक होता है माँगने बन्कों को माक्यन देते हुए सभा कर देता है।

है राजन्। कस प्रकार का पुरुष ज्योति-तम-परायण है जह पहाँ से सर कर बोर बरक में पहला है।

हे राजन् ! (को कोई) चनाका उठण जवालु, कंज्ली-विता वोच्या है पान देता है अह संक्रमा बाका करना प्रश्न वाका पुक्त करण जात्वम कावालुकी वाच्या की भी बढ़ कर जिम्मादन करवा है संक्रम व करणात करणा है प्रशिच वाकों को भीका हो हुए स्वा नहीं करवा।

है राजन् ! कर प्रकार का पुरूप उनोति-ज्योति-पराचण हैं। यह पहाँ से भर कर स्वर्ग स्रोक में

उत्पन्न होता है।

## § २ अध्यक्षा शच (३३२)

मृत्यु निवत 🕻 पृथ्य कर

एक और केंद्र हुन्दे कोसकराज प्रशेनजिल् को भगवान् ने कहा-सहाराज ! इस पुपहरिचे में जका और वहाँ से का रहे हैं ?

भन्ते । मेरी दादी मर गई है । वह वही बूढ़ी, पुरनिया, आयु पूरी हुई, एक सी बीस साठ की भी।

भन्ते । मेरी दादी मुझे वदी प्यारी थी । भन्ते । हस्ति-रत्न को भी पाना मैं स्वीकार नहीं करूँ यदि मेरी दादी न मरे। सन्ते ! हस्ति-रख को भी मैं दे ढाल्ड्र् यदि मेरी दादी न मरे। सन्ते ! अस-रख को भी पाना में स्वीकार नहीं करूँ यदि सेशी दादी न सरें। अन्ते। जन्म-रख की भी मैं दे डार्ट, यदि मेरी दादी न सरे। अन्ते। अच्छे-अच्छे गाँव । अन्ते। बनपदः ।

महाराज ! सभी जीव मरण-शील हैं, एक न एक समय उनका मरना अवस्य है, मरने से वे

किसी तरह नहीं रुच सकते।

भन्ते। आधर्य है, अजुत है। भगवान ने बटा ही ठीक कहा है—सभी जीव मरण-शीक हैं, एक न एक समय उनका मरना अवश्य है, मरने से वे किसी तरह नहीं बच सकते हैं।

ताँ महाराज ! यथार्थ में ऐसी ही बात है । सभी जीव मरण-शील हैं ।

सहाराजा । अन्हार के जितने घउँ हैं--- कच्चे भी और पके भी--सभी फुट जाने वासे हैं, एक म एक दिस उनका फरना अवन्य है, फ़रने से वे किसी तरह नहीं यच सकते। महाराज ! यस, टीक वसे ही सभी जीव मरण-जील है, एक न एक समय उनका मरना अवस्य है, मरने से वे किसी तरह महीं यच सकते।

सभी जीव मरेंगे, मृत्य में ही जीवन का अन्त होता है, उनकी गति अपने कर्म के अनुसार होगी, प्रण्य-पाप के फल से, पाप करने से नरक को, प्रज्य करने से सुगति की, इसिछिये सदा प्रण्य कर्म करे, जिससे परलोक यनता है, अपना कमाया पुण्य हो प्राणियों के लिये परलोक में आधार होता है।

३ लोक सत्त (३.३३)

तीत अहितकर धर्म

श्रावस्ती में।

एक ओर थेट, कोशकराज प्रस्नेमजिस ने भगवान को कहा-भग्ते ! कोक में कितने धर्म षहित. इ. ज तथा कर के किये उत्पद्ध होते हैं ?

महाराज । तीन धर्म छीक में अहिव, हु ख तथा कप्ट के लिये दश्यन्न होते हैं ।

कीन से तीन ? महाराज ! छोस धर्म कीक में अहित, तु ख तथा कर के लिये उत्पन्न होता है ।

महाराज । होप धर्म । महाराज ! सोहा धर्म । महाराज । यह तीय धर्म ठीक में बहित, हु ख तथा कर के लिये उत्पन्त होते हैं।

लोग, ब्रेप और मोह, पाप चित्त वाले प्रहण की. अपने भीतर ही उत्पन्न होकर नष्ट कर देते हैं.

जैसे अपना ही फल क्ले के पेड़ को ॥%

§ ४ इस्सत्थ सुत्त (३ ३.४)

दान किसे दे १ किसे देने में महाफल १ श्रावस्ती में।

प्क ओर वैठ, ओशलराज प्रसेनजित् ने भगवान् को कहा--मन्ते ! विसको दान देना चाहिये ? € यही गाथा ३ १ २ में भी।

महाराज ! तिसके प्रति सन में अद्या ही। सन्ते ! किसको बान देने से सहायक होता है !

मदाराज । यह मुसरी चात है कि किसको दान देना न्याहिये और यह मुसरी कि किसको दान देने स महान्यक होता है। सहाराज ! श्रीकवान् को दिये गये दान का महान्यक होता है। हुनसीठ को दिये गये दान का नहीं।

महाराज ! तो मैं आप को ही प्रतता हैं बैसा आपको स्मे वैसा कचर हैं !

सहाराज | मान के जापको कहीं क्यांके हिए जान। युद्ध उन बान। यम कोई शिक्षिम-कुमार बाय के पार भावे—जिससे सुद्ध विचा महिं सीची है जिसका दान साफ नहीं है जनस्पता, हापीक क्षेत्र क्राने वाका वर जाने बावत जाग बचा होने बावा। तो च्या न्या करते विद्युक्त करेंगे ? हैसे पुक्त में बायका यक प्रयोजन विक्रकेगा ?

नहीं बन्ते ! उस पुरुष को में नहीं नियुक्त कर्रीता, बैस से मेरा कोई प्रयोजन नहीं । तत कोई प्राह्मण-कुसार स्थाप के पास साथे । तब कोई बैहन-कुसार युद्ध-कुसार ।

भड़ीं सम्ते !- वसे से मंत्र कोई प्रवोकत नहीं ।

सहाराज | मान कें बापको कहीं कहाई किए बाप) पुद्ध दम काम। वन कोई छिप्तिप-कुसार आपके पास कामे—जिससे पुद्ध किया अप्योत्तरह सीयो है जिसका हाथ साक है पूरा सम्प्रासी को कसी न वह कोई सही कसी पीठ न हियाने। यो स्पर्ध बाप उसे नियुक्त करेंगे ? मैसे पुद्ध से साध्या प्रशोक किस्तेमा?

हाँ मन्त ! बल पुरुष का मैं लियुक्त कर खुँगा । वैसे ही पुरुष से की काम निकसेगा ।

तम कोइ आक्रण-मुलार, मैश्व-मुलार स्वत-मुलार । ब्रॉलन्सी ! बसे की पुरुप से तो शास विकल्पा।

महाराज ! ठीक कसी तरह जाहे जिल किसी कुछ से घर से धंवर हो कर प्रजिति हुमा हो वह पर्वेच करों से रहित और पर्वेच कहीं से बुक्त होता है। कराकी हाच विचे गये का महत्वक होता है।

किन पाँच कहा से यह शिव होता है ? कामच्यान्त् से शित होता है । हिमा-माब से शहित होता है । मानदर से शहित होता है । भीजन्त-कीहरण से शहित होता है । यह इन पाँच कहाँ से शहित होता है ।

ियन पाँच भागी से बह शुक्र होता है ? करीहर बीक-सम्मय से पुक्र होता है । करीहर समाधि सम्मय गा शुक्र हाता है । वर्षीक्ष महा-सम्मय से जुक्र होता है । करीहर विमुक्ति-सम्मय से जुक्र होता है । भारप विमुक्ति हान-पर्यंत से जुक्ष होता है । यह इन बाँच स्क्रम्यों से यक होता है ।

हम पीच बढ़ा में रहित कार पाँच अहाँ में सुक्त (समज) को विच गये दान का महाकड़ दोता है।

भगवान में यह कहा । यह कह कर तुद्ध ने फिर भी बड़ा---

सीरम्पाती जरू और वार्य जिल्ला सुद्ध में हैं जर्मा की नाम पुद्ध के निष्ठें मि सुद्ध करता है जर्मि के कारण वांचर की नहीं है जर्मि में क्ष्मानीयता जुरस माथ कार वर्मों हैं जर्मी कीड महर्मि बाले पुरुष को पुद्धिसान् सीम हीन बालि में भी पैता होने से पूजन हैं है रागे कारता की कावात परिमान वांचरा निजन बन में पूर्व पुरुष के बार में राज्या धनवांचे हैं कब बाल बीजन बच्च साम्बासन मोदे होगों को अहा-पूर्वक वान है, त्रीमें, की महम्माति बोर संकरी विकसी प्रमानते, प्रस्म कर सभी मीची जगहों को भर देवा है, हमे मी, अहालु पिचत प्रस्म भोजन के दान से, सभी याचकों को सान-पान में भर देता है, वही प्रमान चिन्न से बोरता है, 'देजी, देजी' का सा है, वही इसका गरवान है, प्रस्मते हुए भीच का, बहु इसी एक्ट की तारां हैने वाले पर ही प्रस्नती है।

## § ५. पटबत्पम सुत्त (३३५)

## इत्यु वेरे आ रही हैं, धर्मावरण करे

श्रावस्ती में ।

पुरु और पंढे हुए फोमलसाज प्रस्तेनिक्तित् को अगयान् ने कहा-सहाराज । कहाँ से आना हो रहा है ?

भन्ते। राज्य-सन्प्रन्यां कामों में में अभी बेतरा पाहा था। श्रतिय, अभिष्यंक किये गये, पृथ्वं के सद ते सत्त, सातारिक काम के लोभ में पदे, देशों को कब्जा में रापने वाले, पहे-पदे राज्यों की जीत कर राज करने पाले राजाओं को पहुत काम रहते हैं।

महाराज । मान कें, पूरव दिका में आप का कोई श्रद्धान्त ओर विश्वस्त आदमी आवे और वहे— महाराज । आप को मास्त्र हो—में पूरप दिवा से आ रहा हैं, वहाँ कैंने देखा कि एक मेघ के समान महान् पर्यंत सभी लीवा को पीसते हुए आ रहा हैं। महाराज । आप जैसा विचित समझे पैना करें।

तय, दूसरा आदमी पश्चिम दिशा से आवे, तीसरा आदमी उत्तर दिशा से आवे, बीवा आदमी इपियत दिशा से आवे और कहें — बहाँ मेंने देखा कि एक मेच के समान सहाल् पर्यंत सभी जीवे। को पीनसे हुए आ रहा है। महाराज । आप जीसा उचित समझें बैमा करें।

महाराज ! महान्यों के इस प्रकार नष्ट होने के टारुण भय आ पढ़ने पर क्या करना होगा ?

भन्ते । इत प्रकार के भव वह पवने पर, धर्माचरण, सवम-अभ्यास ओर पुण्य कर्म के सिवा ओर क्या किया आ सकता है ?

महाराज ! में आपको कहता हूँ, यताता हूँ। महाराज ! ( बेरी हो ) आप पर करा और मूख् (का पहाच) बढ़ा का रहा है। महाराज ! वहां और ख़ुखु के हुस तरह चढ़ते आने से प्रयोक्त ना चाहिये ?

भन्ते । करा और मृत्यु के इस तरह बढ़ते आने से धर्माचरण, सयम-अध्यास और पुण्य कर्म के रिया और क्या किया जा सकता है ?

सन्ते । क्षत्रिय वदे-वदे राजाकों को जीत कर राज करने वाले राजाकों को जो हलि-युद्ध, अश्व-युद्ध, रय-युद्ध, पंदल-युद्ध का सामना करना पदला है, यह जरा और खुन्खु के चढ़ते आपे के सामने क्या पीज है ?

भन्ते ! हुस राज-कुळ मे वहे वहे ऐसे गुणी मन्त्री हैं, जो अपने सब के वळ से अते हात्रुओं को मगा दे सकते हैं। उनका मश्र-कुत भी वस और मृत्यु के वक्ते अने के सामने वेकार है।

मन्ते। इस राजकुळ का खालाना ऊपर भीचे सीना से भरा है, जिस धन से इस झाते शत्रुओं को फोड़ दें सकते हैं। यह धन-युद्ध भी करा और मृत्यु के चक्रते आने के सामने बेकार है।

भन्ते ! जरा और सृत्यु के इस तरह चढ़ते अने से धर्माधरण के सिवा और क्या किया जा सकता है ? सहाराज ! टीक में ऐसी ही यात है। जस कोर सुत्यु के इस तरह चड़ते आने छ धर्माधरण के सिवा कीर क्या किया जा सकता है ?

भगवान् ने यह कहा । यह कह कर खुद्ध ने शार भी कहा---

किसे बने-बने हीक गागन-सुन्यो पर्यत सभी और से आते हों चारों दिशाओं को पीराने गुप, बेसे ही करा और खुरपु का प्राणिनों पर चहता आना है थे हारिया मामण बैरेण हाम चन्याक उत्कृत कोई भी नहीं हुस्या सभी समाय रूप से पीरी जा रहें हैं न हो बहों हारियों का ब्रह्मार है, न रच और न प्रस्क का जीर न वो बसे सम्ब से चा घन से रोजा जा सम्या है थे हुस पाने और संघ के प्रति महासुद्ध होने थे तुझ पाने और संघ के प्रति महासुद्ध होने थे वो सम्बचन-कान से बसोचान करता है

कोसङ संग्रह समाप्त

## चौथा-परिच्छेद

## ४. मार-संयुत्त

## पहला भाग

## प्रथम वर्ग

§ १. तपोकम्म सुच (४. १. १)

फठोर तपश्चरण वेकार

पुसा सैने सुना।

एक समय भगवान् अभी सुरन्त ही बुद्धांव काभ कर उत्तवेका में नेरख़रा नदी के तट पर अक्षपाळ निर्माण के नीचे विवार करते थे।

तव प्रकान्त में ध्यान करते हुये भगवान् के मन में यह वितर्क उठा—उस दुष्कर क्रिया से में इट गया। वक्षा अच्छा हुआ कि में अनर्थ करनेवासी उस दुष्कर क्रिया से खूट गया। बदा अच्छा हुआ कि स्थिर और स्मृतिमान् रह कर मेंने बुद्धव पा लिया।

तम, पारी मार अगवाज़ के चित्र के वितर्क की अपने वित्त से आन जहाँ भगवान ये नहीं आया और भगवान के सम्मुख यह गाथा बोळा ——

> तुम सप-कर्म ने बूर हो, जिससे मनुष्य शुद्ध होता है। अग्रुद्ध अपने को ग्रुद्ध समझता है, श्रुद्धि के मार्ग से गिरा हुआ ॥

सब भगवान् ने 'यह पापी मार है' बान, भाषा में उत्तर दिया.---

मुक्तिकाम के लिए सभी कठीर तपन्नरण को वेकार जान, दसमें कुछ मतकन महीं निकल्सा है। बैसे जमीन पर पूरी बिना दान प्रवास के नाव ॥ शील, समाधि और प्रज्ञा आहे दुद्धस्य के मार्ग का वध्यास करते, परम खुदि को मैंने पा लिया है, ह भम्मक । मुम्म बीन लिये परे॥

तम्, पापी मार 'मुझे भगवान् ने पहचान लिया' समझ, दुखित और खित्र हो वहीं अन्तर्यान हो गया।

## 8ै२ नागशुत्त (४१२)

## काशी के क्या में मार का सासा

पैमा मैंने सना।

एक समय समावाद बसी तुरत ही तुक्त काम कर करुवेसा में शेरकतरा नदी के तर पर कामपास निप्रोप के नीचे विवास करते थे।

बस समय मगवाज् राच की काकी अभिवारी में खुळे मदाव में बढे थे। रिमप्तिम वूँचें भी एक करी थीं।

त्रव पापी सार समावान की करा करेंगा और होंगारे काहे कर नेहे की इत्त्या से एक बहुत कहे हाथी का कुम कर कर कहाँ समावान ये बहाँ काया। उसका शिर का साको पूक काकी कहाव। उसके कींक में सामो सरकाना कोडी। उसकी मेर्ट की साको एक विकास हका।

सब अगवान ने 'बाद पापी जार हैं' कान गावा में बना--

इस क्षेत्रं संसार में कच्छे हरे कर कर कर तुम किस्ते ही भी पार्च ! क्षेत्र कक बहते हैं. जलक ! सम कह हो सबे स

जर पापा | इस जन रहेन हैं। जनका हुत यह है। पन छ तब पापी सार 'सुन्ने जगवान में पहचान किया ससस्य हुनीवात और विश्व हो नहीं जन्तवर्गन हो गया।

## § ३ सम सच (४ १ ३)

संयमी मार के बना में नहीं आवे

करबेस्य में।

कार समय भगवान् रात की काजी कें विवादी में कुछ मैदाव में की वे । रिसक्तिस हैंहें सी पड़ उन्हों थीं।

सन पानी मार मानवान् को क्या कैंगा होंगते कहें कर देने की इच्छा से अर्थों मानवान् ने वहाँ क्याना और सरक-सरक के कैटे को अच्छी सर्व कमा विकास कमा।

त्रव मगवान के पह पापी मार है जाव गावा में कहा-

इस दोर्च संसार में अच्छे तुर कर बरकर तुम फिरते हो। और पापी ! इस जब रहने हैं। अलाख ! तुम वह हो गये ॥

को सरीर अवन और शब से संबद रहते हैं

वे भार के नवा में नहीं जाते वे भार के बर में नहीं पहते व

स्य पाणी मार 'मुक्ते समवाक् वे पहच्यान किया। समक्ष श्रुप्रीयत और सिर्व हो वहीं अन्तर्पाद हो गया।

## अधिपास सुच (४१४)

चुक मार के आब से मुक

पैसे मैंने सुना।

ण्ड समय यगकाच् बाराणसी कं ऋषिपताल सुगत्वाच में विदार करते थे। वहाँ सगवान् वै मिसुनों को आमन्त्रित किया—"सिद्धानों।

"भदन्त !" कह कर कन निश्चमों ने धरावान की उत्तर दिया ।

भरावान् योद्धे---शिक्षुओ ! मन को उचित सार्ग में लगा और उचिन उत्माह कर भेने अर्जीकेक विसुक्ति रायी हैं, कर्जविक विसुक्ति का साक्षाकार किया है ।

भिक्षुओ । सुम भी मून को उचित मार्ग में ष्या। और उचित उन्साह कर अलैकिक विमुक्ति का लाभ नरी, अलैकिक विमुक्ति का साकारकार करा।

गप, पापी मार वहाँ भगवान् थे वहाँ आया और यह गांधा घोटा-

मार के बाल में येथ गये हो, जो ( आह ) दिख्य और मनुष्य लोक के हैं,

सार के जधन से बँधे हो,

#### [भगवान-]

मार के जाल ने में मुक्त हूं, जो दिखा और मनुष्य लोक के हैं,

ध्रमण ! मुझमे तेरा छटकारा नहीं ॥

मार के थधन से शुक्त हूँ,

भन्तक । तुम जीत छिये गये ॥

सब, पापी मार 'खुझे भगवान् ने पहचान रिका' समझर हु खिल और खिल हो यहीं अन्तर्घान हो गया।

## § ५. पास सुत्त (४. १. ५)

#### वहुजन के हित-सुख के लिए विचरण

एक समय भगवान् धाराणसी के ऋषिपतम खुगदाच में बिहार करते थे । वहाँ भगवान् ने भिक्षुओं को शासन्त्रित किया—"शिक्षाओं !"

"भवन्त !" कह कर उन शिक्षुकों ने भगवान् को उत्तर दिया ।

भगवान धोषे—जिक्षुओ। विष्य होत और अञ्चय लोक के वितर्व वाल हैं सभी से में मुक्त हूँ। मिक्सओ। पहुनावों के दित के किये, बहुनावों के स्वत के किये, हित के किये, सुख के किये विचया करें। एक स्वाय दो सत वाओ। मिक्सओ। आदि से करवाण (कारक), अन्य में करवाण (कारक), अन्य में करवाण (कारक), अन्य में करवाण (कारक) अपने से करवाण (कारक) अपने से करवाण (कारक) अपने से का उपवेश्व करें। वर्ष-सहित = व्यवत-सहित, पूर्ण, वरिक्षक ह्यावार्ष का तकाण करें। अपने को वर्ष वर्ष से में अपने करवाण हों। मिक्सओ। में भी नहीं उसवेशक। है, कार्य से के वालवे वाले वर्ष के मिक्सओ। में भी नहीं उसवेशक। है, कार्य सेनावार्ष मितावार्ष में वर्ष वर्ष सेनीय। मिक्सओ।

तय, पापी भार जहाँ भगवान थे वहाँ आया और गाथा में बोला-

सभी जाल में वेंधे हो.

को (बारु) विष्य और मनुष्य छोक के हैं,

बदे यन्धन में वैंधे हो,

श्रमण ! मुझसे तेरा खुटकारा नहीं ॥

#### [भगवान्—]

में सभी जार से शुक्त हूँ, को दिव्य और समुख्य रोक के हैं, यदे धन्यन से मैं कूर शुका भन्दका तम जीत किये गये ॥

## **६६ सप्प सुच** (४१६)

### वकारतवास से विक्रमित स हो

पेसा मैंने समा।

एक समय भगवान राजराह के बेलाधन ककान्यकनिवाप में विदार करते थे।

अस समय मगवाण् राठकी काकी अँथियारी में सुके सैन्दल में बंदे थे ।ंदिमसिम पाणी सी पक्रका था।

वर रापी भार प्रताबात् को करा क्या रांगरे बड़े कर देने की ह्य्या से पूक तिबाक सर्पराव का क्य परकर वहाँ मानवात् ने वहाँ आवा । क्ये पूक वहे कुछ की वागी ताव दो वैद्या दसका सरीर था। मैंसे महारार को क्याई हो केंसा उसका कम का। की को कोसक वी वागी (क्याकरा) पाडी हो वैसी दसकी माँने था। कीने ताहगढ़ारे मेव से विवादी कड़करी हैं वैसे ही उसके मुँह से बीग कपकरादी थी। जैसे कोहार की आवी बकने से सम्ब दोशा है कीने ही उसकर गाँस कोने कीर होड़ में से सारव होता कर

तक भगवान ने भार थायी जार है कान गावा में कहा---

को एकाणवास का सेवन करता है
वह आरासंतर श्रुपि के है
वह आरासंतर श्रुपि के है
वह आरासंतर श्रुपि के है
विस् पुरुष के किए वह विश्वक अनुष्क है ॥
तह-तह के तीन विश्वत है ताह-तह के वर देवा करनेवाके
वहा वंस अप्यत और तांच विश्वक
वहा वंस अप्यत और तांच विश्वक
पह कर सेव के भी नहीं हिक्कावे
एकाणवास कावेशका साराहरि है ॥
व्यावश कर बाव प्राची करि आव
स्मी प्राची वर वार्य,
यदि सारी में माका सी सुभावें,
वो भी सुद सोसारिक परहानों,

तव पापी सार 'मुझे मगबाव् वे पहचान किया' समझ बुगवित और विश्व हो वहीं धन्तपाँव हो गया।

## 🖁 ७ सोपसि सच (४ १ ७)

#### विवरण पुत्र

ण्ड समय मतवाब राज्याह के बेलुकत कामकशिवाप में विदार करते थे।

या मारवाष् बहुत नवर तक सुने रेतुम में जंबभन करते रहे । रात के मिनसारे पैरों को प्रचार विदार के भीतर गये । वहाँ द्राविणी करवर सिंह क्रप्या कमा कुछ बसते हुए पैर पर पर पर एक स्मृतिमान् भार गंभक हो, मन में जन्नाव संद्या ( = वस्त्रे का विचार ) का क्षेत्र गये ।

<sup>\*</sup> उपधि-पद्यस्त्रम् की उपधियाँ-धाइक्या ।

तय, पापी मार वहाँ भगवान् ये वहाँ आया और भगवान् से यह गाया घोला---

क्या सोते हो ? क्यों सोते हो ?

क्यों ऐसा वेखार सो रहे हो ? सना घर पाकर सो रहे हो ?

सरज उठ जाने पर क्यों यह सो रहे हो ?

### [ भगवान — ]

जिसे फँमा लेने वाली और विप से अर्री गुळ्णा कहीं भी बहकाने को नहीं है, जो सभी उविषयों से भिट जाने से बुद्ध हो गये हैं,

छेटे हें हे आर ! इससे तुम्हारा क्या ? तय, पापी आर 'अझे भगवान् ने पहचान किया' नमझ, दु खिल और खिला हो वहीं अन्तर्धान को गया !

#### § ८. आनन्द सत्त (४.१.८)

#### अञ्चल चितितत नहीं

पुसा मैंने सुना।'

पुरु समय भंगवान् श्रायस्ती में श्रमाधापिश्विक के जीतवन आराम में विहार करते थे । तह, पार्य मार जहाँ भगवान् थे वहाँ आया, और भगवान् के पास यह गाथा बीका—

> पुत्रं बाका पुत्रं से आनम्य करता है, बैसे ही गीवों वाका गांबों से आमन्य करता है, सासारिक पीजों से ही मनुष्य की आमन्य होता है, बहु आमन्य नहीं करता किसे कोई चीज़ नहीं।।

[सगवाम्—]

पुत्रों बाका पुत्रों की चिन्ता में रहता है, चैसे ही गीजों बाका गीजों की चिन्ता में रहता है, सांसारिक चीजों से ही मनुष्य की चिन्ता होती है, कह चिन्ता नहीं करता जिसे कोई चीज नहीं थ

तत, पापी मार 'शुझे भगवात् ने पहचान किया' समझ दु शित और जिल हो वहीं अन्तर्थान हो गया।

#### ६९, आग्रसत्त (४.१९)

#### गायु की अस्पता

ऐसा मैंने सुना।

एक समय मगवान् राजगृह के नेलुचन कलन्यक निवाप में विहार करते थे। वहाँ नगपान् ने थिक्षुओं की आसजित किया— "भिक्षबों"।

"भदन्त !" कहकर उन मिधुओं ने भगवान को उत्तर दिया।

भगवाद बोके—शिक्षाओं | समुख्यों की आयु थोड़ी है। परकोक बाता (बीप्र) है। पुरष कमाया चाहिने नदाचये पाकता चाहिया। का कमा भेता है वह मश्मे से कमी क्या नहीं सकता। सिक्षाओं | को पहत बीता है वह सी पथ बीता है। उत्तर कुछ कम या अधिक।

तम पापी मार अहाँ भगवान थे यहाँ भावा और भगवान से गाथा में योगा-

मयुष्यों की बायु करवी है सत्युक्त इसकी परवाह न करे भूजपीने वस्ते की तरह नहें शान्य कभी नहीं जा रही है ।

ध्यावान-)

मनुष्पों की भावु बोदी है

सापुरण इससे भूष सचेत रहें सिरपर भाग कम गई है पेमा समझते रहे

मैसा कोई समय वहीं जब सुग्तु म का आवे।

त्तर पारी सार 'शुक्त भगवान् में पहचान किया' समझ शुक्तित और शिक्ष हो नहीं सन्दर्भान हो गया।

### ६१० आयु सुच (४१ १०)

भागुका सप

राजपृद्द में।

वहाँ समजान कोले—सिद्धाओं । सनुष्यों की चातु थोदी है। परकोक चाना ( सीम ) है। पुत्रव कमावा चाहिये नक्ष्मवर्ग पाकना चाहिये। को कम्म केता है वह सरने से कमी वच नहीं सकता। सिद्धाओं ! को बहुत कीता है वह सी वर्ष कीता है उससे पुष्ठ कम या अधिक।

तब पायी मार कहाँ भगवाब ने वहाँ आया नीर भगवाब से गावा में बोबा--

दिन और राख चके बड़ी वा रहे हैं बीचथ (का प्रवाद ) कभी रुक्ता नहीं है

अनुव्यों के चारों और आज़ बैसे ही जुनवी रहती है।

केरी प्राप्त गावी के परे के स

[ सगवान्—]

रगणान्य— ] वित्र और राज वीते का रहें हैं

> श्रीयन (का प्रवाद निर्माण में ) क्या वाता है मनुष्मी की काणु क्षीय हो रही है

संतुष्याका का वालुकाम्य हारहा व कोशी-कोडी विवर्णीका जैसे चवा पाणी ॥

सब पापी मार 'मुझे अग्रवाण् में पहचान किया' समझ शुप्तकत और विश्व हो वहीं अन्तर्वाव हो गया ।

मचम बर्ग समाप्त ।

### दूसरा भाग

### द्वितीय वर्ग

### ६१. पासाण सूच (४. २ १)

#### बुद्धां में चञ्चलता नहीं

एक समय, भगवान् राजगृह में गृद्धफुट पर्वत पर विहार करते थे।

उस समय भगवान रात की काली श्रीधियारी में खुले सदान में बैठे थे। रिमिनिस पानी भी पंडरहाथा।

तय, पापी मार भगवान् को उरा, केंपा और रॉगटे खड़े कर देने की इच्छा से जहाँ भगवान् थे बहाँ आया, और भगवान के पाम ही बहे-बहे पश्चरी की लुदकाने लगा।

तब भगवान ने 'बह पार्चा मार है' जान गाथा में कहा-

चाहे सारे शृद्धकुट पर्वत को ही क्यों न लुड़का है,

विस्कुल बिमुक्त बुद्धां में कोई चन्चलता पैटा नहीं हो सकती। सय पापी मार 'ग्रुझे भगवान ने यहचान किया' समझ दु खित और खिल हो वहीं अन्तर्धान हो गया।

# ६२. सीह सुच (४.२२)

युद्ध सभाओं में गरजते हैं

पुक समय भगवान् श्रावस्ती में अनाथपिण्डिक के जेतवन भाराम में विहार करते थे। उस समय भगवान बदी भारी परिषद के बीच धर्मोपदेश कर रहे थे।

तय पापी भार के मन में यह हुआ--यह श्रमण गीतम बड़ी भारी परिपद के बीच धर्मीपदेश कर रहा है ! तो क्यों न में श्रमण गीतम के पास चळकर छोगों के सत को फेर दूँ।

तथ पापी मार जहाँ भगवान ये वहाँ आया और भगवान से गाथा में बोका--

सिंह के ऐसा क्यों गरज रहा है, सभा में निटर हो कर, तम से जोड़ छेने वाला मौजूद है, अपने को यह विजयी समझे बैठे हो ।।

भगवाभु-

जो महाबीर हैं वे सभाजों मे निडर हो कर गरवते हैं,

वरुशाली बुद्ध, जो अवसागर की पार खुके हैं ॥

तब पापी मार 'सुझे भगवान् ने पहचान क्रिया' समझ दुखित और खिन्न हो वहीं श्रन्तर्थान हो गया।

६ ३. सकलिक सुच (४. २. ३)

पत्थर से पैर कटना, तीव बेदना

पुसा मैंने सुना ।

एक समय भगवान राजगृह के महकुच्छि सगदाव में बिहार करते थे।

उस समय संगंधान के पैर एक पृथ्यत के इकड़े से कर गये थे। अगवान को बड़ी पीड़ा ही रही थी---बारीरिक दुःखब सीच कठोर कड बढ़ी खरी ! बसे अग्रवान स्थिरता से स्पर्तिमान कौर संप्रक्त को साह रह थे।

हब पापी मार बहाँ भगवान थे वहाँ आपा और भगवान से गाथा में नोका-

इतका प्रान्द क्यों पड़े हो। क्या किसी विचार में पड़े हो ? क्या तम्हारी वाश्ववकतार्थे पूरी नहीं हैं। श्रदेश इस यदान्त साम सें मिद्राक्र-मा क्यों संटे हो १

### भिगवार- ]

में सम्द नहीं पदा है व किसी विचार में मान हैं. रींचे परभार्थ पा निया है और सोक कर गये हैं अरेका रम प्रकारत स्थान है सभी जीडों पर अनुकाया करने बासा में सो रहा है है जिनकी हाती में बाल खम गया है को प्रदारह कर हायप की फाय-सा नेता है से बाज बाय भी सी बाते हैं। सो जारी बेदवाओं से बहिल में क्यों व जोड़ी। काराने में समे रांका नहीं और व में सीने से बरता है. शत या जिल का साथ वर कोई प्रसाद वार्टी संस्थार में में बढ़ी भी अपनी हाकि नहीं देखता इसकिए में को रहा हैं.

.सभी जीवा पर जनकरण करने वाका ह तद पापा भार 'सूझ मगवान में पहचान किया' समझ बुधनित और विश्व हो वहीं जनकाँच हो गया ।

### ६ ४ पविरूप सच ( ३ २ ४ )

### यद मनुरोध विगध से मुक्त

एक समय अगवान कोडाल में वक्ताता बामक बाक्यों के वॉब में विकार करते थे। उस ममद भगवाम् गृहरूरी की एक वर्षा वश्चिद् क दीव धर्मोपहेश कर रहे थ ।

तव पाची आर कमन में वह आपा-वह श्रमण गातम गृहस्यों की वही परिपट्ट के बीच भर्मे परेल कर रहा है। सा वर्ती व में बड़ों ब्रमण गीलम है बड़ों चलकर दलके सब बी केर हैं।

तद बारी मार कहाँ भगवान से वहाँ आता भ र भगवान से रात्या में बोला-

मुग्हें बेगा करना मुन्ह नहीं को नगरे को लिखा रहे हो पैना करते हुवे अनुरोध और विरोध में मन करते ह

#### [ मगवाम् - ]

हिम भीर अनुस्त्रमा काने वाले पृष्ट नुमारे को अनुसामन कर रहे इ ॥ पुद जनुरोध और विरोध से शुरू हैं : सय पार्थों मार 'मुखे भगधान् ने फल्चान किया' समझ धु-रिजन आर फिल हो वहीं क्लाबीन हो गया।

#### ६ ५. मानस सुत्त (४. २. ५)

#### **र**च्ळाओं का नाश

ऐसा भैने सना ।

एक समय भगवान् श्रावस्ती में अनायािषिष्ठक के जेत्रवन भाराम में विद्यार करते थे। सब वार्षा भार कहाँ भगवान् वे वहाँ अवा और भगवान् से गाधा में घोला—

> आकाश में उदने वाला जाल, जो वह मन की उदान हैं। जबसे नगर फैंगा लेगा, असल ! सलसे सेरा छटकारा नहीं ॥

### िभगवान--- ी

रूप, प्रान्द, रस, गन्य ओर स्पर्श, मन को लुभा छेने वाछे, इनके प्रति मेरी सारी इस्डाये मिट गईं, भन्तक । तुम जीत छिये गये हो ॥

हम पापी मार 'भुझे सगवान् ने पहचान किया' समझ हुखित और खिन्न हो वहीं अन्तर्भान हो गया।

#### ६६. पच सच (४. २ ६)

#### भार का चैल बतकर आता

धावकी में।

जल समय भगावान ने गाँन उपादान व्यक्तमाँ के विषय में धर्मोप्देस कर सिक्षुओं को दिखा दिया, बता दिया, रूपात रूपात दिया, और उनके आयों को जला दिया। और, शिक्षु-कोग भी वदे ध्यान से मन स्पात्कर कान दिये चर्म अवस्त्र पढ़िये।

तय पापी सार के मन न यह हुआ---यह श्रमण गीतम पाँच उपादान स्कन्यों के विषय में धर्मीरदेश कर । सी क्यों व में वहाँ श्रमण गीतम है वहाँ चलकर उनके मत को केट हैं !

वस समय, कुछ पात्र खुले मैदान में पदे ( खुल रहे ) थे।

तथ. पापी मार एक बैरु का रूप घरकर जहाँ वे पात्र पढ़े थे वहाँ आया ।

तब, एक भिक्ष ने दूसरे भिक्ष से यह कहा—स्वामीकी, कहीं यह बैरू पानों को तोक न है।

उसके ऐसा कहने पर मगवान् ने उस भिक्षु को कहा—सिद्धु ! वह वेल नहीं है । यह पापी स.र इस कीमों के मल को फेरने आया है ।

तव भगवान् ने 'यह पापी सार है' जान वाया में कहा-

- रूप, वेदना, संज्ञा, विज्ञान और संस्कार को, 'न यह में हैं, और त यह मेरा है' ऐसा जान, उनके प्रती निरक्त सहत है, ऐसे विरक्त, सान्य, सभी बन्धनों से छूटे दुक्त को, सभी जगह खोजते रहका भी, मारन्येंना मंद्री पा स्वकती। तप पापी सार 'शुसे भगवान् ये पहचान क्रियक्ष समझ बुः धित और सिक्स हो यहीं सन्तर्वान हो गया।

### ६७ आगतन सुच (४२७)

#### भावतर्ते में ही भय

पुरु समय भगवाम वैशास्त्री में महाधन की कुटानार वासा में विदार करत थे।

दार समय समावाण्ये का रचनांतरमं के विषय में प्रमापनेस कर मिशुओं की विका दिया । स्तीर निमा कोग भी काल दिये समें सदल कर रहे थे।

तक पापी सार के मान में बढ़ कावा—यह, असल गातस का स्पर्धायतकों के दिपन में । तो क्यों व में बढ़ों असम पीतस है वहाँ चककर कपने सख को फर हैं!

तब पापी सार खर्डी सगवानु ये वहीं ध्यवा और सगवानु के परस ही सहा सबोत्पादक सन्द करवे क्या-साथी प्रश्नी कर तकी।

तय एक मिस्र ने दसरे को क्या-मिस्र मिस्र ! मानी प्रश्वी पर वकी !

क्सके ऐसा कारी पर सगवान में कस मिछु को कहा—सिछु ! इच्ची कर नहीं रही है। यह सार तम कोगों के सत को फेर को के कियं कावा है।

तक, अरावान वे 'यह पापी सार हैं? काम गावा में कहा-

कम शब्द रस गम्ब स्पर्ध भीर भी वित्तवे वर्स हैं संसार में वही अब है इनके पीछे संसार प्राप्तक है इनसे कपर उठ सुद्ध का भावक स्कृतिमान् हो सार के शब्द को कॉक सुर्य के पैसा नमकता है।

तप पापी भार 'शुक्षे पगवान् ने पहचान किया समझ दुर्गकत भीर खिड हो वहाँ सन्तर्वान हो गया।

### इ.द पिण्ड सुच (४२८)

### युद्ध को मिशाम मिखी

पुत्र समय भगवान् प्रसुध में पञ्चवास्त्र नामक नामकों के ग्राम में विद्यार करते थे । कस समय कस माम में नुवकों का पहलार मेंट देश का कसाव करना हुआ था ।

सब मगबान सबह में पहन और पाछ जीवर के गाँव में मिखारन के किये पेंटे।

- तम मगमान् शुपह म पहण न्यार पात्र जानर के गांच म सम्बारन का क्य पठ । - क्स समय पुरुषहास्त्र मान के बाह्यकों पर पापी भार समार हो। सथा बा—कि हिसमें अमण

प्रीतम की प्रिक्षा क सिक्के पान के नाक्ष्य कर पात्र कार है। यहाँ का ना ना है। प्रीतम की प्रिक्षा के सिक्के के नाक्ष्य कर के के क्ष्य स्थानक कर से किस्सा कर से किस्सा के किस्सा के किस्सा कर

सब भगवान् केरे हुके-पुकाने पात्र को केशर प्रजासक ग्राम में मिकारन के किये पैठे थे। वैसे ही हुके-पुकाने पात्र को किये कार गये।

तम पापी मार कहीं जगानक् से वहीं धावा और समकात् से बोधन---धमय ! क्या शिक्षा मिकी ! तुम पापी ने बेसा किया जिसमें मुक्ते निका नहीं मिके ।

भन्ते ! को ममजान् वृसरी बार पळकाल धाम में निकारण के किये पैडें । इस धार में ऐसा कर्ममा जिसमें भगवान् को निका निकेशी ।

सार में बदा अपुरूप कमाया औ बुद्ध से द्या किया है पापी ! भवा समझता है कि मेरे पाप का कक वहीं मिक्रेगा ? सुन पूर्वक जीता हूँ, जिन्न भुति कुछ अपना गर्दी हैं, ( समाधि-जन्म ) बीनि से खतुष्ट रहेँगा, बीते सामाध्या देव ॥

तय पार्षो सार 'सुने भगवान् ने पत्त्वान दिवा' समझ दृश्यित और गिन हो पहीं अन्तर्यान हो गया।

#### ६ ९. कसाक सुच ( ४. २. ९ )

### कर का जयक के रूप में आना

थायस्ती में ।

ठम समय, भगवाम् मे निर्याण मध्यन्या धमायदेश दर भिनुओं को छिन्या दिया । श्रीर, भिक्षु छोग भीग कान टिये धर्म छवल कर गई थे।

सर, पापी सार के सन में यह आया—या असन गीनम निर्धाण-परपानी धर्मीपदेश कर '। सी, क्यों म में वार्टी असन गीतम है पहाँ परावर उनके सत को फेर हैं।

सव पापी मार रुपार का रूप धर—पुरु पड़े एक की कर्य पर लिये, पुरु लक्ष्मी छहुनी लिये, पाल विपेते, दार के कपट्टे पड़ने, पहीं ने कीच्य एताचे, लहां भगवान् ने वहां आया, शीर भगवान् मे पोला—अक्षणा । मेरे करते की देवा है ?

र पापी ! तस्ट उंडा से पदा बाग ?

असण ! मेरी ही ऑव्य रें, केरे री स्व रें, केरी भी और वं वाले वाचे पाडे विज्ञानायवन हैं। असण ! रहाँ वाकर सहाले ट्रंट नवने हो ?

श्रमण ! मेरे ही सत्त्र, गध, रस, १४३ ।

श्रमण । मेरा री अन रे, मेरे ही धर्म है, मेरे री अन-संस्पर्श-विज्ञानायनन है। श्रमण । कहाँ आकर सुशसे इट सम्ते हो १

पापी ! तेरी ही धाँदा है, तेरे ही रूप है, तेरी ही अंतर से लाने जाने बाले विज्ञानायसन हैं ! पापी ! जहाँ भाँच नहीं है, रूप नहीं हैं, आंदर से जाने जाये याले. विज्ञानायसन नहीं हैं, वहाँ तेरी गति नहीं हैं !

पापी । जहाँ शब्द, गन्ध, रख, चक् वहीं है

पापी ! तेरा ही मन है, तेरे ही धर्म हैं, तेरे ही गन-पस्पर्श-विज्ञानायवन हैं । पापी ! जहाँ मन नहीं है, पर्म नहीं है, मन-सस्पर्श-विज्ञानायतन नहीं हैं. वहाँ सेरी गति नहीं हैं ।

जो कीम कहते हैं 'यह मैस है', जिले कीम कहते हैं 'मैस है' !

यदि तुन्हारा भी मन यहाँ है, तो है छमाण ! प्रक्षसे नहीं छूट सकते ॥

[ नगवान्- ]

जिसे छोग कहते हैं वह मेरा नहीं है, जो कोग कहते हैं वह में नहीं हूँ, रे पापी ! इसे ऐसा जान,

मेरे मार्ग को भी तुनार्रे डेल सर्वेगा ॥ सप, पापी आर 'मुखे अगमान् ने पष्टचान किया' समझ दुलित और खित्र हो बहीं अन्तर्धात हो तथा।

### ≰१० रअसमुत्त(४ २ १०)

#### कांक्सरिक कार्ज की विकास

एक समय समाधान कोशास्त्र में द्विसारस्य के पास जंगक की एक क्षत्रिया में विदार करते ने। तब एकान्त में ज्यान करते समय भगवान के मन में यह नितर्क करा—क्या विकासारे या भरताये निना क्षति या जिलवाचे निना हुत्क दिये ना दुत्क दिख्याचे भर्म-पूर्वक राज्य किया का सक्ता है ?

तर पाणी मार मणवान् के शिला को वपने चिता से बान बार्डी मणवान् में बार्डी माणा और बोझा—मन्ते ! मणवान् साम्य करें—विका मारे भर्म-पूर्वक !

पापी ! हुमणे क्या वेककर मुझे ऐसा कहा :---मन्ते ! मगवान् राज्य करें---विना सारे वर्म--पूर्वक ।

सन्ते ! सरावाम् ने चारों कृतिहराइ की भावमा कर की है जनका जन्त्रास कर किया है जब पर पूरा मविकार या किया है जबकी सफक बना किया है जनका जनुष्टान कर किया है, जनका परिचय और प्रयोग कर किया है अन्ते ! यदि सरावाम चाहें कि यह पर्यतराज हिमाक्य सीमे का हो व्यव सी प्रावाम् के केवक अधिद्वान करते साथ से सारा पुषर्ण-पर्यत हो जावगा !

#### [सगवास् - ]

विच्छक मंत्रकी होने के पर्यंत कर सुराता भी पढ़ पुरुष के किये काफी गहीं हैं पह समझ कर ( संसार में ) रहें जा कियने कामा बिसने हुन्य देख किया जन कामी की लीर वह कैसे खरेगा ? सांसारिक कामी की कमम जाव कर पर निवास जावा की क

दव पापी जार असे अयवान ने पहचान किया समझ कृष्टित और फिल हो बन्दवांन हो गया ।

वितीय वर्षे लगात ।

# तीसरा भाग

# तृतीय वर्ग

(अपरके पौच)

### § १, सम्बद्दुल मुत्त ( ४. ३ १ )

माग्या बहकाना

प्ता मने सुवा।

एक समय भगवान ज्ञापन्य जनपद के ज्ञीलायती प्रदेश में विदार करते थे ।

दम समय मगपान् वे पास हाँ कुछ अप्रमत्त, आसापी (= क्लेशों को तवाने वाले ) और

प्रदितासम ( = प्रयमी ) शिक्षु जिहार करते थे।

तप, पापी मार प्राप्तण का रूप घर, — रूप्यो जहा यहाये, स्ट्रमचर्म ओही, ब्हा, पहेरी जैसा हाका, ह्य-पुर मॉन लेते, गृश्य का दण्ड शिये— नाहों ये जिल्ला थे यहाँ आया। आकर सिक्षुओं ये योजा— आप होगों ने वही छोड़ी अवस्था में प्रमुखा के की है, आभी तो आप कुमार ही हैं, आप के केश अभी एगले ही हैं, आप की हतनी अवही ज्यानी हैं, हम चहती उन्न में आपने तो समार के कामों का स्थाद मी नहीं हिल्ला है। आप मनुष्य के भोगों को ओमों। सामने की यास को छोड़कर मुहत में होनेवाली के पीछे मत हीहें।

नहीं प्राह्मण। हम लानने की यात को छोड़कर मुद्दत में होने बाली में बीछे नहीं बीड़ रहें हैं। मामण। इस ती वलटे बुदत में होने बाली बात की छोड़कर सामने वाली के के में है। मामण। भगवान् में पतान के कारों में देवां के से में है। मामण। भगवान् में पतान के कारों में पतान के कारों में देवां के से होने बात कारों में देवच होच ही दीच हैं। की ह, वह पर्म लांदिक (= ऑतों के सामने कल देने वाला), तीन्न ही सफल होनें बाला (= अवाधिकों), टेडे की चीट पर सखा धताया जा सकने पाला (= एहिएस्टिसकों = तिसमें पित्र में किसी को कहा जा सकता है—'आओ, टेर की'), मुक्ति के पास के जानेवाला, विश्व दुरुपों से अपने भीतर ही भीतर समझ छिपा बानेवाला है।

े उनके ऐसा कहने पर वापी मार जिर हिला, जीम निकाल, कळाट पर तीन सिकोदन (अूर्मग) चना लाडी टेकता हुआ घळा गया।

तय, वे भिक्ष नहीं अगवान् थे वहां आये ओर भगवान् का अभिवादन कर एक और बैठ गये। एक और बैठ. उन भिक्षकों ने भगवान् को यह कहा—

भन्ते । इस छोग सगवान् के वास ही अप्रमत्त, आतापी, और प्रहितातम हो बिहार कर रहे हैं। सब कोई माहाण, छम्बी अटा धवाये आकर घोछा—आपने धदी छोटी अवस्था में । सामने की बात को छोद कर मुद्द में होगेबाळी के पीछे मत दीवें।

मन्ते ! इस पर हमने उस बाक्षण को उत्तर दिया---नहीं बाक्षण ! हम सामने की बात को छोड़ कर मुद्द में होनेवाडी के पीछे नहीं दीड़ रहे हैं। । और यह धर्म सोहस्कि है।

मन्ते ! इस लोगों के ऐसा कहने पर घड बाहाण जाटी टेकता हथा चला गया ।

भिक्षुओं । वह आहाण नहीं था। वह पापी मार तुम कोगों के मत को फेर देने के किये लॉयॉ थाँ।

इसे बान, भगवान के हुँह से उस समय यह गाया निरुक्त पड़ी— जिसने जिसके कारण हु: ए होंगा जान क्षिया बह कर कारों की जोर कैस शुरू सरका है ? सोसारिक कारों को करना जान कम पर बिजाय पासा सीरों !!

# इ.२ समिद्धि सुच (४३२)

### समृद्धि की स्रामा

पुक समय भगवान् ज्ञापन्य जनपद में शीक्षायती प्रदेश में विदार करते थे।

उत्त समय नामुक्तान् समृद्धि मणवान् के यास ही अग्रमण आतापी, और प्रहितायम हो निहार कर रहे थे।

तन पहान्य में। च्यान करते समय आयुष्मान् समृद्धि के मन में वह विसर्क उद्य-नीरा बहा बाम हुन्य ! मेरा बहा भाग्य हुआ कि मेरे गुरु कार्यप् सम्बद्ध सम्बद्ध हुने । मरा बहा काम हुआ ! मेरा बहा भाग्य हुआ कि में इस स्वाच्यात धर्म-विशय में प्रमतिक हुन्य । मेरा बहा काम हुन्य ! मरा वहा भाग्य हुना कि मेरे गुर-आई शीक्षणान् और प्रध्यासा हैं ।

तव पानी मार कायुप्पान ससुद्धि के वित्रके को अपने किए से कान कहाँ कायुप्पान सद्धि ये वहाँ आपा । आकर, आयुप्पान सस्धि के पास ही सहामयोत्पादक सध्य कहने लगा। मानो एक्टी

कर पत्नी।

तव व्यक्तमान् सञ्ज्ञात् वहीं अगवान् थे वहीं आये थीर अगवान् का वसिवादव कर एक जोर वैद गवे। एक ओर पैठ व्यक्तमान् सञ्चाद ने अगवान् को कहा—

मन्ते ! में सपवाल के पास ही कामाण बाताणी और अदिवास हो विहार कर रहा हूँ । भन्ते ! तब पुत्रान्त में चान करते समय भेरे मान में यह विश्वक बदा । भन्ते ! तब मरे वास ही एक महामंगीत्यावद पास्त होने कमा, मानो ग्रंच्यी कर ककी ।

संबन्धि ! यह प्रप्ती वहीं फेटी का रही भी ! वह पारी मार तुम्बारे मत को फेर दने के किए कावा या ! संबन्धि ! बाभी वहीं कामण काताणी और प्रतिदास्त्र होकर विद्यार करी !

भागते । वाच्या (वाया वहा वाताव कारामाण कार प्रावहाय हाका । वहार करा ! भागते ! वहुत वाच्या कह, वाचुत्पाव हास्त्रीहा भगवान् की उत्तर है, अस्तव है उड सगवार् को अस्त्रियान और प्रपश्चित्र कर वड़े एवं !

्रमृती बार भी बायुष्पान् समुद्धि वशी विशाद करने को । दूसरी बार सी प्रकार में आन करते सत्रय जायुष्पान् सम्बन्धि के मध्य में विशाद करने को । दूसरी बार सी प्रकार में मान्य हुवा !! कि मेरे गुष्पान्यों सीकवाद और ग्रुप्याच्या हैं।

इसरी बार भी पांची आर गया । साबी प्रथ्यी कर सक्ती ।

तव व्यक्तमान् सम्प्रति चह वाची भार है वान गाया में बोके-

मना में में मंत्रवित हुम्य हूँ घर से वेघर हो, स्पित और मंत्रक को मेंचे बाग जिया मेंता विश्व समाधिक हो गया जैसी हुस्मा हो वेसे क्य विकास क्यासे मेरा हुक वहीं विशाव सकता ह

तव पापी सार 'ससूबि मिश्रु ने शुक्षे पर्चाण क्षिता शसह शुर्वकत और क्षित्र हो वहीं भन्तपांव हो गया !

### § ३. गोधिक सुच (४. ३ ३)

#### गोधिक की आत्महत्या

ऐसा मैंने सुना ।

पुक समय मगवान राजगृह के चेलु उन करून्दक निराय से विहार करते थे।

उस समय, आयुग्मान् मीधिक ऋषिगिरि के पास फाल्डिशला पर विहार करते थे। तथ अप्रमस, अतापी और प्रतिहास होकर विहार करते हुए आयुग्मान् गीधिक ने समाधि से होनेवाली चित्त-विमुक्ति को प्राप्त किया। फिर, आयुग्मान् गोधिक की यह समाधि से टोनेवाली चित्त-विमुक्ति इट गई।

्रुसरी बार भी, अप्रमत्त, आतापी और प्रहितात्म होकर विहार करते हुए आयुष्मान् गोधिक मे समाधि से होनेवाली चित्त-विमुक्ति को प्राप्त किया। दूमरी बार भी, आयुष्मान् गोधिक की यह समाधि से होनेवाली-चित्त-विमुक्ति इट गई।

तीसरी बार भी, आयुप्मान् गोधिक की यह समाधि से होने वाळी चित्त-विमुक्ति हट गई ।

• चौद्यी बार भी, पाँचवीं बार भी, छठीं बार भी, अध्युष्मान् बोध्यक्ष की वह समाधि होनेबाडी चिक्त-विम्रुक्ति हट गई।

सातवीं बार भी, अप्रमत्त्र, आतापी और प्रहिवात्म्र होकर बिहार करते हुए आयुष्मान् गोधिक मे समाधि से होनेबाली चित्त-पिम्निक की प्राप्त किया ।

तव, आयुष्मान् गोधिक के सन में यह धुका---छडीं वार तक मेरी समाधि से होनेवाकी चिच-विस्नुतिक हुट चुकी है---तो क्यों न में आत्महत्या कर छूँ।

सब, पापी सार आयुष्मान् गोशिक्षक के थितक की अपने चित्र से आल, जहाँ भगवान् ये वहाँ सादा, और भगवान् से गाया में पोला---

त्तप मगधान् ने भिष्ठाओं को वासन्त्रित किया—निष्ठाओं !! वहाँ ऋषिशिरि के पास कालहीला है वहाँ वरू चलो, वहाँ गोधिक कुलपुत्र ने भावमहत्वा कर ली है।

"भन्ते ! यहुत अच्छा" कह, उन मिक्षुओं ने भगधान् को उत्तर दिया ।

तन, कुछ सिक्षुओं के साथ भगवान् जहाँ ऋषिमिटि के पास कालाशिला थी वहाँ गये। भग-वान् ने बुर ही से लाखुप्मान् ग्रोधिक को साट पर कथा छकार्य सोधे देखा।

उस समय कुछ प्र पाता सा, कुछ छाया सा, प्रव की कोर उदा वाता या, पश्चिम की धोर उदा

8 8 8

काता था। उत्तर की जोर उदा जाता या: दक्षिण की ओर उदा जाता था: कपर, नीचे, सभी जीर उदा काता था ।

तद भगवान ने ग्रिहाओं को बासनितर किया—मिझको | देशी कुछ व वाता सा अप्र करना समी भीर दवा काता है।

सकी ! सी हाँ।

सिहाओं ! यह पार्थी मार वोश्चिक कुरुपुत्र के विज्ञान की सभी और कोब रहा है-गोधिक क्रकपुत्र का विद्यान कहाँ प्रतिक्षित है। शिक्षाओं । गोधिक का विशान कहीं भी प्रतिक्रित नहीं है। वसने क्रिकोस का क्रिका है।

सब पापी सार विस्त-पण्ड वीका (=मो बीजा पके बैठ के ससात पीका था ) की के बहाँ सम बान ये बर्डी भाषा और गावा में बोका-

> कपर बीचे भीर देरे अहे जिलाओं बीर अवस्थिताओं में मैंने कोब छान कर भी नहीं पाया वह गोखिक कहाँ मना ह बह धीर, पवि-सम्बद्ध ध्यापी सत्ता ध्यान-रव वित्त रात करा रहा औरवय की प्रपक्त व करते प्रचे सत्य की सेना को बीच पुनर्जनम न प्रहम कर तच्या को अब से जनाव शोधिक ने परिनिर्वाण था किया है मारी सोड में पर उसकी कांचा से बीचा विसव गार्ट इससे बद जार किस हो जहीं सल्तर्श से गया ह

### **९ ४ सत्तवस्सानि स्तर** (४ ३ ४)

#### मार द्वारा साव साथ पीका किया जाना

पैसा सिंग समा १

एक समय मधकान सबसेका में शेरकचरा नहीं के तौर पर व्यक्तपाद्ध निप्रीध के नीचे विद्यार क्राप्ति हो ।

कस समय पापी जार साथ साक से भगवान का पीड़ा कर रहा था-वनमें कोई दोप निकासमें की इच्छा का किल क्यों कारी बोर्ड बीप जारी जिल्हा ।

श्रम पाणी मार वहाँ मगवान ये वहाँ बाया और मगवान से धावा में बोका-

बदा श्रिम्तित सा हो बन मैं प्यान करते हो मना तुम्बारा जब बढ़ हो गया है जिसकी फिक्ष कर रहे हो ? पवा गाँव में तुमने क्रक बच्चात किया है कि जिन्मरी कोचों थो अपनी जेंद्र भी नहीं देते ? क्या तुओं कियी से भी बारी नहीं होती ?

#### [भगवान्-]

शोव के सारे सक की बकाय विना जलात किने जिला-रहित हो व्यान करता है" जीवन के सभी कीम और काकव की कार, है अगच कोचों के जिल ! अप्रीय-रहित ही प्याय करता है ॥ [ मार--- ] जिसे कहते हैं 'यह मेरा है', जो कहते हैं 'यह मेरा है', यहाँ यदि तमारा मन छना है, तो श्रमण ! मुहम्मे तेरा छुटकारा नहीं ॥

[ भगवान — ] जिसे लोग कहते हैं वह मेरा नहीं है, जो कहते हैं वह में नहीं हूँ,

जिसे स्रोग कहते हैं वह मेरा नहीं हैं, जो कहते हैं वह से नहीं | रेपापी ! ऐसा जान, गेरे मार्ग को भी तु नहीं देख सकेगा ॥ [ मार---]

भर- । यदि तुम्हें मार्ग का पता स्था गया है, क्षेम और अधर-पद-गामी, तो उस पर अजेला ही जाओ, दूभरों को क्यों सिखाते हो ॥

[ अरावास्— ]
कोत पूजते हैं कि सृत्यु के राज्य का पार कहाँ है,
जो उस पार जाने को उत्सुक हैं,
उनसे पूछा जाकर मैं धताता हूँ
कि द्वापियों का विकल्प अन्त कहाँ है ॥

[ मार—] भन्ते। मिल मां करते के पास ही एक बावजी हो, लिपमें एक केवज़ा रहता ही। सब, अन्ते। फिल में पास हो एक बावजी हो, लिपमें एक केवज़ा रहता ही। सब, कुछ ठवके या जतिवर्षों उस गाँप या करने से निकल कर उस बावजी के पास वार्षों। जाकर उस केवज़े को पासी सिंकाल जमीन पर रख हैं। बहु केवज़ा जिपमें पर मों ने उपर ही उसे से जबके या जबकियाँ

रुकड़ी या प्रथर से पीटें और उसके अंग-प्रत्यंग को छोड़ दें। और, तब वह कैकड़ा फिर भी पानी

में बैठने से छाचार हो जाय। भन्ते ! डीज बेसे ही, जो मेरे अच्छे छहे पुष्ट अग थे सभी को भगवान् ने तोड् दिया, मरोड् दिया, नष्ट कर दिया। भन्ते ! अब में भगवान् में दोय निकाजने के किये आने में असमर्य हो गया।

त्य, पापी सार भगवान् के सम्मुख यह करणा-पूर्ण गाया बोला--चर्या जैसे उजले पत्यर को देख.

चचा जार उजार प्रवाद का दूख, कोष्टा झारा, यह कुछ कोसल चीज होती, बही स्वादबाळी होती ॥ बहुँ कोई स्वाद नहीं पा, कीका वह बचा , परसर पर सपटने बाल कीए जीता, गीतम को और में भाग वार्ड ॥

त्रव पापी मार भगपान् के सम्भुख यह करूणापूर्ण गाया कह वहाँ से हट कर अगपान् के पास ही तसीन पर पाकची रूपा बैठ गया। खुप हो, गूँग रहे, कंघा गिरा, यह जमीन को तिनके से खोडने कुगा।

§ ५, मारदुदिता सुस ( ४. ३. ५ )

राय, लुष्णा, अरति और रशा सार की छक्कियाँ बहाँ पापी मार था बहाँ कोईं। आकर पापी सार को गाया में बीर्जी---- सात ! किश्व वर्षों हैं ? किस पुरुष के विषय में शोक कर रहे हैं ? इस उसे राग के आक में जैसे जंगरी दावी को

वसा कर के भार्नेगी; वह आप के धदा में रहेगा !!

[ मार- ]

संसार में अर्थत पुदा राग से नहीं कार्य का सकते हैं; सार के राज्य से को निकक गये इसकिये में बृहाना चिन्तित हूँ ॥

तब तृष्णा अरसि और रुगा गर की कड़कियाँ कहाँ मगवान वे वहाँ बाई। ध्यकर अगवान से बोडी—कमन ! बार के बरलों की सेवा करूँथी :—किन्तु, मगवान ने ध्यान नहीं दिना व्यॉकि से बराबि के सप हो बार्न से कनकर विसक्ति को या खाने थे।

तब पुच्या चरति चीर रणा सार की कहकियों ने युक्त और हरकर पैसी अन्याप्य की—पुक्रों की चाह तरह तरह की होती हैं। तो हम कोग एक एक सी क्रमारियों के कप वर कें।

इस्ते भी मतवात् वे भ्यान नहीं दिया क्योंकि वे उपाधियों के स्वव हो काने से ज्युचर विद्वारित को पा कुके ने ।

तम सार की काकियों ने एक भीर इह कर ऐसी सन्त्रण की—पुरुरों की बाह तरह तरह की होती है। तो हम कोच पुष्ट एक ही। एक बार सस्त्र कर पुत्रजे वाकी कियों के कर हो। बार सस्त्र कर पुष्टे कार्य कियों के कर बीच कर बावी कियों के कर करी। यह बावी दिनों के करा कर हैं।

कसे भी भगवान् ने प्यान नहीं दिवा क्योंकि वे क्याबियों के क्या दो बादे से श्रृत्यर विसुधि

को पाञ्चके ने।

तप तुष्या, मरति और रता सार की क्वकिनों ने एक और इर कर कहा--इस कोगों के रिजा ने क्षेत्र की करा का:--

संसार में अबंद हुन शाग से नहीं कार्य का सकते हैं।

सार के राज्य से को विकक गये इसकिये मैं इतना विशिक्ष हूँ ह

यदि इस कोग किसी समस्य वा नाझन के पांच इस तरह कार्यों को बीतराग नहीं हुका है त रुपक्षे कारी कर कारी था हुँद से उपन क्षेत्र बसन हो जाता वा शासक हो बाता वा सत्त्राका हो बाता। बैसे करी वार्स सुक और छुड़ों बाती हैं वैसे दी वह सुक्ष और छुड़ों कारा।

यस शुच्या अरुति और रना। आर की कव्किमाँ वहाँ भगवान् थे वहाँ आई। आकर एक और कपी हो गई।

पुत्र और कड़ी ही तुच्छा सार की कड़की मगवान से गावा में बोकी-

वधा विक्तित-सा हो जब में ज्वान करते हो क्या तुम्हारा जब नक्ष हो गया है जिसकी फिक्र कर रहे हो है

क्या गाँव में सुमने कुछ अत्यास किया है, कि विससी कोंगों को अपनी मेंड भी वहाँ देते ?

क्या सुनई किसी से भी दोस्ती नहीं होती ?

[मगदाम्—]

परमार्थे की मासि, ब्रह्म की बालित सुमाने कीर बहुकाने वाके पहार्कों पर विश्रय पा करेका प्याद करते हुए शुक्ष का अबुसाव करता हूँ, इती से छोगों के साथ मिछतां-जुङता नहीं हैं, मुझे किसी से भी दोस्ती नहीं, इनाती हैं ॥ तब, अरति, भार की छड़कों भगवान से गाथा में घोड़ी— ' भिक्क ससार में कैसे विहार करता हैं? पाँच याड़ों को पार कर छड़ें को कैसे पार करता है ? कैसे प्यान के अध्यासी को काम सज़ायें,

पकड़ नहीं सकतीं, बाहर ही बाहर रहती हैं ?

[भगवान्---]

तित्तकी काया शान्त हो गई है, चित्त विश्वक हो गया है, तित्त क्षरकार नहीं, स्प्रतिमाद, विना घर का, धर्म को जान अधितक ध्यान रुगाने वाला, म कोच करता है, न सन मारता है । मिशु चेत ही रतार में विहार करता है, प्राप्त में विहार करता है, प्राप्त को पार करता है, चैस को को काम सर्वा है । भी को को को स्पर्त की पार कर को की पार करता है, चैस खाता में की काम सर्वा है, चैसे खात के अध्यासी को काम सर्वार्य,

पकड महीं सकती, याहर ही बाहर रहती हैं॥ तब, सार की कड़की रगा भी अगवाय से गाया में योखी— मृष्णा को काट गण और सच वाला जाता है, और भी बहुत प्राणी जायेंगे, यह प्रशक्त बहुत से लोगों को, सुखु-राक से खुड़ा कर पार ले जायगा॥ खुदु-राक से खुड़ा कर पार ले जायगा॥

तयागत (=बुद्ध) अपने सद्धर्म से, धर्म से हे जाये जाने वाले,

शानियों को बाह कैसी।

तब दुष्या, अरति जीर रगा, सार की छड़कियाँ जहाँ पापी सार था घहाँ जा।

पापी सार ने उन कीगों को आती देखा देखकर वह साथा में बोका—

मूर्ल । कमल की नाल से पर्यंत को सथना चाहा, पहाद को नल से लोबना, छोटे को दाँद से चपाना, चहान को शिर से टकराना, पाताल का कान खोजना, या जुल के ट्वेंट को जाती से निकाना चाहा हार मान, गीतम को छोड़ चले लाखी ॥

षटक सटक से शाई, एच्चा, अरित और रगा, हवा जैसे रूई के फाटे को (विखेर दे)-चुन्द ने उन्हें जैसे, विखेर दिया॥

रुतीय वर्ग समाप्त ।

# पाँचवाँ परिच्छेद

# ५ मिश्चणी-संयुत्त

### **६१ आलविका सच** (५१)

#### काम भोग तीर जैसे हैं

पेसा मैंने सुवा।

एक समय मगवान् भावस्ती में भनायधिविश्वक के जेतयन बाराम में विहार करते थे।

तय आछविका मिशुजी धुनह में पहण भीर पात्र चीवर के आवश्ती में मिशादर के किये पैडी ! मिशादर से कीट मीजन करने के यथरान्त्र एकस्त्र-सेवन के किये वहीं आव्यक वन है वहीं हुन्दी गई !

तव पापी मार साखिवका मिछुणी को करा केंगा और रॉवे कहे कर हैने, और साध्य को ठोव देने की इच्छा से कहाँ आछिपका मिछुणी की वहाँ भागा। काकर बाख-विका मिछुणी से गावा में बोका—

> संसार से सुरकारा नहीं है एकाम्त-सेवच से क्या काचवा ! सांसारिक कामों का मीग करो थीड़े कहीं पड़तावा न पढ़े स

तत आक्रयिका मिश्रणी के अन में यह हुआ—कीव यह अबुष्य था जमतुष्य गावा में बीक रहा है ?

तब साक्ष्मिका सिञ्चणी के सन में यह हुव्य---यह पाणी सार सुन्ने करा कंपा और रॉम्से खर्ने कर देने और सान्ति संगकर देने की इच्छा से गाया बोक पहा है।

त्रच माळविका मिमुची 'यह पापी मार है' बाव गाया में बोकी— संसार से में बरकारा होता है मका से मैंबे बसे पा किया है.

संसार स जा सुरक्षा हाता है प्रसा स मब जम पा क्वा है, प्रमान पुरुषों के मिल्ल पाणी ! तुम तस पद को नहीं कालते हैं सोसारिक काम तीर मान्ने जैसे हैं को रक्तमों की सूरते रहते हैं जिसे तम काम गीण कारते ही कारते भीरी योच जारी रही ह

सब पापी मार्च आस्थिकः मिश्चणी नै सुर्वे पश्चम किया" सनस बुधीवन मीर किस हो वहीं अन्यवीत हो गया ।

### <sup>5</sup> २ सोगासुच (५२)

#### स्री-माय क्या बरेगा !

भावस्त्री हैं।

ताव मोहर मिश्रुमी मुबद में बहुव भीर पाप श्रीवर के आवश्ती में सिश्तरम के किव पैटी। मिखरम से कीट, मीजब कर कैवें के बाद दिव के विदार के किए कहीं कर अवस है वहीं वसी गई। अन्यवन में पैर वह बुक के मीचे दिव के जिला के किए प्रेट गारी।

गव वादी मार सामा शिक्षणों को वहां करेंग और तीमर लग्ने कर देवे, लगा समापि से गिरा देवे के विचार में वहाँ सोमा शिक्षणों भी वहाँ जावा । जाकर सोमा शिक्षणों से सामा में बोका:--- ऋषि कोग जिस पद को पाते हैं उसका पाना वड़ा कठिन है, हो अंगुरू भर प्रज्ञावारी खियाँ उसे नहीं पा सकती हैं॥

तय, सोमा भिक्षणी के मन में यह हुआ—कोन यह मनुष्य या अमनुष्य गाथा में बोल रहा है ? तय, सोमा भिक्षणी के मन में यह हुआ—यह पाणी भार सुझे दरा, केंगा और रागटे सहे कर देने तथा समाधि से गिरा देने के विचार से गाथा बोल रहा है।

तप, सोमा भिक्षुणी "यह पापी मार है" जान गाथा में घोठी---जब फित समाहित हो जाता है, छान उपस्थित रहता है, भीर धर्मे का पूर्णत. साक्षात्कार हो जाता है, जब खी-आब क्या करेगा ! जिस किसी को पेसा वित्तार होता है--मैं शी हैं, अथवा प्रस्प हैं.

भथवा कुछ और ही, उसी से मार ऐसा कह सकता है ॥

त्तव, पार्ची मार "सोप्रा निश्चणी ने सुझे पहचान किया" समझ, हु खित और खिल ही वहीं क्षेत्रकार्यात हो गया।

### § ३. किसागौतमी सुत्त (५३)

#### अक्षामान्धकार का नाडा

श्राचस्ती में ।

तव, छ शा-गौतमी निक्षुणी खुवह में पहन और पात्र चीवर छे श्रावस्ती में निक्षाटन के किये पैडी।

भिक्षाटन से छीट, भोजन कर लेने के बाद दिन के विदार के लिए जहाँ अल्झवन है वहाँ चळी गई। अल्झवेन में पैठ, एक बुक्ष के नीचे दिन के विदार के लिये बैठ गई।

सत्र, पापी सार समाधि से गिरा देने के विश्वाद से गाथा में योखा-पुत्र-सूखु के क्षोक में पदी जैसे, अकेली, रोनी सुरत लिये ,

वन में अकेली पैठ कर क्या किसी पुरुप की खोज में हैं ?

तम क्रशा-गौतमी मिछुणी के मन में यह हुंजा—' पापी मार 'गाया योल रहा है। तब क्रशा-गौतमी में "यह पापी मार है" जान गाया में उत्तर विद्या—

दुन-सन्तु के शोक से में कपर वठ जुड़ी हूं, पुरुप की खोन भी नाली रही, न सोक करता हूं, ग रीती हूं, जाड़त ! तुनसे भी अब वर नहीं ॥ सन्तर में स्वाद केना हूट जुड़ा, अञ्चनाधकर हस दिया गया, सन्दु की सेना की जीत, आवस-एरिल हो विदार करती हूँ॥

त्तव पापी भार "कृता-गोतमी शिक्षुणी ने मुझे पदचान किया" समझ, तु सित और सिक्स हो वहीं अन्तर्यान हो सथा।

### § ४, विजया सुत्त (५.४)

#### काम-तथ्याकानाञ

आवस्ती में। तम विजया मिश्चणी [पूर्वधत् ] दिन के विद्यार के किये बैठ गईं। तब पापी भार गाया में बोटा —

कम उम्र धाली हुम सुन्दरी हो, और में एक नया कुमार हूँ,

पदाहिक साम से भागो, इस मीन बदार्थे ॥ वर विक्रमा मिसवी में "यह पापी मार है जान पाया में उत्तर विवास—

> खुभावने क्य राज्य रस गण्य और स्पर्ध तुम्बरे ही किये जोड़ होती हूँ मार ! छोड़े उसकी व्यावस्थकता गर्दी इस ग्वेंगती से मरे बारि से प्रमाहर कार वह हो बाने गाके से, मान कार है कुल कारती है की काम-तुक्का मिट गई है। वो कुल स्टेंगह या कारता-दोक्क का ( देवला ) है

भीर को ज्वान की साम्य धवन्याएँ हैं सभी में भेरा धवाबान्यकार नष्ट हो एका है । तक पापी मार "पिकवा मिश्रुणों ये शुक्ते पहचान किया" समझ दुर्शकत और जिस्र हो वहीं कन्तवांव हो गया ।

### हु**५ स्पाहबण्या सुत्त** (५५)

#### रत्पस्त्रवर्णं की ऋविसता

भावस्ती में।

प्ता उत्पक्षवर्षी सिधुनी अध्यक्षण में किसी धुपुष्पित साक वृक्ष के बीचे सदी हो गई। तब पापी सार शासा में होका:—

मिल्लि | प्रपुष्पित साथ बुध के गीचे तुम करेजी सही हो तुम्हारे सेसा सीम्बर्ध वृस्ता वहीं है को वहीं आई हो गारान | बरमासी से तुरुद्ध वर नहीं कमता ?

तम सरप्रस्थाती सिक्षानी ने "यह पापी मार है" कल गाया में बचर विदाः---

बैसे यदि सी इकार भी बदमान को कार्ने तो में वहीं वर सकती भेरा एक रीजा भी वहीं दिख सकता । कड़ेकी रह कर भी मार ! हुक से मुझे भन वहीं ॥ कमी में अन्तर्याय हो वा सकती हैं, हम्मारे पेट में सुस का सकती हैं, बौकों के बीच कड़ी रहते पर भी हम मुझे वहीं देख सकते ॥ विश्व में बगीमूट हो कार्ने पर कार्य्यमाँ भी स्वर्ध मार हो वाती हैं सि सनी मनवार्ष से मुख्य हैं, बादुष्य ! हमसे में वहीं करती हैं सि सनी मनवार्ष से मुख्य हैं, बादुष्य ! हमसे में वहीं करती हैं

तक पापी मार 'करपळवर्षा भिक्कणी वे सुष्ठे पदचान किया' समझ हु।किछ बीर क्रिक्ट हो वहीं कन्यवाँव हो गया !

# <sup>§</sup>६ पाला सुत्त (५६)

#### जग्म-प्रहण के दोप

भावस्ती में। यब बाक्षा मिश्चनी दिन के विदार के किने बैठ गई।

यत पापी मार वर्षों कास्ता मिश्रुणी वी वर्षों आया । आकर व्यास्ता शिक्षुणी से वर्षावाः— भिक्षान । तुम्में नवा नदीं क्ष्मता है ? िमार ]

आयस । सब्ने जन्म प्रहण करना नहीं रुचता है । त्रस्टें जन्म श्रहण करना क्यों नहीं रुचता ?

जन्म लेकर कामी का भीग नरता है।

तम्हे यह किसने सिखा दिया कि 🗝 हे भिश्लणि ! तुम्हें जन्म-प्रहण करना मत रुचे ?

चिला भिक्षणी—]

जन्म केकर मरना होता है, जन्म लेकर दू स देखता है, घाँचा जाता, मारा जाना, कष्ट भुगतना, इसी में जनम नहीं रुचता है ॥ ब्रज में धर्म का उपदेश दिया, जन्म-प्रहण से छूटने की, सभी इ'ख के बहाण के लिये, उन्हीं ने सुझे सचा मार्ग दिखाया ॥ को जीव कर के फेर में पड़े हैं, जो अक्टप के अधिएत में,

निरोध (=निर्वाण ) की न जानते हुये, पुनर्जन्म छेने धाले ॥ स्व. पापी मार "चाला भिक्षणी ने मुझे पहचान लिया" समझ दु खित और खिल हो वहीं अन्तर्धान ही गया।

### 🖇 ७. उपचाला सत्त ( ५. ७ )

लोफ सलग-घधक रहा है

श्राचस्ती में।

सय, उपचाला सिक्षणी दिन के विहार के छिए येठ गई। तव, पापी सार । उपन्याला मिश्रुणी से यह बीला -- सिश्रुणि । तुस कहाँ उत्पन्न होना चाहती है ?

आवस ! में कहीं भी उरपन्न होना नहीं चाहती।

िमॉर--- }

प्यास्त्रिहा, और याम, और त्यापत ( नामक देव-छोन के ) देवता. निर्माणरति छोक के देवता, घडावर्ती छोक के देवता हैं. वहाँ चित्त लगाओ, उसका सुपा अनुमध कर सकोगी ॥

ि **उपवा**ला भिक्षणी— ो

भ्रयस्थित, और याम, और तुपित लोक के देवता. निर्माणरित छोक के देवता, वशवर्ती छोक के जो देवता वे सभी काम के बन्धन से वैंचे हैं, फिर भी मार के वश में आते हैं॥ सारा लोक सुलग रहा है, सारा लोक घघक रहा है, सारा छोक छहर रहा है, सारा छोक काँप रहा है ॥ को कम्पित नहीं होता, जो चलायमान नहीं है, ससारी छोगों की जहाँ पहुँच नहीं है, जहाँ मार की भी गति नहीं होती. वहाँ मेरा भन रुगा है ॥

त्रय, पापी मार "उपचाला भिक्षाणी ने सुझे पहचान क्षिया" समग्र हू खित और खिन्न हो वहीं असार्थान हो गया।

### <sup>§</sup> ८ सीसप्रचाला सत्त (५८) वद धासन में रुखि

धायसी में।

तव इतिर्पोपसाद्धा भिक्षणी वित के विदार के किय बैठ गई। तब पापी मार श्रीगींपशाका मिश्रणी से यह योका---

भिक्षणि । तम्ब्रे कीन सम्प्रताप रुचता है १

भावस । मही किसी का भी सम्प्रदाय वहीं बचता है। [ **मार—** ]

किस किए वित सुका किया है ? निकाशी-सा साध्यम हो रही हैं। कोई पारवताय तम्बें भहीं रुवताः क्या सहकती किरती है ?

ि शीपीपचाका मिस्रणी--( बर्म से ) वाहर रहवे बाके सम्प्रदाय के होते हैं. भारत-राष्ट्र में जिलकी सजा बोली है।

उक्टे यह महे स्वीकार वहीं हैं से धार्य के कालने जाके नहीं हैं ह

गाकर-इक में धवतार किये हैं शक जिसकी बरायरी का कोई प्रकृप नहीं

सर्व-विजयी जार जिए. को बदर्री भी प्रशक्तित करी होते

सर्वेया गुळ, पूर्व स्थतना परम हानी सब हुछ बानते हैं समी कर्मी के झन की पास

बपावियों के क्षय हो जाने से विश्वका बही मगवान मेरे गुढ़ हैं

बन्धीं का शासन सभे दक्ता है ह श्रम पापी मार 'द्योपोंपसारत' मिश्रुमी ने शुक्षे पहच्चन क्रिमा" समझ हुईस्रत स्टीर क्रिन्न हो करी सन्तर्भात हो गया ।

### ६९ सेठा सच (५९)

द्वार से बल्पन्ति और क्रिरोध

भावस्ती में ।

सब दीसा भिद्राणी - दिन क बिदार क किये बैठ गई । त्रव पानी माद बीका मिश्रुणी की दश - वैमें की बच्छा से आशा में बोस्ना---

किमने इस पुनके की खड़ा किया पुतके को सिरजने बाका कीन है ? कहाँ से वह पुराका पेदा हुआ। कहाँ इस प्रशक्त का निरीज दो कामा है ? सब राज्य भिक्षाची में "यह पापी मार है" बाब ताचा में उत्तर दिया-

म की यह अनका स्थर्व रावा ही गवा है म का इस बंबान को दूसरे किसी में क्या दिया है

देश के होने में हो गया है

देन के दह बाने से दक अना (बनिरीय हो बाता ) है ह

११३

जैसे किसी धींग की, स्रोत में रोप टेने से पांचा उस आता है, पूची का रस, और तरी, दोनों को पाकर, बेसे ही, ७ फ़ल्म, चालु और छ. आयतनों के, हैता के मोने से हो नाम है.

उस हेतु के हरू जाने से निरोध हो जाता है॥

तम पापी मार ''दीला बिश्रुणी ने सुद्दी पहचान किया" समझ, दु.खित और सिन्न होकर वहीं भन्तर्भात हो गया।

§ १०. विजिशा सुत्त (५. १०)

शावस्त्री में ।

तव बजा भिक्षणी सुबह में पहन और पात्र चीवर हे आधस्ती में भिक्षाटन है लिये पैठी।

निक्षाटन से डीट, भोजन कर खुकने के धाद जहाँ अन्ध्वस है, वहाँ दिन के बिहार के लिये चडी गईं। अन्धवन में पैठ, एक युक्ष के नीचे दिन के निहार के लिये बेठ गईं।

त्तर पापी मार बद्धा निक्षुणी को बहर, केंद्रा ओर रागटे खड़े कर देने, तथा समाधि से गिरा देने की इच्छा से जहाँ बझा भिक्षणी थी बहाँ आया । आकर बख़ा भिक्षणी से गावा में बोला —

फिसने इस प्राणी को बनाया है, प्राणी का बनाने वाला कहाँ है ? फहाँ से प्राणी पैदा हो आता है, कहाँ प्राणी का निरोध हो जाता है ?

सन बद्धा निक्षुणी के मन में यह हुआ-कीन वह मनुष्य या अमनुष्य गाया में गेल रहा है ? सन बद्धा निक्षुणी के मन में यह हुआ-विह पापी मार मुझे डरा, कॅपा और रेगटे खदे कर देने, रुपा समाधि से गिरा हैनेकी इच्छा से गाया में बोल रहा है।

तथ बख़ा भिक्षणी में "बह पार्धा मार है" आन, गाथा में उत्तर दिया —

"आणी" नया योक रहे हो, सार "ब्रुस निष्णा आत्म-हिट से पद्दे हो, यह चो केवल व्यक्कार का शुक्त गर है, "प्राणी" "चयार्थ से कोई नहीं है ॥ नैसे अवयवाँ को मिला देने से, "रवा" ऐसा शब्द जाना वाता है, तेसे ही, (पॉच) स्कन्यों के मिलाने से, कोई 'पाणी' समझ किया जाता है ॥ हु स हो उत्सव होता है, हु स हो उत्सव होता है, हु स को लोद और कुछ नहीं पैशा होता है, हु स को लोद और कुछ नहीं पैशा होता है,

हु ख को छोद और विसी का निरोध भी तहीं होता है ■ तब पापी मार ''चुज़ा भिछुणी ने सुझे पहचान छिया'' समक्र वही अन्तर्थान हो सम्।।

भिक्षणी-संयुत्त समाप्त

पाँच--स्त्प, वेदना, सशा, सरकार, और विशान । † आत्मा ।

# छठाँ परिच्छेद

# ६ ब्रह्म-सयुत्त

# पहला भाग

### प्रथम वर्ग

### ६१ आयाचन सुच (६११)

पेसा मैंने सुना।

पुरू समय नगवान् उद्योशः में बसी नुस्त ही बुद्दस्य काम कर नेरुखुरा नदी के तीर पर अज पाछ विमोध के मीचे विदार करते थे।

ठव प्रकार में ज्यान करते समायात् के सन में यह वितक तक्षा— फीने गरमीर दुर्वसन दुर होन स्नोत उत्तम तक से जामान्य नियुक्त तथा परिवर्ती हुता बावने योग्य दूस धर्म की पा किया। यह बनता काम-नृष्या में रामा करने वाकी काम-त्य जामा में मसख है। काम में रामा करने वाकी इस करता के किये यह सामे शंकारों का समस्य सामी उत्तरित्त यह वृद्ध सेनीय है। और वह मी दुर्दर्स-गीम है के कि यह सामे शंकारों का समस्य सामी उत्तरित्त सं सुरिक, तृष्य-क्षन विरास (क्षुक-निरोध) बाका निर्वाण। यह में वर्मीयदेस भी कहाँ और दूसरे करसको न समझ पार्वे तो मेरे किये यह तररहरू और उककीक हो होती। "

उसी समय मगवान को पहले कभी न सुनी यह बद्भात गायाचे शुद्ध पड़ी---

'बहु बर्म पाचा कह हा बुसका व बुक प्रकारता। बहि राग-देप-प्रकार को है सुक्त हसका बापवा ॥ गंभीर कस्त्री पारवुक बुर्वहर्ष सुक्म प्रवीण का। सम्मीत-कारित रागरत हारा व संभव वेदानर त"

भगवात् के ऐहा समझने के कारण वज्ञज्ञ जिल धर्म प्रवार की और न सुककर करन-प्राप्तका की लीट सुक गया। तर स्वहुरुपशि-नक्षा वे स्थवन्त् के जिल की बात को बावकर इनाव दिया— 'कीक बारा हो बायपार रें है कव तथागत कार्रण, सम्बद्ध का जिल धर्म-प्रवार की जीट न सुक

धरुप इरस्कता ( #डदासीनता ) की ओर शुक्र जाने ।"

मगब में मक्षित्र चित्तवाओं से चिन्तित

बहुके नारक पर्स पंता एका ।

(अय ) अस्त का द्वार सुलंग गया,
दिमल (पुरप ) से जाने गये हुत धर्म को सुनें ॥
जेसे केंक पर्वत के शिल्सर पर खड़ा (पुरुप ),
बारों और बनता को रेखें।
उसी तराह, हे सुरोध । है सर्वत्र नेत्र बाले ।
धर्म-स्थी महरू पर चह सब बनता को रेखी ॥
हे शोक रिहत । होनेकाकुल बन्याबरा से पीटित अनता को रेखो,
उड़ो बीर । हे संसमनिताद । हे सार्ववाह । उन्हण-कण ।
बारा में धिन्यों, अर्म-प्रवार करों,
अर्मना । जानने वाले भी निहींगे ॥

उनके छिये अमृत का हार सुरू गया, जो कानवारे हैं, बे ( उसे सुनने के लिए ) श्रवा सोवं<sup>र</sup>, हें महा। पीदा का स्थारत कर, सैंने महार्या में निपुण\_उत्तम, धर्म को नहीं कहा<sup>\*</sup>॥

सब ब्रह्मर-महरपति—"अगवान् ने धर्मोषदेश के किये भेरी पात सान की''—पह जान भगवान् को अभिवादन और प्रदक्षिण कर वहीं अन्तर्धान हो गया ।

### § २. गारव सुत्त (६ १.२)

ऐसा सैंने सुना ।

पक समय मनवान् अभी तुरत ही जुन्दा काभ कर उरुवेक्ता में नेरब्जना नहीं के तीर पर सजपाल निमोध के नीचे विहार करते थे।

त्तव प्कान्त में ध्यान ध्नते समावान् के बिच में ऐसा विवर्क उठा—विचा किसी हो ज्येष्ठ माने और उसके प्रति गीरक रखते विद्वार करना हु खद है। ये किस अगण या याह्मण को ज्येष्ठ मान, उसका सत्कार और गीरव करते विद्वार कहरें ?

त्तव समाधान् के मन में बह हुआ—अवरिष्ण हांक की पूर्ति के किये ही किसी दूसरे अमण या मास्त्रण को त्येष्ट मान उसका सल्कार और भीरच करते बिहार करना चाहिये 1 किस्तु, में—टेब्लाओं के साथ, मार के साथ, माहा के साथ, हम सामूर्ण कोंक में, तथा अमल आहला देव और मसुष्पवार्टी

<sup>ि</sup>बद्धाः छोडे = कान दे≔श्रद्धापूर्वक सुने I

इस प्रका सें—अपने जंसा किसी बुसरे कामण था बाइनल की बीकसक्त्य प्रश्नी देखता 🕻, जिसे जपना कोड प्राप्त कमें सन्तान कीर बीवल कर्यों !

अपरिपूर्ण समाधि की पूर्ति के किये ही किसी कुछरे समाज या माझल को उनेप्र मान उसका मतकर बार गीरव करते विकार काला बाडिये ।

मारियुर्णे महा की पूर्ति व किये ही ।

११६ ी

अपरिपण विज्ञक्ति की पृति के किये की

व्यविष्यं विद्युष्टि ज्ञान-वर्षन क क्रियं ही किसी वृस्तरे समय या साह्यण को ज्येड सावकर उसका सत्कार और गीरच करते विदार करवा चाहिये। किन्तु से अपने जेसा किसी वृस्तरे असम या साहज को विस्तिक-ज्ञान-कांत्र से सम्बद्ध नहीं उपना हैं विसे अपना जोड़ साल उसे सत्वाद और गीरच कर्ये।

तो भरपा हो कि मैं सपने सबुद्ध पर्म को ही क्येष्ट आब करो सत्कार और गौरव करते किया कर्र

तव सहस्प्रति महा मगवान के विश्व को वान निस्त से बान वीसे---वस्त्राम् पुद्म समेग्री वाँह को पसार दे जीर पसारी बाँह को समेट के वैस दी----ग्रह कोक में अन्तर्वान हो मगवान के सामवे प्राट हमा !

तक सहस्पति जहा अपराणी को एक पत्रचे पर सस्त्रास्त्र सगवाज्य की ओर हाम कोवकर पत्र मोका-

समानत् | पूनी ही बात है। भगवन् | पैनी ही बात है। मन्ते | पूर्व दुग के को कहूँद सम्बक्त सन्दुद हो गमें हैं वे अगवान् भी पर्म को ही अब्द मान को सरकार जीर गारव करते विदार किया करते थे। अपने | सन्दिक करू में को कहूँद सम्बक्त सम्बद्ध हागे वे अगवान् भी पर्म को ही । इस समन, अहूँद सम्बक्त कम्बद्ध सगवान् भी पर्म को ही अपेड साथ कसे सरकार और गीरव करते विदार कों।

सहस्पति प्रका ने वह कहा । वह कहकर किर वह सी कहा ---

धर्मों के उपनेश को शारण करते हुए ॥

मृतकाक में मम्बुद्ध को हो गये अनागत में वो तुब्ध होंगे जीर को कसी समझ है वहुतों के कोड स्थापेकाके। सभी धर्म के मित्र ग्रीरक्ताकि हो विदार करते से धर्मर करते हैं बैसे ही विदार करेंग भी तुब्धों की धारी चाक है। इसकिये परमार्थ की कामना कामेवाक और महत्व की माठांझा रक्तावाके को सब्दर्भ हा गोंग्य करना चारिये

### \$ ३ प्रकादेव राच (६ १ ३)

#### भाइति वक्षा को वहीं मिस्ती

र्णता मेने सुना !

पन समस भागाम् आयस्त्री में सनापापिण्डकः च अनवल काराम में निहार करते थे ।

उस समस किया महाभी का आदार्थ नामक एक पुत्र भगवान् के पास पर से वेदर हो
इस्तित हो पत्रा था ।

त्तव भानुष्याच् प्रह्मपृथ् मे भरेशा व्यान्त में अध्यान आतारी ( अरमेली को त्यामेवासा ) और प्रदिताम दा विदार करने महत्त्ववें के दश अन्तव वरग कम को देखते हो हे सेले स्वयं साम और साक्षात् कर लिया जिसके छिये कुछपुत्र सम्बन्ध् घर से वेचर हो प्रज्ञाजित हो जाते हैं। "ज्ञाति क्षीण । गई, ब्रह्मचर्य-चास सफल हो गया, जो करना या सो कर लिया गया, वत्र बाद के लिये कुछ नहीं रहा ज्ञात लिया । कासुप्तान् ब्रह्मदेव जहेंती से एक हुये ।

तव, आयुष्मान् महादेव झुवह में पहन और पाधचीवर छे आवस्ती में मिक्षाटन के लिये पेंडे आवस्ती में बिना कोई वर छोड़े सिक्षाटन करते वहाँ अपनी माता का वर था वहाँ पहुचे।

उस समय, आयुष्मान् ब्रह्मदेव की माता बाह्मणी प्रतिदिन ब्रह्मा की आहुति है रही थी।

सच, सहरपति शक्का के अन में यह हुआ.—यह आञुप्तान् त्रश्चदेव की मासा बाक्कणी प्रतिदि ब्रह्मा को आङ्गति दे रही है। तो, में चळकर उसे सबेग उपच कर दूँ।

त्तव, सहद्वपति नहा—जैसे कोई वरुवान् पुरुष समेटी वाँह को परार रे और पसारी बाँह के समेट हे वैसे ही—महालोक में अन्सर्वाच हो वालुष्मान् महादेव की माता के वर वे सामने प्रगट हुआ

तन, सहस्यति प्रहा गंकाश में खड़ा हो, आयुष्माच् झहादेख की मादा प्राह्मणी से गायाओं में बोजा---

> दे नाक्षणि । यहाँ से नक्षकोक दूर है, जिसके किये प्रतिविन आहुति दे रही हो, है बहाणि ! जला का तो यह भोजन भी नहीं है. बहा-मार्ग को बिना जाने क्यों महक रही है ॥ है बाह्मणि । यह तुम्हारा (पुत्र) श्रह्मदेख, दपाधियों से ग्रक्त, देवसाओं से भी ददा-बदा. अपनापन छुटा, भिक्षु, जो किसी दूसरे की नहीं पोसता, सम्हारे घर शिक्षा के लिये भागा है ॥ सत्कार के बोग्ब, हु ख-मुक्त, भावितास्ना, मनुष्य भीर देवताओं का पूजा-पान्न, पापा की इस, ससार से जो किस नहीं होता. मान्त हो भिक्षाटन कर रहा है॥ म उसके कुछ पीछे हैं, और न कुछ आगे, मान्त, बुझा हुआ, उत्पात-रहित, इच्छा-रहित. रागी और वीतराग सभी के प्रति जिसने वृण्ड साग दिया है. बड़ी तुम्हारी आहुति अध-पिण्ड की भीग 'लगावे ॥ क्लेश-रहित@, जिसका चित्र डढा हो गया है. टान्स नाग जैसा स्थिरता से चळनेवाला, मिह्न, सुशील, सुविसुक्त चित्त, वहीं तुम्हारी थाहुति जग्र-पिण्ड को मोग छगाये ॥ उसी के प्रति अटछ श्रवा से. ष्टिक्षणा-पात्र के प्रति दक्षिणा का दान कर. भविष्य में सुख देनेजाला पुण्य कर, है ब्राह्मणि । धारा पार किये सुनि को डेसकर ॥

> > ×

उमी के प्रति काक काबा थे जाहाजी वे बृक्षिणा पात्र के प्रति वृक्षिणा का बान किया ! प्रक्रिया में पुत्र बेनेबाका प्रष्य किया सबसागर पार किये सुनि को बेचकर !

### § ४ पक्षम्य स्त (६१४)

#### तक सामा का मान-मर्चन

पैसा मने सुना।

एक समय भगवान आवस्ती में अनाथिपिनिकक के श्रेसधम भाराम में विहार करते हैं।

उस समय बक्त प्रका को ऐसी पाप-गाँव कराज हुई थी—बह शिला है वह प्रवाह यह साहकत है यह अपन्य है वह हुटचेवाका नहीं है यही (अक्तकांक में बना रहता) न पैदा होता है न द्वारा होता है व समाह होता है न वहाँ से अपकर कही तुसरी बगह करना प्रदा्ण करता है और इससे बहुआ हुएसी अफि भी नहीं है।

तन माराबाद यक महा। के मन की बात को अपने विकास वान — जैसे कोई बक्रवान पुष्प समेदी बाँद को पमार दे और पसारी बाँद को सभर के बैसे ही—बतवण में बन्तवांत हो कस असओक में मगर हमें !

बक्द प्रक्रा ने मगवान को तूर सं ही आठे देका। देककर मगवान को यह कहा:---

सारिय | पवारें । सारिय | आपका स्वागत हो । सारिय | विरक्षक पर वहाँ प्रधारने की रूपा की है । सारिय | यह निश्व है और बुक्से वक्कर बुस्सरी हुक्ति सी नहीं है ।

उसके ऐसा कहने पर मगनान् ने बक नक्का को यह क्या---

साफ है वक्त नद्या भविष्या में यह गने हैं। सोक है वक्त नद्या विषया में यह गने हैं। वे भनित्त रहते हुए भी उस नित्य बहा रहे हैं। न्यून रहते हुन्ये भी उसे मुख कहा रहे हैं। अवास्त्य रहते हुने भी उस साहत्य बहा रहे हैं। क्लाव्यावा होते हुन्ये भी उसे ध्यान्य कर रहा है। इंटलनावा होते हुने भी उसे नहीं इंटलेशका बहा रहे हैं। बहुने विश्व विदेश हैं। अने कहा रहे हैं वहाँ पैता मही होते हुने बहुकर भी साहते हुन्तिः (विवाल) के होते हुने बहा रहे हैं कि इससे बहुकर रहा रहा हुन्ति।

> है गीतात ! इस बहुकर (महा) व्याने पुण्य-कर्म से वह व्यक्तिसरको आधिकार से कृष्टे हैं बहुकों के संव्य होगा ही हुग्कों से क्षित्रमा गुल्दि है। इस हो क्षेत्र (हैवर क्ष्मों सिमाता आहे मामों सेक) पुहारत हैं।

#### [भगवान:-]

दे वक | इसकी बाजु भी बोबी ही है करनी नहीं तिस बाजु को तुम करनी समस्य नहें हो । संकड़ों क्षारों और करोड़ों वर्ष की है महा ! तुम्हारी बाजु को में बायशा हूँ ॥ मैं करनाप्ती स्पापना हूँ ॥ जाशि जरा और सोक सर्थ कर तक शवा हूँ ।

#### विक ब्रह्मा---]

मेरा पहला शील ओर वस क्या था ? आप कहें कि में वार्ने ॥

#### [भगवान्—]

जो नुमने बहुत मनुष्या को पानी पिछाया था. जो घाम में रोटाये प्यासे वे यही पहले का तुम्हारा श्रील-वस था, सोकर जागे के ऐसा मझे याद है ॥ जो गंगा के किवारे धार में पडकर. वहें जाते पुरुष को समने बचा दिया था. यही पहले का तुम्हारा शील-वृत था; सौकर जाने के ऐसा मुझे बाट है ॥ गगा की धार में छे जावी जाती नाव को. मनुष्य की लालच से यहें सर्प-राज के द्वारा, यहा वरू लगाकर छुडा दिया या. यहाँ पहले का तुम्हारा शील-वस था, स्रोजर जागे के ऐना मुझे याद है ॥ में क्षण नाम का तुम्हारा शिष्य था, वसे यदा बुद्धिमान् समझा, यहीं पहले का तुन्हारा शील-वत था, सीकर जागे के ऐसा मुझे याद है ॥

[यक ब्रह्मा—]

अरें । आप मेरी इस आयु को जानते हैं,

बैसे ही युद्ध अन्य वातों को भी जानते हैं,
सो यह आप का देशीजमान तेज,

मक्षणोक को प्रकाश से भर दे रहा है।

### § ५. अपरादिहि सुत्त (६१५)

ब्रह्मा की बुरी हिए का नाश

विद्या की बुरी होए श्रायस्ती में।

उस समय किसी ब्रह्मा की ऐसी पाय-रृष्टि उत्पन्न हो गई वी---क़ौरूँ पैसा श्रमण या ब्राह्मण नहीं है तो वहाँ आ सके।

तम, भगवान, [प्रांचत,] उस महालोक में प्रगट दुवे। तब भगवान, उस महा के ऊपर जाकाश में वल्दी कारा जैसे पालपी ख्याकर केट गये। तय, आयुष्माण, महामोद्धन्यायन के यन में वह हुआ—सगवान हस समय कहाँ विदार करते हैं?

त्र अपुष्मान् अहामात्रस्थायन इस महा। इ इयर आकाश में बल्सी भाग जमें पासपी स्मा कर पूरव की भीर सरावान् स कुछ नीच बैठ गये।

तत्र भाषुत्मान् महाकाहरूप कं सब में यह बुआ—अगबान् इस समय कहाँ विहार करते हैं ? [प्रवत्] तथ आयुत्मान् महाकाम्यण दिन्या की भीर भगवान् स कुठ मीचे बैठ गये ! [प्रवत्] तथ आयुत्मान महाकारियन परित्रम की भीर भगवान् से कुठ मीचे बैठ गये ! तथ भाषुत्मान् बाह्यस्त "वचर की भीर मगवान् से कुठ मीचे बैठ गये !

तर भायपान महासीप्रस्तावन उस महार से गाया में बीते।---

शासुम <sup>9</sup> शाज जी तुरद्वारी पद्दी पारमा द्वे जो द्वर्डी पारणा पद्दके थी ? शार हदे दा *जापम पदे-*जड़े विच्य कांड में इस महामंत्र का ?

### ि बह्मा—]

सारिय ! शास मरी बहु पारणा बहीं है जो पहछ थी देग दहा हूँ सदम बहे कह दिग्य लोक में इस सहातेत्र को ! भक्ता लोज से यह क्ष्म कह स्टब्ला है

कि से निज भ र शाधन हैं ॥

तर मासान् उन महा को संवेग दिला महान्यक में कानधान हो जातधान में मार हुने। तक जम महा ने करने एक मार्था को कामन्त्रित किया—शुनो मारिय। यहाँ आयुष्पान् महामाञ्ज्यावन है वहाँ क्रांका । मावर आयुष्पान् महामीहरूयावन से यह कहा—मारिय मीजृत्यायन! क्या कारधान् क दूसर की धावक पेन हो जादियान् और क्यांति हैं जैन आप भीड्स्यायन कार्यण कृष्णिक मनान्य!

"मारिव ! बहुन मच्छा कह वह साथी उस मझा के उत्तर दे जहाँ शासुकाम् महामीहरूना इस से बहाँ गया। जाका महाभाष्ट्रचाम ने बोन्स-मारिव माहक्तायन ! वया स्नावाह के नूमरे भी साबक रंग ही सहिद्यान भी। जारों के सम स अहरूनायन कारवर वरितन या अहरून है

नव आकृत्मान महामाजस्थायन ने क्रमे गांचा में बनर दिया --

त्यान् स्टब्स्य इंग्डिंग्स न क्रिया स्टब्स्स त्यां क्रियाचा की जाननेवाले अस्त्र शास विक्रम की कार्ने अक्षतेवाल

माधानकात भार भरेत

बुक्त संयुक्त भावत है है सब बंद सम्मुख्यान प्रदासाम्बद्धमान के बंद का समित्रमून और अनुसादम कर वहीं वह प्रदानका मा वहीं करा अपन देश महा से बाग ---

भानुष्यान् सहाप्रागृहशानत् हे बहा हि---

र्शन् विकासी का सन्ववतान काहि ब्राह्म विकास कर्ते सन्वदेशान सन्वयं प्रीक्ष कर काहित् बाह्य संस्थान अनुसारि स

बसने पर बरा र करण होका बड़ा न उसके करे का अधिनश्य दिया ह

### § ६, प्रमाद सुत्त (६, १, ६)

### राला की मंदिरत करता

धावस्ती में ।

उस समय भगवान् दिन के विहार के छिये ध्यान छमाये घेटे थे ।

सव, सुद्रामा और शुद्धावास नाम के वो प्रत्येक प्रशा नातों भगवान वे पार्च भागे। आकर एक-एक किनाड से लग गरेर हो गर्थ।

तय, युवाह्मा प्रत्येक श्राम ने शुद्धाचारत प्रत्येक प्रता को यह कार—मारिव ! भगवान् में भरवत करने का यह समय वर्ण है, भगवान् दिन के विद्वार के लिये प्यानका है। हाँ, कराना प्रहारोक वहा दलतिशील थार गुरुवार है। किंगु वहाँ का प्रामा प्रमाद-पूर्ण हो विद्वार करता है। आओ मारिव ! को तदे वह बहालोक है वहाँ चर्च। चरुकत उस प्रता को संचेत दिलाई।

"मारिव ! पट्टत अपज" कर, शुक्तावास प्रत्येक वाला ने सुत्रामा प्रत्येक प्राप्ता को उत्तर दिया ।

तय, वे अमयान के सामने अन्तर्यान हो उस लोक में प्रगट हुये।

इस प्रकार ने इस प्रकार को नूर ही में आते देणा। डेप, उन प्रकारों को यह कहा — है मारियों! आप फहुं से प्रवार को हैं?

मारिप ! हम लोग उन भईन सम्बङ्गस्युद्ध भगवान् के पान से आ रहे हैं । मारिप ! आप भी उन भगवान् पी सेवा को चलेंगे !

ऐसा कहने पर, यह ब्रह्मा उन प्रमाध का अनावर करते हुये, अवने को हजार गुना यहा रूप यमा स्टेट्टा प्रशेष प्रसा से बोटा —-मानिए ! मेरी करिंद के इस प्रसाप को देखते हैं ?

हाँ सारिय । आप की ऋदि के इस बताय की देखता हैं।

सारिय। में ऐसा बाह्रिमान् और प्रताची होते हुये भी कियी वृत्तरे श्रमण या प्राह्मण की सेवा को क्यों वर्ळ ?

तय, सुप्रसा प्रत्येक प्रसा अपने को दो हजार शुना बड़ा रूप यना उस प्रसा से पोला ---मारिप ! मेरी फरिंद्र के इस प्रसाप को देखते कि ?

हाँ मारिप ! आपकी ऋदि के इस प्रताप की देखता है।

सारिप ! इस और आप से सतवात् ऋदि तथा प्रताप से बहुत वहे चहे हैं। सारिप ! आप उन अहार सम्बद्ध सम्बद्ध भगवान् की सेवा को चहेंगे ?

ता, उस प्रक्षा ने सुद्राह्मा प्रत्येक प्रह्मा की गाथा में कहा ---

तीन (ताँ) गरुङ, चार (ताँ) हल, श्रीर पाँच सी वाधिन से युक्त युक्त ध्यामी का, है ब्रह्मा । यह विमान जलते के समान,

उत्तर दिशा में चमक रहा है॥

[स्रवह्मा---]

आपका विमान कैसा भी पर्यो न जले, उत्तर दिशा में पमकते हुये ! रूप के सदीव विनर्धर स्वभाव को देख, उस कारण से पण्डित रूप में रमण नहीं करता !!

तम, सुप्रकारा प्रत्येक ब्रह्मा और शुद्धावास प्रत्येक ब्रह्मा उस ब्रह्मा को सकेग दिला कहाँ ब्रम्सप्रीन होगरी।

धह प्रक्षा दूसरे समय से उन गईत् सम्बक् सम्बद्ध भगवान् की सेवा को गया ।

### 🧏 ७ कोकालिक स्रुच (६१७)

### कोकाब्रिक हे स्टब्स्य में

भागस्त्री हैं।

बस समय भगवान दिन के विद्वार के किये ध्यानस्य बेटे थे।

तक सुप्रका और शुद्धावास नाम के दो प्रत्येक प्रका बहाँ सगवान् से वहाँ कारे। साकर, एक एक किवान से कम को हो गरे।

त्रह सुमद्या प्रत्येष्ठ ज्ञहा कीकार्टिक सिंहु की डहेश्य करके मगवान् हं सम्मुण यह गामा चौकाः—

विदास बाह वहीं है उसका यक्षा कीन पण्डितज्ञन बाह क्यामें की हुच्छा करेगा। विस्तका पार वहीं है उसका पार क्यामें की कोशिश करमेवाके की मैं सुरू और पुरुष कम समझशा हैं ॥

### § ८ तिस्तक सच (६ १ ८)

#### तिस्तक के सम्बद्ध में

स्रावस्ति में ।

वस समय मगवाद दिन के विदार के किये व्यावका केंद्र ने 1

दप सुप्रका भीर शुकाधास पुत्र-एक क्रिवाद से क्या पारे हो शहे ।

यव पुत्रका सलोक त्रका कत्मोरक तिरसक मिश्च के क्रिक्च में मगवान् के सस्युध यह गावा वोका

> विश्वका बाह वहीं है जब्ब कीन हृदिसान् उद्यका वाह कागाना काहेगा ? विश्वका पार नहीं है कसका पार क्यांते की कोशित्व करनेवाड़े को में सुद्र आर प्रका-विद्यान समझता है है

#### §९ तदमस्य (६१९)

### कोकाक्षिक को समझाना

भावस्ती में ।

तथ तुतु प्रत्येक ग्रह्मा रेत पीयने पर भवनी नाम हा आरे जीवचन को नामको हुने कहाँ सोपनिष्य मिश्र मा नहीं भागा। आपन् आपमा में यहा हो बोकाविक तिशु से नोबा—हे कोका कि है! सारियुम भीर ग्रीवृगस्थायन कं ग्रिति चित्र में अञ्चा काली। सारियुम भीर मीक्रप्यायन नहें नाम्ने मिश्र है।

भावुस ! तुम कीव हो ! में तुत्र मन्त्रेक बहार हैं ।

माञ्चल ! पया भगावाम से तमकी ममागाओ होना मही बताया था ! तम भवी कैसे ध्वचे ! देखी, तुम्हारा यह कितमा मपराच है ?

पुरुष के क्रम्य के साथ दी साथ कराके हुँदि हीं एक कुदार पेटा होता है र कराये अपने हीं की कारा करता है जूगों हुरी वार्से बोक्से हुने ॥ को जिल्ह्यीय की वर्षसर करता है या उसकी निन्दा करता है जो प्रशसा-पात्र है, मेंह से वह पाप कमाता है. जल पाप के कारण उसे कभी सख नहीं मिलता ॥ यह स्मीग्य छोटा है. जो जुए में अवना धन सो बैठे.

अक्ट्रे और अपने सब कल के साथ .

सबसे यहा दुर्भाग्य तो यह है जो बुद्ध के प्रति कोई अपराध छगावे ॥ सी, हजार निरर्धछ. छत्तिस और पॉच अर्ब्रद तक. आर्थ पुरुष की निन्दा करने वाका नरक में पकता है, जन्म और सन को प्राप्त से लगा ॥

# § १०. कोकालिक सुच (६ १. १०)

कोकालिक हारा अग्रश्रावकों की निन्दा

श्रावस्ती में !

सब, क्लोकालिक निक्ष जहाँ भगपान थे वहाँ आया और भगवान का अभियादन कर एक और बैठ गया । एक और बैठ कोकालिक भिक्ष ने भगवान को कहा-भन्ते ! सारियुत्र और मौदगल्यायन

पापेच्छ हैं. पाप-पूर्ण इच्छाओं के बश में पडे हैं।

इस पर मगधान ने कोकालिक मिश्रु को कहा-पेसी बात मत कहना कोकालिक। पेसी बात मत कहना कोकाछिक । कोकाछिक । सारिएज और मौदगढ़यायम के प्रति मन में अहा छाओ । सारिपत्र और सीद्रक्यायन घडे अच्छे हैं।

दूसरी यार भी कोकालिक मिश्न ने भगवान् को कहा-भन्ते । भगवान् के प्रति सुझे वही श्रद्धा और घड़ा विश्वास है, किंतु, सारिपुत्र और मीद्गल्यायन पापेच्छ हैं, पाप-पूर्ण इच्छाओं के बदा में पढ़े हैं। वृसरी बार भी भगवान ने कीकालिक भिन्न को कहा- सारिएन और मीदगल्यायन बले

भच्छे हैं।

त्तीसरी बार भी। तव, कोकालिक भिक्ष अलन से दर, भगवान को प्रणास और प्रदक्षिणा करके चला गया । वहाँ से आने के बाद ही, कोकालिक भिक्ष के सारे शरीर में सरसों भर के फोडे उठ गये।

सरसों भर के हो मूँग भर के हो गये, सटर भर के हो गये, कोलहि भर के हो गये. देर भर के हो गये. गाँवला भर के हो गये. छोटे बेल भर के हो गये, बेल भर के हो गये, बेल भर के हो पूछ गये-पीय और छह की धार चलने छंगी।

उसी से कोकालिक भिक्ष की मृत्यु हो गई। मर कर कोकालिक मिल्लु पद्मा नामक नरक में उत्पन्न हजा-सारिपुत्र भीर मौद्रिख्यायन के प्रति तुरे मार्च मन में छाने के कारण !

तय, सहस्पति मझा रात शीवने पर अपनी चमक से सारे जैतवन को चमका जहाँ भगवान थे वहाँ आया, और भगवान का अभिवादन कर एक और खडा हो सवा।

एक जोर खडा हो, सहस्रपति शक्षा ने भगवान् को यह कहा — सन्ते ! कोकालिक भिक्ष की मृखु हो गई। भन्ते ! सारिपुत्र और मौद्रस्यायन के प्रति मन में गुरे माव छाने के कारण कोकालिक भिन्न भर कर पद्म गरक में उत्पन्न हुआ है।

सहस्मिति प्रका ने यह कहा। यह कहा, अगवान् की श्रीअवादन और प्रवृक्तिला कर वहीं अन्तर्भात हो गया।

कत रात के बीसमें पर भगवान में भिक्षमों का कासनियत किया—भिक्षमों ! इस रात की सहस्पति महा। । असे अधिवादन और महिला का कई अक्तबीन हो गया ।

यब किसी मिछु ने भगवान को यह कहा--भन्ते | पदा नरक में किसभी छम्बी आमु होती है !

मिलु ! यदा नरेक की आयु बड़ी करनी होती है; यह कहा नहीं का सकता है कि इतने साम या इतके सी साक या देवने हवार साक या देवने अच्छ साक ।

मन्ते ! यसकी कोई बचना की का सकती है ?

भगवात बोछे-की का सकती है।

मिछं । कोशस्य के नाप से चीस कारी तिक का कोई भार हो । तब कोई पुरुष सी सात हवार साक पर उसमें से एक-एक तिक का बाल पिकाक के । मिछं । यो कीशस्य के नाप से बीस तारी तिक का बह भार हम कम से जबनी पट कर करना हो जाना रहने से जी एक अवस्था निकास कर पर किया है। यो सा निरस्त्र नरक कर पर होता है। यो सा अवस्था नरक कर पर अवस्था नरक होता है। बीस अवस्था नरक कर पर अवस्था नरक होता है। बीस अस्था नरक कर पर अवस्था नरक होता है। बीस अस्था नरक कर पर अस्था नरक होता है। बीस अस्था नरक कर पर अस्था नरक होता है। बीस अस्था नरक कर पर पर होता है। बीस अस्था नरक को पर होता है। बीस अस्था नरक होता है। बीस त्या स्वाप कर कर पर पर स्वाप कर होता है। बीस त्या स्वाप कर स्वाप कर स्वाप कर स्वाप कर स्वाप होता है। बीस स्वाप कर स्वाप होता है। बीस स्वाप कर स्वाप कर स्वाप कर स्वाप कर स्वाप कर स्वाप है। से स्वाप कर स्वाप है। से स्वाप कर स्वप कर स्वाप कर स्

मगनाम् वे वह कहा । इतना कहरूर तुद्ध और भी बोके:---

पुष्प के बन्म के साथ ही साथ वसके श्रीद में पुरू कुछार पैदा होता है । क्ससे अपने भी को बादा बरता है मूर्ज हरी वार्ते बोक्ते हुये ॥ जो निन्दनीय की प्रशंसा करता है मा उसकी निन्दा करता है जो प्रसंसा-पास है सेंद स बद्द पाप फमाता है। कस पाप से कसे कभी भूक नहीं शिक्ता # यह दुर्गाल कर है को जाए में अपना चन द्वार कान भएने और अपने सम क्षुक के साथ : सब से बचा बमाँग्य तो बत है को उन्ह के प्रति कोई अपराध समाने ह भी बनार निर्देश, कविस और याँच वर्त्रद क्रक कार्व प्रस्प की मिन्दा करवे शाका चनन और अन को पाप में करा। II

भयम काँ समात ।

### दूसरा भाग

# द्वितीय वर्ग ( पञ्चक )

### १, सनंकुमार सुच (६ २.१.)

### वृद्ध सर्वश्रेष्ट

ऐसा मेंने सुना।

एक समय भगवान् राजगृह में सर्विणी नदी के तीर पर विहार करते थे।

तव, ब्रह्मः सनतकुमार रात बीतने पर । एक ओर राजा हो, ब्रह्मा सनतकुमार ने भगवान् से गाया में का्र—

> ममुच्यों में क्षत्रिय श्रेष्ट है, जात-पात के विचार करने वालों के लिये विद्या और आधरण से सम्पन्न ( ग्रुड् ),

वेवता और मनुष्यों में श्रेष्ट हैं ॥ ब्रह्मा स्वतत्क्रमार ने ब्रह्म कहा । ब्रह्म भी इसमें सम्मत रहे ।

त्तव, महा स्वतःकुमार 'धुद इससे सहमत हैं' जान, अगवान् को अभिवादन और प्रदक्षिणा कर वहीं अन्तर्भान हो नथा।

### § २. देवदत्त सुत्त (६. २. २)

### सत्कार से खोटे पुरुप का विनाश

एक समय, भगयान् देखद्भा के तुरत ही आने के बाद शाजगृह के गुड़ाक्तूड पर्वत पर विहार करते थे।

तय, सहस्पति ब्रह्मा रत बीतने पर अगवान् का अभिवादन कर एक और खबा हो गया। एक और खबा हो, सहस्पति ब्रह्मा देवद्ग के विषय में भगवान् के सामने यह गाया बीका — केळा का अपना फळ ही केळे के बुक्ष को नष्ट कर देवा है,

अपना ही कठ बेणु को, और नरकट को भी । कपना सत्कार खोटे पुरुष को नए कर देता है, जैसे बल्करी को अपना गर्म ॥

### § ३. अन्धकविन्द सुत्त (६ २.३)

#### संघ-वास का महात्म्य

एक समय अगधान् प्रमाध में अन्धकितन्युं में विद्वार करते थे। उस समय, भगधान् रात की काली अधिवारी में खुळे मैटान में बैठे थे। रिमक्षिम पानी भी पद रहा था। तम, सहस्पति मधा रात बीतने पर अमवान् का अभिवाहन कर पुत्र और राषा हो गया। एक और राषा हो, सहस्पति यहा। समयान के सामने यह गाया बोस्स-

> धर, प्रकारत स्थान में आध्य करे। पन्धनों से जन्द्र बीबन विताबे। वहि वहाँ असका सम स सते। तो संघ में जिस संवत और स्पृतिमान हो कर रहे। घर-घर मिशारन करते इये संपत्तिकच कानी स्थातियान इर प्रकास स्वान में वाम करे मप से छ≥ निर्मय विश्वक ॥ बहाँ भवावज साँग विच्छ हों विक्रको करकती हो सेच गच गचाता हो कार्य में जिलारी पास्ते राज : र्वम स्थाप है साम्त्रचित्त विश्व हैस्ता है ह इसे बीक में भैने जॉंचों देखा है क्षोतीं की यह देवक बढ़ावत नहीं है: एक की जवाचर्य में इकार में बारक को बीत किया ॥ पाँच भी श्रीक्यों से मधिक भीर बय-बाद बार सी समी स्रोत-आपच विरमीन बोबि में को नहीं यह सकते ॥ भीर को इसरे वाकी वर्ष है विन्हें में बढ़ा प्रज्ववाब आश्रवा हैं दक्की गिक्सी भी नहीं कर सकता बाद बारा बाले के दर है ।

### § ४ अरुणस्ती सच (६ २ ४)

मिस का अधिक प्रवर्धन

पुसा सेने धुना ।

पुत्र समय भगवान् बावधी में विद्वार करते थे। तब भगवान् ने सिद्धान शो व्यासनिकत्त विज्ञा—"वे सिद्धानी! "सदन्ता!" वद कर कर निद्धानों ने अगवान् की उत्तर दिया।

भगवाय वोले—सिद्धार्थी ! एवं काक में कारणवान नाम का एक सका था। भारणवाद सवा नी समझानी का नाम मान्यवादी ना। शिद्धार्थी ! कारणवादी समझानी से क्ये वर्डर सम्बद्ध सम्बद्ध सगवात दिक्की विदार करते थे।

सिद्धको । वर्षेत् सम्यक सम्बद्ध भगवाव शिक्षी को अभिन्यू और सरस्य नाम के दो लेड अप-भावक थे।

सिद्धको ! तब सगवाय विकास ने कासिस्य सिद्ध को कासन्तित किया—काको साहाय ! कहाँ युक्त सह कोक है नहीं कहें जब तक सोवय कर दासब सी होता । भिक्षुओं । तत्, "भन्ते । यहुत आज्य" का अभिभू भिक्षु ने भगवान् दिर्गी को उत्तर त्रिया । भिक्षुओं । तत्, भगवान् दिग्नी और अभिभू भिक्षु "अरुणवत्ती राजधानी में अन्तर्धान हो मतलोक में मगर हुने ।

भिधुको । तय, भग प्रन् दिएकी ने अभिभू भिधु को भागन्त्रित किया—हे प्राक्षण । इस

प्रसम्भा में प्रता और प्रशासनासदा को धर्मीपदेश करी।

भिक्षुओं! 'भन्ने, पहुत अच्छा' का, अभिभू भिक्षु ने भगवान हिाशी को उत्तर है, शहामभा में बैढे द्वाहा और प्रहासभाग्यों को धर्मोग्टेश कर दिशा किया, उत्तर दिया, उत्तरीक्षेत और उत्साहित कर दिया।

भिक्षको । किन्तु, महा। और ब्रह्मसभायत चिद्र गये और उस मानने लगे-भक्त यह केमी बात

है कि गुर गुद्ध के उपस्थित रहते एक जिल्ब धमीपदेश करें !

मिक्षुओं ! तब, भगवान दिश्शों ने अभिभू भिश्च को आमन्तित किया—हें आग्रण ! महा और महामभात्य चिन्न गरे और दुरा मानने छों हें—भला यह केमी वात है कि गुर युद्ध के उपस्थित रहते एक हिष्य धर्मीपटेश करें ! तो हुन्हें जस अच्छी तरुर अवेग दिला हो !

भिक्षुओं। 'भन्ते, बहुत अच्छा' कर, अभिभू भिक्षु भगवान हिर्द्धी को उत्तर है, दृश्यमान दारीर से भी धर्मांवरेन फरो जगा, अदृश्यमान शरीर से भी , नीचे के आधे दारीर की दृश्यमान करने पर भी 'ऊपर के आधे प्रारीर को दृश्यमान करने पर भी '

भिक्षुओं । तम, ब्रह्मा ओर प्रकृतभासन सभी आधर्य तथा अद्भुत से भर गये—आधर्य है, सरमत है। अमण के पाहिन्यल ओर प्रकृत ।।

तव, अभिभू भिक्ष भगवान दिखी ने योठा—भन्ते । इस ब्राह्मकोक में रह, जैसे भिक्ष सच में

कह रहा हूँ भैसे ही फटते हुये हजार लोकों को अपना स्वर सुना यकता हूँ । प्राह्मण । यस, यही मोका है । यस, यही मोका है कि तुम प्रक्षलोक में रह हजार लोकों में अपनी

यात धुनाओ ।

भिशुली । 'भन्ते, यहुत अच्छा' कह, अभिभू भिश्च ने भगवान् दिखी की उत्तर दे यहालोक से कर-पड़े हम गायाओं को कहा---

उल्लाह करी, घर छोड़ कर निजल आओ,

इद के शासन में छग जाओ.

मृत्यु की लेना की तितर वितर कर दी,

जैसे हाथी फूस की झोपड़ी को ॥

बो इस धर्म बिनय में प्रमाद-रहित हो विहार करेगा.

वह ससार में आधागमन को छोड़ हु खो का अन्त कर देगा ॥

सिक्षुओं ! तय मगवान् शिक्षी और अभिभू भिक्षु ब्रह्मा और ब्रह्मसभासवों को सबेत दिला । व्यक्तिक में अन्तर्भान हो अरुणावती में प्रवट हवे ।

भिद्धजो । तत्र, भगधान् जिल्ली में भिद्धुली को आमन्त्रित किया—सिद्धुलो । झक्कोक से बोलते अभिभ निक्ष की गायामाँ को सुम ने खुना ?

हाँ भन्ते । ब्रह्मकोक से बोरुते अभिभू भिक्षु की गायाओं को हमने सना ।

भिशुओं । ब्रह्मकोक से बोलते समिम् भिशु की गावामों को जो सुना उन्हें कहो ।

भन्ते । यह सुना ---

उत्साह करों, घर छोद कर निकल जाको, बुद्ध के पासन में हम बाखों, याम की सेना को वितर वितर कर वो । संस दासी फूम की सोपकी को ॥

भिन्नमो । दीव कहा दीक कहा ! तसने जहातीक से वीकते अभिन्न मिल की गांधाओं को शेक में सभा।

भगवान ने यह कहा । संतष्ट होकर भिद्याओं ने भगवान के कहे का समिनन्दन किया ।

### § ४ परिनिम्बान सच (६२५)

#### महावितिर्वोक

एक समय भगवान अपने परिविश्यंत्र के समय कुद्मीमारा में सक्कों के साध्यय सपदत्तन में को झाळ बधाँ के बीच विदार कारे थे।

तव भगवान ने मिक्सकों को कामन्त्रित किया—मिक्सको ! में तुम्हें कद रहा हैं "सभी संस्कार नबर है अप्रम द के लाय बीवन के करूप का सम्पादन करों। यही श्रव्य का अभितम उपरोध है।

तब भगवान प्रथम च्याय में कीन हो गये। प्रवम च्यान छोडकर हितीब च्यान में कीन हो राये । ततीय चतुर्व व्याव में कीव हो राये । चतुर्व व्याव ग्रोवकर, बाकावानस्थायतम विज्ञाना-स्यावसम् आविधानावतम् मैयसंज्ञानासंज्ञावतम् में कीन हो गर्च ।

नैवर्मकातासंज्ञाबतन क्रोड आर्कियन्यायतन में कीन हो गये। क्रिस्सः } हितीय ज्ञान को क्षोड प्रयस प्यान में कीन हो शबे।

प्रथम प्यान कोड क्रितीय लुतीय चतुर्थ च्यान में कीन हो गये। चतुर्व प्यान से अपने ही मय-काम परितिकाँच की प्राप्त को शके।

भगवान के परिनिर्वाय को मात होते ही सहस्पति जहार वह गावार्षे बोका:--

संसार के सभी और एक न एक समय विदा होंगे ही

किन्त कोड में जो पेसे नेकोड अब हैं

तवागत बक्रमान, भीर सरप्रक परितिवाँच को मान की गये थ

मगुषान के परिनिकाल को जास होते ही बैबेन्द्र बाक वह गाया बोखाः---

स्तारी संस्कार व्यक्तिया है

उत्पन्न होना और प्रशाना हो साथा उनका स्वमान है जल्पन हाउर निक्क हो नाते हैं

क्रम्बर विश्वप शान्त हो आता ही सप्त ह प्र

भगवाम के परिमित्र में की प्राप्त हाते ही अप्युष्पान आजान यह गाना नोके:---

बार समय बचा बोर था रोमाजिल कर देनैवाका का सभी प्रकार से उनेप्र बजा के परिनिर्वाण की प्राप्त होते ।

भागत के परिविधान को प्राप्त होते ही जापुरमान् अनुरुद्ध यह गाया बारू:--

जन रिवर-विक के समान किसी का बीवन बारण नहीं या

सक्स पाम भागित पाने के किये

परम तक परिनिर्वाण को प्राप्त हो सबे ॥

निर्विकार विश्व से वेदवाओं का जल्द कर दिया

र्जन प्रजीप नम जाता है

बने ही उनके भिक्त की विसुन्दि हो गई ह

वद्य-संयुक्त समास ।

# सातवाँ परिच्छेद

# ७. ब्राह्मण-संयुत्त

# पहला भाग

अईत्-जर्भ

§ १. धनं≅ज्ञानि सुत्त (७, १.१) .

क्रोध का नाश करे

ऐसा मेंने सुना।

एक समय भगवान् राजगृह के चेलुवन कलन्दकतिचाए में विहार करते थे। उस समय, किसी आरहाज गीत्र के ब्राह्मण की धनकजानि नाम की ब्राह्मणी हुद, धर्म और

चल समय, किला आएद्वाज गान्न के नाहाण का चलक्जाहन गाम का नाह संघ के प्रति बढ़ी नदावती थी।

् तुन, धनक्जाति बाखणी ने सारद्वाज बीज बाखण के छिन्ने भोका परोसती हुई आफर तीन बार उदान के शब्द कहे—उन अर्हद सम्प्रकृ सम्बद्ध भगवान को नमस्कार हो ।

इस पर, प्राह्मण ने प्राह्मणी को कहा- दू ऐसी चण्डाव्हिन औरत है कि जैसे-सेसे सच्छंडे अमण के ग्रुण गाली रहती है। रे पापिन् । तुन्हारे ग्रुठ की मैं वार्त वतार्ज ।

माझण ! देवताओं के साथ, मार के साथ, ब्रक्षा के साथ इस सारे ठोक में, किसी भी अमण, माझण, देव या महुळ, को में पेता नहीं देखती हूँ को उन अर्हद सम्यक् सम्बद्ध भगवाद पर दोप छगा सके। माझण ! हुम क्या ? बाहो तो उनके पास जाओ, बाकर देख को।

तब, भारहाज गोल का आक्षण पुत्र और चित्रं हुआ जहाँ भगवान् मे वहाँ आगा । आकर मगवान् का सम्मौदन किया । आवअगत और कुन्नक-कुम के ग्रस्न पुरुकर एक और मैठ गया ।

पुक और वैठ, वादाण भगवान के सम्मुख यह बाथा बोळा --

किस का नाझ कर सुख से सोता है ? किस का नाझ कर शोक नहीं करता ? किस एक धर्म का,

यध फरना, हे गौतम । आप को रुचता है १

# [ भगवान्—]

क्रीय का नाहा कर सुख से सोता है, क्रीय का नाहा कर सोक वहीं करता, विप के युक्त स्कस्य क्रीय का, है नाहाण! जो पहले यहा अच्छा कनाता है, स्था करना उत्तम पुरूपे से प्रशस्ति है, दसी का नाहा करके सोक नहीं करता! सगवान् कं पेमा कहने पर माञ्चल ने कहा—पान्य हां गीतम ! चन्य हो ! हे गीतम ! कैसे वस्त्र का सरूर हे हैं के की बगार है, मटटे को ताह चला है अन्यकार में तेल मदीण कस्त्र हे कि कॉल्यका स्प्तें को दल से बेंग हो भाग गीतम ने मनेक प्रकार से वर्ग का बपदेश किया । यह में माप गीतम की तार में बाला है, बर्म की आर मिश्च-संघ को । में बाप गीतम के पास प्रकार पार्ट ने प्रसार साम प्रकार स्वाप्त प्रकार पार्ट में साम प्रकार से बाला है, बर्म की आर मिश्च-संघ को । में बाप गीतम के पास प्रकार पार्ट ने प्रसार पार्ट ।

भारकाज गोज के माकल ने भगवान् के पास प्रवादा पाई बार उपसम्पदा भी पाई ।

जनगरम होने के कुछ ही बाद आधुमान मारहाज में एकम्प में भारमध्य धावाणी भी प्रश्वित में भारमध्य धावाणी भी प्रश्वित में भारमध्य धावाणी भी प्रश्वित में महिताय हो बहार करते हुने सीओ ही उस अध्यार्थभास के क्षित्रम एक (लिपांज) को देखी हं दारत जानकर मास कर दिया जिसक किय इक्ष्युक सञ्चान्यक पर से बेसर होकर होक से अपनित होते हैं। जावि शीण हो गई, महत्वर्ष कार पूरा हो गया थी करवा या सो कर किया गया अब इस भार आरो क सिथ बाजी नहीं हैं — स्वार्थ कार दिया विरा

# <sup>8</sup>२ अक्कोस सु<del>रा</del> (७ १ २)

गाळियाँ का दान

गर समय भगवान् राजगृद् क येलु यम कसम्बद्धिवान में विदार करते थे ।

रीटा सुँद मारहात माहण ने सुना कि आरहाहाशोध माहण समन गांतम के पास घर ए वेपर हा ममनिन दी गया है। मुद्ध जीर रिष्ठ ही नहीं भगवान से वहीं आवा। काकर खोडी-रोटी मां कहते हुने समावान का प्रस्कार काले और गांतिकों दुने कारा।

उसके पैमा कहते पर अगवान् उस घोटा शुद्ध आयहात बाक्रल से बोले । आक्रण है गया प्राथारे यहाँ कोई योग सहीय या वण्य याण्यस यहना आहे हैं या नहीं है

हों गं तम ! कमी कमी मेरे देशक सुद्देश या वर्ग-आव्यक मरे वहाँ पहुना काते हैं । महान ! कमी कमी मेरे देशक सुद्देश या वर्ग-आव्यक मरे वहाँ पहुना काते हैं । महान ! कमी कमी कमी क्यों कामे पीने थे तीजें भी तीवार करवाता हैं ! ? हों गंगम ! कमी-कमी क्या क्या किये कामे-पीने की जीजें भी में गंगर करवाता हैं ! ?

मासन । वहि में किसी कारण से उन वीजों का उपयोग नहीं कर सकते हैं तो चीजें किसकी मिननी हैं ?

रूपा है। शासन ! वहि वे दन चीजों का उपयोग नहीं बर वात हैं तो वह चीजें सुस ही को सिकती हैं। जाकर्स ! उसी तरह को तुस कसी भी सीटी वार्से व कहबेचार तुस्र को मोटी वार्से कह हो हो,

नाकना । कात वाद्यम काता मा नादा काल व करवंपाल सुद्दा को नोदी काने कह रहे ही, कमी भी सुद्द नहीं होंगेताने ग्राम वह जूद हो रहे हो, कभी दिनी की दुण मेंव्य-दीवा न कहनेताने सुप्त हो कैंवानीयां कह रहे हो—उने भी नावाद वहीं करना । तो नाकल | यह वार्ते गुप्त हो को मिन रही है, दुम ही का विकृतही है।

साहन है या जोती वार्ते करतेवाने को लाई काने करता है सब्द इन्तवाने पर तुन्द होता है इंदा-बीच करनेवान को जिल्लाीया करता है—यह कावता का विज्ञानिकाल करा काने हैं। मैं तुप्तरी साथ कावता का निकासनिकाल करी करता। तुवारी दिव का मैं वच्योग ही नहीं करता। तो लाइन है बहु वर्ती तुव ही को तिक रही है तुव दो वो तिक रही है।

भार गीतम को तो राजा की शमा तक आवशी है--- क्षमण गीतम अर्दन है। तक आह गीतम कैरे बोच कर सकते हैं ?

भिगपान -- रे

ा । मध्य परित्र को मोब कैमा (२०) को प्रतिश्र गोषा के भाव में को हैं केम्मा काम मधी विशुक्त और जिन्हा निक विमुख साम्य हा गया है ॥ उससे उसी की बुराई होती हैं, जो चडले पर कोध करता है. हरू है प्रति कीच नहीं करनैपाला, अजेय संधाम जीत होता है ॥ मीनों को ह्यास पहाँचाता है. अपने की भी और दूसरे को भी, दसरे को गत्साया जान जो मावधान होकर शान्त रहता है ॥ होती की एठाज करनेवाले उसे, अपनी भी और वसरे भी भी, छोग 'वेषक्क' समझते हैं, जिन्हें धर्म का कुछ शान नहीं ॥

इतना कहने पर, घोटा मेंह भारहाज जाएण भगधान से बोला-धन्त्र है आप गीतम ! धन्य हैं !

·· [पूर्वयत] । आयुष्मान् भारहाज अर्हतां मै एक हुये ।

# § ३. असुरिन्द सुच ( ७. १. ३ )

#### सह लेग उत्तम है

ऐसा मैंने सना ।

पुक समय भगवान राजगृह के चेह्नुचन कलन्द्रक्रनिवाप में विहार करते थे।

असुरेन्द्रफ-भारहाज प्राक्षण ने सुना-भारहाज-गोत्र प्राक्षण श्रमण गातम के पास घर से बैघर हो प्रज्ञजित हो गया है। कृद्ध और शिक्ष होकर वह जहाँ भगवान् थे वहाँ आया । आकर, सीटी-सीटी यातें कहते हुये भगवान को फटकार पताने और गालियों देने लगा ।

उसके पैसा कहने पर भगवान खुप रहे ।

तव, असरेश्टक आर्रहाज प्राप्तण योल उटा-अमण ! तुन्हारी जीत हो गई !! तुन्हारी जीत हो गई !!

भिगवान्--

. मूर्प अपनी जीत समझ छेता है, मूँह से कडीर यातें कहते हुये. जीत सो उसी की होती है जो ज्ञानी जुपबाप सह रेंता है ॥ दससे दसी की अराई होती है जो बढ़ले में मोध करता है. फ़क्द के प्रति कोध नहीं करनेवाला अजेय सम्राम जीत लेता है ॥ डोमों को काम पहुँचाता है, अपने को भी और दखरे को भी. इसरे की गुस्लाया जान जो सायधान होकर शास्त रहता है ॥ होनों की इलाज करने वाले उसे, अपनी भी और दसरे की भी. छोग ''वेवकफ'' समझते हैं, जिन्हें धर्म का कर जान नहीं ॥

मगवान के ऐसा कहने पर अख़रेन्द्रक-भारद्वाज वाक्षण भगवान से बोला---धन्य हैं आप गीतम । धन्य हैं ॥

[ पूर्ववत् ] । आयुप्मान् भारद्वाज श्रद्धतीं में एक हुये ।

#### 8 ४. बिलस्कि सत्त (७, १, ४)

निर्दोपी को दोष नहीं लगता

एक समय मगवान राजराह के चेलवन करूदक निवाप में विहार करते थे । बिलिकिक-मारक्षाज वाक्रण ने सुना-भारकाज गोज बाह्रण असण गीतम के पास घर से वैघर हो प्रश्नजित हो गया है।

हुन्द्र और सिद्ध होकर बहुँ समनान् ये वहाँ आया । आकर शुपनाप एक ओर सदा हो गया । यह समनान् विद्धानिक-सारवाज के निवर्ष को अपने विश्व से बान उसे गाया में प्रोके—

जिसमें हुछ हराई घडी है को क्कब और पाप से रहित है

बस पुरुष की जो शुराई करता है; बद पुरुष कसी सुर्व पर कीड पश्ची है

नद प्रशाह कसी सूची पर कोड पहली हैं उक्की हवा खेंकी सहूँ जैसे पराक्षी पूज श

[ पूर्वेदत् ] । कामुध्यान् मारहात कर्दतों में एक हुने ।

६५ अहिंसक सुच (७ १ ५)

सर्वित्यक क्रील १

धाधस्ती में।

यन महिसक प्रारद्धाज माहण नहीं भगनान् ने नहीं न्याया । आकर मगनाम् का सम्मोदन किया। नावभगत और कमन क्षम के प्रभ पक्ते के पाव एक कोर हैर राजा ।

पुत्र कोर कैठ सहिसक मारद्वास माध्य मगवान् से बोबा—हे गीवस ! में महिसक हूँ। हे गीवम ! में महिसक हैं।

[भगवामु---]

जैसा नाम है वैसा ही होवी तुम सब में महिंखक ही दोवी की सरिर से वकन से और भव से हिंसा नहीं करता

वही राज में काहिसाक होता है को पराये को कमी नहीं सताता है सगयामु के पेटा कहने पर काहिसक भारहाज प्राप्तक भगवानु से बोक्स—कम्प हैं बाए गीसम !

धन्य हैं ! आबुदमान् भारदाव वर्डतों में एक इसे !

१६ सना सच (७ १६)

बटा को सुस्रहाने वाला

श्राचस्ती में ।

देव जटा भारत्वाज नाहाण बहाँ असवान् थे बहाँ आंचा । श्रावर असवान् का सम्मोदन किया। व्यवसमात और कुमार-क्षेम के प्राव पुत्रने के बाच पुत्र और बैठ गुत्र ।

एक कीर बैर, करा मारताल माज्य शावात से पावा में बीका---

भीतर में करा है। बाहर में भी बरा छमी है करा में सारे मानी जकते हुने हैं सो में बाप गीतज से पूछता हैं.

कीन मरा इस बढा को सुरक्षा शहता है ?

[ भगवाम्--- ]

महायाम् वर पीक पर मतिहित ही वित्र भीर महा की माववा करते हवे. प्र; जों को तपानेवाला खुब्सिम्स् निश्च, बही दूस जटा की खुलास सकता है ॥ जिसने ताम-देप और व्यविचा को हटा दिना है, जिनके आध्या सीण हो गये हैं, अहेंच; उनकी जटा सुल्का खुकी है ॥ बहाँ नाम और रूप विस्कृत निषद हो जावे हैं, प्रतिज्ञ और रूप-सज्ञा भी, वर्षी जटा कड जाती है ॥

भगवान् के ऐसा कहने पर जटा-आरहाज शासण भगवान् से वोला—धन्य हैं आप गौतम ! धन्य है !!

·· अध्यक्तान् भारहाज अईतों में एक हुये।

§ ७, सुद्धिक सुत्त ( ७. १. ७ )

कौन श्रद्ध होता ?

श्राचस्ती में ।

एक भोर बैठ, ग्रुव्हिक-आरहाज गासण भगवान् के पास यह गाथा बीका---

सत्तार में कोई प्राप्तिण शुद्ध नहीं होता है, बचा शीलवान हो तक करते हुये, को विचा और आकरण से शुक्त है वहीं शुद्ध होता है, और कोई दसरे लोग नहीं ॥

भिगवान---

षड़ा घोठनेवाला कोई वाति से प्रादाण वही होता है, (बह) जिसका मन बिल्कुल मेका है, होगी, चाठवाज ॥ क्षत्रिय, माझण, सेव्स, खूड, चण्डाल, पुत्कुल, उस्साड़ी आम-स्वमी तथा सदा उद्याग में तत्पर रह, प्रम झुदि को पा देता है, हे माझण। ग्रेसा जानो ॥ ' प्रिवेदर् ो । आयुत्माल भारहाल आईतों में एक हुये।

§ ८. अग्निक सत्त ( ७. १. ८ )

## ब्राह्मण क्रीन <sup>१</sup>

एक समय भगवान् राजगुत् के नेखुवन कष्टन्यकनिवाय में विदार करते थे। इस समय अभिनक-मारद्वाज बाक्षण के वार्रों भी के साथ श्रीर तैयार श्रीर—श्रीम-५वन करने के निर्मात ।

तन, भगवान सुवार में पहन और पात्र चीधर छे राजगृह में भिक्षारन के लिये पैठे। राजगृह में घर-घर मिक्षारन करते क्रमश बहाँ अनिक मारहाज माक्षण का घर या वहाँ पहुँ वे। पहुँचकर एक और खहे हो गये।

अग्निक-भारद्वाज ने भगवान् को निक्षाटन करते देखा । देखकर मगवान् को गाया में कहा ---

(जो) टीन नेवें को कामनेवाका देंची काति का, यहा विद्वास, समा विधा भीर भागरण से सम्पन्न हो यही इस फीर की धाव ध

#### [मगवान्—]

बरा भोक्येनाका कोई बाति से बाह्य गहीं होता है बह दिसका मन विष्कुक मैका है बांगी 'बाह्यान प्र सो पूर्व कम्म की वार्तों को बाह्या है क्यों भीर वपान को देखता है को भावमानम से हुट वपा है परम प्राणी सुनि हुन तीन को जानने के कार्य यह बाह्या में विषय होता है विद्या कीर काक्या से सुनक बही हुन बीर का भीग की प्र

इ गौदम ! भाप भोग कवार्षे । भाप गौदम माहाण है ।

मिगयान-3

अभागत्वेच करने पर सिका भोजन मुद्धे स्वीकार नहीं, ह माहण ? ज्ञानियों का यह जाने नहीं इद धर्मोग्पेक्त के लिये दिने गय को लोकार नहीं करते माहण ? जाने के कहे गे पर वही बात होती है व हुगरे कल भीर पान से सेवडी महणि क्रीजाशन परम सुन्न हुने को सेवा करो। पुज्याने गिह्यारा पुज्य कहें 11 मानुष्मान् भारहान कार्यों में पृक्ष हुने।

# § ९ सुन्दरिक सुत्त (७ १ ९)

## दक्षिणा के योग्य पुरुष

पुत्र सामस भगवान् कोहाल में हुम्ल्यिका नदी के तीर पर निवार करते से। वस भाग्य सुन्दरिक आद्यास माझन सुन्दरिका नदी के तीर पर अभिन्दनम कर हुताबधेप की परिचर्ग कर रहा था।

ठण भुन्दरिक-भारहात द्वढ वारों और देखने स्ताः—कान इस इस्तावरीय को सोग कमावे ? मुन्दरिक भारहात ने एक कुछ के सीचे जगवान् को किर कड़े किश देखा । देगतर यार्षे हात से इस्पतिर को सीर वारिचे हात से कमण्डल को के वहाँ क्षावान् ये वहाँ साथा ।

त्व सुरुद्दित आस्त्रास के जाने की आहर पर भगवान के शिर पर से बीचर उतार किया । तव मुन्दिक अवदाव "अरे । वह प्रवर्तात है ॥ जरे ! यह प्रवर्तात है ॥" कहता उत्तरे पाँव कार सामा पारा ।

ता पुंदरिक आपकाञ्च के सम में बह हुआ;—दिसमें ब्राह्मक सी साथ मुद्दना किया करते हैं। तो में करकर उसकी कात पूर्ण ह

तर सुन्द्रत्य भारक्षक अर्थे भगवान् वे वहाँ आवा । आकर भगवान से वोक्त-भाव किस कान के दें ?

[सर्गपाम्—] पान सन कुता कर्ने कुछो नकड़ी में भी भाग पैता की जाती है मीच कुछवाटो भी भीर सुनि छोते हैं, श्रेष्ठ ओर एकाझीक पुरुष होते हैं, सद्य से दान्त, जीर सबभी होते हैं, हु तो पे अन्त को जानतेवाळे, ब्रह्मपर्व के फल पांचे, ब्रह्मोपबीत सुम उन्मका जावाहन करों। बह समग्र पर नचन करता है, दक्षिणा पांचे का पांत्र।

सिन्डरिक---

हो। मेरा यह यहा किया हुआ हवन विवा हुआ नफल हुआ, कि आप पोसे ज्ञानी मिल गये, आप जांसों के दुर्गन नहीं होने के कारण ही दूसरे-सोसरे हम्मजन को सा दिया करने हैं। अप और कमारें में आप नीतम प्रावण है।

[भगपान्—] धर्मोपदेश करने पर भिला भोजन सक्षे स्वीकार नहीं,

[पूर्ववत्---]

तो. हे गीतम ! यह हच्यशेष में किसे हैं ?

हे प्राह्मण ! वेयता के साथ हम लोक में मैं किसी को नहीं देखता हूं जो इस हज्यतेप को स्वास्त पचा रे—युद्ध या शुद्ध के आवक को छोड़ ! तो, है माझण ! या तो तुन इस हज्यतेप को किसी ऐसी जगह छोड़ यो अहाँ शास उगी न हो, या विवा प्राणीवाले किसी जल में वहा हो !

तन, सम्बरिक आरहाज ने उस हव्यक्षेप को बिना प्राणीवाले किसी वल में वहां दिया ।

त्तव, वह हम्पत्रेप पानी पर गिरते ही चटचवाते हुये अभक वका, कहर उका । जेले, डिन भर, आग में तपाया कोई का कार पानी में पढ़ते ही चटचगते हुये अभक वक्ता है, कहर उक्ता है, वैसे ही यह हम्पत्रेप पानी पर पढ़ते ही चिड़चिड़ाते हुये अभक बका, कहर उका।

सप, खुन्दरिक आरङ्गाज प्राक्षण कीत्हल से भर जहाँ भगवाम् थे वहाँ आया । आकर एक और

खडा हो गया। एक ओर खड़े हुये सुन्द्रिक आरङ्कीज शाह्मण को भगवाचू ने गाथा में कहा---

हे माहण । रुक्तियाँ जका-जकार ,
अपनी छुनि होना सल समझी, यह बाहरी बाँग अर है ।
पण्टियत कोग उससे छुदि नहीं दलाते,
को शहरी जमावट से छुदि मही दलाते,
को शहरी जमावट से छुदि पाना चाहता है ॥
हे माहण । मैं रुक्तिश्वर्ग जकाना छोड़,
आप्याभ ज्योगि जकाता हुँ,
मेरी जाग सदा ककती रहती है, नित्य समाहित रहता हुँ,
मेरी जाग सदा ककती रहती है, नित्य समाहित रहता हुँ,
मेरी जाग सदा ककती रहती हैं, वित्य समाहित रहता हुँ,
मेरी जाग सदा ककती रहती हैं, वित्य समाहित रहता हुँ,
मेरा पूर्वा, छामानि हम्हरी किये बनाव है,
मोग पूर्वा, प्राप्य कालो की बमाह,
अपना सुद्दान्य आत्मा हो ज्योगि है ॥
धर्म जकासम है, तीक चाट है,

तिर्मेख कीर सम्बन्धें से प्रसान बिसमें शांधी पुरूप स्ताम करस हैं स्वच्छ गायवाके पार तर बाते हैं ॥ साथ धर्म संबम सभा माध्यपंथाका हे ब्राह्मण ! सप्यम मामें क्षेप्त हैं सुमार्ग पर का गये छोगों को समस्कार करों बसी गर को गये छोगों को समस्कार करों

[ प्रांतर ] । बायुध्यात् भारहात्र वर्षते में एक हुने ।

# ६ १० **यह**घीतु सुच (७ १ १०)

# पैछों की ब्लोज में

एक समय भाषान् कोशाह जापन के एक संगक में विदार करते थे। इस समन किसी मारकारागोत्र माद्यल के चौत्रह वैक गुम हो गये थे। तम बह माद्रम भएने बैक्टें को कोत्रत हुआ वहीं वह संगळ या वहीं का निस्का। आकर इस संगक में मात्रान् की कासन कमाये किर को सीचा किये स्वतिमान् हो वैठे देखा।

देखकर बहाँ भगवास थे वहाँ आमा । आकर भगवाल के वास वह गावार्थ वेख-

जबस्य ही इस भगन को चीवह बैक नहीं है काब छः दिन हुने इसे माख्य पहीं इसी से यह असम सुन्नी है अ सबद्भ ही इस समय को तिक-क्षत की वर्षांची नहीं होती होती पौधे एक पर्तेवाछे या दो पर्तेवाछ होका इसी से वह समज धुकी है 🛭 सबस्य ही इस समय के बाकी वन्हार में जुड़े श्वाद पैक नहीं रहे हैं इसी से यह अमन सुकी है। बद्द्य ही सात महीनों से इस समय की विकदन पत्री-पद्मी चीकर और क्वीस से भरी पन्नी नहीं है इसी से यह कमण सुकी है ॥ बदश्य ही इस शराय की नात विधाश करकियाँ एक वेदेवाकी और दी वेदोंबाकी शहीं हैं इसी से यह समज सुब्ही है 🛭 भवस्य ही इस ममण को पीकी और तिकों से मरे शरीरवाकी की महीं होगी भी कात भारकर जगाती होगी इसी से वह धमन जुकी है। संबद्ध ही इस जगन को शुधह ही शुबह कर्नेदर्भ "जुकानो कर्मा जुकामी" कह नहीं तंत करते होंगे इसी से वह समय सुद्री है 🛭

હ, **१**, १० ]

[ भगवान्— ] नहीं भागाण ! सुने चीदह वेल नहीं है, आज छ दिन हुने यह भी पता नहीं, भागण ! इसी से में सुरती हैं॥

[ 'दमी सरह ]

महों साह्या । मुझे सुधह ही सुधह वर्जे दार, "पुकाओ, कर्जा पुकाओ" कहकर नहीं तम करते हैं, प्राह्मण । हस्ते से में सुखी हैं ॥ " ' पूर्ववर ] । माखप्मान भारहाज महैती में एक रचे ।

अर्हत-चर्ग समाप्त ।

# दसरा भाग

# उपासक-वर्ग

# ह१ कसि सच (७ २ १)

#### वक की नेती

एसा मैंने सुवा।

एक समय नगवान् मगांचा में वृक्षिणागिति पर एकतासा शामक आसन-माम में विदार

उस समय योगी के काक पर कृषि प्रारक्तात बाहान के पाँच सी हक कम रहे थे।

तम भगवान् शुनद्द में पहन और पानभीनर के नहीं कुणि-आरक्षाञ्च शाहरण का काम करा रहा भा कर्षों गये।

अस्य समय कृषि आरखाज प्राक्तां की जीत से जाना वाँच का रहा था। तब अगवान् वहाँ जाउन एक और रादे हो तथे।

कृति मारहात साक्षण ने भगवान् को भिक्षा के किये तका वैद्या । वेक्सर मगवान् से वर्ष वोका—भगना | में बोतता और कोटा हूँ। में बोत-बोकर वाता हूँ। अमल [तुम भी बोती और वोनी। तम भी बोत वोकर पाने।

भाइएम ! में भी जोतता और बोता हैं। मैं भी ओव-बोकर पाता हैं।

िन्तु, में तो भाग गीतम के तुर हुक फार छड़नी या मैल तुक नहीं देसता हूँ। इस पर मी अप मीतम करते हैं—अप्रकृत में भी बोतता चीर बोता हूँ। में भी बोत-नोकर काता हूँ।

त्तव कवि-सारकाश बाह्यण भगवात से गायांचे कहा---

कुपड क्षाने का दावा करते हैं। लिंतु काम की फेरी में नहीं दैपता कुपक बुप्रसा है कहूँ—दस चेती की में कैसे कार्ने ह

# [ मगपाम्— ]

शवा बीज कप वृष्टि जजा ही मेरा लुआद बीर इस है समा हरिस है जब को बोत है स्पृति काक-प्रमुची है गारीर आंग वचन से संवत जीजब का अंद्राज काकोवाका साव की निराई करता हुँ, सीराव और विशास है बार्व मेरा कपूनी बैक है को विशास कक के जाता है निरा करेंद्र हुने पहल जाता है कहाँ काकर-वोफ नहीं करता है ऐसी रस्ती करनेवाला अध्या की बच्च बाता है हम रोगी के कर, साबी हुन्यों से हुन काला है व

भार गीतम भाग कमार्थे । बाद गीतम सचमुच में इत्यन हैं। की बाद की रोती में समूत की उत्तर होती है ।

#### [भगवान्-]

धर्मीयदेश करने पर भिला भोजन भुझे स्वीकार नहीं, हे मासण ! जानियों का यद धर्म नहीं, युद्ध धर्मापरेद के लिये दिये गये को स्वीकार नहीं करते, मासण ! धर्म ने रहने पर यही धात होती है ॥ दूसरे कात और पान से, केंदली, महर्षि, स्वीणाव्य, परम शुद्ध दुये को सेवा करो, प्रक्यार्थी नकारा प्रथय कहे ॥

पैना कहने पर कृषि-आरङ्काज माह्यण भगवान् से धोला—धन्द है आप गोताम ! जन्द है !! है गीतम, मेसे बल्टे को पल्ट दे, बँके को उचार हे, भटके को राह बता दे, या अल्डकार में सैल-प्रदीप जला दें जिसमें आंकवाले क्यों को देख हो, देवे ही भगवान् गोतम ने अनेक प्रकार से धर्म को मकाहा ! यह में भगवान् गीतम की राल में वाता हूँ, धर्म की, और सब की ! आज से जन्म भर के लिये आप पीतम मुझे भगवा गुराणान्त वचासक न्योकार करें !

# § २, उदय सुत्त (७, २, २)

#### **घार-घार भिक्षाटन**

श्रावस्ती में।

तय, भगवाम् सुवह में पहन और पात्र चीवर के वहाँ उत्था बाहाण का घर था वहाँ पधारे। तय, उद्या बाहाण ने अगवान् के पात्र को भात से भर दिवा। इसरी बार भी

हीसरी बार भी उद्देय प्राक्षण ने सरावान् के पात्र को आत से भर कर कहा---श्रमण गीसम वहे परके हैं, शार-शार जाते हैं।

# [ भगवान्—]

पार-वार होगा बीज बीते हैं, बार-वार होगा बीज बीते हैं, बार-वार खेतिहर तीत बीतते हैं, बार-वार खेतिहर तीत बीतते हैं, बार-वार दोशवाकों को उपज होती हैं । बार-वार पायक बाचना करते हैं, बार वार दानपति चान देके हैं, बार-वार दानपति चान देके हैं, बार-वार पायके दूध बहुते हैं, बार-वार क्या में खान चाते हैं ॥ बार-वार व्या में के पास जाता है, बार-वार क्या में के पास करते हैं, बार-वार मुखे नामें में बच्चा है ॥ बार-वार क्या लेता है और अस्ता है, बार-वार क्या लेता है और अस्ता है, प्रमर्वेद से छश्में के मार्ग को वा

महा जानी बार-बार मही क्रमा ग्रहण बरमा है स

[पूर्ववर्] । जाम से जन्म भर के किन आप गीतम मुझे अपना शालागत उपासक क्षीकार करें ।

# § ३ देवक्रित सच (७ २ ३)

प्रज की कावता, वान का पाम

भावसी में ।

उस समय मगबाब को बाद की बीमारी हो गई थी। भायप्यान खपछाल भगपाव की सेवा में स्ताके।

तन भगनान् ने आसुप्तान् रुपयान् को आसन्त्रित किया—कपयान् । सुनी कुछ धरम पानी के मामी।

"मन्ते वहुत सम्मा" कह, आयुष्पान् सुप्यान अगवान् को बचर दे पहन और पात्र चीवर है बर्बों वेपहित माहम का घर या वहाँ गये । बाकर खुपचाप एक ओर सहे हो गये ।

वेयदित मास्य में नामुध्यान् उपयान को चुनकाप एक और कई देया । देखकर बायुध्याद् उपवास को गावा में कहा-

> जुपकाय माप करे जिर सवरवे संचादी मोर्न पता चाहते पदा धोजले बना जाँगले के किये काचे हैं ?

विषयाम—ो

संसार के बहुन, इस अनि बात-रोग से पीड़िय हैं पदि गरम पानी है हो जालज ! सबि के किये हो।

पुनर्शारों में को पुन्य सरकार-वालों में जो शतकार के पाच समा मान्यवीयों में को आजरबीय है कर्मी के किये में चाहता हैं ह

तब देवहित माक्षय ने गरम पानी का एक भार और गुढ़ की एक पोटकी नीकर से सँगवा भारतपान् कपवान को है दिया।

तन आनुम्मान् उपवान नहीं अगवान ने नहीं शने । बानर, बन्होंने धावात को गरस पानी से बहुआ गरम पानी में कुछ गुड़ जोधकर भगवास की विचा ।

तव मगवान् की तककीक क्षत्र वह गई।

तम देवहित माजन नहीं भगवान् ने वहीं आया । आवर मागवान् का सम्मोदन विवा । साव मगढ और क्रमक-सैंग के प्रदन पूछने के बाद एक बीर वैंड गया ।

एक भीर वैद देशहित माशक ने मगवान् की गामा में कहा---

वान वैलेवाका किसे वान वे ? किसको वेचे का सकावक बीता है ?

की बस करनेगांके की कैसी बक्तिया संबद्ध होती है ?

[ भगवाम-- 1

पूर्व जन्म की बावों को जिसमें बान किया है रक्त और भगाय की बाखों को भी समझता है विसमी कारि श्रीण हो गई है. परम बान का कामी सबि :

द्दान देनेवाळा इन्हीं को दान दे, इन्हीं.को देने का सहाफल होता है, ऐसे यक करनेवाले की, ऐसी ही दक्षिणा सफलकेहोवी है।

...। भाज से जन्म भर के लिये आप गौतम मुझे अपना शरणागत उपासक स्वीकार करें ।

# ४. महासाल सत्त (७. २. ४)

#### चाँ सवा विष्कावित पिता

श्रावस्ती में।

तय, एक ब्राह्मण वहा आउमी शुद्दी पहन जहाँ भगवान् ये वहाँ आया। आकर भगवान् का सम्मोदन किया। आवभगत और कुवार-सेम के प्रकृष पूछने के नाद एक ओर बैठ गया।

्रक और बैठे उस प्राह्मण बच्चे आदमी को भगवान् ने कहा—वाह्मण ! इतमी गुद्धी क्यों प्रकृति हो ?

पदम इ। ? दे गीतम ! मेरे चार बेटे हैं । अपनी ख़ियों की सकाह से उन्होंने मुझे बर से निकाल दिया है ।

तो, हे ब्राह्मण १ इन शाक्षाणों को तुम याद कर समा खून करा जाने पर अपने पुत्रों के बहाँ होते उटकर पड़न!—

> जिनके पेदा होने से सुझे बढ़ा आनन्द हुआ था, जिनका बना रहता मेरा वका अभीष्ट था. ये अपनी श्वित्रंग की सकाह से. हटा देते हैं, कुता जैसे सुधर की ॥ ये नीच मीर सोटे हैं. जो सुले 'बाबू जी, बाबू जी,' कहकर पुकारते हैं, बेटे नहीं, राकस हैं. को मुझे अदाई में छोद रहे हैं ।। जैसे वेकार पुरुषे धोड़े को, दाना मिलना बन्द हो जाता है. वैसे ही बेटों का यह बुढ़ा बाप, दसरों के दरवाजे भीख माँग रहा है ॥ मेरा इण्डा ही यह कहीं भएछा है. मगर ये नालायक वेटे नहीं, सी अदके बैठ को भगा देता है. और चण्ड कुत्तों को भी, में घेरे में पहले पहल यही चलता है, गहने का भी बाह छगा हैता है. इसी डण्डे के सहारे, डेस छगने पर भी गिरने से यच जाता हैं॥

सव वह प्राह्मण बड़ा आवमी अगवाज् के पाम इन गायाओं को सीव्य सभा खुद्र अम जाने पर भवने दुर्जी के वहाँ होते ठठकर पढ़ने लगा--- जिनके पैवा होने से मुझे यहा आधन्य हजा था [पर्यवदा]

इसी वच्छे के सहारी

देश कपने पर भी गिरने से बच बाता हैं।

तब उस माज्ञाय को उत्तरके पूर्वी ने घर के का नहता कर प्रत्येक ने वान का कोड़ा मेंड वहाया । तव वह माद्याय एक कोवा याम केकर वहाँ मगवान थे वहाँ भाषा । एक भीर बैठ गया ।

एक मीर बैठ उस माझव ने सरावाल की कहा--हे गीवम ! हम माझव आवार्य की सावार्य-वसित्रा दिया करते हैं । बाप गीतम इस बावार्य दक्षिणा को सीआर करें ।

मगबान में अनुकारा कर स्थीकर किया ।

[पूर्ववत्]। जाज से खन्म भर के किने भाग गीतम भुन्ने अवता प्राप्तागट डपासक स्वीकार करें।

# <sup>8</sup> ५ मानस्थदः स्<del>च</del> ( ७ २ ५ )

अभियास स करे

भावस्ती है।

उस समय असिमान मक्क नाम का एक माकन धावस्ती में बाध करता था। वह न जी माठा को प्रकास करता था न पिछा को न काचार्च को थीर न केंद्रे माई को ।

वस समय मगवान नवी भारी शमा के बीच चर्मोददेश कर रहे थे !

तव समिमान-अकड बाह्य के नगर्ने वह हुका—यह समज गीतम वड़ी सारी सभा के बीच धर्मीपदेश कर रहे हैं। तो वहाँ अधन गीवम है वहाँ में भी वहीं। धवि क्रमक गीवम मुससे कुछ फ्रांचा करेंगे वो में भी उनसे क्रम बार्ड कर गा। यदि समय गीतम समसे क्रम प्रमाण नहीं करेंपे सी में भी उपसे अन्य न बोलँगा।

त्व असिमान अकद बाह्य वहीं भगवान में वहीं गया। बाक्स प्रथमाय एक जोर सहा हो गवा।

वर भगवान् वे अससे कुछ पूक्ताक वहीं की ।

तर असिमान अकड़ नाक्षण "यह समय गीतम कुछ नहीं बाबते हैं" सीच और बाने के किये वैपार समा :

ता. मगवाब् ने शमिमान-मवाब् वासण के नितर्ज की अपने विन्तु से कानवर कहा---

माद्याच ! कमित्रप्राच करका अभिन्त वर्ती

माताण ! जिस उन्हें क्य से बच्चें जाये थे

बसे हैमा कह बाब्दे ह

दव अभिमात-अक्ष बाह्य "अमय गीतम केरे विक की वार्तों को बावते हैं। बाब भववाद् क पैरों पर धारे गिर गया जबके करणों की हुँद से चूसने कमा क्षान से पॉस्टने समार और जपना नाम सुवाने क्याः---हे र्यातम ! में अभिमान मकड़ हूँ । हे गीतम ! में अभिमान-सकड़ हूँ ।

तच समार्में आचे समी कोग मामवें से चकित हो गये। व्यामवें है रे ? कर्मुत है | वह क्यमिमान-भक्तक माह्य व तो बावा की प्रकास करता है व पिता की व साधार्य की और व सेडे

माई को । सी असन गीतम के करवाँ पर इतना शिर पह रहा है।

तव, भगवान् ने अभिमान-अकट बाह्मण को यह कहा—जाह्मण ! वस करो, उडी, त्रदि मेरे प्रति तस्हें श्रद्धा है तो शदने आसन पर घेठो ।

. तय अभिमान अकड माक्षण अपने भारत पर घेठकर भगवान से यह घोटल —

> किनके साथ अभिमान न करे ? किनके प्रति गारव-भाव रक्ते ?

किनका सम्मान किया करे ? फिनकी पना करना अच्छा है ?

# [भगवान्-]

।न्—ाः साँ, याष, और यदे भाई,

और चौथा आचार्य, इनके प्रति अभिमान न करे,

उन्हीं के प्रति गोरब-भाव रक्खे, उन्हीं का सम्मान किया करे.

उन्हीं की पूजा फरना अच्छा है।

भभिमान हुटा, अकड छोड उन सनुत्तर.

भर्टत, सान्त हुए, फ़्तकृत्य और अनाश्रम को प्रणाम करे । । आज से जन्म भर के रूपे भाष गौतम खुक्षे अपना क्षरणागत उपासम स्वीकार करें ।

# §६. पद्मनिक संच (७ २ ६)

#### झराटा न करे

#### थावस्ती मे ।

उस समय झगड़ाह्र नाम का पुरु प्राध्यण आवसी में बास करता था । राय झगड़ाल, शाक्षण के मन में बह हुआ—जहाँ अमण गौतम हैं बहाँ में चल चर्दें। असण गौतम नो छल कहेंगे में ठीक उसका उलटा ही कहुँगा ।

वस समय भगवान खळी जगह में दहल रहे थे।

- त्यान नानान् युक्त काहाँ भगवान् थे वहाँ आजा । आकर भगवान् के पीछे-पीछे चलते हुये कहने कगा---अग्रमण ! धर्म जयदेर्गे !

## िभगवान- ी

जिसका चित्त मैला है, झगदा के लिये जो तना है,

ऐसे समझार के साथ बात करना ठीक नहीं ।

जिसने विरोध-साव और चित्त की उच्छू ज़लता की दवा, द्वेप को विक्कुल छोद दिया है, उसी को कहना उचित है ॥

। भाज से जन्म भर के छिथे आप गाँवम सुद्धे अपना शरणागत उपासक स्वीकार करें ।

## § ७. नवकम्म सुच ( ७ २ ७)

#### जंगल कट चका है

एक समय भगवान् फोश्चल के किसी जगल में विद्वार करते थे । उस समय नवकार्मिक-भाराद्वाज ग्राक्षण उस जगल में लकड़ी चिरवा रहा था । नयकार्मिक-स्परदास माझण ने मनवान् को किसी बाव्य हुस के बीचे भासन कगाये, सरीर सीचा किये स्वतिमान हो केंद्रे देखा।

इंग्रज्ज उसके मन में यह हुआ—में तो इस बंगड़ में अपना काम करवाने में समा हूँ। वह भगग गीतम नग कराने में को है ?

त्रव नवकार्मिक भारद्वाळा जाकण अहाँ अध्यान् ये वहाँ आया । सारूर सगवान् से गाव्य में बोक्स---

> भपने किस काम में को हो है सिशु इस साक बन में ? को इस अंगक में बड़ेके ही सुद्ध से विद्वार करते हो ?

#### [ मगवान् -- ]

र्षराक हैं मेरा कुछ काम नहीं कहा है भेरा कंग्रक कर-ग्रॅंडिंग्स साफ हो गया में इस कम में शुक्त से कुर परम पद पा, जनस्तोप को छोडकर करेका रसता हैं ॥

माम से जन्म भर के किने भाग गीतम असे अपना वारणागध अपासक स्थीकार करें।

# <sup>8</sup>८ कहहार स्त्र (७ २ ८)

निर्जन धन में बास

एक समय मगवाब् कोहास के किसी बंगल में विदार करते थे।

उस समय किसी मारझाजारीच भाक्षण के कुछ कठनुवर्ष चेके उसी जंगक में गर्ने !

व्यक्त उन्होंने मनवान् को उस बंगक में स्वितिमान, हो मेंड हैचा । देशवर वहाँ मारद्वास-गांत्र नासन या वहाँ गये। काकर मारद्वाद्ध से बोके 'अरे ! न्याप कावते हैं। कराने बंगक में एक सादु स्वितिमान, हो मेंटा है।

त्व भारक्राक्राणित जाक्रण कर कर्वण के साथ वहाँ वह बंगल था वहाँ गया । उसमें भी भगवान् को वस बंगक में स्वतिमान् हो वह देया । देयकर नहाँ भगवान् वे यहाँ जावा । व्यक्त भगवान् में गांवा में बंधिया

> पीर, मजावक सून्य विश्वंत आरश्य में ऐड साथ बंधक स्थापन समाधां मिद्रा विश्वंत प्रमुद्द प्यांत कमावे बेंदे हो श्र न जरों गीत है न जहां पाता एमें थांत में लंद्रका वनपाती सुनि को देग मुप्ते वही देशों हो रही है है वह अध्या जीतन में की समझता से दहना है श में समझना है कि कोस्सचिपति है शांव अपून्य वर्ण की कास्ता से अपून्य वर्ण की कास्ता से अपून्य वर्ण की कास्ता से अपून्य एक की कास्ता से

भिगवान-ी

जो कोई आकांका या भागन्य उठाना है. नारा पहाथों में सदा आसक. इस्टार्च जिन्हा मह अजान में है. सभी का मेंने जिएकल स्थान कर दिया है. त्रणा भार इच्छाना से रहित में अठेला. क्या भागों के तस्य को जानमेवाला. अस्तर और जिब उदस्य की पा.

में प्रधानण । एकास्त में में निर्शीक प्रशन करता हैं।

। अहम में करन भर के लिये अहम गोतम मुझे अपना शरणागत उपासक स्वीकार करें।

§ ९. गातपोसक सत्त (७. २. ९)

माता-विता के पोषण में पुण्य

थायसी में।

तव, मात्रपोपक प्राक्षण जहाँ भगवान् थे वहाँ भाषा । आकर प्रक ओर बेठ गया ।

पुक्त और वैढ मालपोपक जाहाल ने भगवान को यह कहा-है गौतम । में धर्म-पूर्वक निक्षादन करता हूँ। धर्म-पूर्वक भिक्षाटन कर माता-पिता का पोपम करता है । है गीतम ! पैता करनेवाका मे अच्छा करता हैं या नहीं ?

बाह्मण । अब्दय, ऐसा करनेवाले तुम अच्छा कर रहे हो । बाह्मण ! जो धर्म-पूर्वफ सिक्षाटन करता है, धर्म-पूर्वक भिक्षादन कर साता-पिता का पोपण करता है वह बहुत पुण्य कमाता है।

जो मनुष्य माला या पिता को वर्म से पोसता है उससे पण्डित छोग उसकी प्रशसा करते है. मरकर वह स्वर्ग में आवस्द करना है।

। भाज से जन्म भर के छिये आप गीतम सुक्षे अवना शरणागत उपासक स्वीकार करें ।

<sup>§</sup> १०, सिक्खक सत्त (७ २ १०)

भिक्षक भिक्ष नहीं

श्रावस्ती में ।

तत्र भिक्षक बाह्मण जहाँ भगवान ये वहाँ आया । आकर एक बोर बैठ गया ।

एक और बैठ भिक्षक वाहाण ने भगवान को कहा-हे गौतम । मैं भी भिक्षक हैं और आप भी भिक्षक हैं। एम दोनों में फरक क्या है ?

[ भगवान- ] इसलिये कोई भिक्ष नहीं होता क्योंकि वह भील महाता है, जब तक दोपयुक्त है तब तक वह मिश्र नहीं हो सकता ।

को ससार के प्रच्य और पाप वहाकर, शानपूर्वक सच्चे अधाचर्य का पालन करता है.

वही यथार्थ में भिक्षु कहा जाता है॥

। बाज से जन्म भर के छिये जाय भीतम सुन्ने भवना शरणायत उपासक स्वीकार करें।

# **६ ११ संगारव ग्रुच (७ २ ११)**

# स्माम से शक्ति नहीं

धावभी में ।

उस समय संगारच भाग का पुरु माञ्चल उत्काश्चिक उदक में खुबि होना माननेवाका

धावस्ती में रहता वा । साँध-सबद्व तत्त्व में श्री पैठा रहता या ।

तब बालुप्पान् आजन्य सुबद में पहण बीर पाछबीदर के आवशी में सिसारन के किने रेटे। सिसारन से बीर मोक्स कर केन के बाद कहाँ अगवास् ने वहाँ व्यापे बीर समवान् का अभिवादन कर यक और बैट राये।

एउ जोर वेट वाक्षाताय आहम्ब वे अगवाय को यह कहा—सन्ते ! सनारय आह्रय सींस-सुबह बहुउ ही में पैटा रहता है । उनते ! अयुक्तमा करके भगवाब वहाँ सीगारय का पर है वहाँ करें ।

भगवान ने अप रक्षका स्वीकार कर किया ।

तक ममाबान सुबह में पहन और पात्र चीवर के बहाँ स्थारक का घर वा वहाँ गये। बाकर किसे कामक पर बैट गये।

त्रव संस्थारण माहास वहाँ सरावात् ये वहाँ आधाः आत्रर कुलक-मस पूक्त के बाद पूक कोर केराताः।

एक मोर केंद्रे संगारत बाहक को समजार के कहा—आहमा ! क्या सक में तुम वर्त-श्रुविक हो करक से सुद्धि होना आवते हो ! साँध-सुबह वरक में ही फैंटें रहते हो !

वाँ गीतम । पेसी भी कत है ।

नाक्रण ! तुस किस बडेक्स से बड्ड-क्रुडिक हो बच्छ से क्रुडि होणा सानते हो, और साँध-

भूबह उदक में ही पैठे रहते हो ?

दै गीवम ! दिव मर में मुख्ये को कुछ पाप दो वाला है वसे सर्वेक्ष में वहावर वहा देवा हूँ। और रात मर में को कुछ पाप दो बाला है वसे सुबंद में वहारर वहा दता हूँ। दे गीवम ! में इसी वहें वहेंश्य से कदक-सुविक हो उदक से क्षुति होगा मानता हूँ और सर्वेक्ष-सुबंद वहक में पैठा रहता हूँ।

भिराचान—]

इं म्यक्रम ! धर्म जफासम है जीक उसमें उत्तरने का बाद है

विश्वत स्थापन सक्षती सं प्रश्नास.

जिसमें परम जानी स्वान कर

पश्चित्र शालींबाका ही पार शर जाता है 🛭

। व्यक्त से काया जर के किये काप गीतम सुद्धे अवना धारणागत खपासक स्वीकार करें ।

### § १२ स्त्रोगदस्सक सत्त (७ २ १२)

#### सन्त की प्रदश्नात

पुरु समय मागशाह द्वाराक्य क्रमपद में रहोसाबुद्ध्य नामक शायमों के करने में विदार करते थे।

त्रव मात्राज् सुवह में पहन भीर पायशेनर के खोराजुस्स करने में भिकायन के किथ हैं। उस समन दीमाजुस्स करने के दुवनेगारु माह्यत्य पुरस्क किसी काम से समायुर में इनके के। सिप्तिम पानी भी पान करता था। तद, भगवान् लहाँ वह समा स्मी थी वहाँ गये ।

खोमदुस्स करने के रहनेवारे बाह्मण गृहस्यां ने भगवान् को दृर ही से आते देखा । देखकर यह कहा---ये मधमुष्टे श्रमण सभा के नियमों को क्या आनेंगे ?

तत्र, भगतान् ने खोमदुस्स कस्त्रे में शहनेवाले ताहाण गृहस्त्रों को गाणा में कहा-

यह सभा सभा नहीं जहाँ सन्त नहीं, वे सन्त सन्त नहीं जो धर्म की गत नहीं प्रताबें.

राग, द्वेप ओर मोह को छोड़,

धर्म को बसाननेवाले ही सन्त होते हैं॥

' '। आज से जन्म भर के लिये आप गीतम हम लीगा को अपना प्रश्नामत उपासक स्वीकार करें ।

खपासक वर्ग समाप्त ब्राह्मण-संयुत्त समाप्त ।

# आठवाँ-पारिच्छेद

# ८ बङ्गीश-सयुत्त

# § १ निक्खन्त सुच (८१)

# धहीश का इंड-संकल्प

वेमा मैने सुना ।

एक समय बायुप्पान् यहीता अपने उत्तरभार बायुप्पान् निमोध-करप के साथ आख्यी में सम्माख्य भीत पर विदार करते थे। उस समय ब्यायुप्पान् प्रहीदा जभी तुरत ही गये माजित हुएे के विदार की दैस-रेक करने के किने प्रोह दिश्य गये थे।

तम कुछ द्वियाँ सर्वकृत हो उस आहार में हैएले के किये आहूँ। उस कियों को हेएकर बाबु प्याप सडीडा सभा गने, किस शग से पायब हो उठा।

त्व व्यक्तिमाल बहील के सन में यह हुआ — सरा वहा व्यक्त हुआ काम नहीं, मेरा वहां दुर्मान्य दुष्प पुत्राल्य नहीं — कि में सुना सवा बीत मेरा विश्व राग स पायब हो कर है। हारे कीत पैसा निकेशा की मेरे हस मोह की तुर कर विश्व में सान्ति का है। तो में स्वयं ही जपने इस मोह की हुए कर विश्व में सान्ति के कार्क।

तव व्यानुष्यात् वाहीस जयवे स्वयं उस सोध की पूर कर किन्त में शास्ति के काये; स्पीर उस समय उनके मैंड को बाद शासार्थ किन्नक पार्थ—

> पर से बेबर हो निफल गये भेरे अन में बे द्वरे कीर काजे विकार उद्घ हैं अंद्रजारों के दुल महाभयुर्वर विशिक्ष दर-परावशी भारें और से इकारों बाव परसारों विद इसारे भी अधिक विशों लामें शो मेरे अन को वहीं दिया सकेंगी, कव में बार्ग में आर्थितिक हो गया ॥ मेरे अपने काम प्रवेशकों करता को कहते सुना है कि विवाल के गाये का मार्ग क्या है, मेरा अन अब वहीं मेंद्र गया है ॥ हम मक्षर विद्यात करते बहि पारी आर मेरे पास ब्याचेगा शो में गाय कर मार्ग कि वह मेरे आर्ग को भी नहीं हैका सवेगा श

### § २ अरिशः सुच (८ २)

राग छाने

पेमा मैने भुना।

एक समय बायुध्याण यहीरा अपने अपाव्याय आयुष्याण निक्रोध-प्रक्रम के साव आछवी में आसारस वैष्य पर विकास करते थे। इस सभय आयुष्पान् निशोध-फरुप भिक्षाटन से छीट भोजन कर छेने के बाद विहार में पैठ जाया करते थे, और साँछ को या इसरे दिन उसी समय निकला करते थे।

उस समय आयुप्पान् बहीहा को मोह चला बाया था---राग से चित्त चल्लल हो उठा था। तब आयुप्पान् बहील के मन में यह हुआ---- [ पूर्ववत् ]। तो मैं स्वय ही अपने इस मोह को दूर कर चित्त में शान्ति ले जाऊँ।

त्व आयुष्पान् वङ्गीक अपने स्वय उस मोह को दूर कर विच में शान्ति है आये, और उस समय उनके खुँह से ये माथायें निकल पर्वा—

> ( धर्माधरण में ) असतोप. ( कामोपभोग में ) संतोप. और सारे पाप वितकों को छोड़. कही भी जगल उगने स है. जगल को साफ कर खुले में रहनेवाला भिक्ष ॥ जो प्रथ्वी के उत्पर या आकाश में ससार के जितने रूप हैं सभी धुराने होते जाते हैं, अनित्य है. मानी बरुप इसे जानकर विचरते हैं है सालारिक भोगों में छोग छुमाये हैं, हेस्से, ख़ने, छूये और अनुभव किये भर्मों के प्रति. स्थिर-चिम्त जो इनके प्रति ह्य्छाओं की वृक्षा, बनमें लिस नहीं होता है-उसी को यूनि कहते हैं ॥ को साठ मिथ्या धारणार्थे. पृथक जनों में लगी है. उनमें जो कहीं नहीं पबता है, जो द्रष्ट वार्ते नहीं वोलता है, वही शिक्ष है ॥ पण्डित, यहत काल से समाहित. बाँग न पनानेवाला, ज्ञानी, लोस-रहित, जिस मुनि ने प्रास्त-पद जान. निर्वाण को प्राप्त कर खिया है, अपने समय की प्रतीक्षा कर रहा है ॥

# § २. अतिमञ्जना सुत्त (८. ३)

## अभिमान का त्याग

एक समय कामुष्मान् बद्गीदा अपने उपाध्याय भाषुष्मान् निम्रोध-करप के साथ आसमी में अग्गाह्य चैत्य पर विद्वार करते थे।

उस समय आर्,प्माप् चङ्गीदा अपनी प्रविमा के अभिमान से दूपरे अच्छे भिधुकाँ की निन्दा करते थे।

तव अधुरमात् पद्मीत के सच में यह हुआ, "भेरा वदा बळाच हुआ, रास वटा, मेरा वहा दुर्भाग्य हुआ, सुमान्य नहीं, कि में अपनी प्रतिमा के अभिमाच से दूखरे बच्छे सिक्षुमी की निन्दा करता है।"

तय स्थय अपने चित्त मे पर्चात्ताप उत्पद्ध कर आयुग्मान् बद्धीत के र्सुँह से ये गाथार्य निकल पर्दां --- हे गौतस के भाषक ! कमिसान कीकी धनिमान के भाग से तब रही। समितान हे शाने में भारतक बहर दिनों तक पश्चाचाप करता रहा ॥ सारी अमता धमण्ड से चर है क्रक्रियास करनेवाके नरक में शिरते हैं बहर काक तक शोक किया करते हैं स्वतिकानी स्रोग भरक में सरवस हो । सिक्ष करी भी पोक नहीं करता है मार्ग को विसने बीत किया है सम्बक्त मतिएक कीति कीर शक का अनुसद करता है बकार्य में ही सोग उसे बर्मारमा कहते हैं ह इसकिये सन के नैक को दूर कर उत्साही वन पन्धनों को इसकर विश्वक. धीर अधियात को विश्वस रवा शास्त्र हो ज्ञान-पूर्वक अन्त्र करता है।।

## १४ जानन्द्र सच (८४)

कामराग से मुक्ति का उपाय

पुरु समय कायुप्पाम् आमन्य आवस्ती में सनाथ विभिन्नक के जेतदम व्यरास में विदार कार थे।

तत आयुष्माय् धानम्ब सुवद में पहन भीर पालवीवर के ज्ययुष्मात् खङ्कीशः को पीछे किये मिकारत के किने ब्याकस्त्री में कि।

इस समय आयुष्पान बढ़ीश के भित्र में मीह हो गया था शग से पड़क हो रहे थे। वह सावपान बढ़ीश भाषपान आतरह से गावा में बोके—

कांसराग से बक पता व विश्व मेरा बका आ रहा है

है गीठमक्रकोत्पन्न भिद्ध ! क्रया कर इसे सान्य करने का नपाय नवानें ।

# [ सायुष्पाम् शामन्द्र 🖺

सन बदक कांगे से सुम्हारा विश्व कक रहा है
राग कराक करनेवाड़े हम काकर्षण को छोत्र थे
अपने संस्कारों को परावा के ऐसा देखों कुग्य जीर बानातम के ऐसा
इस वह राग को हमा दो हमारे बार-बार सन कको ॥
विश्व में कहुम मानवा कांगो एकाम बीर समाविद्य हो
सुम्हें कावमता स्वति का बागास होने वैसाय बहाओं ॥
कुन्य बानिए बीर बसाय की मादबा करने
कमिमान बीर बागव सो हो हो किकोंगे ॥
वह मान के महाय से सामवा हो किकोंगे ॥

# § ५. सुभासित सुच (८५)

#### मदाचित के लक्षण

श्राष्ट्रस्ती जेनचन में ।

वर्गं भगपान् ने भिञ्जर्भ को आमन्त्रित किया--रे भिञ्जनो ।

"भगना !" एहकर उन मिधुअः ने भगवान को उत्तर दिया ।

भगवान योले--भिक्षुको । चार अहीं से युक्त शंने पर वचन सुधापिन शोता हे, हुर्भायिन सही, विज्ञों से अनिस्य, निस्य भर्ता । किन चार से ?

भिञ्ज । भिञ्ज सुभाषित रो बोल्ला है, दुर्भाषित मही, प्रमं हो बोल्ला है, अधमे नही, प्रिय ही घोल्ला है, अप्रिय नही, साथ ही बोल्ला है, असटा नहीं। भिञ्जभा । इन्हीं चार अद्भे से जुक्त वचन सुभाषित होता है, दुर्भाषित नहीं, विज्ञः से अनिन्य होता है, निन्दा नहीं।

भगवान् यह पोले । इसना काइकर उन्ह किर भी पोले-

सन्तः ने सुभाषित को ही उत्तम यहा है, तृतरे—धर्म कहे, अधर्म नहीं, तीनरे—श्रिय कहें, अधिय नहीं, चैपे—साथ कहें, अधाय नहीं।

तन, आयुग्मान् चक्रीश आसम ने टर, उपगमी को एक कन्ये पर सँशांख, भगवान् की और हाथ बोदपर बोले----भगवन्। में कुछ पहना चाहता है। उसा। सूत्रे कुछ कहने पर अवज्ञान सिर्छ।

भगवान् योले-प्रतीय ! कहो, अवकास है ।

त्त्र, आयुष्मान् सङ्गीता ने भगवान् के सम्मुख अध्यन्त इष्युक्त शाधाओं से स्तुति की-

उदी ययन को जोले, जिससे अपने को अनुवाप न हो, अर, दूनरें को भी कष्ट न हो, बटी प्रचम सुभायित है ॥ प्रिय पवन ही बोले, जो ममी को सुष्टाये, जो दूनरें के डीप नहीं निकालता, वहीं श्रिय बोलता है ॥ स्था ही सर्वोत्तम बचन है, यह समातन धर्म है, स्वय, अर्थ और धर्म में प्रतिहित नजनों ने कहा है ॥

उद जो पचन कहते हैं, क्षेम और निर्वाण की प्राप्ति के लिये, हु ह्यां को अन्त करने के लिये, वही उत्तम बचन हूं ॥

# § ६. सारिपुत्त सुत्त (८. ६)

#### सारिपुत्र की स्त्रति

एक समय आयुष्यान् सारिपुत्र आवस्ती में अनाय-पिण्डिक केंट्रजेतवन आराम में विद्वार करते थे।

उस समय आयुष्मान् सारिपुण ने सिक्षकों को धर्मोपदेश कर दिखा दिया । उनके प्रचन सन्य, साफ, निर्दोष और सार्वक थे। और सिक्षु कोग भी वदे आदर से, मन क्याकर, ध्यानपूर्यक कार दिये सुन रहे थे।

त्व, जायुन्मान् वहीदा के मंत्र में वह हुआ-यह अञ्चलान् सारिपुन भर्मारदेश । और, भिद्ध क्षेत्र में श्वन रहे हैं। तो क्षों न में व्यक्षपान् सारिपुन के सम्युख वपयुक गायाओं में उनकी सुनि करें। तव भाषुप्पान् यहीता वासन सं वट उपरयी को एक मंधे पर सम्माछ । बाहुप्पान् सारिपुत्र की मोर हाथ बोक्कर योके—व्यकुत सारिपुत्र ! मैं कुछ कहना चाहना हूँ। बाहुस सारिपुत्र ! सुने कर कहने का सम्बन्धा सिक्ष !

भाषुस यद्गीदा ! अनकाश है कहें।

142 ]

तत भाषुच्मान् चङ्गीश ने व्ययुष्मान् सारिपुत्र के सन्धुक्ष उपशुक्त गायार्ज, में उनकी स्पृति की---

गम्मीर प्रश्न मेथाणी, अपने और हुरे आर्ग के पहणायनेताले स्वारिपुण महाप्रण मिलुकों में पत्नोंगरेता कर रह है ॥ संक्षेप सामी वपनेताते हैं उसका विकास भी कह येते हैं स्वारिका को योकों खेला प्रशुत कैंची बातें बता रहे हैं । जस वेताना की पहणाया कीर सुम्बर हैं, कहातिका की सहावीच कीर सुम्बर हैं, कहातिका कीर मामीला ही मिलु कोग काल कमायी उसे साव रहे हैं ।

# § ७ प्रवारणा सच (८ ७)

#### प्रवारका-कर्म

एक समय सगवान पाँच सी केनक वर्डन सिम्नुकों के एक यहै संब के साथ आवस्त्री में सुगार साठा के प्रवासन सासाव में विकार करते थे।

कम समय प्रज्ञश्नी के उपोक्षण पर प्रकारणा के किये सम्मिक्त हुये मिश्च-सव के बीच खुड़े मैशन में भगवान बेंद्रे से ।

दण समयोत् ने सिद्ध-संब को सान्त देख जिल्ला को बासन्तिय किया—सिद्धको } █ प्रवारण करता हैं—समने सरीर या वचन के कोई दोच तो अद्यों नहीं देखें हैं ?

संगवान के पता कहते पर वायुष्मान सारियुत्र व्यासन से वट उपरात्र की पूत्र कोई पर सन्मार्क सगवान की और हाथ जोड़कर बोके—अन्ते ! हम क्रीमा ने वार्तर या वचन से क्रुप्ट हार्ग्ड्र कर सगवान पर दोग नहीं बाग्य है। अन्ते ! सगवान अनुष्यत्र सार्ग के उत्तव करवंत्रके हैं क कहे गर्ने सार्ग के करातेताके हैं आर्ग को पहचानकेवाक हैं आर्ग पर वक हुने हैं। सन्ते ! इस समस क्याने अवक सी बापके अनुमान करनेवाके हैं। अन्ते ! संगवान को मब रण करता हूँ—सगवान ने हमर्म कोई वार्तिक का वाष्ट्रीसक सेश सी नहीं है एस हैं?

स्तिरिपुत्र ! मैंने वर्गार या बचन के बीप करते तुम्हें कभी नहीं पाना है। स्तिरिपुत्र ! तमें परिवन हो पुरुवनक् हो मामामानाव्य हो तुम्हरति प्रशा प्रसक्त नवीगानी तीवन और अरहाजेब है। स्वारिपुत्र ! और कम्मनी राजा का जैसा पुत्र पिता के स्वतित क्षक का सम्बन्ध स्वतिन करता है कैते ही तुम मेरे स्वतित ज्युक्त पर्माक्त का समय प्रवर्तन करते हो।

भाग ! यदि भगवान् इसमें कोई सारितिक या वाचसिक दोप नहीं वाते हैं तो मगवान् हुन

पाँच सा भिगुजी में भी कोई बोच नहीं पावते ।

सारियुत्त ! इम इन वॉन भी सिश्चर्या में भी कोई दोन नहीं वाते हैं। सारियुत्त ! इन वॉन ता तिशुनों में भी साथ निशु अधिया साठ सिशु पत्तिया साठ निशु दोनों मान से दिश्चन, बीत दूसरे प्रजानिश्चर हैं।

तर वानुष्यान यहीं । वासन से उद, पहानी की पुत्र कृत्ये वर सम्मास असवान् की बीर इस्स जोड़कर बाल-असवन् ! हैं कुछ कहना यादता हूँ। दुस्त ! मुस्ते कुछ कहमें का वाजकार सिले ! भगवान् थोले—बद्गीश । अवकाक्ष है, कही । तव आयुक्मान् वद्गीश ने भगवान् के सम्मुख उपयुक्त गायाओं में उनकी स्तृति की— भाव पञ्चवनी को विकादि के निमित्त,

भाज पञ्चटमा का विद्युद्ध के नि पाँच सौ भिक्षु एकत्रित हुये हैं,

( दश ) मानसिक वन्धना के काटनेवाले,

निष्पाप, पुनर्जन्म से मुक्त ॥

जैसे चक्रवर्ती राजा अमात्यों के साथ, चारों और जम आता है.

महार कार पुन काता है,

वैसे ही, विजित-सम्राम, अनुत्तर नायक की,

उपासना उनके श्रावक-गण करते हैं.

वैधिया, स्टब्स् को जीसनेवाले ॥

सभी भगवान के प्रश्न है, इसमें कुछ अत्युक्ति नहीं है,

तम्मारूपी घटव को कारनेवाले.

उन सूर्यवशीत्पन्न बुद्ध को नमस्कार हो ॥

## § ८. परोसहस्स सुत्त (८.८)

#### **बु**ख-स्तुति

एक समय भगवान् साहे बारह सौ भिक्षुओं के बढ़े सच के साथ आवस्ती में अनाथिपिण्डिफ के जेनकर भारतम में विधार करते थे।

उस समय भगवान् ने निर्वाण-सन्त्रन्थी धर्मोयदेश कर सिक्षुओं को दिखा दिया । मिश्च छोग भी वहें आदर से मन सनाकर ध्यानधूर्वक कान दिये सुन रहें थे।

तव आधुष्मान् चङ्गीश के मन में यह हुआ—यह ' भिक्षु कोग भी कान विषे सुन रहे हैं। तो क्यों न में भगपान् के सम्ब्रस उपयुक्त गायाओं में उनकी स्तुति करूँ।

े तब जायुप्सान् बङ्गीश आसन से उट प्रवेबत ।।

तम आयुष्मान् वक्षीरा ने भगवान् के सम्प्रुख उपयुक्त गाथाओं में उनकी स्तुति की-

हजार से भी ज्याटा भिक्ष बद्ध को घेरे हैं.

जो विरज धर्मा उपवेश रहे हैं,

भय से शस्य निर्वाण के विषय में ॥

उस विग्रह धर्म को सन रहे हैं.

जिसे सम्यक् सम्बद्ध वता रहे हैं,

मि असघ के बीच खुद्ध बड़े शोभ रहे हैं ॥

भगवान् का नाम नाग है, ऋषियों में सातवाँ अ ऋषि हैं,

महाजेध-सा हो, श्रावको पर वर्षा कर रहे हैं ॥

दिन के बिहार से निकल बुद्ध के दर्शन की इच्छा से,

हे महाचीर ! मैं बद्धील आपका खावक चरणों पर, प्रणास् करता हूँ ॥ बद्धीद ! तुमने क्या हम गायाओं को पहले ही बना लिया था अथवा हसी क्षण सुझी हैं ?

<sup>🛮</sup> विपस्पी मुद्ध से छेकर सातवें ऋषि (= नुद्ध )--- अहकथा।

सन्ते ! मैंने हुन गायाओं को पहले हो नहीं यना किया या इसी क्षण सुसी हैं। तो बड़ीमा ! बीन भी कुक महें गायानें कही कियें तुनने पहले कभी नहीं रचा है। सन्ते ! बहुत बयानं कह, कायुस्मान् वर्णाश मगवान् को उत्तर दे पहले कभी नहीं रची गई नहुं गायाओं में मगवान् की सुद्धि करने कमी:—

> सार के अभाग को बीत सम की गाँठी को कारफ कियाने हैं बन्धन 🖟 मुख्य करनेवाकं उन्हें वैद्यी स्वच्छान कोगों को (स्पृति प्रस्तान सावि सम्बास) बॉटरो-परते **।** साथ के नियमार के किये समेद राज्यात के उसमें को समास्त आपके क्रम श्रामान्यक क्रमाने वर कर्त के काली क्लेज को राजे अ रिकारक राज्याच्या नेत्राचा के तक से बच्च बरेक्स को धार कर सापने वेच्य किया कारकार भीत साम्रातकार कर सबसे पहले कान की बातें बताई ।। इस प्रकार के धर्मीवरेश करने पर समे कायनेवासों को प्रसाव केमा ! इसकिये उन मगवान के शासन में मदा अप्रतत्त्व हो संबक्ता से धास्त्रास करे ॥

# § ९ कोण्डम्अ सुच (८९)

# सस्त्रा-क्षोरबक्त के गुण

पुत्र समय भगवाण् बाज्यसूह में बेल्लुवन क्यान्त्र विषयप में विदार करते है । तब आयुष्पाण् अञ्जा-कोण्डल्य बहुत काल के वाद बहुँ सगवाण् ये वहाँ काले । आकर

पत्र गानुसार करतासार है जा सहार के बार पान सह स्वताह प्रवाह स्वाह स्वताह स्वताह स्वताह स्वताह स्वताह स्वताह स् समापान के ऐसी पर तिर देव समाप्तान के लाजों को हुआ से ब्यूनों को बोर हाय से पीछने को | जीर स्वताह साम हाजाने को स्वाम पान है के स्वताह है | देव को प्रवाह है |

त्व व्यक्तमान् सङ्गीहा के सब से वह हुना—नह व्यक्तमान् अस्त्रा-कोण्डस्म वपवा नाम शुवा रहे हैं । तो मि समवान् के सम्मुल बाध्मा-कोण्डस्म वर्ष वपनुष्य सावांची में मसंसा कर्ते । [पूर्वतृ]

तः मृत्युप्ताम् यद्गीषः भगवाम् के सम्मुण वयदुकः साधामा से बायुप्ताव् सन्त्रा-कोण्डक्त की क्षतीस करने को----

इस के बडाये शाब को व्यानोवाके स्वीवर पड़े बस्साही कोण्डाम सुरान्त्रके विद्या करनेवाके पहल शाव को बहुँचे हुने इस के सासव में बह ,विस्ती व्यावक से बो बुक ग्राप्त किया व्यासकरा है वह सभी आपनी आध है बाएको को स्वासन हो बागाम करते हैं वह सभी आपनी आध्या मुंगाँ के विश्व को सामन को सम्बन्ध से हुन्द-भाषक कीण्टान मामाना है चाएको पर वग्ना कर रहे हैं व

## ६ १०, मोमारहान सुत्त (८. १०)

#### महासौद्रस्यायन के गुण

एक समय अगवान् पाँच सी केवल कहैत् किछुओं के एक वड़े सच के साथ राजगृह में ऋषि-मिरि हे पास कालंदिरला पर विहार करते थे। उस समय वालुज्यान् महामीहरूयायन ने अपने चित्त से उनके चित्त को विसक्त और उपाधिरहित हो गया जान लिया।

तन, आयुष्मान, बहीदा है सन में बह हुआ--वह मनवान पाँच सी हैनक अहंद सिक्का में एक वहे तब से साथ पासपुत्र में अधिनारि के पास काळितिका पर बिहार कर रहे हैं। और, अध्य-स्त्राम सहामीद्रास्थायन ने अपने चिच से उनके जिस को विश्वक और उपाधिरहित हो गया जाते हैं। किया । तो, में मनवान के सम्मुख आयुष्मान, प्राह्मानिद्वान्यायन की उनयुक्त गायाओं में प्रशास करें।

सब, बाबुच्यान् वजीश भगवान् के सम्मुख उपयुक्त गाथाओं में आयुच्यान् श्रहामीद्गास्या-

धन की प्रशसा करने छने---

पहाड़ के किनारें पैठे हुने, बु क के पार चले गये ख़ित को, आवक कोग सेरें है, जो देविया और स्वायुक्त हैं। महा शहिर-साकी मीहरायाजन अपने चित्त से जान लेले हैं, हम सभी के विद्युक्त और उपाधिरहिटा हो गये चित्त को। इस तरह सभी जांगों से अवेक सकार से समस्य, दु जों के पार आगेवाले गीतम ख़ित की सीवा करते हैं!

# § ११. गम्मरा सत्त (८ ११)

#### यद्ध-स्तृति

एक समय भगवान् व्यव्धा में मागारा पुष्करिणी के शीर वर—पर्रव सी भिक्षुमों के पुरु कड़े सब के, सात सी उपासकों के, सात सी उपासिकाओं के, धोर कहें हजार देवताओं के साय—विहार करते थे। दनमें भगवान् अवभी काम्ति और वस से यहत होता रहें थे।

वय, असुप्तान् चड्डीरा के मन से यह हुव्या— उनसें मगवान् अवनी कान्ति और यहा से यहत सीम रहे हैं। तो, में मगवान् के सन्धुप अयुद्ध गायाओं में उनकी स्तृति कहूँ—

1 तब, आयुष्मान, वडीया अगवाम के सम्ब्रुप अपयुक्त बाधाकों में उनकी स्तुति करने डये—
मेध-रहित आकाश में जैदे बाँड,
अपने निर्मेल प्रकाश से शोधाता है.

हें दुद्ध ! भाप महामुनि भी वैसे ही, अपने यहां से सारे लोक में शोभ रहे हैं ॥

### § १२. वङ्गीस सुत्त (८ १२)

#### वहीश के बदान

एक समय भगवान् आवस्ती में अवार्थापिण्डिक के जीतवात् भागम में विदार करते थे। उस समय, आयुष्पान् वहीन अभी हरत ही अर्हन-पद पा विमुक्तिनुरा की भीति का अनुभव कर रहे में। उस समय उनके भुष्य ये ये गावार्य निकल पर्दा-

पहरे वेवल कविता करते विवक्ता रहा, गाँव में गाँव और शहर में शहर.

एक, सम्बद्ध समावाद का दर्मण हुआ, सन में वही अब्दा तराध हुई दनने ग्रुप्ते पर्मोपवंस किया रक्तव आसतन और धातुओं के कियम में उनके पर्मे को शुन में घर से बंधर हो मानित हो गया। बहुतों की व्यविस्ति के किय, मुनि में शुक्त का काम किया मिश्रु और मिश्रुणियों के किय, जो नियास को माग्न कर देख किये हैं ॥ आपको मारा ब्वामत हो, शुद्ध के पास ग्रुप्ते ठीन विधार्य मारा हुई है। हुक का वास्तव सफक हुआ ॥ एर्यकरमों की बात कानता हुँ, दिन्म पश्च निश्चय हो गया है देनिया और क्विमाय हुँ, दूपरों के विश्व को कामता हूँ ॥

वक्षीश संयुक्त समाप्त ॥

# नवाँ परिच्छेद

# ९. वन-संयुत्त

§ १. विवेक सुत्त (९१)

विशेक में त्याना

पैसा मैने सुना।

एक समय कोई भिक्ष कोशाल के एक जगल में विहार करता था।

इस समय वह जिश्लु दिन के विहार के लिये गया तुरे ससारी वितर्कों को मन में छा रहा था। तव, उस वन में 'वास करनेवाला देवता उस मिश्लु पर अनुकरणा कर, उसकी शुभ कामना

तव, उस वग में 'बाल फरनेवाला देवता उस भिद्ध पर अनुकथ्या कर, उसकी श्वभ काम से दसे होश में छे आने के छिये, जहाँ वह भिद्ध या नहाँ आया । आकर, भिद्ध से नाथाओं में बोला---चिनेक की कामना से वन में बैठे डो.

ाववक का कामना से बन भ पठ हा, किन्ता तुक्तार कन बाहर कान रहा है, वृत्तरों के प्रति अपनी इच्छा को वयाओ, और, तब बीतरान होकर हुस्ती होयों ॥ अरें, तब बीतरान होकर हुस्ती होयों ॥ उत्तरिक्तार हो मन के भोह को छोतों, सरकुरु बनों, शिक्सकी समी बदाई करते हैं, नीचे और हुएँ, काल-रान से तुम बहुक मत बाओ ॥ पद्मी जैसे पूछ पढ़ बाने पर, पाँची कठकराकर को बचा देता है, बेते हुं, उत्तराही और स्टूरितमाल् सिक्कु, असक हो ता को फटफडाकर झालू दिवाह

तब, देवता के ऐसा कहने पर वह भिक्षु सम्भक्त कर होश में आ गया ।

### § २. **उपद्वान सुन्त** ( ९.२ )

उठो. सोना छोडो

एक समय कोई भिक्षु कोशाल के एक जगल में विद्वार करता था। उस समय घह भिक्षु दिन के विद्वार के लिये गया सो रहा था।

तथ, उस जम में शास करनेवाला देखता उस सिक्षु पर अनुकरणा कर, उसकी शुभ कामना से उसे होदा में छे आने के लिये, जाहाँ यह निश्च या पहाँ आया। आकत, मिश्च से गायाओं में योला---

बड़ो मिश्रु ! क्या सीते हो ! तुम्हं सीने से क्या काम ? वीर क्नों छटपटाते हुये बेचैन जादमी को भरा नींट कैसी ? किस श्रद्धा से घर सं वेघर होकर शशकित हुवे हो उस श्रद्धा को कवाको जींद के वस में मत पड़ी ॥

#### [मिभ्र—]

सांसारिक काम अधिश्व और अधुक है जिनमें मूर्क द्वागाये रहते को स्वयम्प्य मेरी क्ष्मप्त से मुद्ध है बत प्रवक्तित को ये क्यों सवामें ? इम्ब-राग के वब काने से अधिया के सर्वमा दूर बाने से वित्तक म्राम भुक्त हो गया है बत मबकित को वे क्यों क्वाचें ? विद्या से अधिया को हृता आकर्षों के द्वीण हो जामे से को सौक और परेसाणी सं कृत हैं जस प्रवक्तित को वे क्यों स्वामें ? को सौक और परेसाणी सं कृत हैं विश्व कर पराक्त करनेवाका है को सौक्षान और प्रविचाय है विश्व कर पराक्त करनेवाका है

# § ३ कस्मप्रताच सत्त (९ ३)

#### वहेकिया को उपवेश

पत्र समय अञ्चलात् काह्यप्रांत्र कोश्च के किसी वन-कार में विहार करते थे। इस समय नायुप्तान् काह्यप्राोत्र दिन के विहार के किये गये हुये एक यहीकिये की वयरेस है तहे थे।

तर उस यम में बाग करनेवाका नेवता जायुष्मान् काद्यययोज्ञ से वावामों में बेका —

महाद्दीव सूर्य दुर्गम ग्राम पदान् में रहनेवाके बहेकिये की

मिश्व : वेवरण उपनेदा करते हुने कार मुझे मन्द माल्यम होने हैं ॥

सुनता है किन्तु सनाता नहीं कीं की कीटता है किन्तु देशता नहीं

यमोनवेदा किया जाने पर सूर्ण नामें को नहीं व्यवस्था कार्य की स्वाप्त की कीटता है किन्तु देशता नहीं

यमोनवेदा किया जाने पर सूर्ण नामें को नहीं व्यवस्था व पाद्यय ! यहि काण वस समाम भी वित्यामें

ती वह कर्मों की यही है पर सहना है;

प्रम सी कींच हा सी है क

दैवता क एमा कहने पर आयुक्तान् काद्यप्रशोध होस में आकर सैंसक गये ।

### ६४ सम्बद्धन सुच (९४)

#### निश्तमी का स्वयम् विहार

पुर नामच बुछ लिशु काणार क दिसी बन-प्रवह में बिहार करत थे। तब तीन महीना वर्षेत्रमा बीत माने पर थे लिशु रमत (क्वारिका) के किये चन परे। तब उस वक में बाम करवैचाला वैचक्षा उन लिशुओं का त देल विमाद करता हुआ उस समर्थ थे नामाचे बाला—

> धात्र मुझे वदा वदाम-सा सारहस द्वा रहा है इस करेड आसमी की गार्ग्य देगसर से कॅची देंची बातें करदेवाल विवास भागस के धावक करों चल शर्र ह

उसके ऐसा कहने पर, एक दूसरे देवता ने बसे गाया में उत्तर दिया— मगध्र को गये, कोहाल को गये, और कितने दक्तियों के देश को गये, छूटे सुत केंद्र स्वटक्टर दिवसनेवाले, विना परवाले निक्ष क्षेत्र विदार करते हैं॥

# ६ ५, बानन्द सत्त (९, ५)

#### प्रमाद स करना

एक समय आयुष्मान् आनस्य कोशाल के किसी वन-खण्ड में विहार करते थे। उस समय आयुष्मान् आनस्य को गृहस्य लोग बढे घेरे रहते थे।

तय, उस वन में वास करनेवाला देवता आयुष्मान् आतन्त्र पर अनुकरण कर, उननी छुभ कामना से उन्हें होता में छे आने के लिने, जहाँ आयुष्मान् अतन्त्र ये वहाँ आया। आकर, आयुष्मान् आतन्त्र से गाथाओं में घोला —

> इस जगर जाद में आफर, इटय में निर्वाण की अकांक्षा से, है गौतम आवक ! ध्यान करें, प्रमाद सत करें, इस वहरू-पडरू से आपका का क्या होता है ?

देवता के ऐसा कहने पर आयुष्मान् आसम्द होश में आकर सँगल गये।

### §६. अतुरुद्ध सूत्त (९६)

#### सस्कारों की अभित्यता

प्क समय आयुष्मान् अनुरुद्ध कोझाल के किसी बन-खण्ड में विदार करते थे। चय, जयस्त्रिद्दा छोक को जालिनी नामक एक देवता, जो आयुष्मान् अनुरुद्ध की पहले जन्म से भागों थी, जहाँ आयुष्मान् अनुरुद्ध थे बहाँ आई। आकर आयुष्मान् अनुरुद्ध से गाया से योली —

> उसका जरा श्याक करें कहाँ आपने पहले वास किया था, प्रयक्तिश देव-क्षोक में, जहाँ सभी प्रकार के पे्रा-आरास थे, कहाँ आप सदा देवकन्याओं से घिरे शहकर शोभते थे॥

#### [ अनुषद्ध— ]

अपने पेंद्र-आराम में छगी, उन देवकत्याओं को शिकार है, उन जीवा को भी विकार है, को देवकत्याओं को पाने में छगे हैं।

#### [ जालिनी— ]

से सुख को भला, क्या जानें, जिनने नम्दन-यन नहीं देखा ! प्रयक्तिया लोक के यसस्वी, भर और देवों का जो वास है !!

#### [ अनुरुद्ध— ]

मूर्जे, क्या नहीं जानती है, कि अर्हतों में क्या कहा है ? सभी संस्कार अनित्य हैं, उत्पन्न और झीण होनेनालें, उत्पन्न होकर निरुद्ध हो बाते हैं उनका शास्त हो आना ही सुध है है फिर भी वेड भरना नहीं है

है आफिनि ! किसी भी देवकोक में भाषागमन का सिकसिका जन्त हो गया पुनर्जन्म अब होने का पहीं ॥

## § ७ नागदच सच (९ ७)

देर तक गाँवों में चहना सच्छा नहीं

एक समय सारावण कोशास्त्र के किसी वन-राज्य में विशाद करते थे।

इस समय कायुष्पान् भागव्य तक्के ही गाँव में पैठ आते ये आर वक्का दिन विताकर क्रीटते थे। तव उस वम में बास करवेबाका देवता कायुष्पान् मागव्य पर अनुकल्पा कर, उनकी सुन-काममा से उन्हें होता में के भागे के किये वहाँ व्यायुष्पान् मागव्य ने वहाँ साथा। साकर, बायुष्पान् मागव्य से गावाकों में बोकर---

> नागहर ! तबक हो गाँव में वैठ बहुत दिव कर बाले पर कीरते हो पुरस्पों से बहुत दिवे-मिक्ट दिकरते हो बनके मुच्य-दुल्ल में सुबी दुल्ली बारे हो है बन्दे माध्य नागहर को बताता हूँ इकते में बीचे हुमे को माध्य बकतात् एक्सुणब,

तब देवता के पैसा कहने पर बालुप्सान नागवन्त सँगळकर होन्ह में का गये ।

8ं८ इलधरणी सच (९८)

सह क्षेत्रा श्रम्यस है

पुरू समय कोई मिश्नु कोशास में किसी वय-सण्ड में विद्यार करता था । इस समय वह मिश्नु किसी शुक्रमानुका में बहुत हैर छक वदा रहता था ।

तक बस कम में बास करनेवाका देवता बस मिश्च वर अनुकन्मा कर उसकी हम-कामण से वसे होता में के कारे किने कर कुक की को अन्व-पृद्धीयी कश्चक क्या वर वहाँ वह सिश्च का वहाँ क्या । बाकर सिश्च से गामा में वोका-

> भदी के तौर पर, सराय में समा में सबकों पर कोग मापस में वार्ते करते हैं---इमारे-तुमारे में क्या भेड़ है ?

#### [ भि**स**— ]

वार्ते बहुत कैंक गई हैं अपस्ती को सहबी बाहियें उससे कवाण वहीं पढ़ेगा उससे बहवासी वहीं होगी म को सम्ब सुणजर चीक जाता है जंगक के दूग कैसे को जोग कह-चिक कहते हैं उसका मत वहीं पूरा दोता ॥

# § ९. विजयुत्त सुत्त (९९)

भिक्ष जीवन के सुख को स्सृति

एक समय कोई विज्ञापुत्र भिक्षु वैद्याली के किसी वन खण्ड में विहार करता था। उस समय, वैद्याली में सारी रात की जगोजी ( एक पर्ष ) हो रही थी।

तब, बह भिक्षु वैद्याली में वालेगाले के सन्द की सुनकर पछताते हुये उस समय यह गाया योला---

हम लोग अपने अलग एकान्य जगल में पहे हैं, सन में कटे हुये लकड़ी के कुन्दे की तरह, आज जैसी रात की मला.

हम लोगों को छोड़ दूसरा कोन अभागा होगा !!

तय, उस वन में वास करनेवाला देवता भिक्षु से गाथा में वोला —

आप लोग अपने अलग एकान्त जगल में पड़े हैं, वन में कटे हुये लकड़ी के कुन्दे की तरह,

धाप को देख बहुतों को ईंग्यों होती है, स्वर्ग में बानेवालों को देख जैसे नरक में पदे हुआं को ॥ तव, देवता के ऐसा कहने पर वह भिक्षु सँमककर होन्न में आ गया।

### § १०. सज्झाय सुत्त (९ १०)। स्वाध्याय

एक समय कोई जिल्ला कोहाल के एक बन-लग्ड में विहार करता था।

उस समय वह जिल्लु-जो पहले स्थाध्याय करने में बढ़ा बळा रहता था--उरसुकता-रहित हो स्वपंचाप अकता रहा करता था।

तम, उस वन में शहनेवाला देवता उस जिल्ला के धर्म-पठन को न सुन जहाँ वह निश्च या वहाँ आया. और राध्या में बीका —

> सिद्ध । क्यें बाद उन धर्मपटी को, सिद्धको से मिळकर नहीं पदा करते हैं ? धर्म को पदकर सब में सम्लोप होता है, बाहरी सलार में भी उसकी वची खबाई होती है।

[유월-]

पहले धर्मपत्रों को पदने की ओर सन बददा था, जय तक नेरात्य नहीं हुआ, जय पूरा नेरान्य नका आया, तो सन्त लोग देखे सुने आदि पदार्थों को, जानकर त्यांग कर देना कहते हैं।

#### § ११. अयोनिस सुत्त (९ ११) उचित्र विचार करना

पुरु समय कोई सिक्षु कोइाछ के किसी वन-काप्ट में विहार करता था। इस समय, दिन के विहार के छित्रे गये वस निष्ठु के मन में पाप-विचार उडने रुसे, जैसे —-काम-विचार, च्यापाट-चिचार, विहिता-विचार। येप बस वन-पण्ड में रहनेवाका देवता उस भिक्षु पर वसुबन्या कर बसबी हानेच्या से, उस को होत्त में के आपे के किये जहाँ वह सिक्षु वा वहाँ शया । बाकर सिक्षु से गावामों में बोक्स-

> बडीक सनय करते से बाय बुरे विचारों में पहे हैं इन बुरे बिठामी की धान जबित विचार सम में बातें। बुद्ध पर्य संघ में बदा रख सीक का पाका करते हुए को धानाम कीर सीविश्वक का सबस्य धान करते। उस माजन कीर सीविश्वक मानस कर होते हैं।

देवता के ऐसा कहते पर यह मिद्ध होस में बाकर सँवाय ग्राचा ।

# ६ १२ मञ्झन्तिक सच (९ १२)

#### अंग्रस्ट में भंजार

पुक्र समाप्त कोई सिह्नु कोदास्त्र के किसी वज्र-वज्य में विदार करता था। यत जस वन में बाध करनेवाका देवता खड़ी वह सिह्नु वा बढ़ी रुक्ता। आकर सिह्नु से पह राज्य कोका---

> इस भीच प्रुपहरिये में जब पक्षी बॉसके में डिए तबे हैं सारा जंगल,हाँच-बॉच कर रहा है सी मुझे दर सा बनाता है।

[मिसु--] इस वाच बुपहरिये में बाथ पश्चिमों बॉसको में किए गये हैं सारा बंगल फ़ॉब क्रॉब कर रहा ह सो मुझे बड़ी श्रीति होती हैं ॥

# **३ १**२ पाकविन्द्रिय सच (९ १३)

# त्रुराबार के द्वाप

एक समय दुरु मिशु कोहाल के किसी वब-राण्ड में विहार करते थे। वे वरे उदल उदण्ड पार परवारी पूरी गाँव करतेहाले शक्त असरमञ्ज आसमादित विद्यालक्ष्यिक और दुएकारी थे। तब उत्तर पत्र में साम करतेहाल देवता उन सिशुमों पर अनुस्ता कर उत्तरी सुनेप्य से उत्तर दोश में अने के किए कार्र वे निका से वहाँ वाया। काल्य उन सिशुमों से प्राण्य से सिश्चान से सोहा---

क्रियो ६ ६ ६ ५ 1

# § १४ वदुमपुष्यः सुस ( ९ १४ )

## विमा निच एण मेंचना भी खारी है

जक मामज कोई मिश्रु कोत्राल के किसी बन-खण्ड में विदार बरता था। जग मामज बह मिश्रु सिझारन से नाट भीतन कर केने के बाद पुरवरिणों में पेटहर एक दफ का गीर रहा था:

नों पुरु लकार की भीरी ही हैं। आरिय है आरिय है आप राज्य चुंद है ह

# दसवाँ परिच्छेद

# १० यक्ष-संयुत्त

## § १ इन्तक सच (ा॰ १)

#### **B**ATEST

पक समय मगनाम् राज्ञसूह में इष्ट्राक्कुट पर्वत पर इष्ट्राक्त वस के भवन में विद्वार करते थे । तब इष्ट्राक्त पक्ष कर्तों मगवान् से कर्तों भाषा । चाकर, भगवान् से गाया में बोका —

कप शीम नहीं है ऐसा हुए कहते हैं को यह सरीर कैसे पाठा है ! यह अस्पिपिक कहाँ से सादा है ? यह असीपिक कहाँ से सादा है ?

[ भगवान् — ]

पहुंचे कमक होता है कमक सं अस्तुद होता है कान्द्रद से नेसी नेता होता है पेसी फिर वब हो जाता है बन से कुट कम जोन सोट नक पैता है आते हैं को कुट कम जान था मोजन को माता बाती हैं को से से सकता पोण होता है—माता की कीय में वहें हुए सहुत्य का ह

#### § द सकसच्च (१०२)

#### उपवेश वेमा वन्यम गर्री

एक समय समाचाम् शालागृह में गुराक्तुत. पर्यंत पर विहार करते थे। एक शाक्त काम क दून वहूँ नाहों मगावाम् से वहाँ कामा । साकर स्वाचान् से गाया में बोध्य---विमारी सभी गोर्के कर गाई में स्वाधिताल कीर विमुख हुए, बार कमल को बार सच्छा और दि स्थानी की दल्लीन रहे किये हैं

भगवाय — ]

चक ! किसी बरह भी किसी का संचास हो जाता है तो जानी पुरूष के सब में असके गति अहतमार हो जाती है अभय जब ने को पूपरे को उपरेख देशा है उपरां कह जयन में बहीं पूचता जयनी अनुक्रमा अपने में बो पैदा होती है अ

# <sup>§ ३</sup> सचिलोम सुच (१०३)

श्विक्षोम यहा के महन इक समय भगवान् शया में कश्चित्तमध्य पर श्विक्षोम वस के थवन में विद्वार करते थे। इस समय धार और शुक्तिमा बास के शो वहा भगवान् के पास ही से गुक्र रहे थे। ं तव, जर यक्ष स्थिकोम यक्ष से बोका—अरे! यह क्षमण है! अमण नहीं, नककी अमण है। तो, जानना चाहिये कि यह सच्छुच में श्रमण है वा दोनी है। तब, स्चिकोम वक्ष बहाँ मगवाज् ये वहाँ आया। आकर, भगवाज् से अपने दारीर को टकरा टेना चाहा।

. भगवानु ने अपने शरीर को खींच छिया ।

तय, स्चित्नोम यक्ष भगवान् से वोला—श्रमण । सुझसे दर गये क्या ? भावस । तमसे में दरता नहीं, किन्तु तुम्हारा स्पर्ध अच्छा नहीं।

अस्या ! में तुमसे प्रश्न पूर्हेंगा । बदि उनका उत्तर तुस नहीं दे सके तो तुन्हें बदहवाश कर हूँगा, तुन्हारी छाती को चीर दूँगा, या पैर पकडकर गङ्गा के पार फेंक हूँगा ।

आबुत । में सारे लोक में किसी को ऐसा नहीं वेखता हूँ जो मुझे ववहवाश कर दे, मेरी छाती को चीर दे, या पैर पकडकर मुझे गङ्का के पार केंक दे। किन्तु ती भी, जो चाहे प्रक्ष पुछ सकते हो।

#### यिश-

रांग और हेव कैसे पैटा होते हैं ? उटासी, भन का लगना और भय से रॉगर्ट खड़ा हो जाना . इसका क्या कारण है ? मन के वितर्क कहाँ से उठकर खींच के जाते, जैसे कीचे को पकड़का कड़के लोग ?

#### िभगवान्—ी

राग और ह्रेप यहाँ से पैदा होते हैं,
दहासी, अन का हमाना का कारण यदी है,
मन के बिताई यहाँ से उठकर खीच छे जाते हैं,
शैंसे कींद्रे को पठकर लगके छोग ॥
हमेह में पड़कर लगने में पैदा होनेवाछे,
वैदे सराव की खाखताँ,
कामों में पसरकर पैछी,
जाता के साहुदा छठा के समान ॥
जो दसके दरपि-खान को जान छेते हैं,
वे उक्का उमन करते हैं, है पक्ष हैं खुनो,
वे ह्र सु सुर पारा को तार कर जाते हैं,
वे इस सुरूर पारा को तार कर जाते हैं,

६ ४. मणिभइ सुत्त (१०, ४)

स्मृतिमान् का सदा कल्याण होता है

एक समय नगवान् मगांच में मणिमालक चैल्य पर मणिमाद्र वक्ष के भवन में बिहार करते थे। सय, मणिमाद्र यक्ष जहाँ भगवान् ये पहाँ जावा । जाकर, भगवान् के सम्मुख यह गांवा योळा— स्मृतिमान् का सदा कल्याण होता है, स्मृतिमान् को मुख होता है,

स्मृतिमान् का सदा कल्याण द्वाता है, स्मृतिमान् का सुन्त होता है, वही श्रेष्ठ है जो स्मृतिमान् है, बार, वही वैर से छूट वाता है ॥ [मगग्रान् --]

स्युतिमान् का सन्ता कस्याण होता है एएतिमान् को सुन्न होता है वहीं क्षेत्र हैं जो स्युतिमान् हैं वह देंद संविष्टुक कुट नहीं जाता ॥ विस्तका मन पित-तार वर्षीमा में क्या पहता है समे के मति जो सहा मीत्री-माना करता पहता है जम किसी के साथ दि जो हट जाता ॥

#### ६५ सानुसूच (१०५)

षयोलय फरनेवाछे को यझ नहीं पीड़ित करते

ण्क समय सगवान् श्रायस्ती में अनाध्यिणिङ्क के जेतवन बाराम में विद्वार करते थे। अस समय किसी क्यांसिक का खालु वासक पुत्र वक्ष से पकड़ किया गया वा। तब बद्द बपासिक रोती क्वॉं बस समनु यह गांवा बोकी—

> अंभे कहेंगों की पूजा की अंधे कहेंगों की बाद सुनी बह में आज देगती हूँ—पस छोग सानु पर सकार है ब प्यूर्वमी पन्यदारी पस की कहारी धार प्राविद्वार्ष पस को अहोग बाद पाकरी हुई प्रपोत्तव प्रस्त कार्यों हुई जहोंगों की बाद सुवनेवाकी बहु में बाज देवती हुँ सानु पर पस सवार है ब

[यश—]

चतुर्राती परण्यश्यों पक्ष की जहारी और प्राविद्यार्थ पढ़ की श्रद्धार तत पत्कने उत्तरात पत्र राजने, तथा महत्व्यर्थ पाकनेवाच्यें क साथ पढ़ लोग ऐत-ध्यत नहीं करते कहन् केशा पढ़ी कहने हैं है पत्र का प्राची कहने हैं है पत्र का प्राची की हर बात का नह हो पाय-कर्म प्राच ना फिरकर कहि पाय कर्म करते हो तो तुर्वे हुन्य सा करते हो कहि हुन्य सा करते हिस्स कहीं हा सरस्थी

[गानु—]

मीं | पुत्र क मर आने क मानायें रोती हैं अथवा वरि आने पुत्र का नहीं देख सकती हों मों ! मुझे अनि देखती हुई की क्वाकर मेरे नियों है की हुई की

[माना—]

पुत्र के मर मान में मानार्थे होती है. कथना कींद्र मीते हुए का नहीं देख तदनी ही. कींट उसके दिन्हें भी में जीन कर और आना है. पुन, उसके लिये भी रोती है, जो महक फिर भी जी उठका है, ऐ साम ! कुम एक विषक्ति से निकलकर दूसरों से पड़ना चाहते हो, एक भरक से निकल कर दूसरे में मिरना चाहते हों, आमे पारे, बुदहारा कटवाण हो, जिसे हुम कह हैं? जावते हुए से कुलरापूर्वक निकले हुये को, प्यासम फिर भी लाल हेगा चाहते हो ?

#### § ६, पियद्वर सूत्त (१० ६)

विशाब-योनि से मुक्ति के उपाय

एक समय आयुष्यान् अञ्चछन्न आवस्ती में अनाधिपिण्डिक के जैतवन आराम में विहार करते थे।

उस समय आयुष्मान् अनुरुद्ध रात के भिनसारे उठकर धर्मपर्टो को पढ़ रहे थे। तब, जियद्वर माता बक्षिणी अपने पुत्र को यो ठॉक रही थी—

सत सोर अधायो, हे जियनर !
सिक्षु धर्मपदों को पड़ रहा है,
पदि इस धर्मपदा को कार्म
कोर आपणा करें तो हसासा हित होगा,
क्षीयों के मति क्यम पाँकें,
काल-मूक्तकर हाइ सत पाँकें,
कोर इस पिशाल-योधि से युक्त हो वार्षे।

### § ७. पुनन्त्रसु सुत्त (१० ७)

#### धर्म सबसे प्रिय

पुरु समय भगवान् श्रायस्ती में अनाथिपिण्डिक के जेत्रस्थन आराम में विदार करते थे। इस समय भगवान् भिक्षुओं को निर्वाण सम्बन्धी धर्मोपदेस कर रहे थे। भिक्षु भी । कान विये सुन रहे थे।

तब, पुत्रवेद्ध-भाता यक्षिणी अपने पुत्र को यां ठेक रही थी—

प्रतिक्षि । पुण रहो, पुत्रवेद्ध । पुण रहो,

कि में अंधे गुरू भारत्वाल पुत्र के घर्म को सुन सर्हू ॥

अग्रवाल सभी गाँठ से कृत्वेवाले निर्वाण को कह रहे है,

इस घर्म में भेरी अदग पदी घर रही है ॥

सरगर में अपना पुत्र प्यारा होता है, अपना पित प्यारा होता है,

मुक्ते इस धर्म की लीज उक्तमें भी चक्कर प्यारी है ॥

कोई पुत्र, पत्ति मा यिव हु जो से मुक्क पहीं कर सकता,

केंसे पर्म-अवन जीवा को हु की से मुक्क वर देवता है ॥

हु सु से भरे सक्तार में, जरा और मरण से लो,

करा भार मरण से मुक्ति के किए जिस जर्म का उदय हुआ है उस वर्म की सुवना चाहता हूँ । युनवस्तु ! शुप रही ॥

### [ पुनर्वेश्च — ]

र्से ! में कुठ न बोव्हेंगा बच्चरा भी जुप है दुस बर्मे भवण करों अमें का सुवना शुक्त है सब्दर्म को बाव हे में ! इस दु: प को इस देंगे ॥ सब्दर्म को बाव हे में ! इस दु: प को इस देंगे ॥ सब्दर्भ को बाव है की ! इस के समान, परनेका भगवाज जुब आती अमें परेख कर है हैं।

#### [मावा-]

मेरी काक संपैदा हुने हुन पण्डित पुत्र बण्य हो मेरा पुत्र हुन के सुन्न धर्म पर श्रन्त रफता है । पुत्रवेतु ! सुन्नी रही, श्रान में कपर वट गई, सार्थ-सत्ता का पर्शन हो गया एन्टरे ! हम भी मेरी बात सुन्नी ॥

#### §८ सुद्च सुच (१०८)

काशाधिपिष्टक द्वारा बुद्ध का प्रयम दर्शन

पुरु समय सरावान् राज्ञभूह के द्वीतवन में विदार करते थे।

अस समय अलाधिपिथिक गृहपति किसी काम से राजगृह में नाया प्रका या ।

समायपिष्डिक पृद्वपि न सुना कि संसार में हुद वश्यव हुने हैं। उसी समय वह मगवाय के वर्षन के किसे कामाधित को गया।

त्रव समाप्रपितिहरू गृहराति के मन में पैमा हुना—शास चक्कर समसान को हेचने का अध्य ममप नहीं है। का समय पर तमने देखने को चल्हींगा। हुद को बाद करते-करते सो गया। हुन्ह हो गया समय नहीं है। का में नीय बार कर गया।

तप मानाथिपिकिक गुरुपति नहीं सिववित-हार (हमशान का फादक) वा वहाँ गया ।

भ्रमतुष्पी में हुए जीव दिया। जब अनुमार्पिणियक सुद्राति के बनार में निकल्कों पर प्रकास हर नाना और अमेरा छा गाया। सब में बार करिनत हो गया उसके सेंगरे लखे हो गये। वहाँ से फिर कीड सारे की क्या सेने कारी।

। यह स्तान्मत हा गया उत्तक शगढ लड़ हागम । यहास (कर काढः - तव प्रतिकः यस कारपास कप से ही वास्य सुवाने कागः।

> सी कोई भी दायों भी वार्षेयाका रच प्रोती-साजियत के बुणकर पहले काल कन्यार्थ, ये सभी सुम्हारे हुम पुरू केन के साकार्थ दिवसे के भी बरावर नहीं हैं क मृह्सित | आगी को मुहस्ति | आगी वही स्माहा कारी करना ही अपना है भीड़े हरना नहीं 8

तव अनार्यापिकक सुर्वित के सामने से अन्यकार हट शवा और प्रकास फैक गया । सारा मंप बारन हो गया ।

मुनरी बार भी

सीमर्ग बार भी अनाविषिण्डक के. सामने से प्रकाल हुट गया और अन्यकार हा गया। भव से वह स्वस्थित हो गया, उमके रोगाटे पडें, हो गये। वहाँ में फिर खांट जाने की रूप्त्र होने लगी। तीयरी बार भी डीविक यक्ष अप्रयक्ष रूप में ही अब्द सुनाने लगा।

[पूर्वन ]

सम्हास आगे घटना ही अच्छा ह, पीछे हटना नहीं ॥

सब, अनाअभिष्ठिकः गृहपति के सामने म अन्यकार हट गया और प्रकाश फैल गया। सारा भव 'शान्त ही गया।

तय, अनाशविवित्रक द्वीत्रयन में बहाँ भगवान् ये यहाँ गया ।

उत्र मस्य भगवान गत के भिनमारे उठकर खुली जगह में उहल रहे थे।

भगवान् में अनाशविष्टिक गृहंपनि को दर ही से आते देगा। देगाकर, दहलने से रुक गये और विदे आसन पर घेट गये। वेदकर, भगवान् ने अनाशिष्टिक गृहशनि को यह कहा —सुदत्त । यहाँ आश्ची। अनाशिष्टिक ने था देग कि भगवानु मुझे नाम लेकर प्रार रहे हैं, रावे दनके चरणो पर गिर

यह कहा — भन्ते । भगवान ने तो सुराप्यंक सावा १

#### [भगवान:--]

मंत्रा हो क्षुत्र में मोता है, जो नित्याप और विश्वक्त ह, को कामें में दिए मही होता, उपाधिरहित हो जो शान्त हो गया है, सभी आपक्तियों जो वाट, हुउच के पटेंचा को दया, सामत हो गया सदस में मौता है. चित्र की शान्ति पास्त्र ॥

#### 8 ९. सक्का सत्त (१० ९)

#### शका के उपनेश की प्रशंसा

पुरु समाय भगवान् राजगृह के बेलुबन रुखन्त्रकनिवाप से विहार करते थे। " बन समय शुक्तां भिल्लुणी वर्षा भारी सभा के बीच धमापटेश कर रही थी। तप, पुरु वश्च शुक्तां भिल्लुणी के धमीपटेश से अत्यन्त मतुष्ट हो सदक से सदक और चाराहा में चाराहा पुन-पुनुकर वह गाथा बोच रहा था।

> राजगृह के छोगो ! क्या कर रहे हो, शहरू पीकर मस्त वने बेसे ? शुक्का मिक्षणी के उपरेवा नहीं सुनते, जी कम्मन-पर को परास रही है, इस जमरियानीय, निमा सेचे कोज से भरे, ( कम्मन को ) झानी छोग पीते हैं, राष्ट्री जैसे में के जरू हो !!

#### § १०, सुक्का सुत्त (१० १०)

#### धुका को मोजन दान की प्रशस्ता

एक समय गगवान् राजगृह के बेलुवन कलन्दकविवाप में विहार करते थे। उस समय कोई उपासक शुका भिक्षणी की भोजन दे रहा था।

तप द्वारा भिश्लेणी पर भएकमा शका राजनेपाला एक वदा सबक स राइफ भार चीराहा मे चीराहा धूम पूम कर यह गाधा वांक रहा था।

> महत्त भारी प्रच्य कवासा इस प्रशासन क्यासक में.

को प्रका को मोजन निया

जम का सारी मन्दियों से विमुक्त ही गई है। ६ ११ चीरा सच (१० ११)

चीटा की चीवर-राम की प्रशासा मेंसबब कमम्प्रक्रियाय में विद्यार करता थे।

वस समय कोई उपायक कारा मिशुणी का बीवर दे रहा था । तथ सीरा मिशुणी पर अस्वन्त मता रक्तांगका एक पक्ष सबक से सबक और चौराहा से चाराहा श्रूम-पूम कर पह शामा बास रहा माँ।

> बहुत भारी पुरुष कमाया इस महाबाग् उपासक न

को सीरा को बीबर दिया

क्स का सारी अन्धियों से विशुक्त हो गई हैं ॥

#### हु रैन बालवक सत्त (१० १२)

#### आश्चक समन

पेसा मैंने सना।

एक समय भगवान् आस्टबी में आख्यक यस ब भवन में विदार करते थे :

वय बाह्यस्य वश्च नगवान् सं बोबन-असल । विकल्प का ।

'मानुस ! बहुद अच्छा" कह सगराव शिक्स असे ।

भगव ! भीवर को मानो !

"भावुस ! बहुत अच्छा" कह सरावाद शीतर वर्ड वाचे ।

पासरी भारभी ।

दीसरी कार मी।

<sup>म</sup>मानुस ! महुत अपका कह मगवाम् मीवर चक्रे मावे।

बीधी बार भी व्याख्यक यक्ष बोका-व्यास ! शिक्क का । माधुस ! में नहीं जिनकता । तुन्हें भी करना है करी ।

भ्रमम ! में द्वारते प्रश्न पूर्वेगा । नदि उत्तर नहीं ने सके तो तुम्हें नवहनाश कर देंगा अरती नीर दुरिता का पैर पक्क कर शक्का के पार फेंक हुरिता।

मायुस ! सारे कोक में में किसी को वहीं देखता को सुक्षे वददशास कर दे, मेरी काली चीर दे, या पैर पक्षकर मुझं वाता के पार फेंक है। किन्तु, शुक्त जो पूक्षका है सके में पूछ सकते हो।

[पस--]

प्रकार का सर्वजेड़ जब नवा है ? नना परोरा हुआ सुख देता है ?

रतों में शबरी स्वावित क्वा है ह

कैया जीवा अंध कहा करता है 7

```
[सर्गवान-]
         ध्रज्ञा पुरुष का सर्वश्रेष्ट धन हे.
         षटोग हुआ धर्म सुग्र देता है,
          सत्य इसी में समसे स्वादिष्ट हैं.
         प्रज्ञा-पूर्वक जीना श्रेष्ट कहा जाता है ॥
[यथ-]
           थाइ को कैमे पार कर जाता है 7
          श्चमत को फेंग्रे तर जाता है ?
           कैमे पू.गो का अन्त कर देता है ?
          कैमें परिशुद्ध ही जाता है ?
 [भगवान्-]
           शर्दा में बाद को पार कर जाता है.
           भप्रमाद से समुद्र की तर जाता है,
           बीधे में इ एर का अन्त कर देता हैं.
           प्रजा ने परिशुद्ध हो जाता है ॥
  [यक्ष---]
            केमें प्रजा का लाग करता है ?
            धन को कैसे कमा लेता है ?
            केने कीति प्राप्त करता है ?
            सिश्रां को कैसे अपना होता है ग
            इन्द लोक से परलोक जाकर.
            केसे शोक नहीं करता १
   भगवान--
             निर्योण की प्राप्ति के लिये धर्दत् और धर्म पर श्रद्धा रख,
             भनमस ओर विश्वक्षण पुरुष उनकी शुश्रूषा कर प्रज्ञा लाम करता हैं।
             भनुक्ल काम करनेवाला, परिश्रमी, उत्पाही वन कमाता है,
             सत्य ने कॉर्ति प्राप्त करता है, टेकर मित्री की अपना लेता है,
             पेसे ही इम जोक से परलोक जाकर शोक नहीं करता ॥
              जिम श्रद्धालु गृहस्थ के ये चारो धर्म होते हैं.
              सत्य, वम, शति और त्याग वही परलोक जाकर शोक नहीं करता ॥
              हाँ, तुम जाकर दूसरे अमण और बाह्यणा को भी पूछो,
              कि क्या गला, उम, त्याम और क्षान्ति से बदकर कुछ और भी है ?
     [यथ-]
              अब भळा, दूसरे श्रमण शाक्षणों की क्यों पूर्टू ।
              आज हमने जान छिया, कि पारलीकिक परमार्थ क्या है,
              मेरे क्रयाण के लिये ही बुद्ध आलखी में पधारे.
               आज हमने जान लिया कि किसको देने का महाफल होता है ॥
```

इन्द्रक वर्ग समाप्त यक्ष संयुत्त समाप्त

सो मैं गाँव से गाँव, और शहर से शहर विचल्गा,
 छुद्ध और उन्हें धर्म के महत्त्व को नमस्कार करने ॥

# ग्यारहवाँ परिच्छेद

## ११ शक्र-संयुत्त

## पहला माग

प्रथम बर्ग

देवासुर-मधास परिश्रम की शहांमा

**६१ सुबीर सुन (२१ १ १)** 

एमा मैने छना ।

पुरु समार प्रमाशन आक्रम्भी में सत्ताधापि विद्युक्त के जेत्रवान स्थास में विद्युत करते थे। कार्त समागत ने सिद्धानों को सामन्त्रत किया-च्ये सिद्युक्ते (

'सबुरत 🎋 कड्कर मिझुओं ते सगदान को उत्तर दिवा ।

भारतास वाके-सिक्तुओं पूर्वकाक में स्मूर्त ने पूर्वे पर कराई की । तथ देवेग्द्र दाक ने सुवीर देवपुत्र की आमन्त्रित किया---वात ! में असूर त्रकों पर कराई कर रहे हैं। वास सुवीर ! जाओ जनग सामग करा । सिक्तुओं गत्र "अन्त्र । बहुत सक्का" कर सुवीर देवपुत्र ने दाल को कसर दं गाठकर विके रात ।

मिश्वभो । धूमरी बार भी

मिलुको । तीमरी भार भी वेषेत्रय द्याक ने सुर्वीर पंचतुक्र को । सुन्तीर वेषद्रक्र गरुकत किस रहा।

मिश्रुका ! इंडरत्र दाम सुचीर वेबपुत्र का गाया में बोका---

किया अनुद्वान भार परिकास किये जहाँ शुप्त की गासि ही नासी है रहुसीर ! तुम वहीं को जाओं सुद्ध भी वहीं से कमो ॥

[सुयीर-्]

आजमी काहिल जिल्ला कुछ भी नहीं किया नाता कैस सुत्री ह दाझे ! सभी कार्मी में सफल हान का वर हैं ॥

[-111-]

्रहर्में भाष्यमी पाहित्र भाषामा शुग्य पाता है। स्तुधीर हेलुम वर्षी वसे बाभी सुने भी वहीं रूपणी ॥

[म्सीर--]

है देवधेड हामा १ कमें छात्र जिला सुन्य का या कोब भीर परिवार्ता से सुर ऋति सेना वर में स [ সক্ষ ]---

यदि कमें को छोड़कर कोई कभी गई। बीता है, सो निवाण ही का मार्ग है, सुप्रीर ! तुम वहाँ आओ, महो भी वहाँ छे चरुगे ॥

िश्वां। यह देवेन्द्र क्या अपन पुण्य के प्रताप से प्रथमित्रत देवों पर ऐशर्य पा गत्य करते हुयें उत्पाद और ग्रीये का प्रयोगक है। मिश्वां। तुम भी, ऐसे न्यायात धर्म-विनय से प्रयक्तित हो उत्पाद-पूर्वे कर माहत से परिश्रम करो जवात की प्राप्ति के लिये, नहीं पहुँचे न्यान पर पहुँचने हे लिये, नहीं साक्षाकर दिने हा साक्षाकर करने के लिये, क्यों से तुन्हारी जीभा है।

### २. मुसीब सुत्त (११ १ २)

परिश्रम की प्रशंसा

श्रायस्ती जेनवन में।

वहाँ भगवान् ने भिक्षुओं को जामन्त्रिन किया-नै भिक्षुओं।

"अष्टन्त !" क्टकर भिक्षुओं ने भगवान को उत्तर दिया ।

भगवान् योक्षे — भिश्वश्रां। पूर्वकाल में असुरें ने देवां पर चश्रद्धं की। तम, देवेन्द्र हाझ ने खुसीम देवपुत्र को आसन्त्रित दिया [कोप पूर्ववत ]

#### §३ धजमा सुच (१२ १ ३)

वैवासुर-संश्राम, त्रिरत्न का महात्म्य

श्रावस्ती जेनबन में।

भगवान योळे-अक्षाओ ! पूर्वकाळ से एक बार देवासूर-सम्राम छिद गया था।

िश्वभी । तार, हैवेल्ट झक में त्रवांखात होक के देखों को आसान्त्रत किया—है सारियो। यदि रण-छुत्र में आप होगों को डर हमाने हमें, आप नाभित हो बादें, आपके रोगरे एपे हो बादें, तो इस समय में पर्धात्रण का अवहोकन करें। मेरे भवाग्र का अवहोकन करते ही आपका नाहर भय सहैगा। यहि सेरे पदमात्र को नहीं हैरा सके तो हैबराज ग्राजायित के भवाग्र का अवहोकन करें।

यदि देवराज प्रजापति के ध्वजाप्र को नहीं देख सकें तो देवराज बुरुण के ध्वजाप्र को

देवराज ईशान के ध्वाप्तप्र का अवलोकन करें । इनके ध्वाप्तप्र का अवलोकन करते ही आएका स्वारा भव जाता रहेगा ।

मिलुओ ! वेचेन्द्र दाक्ष के, वेचरान प्रआपित, चक्का, या ईशान के ध्वनाप्रका जनलोकम करमे से किरामा का भय जा भी सकता या और किरामा का नहीं भी जो सकता या ।

सी क्या ? मिछुओ ! क्योंकि देवेन्द्र शक्त अर्थातराम, अर्थातर्रेण, धर्वातमोह, भीर, म्यस्मित हो जानेवाला, घरदाकर माग जानेवाला या ।

मिश्रुओ । किन्तु, में तुम से कहता हूँ। मिश्रुओ । यदि वन में गये, खून्यत्मार में पेटे, या नुष्ठ-मूळ के तीचे बैठे तुमंद भय को , तो उस समय सेरा स्मरण करो—वैसे भगवान अहँत, समयक्, समुद्ध, विष्मा और पत्म से सम्यक्, सुमति को प्राप्त, कोरुविद्, अनुचर, पुरुषों को उमन फ्रस्तों में सारभी के सुक्य, उस्तावों और समुगों में खुद्ध, मानावा हैं।

सिक्षओं ! मेरा स्मरण करते ही तुम्हारा मारा मय चला जायगा ।

सयत्त-निकाय

यदि मरा नहीं तो धर्म का स्मरण करो-भगवान का धर्म स्वास्थात ( = अध्यो तरह वर्णित ) गांददिक (= देपार ही दराते फन पंनेवासा ) अधाकिस (=विना तेरी के सफक होनेवासा ) किसी की भी बाँच में पारा उतरनेवासा निर्वाण तक से आनेवाला और विश्वों के द्वारा अपने मीतर ही भौतर ज्ञामा आने वास्य है।

भिन्न मो ! पर्म का बमरण करते ही तमहाश साहा अस चन्ना आध्या ।

यदि धर्म का नहीं तो संब का स्मरण करो-सगवान का आवक-संब सुप्रतिपन ( = अच्छे सार्ग पर भाकत ) व भाजपतिपद्म ( ≃नीचे मार्ग पर भाकत ) है जाल के मार्ग पर भारत है। जबित हम से मारा पर भारत इ.जो यह पुरुषा का चार ओहा. बाढ पुरुष हैं " । यही मरावान का शावक-संघ विमन्त्रण करन के धारत है सन्कार करने के बीरव है जान बेन के बीरव है। प्रशास करने के बीरव है। संसार का समुत्तर पुण्य-सम्र है।

भिन्न भी ! मेप का स्मरण करते ही तुम्हारा गारा भव चका जावगा ।

मा क्या ! सिशको ! क्याकि तथागत आईन सम्बद्ध सम्बद्ध बीतराय बीतहेप बीतमोई माय और रह है।

भगरान न वह कहा । यह व्यक्त श्रुव में किर भी कहा-

अ रुप्य में या क्रम्न के भीचे है जिल्लाओं ! वा धान्यागार में सरका का स्मरण करी नकारा भव वार्टी रहन पायगा ॥ मोक्क्षेत्र मरोत्तम क्या का कवि स्थारण के करी का मोसदानक सुरेशित बर्म का स्मरण करो ॥ माञ्चनावक मुदेशित धर्म का बन्दि स्मरण व करी ता जनचर पुण्य-क्षेत्र संघ का स्मरण करो त शिशका ! इस प्रकार युवा चर्म का शंव के स्तरण हा श्रद अहरियत हा अना या रीजास्य सभी चना जायगा व

> **८ ४ वेपचित्रि स्त** (११ १ ४) शमा बीर मीजम्य की महिमा

धायस्ता जनसङ्गं में।

भगवाब बाले---भिश्वाता ! पूजकाल में देवाम्। गंगाम विव गया था ।

तब असरेन्द्र राजनित्ति ने असरी का आमन्तिन किय'—मारियो । वदि इस देवासुर-संप्राम में मसुरी का जीन आह. देवीं की दार दा जाव नी देशका द्वाम की दाम पैर और बाँच बन्बमी से बाँबकर भारतपर हैं हैर बाल क आधा ।

भितासी । देवत्व दाज में श्री बयस्थित मोक के देवीं को आमन्त्रित किया-साहियो ! वदि देग देवाम्रा-अंप्रास में देवा की जीन और अस्ता की द्वार दा जावा ती अस्तिन से सेंच श्रामनी में बायबर रायमी समा में मेर वास म आता ।

जिल्लामा र प्रता जांबाम से देवों को प्रता और बासों की दार हारे ।

भिभूमी ! तक मेथी के अगुरन्त्र चप्रतिक्ति का तक में पालवाँ जन्मण बात सुचामा सभा में देशम् द्वाम द पाग ने भागा ।

विश्वाभी र स्वर्शन्तिका भवतित्र गरे हैं। वॉबर्ट क्षत्र्यक में बँध रह वेबेर्ट्स लाग की सुध्यमा-मम्म D देल और बहाँ स विकर्ण भगाय गरी बचनों स सालियों देश था ।

सब बिशुभा । जानूनि योगपत में देवेग्द्र राज का गामा में करा---

र रेपप्पील पुरास्त्री अनुस्थारे अन्य प्रार्टियाने नवा पर की प्राप्त ही बाद की हा परे 11 151 61

7

हे झक ! क्या आपको डर रुगता है ? क्या अपने को कमजोर देखकर सह रहे है ? अपने सामने ही वेपचित्ति के, इस कड़े-कड़े शब्दों को सनकर भी ?

[शक---]

। न भय से और न फमजोरी से, में वेपीविश्व की वार्त सह रहा हूँ, मेरे जैसा कोई विज ऐसे मुर्ख से क्या मुँह लगाते जाय !

[मातिक-]

र--! मूर्व और भी वह जाते हैं, यदि उन्हें दया देनेवाला कोई नहीं होता है, क्सलिये. अरडी तरक दण्ड दे. थीर मुर्ख को रोक दें ॥

হিল—ী

-] मूर्श की रोकने का में यही सबसे अच्छा उपाय समझता हूँ, को इसरे को गुस्साया जान, स्मृतिमान् रह झान्ते रहे ॥

[मातिल---1

है ब्राह्मवा । आपका यह सह लेमा में बुरा समझता हूँ, क्योंकि, मूर्ज इसमें समझने लग जायगा, कि मेरे भय ही से यह सह रहे हैं, मूर्ज और भी चहता जाता है, कैसे हैंक भाग जानेवाले पर ॥

ছিল —ী

उसकी इच्छा, यदि वह यह समझे या नहीं. कि मैं उससे दरकर उसकी बातें सह रहा हैं. अपने को उचित मार्ग पर रखना ही परमार्थ है, क्षमा कर देने से बदकर कोई दखरा गुण नहीं ॥ को अपने युष्ठी होकर हर्वक की वार्त सहता है. उसी की सर्वोश क्षान्ति कहने है. स्यंक तो सदा ही सहता रहता है।। यह यही निर्येख कहा आता है, विसका यल मुखीं का वरू है. धर्मात्मा के वल की निन्दा करनेवाला कोई नहीं है ॥ जो मुद्ध के प्रति कुछ होता है, वह उसकी बुराई है, कुद्ध के प्रति कोध न करनेवाला, दुर्जेय सम्राम जीत लेता है ॥ दोनं। का हित करता है, अपना भी और पराये का भी. दुसरे को जो फ़ुद्ध जान, सावधान हो शास्त रहता है ॥ जपने और पराये दोनों का इलाज करनेवाले उसे. धर्म न जाननेवाछे पुरुष 'मुख्" समझते हैं ॥

सिक्षुओं ! वाह वेबेन्द्र शक अपने पुण्य के प्रवाप से जमस्त्रिक पर ऐस्वर्ष पा, राज्य काले हुये क्षानित केर सीकच्य का प्रशस्त्रक हैं। विद्धुवाँ ! सुम भी पैसे स्वास्थाल धर्म-विनय में प्रज्ञीत ही क्षमा आर तीकच्य का क्षमान करते तीभी

## ६ ५ सुमासित अय सुत्त (११ १ ५)

#### समापित

भाषस्ता में।

मिल्लाओं ! पूर्व काक में एक बार दंशासुर-संप्राम किए गया था !

त्र असुरेन्द्र वयिषित ने देवेन्द्र शक की यह कहा--- है पेवेन्द्र | सुप्त वचन वोक्रनेवाके की ही बीन हों।

हाँ संयुक्ति है ग्राम क्वन बोकनवाक की ही जीत हो ।

मिश्रुकी ! तक देवीं कार अधुरों में मध्यस्य चुने—यही सुमापित वा तुर्मापित का फैसका करेंगे !

मिश्चभी ! तम असुरेन्द्र योपश्चिश्च में इंडेन्द्र सक का यह कहा—से वंडेन्द्र ! कोई गामा की ! मिश्चका ! उसक ऐसा कहने पर एकेन्द्र एक न अधुरेन्द्र पंपणिति को यह कहा—से बेपणिति ! आप हो वह देव हैं आप हो पहले कोई गाया कहा।

सिश्वभी ! इस पर अनुरेश्व सेपचिक्ति यह गाया बास्त-

मूर्व और भी वह बात है यदि उन्हें इका देनेवास्त काई नहीं होता हं इसकिने सकते तरह त्रवह वं धीर सूर्व को शेक दं॥

तिश्वर्षा ! असुरम्ब-चेपश्चित्ति के वह गावा क्वन पर असुरों ने वसका अनुसादन किया; कियाँ इंच सब बुलवाप रहें !

मिश्चमो ! तत अञ्चरेन्द्र लेपश्चिति ने द्वन्त्र सन्तका यह कहा — दे देवन्त्र ! लड बाप कार्र गाथा करें।

मिश्रमा । उसक पेमा कहने पर देवेन्द्र ताल वह गाया बीका---

मूर्यं को रोजने का मैं यही सबसे अंच्छा उपाण समस्ता 🕻 को मुम्पं को गुम्माया जाग मानवानी से सान्य रहे ॥

मिश्चना ! नेवेन्द्र राज्यक यह शामा कहने पर नेवों ने बमका अनुसादन किया; किन्तु सब अग्नुर पुरुषार है !

मिश्रणी ! तव देवेण्य सकते असुरणा संपक्षित्ति को यह कहा-सेपसित्ति ! काप कोई गाया कहें ।

विविधित्ति—1

है बामन | आपना सह कमा में युरा समझता हैं, क्योंकि मुर्च इसस समझन क्या जापगा कि मरे अब हो स बहु सह रहें हैं;

सूर्य कीर भी कहता बाक्षा है जैस बैक भाग जानेशाल पर ॥

भिश्वभा ! असुरेन्द्र योपश्चिति क सह गावा वहनं पर अशुरों वे असका अनुमादव किया; विन्युं इंच चुप रहे ।

मिशुओं ! तथ अनुरेत्र यंपिकित्ति ने इवन्द्र दाल' का वह कहा-द देवन्त्र ! अब साप कार्र साथा करें !

मिशुमा ! कराक गया बदन पर न्येग्य शक में धून गांधाओं पर बदा--

उसकी इच्छा, यदि वह यह समझे या नहीं,

दिखो पूर्वसत्री

मिश्रुओ । डेबेन्ट्र शक्ष के गाथार्थे कहने पर देवा ने उनका अनुसोटन किया, किन्तु, सब असुर खण्याप रहे ।

भिक्षको । तय, देवां ओर असुरा के मध्यस्य ने यह फैमला दिया---

वैपचिति अमुरेन्द्र ने जो गायार्थे कही है, सो घर-पकड और मार की बातें है, झगड़ा और तक-गर अवनिवाली है।

अर, देवेन्द्र क्षक ने जो गाथायें कही है, सो धर-पकड और मार की वासे नहीं है, झगड़ा और सकरार बदानेवाली नहीं है।

वेबेन्द्र शक की सुभापित से जीत हुई।

भिक्षभो। इस तरह, देवेन्द्र शक की सुभाषित से जीत हुई थी।

#### ६६. कलावक सत्त (११ १.६)

#### धर्म से जाल की विजय

श्रावस्ती में !

आवस्ता प : भिक्षओ ! पूर्वकाल में एक बार देवासुर-सम्राम छिंद गया था ।

भिक्षको । उस समाम में असुरों की जीत और डेबों की हार हुई थी।

मिक्षओं । हार काकर, देव उत्तर की ओर भाग चके और असुरी ने उनका पीछा किया।

मिश्रमी ! सघ. देवेन्द्र शक मातळि स्वश्नाहक से गाथा में बोला—

हे मातिक ! सेमर बुध में छने बोमके.

रथ के धरे से कहीं जुच न आयाँ.

अक्षरों के हाथ पडकर भरे ही प्राण चले जायें

किन्तु, इन पक्षियां के घोंसके बुध जाने न पार्वे॥

मिक्कुओ ! "जेंसी आजा" कह मातिकि ने तक को उत्तर दें हजार सीखे हुने घोड़ोबाले रथ को कींग्रया।

भिक्षुत्री । तथ, श्रञ्जरो के सन से यह हुआ — भरे । देवेन्द्र दाक कर रथ लीट रहा दे। साल्द्रस होता है कि देव श्रमुरों सें फिर भी युढ़ करना चाहते हैं। अस बरकर से श्रञ्जरपुर में पैठ गये।

भिक्षओं ! इस तरह, देवेन्द्र शक की धर्म से जीत हुई थीं।

### § ७. न दुव्मि सुत्त (११ १ ७)

#### घोखा देना महापाप है

थावस्ती में ।

भिक्षुओं। पूर्वकाल, प्कान्त में ध्यान करते समय देवेन्द्र झान के मन में यह विनर्फ उड़ा---जो मेरे झानु हैं उन्हें भी मुझे घोसा देना नहीं चाहिये।

भिक्षुओं । तब, असुरेन्द्र चेपचिचित्र देवेन्द्र शक के वितर्क को अपने चित्त से आन, जहाँ देवेन्द्र

दाक्र भावहों आया।

शिक्षुओं ! डेवेन्द्र हाझ ने अधुरेन्द्र विपवित्ति की दूर ही से आते देखा । देखकर, अमुरेन्द्र चेप्-चित्ति से कहा—वेपवित्ति ! उद्दरी, तुम गिरफ्तार हो गये । मारिप ! कापके चित्र में जो अभी था उसे सत छोड़ें। सेपचित्र ! घाटा कमी तेते का सीगण्य खा छा।

विपविक्ति--

का ब्रुद्ध भारते से पाप कराता है वो सन्यों की निंदा करते से पाप कराता है, निंभ से ब्राह्म करने का को पाप है महत्त्वकता से को पाप कराता है उसे बही पाप करों है सन्नाह के पति ! को तुम्बें घोला है।

## ६८ विरोचन असरिन्द सच (११ १ ८)

#### सफल हाने तक परिधान करना

भावस्ती में।

बस समय जानाज् दिन के विदार के कियं नटे जान कर रहें ने 1 यम देनेजर सक और क्सुरेन्ज वैरोसन वहीं भगवाज् ये वहीं आने ( आकर एक-एक किया से से क्ष्मी खड़े गो गये।

तव अभूरेन्द्र वैट्राचन भगवान् के सम्प्रूच वह गावा बीका-

पुरुष तब तक परिश्रम करता जाव कर तक वहेरून सफक न हो जाप सफक होने से ही उद्देश्य का महस्य हैं पैरोकान पेसा कडता है ॥

যিক—ী

पुक्र तम तक परिजय करता वाण वस तक उद्देश्य सफक न हो वाय सफ्त होने से ही बदेश्य का महरन है क्षान्ति स बदकर दूसरी कोई चीब नहीं ॥

[बेरोबन--]

सभी बीच के कुछ न हुद्ध वर्ण हैं वर्षों नहीं जबनी जरित-मर, धरवाहनक मोजन तो सभी प्राप्तिया का है सक्क होने से ही वहेंस्य का महत्त्व हैं विरोधन पेसा कहता है व

[ दाक:— ] सरनी बीच के जुळ न कुळ नर्थे हैं कार्नेन्द्रों जपनी सक्ति पर जन्मकादकक भीतन द्वा परने मानक दोने से दो चरेत्व का महत्त्व है कानिन से जनस्य पूर्ण कोई भीत नाहीं व

## § ९. आरञ्जकहसि सुत्त ( ११.१.९ )

## जील की सगन्य

थावस्ती में

भिक्षुओं ! प्रांकाल मं कुछ क्षीलवन्त और सुवार्मिक ऋषि वन-प्रदेश में पर्ण-कुडी बनाकर रहते थे ।

भिक्षुओं । तस, देवेन्ट दाक और असुरेन्ट वेपचित्ति बोनो जहाँ वे शीलवन्त और सुर्धाप्तक क्रापि थे क्रार्में गरे ।

भिक्षुओं । तव, असुरेन्द्र वैपाचित्ति वहे कम्बे जूतै पहने, तलवार कटकाये, ऊपर छन्न हुलवाते, अग्र-द्वार से आक्षम में पैठ उन शीलवन्द और सुधार्मिक ऋषियों का अनावर करते हुये पार हो गया।

भिक्षुओ ! और, देवेन्ट हाझ जूते उतार, तरुवार दूसरों की दे, छत्र रखवा, द्वार से आश्रम में कैर तम कीलवन्त और क्षाश्रामिक क्षपियों के सम्माख सम्मान-पूर्वक हाथ जीडका खडा हो तथा।

भिक्षओ ! तब, उन शीलवन्त और सुधार्मिक ऋषियाँ ने वेबैन्द्र शक को गाथा में कहा-

चिरकाछ से बत पाठने वाछे क्रिपों की गन्ध, हारीर से निकछकर हवा के साथ बात्ती है, हे सहस्त्रनेख | यहाँ से हट जा, हे देखराज ! फपियों की गन्ध वरी होती है॥

[হাজ---]

प्रस्कार से मत पाकनेवार्ड परिवर्षों की राज्य, हारीर से निकटनर हवा के साथ अर्छे ही जाय, शिर पर पारण किये दुरानियत फूठों की माला की तरह, भारते ! इस राज्य की हमकी साह वरी रहती है, देवों को पह पान्य कभी असर नहीं सकती है ॥

### § १०. समुद्दकहिस सुच (११ १ १०)

#### जैसी करती बैशी अग्रजी

धायस्ती में ।

मिश्रुओ ! पूर्वकाल में कुछ झीलवन्त और सुवामिक ऋषि समुद्र-तट पर पर्य-कुटी यनाकर रहते थे।

भिक्षुमो । उस समय देवासूर-सग्राम जिहा हवा था ।

मिश्रुकी ! तव, उन श्रीकवन्त और सुचार्मिक ऋषियों के मन में यह हुआ —देव पार्मिक हैं, असुर अथार्मिक हैं। असुरा से हम कोगों को भी भव हो सकता है। तो, हम कोग असुरेन्द्र सम्बद्ध के पास चककर अनवगर माँग कें।

भिक्षुयो । तन, वे ऋषि—जैसे कोई बळचान् पुरुष समेशी बाँह को पसार रे और पसारी बाँह को समेर के बैसे—समुद्र के तर उन पर्ण-कुरी में अन्तर्थान हो बसुरेन्द्र सम्बर के सामने प्रकृट हुये ।

भिछुनो । तम, उन ऋषियां ने असुरेन्द्र सम्बर को गाया में कहा— ऋषि छोग सम्बर के पास आये हैं, अभय दक्षिणा का याचन करते हैं, जैमी इच्छा बेसा दो, अमय या भय ॥ [सम्बर—]

भावियों को असप नहीं है जिस वर्षों की संवा शक किया करता है भागव बर माँगवेवाके न्याप सोगों को मैं भाग ही देता हैं ॥

भगत कर जीतनेशाले हमको सब हो ने रहे हो लखारे इस विवे को इस स्वीकार करते हैं तुन्दारा अप कभी न सिट ॥ जैसा क्षेत्र शेवता है वैसा ही फर वाता है पुरुष करवेवाकों का करपाश और पाप कानेवाकों का अकरबाज होता है

र्रमा बीज को रहे हां फल भी वैसा ही पामीने ब सिक्षको ! तह वे सीक्षक भीर सुर्थासिक कपि जसुरस्त्र सम्बर को शाप दे-कैसे कीई वकवान पुरुष - असुरेन्त्र धानवर के सम्मुख अन्तर्धात हो समुत्र के सर पर पर्ण-कृतियों में प्रकर हुने ।

सिक्षत्रों ! कन सुपियों क साप से असरेन्द्र सकदर रात में दीन बार चींक-वींनकर उनता है ।

प्रथम वर्ग समाप्त

## द्सरा भाग

## द्वितीय वर्ग

#### § १. पठम वत सत्त ∡ा१२२१)

राक के सात वत, सत्पुरुप

श्रावस्ती मैं।

सिश्रुको । वेदेन्द्र दाझ अपने सनुष्य-जन्म में सात वसों का पालन किया करता था, जिनके पालन करने के कारण दाझ इस इंस्ट्र-पट पर आरूत दुआ हैं।

कोन से सात वत १

(१) जीवन-पर्यन्त माता-पिता का पोपण करूँ ता, (१) जीवन-पर्यन्त कुछ के जेंडा का सम्मान करूँ ता, (१) जीवन-पर्यन्त माता-पिता का पोपण करूँ ता, (१) जीवन-पर्यन्त कमी किती की खुराछी नहीं करूँ ता, (४) जीवन-पर्यन्त सकीणेता और कजूसी से रहित हो गृहस्थ-वर्मका पाठन करूँ ता, त्यार-सील कुछ हाथाँवाछा, जान-रत, दूसरो की माँगें पूरी करनेवाळा, और वॉट-चूटकर भोग करने वाला होईता।
(१) जीवन-पर्यन्त सरवाडी रहूँ ता, और (७) जीवन-पर्यन्त क्रोप नहीं करूँ ता। यदि कसी

क्रोध उत्पन्न हो गया तो बसे शीव ही द्या हुँगा। भिक्षको । वेबेन्द्र क्षाक्ष अपने मनुष्य-जन्म में बन्धीं सात बतों का पाटन किया करता था, जिनके

> भावा-पिता का जो पोपण करता है, कुरू के जोठा का जो आवर करता है, जो अपूर जीर क्ल आपण करता है, जो जुगकी नहीं खावा, जो कज़्मी से रहित होता है, सरवक्का, कोच को क्याता है, जयकिंत कोक के देव, बसी की सरपुरण करते हैं॥

## § २. दुतिय वत सुत्त्र (११२.२)

रम्द्र के सात नाम और उसके वत

थाचस्ती जेतचन में ।

पालम करमें के कारण वह इस इन्द्र-पद पर आखद हुआ है।

षष्ट्राँ, भगवान् भिक्षुको से थोले — भिक्षुको । देवेन्ड ठाम्न अपने पहले समुष्य-जन्म में मध नामक एक साणवक था। इसी से उसका नाम मधवा पडा।

भिक्षुओ । वेवेन्द्र शक अपने पहले मनुष्य जन्म में पुर ( =शहर )-पुर में दान देता था। इसी में उसका नाम परिन्दद्व पदा।

भिञ्जुओं । सत्कार-पूर्वक क्षान दिया करता था। इसी से उसका नाम झन्न पड़ा।

भिक्षुओं! भावास का दान दिया था। इसी से उसका नाम वास्तव पडा ।

भिद्धकों देवेन्द्र शक सहस्र वादों के सुहर्ग को एक बार ही सोच रेता है। इसी से उसका नाम सहस्राध्य एका। [सम्बर—]

ऋषियों को जगन गड़ी है जिल दुष्टों की सेवा वाक किया करता है

भस्य वर सौँगनेवाके भाग कोगों को मैं सब ही देता हूँ ॥

[ ऋषि—]

-भमन-बर माँगतेवाले इसको भय ही ते रहे हो गुन्हारे हम दिने को हम स्वीकर करते हैं गुन्हारा सब कसी न मिटे ॥ जसा बीज रापता है देसा ही एक पाता है गुन्य करनेवाकों का करवाज भीर पाप करनेवालों का अवस्थाय होता है

पुण्य करनेवाजों का करवाज भीर पाप करनेवाओं का अकश्याण होता है जैमा भीज वो रहे हां फक भी वैसा ही पाशारे ॥ मिशुओं ! तब वे बीसवन्त और सुधीर्मिक कपि मसुरेन्त सरवार की साप है—जीसे कोई

ासक्षमा । तम व साध्यमन्त्र धार सुन्यासक्त्र कार्य समुद्रान्त स्वत्र स्वत्र साय हे—मार्स कार्य वक्तमन्त्र प्रस्य — मार्स्स्य अन्यत्र के सामुक्त काराचाँग्य हो समुद्र के तद पर पर्यं-कृदियों में मुक्त हुवें। सिमुक्तों ! तम क्रांपियों के साथ से समुश्चित स्वस्थार राग से तीन वार कींक्र वीडकर उठता है !

प्रथम वर्गे समाप्त

भिक्षुओं । त्रप्राध्या लोक के देवों को समझाते हुए देवेन्द्र दास यह गाथाये वोला— युद्ध में जिसकी अद्धा अचल और सुप्रतिष्ठित है, जिनके जील अच्छे हैं, पण्डित लोगों से मर्वासित ॥ सच में जिसे अद्धा है, जिसमें नमझ सीधी है, बह दरिद्ध नहीं कहा जा सकता, उमी का जीवन सार्यक है।। इसलिप् श्रद्धा-सील, प्रसाद और धर्मग्रदों में,

पण्डित लग जावे. ब्रुक्ता के उपदेश का स्मरण करते ॥

### ६ ५. रामणोध्यक्ष सत्त (११. २ ५)

#### रमणीय स्थान

श्राचस्त्री जेतसन में।

तय, देवेन्त्र इत्क अहाँ अगवाम् ये वहाँ आया, और भगवान् का अभिवादन कर एक ओर सवा हो गया।

एक और खड़ा हो, डेवेन्द्र शक सगवान् से बोला--भन्ते ! कौन जगह रमणीय है ?

#### [भगवान्—]

आराम चैत्य वम-चैत्य सुनिमित पुष्करिणी,
मनुष्य की रमणीयता के सोइचाँ माग भी नहीं हैं ॥
गाँव में या जगल में, यटि नीची सगद में या समसस पर,
जड़ों अर्टन विहार करते हैं वही श्रमणीय बगह है ॥

§ ६. यजमान सत्त (११२६)

#### सांधिक दान का महातस्य

एक समय भगवान दाकागृह में शृद्धकुट पर्यंत पर विदार करते थे। सन, देवेन्त्र हाम, कहाँ भगवान् थे वहाँ आया, और भगवान् का अभिवाजन कर एक और खड़ा हो गया।

पुक और खड़ा हो देवेन्ट शक भगवान से गाथा में बोला-

जी समुच्य यज्ञ करते हैं, पुण्य की अपेक्षा रखने वाले.

भीपाधिक पुण्य करने वालों का,
 दिया हुन। कैसे सहाफलपट होता है ?

[भगवान्—]

चार मार्ग-प्राप्तक और चार फल-प्राप्त्

बही ऋजुमूत सब है, अज्ञा, शील और समाधि से युका ॥ जो ममुख्य यज्ञ करते हैं,

जी पुण्य की अपेक्षा रखने वाले हैं,

छ स्रोतापत्तिःमार्गः, सकृदागामी मार्गः, अनागामी मार्गः, अईत्-मार्गः । ो स्रोतापत्ति-मार्गः, सकृदागामी फलः, अनागामी फलः, अर्धत-फलः ।

भिक्षे । वेदेन्त्र शक्त को पद्दके युद्धाणाम की समुख्यमा भावाची । इसी से उसका नाम सद्भागित पदा।

भिञ्चला । देवेश्व सक अपक्षित वैवकोक का पेशवर्ष पा साथ काला रहा । इसी से असका माम वैधेन्त्र पत्रा ।

शिय सात वर्षों का वर्जन पूर्व-सम्र के समान ]

## **८३ सक्षिय वस स**क्त (११ २ ३)

इस्त्र्के नाम भीर सत

पुषा मेंने सना।

पुरु समय भगवान धैद्याङी में महायन की कृदागारहारका में विदार करते है।

त्र सहास्ति सिक्तस्त्री जहाँ यगवान् वे वहाँ मावा और सगवान का समिवादन कर एक मोर् वैद गया।

एक और वट सङ्ख्यि छिक्छनी भगवान से बोकाः—भन्ते । भगवान् ने देवेन्द्र शक्त को पैका है ?

हाँ सहादिर ! मैंने वेबेन्द्र ताम को बेब्हा है।

भन्ते | अवस्य यह कोई वृत्यस शक्त का वैस वसकर आया हाता । भन्ते ! देवेग्द्र शक्त की कोई वहीं देव सकता है ।

महा(छ | में हाक को बानता हूँ। यार उन पर्मी को भी बानता हूँ दिनके पाकन करने से वह इन्य-नदपर आक्रम हुन्या है।

[ चन के भिक्र नामों का वर्णन हु २ के समान; बीर सात बताँ का वर्णन हु १ समान ]

## § ४ दलि**६ हुच** (११ २ ४)

तुम सक्त वृध्यि वर्षी

एक समय भगवान् राज्ञग्रह के वेखुबन कमन्त्रपतिवाप में विदार करते ने ।

वहाँ मारवान् ने मिशुओं को जामन्त्रित किया "हे मिशुओ ! "मदन्द ! कहकर मिश्रकों ने भगवान् को बत्तर निया !

नगवान बोस्ने—शिक्षाओं ! वर्षकाक में इसी राजायुद्ध में एक लीव कुक का यू खिवा वरिम्न पुकर वास कराय था। वन्से हुव के करविक कोनीनत्तर में वादी कादा की गई। वन्से वांक विश्वा त्याग कीर महा का वाममास विका। देशके ककलका करि कीर कर महा वार्ष के साथ वाद वाद वार्यां देशकों में वरण की महा करवा की मान हमा की करवा देशकों में वरण की मानति की मान हम्या। वह वृत्यों देश से वर्ष की वार्या देश कीर करवा हो।

मिश्रुको । बार से कपरित्रंस के देव करते में विवादते में और उसकी विद्या बकाते से । वका कारवर्ष है ! बका मदसूत है !! यह देवपुत्र वपने सञ्चय-कार में एक औन कुक कर हुकिया परित्र पुत्रे था। वह करीर कोवकर मर वाले के भाव नवाकिस वेवकोक में बरनक हो मुगति को माम हुआ। वह

बूसरे देवों से बर्ग बीर पक्ष में बना चना रहता है।

मिशुभी ! तान वेदेण्य साळ ने वार्याक्षस कोक के देवों की आमनिका किया—मारियों ! जान इस देवपुत्र में मान कुछें ! जानने मानुष्य कम्म में इस देवपुत्र की तुज्ञ के जारविष्ठ आमें विनाद में नदी बजा हो गई भी ! उससे सीक विच्या स्थापा कींद्र प्रकार कर करवास किया ! दूसी के फलस्तकूप सारि की दूस मार जाने के बाद यह वार्याक्षस देवालीय में जारवास दो सुगति की मास हुत्था ! यह दूसरे देवों से वार्य और पास में बाद पदा पदास है !

```
११. २. ९ ]
```

[शक**—**]

मुझे प्रेविय लोग नमस्कार करते हैं, ओर ससार के सभी राजे,

भार, उत्तने बदे प्रनापी, चारी महाराज भी ॥ के बन शालपायनी को जो चिरकाल में ममाहित है.

भी क्षीक में प्रविचन हो चुके हैं, नमस्कार करता हूँ,

जो ब्रह्मचर्य-वन का पाउन कर रहे हैं ॥ जो प्रण्यान्या गृहस्य है, घीलबन्त उपासक लोग,

धर्म से अवनी की की पीसने है, है माति है में उन्हें नमस्कार करना हूँ।

#### [ मातिल- ]

लोक में वे यह महान् हैं, शक्त । जिन्हें आप नमस्कार करते हैं, में भी वन्ते नमस्कार करते हैं।

मधवा ऐया कह कर,

हेवराज सुजम्पति, मभी ओर नमस्कार कर, बह प्रमुख रथ पर सवार हुआ।

## § ९. दतिय सक्तमम्सना सत्त ( ११ २. ९ )

सर्वश्रेष्ठ ब्रह्म की नमस्कार

श्रायस्ती जेनचन में ।

' पूर्ववत् ]

दे सिश्चलो ! तत्र, टेवेन्द्र नाक वेजयन्त प्रामाट में उत्तरते हुए हाथ जोड़कर भगवान को मनस्कार कर रहा था।

भिश्वको ! तब, मातलि-संबाहक देवेन्द्र शक में गाया में बीखा-

निम आपको हे बासव ! देव और मनुष्य नमस्कार करते है,

भक्ता, ऐसा वह कीन जीव है, है शक ! जिसे आप नसस्कार करते है ?

### [হাল—]

ने भभी सम्यक् मरहद, देवसाओं के साथ इस छोक में, अनोम नामक जो बुद्ध है, मातकि ! उन्हीं को नमस्कार करता हू ॥

जिनका राग, होप, और अविद्या जिट चुकी है, जो क्षीणाश्रव अर्देत हैं, है मातकि ! उन्हीं को नमस्कार करता हूँ ॥ जिनने रागद्वेप को दबा, अधिका को हटा दिया है,

को अग्रमच श्रीस्य हैं, सावधानी से अन्यास कर रहे हैं, हे मातलि ! मैं उन्हीं को नमस्कार कर रहा हैं।

#### मात्रलि—ी

लोक में ने बने महान् है, शक ! जिन्हें आप धमस्कार करते हैं, में भी दन्हें नमस्कार करूँगा, वासव ! जाप जिन्हें नमस्कार करते है ॥ चन भीपाधिक पुण्य करने वाला की संघ क लिए दिव गये दान का सहायक होता है ॥

§ ७ बन्दना सुच (११२७)

वद बलामा का श्रंग

भावाली जलवन में

दम समय भगवान दिन के विकार के किमें समाजि समावे के वे है

तन इंदेन्स दाक और सहस्यति नहा वहाँ समझाण्ये वहाँ लाय । आजर, एक-एउ किवाप से कम लाई हो गये ।

तव देवेग्द्र सक्र भगवान् के सन्मुख यह गाया बासा---

है कीर विकित्तनंत्रासा ! वर्ड आपका सार वदर जुका है आप पर काई अपन गई। इस साक से विकास करें आपका विकास करें कीर परिवास की शरू को कीर ॥

र्वन्तः । हुद्धः की बन्दमा इस प्रकार नहीं की बादी हैं। देवन्तः ! हुद्धः की बन्दमा एंस करनी वातिया।

> है थीर विकित्तनंत्रास ] करें परम-गुड, अल-मुक्त ] कोज में विकरें भगवान् धर्म का उपदेश करें सम्बन्धिताल जी क्लिंगे =

## १८ पटम सक्कमनस्सना <u>श</u>त्त (११ २८)

वीलवान भिन्न और शहरवें को नमस्कार

भायली जन्म में ।

संस्थान यह बात--सिशुओ ! पुनकाक में द्वरंत्र सक न सांसक्ति-स्प्राह्य का धाननित किया । मत माताल ' इक्का मिलाव हुव चाड़ों स जीत मेर रथ को तैवार करो । वर्गाच को सैर करने क नित्र मिकतम बाहमा है।

'महाराज 1 र्जिन' आजा' कह मानस्थि श्रीप्राहक ने पेषेण्य शक्त को वश्चर ने इस को सेनार पर सूचना ची-मारिच ! तथ नेतार है अब जाय को बाटें ।

भिम्ना । तथ प्रेन्त्र सक वैजयस्य प्रामाप् स जनसमे हुये हाथ आपकर सभी दिसाओं की मनाम् कर्ण लगा ।

## तीसरा भाग वनीय वर्ग

#### शक-पश्चक

#### § १. झत्या सुच (११. ३, १)

#### कोध को नए करने से सुख

धायस्ती जेतवन में।

तम, हैमेन्द्र द्वाम प्रको भगवान से मरो आया, और भगवान का अभिवादन कर एक और खड़ा ही गया।

एक और खड़ा हो, हेबेन्ड शक्त सरावान् से गाथा से बोला--

क्या नष्ट कर सुध्य से मोता है, क्या नष्ट कर श्रोक नहीं करता ? किय एक धर्म का बच्च करना सीतम की रचता है ?

#### [ सगवान ]

मोप को नष्ट कर सुरत ने मांता ह, फ़ोध को नष्ट कर शोक नहीं करता, है बामव ! पहुले मीढा रूपने वारो विच के सरू फोध का, वय करना पण्डिमों से प्रशसित है, उसी को नष्ट कर जीक नहीं करता ॥

## ६ २. दुव्विण्णिय सुत्त (११. ३. ०)

#### क्रोध न करने का गुण

थायस्ती जेतवन में 1

भगवान, योलं—भिक्षुत्री । पूर्वकाल से कोई यीना यदक्य पक्ष देवेन्द्र शक के लासम पर पैठा ।
 सिश्चभी । उससे प्रयक्तिंत लोक के देव कृदते थे, विद्यक्ति थे, और उसकी किरली उचाले थे—
 आहचर्य है । अदभुत ए ।। कि यह याना यदक्य यक्ष देवेन्द्र शक के लावन पर देता है ।

भिश्वभी । जैसे जाये प्रथित्वां लोक के देव कृदते गये, वैसे वैसे वह यक्ष अभिरूप=द्दांनीय=सुन्दर होता गया ।

भिक्षुओं । तथ, सयस्त्रिश छोक के देव अहाँ देवेन्द्र, शक या वहाँ बाये, बाँर यह घोले--

सारिय ! यह कोई पूसरा थीना वटकर बच्च आप के आसन पर वेटा है। सारिय ! सो उससे प्रयोजिस कोठ के देव कुटले, विस्तकों हैं, ऑर उसकी विषक्ती उसारी हैं—आप्तयरें हैं ! अब्दुसुत हैं !! कि वह सीना उपकर यात देवोज्य इस के आसन पर बैटा है। सारिय ! वैसे-जैसे अवर्षिक्त कोच के देव फुटने हैं, वैसे-वैसे पह यह अधिसक=ज्युकीर्या=अपुरुर होता पाला हैं

मारिष ! तो क्या यह कोई कोध-सक्ष यश है ?

भिक्षुओं । तब, देवेन्द्र शक बहाँ वह कोध सक्ष यक्ष था वहाँ गया। जाकर, उसने उपरनी को

मचना ऐसा कह कर देवराज सुकस्पति भगवाम् को समस्कार कर वह प्रशुक्त रथ पर सवार हुआ ॥

#### § १० सतिय सक्नवस्मना सूच (११ » १०)

मिश्च-संघ को समस्कार

भाषस्ती जंतवन में।

भगवान वोके--- ।

निश्चाबो । तत्र देवन्त्र सक्त वैजयन्त प्रासाद स उत्तरते हुने दाथ बांचकर सिश्च-मंत्र को नम स्कार करवा था ।

मिश्रुको ! तक मानक्षि संप्राह्म प्रान्त सक सं गाया में बाका-

उक्त आपको यही कोम समस्कार करत गर्ने सरीर मारज करने शक्ते ये पुत्रव क्रमत में जो नृते रहते हैं! स्प्रा और प्यास से जो परसाम रहते हैं ॥ है बामन | क्रम कार्य में च्या गुग वेक्स है ? क्रिपोर्स के बाक्स कहें अरुवारी नात में सर्नेगा ॥

[शक---]

हे मार्गाक है इसीकिये में हुन वेबर बाकों की है को करता हैं।
विम गाँव को ने कोईत है जिया किसी अपका से कर देते हैं
कोरी में ने क्रम कमा नहीं करते न हाँकी में नीर न तीना में
कारों में ने क्रम कमा नहीं करते न हाँकी में नीर न तीना में
क्षमी वार्त की मान्या करने को गांने है से हान्य करते मान्या पर वार्त में
क्षमी वार्त की मान्या करने नो ने ने वीर तुप साम्य रहने ना के ब वार्त को अमुर्त से निरोध है आर्थि ! मानुष्यों (की भी निरोध है)
किन्तु, व विशेष करने वार्कों में भी निरोध नहीं करते
दिशा कोए गान्य वहते हैं की नाक संस्था में निरा कुछ किये
है सम्बन्धि ! में बनाई नो समस्कार करता हैं (ध

क्रिसीय वर्ग समाप्त

र माता की कान्य में जो बन महीने पड़े रहते हैं--- अड़कथा है २ पिह्मिन्यना शुक्त देन कर क्या करते हैं है

लिया। तम्, यद्गीसञ्ज नृस्ये सिक्षुके पान्य अपना अपराध न्यीकार कर क्षमा माँगने गया। फिल्हु, वह किल क्षमा नहीं करता था।

नय, कुट भिक्षु जहाँ भगवान् थे वहाँ आये, और भगवान का अभिधादन कर एक भीर बैट

गये। एक और घंट, उन भिक्षुओं ने भगवान् को करा---

भन्ते ! दो भिक्षका में कुछ अन्यनः ।

भिश्वको । हो प्रकार के मुर्ज होते हैं। (1) जो अपने अपराध को अपराध के तौर पर नहीं देखता है, और (२) जो दूचरे को अपराध स्वीकार कर लेने पर क्षमा नहीं कर देता है। भिश्वको । यही ही प्रकार के मार्ग होते हैं।

भिक्षुओं । हो प्रकार के पण्डित होते हैं। (१) जो अपने अपराध को अपराध के तार पर देख लेता है, (२) जो दूसरे को अपराध स्थीकार कर लेने पर क्षमा कर देता है। मिक्षुओं। यही दी प्रकार के पण्डित होते हैं।

भिनुभी। प्रकाल में देवेन्द्र शत ने प्रथम्बिश लोक के दो देवों का निपटारा करते हुए बह गाभा कहा था---

क्रोध तुरहारे अपने बता से होये, तुरागरी सिताई से कोई यहा ख्याने न पाये, जो निन्छा करने के योग्य मार्ग उपनंधी निन्दा सत्त करों, आपम की जुगाठी स्रत खाओ, स्रोध नीय पुरुष की, पूर्वन के ऐसा बर चन कर हेता है ॥

#### § ५. अकोधन सच (११. ३ ५)

#### कोध का त्याग

ेपा मैंने सुना।

एक समय भगवान आत्रस्ती में अनाथिपिण्डिक के जेनखन भाराम में विद्वार करते थे। मागाय वोले---विद्वाशी। पूर्वकाट में हेवेन्द्र शक ने सुध्यमी नमा में दो ववर्षिश देवी के कड़ का निवदरा करते हुए वह नाथा कहा था।

> हुन्हें क्षीध उवां सत है, फ्रीध करनेवाले पर क्रोध सत करों, अफ्रोव ऑर अधिक्रिया, पण्डित हुक्यों में सदा धसती है, क्रोध मीच हुक्य की, पबंत के ऐपा जूर-चूर कर देता है।

> > शक-पञ्चक समाप्त संगाथा वर्ग समाप्त ।

पुरु कम्पे पर सैमाक इक्षिण बालु को प्रथ्वी पर देक क्ष्रोध प्रकृत पक्ष की और हाथ कोक्कर तीन वार अपना नाम शुरुाया —

मारिएों में उद्देश्य शक्त हैं।

मिहाली ! प्रेन्ट्र पार वेशे-वेशे व्यवना नाम सुवाता यया वैशे-वैसे वह यक्ष अविकाधिक वर्डण भार वाना होना गया । कोना और वर्डन्ट हो वर्डी कलायीन हो शयर ।

मिशुमी। तब वेपेन्द्र शास अपने अन्यन पर वेस वर्षीस्त्र के देवों की शान्य करते हुए यह गाया वीला---

> सरा विश्व अन्तर्भ ववदा नहीं जाता है भैवर से पदकर से वदक वहीं जाता हूँ। सर काव विश्व बहुत समामा गीछ गया मुह्मसे भग्न काव रह वहीं गया । न काव करना भार न कहोर वचन कहना हूँ सार न करन गुन की गाता विस्ता हूँ सि वदने का मैचम से स्थाना हूँ भग्ना प्रसाव देशते कुछ ।

## § ३ माया सुच (१०३३)

#### सम्बर्ग मावा

ध्यापस्ति म ।

भगवान् वान-विशुधाः । पूजरातः मैं तक बार अनुरन्द्र चंपश्चित्ति होत-प्रस्त वदा वीमार हो गया था।

सिद्धाः। तव दक्त्य द्वाहः कर्षे अमुरन्त्र संपश्चिति वा वहाँ बसवी कोव एवर केन गया । मिद्धानी । अमुरन्त्र पेपिक्षांस ने एकेन्य द्वाम का दूर ही ने अपने देखा। देखकर देवेन्त्र दानें म सामा—देवेन्द्र । असे इन्यान करें।

यंपन्त्रिति ! सुमै सम्प्रश माया ( =वात् ) क्यो ।

म रिप ! ता में भ्रमरों य मनाष्ट्र कर हरें ।

नियुधी ! तक अनुस्त्र यपश्चि के अनुसा स सजाह करने लगा-सारितो ! क्या में वर्षेण दार्थ की सरवरी माया कता है !

नहीं मारित । भाव नवन्त्र राज का बाहरारी प्राचा मत बतावें ।

मिश्रुणी । तथ अगुरेन्त्र वंपविक्ति देवेन्त्र बाग्र श शाला में बीला---

हैं स्वयं शत व्यस्ता, मुद्रश्यति । साम (=बाष्) यस्ते में बोर तस्त्र शिल्ला है रीक्टी वर्ष नक महस्तर कण्या ॥

## <sup>६</sup> ड अगय सुच (१५३) ४)

भगगाध सीर शास

भाषानी हैं। इस अंसर पी निष्ठनों में पुढ सनवन हो गया था। उससे एक सिद्ध ने अवना असाप समन

दूसरा खण्ड निदान वर्ग

दृगग खण्ड <sub>निदान वर्ग</sub>

# पहला परिच्छेद १२. अभिसमय-संयत्त

पहला भाग

बुद्ध वर्ग

#### § १. देसना सत्त (१२. १ १)

#### प्रतीरय समस्पाद

ऐसा मैंने सना।

एक समय भगवान श्रावस्ती में अनाथिपिण्डिक के जेत्रवन भाराम में विदार करते थे।

वहाँ भगवान ने भिक्षओं को भामन्त्रित किया—है भिक्षओं !

"भदन्त !" कह कर भिक्षओं ने भगवान को उत्तर दिया ।

भगवान बोले-शिक्षको । प्रतीत्व समुत्पाद का उपदेश करूँगा । उसे सुनी, अध्ही तरह मन मे स्त्राओं, में कहता हैं।

"भन्ते ! प्रहस अच्छा" कह, शिक्षओं ने सगवान की उत्तर दिया ।

भगवान योळे--शिक्षको । प्रतीत्वसमूत्वाद क्या है ? भिक्षको । अधिवा के होने से सस्कार होते है। संस्कारों के होते से विज्ञान होता है। विज्ञान के होने से नामरूप होते हैं। नामरूप के होने से पहायतन होता है। पहायतन के होने से स्पर्श होता है। स्पर्श के होने से येदना होती है। बेदना के होने से एप्पा होती है। त्रणा के होने से उपादान होता है। उपादान के होने से भव होता है। भव के होने से जाति होती है। जाति के होने से जरा, भरण, शोक, रोना-पीदना, बु या, वेचेनी और परेशामी होती है। इस तरह, सारे द्र ध-समूह का समुदय होता है। जिक्षको । इसी की प्रतीत्य समस्याद कहते है।

उस मिवद्या के विल्कर इट और रुक आने से सस्कार होने नहीं पाते । सस्कारों के रुक जाने से विज्ञान होने नहीं पता । विज्ञान के एक जाने से नामरूप होने नहीं पाते । नामरूप के रक्त जाने से पड़ा-यतन होने नहीं पाता । पहायतन के रुक जाने से स्पर्श होने नहीं पाता । स्पर्श के रुक जाने से वेतना महीं होती। बेहना के कह आने से तृष्णा होने नहीं पाली। तृष्णा के एक जाने से उपादान होने गहीं पाता । उपादान के रुक जारे से भव होने नहीं पाता । भव के रूक जाने से जाति होने नहीं पाती । जाति के रूक आमें से म जरा, न भरण, न क्रोक, न रोजा-पीटना, म व.स. न बेचैंनी और म तो परेकाजी होती है। इस तरह, यह सारा दुःख-समृद्द रूक वाता है।

भगवान यह बोले । सहार होकर भिक्षको ने भगवान के कहे का अभिनन्दन किया ।

§ २. विभक्त सच (१२ १.२)

प्रद्वीत्य-समृत्पाद की व्याख्या

धावस्ती में ।

· भगवान बोछे---भिक्षुओ । प्रतीत्य-समुखाद का विभाग करके उपटेश कर्हों गा । उसे समी. अरही तरह सम में लाओ, मै कहता हैं।

"मन्ते ! बहुत अध्या" कह मिझुओं ने भगवान् को जत्तर विधा ।

भगवान् पोछ---मिश्चमो ! प्रतीस्य समुत्याव् न्या है ! मिश्चनो ! सविवा के द्वाने से संस्कार होते

है। दिवबर् दिस तरह सारे तुःल समृद का समृदय होता है।

सिश्चमा रे और जरा अरण क्या है ? बो उमन्दर्ग जीवों के उमन्दर्ग सामियों में बूडा हो बाता पुरिनेषा हो बाता पाँटों का ट्रट जाना बाक सफंद हो बाता हिर्दियों पढ़ बाती उसर का बारसा और इंग्रियों का सिषिक हो बाता है, इसी को कहते हैं 'जरा'।

जो उत-पन सीवों के उत-पन पीनियों से दिसक पहचा उपक पहचा कर कामा अन्वपानि है इ.ना पुत्यु मान कहा कर बावा स्टम्पों का फ्रिक-निक्ष हो बाना चोका को छोड़ हैना है; हमी की कहते हैं 'सरण'। ऐसी यह है जरा चीर ऐसा यह है सरण। सिह्मवों [ हमी को जरासरण कहते हैं।

सिद्धभा । इत्तरि स्था है ? को उल-उल बीकों के उल उल बोलियों में करन खेला पैदा हो कामा वका माना भावर मान्द्र हो बाला स्टब्यों का मादुर्मीय जायतमां का मिठकाम करता है; सिद्धमी ! इसी को करते हैं बाति ।

मिश्रुमो ! प्राय क्या है ! मिश्रुको ! मब तीन मकार के हाते हैं । (1) काम सब ( स्वाप्त-कोक मैं कमा रहना) (\*) क्य सम ( स्वरुकोक में बना रहना ) और (६) करूप-सब ( करूप-कोक में बना रहना ) । मिश्रमो ! इसी को कार्ये हैं 'सब ।

िमसुधी । उपादास क्या है ? बयादास कार मकार के हैं । (1) कास-बयादास, (२) (सिन्धा) प्रदेश्यपादाल (१) श्लोकत्रय-क्यादाल और (४) कास्मचाद क्यादाल। सिद्धको ? इसी को वहरे हैं क्यादालः।

मिम्रुनो | कृष्णा क्या है ? मिम्रुना ! तृष्य का प्रश्नार की है । (१) क्य-तृष्या (१) सादनृष्या (१) राज्य-तृष्या (१) सा-तृष्या (५) राज्ये-तृष्या और वर्स-तृष्या। सिम्रुनो ! इसी को कहते हैं "तृष्या"।

िम्हासा | येदाना क्या है ? मिहाओ | नेप्या कः मकार की हैं ! (1) कहु के संस्पर्ध से होनेवाकों वेदना (2) ओन के संस्पर्ध से होनेवाकों नेदना (1) आन के संस्पर्स स होनेवाकों वेदना (9) तिक्का के संस्पर्ध से होनेवाकों वेदना (4) काना के संस्पर्स से होनेवाकों नेदना और (4) अन के संस्पर्स से हाने-वाकों नेदना | शिक्षाओं | इससे को वहते हैं 'अद्युवन'' |

मिल्लगं। स्पर्धं क्या धं । मिल्लगं। स्पर्धं कः प्रकार के हैं। (1) क्यु-संस्पर्धः (२) क्रोत-मंस्तर्भः (३) क्राय संस्पर्धः (०) क्रिक्क-संस्पर्धः (५) क्राया-संस्पर्धः (व) सक-संस्पर्धः (निल्लक्षः)। इसी को कड्डठ दें "स्पर्धः"।

सिक्षुओं । पङ्गायतल नना व १ ( ) चहु-स्थावतन (१) क्षोत्र आयतन (३) आग-स्वावतन (७) विद्वार-स्थाततन (५) कावा जायतन और (६) अन स्थावतन । शिक्षुको | दुल्ही को बहुत हैं "चदावतन"।

सिम्हण | नामक्य क्या है ? बेबुना संज्ञा बतवा एस्से और सम में बुछ ध्याव । इसे 'नाम' वहत है । बार सहायूनों को केनर की क्या होते हैं जुसे 'क्य'' क्यते हैं । इस तरह यह बास हुका बीर यह रूप दुमा । सिम्हणा ! इसी की कहत हैं बासत्य ।

मिद्रभी ! सिद्रांत क्या है ! सिद्रामां । विश्वाल का तकार क हांचे हैं। (१) क्यु-विश्वाल (१) भाग-विश्वाल (१) प्राव-विश्वाल (७) तिक्का-विश्वाल (५) काय विश्वाल और (६) मलोविश्वाल। मिद्राओं! इरोप का बदरें हैं किश्वाल ।

भिश्वभी ! संस्कृत नवा है ! भिश्वभी ! संस्कार तीव प्रकार के है । (१) वाव-संस्कार (१) वाक्-सन्कार (१) विश्व-संस्कार । सिश्वभी ! इसी की कहने हैं "संस्कार" ।

निश्चानी ! अधिया क्या है ! मिश्चमा ! जो तुत्रम की नहीं जानता है . जो तुत्रम-समुद्रम को नहीं

जानता है, जो हु ख़-दिसोध को नहीं जानता है, और जो हु क निरोध-गामिनी प्रतिषटा को नहीं जानता है। मिनुको । हसी को कहते हैं "अधिया"।

भिक्षओ । इसी अधिया के होने में मन्तार होते हैं ।

,[पूर्ववत्]। इस तरह मारे टु ध समृह का समुख्य होता है।

उन्न अविषा के विल्हर इंट और रक बाते से सस्कार होने नहीं पाते । [ पूर्ववत ] इस तरह, सारा हु खन्तमूह रुक जाता है ।

#### § ३. पटिपदा सुत्त (१२ १. ३)

#### विष्ट्या-सार्व और सत्य-सार्व

श्रावस्ती में।

भगवान् योट--भिक्षुओं । भिष्या-मार्ग क्या हे और मध्य-मार्ग क्या है इसका में उपनेश कर्तना । उसे सनी, अच्छी तरह मन में व्याओं, में कहता हैं।

"भन्ते । यहस अच्छा" यह, भिक्षको ने भगवान का उत्तर दिया ।

भगवान घोले---

भिक्षुओं। भिक्ष्या-मार्च पया है ? भिक्षुओं। अविचा के होने से सस्कार होने हैं। इस प्रकार, सारें हु ख-समृद्ध का समुदय होता है। भिक्षओं। इसी को कहते हैं 'भिष्या-मार्ग'।

सिक्षुको । सत्य-मार्ग क्या है ? उम अविद्या के विस्कुछ हट और रुक जाने से सरकार होंगे नहीं पाते } इस प्रकार, सारा ह फ-समूट रक जाता है । भिक्षको । इसी को कहते हैं 'सब्द-सार्ग' ।

## ९ ४. विपस्सी सुत्त (१२. १. ४)

निपश्यी बुद्ध को प्रतीत्य समुत्पाद का श्रान

क

आबस्ती में।

सराबाद बोर्ड—निश्चली। शहेत सम्बन्धसमुद्ध भगवाद विष्यस्ति को खुदाव काम करने के पहले. बोशिसात हाते बुदा मान में बहु इला—हात्य । यह कोक कीते बोर हु त से पड़ा है। वैटा होता है, बुदा होता है, मर जाता है, मर कर किर कम्म के केता है। और, करासरण के इत हु त का खुटकारा सही जातर है। अहें। कक्ष में क्षांसरण के इत हु त का खुटकारा सही जातर है। अहें। कि में क्षांसरण के इस हु त का खुटकारा सही जातर है। कहें। कि

भिञ्जानी ! तय योधिसस्य विप्रस्ती के मन में यह हुआ-किसके हीने से जरामरण होता है,

वरामरण का हेतु क्या है ?

भिक्षुको । तब, बोधिसस्य विष्यस्सी को अच्छी तस्र चिन्तन करने पर प्रशा का उदय हो गया ।] जाति के होने से जसभरण होता हे, वाति ही जसभरण का देतु है ।

भिद्धाओं । तत, वोधिसरन विपयसी के मन में यह हुआ—िकसके होंने से आर्ति होती है, जाति का हैतु नया है । निद्धाओं । तय, वोधिसाल विपस्सी को अच्छी तरह धिन्तन करने पर प्रशा का उज्य हो गया । भव के होने से जाति होती है, मव ही बासि का हेतु है ।

किसके होने से भव होता है, अब का हेतु क्या है ? उपादान के होने से भव होता है,

उपादान भव का हेतु है।

তিয়ক होनेसे उपादान होता है उपादान का हेतु बना है ? সুজো के होने से हपादान होना है नृष्या ही उपादानका हुतु है।

·· किमके हानम नृष्णा होती है नृष्णा का दत्त क्या है ? वेदनाके हामेसे नृष्णा होती है

बेर्ना ही नृष्णा का दन् है।

कियक दोलमें केन्द्रवा दोनों के बण्याका देनुक्या दे । स्परीके दोनेस वेन्द्रना दोनी है स्परा दी चेन्द्राका देन द ।

" फिसर हातम क्याँ दीता है क्यांका हेतु क्या है है व्यवस्थानके होमने स्पर्ध होता है परायमत हो स्पर्धना हेते हैं।

हिमड़ होनेस पदायतन होता है चहायननका हेनु नया ह है। शासकपके होनेसे वदा

बतन दोना है, नामस्य ही परायतन का हेन है।

किया के जानका का प्राथमिक करते हैं। किया होने में नामका दोना है नामका का दंतु नेपा है है विज्ञान के दोनेमें नामका दोना है विभाग ही नामका हो ते हैं।

भिष्य होने में विज्ञान होता है विज्ञान का क्ष्यु क्या है है। संस्कारों कहाने में विज्ञान होता

र्ट संस्कार ही विज्ञान का देन है।

िक्या है। बजान कर बहु है। किया है। में में गेंदबार हान हैं जंगकारों का हुनु वंपा है। विश्वमा के होने से मंग्वमार होते हैं भविता ही संस्थार का हैन है।

'इल वरह अविवाक हानेन मेन्यार हात हैं। संस्कारोंके हाने स विज्ञान है। इस प्रकार

मारे काम-ममुद्र का समयब हाता है।

भिन्नुको 'मनुष्य समुद्य ----प्या वाधिमार विद्यम्मी का यहम कमी नहीं सुन गये वर्जी में बधु बन्दक हा गया ज्ञान वन्दक की गया अना बन्दक की गई विद्या उन्पत्र का गई, काडीक उन्पत्त हो गया।

#### Ð

नियुष्टी । तव वाधियाव विदारमी के सन में यह हुआ—कियक नहीं हात से अराजरण नहीं इत्ता ह निमाने तह दाने व जासरन तक जाता है ?

िरमुखा | तक कावित्तार (तिमुक्ति) का अवसी तरह विस्तव करन वर प्रमा का उत्तव हो गया । अर्थि के नहीं हाने से जरामराण नहीं होता है आनि के एक आमे मे बरामराण रफ आमा है ।

[प्रतिनास का से पूरवन् ]

भिनुमी । तम वासिमान क्रिक्टों का अपनी तरह जिलान करने पर बता का करव ही तथा । भविधा के नहीं हाने न गरिवार नहीं हाते हैं अधिया के एक जाने से संस्कार एक करने हैं ।

मा अन्या के रफ भाने से मेरवार रच काने हैं। मंदवारों के रफ काने में विशास रफ प्राना है।

्रा प्रकार सारा पुत्र शस्त्र क्ष जाना है।

जिनुसा । "प क मना एक जाना — जना शोदिनात्व विषयनो का वर्ष्ट कशी नहीं तुने गरें बजों में बाहु प्रचल का नवा साथ जाना क्षेत्र माशा अवक हो गई विचा उपक हो गई आलोक प्रपत्न हो गया।

नार्ती पुढ़ी व माच नेता ही सबझ जैना चाहिए।

> ५ शिमी गुच (१३ १ ५)

िननी पुष्य का संशील नागुन्ताय का बान

बिश्वर्थ । मर्देश मानव सावृत्त मंतवाम् तिर्था क्षेत्र मान वाले के पहले ( पूर्वदर)

[ १९७

**६ ६. चेस्सभृ मुन (१२.**१६)

वैध्यभ वद्ध की प्रतीत्य समृत्याद का वान

जिल्लां । भगवात्र वेश्यम् हो ।

६ ७-९, मच-चय (१२ १ ४-९)

र्तान यहां की प्रतीत्य समुत्याव या पान

श्रिक्षणी ! भागवान अनुसारका, फीणागामन, कारूबण की बुक्क काभ परने के बहुतक ।

\$ १०, गोतम सच (१२ १, १०)

प्रतीरय समुःपाट-पान

事

मिक्षुओं। मेरे युद्धाव-लाभ करने पे पाले, यांविसनय राहते हुये, सन में यह हुआ [पूर्ववत्] भिक्षुओं। 'समुदय, समुत्रव'— ऐया मुठी पहले दभी नहीं मुने याये धर्मों में याधु उपका हो गया, नाम उपना में गया प्रका उपन्न हो गहें, जिला उत्तरा हो गई, लालीन उपला हो गया।

रव

..प्रतिस्टीस-पदा

सिञ्जलो । 'उक काना, रुक काना'— ऐमा मुझे पहले कभी नहीं सुने सबे धर्मी में साकीक इरक्त हो गया।

युक्त-वर्ग समाप्त ।

### द्सरा भाग

#### भाद्वार वर्ग

## **६१ आहार सुत्त** (ंर<sup>२</sup> २ १)

#### प्राणियों के आहार और उनकी उत्पत्ति

पैसा मैंचे सुना।

भास्यती में ।

पक समय मगवान् शावसी में अनुष्यिपिकिक के जेतवन भारत में विदार कारी थे। सगवान् वैकि-भिन्नको ! कामे प्राधिनों की स्विति के किये या क्षमा केने वार्कों के सद्भार

के किसे बार आहार⊕ हैं। कीम के बार ? (१) कीर बाका— व्याक वा सक्ता (१) स्पर्श (६) सन की बेतना

कींग से चार ? (१) कींद बाका — ज्यूक था स्वस्य (१) स्पर्स (१) सन की चेतना (= Volition ) जींद (२) विश्वान : सिद्धानो ! क्रमसे प्राप्तियों की विवक्ति को क्रिया, बा क्रम्स केमें वार्चों के बनुप्तस् के किन्ये नहीं चार ब्याहार हैं !

मिद्भुजी ! इन बार माहारों का निवास क्या है 😑 महादय क्या है 🖷 🛊 कैसे पैता होते है=उमका

प्रमाथ चचा है है

इन बार बाहारों का निवान गुण्या है सञ्जूबन शुष्टम है। वे तृष्टम से पैवा होते हैं। इनका प्रसंब रूपना है।

निम्नुयो ! गुप्पा का मित्रान क्या है ? समुद्रक थवा है ? यह कैसे पैया होती है ? उसका प्रमंत क्या है रिप्पा का विदान वेदना है जम्बद्ध वेदना है। यह वेदना सं पैदा होती है । बसका प्रमंत्र वेदना है।

वेषण का विदान स्वतः है ।
स्वतं का विदान व्याप्ततः है ।
प्याप्ततः का निदान कात्रस्य है ।
प्याप्ततः का निदान कात्रस्य है ।
गामक्ष्य का निदान संख्यान है ।
विकास का विदान संख्या है ।
संस्कारों का विदान क्षिता है ।

प्तमा क्षेत्र के किया के दोने से संस्थार होते हैं। संस्थारों के दान से विद्यान होता है। इस तरह भारे क्षान्य-समझ का समूचन होता है।

कर जाति कुल्यानपुर्व कर नाजुबन द्वारता है। कस अविद्या के विश्वास हट और एक जाने में शंस्कार करू काते हैं। इस तरह सारा हुन्य समझ क्ला आता है।

## <sup>§</sup> २ फग्रुन सुत्त (१२ २ ०)

नार माहार मीर समझी बरपशियाँ

 अगवाल् वीके—लिखुवी ! जनमं प्राफिर्वो की किति के किये था जम्म केने वाकों व रिवे वार आहार है ।

उनके देह से अपना पण आहरण करते हैं इतकिये ने आहार नदे जाते हैं---अइयमा !

[पूर्ववत्]

भिश्नको ! यहाँ चार भाहार हैं 1

ऐसा कहने पर अञ्चल्यान् भोलिय-फर्युन सगवान् सं घोले-सन्ते । विद्यान-आहार का कान आहर करना है ?

मराप्राप् योलं—ऐमा पूछना ही गलत है। भे यह वहीं कहता कि कोई जाहार करता है। यदि में ऐसा कहता कि कोई आहार करता है तो अल्लाग यह प्रकृत पूछा जा सकता था कि—मन्ते! कीन आहार करता है? किन्तु, में तो ऐमा गहीं कहता। मेरे ऐसा गहीं कहते पर, तुम यदि पूछते कि—मन्ते! इस विज्ञास-प्राप्त के बचा होना है ?—सो हाँ ठीक प्रवा होता।

भौर, तप उमका उपयुक्त उत्तर होता--

विज्ञान-आहार आसो पुनर्जन्म होने का हेनु हैं। उसके होने से पडायतन होता है। पडायतन के होने से एडां डोता है।

मन्ते । कीम स्पर्ग करता है ?

सनवान दोले—ऐया पुरुना ही गलत है। में यह नहीं कहता कि कोई स्वर्ध करता है। यदि में ऐसा कहता कि कोई स्वर्ध करता है तो ललकचा यह महत्त पूछा जा सकता या कि—अन्ते! कीन स्वर्ध करता है किंदु, में तो ऐसा नहीं कहता। मेरे ऐसा कहने पर, तुम यदि पुरुते कि—अन्ते! क्या होने से स्वर्ध होता है ?—सी हों, डीक महत्त होता।

और, तब उसका उपयुक्त उसर होता-पदाबतन के होने से स्पर्श होता है । स्पर्श के होने से

वेदना होती है।

सन्ते ! कोंश बेटना का अनुभव फरता है ?

समावाम् वीरे--पैसा पूछना हो गठन है। में वह नहीं कहता कि कोई चेदमा का अनुसंब करता है। पार्ट में पूसा कहता कि कोई वेदमा का अनुसंब करता है तो अववस्ता वह प्रदेन पूछा जा सकता या कि---भरने। कोल चेदना का मनुसंब करता है? किंतु, में तो पूसा कहता हो नहीं। मेरे पूसा नहीं कहने पर, दुस यदि पुछते कि---भरने। किसके होने से वेदना होती हैं? ---से हीं. टीक प्रस्त होता।

कोर, तब उसका उपयुक्त उत्तर होता—स्पर्श के होने से बेदना होती है। वेदना के होने से तृष्णा होती हैं।

भन्ते । क्षीन लुष्णा करता है १

सरावार बोले—पूरा पूछमा ही गळत है। में यह नहीं कहता कि बते हैं त्या करता है। यह में ऐसा कहता कि कोई तुष्णा करता है तो अळवता यह प्रश्न पूछा जा सकता था कि—सन्ते। कीन तुष्णा करता है। किंतु में तो ऐसा नहीं कहता। मेरे ऐसा नहीं कहते पर, तुम यदि पूछते कि—सन्ते। किंग्ने होने से तुष्णा होती हैं ?—सी हाँ उड़िक प्रकृत होता।

ं और, तब उसका उपयुक्त उत्तर होता--विदाना के होने से तृष्णा होती है। तृष्णा के होने से उपानन होता है।

भन्ते ! कौन उपादान ( = किसी वस्तु को पाने आ छोड्ने के छिये उस्साह ) करता है ?

भगवान् बोळे—यह पूछमा ही गरुत है। मुख्या के होने से उपादान होता है। उपादान के होने से भव होता है।

इस तरह, सारे दु ख-समूह का समुदय होता है।

हें पत्रमुन | इस छ स्पर्कावसमों के बिरकुछ रुक जाने से स्पर्श होने नहीं वासा । स्पर्श के रुक जाने से बेदना नहीं होती । बेटमा के रुक जाने से गुष्णा नहीं होती । गुष्णा के रुक जाने से उपादाम नहीं होता । बपादान के एक बाने से भव नहीं होता । भव के एक बाने से करम नहीं होता । करम क एक बाने से बरामरण होक होया-पीटमा, दुग्य वेर्षत्री परेशाणी सभी एक बाने हैं ।

इस नरह सारा क्रांक-समूह कक वाता है।

#### \$ ३ पठम समणनाद्वाण सुच ( १० ० **१**)

राभागी लाग के अधिकारी आग्राम-मालाग

भावस्त्री में ।

सगवार् पोके— मिशुआ ! जो असण वा माहान अस्तर्ग की नहीं सानते आस्तरंग के ही को वहीं सानते आसरंग के ही को वहीं सानते आसरंग का वह आता भहीं जानते आसरंग के रोकने का सागी नहीं जानते ; जाति । सवं , अप्तरंग , प्रचार , विकार , अप्तरंग , प्रचार , विकार , अप्तरंग , प्रचार , विकार के रोकने का सागी वहीं जानते हैं— नह अस्य या प्राहाण यथां में अपने बास के अधिकारी नहीं हैं। जे अपने वास के अधिकारी नहीं हैं। अपने प्रचार का अध्यास के प्रचार कर से सामने आपकार, साक्षाल कर या प्राप्त कर विकार करते हैं।

सिञ्चनो । भार को श्रमण था साहत्य कारायरव को जानते हैं। श्रंकार के रोकवे का मार्ग जानते हैं—कह समय या प्राह्मक चवार्थ से अपने शास के अधिवारी हैं। वे आयुष्माद समय-माव वा साहत्य-पाव को पास कर किरण करते हैं।

## 8 ४ दुतिय समग्रमामण सुत्त (१२ ॰ ८) परमाथ के आनकार भगण-ग्राज्य

भावसी है।

सिश्चनो । को असम मा माहम इन वर्मी को नहीं व्यक्ती है इन प्रसी के हैतु को नहीं व्यक्ती है इन वर्मी का एक बाबा वहीं व्यक्त है इन प्रसी के शैकने के मार्ग को नहीं बावते हैं वे किन वर्मी के रोजने के सर्ग को नगी वानते हैं?

बरामरण को बही बालते हैं जरामरण के हेतु को नहीं बावते हैं बरासरण का एक बाजा नहीं बालते हैं करातरफ के रोकाने के जारों को नहीं बातते हैं। बातिणां। यह ; बराहाय ; राज्य । बेहना ; सर्चा ; पहायदाण ; नामकण ; निवान ; संस्कार को नहीं बातते हैं संस्कार के हैंडे की बही बातते हैं संस्कार का दक्र काना नहीं बातते हैं सरकार के रोकाने के सारों को नहीं बातते हैं

नात कानव ह सरकार का दक्ष काना नात जानव व सरकार कराकन कराय का नात वार जानव व मिहुकी | न तो कब अमानों में अस्तवाब्द है और व बाहाजों में बाह्यक्तक, न तो वे स्वयुष्माई असम या प्राप्तक के परसार्थ की अपने सामने जानकर साखात कर या प्राप्त कर विदार करते हैं।

समाध्य प्रशास का प्रथम साला चानकर साझात कर या मानु कर गानुहर करा या । सिन्नुजो ! जो क्रमण वा मानुष्य इत वर्मी ' के रोकने के मार्गको जानते हैं ये किन वर्मी <sup>के</sup> रोकने के मार्गको क्रमण हैं

कामरण । कारि । अब । वपायाव । युष्या । वेदवा । स्वर्म । पदावसम् । मामकप । विकास । संस्कार केरोकने केमार्गको कावते हैं।

सिद्धावी ! वधावेतः वन असमे हैं वसकाव 🜓 और माहावी हैं बाहावावः वे वायुध्साव् समय वा माहाय के परसार्य को वपने सामये वायकर साहातः कर और माहा कर विद्वार करने हैं !

#### § ५ कवानगोच सत्त (१२ २ ५)

सम्पन् रहि की व्याच्या

आपस्ती में । सम्बद्धान्य कारवायनगोस वहाँ अनम वृत्ते वहाँ आवे और अनवान् का अधिवादन <sup>कर</sup> वक्ष और सेर गये । एक शोर बैठ, आयुष्मान् कात्यायमगोत्र भगवान् से बोले —भन्ते ! जो लोग 'सम्प्रक्रिए, सम्पक्रिक' कहा करते हैं वह 'सम्पक्रिक' है पया ?

कास्यायन ! संसार के लोग दो अविधाओं में पहे हैं-(१) अस्तित्व की अविद्या में, और (२)

नास्तित्व की अविद्या में।

कात्यायन । लोक के समुदय का यद्यार्थ-कान प्राप्त करने से लोक में जो नास्तित्व-युद्धि है वह मिट जाती है । कात्यायन । लोक में जो अस्तित्व-युद्धि है वह सिट बाती है ।

कात्याचन ! यह संसार तृष्णा, आसिकि और ममत्व के मोह में वेतरह लकता है। सो, (आर्थ-आवक) उत्त तृष्णा, आसिकि, मन के कमाने, ममत्व और मोह में नहीं पवता है, कारम-भाव में नहीं वैभवत है। जो उत्पन्न होता है हु वह डि उत्पन्न होता है, जो रूक जाता है वह हु ए ही रूक जाता है। म मन में कोई कौसा रमता है, और न कोई संजय। उसे अपने भीतर ही झाम उत्पन्न ही जाता है। काल्याचन ! इसी को सम्मक्टिंट कहते हैं।

कालायन । 'सभी कुछ विद्यमान है' यह एक अन्त है, 'सभी कुछ धन्य है' यह दूतरा अन्त है । कालायन । ब्रह्म इन वो अन्तों को छोड़ सत्य को मध्यम प्रकार से बताते हैं ।

अधिया के होने से सस्कार होते हैं । इस तरह, सारे दु ख-समूह का समुदय होता है।

उसी अविद्या के विस्कुल हट और रूक जाने से संस्कार होने नहीं पाते । इस तरह, सारा हू स-समृत कर जाता है।

## § ६. धम्मकथिक सुत्त (१२. २. ६)

#### धर्मापदेशक के गुण

श्रावस्ती में ।

तब, कोई भिक्षु नहीं भगधान् ये वहाँ आया, और भगवान् का अभिवादम कर एक ओर बैठ गया। एक ओर बैठ, वह भिक्ष भगवान् से बोछा—अन्ते ! कोग 'धर्मकविक, धर्मकविक' कहा करते

हैं। सो 'धर्मकथिक' के क्या गुण हैं ?

सिद्ध । जो जरासरण के निर्वेट-विदागः=निरोध का उपवेदा करता है वहीं अरुवता धर्मकथिक कहा जा सकता है।

भिक्षु ' जो जरामरण के निर्वट=विराग=निरोध के किये प्रतिपत्त है वही अलयत्ता 'धर्माधुधर्म-प्रतिपत्त कहा जा सकता है।

मातपन्न' कहा जा सकता

मिश्च ¹ ओ बरामरण के निर्देद्य≔विराग≔िनरोध हो आने से विशुक्त हो गया है, वह अखबत्ता देखते ही देखते निर्याण पा कोनेवाळा शिक्षु कहा जा सकता है।

भिक्षु । जो जाति , अब , उपादान , तृष्णा ', जेदना , स्पर्श पङ्गपतन , नाम-रूप , पिञ्चान , सस्कार ; कृषिधा के निर्वेद=विराग=निरोप का उपदेश करता है वहीं अल्वसा धर्मकृषिक कहा जा सकता है ।

भिक्षु ! जो अधिधा के निर्धेद=विराग=निरोध के लिये प्रतिपत्र है वही अलबका 'धर्मानुषर्म प्रति-पत्र' कहा जा सकता है।

. भिद्ध ! जो जरामरण के निर्वेद-विराग-निरोध हो जाने से विशुक्त हो गया है, वहीं भळवत्ता देखते ही देखरी निर्याण पा ऊने वाला भिद्ध कहा वा सकता है !

## र्रुष अचेल समा (१२२७)

प्रतीस्य समस्पातः अचेन काद्यपं की प्रवस्था

पैसा सैंने सना ।

एक समय भगवान राजागृह के घेरतचान कलन्तक विकाप में विद्यार करते थे।

あ

दय सराबार सबह में पहल और पाप्तचीवर के राजगृह में मिधारन के किये पैडे।

वंगा सार कारूपच ने भगवान को का की में आहे देया । वेशका कहाँ मगवान से वहाँ गवा भीर भगवान का सम्मोदन किया। तथा आवमगत और क्रसक्कीय के प्रध्न बत कर एक सीर जवा ही क्ता ।

पुढ़ और लड़ा हो। जंगा बाबु काइयप भगवान में बोका—आप गीतम से में एक प्रश्न पूछना भारता हैं: क्या आप प्रसे सन कर प्रचार बेने को सैपार हैं ?

काइराप ! यह प्रकृत पृक्षने का अधित अपसर वहीं है। जमी नगर में सिकारन के किये पैटा है।

**उसरी बार भी** । लीकरी बार भी ।

काइयप ! अभी नगर में निखारन के किये पैटा हैं।

इस पर नेगा साम काइयक सरवान से बोका—बाप गातम से में बोद वही बात नहीं पूजा भाइता है।

काइयप ! यो प्रको का प्रकृता काहते हो ।

स्व

हे गीतम ! क्या बुल्ड अपना स्ववं किना# होता है ?

काइयप ! पैसी बाव नहीं है।

दे गीयम ! तो क्या हुन्त परावे का किया होता है ?

काध्यप ! पेली बात शही है।

है गीतम । यो ज्या श्रम्ब अपने स्वर्च और पहाने के भी करने से दोता है ?

फाइयप ! पेसी वात नहीं है। है गोराम ! वदि जुल्क कपने स्वर्ध और पराने के जी करने स नहीं क्षेत्रा है तो क्या अक्षरण ही

बाउसमात् चका भावा 🖁 🕆

फाइयप ! येसी काश कार्री है।

हे धौतम ! तो क्या हरू है ही वहीं ? नहीं काइयप ! इस्क है।

क्षी पदा चक्दा है कि काप सीवम हुआ को बानते समझते वहीं है ।

काश्यप ! पैसी बात वहीं है कि से हाना को बाबता समझता नहीं हूँ । काश्यप ! से हुन्य को सम्बद्धाः सानवा स्त्रीर समझवा 💒 ।

क सर्वेष्ठत = श्रीष का बापना रूका किया पुरुष्त ।

''हे गोतम ! प्या हुन्य अपना स्त्रयं किया होता है "'' पूछे आने पर आप कहते हैं, ''काटरप ! ऐसी पात नहीं है ।''

आप कहते हैं, ' काश्यप ! में युन्य को मत्यस जानता और समापता हूँ ।

भगवान् मुझे बतावें कि हु रव बया है, अगवान मुते उपटेश करें कि हु क्य क्या है १

फाइयप 'जो करना है बारी ओमना है त्याल कर, यदि वहा जाय कि हु ा अपना स्वय किया होता है तो दाहरतन्त्राट हो जाना है।

काष्ट्रयप ! 'हूनरा करना है' ओह हुनमा भोगता है' त्याल कर, यति यमार के फेर में पड़ा हुआ मसुष्य करें कि हु रा पराये वा किया होता हे तो करलेंड-यात हो जाता हैं।

कात्यापन ! शुद्ध इन हो अन्तों की छोड़ मन्य हो माथम प्रकार में बताने हैं । अविशा के होने में मन्कार ऐति हैं...। इस तरह, मारे हु.प-समूर का पसुदय होता है ।

उसी अधिया के बिल्हुल हट और रुक जाने से मस्कार होने नहीं पासे . । इस तरह, मारा हू राजसहरू रक जाता है।

### ग

भगवान के ऐसा पहने पर जंगा साधु फाइयप भगवान से वोळा—धन्त्र है। अस्ते, आप धन्य हैं। असे डळडे को सळड हे . वेंसे भगवान ने अनेक प्रकार से धर्म का उपटेश किया। में भगवान की सराज जाता हैं, अमें को और निश्चायन की। भन्ते। में भगवान के पास प्रमन्त्रा पाई, और उपसम्पदा पाई।

फाइयप ] को बुसरे मत के माधु इस धर्मधिनय में प्रधान्या और उपसम्पर्या चाहते हैं उन्हें वार मास का परिवास © लेना पड़ना है। इस चार मास के परिवास थीवने पर पढ़ि निश्चओं को उचता है तो उसे प्रवास्य और उपसम्पर्या वेकर मिश्च बना हेते हैं। किन्सु, हमें स्पक्ति सी विकित्त्रता माह्युत है।

भन्ते । यदि, जो दुसरे मत से खापु इस धर्माविनय में प्रवत्या और उपसम्पदा चावते हैं उन्हें यह माख का परिवास केना पढ़ेता है, इस चार मास के परिवास धीतने वर पदि मिश्रुओं को रुवता है तो बसे प्रमाश और उपसम्पदा देश भिश्रु बसाते हैं,—तो में चार साथ का परिवास खेता हूँ, चार सत्तक के परिवास घीतने पर यदि मिश्रुओं को त्ये वो खुढ़े प्रवत्या और उपसम्पदा देशर निश्च बता हैं।

नगा साधु काश्यप ने भगनान के पाम प्रवस्था पायी, और उपसम्पदा पायी ।

#### घ

उपसम्पर्टा पाने के कुछ ही समय बाद बाह्यकाम् काङ्यप्य बकेळा, एकान्य से अध्रमस, अातासी (=च्छेयों को तपाने वाका) और प्रवितास ही पिहार करते हुने ब्रीज ही उस अनुत्तर त्रस्वयं के परम रूक की हरो जन्म में स्वय बाप, साक्षार्य कर, और अग्र कर बिहार करने छत्ने जिनके किये कुळपुत्र अवस्पूर्य कर से पेपर ही अबक्षित हो जाते हैं। बादि कीण हो पहें, अवस्पूर्य हो गया, जो करना या सो कर छिया, जय और कुछ करमा वाको नहीं है—पैसा बात किया।

आयुष्मान् काश्यप वहंतों में एक हुये।

<sup>#</sup> परिवास---इस जनिष में प्रमन्मा-प्रार्थी को रोवा-टहरू करते हुये भिक्षुओं से राथ रहना होता है। जन भिन्नु उसकी हदता, आचरण, ध्यनहार खादि से स्तुष्ट हो जाते हैं तो उसे प्रमण्डित ऋते हैं।

# <sup>8</sup> ८ तिम्मरुक सुत्त (१२.२८)

## स्रश्र दश्य के कारण

धाषस्ती में 1

तक तिम्बद्ध परिवासक सर्वे मगवान ये वहाँ वासा । बाकर भगवान का सम्मोदन किया कीर बावसात तक कमक्कोम के प्रकृत पक्षते के बात पक्ष और कैंद्र गया ।

पक्ष भीर बेट कर लिडकडक परिवासक भगवान से बोका-

हे गीतम ! क्या सक्काल भगने बाएक हो जाता है ?

ह राजम । क्या भुक्तमुख्य अपन आपक्र हा जाता हा समयान घोके---शिक्यश्यक ! येसी नात नहीं हैं ।

हे गावम ! तो क्या सुरा-द्व-पा किसी वसरे के काने में हाता है !

मगवाद बोक्टे-विस्वदक ! पेक्षी बाध नहीं है।

हे तीवस ! वो पया शुक्र-दुष्क अपने आप भी हो आता है और वृसरे के करने स भी होता है ! भगवान कोके---विज्यादन पेसी बाव वहीं है ।

है शीतम | तो चया शुक्र-तुःका व व्यवने भाय भीर व यूतरे के करने से किन्तु अकारण ही हस्य हो भाता है ?

भगवाद बोके-सिम्बदक ! येगी वास वही है।

है गीवस ! वो स्था सुक्तु अक है ही वहीं ?

तिस्वरुक्त ! पेसी बाद नहीं है कि शुक्र-शुक्त नहीं है, शुक्र-बुक्त तो है हो।

सी पता क्यता है कि काप गीतम श्रापन्त का कानते वृक्ते गई। हैं।

हिस्सदकः | पेमी बात नहीं है कि में सुक्षशुष्तक को नहीं बानवा बूसता । विस्तदकः | मैं सुक्र-दान्त को समया बानवा बक्ता हैं ।

यों है पीराम ! शुक्रे कराचें कि सुक्ष-पुन्त क्या है। हे पीराम ! शुक्रे सुक्ष-पुन्त का बपकेत करें।

रिस्वयक्त ! 'को नेवना है नहीं (सुक्त हुन्स की) अनुस्ति कराने वाका है' समझ कर तुमने करा कि सक्त हुन्स अपने काप को बाता है। से पेसा नहीं कराना ।

तिस्वक्तः ! 'वेरवा वृत्तरी दी है और (शुक्तुत्रव की) असुपूर्व कराने बाका बृत्तरा ही' समझ कर तसने कहा कि सक्तात्रक समर्थे का किया होता है। हैं ऐसा सी वहीं कताता !

किस्बहरू ! ब्रह्म इन दो अर्थों को क्षेत्र सम्बद्ध रहित से सत्त्व का वपरेश करते हैं।

कविया के होने से संस्थार होते । इस तरह आरे हुन्कसमूह का सञ्जय होता है। कसी कविया के विकास हर और कर कार्य से आरा हाकसमूह कर बाता है।

हे गीतम ! साम से कमा भर मुझे बपना धरणागत जपासक स्वीकार करें ।

### <sup>§</sup>९ वास्रपन्धित सुच (१२ २ ९)

मुर्क और पण्डित में अन्तर

भावस्ती में।

मिशुमो | व्यविद्या में यह कृष्णा वहाते रहने हो हो सूचे अर्थी का नौका खड़ा बहुता है । भीर वह चोका बाहर नीर मीतर से वासन्तर (अर्थव स्कृत्व) हो है । सो होनो (अ्वस्त्रित और उसका विषय)

सर्थकर्त > त्वर्व वेदना ही सुक-पुग्प की अनुभूति का कारण होना ।

के होने से स्पर्श होता है। यह छ आयतन हैं जिनमें स्पर्श कर भूर्ज सुख-दु-ख का अनुभव करता है। अथवा, इन ( छ आयतनों ) में किसी एक से।

भिक्षुओं! अविधा में पड, तृष्णा बढ़ाते रहने से ही पण्डित बनो का भी चोला राहा रहता ।। भीर, यह चोला बाहर और भीतर से मामस्हण (ज्यञ्च स्कन्य) ही है। सी, दो दो के हीने से स्पर्श होता हैं। यह छः आयतन हें जिनसे स्पर्श कर मूर्ख झुख-दु क का अधुभव करता है। अथवा, इनमें किसी एक से।

भिक्षओ ! तब, मूर्ख और पण्डित में क्या अन्तर≔भेट होता है ?

भन्ते ! भगवान् ही धर्म के गुक, नायक और उपरोध हैं । भन्ते ! भरूत होता कि भगवान् ही इस प्रकृत को खुकासा करते । भगवान् से सुन कर विश्व धारण करेंगे ।

तो, भिश्रुओं ! सुनो, अच्छी तरह मन रुगाओ, में कहता हूं ।

"भन्ते । बहुत अच्छा" कह भिक्षुओं ने भगवान् को उत्तर विया ।

सरावान, पोले-- सिञ्चाओं। जिस अविध्या और एप्णा के हेतु सूर्व जनो का चौला खड़ा रहता है, वह अविध्या और तृष्णा उनकी श्लीण हुई नहीं होती है। स्रो क्यों ? सिञ्चाओं! क्योंकि हुस का विस्तृत्व ब्रम्प कर देने के लिये सूर्वों ने प्रहायपे नहीं पाला। हसक्षिये सूर्व एक चीला छोदकर वृस्तरा धरता है। इस तरह चीला अरते रह, वह जाति, जरामरण, शोक, रोमा-पीठना, हुब, वेचैवी, परेशानी से नहीं छटता है। इस से नहीं छटता है-- ऐता के कहता हैं।

भिञ्चलों ! जिस जिविषा जीर लुष्णा के होतु पण्डित बनों का चोला खड़ा रहता है, वह अविष्या और तृष्णा उनकी होण हो नहें होती है। सो क्यो ? भिञ्चलों ! क्योंकि हु स का विस्कृत क्षय कर देने के लिये पण्डित ने बातवर्ष का पाठन किया है। इसिल्मो, पण्डित एक चीला छोड़ कर बूखरा नहीं प्रस्ता इस तरह फिर चोला न सर, वह जाति, जरामरण, कोल, रोना-बीटना, हु स, वेचैशी, परेश्वामी से हुट जाता है—पूसा में फहता हूँ।

भिक्कुको । यही ब्रह्मचर्थ पालन न करने और करने का अन्तर=भेद मुर्फ और पण्डित में होता है।

## § १०. पच्च स.स. (१२ २. १०)

### प्रतीत्य समुत्पाद की ब्वाख्या

थावस्ती में।

मिश्रुओ । मैं प्रतील समुत्पाद और प्रतील समुत्पन्न वर्मी का उपदेश करूँगा । उसे सुनो, अच्छी तरह मन कगाओ. मैं कहता हैं ।

"मन्ते ! बहुत अच्छा" कह, भिक्षुओं ने मगवान् को उत्तर दिया ।

भगवान् नेकि—िश्रुओं ! अदीरंग सहायाद क्या है ? भिष्ठुओं , युद्ध अवतार हैं या नहीं, (यह दो सर्वदा सत्य रहता है कि) जनमने पर बुद्धा होता है और मर बाता है ( =आति के प्रत्यप से जारा-मरण होता हैं)। अस्ति का यह नियम है कि एक वर्ष के होने से दूसरा होता है, उसे बुद्ध माठी माँति नुसते और जाने हैं। उसे मती मोदि वृक्ष और कानकर बताते हैं = उपरेक्ष करते हैं = जताते हैं = विद्ध करते हैं = सोठ देते हैं = विभाग कर देते हैं = साफ करते हैं, और कहते हैं—

देखों ! सिक्कुलों ! जाति के होने से जरामरण होजा है। मन के होने से जाति होती हैं। उपादान के होने से नाति होती है। उपादान के होने से मण होता है। तुष्णा के होने से उपादान होजा है। तेमक के होने से एक्पा होती है। हमने के होने से वहना होती है। पदायतन के होने से स्पर्ण होजा है। जामरूप के होने से पदायतन होता है। विज्ञान के होने से नामरूप होजा है। के होने से नामरूप होजा है। सक्तार होजा है। के होने से नामरूप होजा है। सक्तार के होने से तम्हण होजा है। के होने से सम्हार होजा है।

## <sup>8</sup> ८ तिम्मरुक सुच (१२ २ ८)

## सुख दुश्य के कारण

भाषस्त्री में ।

एवं तिस्त्रपुक्त परिवासक बार्ड मतावान ने बार्ड जावा । जाकर, भगवान का सामीदन किया और आक्रमत तथा वसक्कोम के प्रकृत पुष्टि के बाद एक और वैद गया ।

यक और बैठ कर लिइक्टक परिवासक मगवान से बोसा--

है गौतम ! भया अच्छ-तुम्ब अपने आप# हो जाता है ?

है गीवम ! ता क्या भूरा-शुन्त किसी इसरे के करने से होता है !

ज्ञताबाव बोडे--विस्वदंड ! पंची बात वहाँ है।

हे गीतम ! तो क्या सुक्त-हुन्छ अपने आप भी हो आता है आर बूसरे के करने से भी होता है?

भगवान् कोङ---तिम्बद्ध पैसी कात नहीं है। है गीतम ! तो क्या शुक्क-कुला न अपने आप भीर न मूचरे के करने से किन्दु अकारण ही दस्य हो काता है ?

सराबान् बोडे-विम्बद्ध । पेली बात नहीं है।

हे गीवम ! वो नमा मुक्क्तुत्व है हो नहीं ?

तिस्वस्क । पेसी बात वहीं है कि सूच-बु-प्र वहीं है सूच-बु-च तो है ही ।

हो पहा चलता है कि काप गीतम सुधानु च को व्यापते बुसते नहीं हैं।

(तस्यक्ष्म | येसी बात वहीं है कि मैं सुक्तुत्व को वहाँ बानता वसत् । तिस्यक्ष्म ! मैं सुक्त को संयतः कानता वसता है ।

हो। हे गौहत | मुझे बतायें कि सुक्त-तुल्य क्या है। दे पाटम ! मुझे सुक्त-तुल्य का उपनेक कों।

े प्रस्करण । 'को चेदना है वहीं (तुक्त हुन्क की) जहारति कराने वाकर है' समस कर सुमने क्या कि सुक्तभूत्व करने जार हो जाता है। में ऐसा नहीं कराता।

कि मुक्कुक वर्ष कार का नाता को लिए पूछा नक्षा नक्षाता । किम्बरुक ! 'वेदका वृक्षरी हो है और (मुक्कुका की) अनुसूति कराने वाका वृक्षरा ही' समझ

कर द्वसने कहा कि सुक्त-दुश्य बूसरे का किया होता है। मैं ऐसा भी नहीं बताया।

तिस्मदक्ष ] हुद इन दी अन्ती को क्षेत्र मच्चम शीठ स सत्व का वपदेश करते हैं । कादेशा के दौने से संस्कार दोले । इस तरह सारे हुनकसमूद का सशुपन दौना है ।

बसी अविद्या के विकास हर और एक काने से भारा गुःख-समूद एक बाता है।

हे सीतम । माम से बन्ध पर शुद्ध वयवा सरग्यगत उपासक स्वीकार करें ।

## 🙎 ९ पारुपण्डित सुच (१२२९)

### मूर्ज बौद पण्डित में बन्तर

आवस्त्री हिं। भिक्कमों | स्विका में तक पूजा बहारो रहते हैं हो शुर्वे बर्ती का पोका बहा रहता है। बीट, यह चोका बारर और मीतर से वासन्कर (कर्मच खक्क) हो है। हो होन्हों (आहंम्य बीर करका विचर)

<sup>#</sup> सर्पेक्टों = रचने बेदना ही हता-हाध्य की करामति का कारण होना ।

के होने से स्पर्य होता है। यह छ आयतन हैं जिनमे स्पर्ध कर सूखें सुखन्दुःस का अनुभव करता हैं। अथना, इन ( छ आयतनों ) में किसी एक से।

भिक्षाओं! अविष्या में पठ, कृष्णा बढ़ाते रहने से ही पण्डित जनों का भी चीरण खटा रहता र । और, यह चोका बाहर और भीतर से नामस्कर (=पड़ा स्कल्य) ही है। सो, टो टो के हीने से स्पर्ध होता है। यह छः आयतन हैं जिनसे स्पर्ध कर मूर्ल खुख-दुःख का अधुमद करता है। अयवा, हनने किसी पक से।

भिक्षओं ! तथ, मूर्ख और पण्डित में क्या अन्तर≃मेंट होता है ?

भन्ते ! भगवान् ही धर्म के गुरु, नायक और उपरोधा हैं । अन्ते ! अच्छा होता कि भगवान् ही

ती, भिक्षुओं ! सुनो, अच्छी तरह मन लगाओं, में कहता हूं !

"भन्ते । यहत अच्छा" कह शिक्षको ने सगवान को उत्तर दिया ।

भरावान् दोहे—सिश्चओं जिस स्रविधा और रूप्या के हेतु मूर्ख बना का चोला लडा रहता है, वह स्रविधा और रूप्या उनकी सीण हुई नहीं होती है। सो क्यों ? सिश्चओं । क्योंकि हुस का विस्कुरू क्षय कर देने के लिये मुखें ने प्रसम्पर्ध नहीं पत्का। इसलिये सुस्तं एक चोला छोदकर दूनरा परता है। इस तरह चोला धरते रह, वह लाति, जरामरण, लीक, रोना-पीटना, हुस, वंचेनी, परेमानी से नहीं इसता है। इस से नहीं कुटता है—ऐसा में कहता हूँ।

भिश्चओं ! जिस जिविचा और तृष्णा के हेतु पण्डित जमी का चोला सवा रहता है, वह अधिचा भीर तृष्णा उनकी क्षीण हो गई होती हैं ! खो क्यों ! निश्चओं ! न्योंकि हु स का विष्कुल क्षय कर देने के लिये पण्डित में त्राव्य का पालन किया है ! इसलिये, पण्डित एक चोला छोड़ कर दूसरा नहीं घरता हस तरह किर चोला न धर, वह जाति, अरामरण, बोक, रोना-पीटना, हु ज, वेचैनी, परेशामी से छूट जाता है । हु ज से कुट जाता है — पूरेसा में फहता हूँ ।

भिक्षुओं। यही ब्रह्मचर्य पाछन न करने और करने का अन्तर≔भेद मूर्व और पण्डित में होता है।

### § १०. पचय सुत्त (१२ २. १०)

#### प्रतीत्य समस्पाद की ब्याख्या

श्रावस्ती में।

भिञ्जुजो ! मैं प्रतीत्व समुत्याद और प्रतीत्व समुत्यन्न धर्मों का उपदेश करूँ गा । उसे सुनो, भच्छी तरह मन छनाओं, मैं कहता हैं ।

"सन्ते ! वहत अच्छा" कह, भिक्षुओं ने मगवान् को उत्तर दिया।

मानाम् बेलि---भिक्षुओं । प्रतील समुत्याद क्या है ? भिक्षुओं । धुष्प अवतार लें या नहीं, (यर तो सर्व'डा क्रस्य रहता है कि) जनमने पर बुड़ा होता है और मर जाता है ( =वाति के प्रस्यक से जरा-सरण होता है)। प्रश्लीत का वह नियस है कि एक धर्म के होने से दूसरा होता है, उसे दुख माठी माँति सुद्धते और जानते हैं। उसे मठी भाँति वृक्ष और जानकर बताते हैं = उपदेश करते हैं = जाताते हैं = रिद्ध करते हैं = चौठ ठेते हैं = विभाग कर वेठे हैं = साफ करते हैं और कात हैं.--

देखों। [अञ्चली ! जाति के होने से जतामरण होवा है। अब के होने से जाति होवी है। उपादान के होने से नाति होवी है। उपादान के होने से भव होता है। हज्जा के होने से उपादान होता है। वेदना के होने से च्ला होती है। स्पर्ध के होने से प्रवायतन के होने से स्पर्ध होता है। आभक्ष्य के होने से प्रवायतन होता है। हिन्तान के होने से स्पर्कार होता है। कि होने से स्परकार नोते हैं। अविद्या के होने से सरकार नोते हैं। अविद्या के स्व

महति का यह निषम है कि वर्म के होने से बूसरा होता है। कसे तुद्ध भवी मौति बृहते और बानते हैं। अबी मौति बृह्म और बामकर बताते हैं = उपकेश करते हैं - और काले हैं---

र बानत है। अका माति बूझ कार कामकर बताते हैं = उपदेश करते हैं | ओर कहते हैं =-वेको ! मिसनो ! कविका के क्षोते से शंस्कार होते हैं | मिसनो ! इसकी सारी सावता इसी

देश-निषम पर निर्मर है।

निमुख्यों ! जाति ] अस्य । जपात्ताल । तुष्पाता । वेदन्ता । एवर्ष । पदायक्षत । जास-क्य । विक्राल ! उंपल्या । अप्ता । वेदन्ता । एवर्ष । पदायक्षत । जास-क्य । विक्राल ! उंपल्या । अभिया अभित्य है संस्कृत है अतीय समुक्तक है अस्य होने वाकी है स्थय होने वाकी है प्रोप पी वा सकती है शोक वो बा सकती है। विश्वालों | इन्हीं को अतीयस समुक्तान

वर्स कहते हैं। मिश्रुओ ! वार्षकावक को यह मतील संगुत्याद का विषय और मतील संगुत्यान वर्म कच्छी

तरह समझ कर स्पष्टतः साझात् कर किए गये होते हैं। वह पूर्वास्त की मिन्यावहिमें नहीं रहता है कि—में भृतकाक में या में भृतकाक में नहीं वा

मूर्तकाल में क्या या मूर्तकाल में में कैया या भूतकाल में में क्या होकर क्या हो गया था ? बह सपरास्त की मिल्पार्टीह में भी बार्ड शासा है कि—में सबिया में होतेंगा में स्वीय्य में

वह अपरास्त्र का आन्यायक साथ वहीं पहला है कि साविष्य में होती में माविष्य में होती में माविष्य में नहीं होती माविष्य में क्या होतीमा सविष्य में कैशा होतीमा सविष्य में क्या होकर करा हो वार्तमा वह मस्पुरम्म ( व्यर्तमाण काक ) को केवर भी व्यर्थ मीलर श्रीकर वहीं करता—में हैं. में नहीं

हूँ में क्या हूँ में केसा हूँ, भेरा बीव कहाँसे ध्याव है धार कहाँ बायया। सो पर्यो ! मिह्नची ! व्योंकि कार्यवादक को यह प्रतीक समुत्याद और प्रतीत्व समुत्याद और प्रतीत्व समुत्याद की

वारवा (ताहुका) व्यक्ति कावावक का वह प्रदेशताल संगुलाई का

माहार-को समास।

## तीसरा भाग

### दशबल-वर्ग

## § १. पठम दसवल सूच (१२.३.१)

### वुद्ध सर्वोत्तम कहळाने के अधिकारी

श्रादस्ती ने ।

भिक्षुओ ! बुद्ध दशक्छ कीर चार बेशारध से युक्त हो सर्वोत्तम कहलाने के अधिकारी हैं। सभा में सिंड-नाट करते हैं. शक्तचक्रको प्रवर्तित करते हैं।

यह रूप है, यह रूप का उराना है, यह रूप का रूप हो जाना है। यह वेदना है। यह सद्यों है। यह सरकार है। यह विज्ञान है, यह विज्ञान का उराना है, यह दिज्ञान का रूप हो जाना है। सो, एक के होने से दूसरा होता है, एक के उसने से दूसरा उस खड़ा होता है। एक के नहीं

होने से दूबरा नहीं होता है, एक के करू कामें से दूबरा कर जाता है। जो अविदार के होने से सरकार होते हैं। इस तरह खारे हु ख-समृह का समुज्य हो जाता है। वसी अविदार के विस्कृत हुट और करू जाने से ''। इस तरह, सारा द स समृह कर वाता है।

### § २. द्रुतिय दसवल सुत्त ( १२. ३. २ )

#### प्रजन्या की सफलता के लिए उद्योग

आवस्ती में।

मिश्रुओं ! शुद्ध दरायक और चार वैशाश्य से युक्त हो [ कपर वाले सूत्र की पुनराहुकि ] इस तरह, सारा दु ज समृह कक जाता है।

भिक्षुओं ! मैंने धर्म को साफ साफ कह दिया है=समझा दिया है=श्लोळ विया है=प्रकाशित कर

दिया द्वै=छपेटन काट दिया है।

सिक्षुणी । ऐसे धर्म में श्रन्दा से प्रज्ञणित हुये कुरुपुत्र का धीर्य करना सफड होता है।—जाम, नाडी, और हिद्वारों ही मध्ये शरीर में रह जायें, मास और छोहित मारे ही युख जायें—फिन्तु, वो पुरुष के उत्साह, पुरुष के धीर्य और पुरुष के पराक्रम से पाया जा सकता है उसे बिना प्राप्त किसे उद्योग से मुँह नहीं मोहूँगा।

मिछुओ ! काहिल पुरुष पाप-धर्मों में पदकर हु ख पूर्ण तीसा है, महान् परमार्थ से हाय घो बैडता है। मिछुओ ! और, बीर्यवान् पुरुष पाप-धर्मों से बचा रह, आनन्द-पूर्वक विहार करता है, महान्

प्रमार्थ को पूरा कर छेता है।

मिल्लुओं । द्वीच से अग्र की प्राप्ति नहीं होती, अग्र से ही अग्र की प्राप्ति होती है। निल्लुओं । प्राप्तकों पाठन करने की अबा उनको, सम्मचे जब मीजुर हैं। इसकिये, है निल्लुओं । वीर्ष करो, अग्राप्त की ग्राप्ति के किये, नहीं पहुँचे जुबे स्थान पर पहुँचने के किये, कभी देखी नहीं गई चीज़ को साक्षाय करने के किये। इस ठरह मुम्हारी प्रथम्मा काकी नहीं बाचगी, बस्कि सफ्क्ष और सिद्ध होगी ! क्रिनका हान किया चीवर विष्टपांत संववासन कालप्रथम भोग करोंगे उन्हें वहा पुरुष प्राप्त होगा !

मिञ्चका तुम्बें इसी तरह सीक्षण वादिये। मिञ्चकी | करणे दिव को व्याल में रकते हुने साव-भाव हो बचान करो। शुसरों के दिव को भी प्यान में रकते हुने सावधान हो उद्योग करो।

## ६३ उपनिसास्च (१२३ ३)

### भाश्रय सथ, प्रतीस्य समस्पाद

श्रायसी में।

मिलुओ ! मैं बावते और देशते हुये ही बासकों के शब करन का उपदेश करता हूँ, विना बाने भार देखे वडीं।

मिहानो ! थवा काम बीर ऐकार जाशवाँ का क्षण होता है ? यह कम है यह कप का त्यभा है यह कम का कप हो काम है। यह वेदना संद्रा संस्कार । यह किहान है यह विद्रान का क्षाता है यह किहान का कम हो जाना है। जिस्सों ! इसे ही बाद कीन हेकार कालकों ना क्षण होता है।

है यह विकास का कम हो जाता है। सिशुओं ! इसे ही बाब और देखकर बाजकों ना क्षत्र होता है। सिशुओं ! क्षम होने पर को कम होने का जात होता है उस्ते भी भी सहेतुक बताया हैं।

सदेतुत वहीं। मिलुमी ! सब होने के काल का द्वार क्या है ! विमान्त ही देता है---देशा करता वाहिये।

मिश्रुको ! विगुक्ति को भी में सहैतुक बताता हैं अहेतुक महीं ।

मिसुमो | विसुद्धि का देतु पया दे १ वैराज्य दतु है—ऐसा कहवा चाहिये । सिसुमो | दैरात्य को मी से सदेदक बताता हैं, बहेतुक नहीं ।

सिश्चको ! वैरास्य का हुत कर है ? संसार की तुराहवों को देश कससे अथ करना (=विकिशः) वैद्र है—पेसा कहवा चाहिये ! सिह्नमो ! मैं इस अथ करने को औ सहेतुक वदाता है, अहेतक नहीं !

मिश्चयो । इस अब करने का हेनु क्या है ? उसका देश यावार्यहानदर्शन दें—ऐसा कदमा चाहिये । मिश्चयो ! प्रयार्थनामदर्शन को जी बि सहेतक समाता हैं. अहतक महीं !

मिशुसा ! यसार्वहामदर्शन का हेतु क्या है ? कसका हेतु समाधि है—एसा कट्टमा चाहिये ! सिशुमी ! समाधि का भी में सहग्रक बताता है" अहतक वहीं !

िश्वा । समाधि का प्रतु का है ? उसका देशु सुरू द—एमा कदना कादिव । जिल्लाही ! सुरू को भी में महेसक बताया है अहेसक सुष्टी !

िम्हाको ! सुग्य का हेनु बता है ? जसका हेनु ज्ञान्ति (=वश्रविष) है—केमा कहना चाहिते । भिक्तको ! ग्राम्सि का भी विं सरेनक बताता हुँ जहेनुक वहीं ।

मिशुमी ! सामित का बेतु काम है ! जमका बेतु आंति है---प्रेमा नहना चाहिये । मिशुमी ! अर्थित का मी मि सहेतुक क्याता हूँ, अद्वेतक नहीं !

निशुस्त्री ! प्रीति का देनु वका दे ? जलका देनु प्रमोद है----शृंगा कदका कादिये : श्रिप्तको ! मसाद को जी जी गरेटक कराता है. अदेनुक नहीं !

िमशुका ! इसोद का हेंचु का है ? उपका हेनु ग्रहा है—युवा कहना चाहिय । सिशुको ! अहर का भी में सहेनक बनाता हैं. कोनक करों ।

मिशुओ ! अदा का हेतु वर्षा है ? उसका हेतु कुल है—ऐमा कहता वाहिने । मिशुओ ! दुःसा को भी में सहेदक बतासा हैं, अहेदक वहीं ! भिद्धओं ! दूरत का हेतु क्या है ? उसका हेतु जाति है—पूमा कहना चाहिये । भिद्धओ ! जाति को भी में सहेतुक बताता हूँ बहेतुक वहीं ।

मिश्लुओ । जाति का हेतु ' भव है । '
भिश्लुओ । सब का हेतु ' उपाराग हैं ' ।
भिश्लुओ । उपादान का हेतु ट्यांत है ।
सिश्लुओ । तुष्पादान का हेतु चेदना है ' ।
भिश्लुओ । वेदना का हेतु च्यांत है ' ।
भिश्लुओ । वेदना का हेतु पदायदन है ' ।
भिश्लुओ । पदायदन का हेतु वावादन है ' ।
भिश्लुओ । पाराम्य का हेतु वावादन है ' ।
भिश्लुओ । विकाल का हेतु वावादन है ' ।
भिश्लुओ । विकाल का हेतु वावादन है ' ।
भिश्लुओ । विकाल का हेतु वावादन है ।
भिश्लुओ । विकाल का हेतु वावादन है ।

न्निश्चओं । चूल तरह अधिया के होने में सस्कार, सस्कार के होने से विज्ञान, नासरूप, पद्मश्यतन, स्वरी, बेटना, ''म्हण्या, उपादान, ''भव, जारित, ' हु ख, दुःप के होने से पुरा प्रमोड, भीति, प्रशब्ध, ''सुप, समाधि, '' बधार्य ज्ञान-टर्गन, सत्वार-भीति, '' क्षेत्रस्य, ' चेत्रस्य से विज्ञुक्ति होती है, विज्ञुक्ति से आश्चों के क्षय होने का आन हो जाता है।

भिक्षओं । असे पहाद के अपर मूसलधार वृष्टि होने से, तक भीचे की और यह कर पर्यंत, कन्दरा प्रदर, बाखा सभी को अर देता है। इन्हें भर जाने से नाके यह निकलते हैं। नाकों के भर जाने से होदियों भर जासी है। डोवियों के भर जाने से, छोटी-छोटी नदियों भर जासी हैं। छोटी-छोटी नदियों के भर जाते हैं। स्वर्ध-नदी नदियों के भर जाते हैं।

भिञ्जभो ! हसी तरह, अविद्या के होंगे से सरकार, सरकार के होंगे से विज्ञान, नासरूप, पहाचतन, रुपर्ग, नेडना, नृष्णा, व्यादान, सा, जित, दुःस, – अदा, प्रसोद, प्रीति, प्रअध्व, क्षुख, समाधि, व्यार्थ ज्ञान-दर्शन, स्मार-भीति, वैरास्य, वैरास्य के होने से

थिमुक्ति और विमुक्ति के होने से क्षय होने का ज्ञान।

## § ४. अञ्जतित्थिय सुच (१२ ३ ४)

### दुःय प्रतीत्य समुत्पन्न है

राजगृह के बेलुवन में।

त्रय, आयुष्माप् सारिपुत्र सुबह में पहल जीर पात्रचीवर के शिक्षाटन के किये राजगृह में पैठे । त्य, आयुष्माप् सारिपुत्र के जब में ऐया हुआ—कमी राजगृह में भिक्षाटल करने के किये जब स्वेशी हैं से में पर्द को जान र्विक परिवारकों का आराम है ।

तम, आयुप्मान, सारिपुत्र बहाँ अन्य तैर्यिक परिवालको का आराम था वहाँ गये, जाकर उनका

सम्मोटन किया और कुशल क्षेम के प्रश्न पूछने के बाद पुरु ओर बँठ गये।

एक और बैठे हुने कानुस्मान् स्वारिपुत्र को वे अन्य र्ताधक परिवायक वोले—आयुत सारिपुत्र ! कुछ अनम जीर माझण कर्मवार्टी हैं जो हु का को अपना स्वय किया हुआ बताते हैं। आनुत सारिपुत्र ! ऐसे भी कुछ अनम और बाह्मण कर्मवार्टी है जो हु ख को दूबरे का किया हुआ चताते हैं। आनुत सारिपुत्र ! ऐसे भी कुछ अनम और माझण कर्मवार्टी हैं जो हु ख को अपना म्यद किया हुआ और दूबरे का भी क्या हुआ बताते हैं।

इस दरह तुम्हारी मनन्या साझी महीं बाधगी चरिक सन्द्रक और सिन्द होगी। जिसका जान किया चीवर, विकासक कायनासन म्छानप्रत्यव मीग करोरी उन्हें बढ़ा पुष्प प्राप्त होगा ।

मिश्रको तुम्हें इसी शरह सीकना चाहिए। मिश्रको ] अपने हित को च्यान में १कते हुमें साव-चान हो दसीन करो । इसरों के दिल को भी व्याम में रक्ते हुने सावधान हो उद्योग करो ।

# ६ वे डपनिसा सच (१२ ३ ३)

## भाधव क्षय प्रतीस्य समृत्याव

आचली में।

मिल्लाभी | मैं कानते चीर एंकते हुये ही भाजवों के स्वय करवे का अपवेस करता हूँ, विना साने कार देखे नहीं ।

मिल्लुओ ? क्या बान और वेचकर साधकों का श्रम हाता है ? यह कम है, यह कम का जगना है यह रूप का क्य हो आता है। यह बेदमा एंड्रा रांस्कार । यह विज्ञान है यह विज्ञान का क्याना है यह विशास का कम हो जाता है। सिश्चमों ! इसे ही जात और रेककर बाग्नवीं का क्षम होता है।

भिम्नुको ! सन दोने पर को सन दोने का जान दोवा है उसे भी से सद्वत प्रतासा है, अहेतुक वहीं।

सिम्लुजी ! अम होने के जान का बेद क्या है ! विश्वकि ही बेद है-एसा कडना जाहिये। भिक्षणी ! विमक्ति को भी में सदेतक बदाता हैं, अदेतक महीं ।

मिसुकी ! विमुक्ति का वेत क्या है ? वंदान्य हेत है-ज्या कहवा चाहिये । शिसुको ! वैरास्य की भी में सहेत्व बताता हैं, बहेतक बड़ी।

मिश्चमा ! येदात्व का देत क्या है ? लंसार की शुरावर्धों को देश कससे अब करना (अविध्यदा) हेतु है--पेसा बहना वाहिये । मिशुमो ! में इस अब करने को भी सहेतुक बताता है, बहेतुक नहीं ।

थिक्षणी ! इस सम करने का देत क्या है ? उसका हैतु वाकार्यज्ञानवर्गन है-येसा क्यूना चाहिने।

मिलुको । पवार्यतावर्धव को मां में सहेतक बसासा हैं, बहेतुक वहीं ।

विश्वनः ! यथार्वज्ञानदर्शन का हेतु क्या है ! बसका हेतु समायि है--विसा कहता चाहिने ! विश्वकी ! ममाधि को भी में सहेतुरु बताता हैं बहेतुक नहीं !

मिशुमा <sup>१</sup> समापि का देत क्या है ? उसका देत सुरा दे<del>~ांगा। कहना काहिये । मिशुमो ? सुरा</del> को भी में भद्देतक बताया हूँ अहेतुक बाही।

निशुमी ! युग्र का ब्यु क्या है ? क्याब्र हेतु शान्ति (ब्यवक्या) है---नेमा क्या क्याहिने । मिसभी ! शान्ति का भी में सहैतुक यशता हूँ अहेतुक वहीं ।

भिपुत्रा ! शान्ति का शतु क्या है ? उसका हेतु भौति है---वेसा कहवा चाहिते ! मिशुओं ! प्रीरी का भी में सदेनुक बताता हैं, बदेनुक नहीं ।

निमुनी ! शीतिका हेतु थवा है ? बसका हेतु प्रमीद है--ऐसा कहना चाहिने । निमुनी ! प्रभार को भी में सहेतुक बनाता है, महेनुक नहीं ।

भिनुत्रो । प्रमीत का क्षेत्र बवा के ? उसका हेत्र सका क्षे-न्यमा कक्ष्मा वाहित । सिद्धानी ! सका

को भी 🎚 सहेनुक चनाना 🖺 बहेनुक वहीं।

विश्वाची ! क्षया का हेनु बना है ? बनका हेनु चुनव है--वेमा बडमा चाहिये : मिशुओ ! दुनग को भी में गरेपुर बताना हैं, महेपुर नहीं ।

भानन्द । एक और बैंडने पर अन्य तिथिक परिवानको ने मुझमे पूछा . . . ।

… | यही प्रशोशत को आयुष्मान् मारिपुत्र के माथ करा गया है । ]

भन्ते, साध्ययं रे । अप्रश्तुत है ॥ कि एक गूर्व पद से सारा अर्थ कह दिया गया । भन्ते । यदि यहाँ अर्थ विनार में करा लाना वी यदा समीर शेना, देखने में अन्यन्त सहस समहस एएता ।

सो, आनन्द ! नुम हमें कारो ।

### ग

भन्ते ! विर सुक्षमे कोडे परे---काश्वम आनन्द ! जरामरण का निवान क्या है, त्यसुव्य क्या है, उप्पत्ति क्या है, उदम क्या है ?---तो मैं ऐसा उत्तर हैं ---आश्वम । अरामरण का निवान जाति है, समस्य जाति है, उपनि जाति है, उदम जाति हैं । भन्ते । ऐसे पछे जाने से मैं ऐसा ही उत्तर हों ।

··· 'जाति का निदान भव रें '।

तव का निज्ञन उपादान है : ।
 उपाठान का निक्रन नृत्या है : ।

तृष्णा का निवान घेटना है । \*\*'वेदना का निवान क्यर्बा है \*।

अस्ते । यदि अप्र में कोई पूछे—आधुम आतम्ह । स्पर्ण का निवान क्या ह '?—तों में ऐसा इत्तर हूँ—आधुम । स्पर्ण का निवान पदायतन हे । आधुम । इन्हों छ स्वक्षांयतनों के दिख्लुक हक जाने में स्वर्श का होना रक जाता है । क्या के क्षक जाने सं वेदना नहीं होती । वेदना के रफ जाने से तृष्णा कर्ष होता । तृष्णा के रक जाने ने द्यादान नहीं होता । द्यादान के रफ जाने से अब नहीं होता । अब के रक जाने में जाति नहीं होता । जानि के रक जाने से जरा, मरण, होक, रोमा-पीटना, हु छन, सेचीनी, परिवानी मभी कक जाने हैं। इस तरह, साता हु ख-समृह कक जाता है। अस्ते । ऐसे पूछे जाने से में ऐसा ही उत्तर हूँ।

## ९५. भूमिज सुत्त (१२ ३ ५) सम्बन्दः स्व सहेत्रक है

श्रावस्ती मे ।

#### क

तव, आयुष्मान् भूमिज सध्या सभग प्यान में डढ, जहाँ आयुष्मान् सारिपुत्र ये वहाँ गये, और 'कुशल्कोम के प्रकन पुरुकर एक और बैठ गये।

ण्क और घंट, आयुष्पाण भूमिज आयुष्पाण, सारिषुत्र है बीडे—आयुष्प सारिषुत्र ! कुछ प्रमण और नाह्मण कर्मनावरी हैं जो सुक्त-हु क को अपना ग्यप किया हुआ मानते हैं। जो सुक्त-हु क को नुसरे का किया हुआ मानते हैं। "जो सुक्त-हु क को अपना ग्यद किया हुआ और दसरे का किया हुआ मानते हैं। जो सुक्त-हु को अकारण हुठात उपन्यन हो नया मानते हैं।

जाजुस पारिपुत्र-1 हुस विषय में भगवान का नया कहना है ? क्या कह कर हम भगवान् के मिन्द्रान्त की यथायंत्र वाहा सकते हैं, जिससे इस भगवान् के सिन्द्रान्त में कुठ उस्टा-पुरूटा न कर हैं, उनके धर्म के मजुकूक कहें, और, जिसके कहने से कोई सहधार्मिक वाशचीत में निन्दा-स्थान को न प्राप्त हो नाय ? भादुस स्तरिपुत्र ! भीर पंस भी कितने असण और माझण कर्मवादी है जो हुएन को न भपना स्वयं किया हुआ भार म दूसरे का किया हुव्या किया अकारण इठाव हो गया बताले हैं।

मापुस सारिपुत्र ! इस विषय में अमण गांतम का क्या कहना है ? क्या कह कर इस अमण गींतम के पिदान्य को प्रधार्थनः क्या सकते हैं जिसकी अमण-गींतम के सिदान्त म इस इकटा-पुक्स प कर हैं, बार्क पर्म के अपुक्रक कहें, और जिसके कहने में काई सहचामिक निन्य-स्थान को न गाम हो खाव !

भादुस ! भगवान् ने दु क को प्रतीरप्रसमुत्यक बतकामा डं। किसके प्रकार स (≔होन से ) ! स्पर्स के प्रत्यत स । पुंसा ही कह कर व्याप अगवान् के सिद्धान्त को यवार्यतः वता सकते हैं किमसे अगवान् के सिद्धान्त स नाप उक्तर-पुक्ता न कर हैं। उनके वर्ष के बदुक्क कहें ।

आदार ! जो कर्मवादी असम या माझम हुन्स को जपना स्वयं किया हुना बताते हैं वह भी स्पर्स के प्रत्यय ही सं होता है। जो कर्मवादी असम था शासम दुन्स को जपना ज्यदं किया हुना और दूसरें का भी किया हुन्या बताते हैं वह भी स्पर्त के प्रत्यव ही मां हाता हूं। को कर्मवादी असम या माझम दुन्स को न असना ज्यं किया हुन्या और न मुद्रत का किया हुआ किन्सु असारन हसार हो गया बताते हैं वह भी स्पर्त के प्रत्या ही से होता है।

चाडुस | यो कर्मवादी असल पा साहल दुःग्र को भवना चार्य किया हुना बताते हैं दे विशा स्पर्त के ही कुछ भद्रमार कर हैं—पंशा सम्माव वहीं। । यो असल या साहल्य दुःख को सक्तरम इसद हो गया बताते हैं से भी विना स्पर्त के ही कुछ अनुसाय कर हें—देशा सम्माव नहीं।

#### Ħ

बायुच्यात् आनस्त् ने सम्य तैषिक परिवादकों के साम बायुच्यात् सारियुम्न को स्था-संबार करते सुना ।

त्य आयुष्पान् शानव्य निशास्त्र से कांट जोतन कर लंगे पर कहीं सापान् से वहीं गये और सापान् ना जीमवादन करके एक ओर बैड गये। एक शीर बैट व्यायुष्पान् आत्मव्य ने प्राप्तान् की जन्म ग्रीपिट परिमाणकों के साथ जानुष्पान् सारिपुत्त का वो कुछ कवा-संकार हुआ वा प्रमे आ के स्वा कहा माजाः।

र्डेक हैं सातन्त्र ! स्मारिपुण में ब्रोक हो समझाया है। सैंबे हु क को अशीरममञ्जूषक ( हेतू के होने स उत्पक्त होनेसाक) वातावा है। दिसा है होने स उत्पक्त होनेसाक) वातावा है। दिसा ही कहकर कोई ली मरे उपनेश को प्रधार्थक। बता सकता है जिसा कहकेबाका नरे सिहान्त में कुठ कक्ष्म पुक्रम मही करात है। ऐसा कहनेबाका कोई सहधार्मिक वात्यीय से सिन्ध-स्थाव को नहीं आस करता है। आनन्द! अस करता है। सा करता है।

ही से बाता है। सासम्प्र ! जो कर्मवादी असल वा शाहरण हुएल को वतात हैं वं निवा स्पर्श कही कुछ जनुसर

कारान्य ! यो कर्मवादी कामन वा शाह्मण हुत्त्व का वताते हैं वे विना स्पर्ध कही कुछ अनुसर्व कर के पैसा सम्मव नहीं ।

भागम् । यस विवासी सम्ब सैनिक परिवासको का आराम था वहीं शवा आर वसका सम्मोदन किया; नमा भुगम सेम के सस पुराने के बाद एक बोद बैट गया । ५ भूमिज सर

आनन्द । एक और बैठने पर अन्य तैर्थिक परिवाजको ने मुझसे पूछा .....।

ि वही प्रश्नोत्तर जो भायुष्मान् सारिपुत्र के साथ कहा गया है।

सन्ते आश्चर्य है । अवस्त्रत है । कि एक ही पद से सारा अर्थ कह दिया गया । भन्ते । यदि यही अर्थ विसार से कहा जाता तो वहा गम्भीर होता, देखने में अत्यन्त गहरा मान्द्रम पटता ।

तो आनन्द ! तस इसे कही ।

### 31

भन्ते ! यदि मुझले कोई पूछे--आयुग आजन्द ! जरामरण का निवान क्या है, समुदय क्या है. उत्पत्ति क्या है. उद्भा क्या है ?--तो में ऐसा उत्तर हूँ --आधुल ! जरामरण का मिदान जाति है, समुद्रय जाति है, उत्पत्ति जाति है, उहम जाति है। अन्ते ! ऐसे पूछे जाने से में ऐसा ही उत्तर हैं।

···जाति का निश्चन भव है''।

- · अब का निदान उपादान है ।
- ' उपाष्टान का निदान नुष्णा है ''। चळ्याका निटान घेटना है ।
- बेचना का निवास स्पर्ध है \*।

भन्ते । यदि सम्र से कोई परे-आयस आनन्द । स्पर्श का निदान क्या ई ''?--तो में ऐसा दत्तर हैं-आह्रम । स्पर्श का निवान पदायतन है । आहुत्स । इन्हीं छ॰ स्पर्शायतमों के विस्कृत रूक जाने से स्पर्श का होना रूक जाता हैं। स्पर्श के रूक जाने से बेटना नहीं होती। बेटना के रूक जाने से क्ष्णा नहीं होती। क्ष्णा के रक जाने से उपादान नहीं होता। उपादान के रक जाने से भव नहीं होता। भव के रुक्त आने से जाति नहीं होती। जाति के रुक्त जाने से जरा, सरण, शोक, रोना-पीटना, हु स, वेचैसी, परेशांनी सभी कर जाते हैं। इस तरह, सारा हू ख-समृह क्क जाता है। भन्ते। ऐसे पूछे जासे से में पेसाडी उत्तर दें।

## § ५. भूमिज सुत्त (१२ ३ ५) सुख-दु ख सहेतुक है

थावस्ती में ।

#### क

तव, शायुष्मान् भूमिज सध्या समय ध्यान से वढ, वहाँ शायुष्मान् सारिपुत्र थे वहाँ गये, भीर 'कुशलक्षेम के प्रदन पुलकर एक भीर बैठ गये।

एक और बैट, आयुष्मान भूमिज आयुष्मान् सारिपुत्र से बोले-आयुष्म सारिपुत्र ! कुछ श्रमण और ब्राह्मण कर्मधाटी हैं जो सुख-हु स को अपना न्यय किया हुआ भानते हैं। ' जो सख-ह स को दसरे का किया हुआ मानते हैं। " जो सुख-द स को अपना न्वय किया हुआ और दसरे का किया इआ मानते हैं । ' को सुख-दू ख को अकारण हठान उत्पन्न हो गया मानते हैं ।

भायुस स्वारिप्रतरी हरा विषय में भगवान का क्या कहना है ? क्या कह कर हम भगवान के निशान्त को युवार्यंत बता सकते हैं, जिमसे हम भगवान् के सिद्धान्त में कुछ उल्हा-प्रख्या न कर रें, उनके बर्स के अनुकृत कहें, और, जिसके कहने से कोई सहधार्मिक वातचीत में विस्थानको

न प्राप्त हो जाय ।

साकृतः ! मराबात् ने सुन्त-कुरा को प्रतीतकसमुख्य बतावा है । किसके प्रतीत्त से है स्पर्त के प्रतीत्त से । पेसा हो कहने बाका मराबात के सिज्ञान्त को प्रधार्थतः बताता है ।

मध्यम् । जो कर्मवादी असन या माहत्व भुष्य-पुत्ता को 'अकारण इटाल् उत्पन्न हो गया सानते हैं वह भी स्पर्भ के होने ही से बोला है ।

वे दिवा स्वर्ध के ही कुछ अनुभव कर सें-गिमा सम्भव नहीं ।

## ख

ध्यपुष्पात् आतम्त् वे बायुष्पात् सृतिज के साव आयुष्पात् सारिपुत्त के कवासंस्थप की तुवा। वव आयुष्पात् ष्टवाक् बहुँ आवात् ये वहाँ गये और आयवात् का अतिवादव करके एक और वैट गये। एक और वैट आयुष्पात् वावव्य वे धाववात् का आयुष्पात् शृतिज क साथ आयुष्पात् सारि पुत्र का वा कष्पात्रसम् इष्ट्य था। सत्री क्यों का रहीं कह सुवाय।

ठीक ई आतन्त्र ! न्यारिशुञ्ज ने वहा क्षेत्र असमग्राया ! आतन्त्र ! मिने शुक्र-कुन्त को प्रतीत्त्रसम् एप्य वर्षामा ई । किम व्यतित्व म १ रपर्यं के प्रतीत्व सी । एमा कहमे वामा मेरे मिज्ञान्त को प्रसापत। धनाता ई ।

मानन् । सा कर्मवार्ता असला या शाहाण सुल्युत्य को अकारण डठाए उत्पक्ष हा गया सानठे देवह मी स्टर्स कहोने द्वीस काला है |

वं विना रुपर्यं के क्षी लुद्ध जनुमेश कर में गैमा सम्मन वहीं।

न्यानस्त् ! सरीर म काई क्यों वर्षण पर क्यों की चेतना (क्यों।!) क क्यु स अपने में सुन्ध-दुष्क वरपत्र होता ह । स्वानस्त् } कोई क्चन घोकन पर वार्यचनता के हेतु स अपने में सुन्ध-दुष्क उत्पन्न होता है। मानस्त् ! मन स हुए वितर्ज करन पर समस्चतना के हेतु स अपने में सुन्ध-दुष्क उत्पन्न होता है |

भारतपुर कह भविता के कारण को लाएं कानशरकार हुउद्दा करता है उसके प्राप्त में उसे भारत में सुरा-पुत्र उत्तरण होता है। कानण्य किया हो है। वार्त्यारकार हुउद्दा करते हैं उसके प्राप्त स भी उस भारत में सुरा तुरा उत्तरण होता है। कानण्य किया कुछार को आवलेखार हुउद्दा करते हैं उसके प्राप्त हा उस अपने हैं सुरा-पुत्र अपन्त हाता है। कानण्य किया कि विशा आवे बात अपन्यांत्रण हुउद्दा करता है उसके प्राप्त का उस्ते अपने हैं सुना चुरा उत्तर हुउद्दा करता है।

णानन्द ! चाड स्थ्यं जो बारमंत्रस्य इष्डा वश्ता है। जनक प्रत्यव सं उस अपने में शुल-दुल्य उन्तर्य हमा है।

भामनप् १ चाद मार्च को समामंत्रकार ।

भागन्तु हुन छ। यसी में श्रविया लगी हुई है। विश्वचा के विस्तृत्व दर और नक कार्न में बह कर्म नहीं होता है जिसमें उस सुन्द-दुन्त उन्दूष हीं। वह वथन वह सब के दिसहें बहीं होते हैं जिनमें उसे सुन-दुन्त उनका हों।

यमें यह क्षत्र दी वहीं रहना है आधार दी नहीं रहना है आवनन नहीं रहना हैतु नहीं रहता। क्रिमेंद्रे अभवार बसे व्यक्ते में सुल-कुल्य क्लाब हों।

### ६६ उपयान मुच (१२३६) युग्ग समुख्या र

धापानी हैं।

नव आनुसाय स्वयान काँ मगवाय थे वहाँ आवें और धगवाय का श्रीमवादय बरके कर और वैद सबे। कर भेर वेद आयुध्वाय स्वयाय सम्बाद से वाले--

भन्ते । इस विषय में भगवान् का क्या कहना है ?

उपवात ! मेने हु ख को प्रतीत्यसमुख्य वताया है। किसके प्रत्यसरे ? स्पर्धिक प्रत्यसरे ! " उपवात ! जो दु स को "अकारण हठाव अध्यस हुआ मानते हैं, वह भी स्पर्ध के होने से ही होता है।

. उपवास !\*\*\* दे विना स्पर्श के ही कुछ अनुभव कर छैं--- ऐसा सम्भव नहीं ।

## ६ ७. पच्य सुत्त (१२. ३ ७)

## कार्य-कारणका विद्यास्त

थावस्ती में।

भिश्चओं । अधिकाके होनेसे सरकार होते हैं ।'''। इस तरह, मारा दु ख-समृह उठ खढ़ा होता है। भिक्षओं । जरामरण क्या है ? जो उन उन जीवीके उन उन चोनियोंसे युटा हो जाना, पुरनिया

सिक्षुओं ! जारावरण क्या है ? जो उन उन जीवाको उन उन योतियाम युद्धा हो जाना, पुरिनेया हो जाना, इंतिंद्धा हुद माना, वाळ स्पेक्ट हो जाना, झुरियों पढ़ जाली, उत्तरका खातमा और हुन्द्रियोंका दिविक हो जाना, इसीको कहते हैं जरा। जो उन उन जीवोंको उन उन योतियोंनी रिसक पदना, उपक पत्तना, कट जाना, अन्तर्योंन हो जाना, ख्र-खु, सरण, कहा कर जाना, स्वन्थोंका छिन्न भिन्न हो जाना, चौठाको छोत्र देना है। इसी क्रीं-कहते हैं प्रश्चा । ऐसी यह जरा कीर ऐसा यह सरण । सिक्षुओं ! इसीको कहते हैं जरामरण।

बाति के ममुख्यसे जरामरणका समुद्रय होता है। बातिके निरोधसे जरामरणका निरोध होता है। यही आर्य-अदाहिक-सामी जरामरणके निरोधका उपाय है। आर्य-अदाहिक सामी है——(१) सम्यक् एडि, (२) मम्यक् सकर्व, (३) सम्यक् बाक्, (७) सम्यक् कर्मान्त, (५) सम्यक् आजीव, (६) सम्यक् प्राचान, क्यांप्त, (७) सम्यक् आजीव, (६) सम्यक् प्राचान, (७) सम्यक् अप्राचान, (६) सम्यक् समाधि।

भिक्षको ! जाति, भय, उपादान, भूष्णा, बेटना, स्वर्धा, पहायतन, नामरूप, विज्ञान, सहकार स्या है ?

[ वेखो—पहला भाग § २ (२) ]

अधिया के समुद्य से सरकार का समुद्रय होता है। अविधा के विरोध से सरकार का निरोध

होता है । यही आर्थ-अर्धागक-मार्ग सस्कार के निरोध करने का उपाय है

सिक्षणी ! जो आर्थभावक इस प्रत्यय को जानता है, प्रत्यय के समुद्य को जानता है, प्रत्यय के निरोध को जानता है, प्रत्यय की निरोधताधिनी प्रतियदा को आनता है—यही आर्थ-आयक रिष्टिसम्पन्न कहा जाता है, टर्गनसम्बद्ध औ, राइन्में को प्राप्त औ, सदर्म को टेशने चाला भी, प्रीद्य-नाम से मुक्त मी, श्रीद्य-विचा से मुक्त भी, श्रीद्य-नाम से मुक्त भी, श्रीद्य-विचा से मुक्त भी, श्रीद्य-विचा से मुक्त भी, श्रीद्य-विचा से मुक्त भी, श्रीद्य-विचा से मुक्त भी।

### § ८. भिक्खु सुत्त (१२. ३. ८)

#### कार्य-कारणका सिद्धान्त

श्राचस्ती मे

भिक्षुओ ! यहाँ, भिक्षु जरामरण की काचता हैं । जराभरण के समुद्रय की जानता हैं, जरामरण के निरोध की जानता है । जरामरण की निरोध-गामिनी-प्रतिषदा को जानता है । सर्ति को कानता है । सब की कामता ह । तपादान को कानता है "'। त्या को बानता है । वेदमा को बानता है । स्पाँ को कामना है । पदावतन को बानता है । नामकम को बानता है । विद्याल को कामता है । मंशकार को बानता है"।

सिञ्चली ! जरासरण थमा है ? [ ऊपर के स्त्र पुसा ]

८९ पटम समणमामण सत्त (१० ३ ९)

### परमार्थकाता भ्रमण-प्राह्मण

भाषसी में ।

**₹** 

सिक्षुओं । को क्षमल या बाह्यण करामरण काति यस उपादान नृष्या देवन स्तर्भ पदायतन नामकप विद्यान संस्कार को नहीं बानते हैं संस्कार के समुद्रक की नहीं बानत हैं संस्कार के निर्देश की नहीं बानते हैं संस्कार की निरोधगानिती मिटिवदा को नहीं बानते हैं—उन समर्थों की न तो समर्थों में गिल्डी होती हैं किए न बाह्यों की बाहरों में के शानुस्मान होने के शानुस्मान हमा

तिसुन्ने । जा असन्य वा बाह्यन वरामस्य संस्कारः की नितोपसामिनी प्रतिपद्मकी कार्यने इ.—हम्ही असम्बंधि असम्बंधि नित्तवी हार्ता इ आर बाह्यमंत्री आह्वमंत्रीं । वे बाह्यसम्बद्धान इसी वस्समं सन्नय या प्रात्त्रको परमार्थको स्वयं काव साक्षान्य कर कीर जास कर विदार करते हैं ।

६ /० दतिय समणबाह्यण सत्त (१ ३ १०)

मेक्कार-पार्रगत समग्र वाह्यव

भागमी में ।

कायरना भा ।

भिद्रुभी ! वा ध्रमण वा ब्राह्मण जरामरक व्यक्ति संस्थारको नहीं वानते हैं 'ससुर्य'
के नहीं जानते हैं निर्तेषको नहीं वानते हैं 'विश्वपातिनी प्रतिपदाको नहीं वानते हैं—वे ब्राह्मरक संस्थानिक पात्रक केंद्र देखा सम्बद्ध नहीं ।

मिश्रुको । को काम वा वाह्मण करामात्म सन्तरात्म कानने हैं 'समुद्दको सामन हैं विरोधक वानने हैं निवाबगामियी मनिष्याको कानते हैं—ये जरामात्म 'संस्कारीको पार कर हैंगे —रोगा को सक्ता है।

वशक्य चग समात

## चौथा भाग

## कलार क्षज्ञिय वर्ग

## ६१. भ्रतमिटं सुत्त (१२ ४ १)

यथार्थ जान

एंसा मेर्न सुना । एड नमय भगवान श्रायस्ती में श्रनाथपिण्डिक के जेनचन अल्लाममे बिहार करते थे ।

#### 귦

यहाँ, भगवाडने आयुष्मान साविषुत्र की आमन्त्रित क्या---नारिषुत्र । अजित के प्रश्न प्रत्नेमें यह कहा गया था---

जिन्होंने धर्म जान खिया है, जो इस जासन से सी-पने बीस्य है, उनके जान और आधार कहें, है सारिय ! से पहता हूँ ॥ मारियुत ! इस सक्षेत से बहे गये मा फेंसे विकार से अर्थ समझना चाहिये ? इस पर आद्यनान स्वारियुत्र चुप रहे । वृक्तरी बार भी । सीसरी बार भी अस्तुस्मान सारियुत्र चुप रहें ।

#### ख

सारिपुत्र | बह हो गया, हाम देयो । सारिपुत्र । यह धाँत यया, हाम देखो । सम्ति । यह हो गया, हाम व्याप्त सम्बद्ध प्रज्ञा से देखता ह । यह हो गया—हाने यथार्थत सम्बद्ध प्रज्ञा से देखता ह । यह हो गया—हाने यथार्थत सम्बद्ध प्रज्ञा से देखता होता है । इसे आहार के दित में होते सम्बद्ध प्रज्ञा से व्याप्तत हेखा, आहार के दित में होते सम्बद्ध प्रज्ञा से व्याप्तत हेखा, आहार के महम्बद्ध में विश्व प्रज्ञा से व्याप्तत हेखा, आहार के स्वाप्त में विश्व प्रज्ञा से व्याप्त साम के निर्वेष प्रज्ञा से विश्व सम्बद्ध प्रज्ञा से ज्ञान निरोध प्रमें के निर्वेष स्थाप सम्बद्ध प्रज्ञा से विश्व स्थाप जाता है । अन्ते । अन्ते । अन्ते । अपने । अन्ते । अपने ।

भन्ते ! अजित के प्रश्न पूछने में जो यह कहा गया बा-

जिन्होंने धर्म ॥

उस मक्षेप से कहे गये का मैं पूंसे ही विस्तार से अर्थ समझता हूँ ।

#### ग

अंक है, सारिष्ठज, ठीक हैं !! निर्वेदु=विरागः=निरोध=अनुषादान से विश्वक हो जाता है । [ जपर वो कहा गया है उसी की पुनरिक ] कारि को जानता है । अब की जानता इ '। उपादान को जानता है' । तृष्णा को बानता है । बेद्दा को जानता है । स्पर्ध को जानता है । पदायतम को जानता है । नामकस को जानता है । विज्ञास को बानता है । अंक्सर को जानता है ।

सिद्धमी ! बरामरच क्या है ! [ क्रपर क सूच पेमा ]

### 8 ९ प्रत्म समणवा**क्षण सच** (१२ ३ ९)

### परमार्थेशता ध्रमण-ब्राह्मण

ध्याचलनी में।

क

निश्चर्या | को समझ या बाह्यल करामरण वादि मंच उपादाम मुख्य वेदण स्वाप पदायतम बामदम्य विद्वान सम्कार को महीं बालते हैं मंस्कार के समुद्रभ को नहीं बालते हैं संस्कार के निराय को नहीं बालते हैं संस्कार की निरोधमानियों मतिवदा को नहीं बालते हैं—उन समझों की न तो समझों में निलती होती हैं और व बाह्यओं की बाहमों में के सामुख्यान इसी बाहम में समझ या साम्राय के पारानों को स्वापं बाल माझाल कर कीर साम कर विद्वार नहीं करते।

सिद्धवी | वा स्रमण या आह्नण जरामरण 'संस्तार 'की निरोधणासियी प्रतिपदाको जानते हैं—हम्ही समर्थोकी समर्थोमी शिनती हाती है और आह्मणोकी साहर्थोमी | वे आयुष्पात् इसी कस्पर्में स्रमण या साहराजे रामार्थको स्वर्थ कार्य साक्षात्र कर और प्राप्त कर विवार करते हैं |

#### में स्कार-पार्रशन अमण प्राह्मण

भावस्ति में।

भिन्नभा ! का ध्रमण या ब्राह्मण जासरण व्यक्ति संस्थारको नहीं आवते हैं 'सहारण को नहीं आवते हैं निरोचनो नहीं आवते हैं 'निरोचगामिनी प्रतिपदाको पड़ी' जानते हैं—ने खासरम संस्थातीयो पारकर सेंगे ऐसा अञ्चल नहीं !

निमुत्ती कि धाम या प्राञ्चन नास्तरण मंग्डारको जानने हैं समुद्दको कानने हैं निरोपको जानने हैं निरोजनातिनो प्रतिपदाको जानते हैं—वे नरामरक संस्कारीको पार कर होंगे —पेना हो सकता है।

दशक्स धग समाप्त

मेंने जान लिया कि--साति क्षीण हो गईं, ब्रह्मचर्ष पूरा हो गया, जो करना था स्रो कर लिया, अब और कुछ वाकी नहीं बचा ।

सारिपुत्र ! यदि तुमसे कोई ऐसा पूळे--आञ्चम सारिपुत्र ! जातिका क्या निदान है,=क्या उराति है,=क्या प्रभव है ?--तो तुम क्या उत्तर दोगे ?

भन्ते । यदि नुहो कोई ऐसा पूछे तो मैं यह उत्तर हैं --आयुस ! जातिका निदान भव है ।

\*\*'भवका निदान उपादान है।

\*\*\*उपादानका निदान तृष्णा है।

मृण्याका सिदान वेदना है।

१२ ४ २ 1

सारिपुत्र ! यदि तुमने कोई ऐमा पूळे--आधुस सारिपुत्र ! क्या जान और देख होने से आपको किसी पेदमाके प्रति आसक्ति नहीं होती है ?--सो तुम क्या उत्तर दोने ?

भन्ते । यदि मुझे कोई ऐसा पूछे तो म यह उत्तर हूँ—आयुसा । बेटनामें तीन है। कीन सी तीन १(1) सुखा वेडना, (२) हु या वेदना, (२) अह स-सुखा वेदना । आयुसा यह तीने येडनामें अनित्य हैं। "को अनित्य है वह हुन्न हैं" जान, किसी पेदना के प्रति मुझे आसक्ति नहीं होती है।

ंग्रेरु कहा है, स्वारिपुन, ठींक कहा है! इसे सक्षेप में यो भी कहा जा सक्ता है—जितने भद्रभव ( =वेदना ) है, सभी दुरा ही है।

सारिपुत्र । यदि तुम से कोई पूछे-किस विमोक्ष के आधार पर आगने बूसरों की कहा कि जाति सीण ही गईं , ऐसा मैंने जान किया १-तो तुम क्या उत्तर दोंगे ?

भन्ते ! यदि शुझे कोई ऐसा चुछे तो में यह अत्तर हूँ—अखुद्ध ! भीतर भी गाँडों से में छूट गया, सारे उपाशन क्षीण हो गये, मैं ऐसा स्पृतिसात् होकर विदार करता हूँ कि भाशव आसे नहीं पाठे 'और अपना भी निराहर नहीं होता !

डींक कहा है, सारिपुज, ठींक कहा है ! इसे सक्षेप में यों भी कहा वा सकता है—अमणो ने तिन भाश्यों का किंद्री किया है बनमें सुसे सबेह बमा नहीं है, ने मेरे में महीण ही खुके, सुसे विश्विकत्ता भी नहीं रही !

बह कह, भगवान् आसम से उठ विहार में देठ गये।

#### म

भगवास् के जाने के बाद ही आयुष्मान् सारिपुत्र ने भिक्षुओं को आमन्त्रित किया-

अ जिली ! भगवान् ने जो जुझे पहला प्रस्त पूछा था वह जुझे विदित नहीं था, इसीलिये कुछ वैधिका हुआ। अत्र भगवान् ने मेरे पहले प्रस्त का अनुसोदन क्रस दिया, तब मेरे अच में हुआ—

यदि भगवान् सुझे क्रिय़-किय प्राव्हां में भिन्न-क्रिय प्रकार से दिन भर इसी विपय में पूछते सह हो में दिन मर भिन्न-मिछ शर्व्हा में भिन्न-सिछ प्रकार से उन्हें सतीपजनक उत्तर वेता रहें।

यदि भगवान्''राप्तभर, रात दिन, दो रात दिन, तीन, चार, पाँच, छ, सात रात दिन इसी विषयमें पूजते रहें तो में ''उत्तर देता रहें।

#### घ

तप, भिक्षु कळारक्षप्रिय व्यस्तनसे उठ, बहाँ ममबान् ये बहाँ गया, और भगवान्का अभि-बादन कर एक एक ओर बैठ गया।

## ६२ कलार**सुरा** (१२ ४२)

# प्रतीरय समुत्पाद सारिपुत्र का सिंहनाद

धायम्सी में।

### क

तर भिन्न कारारक्षत्रिय वहाँ कायुष्मान सारियुक्ष ये वहाँ जाया । आकर वायुष्मान सारि पुत्र का सम्मोदन किया, तथा कुलक-क्षेप के यहन पूछ कर एक और वैठ गया ।

पृष्ठ और बैठ मिश्रु कळारस्त्रिय अञ्चय्मान् सारिपुत्र से शेका-

काबुस सारिपुत्र ! सिद्ध मोश्चियपत्रमुत्त चीवर क्रोड् गृहस्य हो गवार्ड ! उस आयुष्मान् ने इस क्रमेंचिनय में सामासन नहीं वाचा !

क्या जाप आयुष्माण् सारिएण न इस धर्मविषय में धानासन पाना है।

भावत । इसमें मुझे हक संबंध नहीं है।

बाहुस ! महिष्यकाक में।

मानुस ! इसकी सुवा विविक्तिसा नहीं है ।

त्रव, निश्च क्रास्ट्राफ्तिय भासन से उठ व्या सावान् थ वहाँ गया और ध्यावान् का असि-वादन का एक और वेट गया।

एक बोर के मिछु कछारक्षिय सगवान् से बोका "सन्ते ! व्यारिपुत्र ने सान किया है कि सांति क्षोज हो गई महत्त्वर्ण पूरा हो गया को करना बासो कर किया अब क्षेत्र कुछ बाकी नहीं नवा है—पैसा में बानदा हैं।"

तम भगवाम् ने किसी मिञ्च को जामन्त्रित किया—है सिञ्च । सुनी आकर सारिद्रज को न्हीं

कि त्रव तुन्द तका रहे हैं।

नन्ते ! बहुत वश्वतः' वह वह मिश्रु शगदाम् को उत्तर हे वहाँ बाबुन्माम् सारिप्रय में वहाँ गदा भीर बोधा—स्महत्व सारिप्रत ! कापको हृद्ध हुका रहे हैं !

"आकुस ! बहुत अच्छा" कह, आयुप्तान् सारिपुत्र कस मिश्रु को उत्तर ने बहाँ मगनान् है बहुर्गे गर्थ कार मगवान् का जीमवादन करके एक जोर बैठ गये !

### स

पुत्र और वेटे हुन्ने शायुष्पाण् सारिपुत्र को धगवाण् ने कहा—सारिपुत्र | कहा हुनमें सच्युक्त काकृत्र ऐसा कहा है कि में बालवा हूँ कि वाति सील हो गई, बहावर्ष प्रा हो गया |

मानी ! मेंने इस वार्ताका इस तरह नहीं कहा है ।

स्तारिपुत्र ! किमा केमी तरहात्री क्षण्युत्र दूसरेको कहे चिन्तु कहा हुआ ती कहा हुआ ही हु<sup>का ।</sup> सन्ते ! तभी तो में कहता हूँ कि मैंने इन वार्तोको इस्त तरह नहीं कहा है ।

स्तारिपुत्र ! पवि तुमस कीई पुष्टे—भावुस सारिपुत्र ! क्वा काव और वैकार अपने वृत्तरीकी कहा कि "जाति शील हो गई, महत्त्ववे कुरा हो गया को करता वा शी कर किया अब और बुज बाकी मुद्दी बचा है—पसा किने बान किया है ११२—को तुम क्या उत्तर दोगे १

मन्ते । यदि मुझे कोई पृता पाछे तो मैं यह उत्तर मूँ :---भावुस ! किस निवास (= हेतू ) र्न कार्ति होती है रूम निवासकं क्षम हो सामित मेरे काल किया कि उसका की कृत हो यहा। वह सामग्र भैने बात रिया दि—-त्रमित भीण हो गई, प्रताययं पृथा को गया, हो। करना था सो कर लिया, अब और एक दाकी नहीं घरा !

सारियुत्र । यदि मुमने कोई ऐसा पूर्व--अधुम सानियुत्र 🖟 आविका यया निरास 🖟 = रगा

उत्पत्ति हैं,=त्या प्रभव हे ?—तो तुम क्या उत्तर होंगे ? भन्ते ! वृद्धि कोई ऐसा पूछे तो मैं यह उत्तर हैं —आसूत्य ! आतिका निदान भय है ।

\*\*\*भग्रका निद्रात उपायन है।

"विपादानका निद्तन तृत्वा है।

मूरणाश निमान घेदना है।

सारिपुत्र ! सदि शुममें कोई एमा पूर्व-अव्याप मारिपुत ! यवा जान बार देन लेने से आपकी

किमी चेंद्रवाके प्रति आसिक मही होती है १--तो तुम वया उत्तर शते ?

भन्ते । यदि मुझे कोई ऐसा पुढे तो में यह उत्तर है— जादुय! देवनार्थे तीन है। कीन ती सीन ?(1) सुरा। वेटना, (०) हुता बेदना, (०) अदुत्त सुरा। देवना । आधुन। यह तीनी वेदनार्थे अनिया है। "जी अनिया है यह सुराद है" जान, किसी बेदना के प्रति मुझे आसिन मुझे होनी है।

रीक करा ह, मानियुत्त, टीक कहा हैं। इसे खद्देव में यी भी कहा जा सकता है---जितने

अनुसर (=वेदना) है, सभी दूरा ही है।

सारिपुत । यदि तुम से कोई पूछे--किम विमोक्ष के आधार पर आपने वृत्यरों को कहा कि जाति क्षोग हैं। गर्दे , ऐसा मैने जान निया १--मा तुम क्या उत्तर टोगे १

भन्ते । यदि सुछे कोई कृषा पूछे तो में यह उत्तर हैं—अयुष्य । भारतर की गाँडा से में छूट गया, सारे उत्पादन क्षीण है। गये, में ऐसा स्कृतिभाज् होकर विदार करता है कि आश्रय आने नहीं पाते ओर अपना भी निराहर नहीं होता ।

डींन फहा है, साहिबुझ, डींक कहा है। इसे सक्षेत्र में यो भी कहा जा स्वकता है—अमणों से जिन भाअयों का निर्देश किया है उनमें शुक्षे सटेह यना नहीं है, वे मेरे में प्रहीण हो खुके, गुझे प्रिचिकित्या भी नहीं रही ।

यह कह, भगवान आसन में उठ विद्वार में पैठ गये ।

#### 37

भगवान् के जाने के बाद ही आयुष्मान् सारियुत्र ने भिक्षुओं को आमन्त्रित किया-

आहुमी । भगवान् ने जो सुझे वहल्य प्रकृत पूछा था वह सुझे विदिल नहीं था, इसीस्प्रिय हुछ हीसिस्य हुआ। जत्र वसातान् ने सेरे पहले प्रकृत का अनुसोदन कर दिया, तथ सेने सन में हुआ-

यदि सगवान् सुक्रे भिन्न-भिन्न दाटनो में भिन्न-भिन्न प्रकार से दिन भर हमी विपय में पूछते रहें सो में दिन भर भिन्न-भिन्न दाटनो में मिन्न-भिन्न प्रकार से उन्हें सतोपत्रमध्य उत्तर वेसा रहूँ।

यदि भगवात्र "रात्तवर, रात्त दिन, दो रात्त दिन, बीन, चार, पाँच, छ, सात 'रात्त दिन इसी थिपवमें पूछते रहें हो मे" "उत्तर देता रहें ।

#### घ

तय, भिक्षु क्षळार्श्वश्रिय आसनमे उठ, जहाँ भगवान् ये वहां गया, और भगवान्का अभि-वादन कर एक कोर बैठ गया। पुक्र और बैठ कालारक्षाधिय शिद्ध सगवान्से बोला—सन्ते ! आयुप्पान् सारिपुत्र ने सिरवाद किया है कि आवृत्तो ! यदि सगवान् सात राजदिव इसी विषयमें पूछते रहें तो में विचर वैजा रहें।

है मिसू ! सारिपुक्ते ( प्रतीस्थ समुत्ताव ) वर्मको पूरा-पूरा समझ किया है। यदि 🗓 सात रात

दिव भी' 'इसी विपनमें पूछता रहें तो वह' 'कत्तर देता रहेगा ।

## **६३ पठम आणवरप्र भ्रुत्त (१२ ४ ३ )**

#### श्रामके विधय

आबस्ती में ।

कार परा न : सिह्दी | मैं २० जानके विवर्तोंका कपवेश कर्योगः । उसे शुनी अच्छी तरह सब कमानी मैं कहता हैं।

"भाते ! बहुत कवान" कह शिक्षानीने नगवाक्को उत्तर दिया ।

सगवान् वासे--- शिक्षुजी ! शानके ४४ विषय कीनसे हैं ?

सरामरण जान वरामरणके शरहरवका जान करामरणके निरोधका जान करामरणकी विरोध सामित्री प्रतिपक्ष का जान

५—४ बाविकः ।

८—१२ सम् ।

१६-१६ अमानाम ।

20-6 Ecel. |

रे2—१३ वेदना'ं ।

रा—रह सर्गः । रुप—रट स्पर्कः ।

१५--११ पदानतम् ।

42-44 ablace

३३-३६ मासरूप **ो** 

३,७−७ विकास ।

५१ संस्कार का ज्ञान ७२ संस्कार के सञ्चयन का ज्ञान ४३ संस्कार के निरोच का ज्ञान धीर ५० संस्कार की निरोचनार्यमणी प्रतिपदा का ज्ञान ।

भिद्याची ! यही ४४ शाम के विषय करे वाते हैं।

मिश्रामी ! क्यामरण क्या है ?~ [ देखी श्रद्धवर्ग पहला भाग § २ (२) 1

मिहुओ ! कारि के सरहश्य से बरामरण का सरहश्य होता है। व्यक्ति के विरोध से बरामरण का विरोध होता है । वरामरण की विरोधशामिकी मरिशना यही कहांगिक मार्ग है जो कि (1) सम्बक्ति

(१) सम्बन्ध सक्कार (३) सम्बन्ध् बान्न (४) सम्बन्ध् कर्मामा (५) सम्बन्ध बाजीव (३) सम्बन्ध् व्याचीम

(v) सम्बद्ध स्थाति (d) सम्बद्ध समाधि ।

किंद्रीओं ! जो आर्थ जानक इस पारह जरामरण की जात सेवा है जरामरण के समुन्द की जात केवा है जरामरण के तिरोध को जात सेवा है जरामरण की विशेषणात्तियों प्रतिवाद को जान केवा है। वहां उनका चर्म-जात है। जो इस क्याँ को देख केवा है जात करता है पहुँच कुठवा है आए कर सेवा है जमार्थन कर बेवा है जहीं करीय कीर जमारात की सेवाल करता है।

अंतरित काक में जिल शासन वा लाहाण ने करामस्य को ""आना है वालने हसी चरह जाना है मसा

में कर रहा हैं।

जिल्ला में की अमन का जाहाग करासरण की 'कामेंगे के इसी तरह जावेंगे अस्य में कह रहा हैं। यह करन्या का जान है।

मिधाओं ! जिन भार्य आवकों को (१) धर्म का ज्ञान, और (२) परम्परा का ज्ञान परिश्रद्ध हो जाता है, वे आर्य आवक दृष्टि-सम्पन्न कहे जाते हैं, दर्शन सम्पन्न, धर्म में पहुँचे हुये, धर्मदृष्टा, शेक्ष्य ज्ञान से यक्त, शेक्ष्य विद्या से युक्त, धर्म-लोतापद्म, आर्य निर्वेधिकप्रज्ञ, और असृत के द्वार पर पहुँच कर खड़े होने वाले कहे जाते हैं।

भिक्षुओ । जाति . , भव .., उपादान , तृष्णा. ., चेदना .., स्पर्श . , पदायतन ... नाम-रूप..., विज्ञान. , सस्कार ।

# § ४. दुतिय आणवस्थु सुत्त (१२ ४.४)

#### ज्ञान के चिपय

ध्याधस्त्री में ।

भिन्नुओ । में ७७ ज्ञान के विषयों का उपदेश करूँगा । उसे सुनी \*\*\*।

भिक्षओं ! ७७ ज्ञान के विषय कौन से हैं ?

(१) जाति के प्रत्यय से जरामरण होने का ज्ञान, (२) जाति के नहीं होने से अरामरण के नहीं होने का ज्ञान. (३) अतीत काछ में भी जाति के प्रत्यय से जरामरण हुआ करता था इसका ज्ञान, (४) अतीत काल में भी जाति के नहीं होने से जरामरण नहीं होता था इसका ज्ञान, ५-६ मधिप्य में भी, ... भीर (७) जिम धर्मों की स्थिति का जान है वे भी क्षय होने वाले. व्यव होने वाले. छटने वाले भीर कक जाने वाले है---इसका ज्ञान।

- २ भव के प्रत्यय से जाति होने का जान ।
- है. उपातास के प्रत्यव से अध ।
- ४. ठरणा के प्रत्यय से उपादात ।
- ५. वेदना के प्रत्यय से लण्या ।
- ६. स्पर्श के प्रत्यथ से घेदना ।
- ७ पदायतन के प्रत्यय से स्पर्धा \*\*\*।
- ८ नामरूप यो प्रश्यय से पदायतन ।
- ९ विज्ञान के शरवय से नामकव ।
- ५० संस्कार के प्रत्यव से विकास ।
- ११ भविद्या के प्रत्यय से संस्कारों के डोने का आन" ।

भिक्षको । यही ७७ ज्ञाम के विषय कहे गये हैं।

## § ५. पटम अविज्जा पच्चया सुच (१२ ४ ५)

#### अविद्या ही दुःखों का मूळ है

#### थावस्ती में 1

मिश्रुओ ! अविश्वा के प्रत्यय ( ≔होने ) से सरकार होते हैं । सरकारों के प्रस्थय से विज्ञान होता है…। इस तरह, सारा ह ख-समूह ठठ खंबा होता है।

पुसा कहने पर एक भिक्षु ने भगवान् को यह कहा---भन्ते ! जरामरण नवा है, खौर जरामरण किसको होता है ?

भगवान वोळे-पेसा पूछना ही बळत है। भिक्ष ! जो ऐसा कहे कि ."जरामरण स्या है. और

वरामरण किसकी होता है", अवधा जो ऐसा कहे कि "जरामरण दूसरी ही चीज है, और दूसरे ही को वह

करामरण होता इंती इव बोवाँ का वर्ष णक है, केवळ शब्द ही शिछ हैं। सिछु ! को श्रीव है वहीं सरीर है, वा बीव यूसरा है और सरीर बूसरा—गेमी रहि श्वामेशक का महावर्षपास सफड नहीं हो सकता है। सिछु ! इव होतां अन्ती को छोड़ तुब सच्च से धर्म का अपन्या करते हैं कि ज्ञाति के प्रत्यय से जरामरण होता है।

मन्ते ! बादि क्या हे और किसकी कारि होशी है ?

मगवाद योडे—युना पूछना ही गलत है। [बीसा धपर वहा गया है] मिसु हम दोनों अन्तों को गींद बुद्द मध्य से बर्ज का उपवेश करते हैं कि मद के प्रत्यव में वार्ति होती है।

कपादान के प्रत्यक से अंध ।
नृष्णा के प्रत्यक से अंध ।
नृष्णा के प्रत्यक से कपादान ।
वेद्या के प्रत्यक से त्यूणा ।
स्थानी के प्रत्यक से त्यूला ।
पदानवान के प्रत्यक से पदावतन ।
निकास के प्रत्यक से पदावतन ।
पिकास के प्रत्यक से पदावतन ।
पिकास के प्रत्यक से त्यूला से प्रत्यक्त ।
परिकास के प्रत्यक से त्यूला से प्रत्यक ।
परिकास के प्रत्यक से त्यूला से प्रत्यक ।

भावचा क सल्या थ सरकार।

मिद्ध ! बसी यांच्या के रिकड़क दह थीर एक जाये से को डुक थी राइयदी और उक्टी राक्टी है कि—बरासरम न्या है जीर जासरण होता है किसवी; क्या जारासरम नुसरी चीज है जीर किसी हुसरे को करासरम होता है, क्या को चीज है जहां छारी है जीर जीव हुसरा है और करोर नुसरा—समी हर वारों है जिसके हो जाती है कि अर अरो कार्यक जाती राहरी है।

शांवि पंस्थार प्राची पर वाली है ।

## ६६ दतिय जविज्ञायस्यास्त (१२४६)

### मधिया ही दक्तें का मरु है

भाषस्ति में ।

मिश्चर्यो । स्विष्ण के प्रत्यम से संस्कार होते हैं। । इस तरह मारा कुला-समूह पर वना होता है।

मिस्रमा ! पदि कोई एक्टे कि सरामाच्य क्या है और सरामाच्य होता किरुक्तो है। अथवा पर कि सरामाच्य द्वाच पूसरी ही चीत है और किसी यूपरे ही चीत को सरामाच्य होता है; हो सिक्क्षा पोर्ची कर एक ही करें हैं।

मिसानी ! इन दोवों अन्तों को बाद शुद्ध मध्य से वर्ग का प्रपादेश करते हैं ।

मिसको । यदि कोई वसे कि कारि करा है ।

भव क्या है

विवादान क्या है ।

मुच्चा क्या है । अवस्य क्या है ।

र वदनाच्या छ । ररश्याची कका के ।

- पदायतन क्या है ।
- · सम्बद्धाः वसार्थः ।
- विकास प्रका है ।
- ं मनकार नया है''। बिह्युको । इस टोनो धन्तों यो छोए युद्ध मध्य से धर्म ना उपदेश बरते हैं. कि अधिया वे प्रत्यय से महत्तर होते हैं।

भिश्वको । दसी अविचा वे थि हुए १२ और रक आपे में जो बुए बदबरी और उटरी प्रदर्श हैं, कि--कामरण पवा हैं, और असमरण होता है कियनो, अध्या, करामरण दसर्रा चीज रे '--समी हर जाती हैं।

आति • • मन्द्रापः सभी हट आसी हैं।

## § ७. न तम्ह सत्त (१२. ४. ७)

#### क्षतीर अपना नहीं

धायसी में।

भिश्वको । यह कावा न तुम्हारी अपनी है, और न तृमरे पिसी की । शिश्वको । यह पूर्व कर्मों है फडकारूप, चेतना और पेटना से शुक्त, प्रायवों के होने से उत्तपन्न हैं।

सिक्षको । कार्यधावक इसे मीरा प्रसीन्यमञ्जूत्वाद या ही शीव से सनन करता है।

इन्स सरह, इसके होने से यह होता है, इसके उत्पाद से यह खन्यन हो जाता है। इसके महीं होने से यह नहीं होना है, इसके निरोध से यह विरुद्ध हो जाता है।

अधिशा के प्रत्यय से सक्वार ।

जनी अविद्या के थिएफल एउ और रक आहे से ।

# § ८. पटम चेतना सुत्त (१२ ४.८)

चेनना और सकल्य के अभाव में मक्ति

श्राद्यक्ती हैं।

सिक्षुणी। जो चेवना करता है, किसी काम को करने का सकत्य करता है, किसी काम में रूप जाता है, कह विज्ञान की किसीत कामये रखने का आखरुषक होता है। विज्ञान के अने रहने से, पहले रहने से, मिदिव्य में बार-बार जरूम देसा है। अधिक्य में बार-बार जरूम देने से जरामरण, होता बना रहता है। इस तरह, मारा टू-ख-ममूह बट जार होता है।

सिक्षुओं ! जो चेतना नहीं करता है, सक्ष्य नहीं करता है, किन्तु कास में एना जाता है, पह भी विज्ञान की स्थिति चनाये रुपले का काल्यम्य होता है। विज्ञान के बने रहते, बश्ते रहते से, भविष्य में वार-बार कम्म लेता है। अधिष्य में बार बार अभ्य लेने से जराबरण द्रोकः चना रहता है। इस सरह, सरा हु जर्मसह उठ बहुए होता है।

मिश्रुओं ! जो चेवना नहीं करवा है, संकल्प नहीं करवा है, और न किसी काम में लाता है, पह विज्ञान की खिति पनाचे रखने का आल्यान नहीं होता है। विज्ञान के बने नहीं रहने से, यरते नहीं रहने से भविष्य में नार-नार कल्म नहीं लेता है। मबिष्य में कल्प नहीं होने से जरामरण, शोक से स्ट्र आता है। इस तरह, सारा हु लस्त्यहार कक्ष जाता है।

## ६९ दृतिय चेतना सुल (१२ ४९)

### चेतमा और संकड्य के अग्राय में मित

धायस्ती में ।

मिशुओं ! को चेतना करता है संकरन करता है किसी काम में कम बाता है, यह विजान की व्यक्ति बमाने रखने का आक्रमन होता है। आक्रमन होने से निजान जमा रहता है। विजान के बमे रहते कार वसने रहने से नाम-रूप कमने रहते हैं।

नाम क्या के दीने से पदावतन दोता है। पदावतन के दीने से स्वर्ध दोता है।' वेदना !

मुण्याः 'जपादामः। भगः। 'सादिः। जरामरमः

भिशुओ ! जो चंद्रभा नहीं करता हं संख्यन नहीं करता है किन्तु काम में कमा रहता है वह विज्ञान की निवालि में बमाने रक्षत्रे का आंक्रम्यन होता है। आंक्रम्यन होने से विज्ञान जमा रहता है। विज्ञान के कमे रहने और वहले रहने संगाम-कप उगले रहते हैं।

अरामरत्तं 'सारा बुंग्छ-समुद्द उट चण्डा होता है। मिश्लुधो ] जो जेवला लाई करका संकष्ट नहीं करका और न उसमें क्या रहका है यह विज्ञान की स्थिति नतार्थ रचने का आकरणन वहीं होता है। काक्यनन वहीं होनेस विज्ञान छहारा महीं राजा। विज्ञाद के सहरात न पाने से नाम क्या नहीं बचने।

नाम-क्य के एक काने से पश्चावतक नहीं होता । इस तरह सारा दु:ख-समूह एक बाता है।

### इ १० वर्तिय चेवना सच (१० ४ १०)

#### बेतना भीर संकल्प के मनाय में मुक्ति

भावसी में ।

मिछुको । को भवता करता है अंकरंप भरता है किसी भाग में क्या करता है वह विद्यान की

निवृद्धि बराये रखबे का आकरता होता है। माकस्वन होते से बिकान कमा रहता है।

विश्वाद के बाने रहने और वानने के हुकान (=नकि) होता है। सुकान होने से प्रावित्य में गरित होती है। जिल्ला में गरित होने से प्रावा-बीचा होता है। सरवा-बीचा होने से बाठि बरामरण । इस तरह सारा हा क-स्थाद कर कहा होता है।

मिञ्जूजो | जो चेवना नहीं करता संकब्द नहीं करता किन्तु किसी काम में कमा रहणा है वह भी विद्यान की रिवरित वकाचे १७वने का |बाक्कान होता है | इस तवह सारा दुग्ल-मध्य वर्ड

बाक्षा होता है।

सिक्षानी | को भेरामा गर्दी करता करूमा शर्दी करता काम में नहीं क्या रहता वह विज्ञान की निर्माद कराने रक्ता का साकारण नहीं होता है। व्यक्तन्तन नहीं होते से विज्ञान करता नहीं रहता है कीट करते करीं पारा।

विकास के व कमे रहते और व वसने रहते का क्षाना ( क्यांति ) वहीं होता है। प्रकास नहीं होने से भविक में गति की नहीं होती। गति नहीं होने से बोना-सरना नहीं होता। सारा पुण्य-समृह एक बाता है।

करकार सक्रिय कर्र समास ह

# पाँचवाँ भाग

### ग्रहपति वर्ग

## § १. पटप पश्चचेरभय सुत्त (१२. ५. १)

पॉल वैर-भग की जारित

श्रावस्ती में ।

#### क

तथ, अनाश्यपिणिडक गृहपति वहाँ भगवान् ये वहाँ आया, और भगवान् का अभिवाद्त कर एक ओर वैंड गया।

्षक और वैटे हुए अमाश्रिपिण्डिक गृहपित से अगवान बोले—गृहपित । जब आर्थ आवक के पाँच बेर-अय शान्त हो जाते हैं, चार स्रोतापित के अगों से युक्त हो जाता है, आर्थ जान प्रझा से अच्छी सरह देख और समझ लिया गया होता है, तो यह यदि चाहि तो अपने की ऐसा कह समता है—मेरा स्थाप हो गया, मेरी तिरक्षीन-बोलि क्षीण हो गई, मेरा अपाय और हुगीति में पदना हीण हो गया। में स्रोतापन हो गया हूँ, मेरा अपाय और हुगीति में पदना हीण हो गया। में स्रोतापन हो गया हूँ, में मार्ग से खुत नहीं हो सकता, परम ज्ञान की प्राप्त कर छेना मेरा निहचय हैं।

कीन से पाँच वैर भय-ज्ञान्त हो जाते है ?

पृह्मति ! को प्राणी-हिंसा है, प्राणी-हिंसा करने से को इसी जन्म में, या नूसरे जन्म में भय और वैर वकाता है, किल में दु ख और बीमीनस्य भी बढ़ाता है, सो भय और वैर प्राणी-हिंसा से बिरत रहने बाले को सान्त हो जाते हैं।

गृहपति 1 सो भय और बैर चोरी करने से विरत रहने वाले को शाम्त हो जाता है।

पृह्मपति !ं सो भय और वैर मिथ्याचार , ऋषा भाषण , नविश्वी बस्तुओं के सेवन करने से विरत रहने वाटे को सान्त हो जाता है।

यही पाँच वैर-भव शान्त हो जाते हैं।

### ख

किन चार स्रोतापत्ति के अगों से युक्त होता है ?

गृहएति <sup>1</sup> जो जार्न-जापक बुझ के ग्रति अधक अद्याख होता है—से भगवाज् लाईन, सम्यक् सम्युद्ध, निश्चात्वण से सम्यक्ष, दुवारित को पाने, जोकानीबु, अनुत्तर, युद्धों को दमन करने वाले, रेवता और मञ्जलों को राह विसाने वाले अगवान् बुद्ध।

गृहपति । जो आर्थ-आवक धर्म के प्रति जचन ध्राज्ञ होता है—अमवाज् का धर्म स्वाच्यात है, ताहिक है, (=ह्दी जन्म में फल देवे बाला है), जन्मिक (=विवा देरी के फल देवे बाला है), होगों की बुला बुला कर दिशाया आनेवाला है (=धहिपस्थिक), विद्यांग तक ने जाने वाला है, पिझों के हारा अपने भीतर ही (=अलावा ) जहुमन किया नावेवाला है। ्रापित ! जो वार्ष-भाषक संध के प्रति अपक्ष अवास्त्र होता है—आगवात का लावक संध सुमार्ग वा कास्त्र है सीचे माता पर लावत है जान क आगों पर बावक है अवशी तरह स मार्ग पर बावक है। जो पह पुरांगें का चार कोषा बाठ की, पही भागवात का भागवानस्थ है। यही आवक्तसंघ निमंत्रित करण क पीरव है सल्कार कारों के बीनव है जान होने के पीरव है प्रणास् काले के बीन्स है बीक का बावत पुष्प क्षेत्र है।

मुन्दर पर्शित से पुष्क दोशा है। स्थापक शिक्षक अगरक निर्दोप सुरा हुआ कियों से प्रचितित समाधि के सनक्ष्य कीयों से।

इन चार स्रांतापत्ति के श्रीगों श बुक्त होता है।

महा से मध्डी तरह देवा और बाग इसका आर्य हाम क्या है ?

मूहपति । भाव-भावक मणीश्वसमुत्याद की ही डीक से आवना करता है । इसके होने से यह होता है इस तरह सारा हुल्ल-समुद्राच रुक बाता है |

पदी प्रशा से अच्छी तरह देखा धीर जाना इसका आर्थ शास होता है।

# § २ द्रतिय प्रज्ञवेरम्य सत्त (१२ ५ २)

वाँच केर प्रथ की जाहित

धावली है।

त्र कुछ निष्ट बहाँ भगवान के बहाँ ।

मरानाम् बोडे- [ क्रपर बाकं सूच के क्षशान ही ]।

# § ३ दुक्ख सुच (१२ ५ ३)

द्रान और बसका क्रम

आवस्ति में।

मिद्धानी ! में बुल्क के समुत्रप और कब हो लावे के विषय में बरवेस करीता ! उसे सुवी ।

#### क

मिश्रुमा ! द्वाच का शतुवन क्या है ?

च्यु चीर करों के होने शं चकुर-विद्यान चैदा होता है। तीनों का जिस्ता दपरों है। दपर्श के होने के वेदना । मिन्नुनों। हसी ताह हरना का कम्मूपप होता है।

भोज और शब्दों के होने से । आज और शब्दों के होने सं " | किहा और दसों के होने से 1

भाषा भीर रहस्मी ह होने मे-- |

सन भीर क्यों के दोने से धनोबिकान पैदा होता है। शीनों का शिक्रमा स्वसं है। स्वर्त के होने से बैदमा होती है \*\*। निश्चनी ! नहीं शुक्त का सञ्चल है।

### ख

भिश्चमो [ पुरत्य का कम हो सामा (अमर्शनासः ) नवा है १

च छु और करों के हाने से चछु-विशेष पैदा हाता है। योगी का सिमना स्वर्त है। रवर्त के हावे से वेदवा हानी है। वेदना के हाने से सुनना होता है। इसी गुल्या को विष्कुल हटा और रोक देने से उपादान नहीं होता। उपादान के रूक जाने से भव नहीं होता। '। इस सरह, सारा दु.प-समुद्ध एक जाता है।

भिक्षओं। यही दुश्वका छय हो जाना है।

श्रीय और शब्द ' मन और धर्मों के होने में '। इस तरह, सारा दू ख-समृह एक जाता है। '

६ ४. लोक सत्त (१२. ५ ४)

होक की उत्पन्ति और लग

श्राचस्ती मे ।

श्रावस्ता मा भिक्षको । कोक के समुद्य ओर क्य हो जाने के विषय में उपदेश कर्सैंगा। "

क

भिक्षुकी ! लोक का सगुद्य क्या है ? चक्ष और रूपों के होने से [पूर्वचर ] भिक्षओं ! यही छोक का सगुद्य हैं !

ख

भिक्षओं। यहां लोक का लय हो जाना है।

६ ५. जातिका सुच (१२. ५. ५)

कार्य-कारण का सिद्धास्त

पुंसा सेने सुना । पक समय भगवान आनिक में विद्याकावस्त्रण में विद्यार वट रहे थे ।

あ

सब, प्कान्त में ध्यान ऋरते हवे भगवान ने इस प्रकार धर्म का उपवेश दिया-

चक्षु और रूपों के होने से बखुविश्वान पैदा होता है। तीनी का मिळना स्पर्दी है। स्पर्दी के होने से बेदता होती है। बेदमा के होने से मुग्गा होती हैं । इस तरह सारा हु खन्समूह उठ कवा होता है।

श्रीप्र भीर शब्दों के होने से '', सन और धर्मों के होने से

चक्षु और खरी के होने से पक्षुविज्ञान पैदा होता है। तीनों का मिछना स्पर्श है। स्पर्श के होने से वेदना होती है। पेदना के होने से नृष्णा होती है।

उसी तृष्णा के विस्कुल हट और २क जाने से उपादान नहीं होता। उपादान के रक जाने से भव नहीं होता। ' इस तरह सारा दु खन्समूह रक जाता है |

क्षीत्र और बब्दों के होने से , अब और धर्मों के होने से ।

ख

उस समय कोई मिश्रु भगवान् के पास सदा होकर सुन रहा था।

भगवान् ने बसे पास में सदा हो सुनते देखा। देखकर उस श्रिष्ठ को कहा—श्रिष्ठ | तुमने मुना जिस प्रकार सैने प्रस का कहा है

मस्त ! जी हाँ ।

मिशु ! इसी प्रकार धम का सीलो ! मिशु ! इसी प्रकार धर्म को बूस करो । मिशु ! इसी प्रकार यह धम अर्थवान् हाना है । प्रकारतंन्त्राम का यह मुल-वपदेश है ।

## § ६ अम्अतर सुस (१२ ५ ६)

### मध्यम माग का उपदेश

थापनी में।

ताव कोई माधान कहीं धारवाल् से वहीं आपा। आकर कुताल क्षाप के प्रदेश कुछने के बाद एक और बर राखा:

एक भार बैंद कर बद्द माहाण संगचान् म बोला-हे गातम ! चया जो करता है बद्दी मांगण है ?

मारुम र एका कहना कि जो करता है यही भोतता है एक सम्म है।

ह गानम ! पना करता है काई कुमरा भीर मीरगता है कोई कुमरा !

द माह्यम ! ऐसा कहना कि "बहुना के कोई मुखरा और भागाग है काई नूखरा" मुखरा अना है। माह्यम ! इन बाना भागों का काव बक संख्या सं वर्त्त ना क्यारेग करते हूँ ।

अविधा स हात से संबर्धर हात है ।

दर्गी भविषा के विश्वान हुई आहे दक जाने हो। ।

यमा बहने पर वह ब्राह्मन संग्रहान् में बामा-- मुझ अपना शरकातत उपासक हवीकार करें ।

## ६७ जानुस्योगि सच (१२ ४ ७)

#### मध्यम भाग का उपदश

धापम्ती में १

सर जानुधाणि आक्रम सहीं यसपान के नहीं आवा आर पुरान क्षेत्र के बहुत पूत कर एवं भी दिह राजा ।

पद भीर केंद्र काणुधाणि माञ्चन भगवान से वीमा-दे गीमा र वया सभी पुत्र ह है

दे माधन हे नेता बहना कि "ताओ बुछ ह । बुछ भ व है।

दे र्गापम र क्या सभी मूछ बर्ग है है

दै मध्यम । नेपार बहमा कि, माननी मुख मही है। तुगरा अन्य है। जाह्मण | हम दोनी समी वा कर गृह मध्यम मध्ये ने [हमर के सुम प्रताह]

## ि शावायम सम (१० ५ ८)

#### शीकिक मानी का न्याम

अन्यक्ती है।

तार निरामित्य सामाना त्या भीव वैद सामान्य से सामान्य है ही वह करने हैं है । है सामान्य है तिमा प्रदान कि तामान्य है ति पहली सी बाजा बात है है

default act may his mir fit

t area ! for ear to much go aft to got after and to

हे गौतम ! क्या सभी कुछ पुकरच (=अहैत ) है ?

है प्राक्षण ! पेसा कहना कि "सभी कुछ एकत्व ही है" तीसरी लौकिक बात है ।

हे गीतमा वियासभी कुछ वाना है ?

हे गोतम ! "सभी कुछ नाना है" ऐसा कहना घोषी कीकिक बात है । आग्रण ! इन अन्तों को छोद प्रक्र मध्यम से "।

### § ९. पटम अरियसाचक सत्त (१२ ५.९)

## आर्थश्रावक को प्रशीरयसमृत्याद में सन्देह नहीं

श्रावस्ती में ।

मिञ्जुलो ! पण्डित आर्थआयक को ऐसा संदेह नहीं होता—पता नहीं कि क्या होने से क्या होता है ? किसके उपाल होने से क्या उपाक होता है ? किसके होने से सस्कार होते हें ?\*\*'फिसके होने से जरामण होता है ?

सिक्षओं । परित आर्यश्रावक को यह आज तो प्राप्त ही होता है--इसके होने से यह होता है...

जाति के होने से जरामरण होता है। यह जानता है कि क्रोक का समुद्य इस प्रकार होता है।

मिश्रुणी । पडित आर्थआवक की ऐसा सर्वेह नहीं होता—पता नहीं, किसमें रक नाने से क्या नहीं होता ?''किसके तक आते से अगासरण नहीं होता ?

निसुकी ! पश्चित आर्थक्षायक को तो यह मतीव्य समुत्याद का ज्ञान प्राप्त ही होता है—हसके इक जाने से यह नहीं होता ''आति के रुक जाने से अरामस्ण नहीं होता है । यह आनता है कि लोक का निरोध इस प्रकार है ।

भिद्धुओं। क्योंकि वह कोक के समुदय और तिकद होने को यथार्यंत जानता है, हसीकिये आर्थकावक इंडिसरपक्ष कहा जाता है

§ १० दतिय अस्यिसावक सत्त ( १२ ५ १० )

आर्थेशायक को प्रतीत्यसमुखाद में सन्देह नहीं

[जपर वाले सुत्र के समान ही ]

गृहपति वर्ग समाप्त ।

# छठाँ भाग

## द्रस वर्ग

### र्वे १ परिविषसासभा (१२ ६ १)

### सवदाः कुःस-सय के छिए प्रतीरयसमुखाद का गतन

णेला सेने सुना।

पुरु समय मगवान् आवस्ती में समायपिण्डक के जनवा बाराम में विदार करते थे।

वहाँ मगवान् ने मिशुओं को धार्मान्त किया--मिशुओं !

मरन्त ! अहकर मिशुओं ने मगवाच् को क्सर दिया ।

मगयान् योथे—सिशुको ] सर्वतः कुछ के अन्य के किये क्वियार करते द्वय सिश्च की विचार कर ?

भन्ते । वर्म कं भाषार नायक संया जलिहाता भगवात् ही हैं । अच्छा होता कि भगवात् ही इस इन्हें हुने का भन्न बताते । भगवान् सं सुन कर सिक्षु धारण करेंते ।

वी मिश्रुमी ! सुनी अच्छी तरह शत कगाभी में कहता 🕻 🛙

''मन्ते ! पहत मध्या कह मिशाओं से मगशान की क्सर दिया ।

मगावार वोके :— मिश्चनो | मिश्च विकार करते हुने विकार करता है—को बरामरम इत्वादि स्रमेठ प्रकार में वाता दुष्य औरू में करवा होते हैं करका निराल क्या है समुद्दय क्या है कस्पित वर्षा है प्रमत क्या है ! किमठे होते से जरामरम होता है ! किनठे नहीं होते से बरामरम वहीं होता है !

िच्यर करते हुने यह इस प्रकार जान नेना हं—जी बरामाण हानावि सनेक प्रकार से वार्य युःग बाक में बलब होने हैं बनका निवास काति है । आधि के हाने से जरामरण होता है। आति के नहीं हाने में जरामरण नहीं होता है।

यह जरामरण को जाय धरता है जरामरण क समुद्रव किरोध "प्रतिपदा को झान खेटर है। वह इस प्रकार वर्ग क सर्पे भाग पर झाझह हो जाता है।

मिश्चभी ! बह लिशु लगता पुरारकाय के लिये बरामरण के निरोध के किये प्रतिपन्न दोता है !

इसके बाद की कियार वारते हुये विकार वारता है---अब वचावाण शुक्ता पेवृता ". त्या चवावतम-"मामकच विकास अंग्रहार का विवास मधा है "?

यह विचार कारी हुए यह आज कार है मंत्रकार का निश्चन अविधार है 'श अविधा है हाने से संस्कार होने हैं । अविधार के मही होने से संस्कार कारी कारे हैं ।

यह रोग्डरों का जान मेना है नसुर्व निरोध "प्रतिरहा को स्राम क्षार । हम प्रकार वह धर्म के सच्चे मार्ग वा कामा होता है •••।

िम्हाभी है अविका में बहुर हुआ पुरुष पुण्यमाँ कारत है। एक पुण्य का विकास उसे हारा है। समुख ( = वाव ) कमें कारत है सक अपुष्य का विभाग करा हारत है। वह अपय-समें ( अधान्ता) ? कारत है तब अपय प्रकारी विकास की हारत है।

चार भण नवार्षभर्त सातक ( भयत का) वहाँ आगे हैं।

शिक्षुओं। जय शिक्षु की अविचा महीज हो आती है और विचा उत्पन्न होती हैं, तो वह न तो पुण्य—कर्म करता है न वाय-कर्म, और न अवल-कर्म (कोई भी संस्कार वहीं होने देता हैं)। वोई भी सहस्रत न करते, कोई पेतता न करते, लोध में उर्हों भी आगन्द नहीं होता है। सर्वमा अवासक होने से उसे कर्मा गय महीं होता, यह अपने भीतर ही निर्वाण या देता है। आदि क्षीण हो गई, महाचर्ष प्रा हो गया, बो करता था भी कर लिया, अब ओर कुड वाकी कार्टी ?—पेरा जान खेता है।

यदि उसे सुरा-चेदना का अनुभन होता है तो आनता है कि यह अनित्य है, चाहने मीन्य नहीं है, स्याद केने बीन्त नहीं है। यदि उसे दू रा चेदना, अहु स असुख चेदना तो जानता है कि यह

असिस्य ऐ \* \* \*।

यदि उसे सुख-येदना, शुल येदना, या अनु.स-अञ्चल येटना होती है तो उसमें पह आसक्त नहीं होता।

जर पत् ऐमा अनुभव करता है कि काया का या जीवन का अन्त हो रहा है तो वह उस बात से सचेत रहता है। दारीर छुटने और जीवन का अन्त हो जाने पर मारी नेदनायें यही बाल्त, पेकार और इटी हो जार्येगी। दारीर छुट बाते हे—ऐसा जानता है।

भिक्षुओं | जैमे, कुम्हार के आँचा में निकाल घर गरम चर्तन कोई ऊपर रख दे तो उसकी सारी गर्मी निकल जाती है और यर्तन टका हो जाता है, येंसे ही अर्रार छट जाते हैं—ऐस्टा जानता है।

भिक्षभी ! तो पया श्लीणाश्रत भिक्ष पुण्य, अपुण्य या अवल संस्कार इस्ट्रा करेगा ?

नहीं भन्ते !

सर्वता सरकारों के न होने से, सरकारों का निरोध ही आने से, उसे विज्ञान होगा ?

सर्वत आसि के न होने हो, जाति का निरोध हो जाने से, उसे जरामरण होगा ?

नहीं भन्ते !

ठीक है, भिक्षुओ, ठीक है! ऐसी ही यात है, अन्य वा नहीं। भिक्षुओं! इस पर श्रद्धा करो, मन्देह छोड़ो, काक्षा और विविधिन्या को हटावो। यही हु खों का अन्त है।

### § २. उपादान सुत्त (१२. ६. २)

सासारिक भाकर्पणां में बुराई देखने से तुःख का नाश

श्रावस्ती में ।

भिञ्चओं । संसार के आकर्षक धर्मों में आसक्त दोने से तृष्णा बढ़ती हैं । तृष्णा के होने से डपादान होता हैं।'' इस तरह, सारा हु खन्सगृह उठ खड़ा होता है।

लिक्षुओं। आग की आरी देर में इस, बीस, तीस, वा चाळीस आर कफिक्सों भी देकर कोई सकाये। कोई पुरुष पर एक कर यदि उसमें सूची धाम डाळला रहे, गाँवने ताकता रहे, तकियाँ डाळता रहे, तो सभी जल जाती हैं। मिछुओ। इसी तरह, कोई सहा अनिस्कल्य आहार पदसे रहने में मारण परापर जालता रहेगा।

भिक्षुलो । ठीक उसी तरह, ससार के आकर्षक धर्मों में आसक्त होने से तृष्णा बदती है । नृष्णा के होने से उपादान होता है। इस तरह, सारा हु स समूह डठ कवा होता है।

मिक्षुओं ! ससार के आकर्षक घर्मों में जुराई ही जुराई देखने से तृष्णा इक आसी है । नृत्णा इक वाने से उपादान का आता है । इस तरह, सारा हु कासमूह का जाता है ।

भिछुजी ! यदि कोई पुरुष रह-रह कर उस अनि स्कन्ध में सूखी वासें न सार्छ, गोंबडे न

संयक्ष-निकाय

दाके ककदियाँ न दाले. तो वह अधिनत्कत्य पहुले के मादार सामास हो जान और नये ग पाने क कारम इस कर देश हो जावगा 1

शिक्तको । जारी प्रकार अंतरात क आकर्षक धारों में बताई शी कराई बेकने स. सारा प्राच समुद्र ६६ वाता है।

## § ३ पठम सञ्जोजन राष (१२ ६ ३)

#### सारवात-स्वारा से राप्या का मात्रा

धारमधी हैं।

बरुपय में बाधनेकाक करों में आलाद केते. हुए विद्वार करने से तृष्णा वहती है। तृष्णा के होने

से बपादान होता है : "इस तरह सारा कुःय-मसूह वढ जहा हाता है।

मिक्समी ! तेक और वची के होने से ( क्का मतीत्व से ) तेक प्रतीय जकता रहता है। उस मदीय में कोई प्रथम रह रह कर पेस शकता बाब और बची उसकाता जान सी वह आहार नाते रहने से बहुत काक तक जसता स्ट्रेगा ।

मिश्रुको | बंसे ही बन्धन में बावने वाके धर्मों में आस्वाद केंग्रे हुये विद्वार करने से तृष्का नहती

है। तथ्या के होने से अपावान होता है। "इस तरह सारा बाध समुद्र कर बाबा बोता है।

\*\*\*मिझुओ ! उस प्रदीप में कोई पुद्रप रह रह कर न तो तेल बाखे और न वची उसकाने तो

वह प्रदीप पहले के सभी माहार समाग्र हो जाने पर नवे न पाने के कारण वह बायगा ।

मिक्सभी । बेसे की बल्यम में बाकने वाके वानों में बताई की बताई वेवसी वने विदार करने से लच्या बढ़ी बढ़ती है। इस तरह आरा दृश्च-समुद्र एक व्याता है।

## ६ ४ दतिय सम्जोजन सच (१२ ६ ४)

#### भारताव-स्थाग से द्रण्या का नाश

भावली में !

सिद्धाओं | तेक और वची के होने से तेक-प्रवीप अकता रहता है | कोई प्रवर उस प्रदीप में रह रह कर तेळ बाळता आम भीर वत्ती असकाता बान तो वह आहार पार्त रहते से बहुत काक तक बक्ता रहेगा ।

### [क्यर के सूत्र जैसर ]

### § ५ वटम महारूपच सूच (१२ ६ ५)

#### राज्या महावस है

भावस्ती में

निमानी ! शंकार के जाकर्षक वर्मों में आसण्ड होने से शुव्या वहती है । शुव्या के होने से हपा

वास सिसाबी | क्रीड्रै सहाबुध हो । उसके को सूक वीचे वा अगळ वगक फैके हों, सभी अपर रस भेकते हीं । इस तरह यह शहाबुध बाहार पाते रहते के कारण विश्वाक तक रह शकता है ।

मिश्रुको । वैसे ही संसार के लाकपैक वर्मों में 🕞

भिक्षणी । जोई सहाबुध हो । सब कोई पुष्प कुमाक और शेवशी अंकर आये । वह बस वस के सक को कारे, गुरू की कार कर बसके नीचे सुर्शा कीए है और तुक के सभी मुकसोई की बाद कर नियान है। यह बुश की कार कर हुक्ते-हुक्तने कर है। फिर हुक्तों को भी और काले । और कर क्रोड़ी सैकी निकाल दे | चैकी को भूप और हवा में सुप्ता कर जला दे । जला कर कोयला बना दे । कोयले और रास को या तो एया में उदा टे या नदी की धार में बहा दे । मिक्षुओ | इस तरह वह महाबूक्ष उम्मूल हो जाय, उसका किर प्ररोह नहीं हो ।

भिञ्जलो । यस ही, समार के आकर्षक धर्मा ने केवल बुराई देपने से नृष्णा रुक जाती हैं । नृष्णा के रुक जाने से उपादान नहीं होता है । '। इस तरह सारा हु 'च समृह रुक बाता हैं ।

६ ६. दतिय महारुक्त सत्त (१२. ६. ६)

राजा महाबक्ष है

श्रावस्ती में।

…[ऊपर के सत्र कैमा ]

८ ७, तरुण सूच ( १२, ६, ७ )

तःणा सरणवश्च के समाम है

श्राधस्ती में ।

भिक्षुओं । वश्यन में दारुने बाले धर्मों में आस्वाद देखते हुये विदार करने से तृष्णा यदती हैं। तृष्णा के होने से दपादान होता हैं।\*\*\*

भिश्चक्षो ! कोई तरुणहक्ष हो। कोई पुरुष समय रामय पर उसके याल को फुलका यमाता रहे, मात्र देता रहे, और पानी पथाता रहे। भिश्चओं ! इस प्रकार वह बृक्ष आहार पाकर कुनो, बड़े और एक फैल जाय !

भिक्षमो । वैसे ही,""आस्वाद देखते हुये विहार करने से तृष्णा बदती है""।

भिक्षओं ! कोई तरणवृक्ष हो । तब, कोई पुरुष कृदाल और टोकरी लेकर आवे ।

निश्चको । बैसे ही, घन्यन में शक्तनेवाले धर्मी में सुराई ही तुराई देखते हुये विहार करने से कृष्णा नहीं बदती । कृष्णा के इक काने से बपादान नहीं होता । इस तरह, सारा हु स-समूह इक जाता है।

६८, **नामरूप** सत्त (१२.६८)

सांसारिक आसाद-दर्शन से नामरूप की उत्पत्ति

आबस्ती में ।

मिल्लुको । यन्थन में सालने वाले घमों में आस्थाद देखते हुये विद्वार करने से साम-इ.प उडते हैं । मिल्लुक की उपमा देकर उपर वाले सुत्र के समान ौ

8 ९. विज्ञाण सत्त (१२.६९)

सांसारिक आखाद-दर्शन से विशान की उत्पत्ति

थावस्ती में ।

भिक्षुओ । यन्थम में हाळने वाळे धर्मों में भारवाद देखते हुये विहार करने से चिक्कान उठता है। [ ऊपर वाले सुत्र के समान ] बाखे कवदियों न बाखे तो वह अधिवृत्कत्य यहके के आहार समाप्त हो बाले और नये न पाने के कारण बस कर रंका को सायसा ।

मिश्रको ! वसी प्रकार, संसार के आकर्षक घर्मी में पुराई ही पुराई देखने से 'सारा दु:स

समृद्ध छह बाता है।

# § ३ प्रसम्बोजन सप्त (१२ ६ ३)

### मासाव-स्थाग से खप्या का माश

भागस्ति में।

कम्बन में बाबनेबाके घर्मों में बारबाद केते. हुए विहार करने से भूष्णा बश्टी है। गुष्णा के हीमें

से बपादान होता है। 'इस सरह सारा हुतन समृह कर सहा होता है।

मिछनो ! तेल और वची के होने से ( = प्रशीरप से ) तेक महीच सकता रहता है। उस प्रशीप में कोई प्रदय रह रह कर तेक काकता जाय और यथी उसकाता जाय ती वह आहार पार्च रहने से बहुत कास तक सकता रहेगा ।

मिल्ला | बेसे ही वन्यव में बासवे बाके पार्थी में जाएवाद केश हवे विदार करने से मुख्या बढ़ती

है। तुच्या के होने से अपादान दोवा है। 'हम करह सास बु:ल-समूद कर पाना होता है।

· मिश्रको ! उस प्रवीप में कोई धरूप रह रह कर न तो तेज शाके और न बची उसकाने तो क्रम प्रमीय पहले के सभी माहार समाप्त हो कारी पर गरे व थाने के कारण खुझ कापना ।

मिल्लाओं | बैसे ही अन्यान में बाकते वाके धर्मों में बुराई ही पुराई देखते हुने विद्वार करने से तथ्या नहीं बढ़ती है। इस तरह सारा शुःश्वा-समृह एक बाता है।

# ६ ४ दतिय सम्लोजन सच (१२ ६ ४)

### भारताव-स्थाग से वच्चा का गांध

धावस्ती में 1

सिम्मुक्ती | रोक और वाची के बीचे से तेक-प्रदीप अकता रहता है ! कोई प्रदम कस महीप में रह रह कर तेल काकता कान और बची बसकाता बाय तो वह आहार पात रहने से बहुत काल तक बकता महिला ।

[ कपर के सूत्र जैसा ]

8 ५ पठम महारूपता श्रुप (१२ ६ ५)

कथ्या महायक है

धावसी में

भिसानी ! संसार के बाकर्षक वर्मों में आसक होने से एक्ना वहती है। एक्स के होने से उपा

याम'। मिलाबी । कोई सहामुख हो । बसके वो शुक्र नीचे वा अगक बगक फैके हों, सभी कपर रस भेक्ते ही । इस तरह वह गहानुस नाहार पाते रहने के कारन निरकास तक रह सकता है ।

मिश्रणी ! वेसे ही संसार के आकर्षक चर्मी में 😶

सिक्षणी ! कोई शहानुक हो । तम कोई तुरुप क्षताक और शीवरी क्षेत्रम जाने ! यह उस वृक्त के मूक की कारे, मूख की कार कर कराके नीचे छुएंग कीव वे और वृक्ष के सभी मूक्सीई की बार कर निकास है। बह बुख की बार कर हकते हमने कर है। फिर हकतीं की भी चीर सके। चीर कर, कोशी बैकी निकास है। चैंही को धूप और हमा में सुमा कर जला है। जला कर कीयला बना दे। कीवले और राख को या तो हुना में उठा दे था नहीं की धार में बहा दें। भिक्षुओं [ इस तरह वह महाबक्ष उन्मूल हो जाय. जसका फिर प्रशेष्ट नहीं हो ।

भिश्वभी ! वेसे ही, संसार के आकर्षक धर्मों में कवल पुराई देखने से मुख्या करू जाती है । तथा के रुक जाने में उपादान नहीं होता है !\*\*) इस तरह मारा दु ख समह रुक जाता है !

ह ६. रतिय महारुक्ख सत्त ( १२. ६. ६ )

क्या महानुक्ष है

श्रावस्ती में ।

… ∫ कपर के सूत्र जैसा 1

s ७. तरुण सुत्त ( १२. ६. ७ )

राणा तरणबस के समान है

आधस्ती में।

भिक्षाओं ! यन्त्रम में डालने वाले धर्मों में आस्वाद देखते हुये विहार करने से मुख्या वहनी है। तुग्णा के होने ले उपादान होता है।""

भिक्षको । कोई तरणपक्ष हो । कोई पुरुष समय प्रस्य पर उसके वाल की फलका बनाता रहे. माद देता रहे. ओर पानी पटाता रहे । भिक्षुओ ! इस प्रकार वह बुक्ष आहार पाकर कुनरो, यह और खब फैल जाय ।

भिक्षुओ ! वेसे ही," 'आस्थाद देखते हुये विहार करने से मुख्या बनती है" "।

भिद्धुओं । फोई तर्णपृक्ष हो । तब, कोई पुरुप कुदाल और रोकरी छेकर आवे ।

मिक्सभी । वैसे ही, बन्धन में टाकनैवाले धर्मों में बराई ही बराई देखते हये विकार करने से सूच्या नहीं बदती। सूच्या के इक जाने से खपादान नहीं होता । इस तरह, सारा इ जनसम्रह उक जाता है ।

§ ८. नामरूप सुच (१२.६८)

सांसारिक आसाद-दर्शन से नामकप की उत्पक्ति

श्राधस्ती में।

मिश्रुको । यन्धन में डालने वाले धर्मों में बास्वाव देखते हुये विद्वार करने से नाम-रूप दक्ते हैं। मिद्यानक्ष की उपमा देकर ऊपर वाले सुत्र के समान है

8 ९. विञ्जाण सत्त (१२ ६. ९)

सांसारिक आखार-दर्शन से विज्ञान की उत्पन्ति

श्रावस्ती में ।

भिक्षुको । बन्धन में इालने वाले धर्मों में आस्वाद देखते हुये विहार करने से विज्ञान उठता है।

ि कपर बाले सुत्र के समान ी

# § १० निदान सुत्त (१२ ६ १०)

### प्रतीत्पसमुत्पाद की गम्भीरता

एक समय आयान् कुरु-जनपद में कस्मासद्यम शासक कुरुमों के करने में विदार कारे थे। वह बालुप्पाझ आशस्य वहाँ भगवान् ये वहाँ गये और अगवान् का अभिवादय कर एक और अर गये।

पुरु और केंद्र आयुष्पाण् आत्रस्य भगवान् से वोके :---सलो | आहवर्ष है आयुष्प है ! मली ! प्रतीस्परमुत्पाद कितना गरमीर है | देवने में कितना गृह साव्यम होता है ! किन्तु, मुसे यह विष्कुण साथ मानम होता है !

जातन्त्र | ऐसा अन कहो ऐसा अन कहो | यह अनीस्वसञ्चाराह वहा गत्मीर बार गृह है ! जातन्त्र | हुसी कमें को डीक-पीक नहीं वाको और समझने के कारव वह अवा उकसाहे हुई मारो की शुक्ती वैसी गाँठ भार वक्तनों वाकी मूँब को झाठों कैसी हो जवाय में यह दुर्गति को भास होती है। संभार से इसने नहीं पाती है |

आतन्त्र !संसार के बाकर्षक करों में आसक होने से शुकार वस्त्री है। [ सहावस की उपना पूर्वतर ]

बुक्षवर्गं समाप्त

# सातवाँ भाग

# सहा वर्ग

# § १. पठम अस्सतवा सत्त (१२ ७ १)

### चिन्न वस्तर जैसा है

ऐसा मैंने खना।

एक समय भगवान आससी में अनायपिणिडक के जेतचन आराम में विहार करते थे। भिक्षत्रो । अज्ञ पृथक्तन भी अपने इस चातुर्महाभूतिक शरीर से ऊव जाव, विरक्त हो जाय,

भीर छटने की प्रच्छा करे।

सी क्या ? क्योंकि, इस चालुर्बहास्तिक शरीर में बटना, बढ़ना, लेना और फैंक देना सभी अपनी आँखा से देखता है। इसके कारण, अझ प्रथक्तन भी अवने इस चातुर्महासूतिक शरीर से कय जाय, बिरक्त हो जाय, छटने की इच्छा करें।

भिक्षको । किन्तु, यह जो चित्त≃मन≕विद्यान हे उससे प्रथक्तन अज नहीं ऊथ नाता, विरक्त होता, ओर छडने की इच्छा करता ।

सो पर्यो ? मिश्लको । क्योंकि चिरकाल से अल ए-क्कबन, ''यह मेरा है, यह मै हूँ, यह मैरा आस्मा है' के भक्तान और समस्य में पटा रहा है।

भिक्षको । अच्छा होता कि अज़ पृथक्तम इस शरीर की, न कि चित्तको आत्मा सह कर मानता। मो क्या } सिश्चओ | क्यांकि यह चातुर्महाभृतिक शरीर एक वर्ष भी, दो वर्ष भी सी वर्ष भी. और अधिक भी ठहरा हुआ देखा जाता है। सिक्षुओ ! किन्तु, यह चित्त=मन=विज्ञान रात दिक तसरा ही दसरा उत्पन्न होता आर निरुद्ध होता रहता है।

भिक्षको । जैसे जगल में चुमते हुये बानर एक ढाल परवता है, उसे छोडकर दू-परी बाल पर

उछ्छ जाता है—मेंसे ही यह चित्त=मन=विद्यान रास दिन ।

भिक्षको । ग्रहाँ, शानी आर्थकावक प्रतीत्यसमुत्याद का ही ठीक से मत्तन करता है । इसके होने सं यह होता है। इसके नहीं होने से यह नहीं होता है। इस तरह, सारा ह ख-समूह रूप जाता है।

भिक्षको | इसे देख, ज्ञानी आर्यआवक रूप से भी विरक्त रहता है, वेदना से भी विरक्त रहता है, सज्ञा , सरकार , बिज्ञान । इस वैराग्य मे नह मुक्त हो जाता ह । जाति झीण हो गई पेसा ज्ञान लेता है।

# § २. दुनिय अस्प्रतवा सुत्त (१२ ७, २) पञ्चस्कन्धके वैराग्य से मक्ति

श्रावस्ती में ।

ि कपर के सूत्र जैसा ]

मिश्रुओ ! यहाँ, आभी वार्यश्रावक अतीत्यसमुत्पाद का ही ठीक से मनन करता है । इसके हीते से यह होता है, इसके नहीं होने से यह नहीं होता है। उस तरह, सारा दू ख-समूह हक जाता है।

मिश्रुमा ! मुखबेदमीय स्पूर्ण के द्वापे स मुप्ताबेदण पैदा होती है । उसी मुझबेदमीय स्पूर्ण के निरोध से पद मुप्ताबेदण निरुद्ध कींद्र साम्ब्र हो जाती है ।

नराभ सः पद मुखाबद्धा । नदम् बार सान्त हा साती है । मिन्नमी ! तुभावेदतीय स्पर्दा के होने से । अदाखसुलवेदनीय स्पर्ध के होनेश वह वेदस

निरुद्ध भार साम्त हो जाती है। मिछुमो ! यो कडिपरों में रागड़ काले सं गर्मी पैदा होती ह और जाग निरुक्त वाली है। जन

यो मकदियों के सबय-असता कर देन से बह गर्मी और जाग दुसकर रुपत्री हो वाली है।

मिछाया ! वैस ही मुख्येद्त्रीय स्वर्ण के हाथे ≣ मुख्येद्त्रा पृत्रा होती हैं । उसी मुख्येद्वीय स्वर्ण के निरोत्त सं वह मुख्येद्द्रात निक्द और वाल्य हो बाता हैं ।

भिद्यां ! दु प्रदेवनीय स्वसं क दान से । अनु प्रमुख्यवेदनीय स्वर्ध के द्वीत से

सिक्षणों इसे देख वाली कार्यकायक स्पर्शे से सी दिरक रहता है बेदना संज्ञा विज्ञान । इस बसाव से यह शुरू हो काला है। कार्ति अधिव हो गई परमा आब सेना है।

## ६३ प्रचयस सच ((\* ७३)

### चार प्रकार के साहार

भायस्ति में।

परे-हा यह । हा यह ।

भिप्तांनी ! कपन्न प्रुण und को स्थिति के किए, तथा उत्पन्न दानेशाओं के अनुसद के लिए चार व्यद्वार है। कीत राजार हैं (१) स्थूक या सूत्रम कीर क क्वासें। (१) स्थर्ग। (१) सन की संचनना। (१) विशास ।

भिद्धभा ! कार के कप का आहार किय प्रकार का समरामा चाहिए !

मिग्नुमा ! दो यति पत्नी कुछ धावेय केवर कान्तार के किसी साग में यह बाँय । उनके साव वरता एक प्रास्त कहत्वा दुत्र हा । तब बनवा पायव पीर-पीरे सामास दो प्राप्त, पास में कुछ न वर्षे भीर कान्तार बुछ ति करता धाकी बचा रहे ।

भिष्ठभा ! तम उन पति पत्नी के सम में यह हा—इस कारों का पायेब समाग्र हो गया वास में इत नहीं बचार्ड : का इस कोल अपने इक्स्प्रेल चारे करके तुम की सार हुकदे-दुन हे और बीटी वार्ट कर देन पाले इस पार्ड क्रम्प्रेल को स वरें। सीवीं के तीवीं ही सरण वार्ट :

न्यात कर कर भाग हुए वाका बारतार कात कर । ताला क ताथा हा तर त आये । निश्चना ! तक वे भागते हुक्योति ज्यार काइस शुप्त को आर शुक्ये हुक्ये कीर धार्री वार्टी कर कर नात हुक्य वाकी कालार वो तो करें । च पुत्र-संत्रा गार्वी श्री और छाती पीट पीट कर विकास मी

सिशुमा <sup>१</sup> तो तुस पंचा समझत हा जना थ इस सरद सह संप्रदन श्रार विश्वान के निर्दे माहार करते हैं १

र्थ नहीं अस्ते १

निमुन्ते ! ऐसा ही चीर के रूप का बाहार समामना चारित । नमा राज्यान ना चीच कामगुन्ति क राग का परचान स्था है । चीच काम-गुन्ता क गुन्त का प्रश्चान सन् मा उसके सिच मह चारण नहीं रहना है जिस बस्यन में चैवकर चहा किए सस्य ग्राह्म की ।

बिहुओं है रक्ती क आक्षा की बैना समझका काहिरे ह

निर्मा । केंद्र कार्ग हुई कोई गाय कियो आप के महार्श लगकर यथी हा, शीस में इस्के वार्य बादे को बार्ट । यह कियी कुछ कारार्श लगकर लगी हो, बुध में तहने बार्य बोदे को कार्ट । वार्य निर्माण । अपन्या में मार्चा हा । मिश्रुका । यह गाय नहीं कार्री कार्य कार्य हों कोदे कोदे की मार्ग्य के मार्ग्य की आप हमी कार्य का स्वासन्त कार्यक्रों । भिञ्जभी ! स्पर्म के आत्मर को इस प्रकार समझ लेने में सीनों वेंगुनार्वे चान ली जाती हैं ! सीनी प्रेडमांभी को जात तेने में आर्थआबफ़ की फिर आर हुँठ बरना याकी नहीं प्रचला है—गुमा में कहता है !

भित्रको । सन प्रांत्रमा वे आहार को क्षा समसमा चारिये १

भिद्धानो । किसी पोलमें भर गड़े से लगट जेल हैंगा में रिति व्यक्ताता हुई आग भरी हो। तर, कोई पुत्तर असे तो जोगे की बामाग स्थता हो, सरमा गरीं च्याना हो, सुन पाना चाहता हो, हुए से दूर रहना पाहता हो। उसे ही धनवां, आहंती एक एक पौट पहन कर उसे गड़े से दील हैं। सिक्षुओं ! तो, उसे पुरुष की चेतना, आर्थना और प्रणिपि पहनें से दुटसे के लिये ही होती।

स्ते पर्या १ शिक्षां । पर्योक्षि धर जानता है कि इस भाग में बिर कर से सर जाकरा, सा सरने के सामान हुए उठकरों । शिक्षुओं। सन की स्वेतना के भाइत की ऐता ही समझना चाहिते—में केसा कहना है।

भिद्धशो ! विज्ञान के आहार को केमा समझना चाहिये ?

शिक्षको । किसी चौर अदर्शा की लोग पकर कर राजा के पास के बाँग, और क्यें — नेया । यह आप का चौर अपराधी है, प्रसे कीनी प्रपार ही उठड़े हैं। तय, राजा यह करें — जाओ, प्रसे सुमीह समय एक सी आर्ली में भीक है। उस लेगा बाँग समय भीक

तय, राजा मध्याह, समय वह को--उम पुरुष की क्या हालत ॥ १

देव । वह वैसा भी जीवित है।

सथ, राजा फिर फरें—जाओ, उसे मध्यास समय भी सी शाले भींत हो । लोग भीक हैं। दर्भ राजा साझ को कटे—उसे परुप की स्था शासन है ?

उसे साज में भी लोग मां भाले भोंक हैं।

भिक्षुभी ! ती पया समझते हो, दिन भर में तीन साँ भाष्ये से चुभ कर दम हू ल और येचेनी होती या नहीं ?

भन्ते । एक ही भाला से खुभ कर तो बड़ा हु य होवा है, तीव सी की तो बात क्या १

भिधुओ ! बिज्ञान के आहार की ऐसा ही समजना चारिये।

सिक्षुती ! विद्यान की दूस प्रकार अ.न. नामरूप को पहचान छेता है । मासरूप को पहचान आर्य श्रायक को फिर और कुठ करना याकी नहीं रहता—के ऐसा करता हैं ।

## § ४. अत्थिराग सुच (१२ ७ ४)

### चार प्रकार के आहार

श्रावस्ती में।

मिश्रुको । उराज हुने प्राणी को स्थिति के लिये, तथा उराज होने वालों के अञ्चयह के किये चार भाहार हैं। जीन से पार १ (१) स्वृत्व या सूरुम कोर के रूप में । (२) स्पर्य । (३) मन की सचेतना । (४) विश्वान ।

भिछुनी। कौर के रूप के आहार में यदि सम होता है, सुख का आस्वाद होता है, तृष्णा होती है, तो विकाम जमता और बदवा है।

वहाँ पित्राम वामता और यहवा है वहाँ मामरूप उठता है। जहाँ मामरूप उठता है वहाँ मरस्का के सूचे मामरूप उठता है वहाँ मरस्कारों की सूचे होती है। वहाँ प्रवर्जन्म होता है वहाँ प्रवर्जन्म होता है। वहाँ प्रवर्जन्म होता है वहाँ वाति, वार, सरण होते हैं। वहाँ प्रवर्जन्म होता है वहाँ वाति, वार, सरण होते हैं। वहाँ क्षोक, मय, और उपायास (चपेसारी) होते हैं—दिसा में कहता हूँ।

मिलुओ। स्पर्श , मन की चेतना , विज्ञान के आहार में यदि शेव होवा है ।

भिहुमी | कोई एंगरेक पाचित्रकार रंग माकाहा वाइक्टरी मा क्रीक मार्गसीठ के होते से अपनी तरह साफ और पिक्रमा किन फ्रमक पर, या मित्ति पर वाकपड़े के टुकड़े पर समी अंगों से दुक की साप्तरण का कर कतार दें।

मिलुका | वस ही कीर के रूप में बाहार में वदि राग होता है। सुक्त का भारपाद होता है करों सोक मत बार अपयास होते हैं।

मिझ जो ! श्यर्कां चान की सचेतना ः विज्ञान के आहार में यदि राग दोषा है ।

रिश्चिमी (क्षेर के कर के जाकार में मंदि राग नहीं होता है सुल्य का भारताइ नहीं होता है इच्छा नहीं होती है, तो विज्ञान नहीं असन पाता।

बहाँ विज्ञान बसवा कीर बहुवा नहीं है बहाँ नासक्य नहीं करता । बहाँ नासक्य नहीं करता है बहाँ संस्कारों की कृषि नहीं हाती है । बहाँ बोक अब और क्यायान नहीं होते हैं—ऐसा में कहता हैं।

मिह्यमो | स्पतः ; सम की संचेतना ; विज्ञान क श्राहार से यदि राग नहीं होता है "ती कार्रे रोक नहीं होते ।

वहाशाल नशासाम मिलुको | कोई क्टामार या क्टामारशाका हो । असके ठकर वृक्षिण सीर पूर्वमें जिवकियाँ सनी हो । सो सर्वके बनो पर किरणे उससे सकेश कर कहाँ पर्वेशी हैं

भम्ते । पश्चिम बाबी बीवाक पर ।

सिक्स में। नहि पश्चिस में कोई दीवास न हो तो ?

सम्बर्धानाः । नाइ पालल ल काइ दायान सम्बर्धानाः अधीन परः।

मिल्लुको । यदि जमीन वहाँ हो तो कहाँ पर्वेगी १

भन्ते ! कम पर ।

भिक्त जो ! यदि कल भी नहीं हो तो वहाँ पर्देशी ?

मन्ते । कहीं नहीं वहेंगी।

भिमुला। मैंने ही कीर के कप के इपकी मान की श्वीतावा विज्ञान के आहार में विद राग नहीं भाजाद नहीं पूरण नहीं हो विज्ञान बसता और बहता नहीं है। ""बहा सोक अप नीर वपाचारा नहीं होने हं----पेमा में वहता हैं।

# **६५ नगर सुप्त (१० ७ ५)**

भाग भए।क्रिक माग प्राचीन युद्ध माग है

धायानी में ।

विश्वामी । जुद क गाम कान क बहन कोचिमाना रहते ग्रेर सम में छेगा हुआ —हाका । वह कीक मार्गी निर्माण में कैमा द । कममाना है जुएला है समझा है वहाँ सरका वहाँ दिए होना है। और स्राज्य के कुन्य से कैमें सुरकारा होगा नहीं जानना है। इस सरासरण के बुन्य से सुन्ति का ताज कर होगा है

निशुर्ण क्षित्र भी मण में यह दुका—किम्छ होर्ल के आस्तरण दोना है आसम्बर्ध का जन्म कार्क

भिपुत्ती हे इस पर प्रविश्व सन्तर काले से सुद्धि आत्म का अपूत्र हो सवर—पाति के वाले से प्रशासन काला है। असीन ही अस्तरास्त्र का प्रशासन है।

\*\*\*अव\*\* (वचान्त्रम् \*\*; नूरमा \*\*) चेत्रमा ; श्वार्षे । चन्त्रभूममः । श्रासम्बन्धः ।

निर्मुणी र इस कर अविक समय कामे से सुत्ती ज्ञान का जन्म हा सवा—विकास के दोने में सन्दर्भ दोना है विकास ही सम्बद्ध का अन्यव है। भिक्षुओ ! तन, मेरे मन में हुआ--िक्षिक रोने से विज्ञान होता हैं, विज्ञान का प्रस्थय प्या है ? भिक्षुओं ! इस पर उचित सनन करने में सुझे ज्ञान का उच्य हो गया--नासरूप के होने से विज्ञान होता है, नासरूप ही विज्ञान का प्रन्य हैं !

सिनुकों। तब सेरे सन से बार हुना-नामरूप में यह विज्ञान लोट जाता है, आगे नहीं बढ़ता । हतने में जनसवा है, बुक्ता है ''। जो नामरण के अध्यय में विज्ञान लोता है, बिज्ञान ते अध्यय में नाम-रूप लोता है। नामरूप के प्रवान में पहायतन होता हैं। पहायतन के अध्यय में न्यर्के''। इस सहहू स्वास इस्तम्यक बढ़ स्वार लोगा है।

िश्च भो। ''उठ पदा होता हैंग (=ममुटय )=गेया पहले कभी नहीं सुने गर्ये धर्मों से चक्च उत्पन्न हुआ, जान पदा मुआ, प्रजा उत्पन हुई, बिचा उत्पन हुई, आलोक उत्पन हुआ।

भिक्षुको । तय, सेरे मन में यह हुआ-कियके नहीं होने में जरामरण नहीं होता है, कियका विरोध होने से कामरण का निरोध होता है।

भिक्षुओं ! इस पर उचित कान करने से सुझे झान का उदय हो गया—गाति के नहीं होने सं जगभगन नहीं होता है ! जानि का निरोध होने से जरासरण का निरोध होता है !

अप , खपातान , तृष्मा ", चेटमा म्पर्ग , पश्चमन ", नासन्त्य , कियका निरोध होने ये नासक्तर का निरोध होता ह ?

भिक्षुओं । उस पर उचित समन फरने से सुधे ज्ञान का उड़य हो सथा—विज्ञान से नहीं होने से नामरूप मर्श होता १९ विज्ञान का निरोध होन से नामरूप का निरोध होता है।

किमके गएँ होने से विकास नहीं होसा, किमका निरोध होने से विकास का निरोध हो जाता है?

नामरूप के नहीं होने से विज्ञान नहीं हीता है, चास-रूप का निरोध होने से विज्ञास का निरोध हो जाता है!

सिक्षुती ! तत्र भेरे मत्त म यह हुआ — मेंचे मार्गका झान आह कर व्लिया, नाम-व्लय के निरीध से बिहान का निरीध होता हो । विद्यान के निरीध से बाम-क्य का निरीध रोता है। वास-क्य के निरीध में पढ़ायतम का तिरीध होता है। यहायतम के निरीध से स्थर्भका निरीध होता है। । इस तरह, नारे हुष-समृत्र का निरीध होता है।

भिक्षुओं! "निरोध, निरोध" ऐसा पहले कसी नहीं सुने गये धर्सी से बक्षु उत्पन्न हुआ, ज्ञान पंता हुआ!"।

िमञ्जुओं । कोई पुरुष जगारू में घृमते हुये एक पुराना मार्ग देखे, पूर्वकाल के लोगों। का नगाया, पूर्वकाल के लोगों का इस्तेमारू किया। यह पुरुष उस्प सार्ग की पकड़ कर व्याने जाय, और एक पुराने राजधानी नगर को देखे, अर्ही पूर्वकाल से लोग रहा करते थे, तो आराम, वाविका, पुरुकरिणां, और सुम्दर बहार-दिवालों से सुक्त हो।

मिश्रुओं । त्व, यह पुरुष राजा था राजसन्त्री को लाक्न कह हे—भन्ते । जानते हैं, मैंने जगळ में भूमते । मन्ते । अरुष्ठ होता कि वस नगर को फिर यसार्वे ।

भिश्रुको । तय, राजा था राजमान्य्री उस नगर को फिर भी यमावे । बाह नगर कुछ काल के बाद बढ़ा गुरुवार, समृद्ध, और उन्ननिशीख हो बाय ।

भिश्वनी। धर्मे ही, क्रेने पुराना मार्ग टेस लिया है, जिस मार्ग पर पूर्व के सम्बन् साह्य चल कुछे हैं। भिश्वमी। धूर्व के सम्बन्ध-सम्बन्ध से चला गथा वह पुराना मार्ग क्या है ? यहाँ आर्व-अष्टानिक मार्ग, वो सम्बन्ध रिष्ट प्रस्कर समापि।

उस मार्ग पर मेंने चला। उस मार्ग पर चळकर मैंने जरामरण को लान लिया, जरामरण के

समार्थ का जान निया, जरामरण के निरोध को जान किया धरामरण की निरोधगामिनी प्रतिपदा का अपन किया ।

क्रम मात पर मेंने चला। क्रम मार्ग पर चलका मेरे क्राति भव " वपादान

क्या<sup>र्</sup> पदावतन नासस्य विज्ञान संस्कार

कम जान सेने मिल्लों का मिल्लियों का अपासकी का और क्युरिवाओं का व्यवेशा। सिल्लाओं पटी मदापूर्व दुनना समूह आर उक्तनिसील इ विमारित है बहुत जातों से शर गहा है। सनुष्या और नेवनाओं में भारी प्रकार स समाधित है।

# ३६ सम्मसन सुत्त (१- ७६)

### व्यारिवर समज

पेपा भने मता।

पुर समय मगरान पुरुक्तमपुर में क्रमामदरम नामक कुरुमों के करन में बिहार करते में ।

भगवान काले--- भिश्वको । तुम अपने मीतर ही भीतर लुब फेटन फेटी ।

पेना बहमें वर कोई मिद्दा मगवान स वाला-मली ! में अपने मीतदही मीतद शुर करन केरता हैं! भिरत ! कहा ता शही तम अपने भीतर ही भीतर धैन केटन केटने हा ।

भिशा में चतन्त्रका जिल्ला जमके चलवाने साधानाता का चित्रा संतक नहीं हुआ ।

त्व बार्फान् बातन्त्र भगवान् म वाले-इ भगवन् । कव वह समय है-भगवान् इमना प्रवेदा करें कि अपने आंतर हो जीतर कमें बदन केंद्र जाना है। अग्रपान से जनकर किया धारण करेंगे। ता भागार ! समा अपने तरह सम समानो से बहता है।

"मारे । बहुत अरदा बहु मिहाओं ये भगवान का उत्तर दिया ।

मगवान बारे--मिशुओं ! बचन मीतर ही मीतर मिशु श्व चेरन चेरना ई-यह जो जरामरन राचारि सबद प्रवार व सामा वाचा सोव में पैपा होते हैं। उसका जिल्ल बचा है ? जाविस क्या है ? प्रमेप क्या है ? कियाद होने से जरामरण होता है ? कियादे नहीं होने से जरामरण नहीं होता है ?

जमा चेटन हर बढ़ बान होता ह— 'यह शाय दशकि क निशान मा हाते हैं। दशकि क होने मा बरामान होता है। बनायि के बारी हान मा जगमान नहीं हाता है। यह सरामान की बान होता है। तगरूप निरोप भार "" निपदा का जान सेना है। इस तरह यह वर्ग के सच्चे मार्ग पर MINT VINI E S

बिहाची। यह जिहा गयहा अन्यक्ष पास्त्रपत के लिए, तथा जहारात व निरोध के निम् प्रतिपत

बहा क्रमा है।

इसके बाद भी। बादने भीतर ही। भीतर बैटन बैटला है-जाराचि ( अपूछ रचन्य ) का निरान wer & -- 1

प्रचानिका निराम मुल्या है। । यह प्रचारिको साम साह है।

बिता में १ इसके बाद भी। भारत भीता की भीता बेल्ब बादता है---वह सुनता प्रत्य कारी हुई देने क्याब होती है अह बही एक करते हैं है

रेवा केरो पूर्वह जान लेवा है.... के के कि का सामूर और लागावरे विकास है जाती में सुकरा बन्तव दोनी है, और बन्दी में जल क है रह अ क है जातु है किया जुन्दर और शुक्रापरे हैं। दूस्ती में करता पुरस्क होती है और बार करती र ह

a's ha'gon gra far थाना ... अन के दिवार शानता भी र संदर्भ में है वाली में your you girl & will aim good & a

सिक्षुओ । अतीत कारू में जिन श्रमण या आहणों ने ठोक के मुन्दर और लुभावने विषयों की नित्य, सल, आतमा, आरोग्य और श्रेम के ऐता देवम, उनने तृत्या को वदाया ।

जिनने तृष्णा की बदाया उनने उपाधि की बदाया जिनने उपाधि को बदाया उनने हुए की बदाया किनने उपाधि को बदाया उनने हुए की बदाया किनने हुए की बदाया के जाति जरामरण, क्षोक से सुक्त नहीं हुए। हु स से सुक्त नहीं हुए।

भिक्षको । सविष्य काल से जो श्रमण या हासाण '।

भिक्षको । वर्तमान कारू में जो श्रमण या घाहाण ।

भिक्षुओ ! जैसे, कोई पीने का कटोरा हो, जो रग, सन्ध और रख से खुक हो, किन्तु उसमें बिप कगा हो। तय, कोई धाय में गर्मीया, चमाया, यका, मोंदा च्यासा पुरुष आये। उस पुरुष को कोई कहे—हे पुरुष! यह सुरहारे छिए पीने का चटोरा है, जो रंग, गन्ध और रस से खुक है, किन्तु इसमें विप छगा है। यदि चाही तो पी सकते हो। पीने से यह रग, गन्ध और खाद में बढ़ा अच्छा लिगा। पीने के बाद उसने कारण या तो भर जाओंगे या भरने के समान हु छ भोगोंगे। वह पुरुष सहस्त विना कुछ विचार किये उस कटोरे को पी छे, अपने को नहीं रोके। वह उसके कारण भर लाय या भरने के समान द ख पाने।

निश्चको । वैसे ही, असीत फाट में जिन श्रयण या ब्राह्मणें ने ठोक के शुन्दर और छुभावने ।। दुःख से सुक्त नहीं हुनु—देसा में कहता हूँ।

सिक्षओं । सविष्य काल , वर्तमान काल में \*\*\*।

मिञ्जुको । अतितकाङ में जिन अमण या झाहागों ने कोक के सुम्बर और खुभावने विपयो को अनित्य, हु ज, अनारम, रोग, और भय के ऐसा देखा, उनने मुख्या को छोड़ दिया ।

जिनने कुणा को छोड़ दिया उनने उपाधि को छोड़ दिया। 'किनने उपाधि को छोड़ दिया उनने दुख को छोड़ दिया। जिनने हुख को छोड़ दिया वे जाति, जरामरण, क्षोक से झुक हो गये। ये दुख से छुट गये—पुसा में कहता हूँ।

मिश्रुओं । मिल्प में , बर्तमान काल में । वे दु स्त से छूट गये — ऐसा में कहता हूँ।

मिद्धानी ! चैसे । यदि चाही हो पी सकते हो। पीने से यह रत, सथ और खाद से अदा अच्छा कोगा। पीने के बाद उसके कारण वा तो अर बाओरी वा सरने के समान दू स मीगीगे।

सिद्धांशी। तब, उत्त पुरुष के मन में यह हो—मैं इस प्यास को खुरा से, पानी से, जही-महा से, कहती से, वा जीरा के पानी से सिटा पकता हूँ। इस प्यासे को में च पीऊँ तो बहुत काल तक मेरे काहित कीर हु ख के दिना हो। वह समझ वसकर उत्त कटोरे को छोड़ दें, च पीचे। इससे यह न डो मरे कीर न मरने के समाग हु स पाने।

मिश्रुषी ! वैसे ही, अतीत काल में लिन अमण या आहाणों ने लोक के सुन्दर और स्वमायने विषयों को अमित्य, हु स, अनाव्य, रोग और सब के पेक्षा देखा, उनने तृष्णा को छोद दिया ।

बें द्व से छूट गये-धेसा में कहता हैं।

भिक्षको । सविष्य में , वर्तमान काल में । वे दु.ख से छूट जाते हैं-- ऐसा में कहता हूँ ।

§ ७. नलकलाप सुत्त (१२,७ ७)

जरामरण की उत्पत्ति का नियम

पक समय आयुष्मान् सारियुच और अधुष्मान् महाकोङ्कित बाराणसी के समीप ऋषियतम् ग्रुगदाय में विहार करते थे । त्रक आयुष्माम् अञ्चलकाष्ट्रित साँग्न का च्यान स उठ वहाँ बायुष्मान् मारियुत्र ध वहाँ गये भीर कारू श्रम के प्रभ पत्रका एक भीर यह गये ।

एक धारं सर कानुष्यान् सहाकोद्वित आयुष्यान् सारिपुत्र स सारः—आनुस धारिपुत्र । क्वा करामरा भरता ज्वर्ष किया हुआ है या तृसरं का किया हुआ है या अपना ज्वर्ष भी और तृसरे का मी किया हुआ है या न अपना व्यवं आर न तृसरे का किया हुआ किन्द्र सकारन हजार उपम हो गया है ?

. ≂जानुस कोद्वित ! इनमें एक मी ठीक नदा ।

≈धायुस सारियुद्ध | क्या जाति सब उपादात सुरुता सद्वा मार्च्या पदायतम नामरूप अपना व्यवं क्रिया सुन्ता है या बासारन इसाय करफा हो गया है ?

साह्य कोहित ! इनसे एक भी ठीक यहाँ । किन्दु, विकास क प्रत्यव स्र नामक्ष्य होता ह । प्राप्तम सारित्रम ! क्या विकास व्यक्ता स्थय किया हुन्य है । या अकारण उत्पन्न हुन्य है ? स्राप्तस कोहित ! इसमें एक भी ठीक वहीं; किन्दु सामक्रम के प्रत्यव स्र विकास होता है ।

ठो इस आयुष्पाच् आसियुन के नहें का अब इस प्रकार कारी—मामक्य बार विद्यान न तो अपना स्वयं किया हुआ इं न अकारण इतान् उत्पन्न हुन्य हैं। किन्तु विज्ञान के सम्बन्ध से नासक्य जीर नाम क्य के प्रवास से विज्ञान होता है।

भाइन सारिपय ! इमना भर्य यों हो न नमहाना चाहिये !

तो आयुम है में एक उपमा नंकर समझाता हूँ, क्यमा में कितने विज पुरूप अमें हुय का अर्थ सर समझ कर्ष हैं।

आहम ! जम दा वक्षककाप ( = नरहट क बोस ) एक दूसरे के सहार जाकर अहे हों। जैसे ही मामका के प्रश्व स विज्ञाव और विज्ञाव के प्रश्वय स नामका होता है। नामका के प्रश्वय स पहास्तर होता है। इस तहर सभा बार-समूद वह यहा होता है।

अपूर्ण ! क्रिय उन हो नम्बन्धायां में एक का पाँच क्षेत्र सं बुद्धार शिर पहता है। ईस ही आमान्य के निराध स विमान क्ष्म विरोध कींग विभाग के निरीध स नासक्य का निरीध होता है। मानस्य के निरीध मा पहालान का निरीध होता है। पहाणान के निरीध सं स्पर्ध का निराध होता है। | इस नरह आहे हरा-अबहुद का निरीध हो जाता है।

आहुम नारिह्म । माधर्ष है अनुसूत है । जाप ने इस इतना अच्छा नामसावा ! आप के वहे

इब का क्षम ए सम प्रकार व अनुमान्त करते हैं।

मी भिष्ठ परामाण क निर्वेद वैशाय और विशाय के निज धर्माप्येश करना है वहा अक्ष्रका धर्मकीक करा ना गरणा है। जा भिष्ठ करासरण क विषेद वैशाय और निराय के निये मिराव होगा है वहां धरवना धर्मानुवार्ग अनिषय वहां जा सकता है। को भिष्ठ क्यांगण क निर्वेद बरास निराय अनुसारण में विद्यान हो जाग है जहीं अन्यत्मा स्वकारीयों मारा कहां जो स्वकार है।

कारि घर जवाराज मुख्यां वेड्सां परावें पहापतन सामरूपः स्वापः शंकारः । कार्षिशु जविषयां कित्वें देशक निर्देश्य अनुपार्तन से विमुक्द हा जाता है बन्नी अनक्ता रचन्यतिनकील मान कहा का सकता है।

(मानदान मास कहा जा सदन। इ.।

# § ८ मागम्भी सुन ( १२ u ८)

मय का भिगाध ही भियाण

ण्ड समय आवृत्यात्र मुस्सिम् आयुष्यात् स्वचिट्ट आयुष्यात् लाग्य् आर आयुष्यात् सातार् सामार्था के मानिसारता में विशासामिक ।

### 亚

सथ, आयुरमान सधिद आयुक्तान मुसिल से पाँछे-आयुर्य सुसिल । श्रद्धा को छोड, रचि की होट. अनुस्रव को छोट, आकारपरिवितर्क को छाउ, दृष्टिनिध्यान क्षान्ति को छोट, आयुष्यान मुस्लि को क्या अवते भीतर ही ऐसा जान हो राया है कि जाति के प्रथाय में जरामरण होता है 7

आव्रम सचिद्र । अज्ञा को छोट . में यह जानता हैं. में यह देखता है कि जाति के प्रत्यय से लगायमा होसा है।

आयुक्त मृत्रिक । श्रद्धा को छोड़ , आयुक्तान् मृत्रिक को वया अपने भीतर ही ऐसा जान हो सवा है कि अब के प्रस्वय से जाति होती है ?

कि उपादान के प्रत्यय से अब होता है ?\*\*\*

कि नच्या के प्रत्यय से उपादान होता ह ?

• कि चेडना के प्रत्यय में तरणा होती है ?

कि स्पूर्व के प्रत्यय से बंदना होती ह ?

कि पदायतन में प्रत्यय से स्पर्श होता है ? •

कि नामरूप के प्रत्यय से पडायतन होता है ?\*\*\*

कि बिज्ञान में प्रस्थय से नासरूप होता है ?

कि सबकारी के प्रत्यय से विज्ञान होता है ?

··· कि अधिया के मध्यय से सस्कार होते हैं 9

आयुस समिद्व । श्रद्धा की छोट \*\*\*, के यह जानता हों, के यह उत्पन्ता हों कि अविद्या के प्रश्यय से संस्कार होते हैं।

आह्रम मुसिल । श्रद्धा को छोद . आयुष्मान् मुसिल को क्या अपने भीतर ऐसा जान हो गया है कि जाति का निरोध होने में जरामरण का निरोध होता है।

आहुस समिद्द । श्रद्धा की छोद " ", में श्रद्ध जानता और वैन्तता हूँ कि कालि का निरोध होने से नरामरण का निरोध होता है ?

·· भन के निरोध से जाति का निरोध । [ प्रतिस्तोम यश से ] अधिचा के निरोध से सरकारों का निरोध होता है।

आबुस मृसिल ! श्रद्धा को छोद , आयुप्मान मृमिल को क्या अपने भीतर ऐसा जान हो समा है कि सब का निरोध होता ही तिर्वाण है ?

आयुम सबिद्ध । श्रद्धा को छोड़ 🔩 मैं यह जानता और देखता हूँ कि भव का निरोध होना ही निर्वाण है ?

तो आयुष्मान् मृतिल श्रीणाश्रव सर्हत् है।

इस पर अञ्चल्यान् मुसिछ चुप रहे ।

### स्व

तव, मासुरमाम् नारद् भायुरमान् सचिद्रं से बोले--- आसुस सचिद्र । अच्छा होता कि मझे भी वह प्रश्न पूछा जाता । मुझले वह प्रश्न पूछें । में आप को इस प्रश्न का उत्तर बूँगा ।

में आयुष्मान् नारद को भी वह प्रकृत प्रवा हूँ । आयुष्मान् नारद मुझे इस प्रकृत का उत्तर दें । [पूर्ववत्]

शामुग सर्विह ! धदा को छोद™ में यह जायता और वृग्ता हूँ कि सथ का निराण होना ही निर्वाण है !

सो मायुव्यान नारश श्रीणाश्रश सर्वत हैं।

भावुत ] मैंने इस पंचार्य हाब को पा किया है कि अब का निरोध दोगा ही निर्वाण है किन्दु मैं श्रीणासन सदैन नहीं हैं।

धापुस | बेस फिसी कान्सार मार्ग में पुरू कुँना हा । वहाँ न बार हो न बास्सी । तन कोई धाम में रामांगा घमाया धका-मोंहा प्यासा पुरूप जाव | वह उस कुँधा म हाँकि । 'पानी ई'' ऐमा वह बाने किन्त वहाँ तक पहेँचने में असमर्थ हो ।

आयुत्तः । बन्धं ही मैंने हुस वधार्थ-शाम का पा किया है कि मन का निरोध होता ही निर्वाण है किया में स्रोतासक भारत कहा है।

### ग

पंता कहते पर वातुष्पान् आतम्ब वातुष्पान् सविष्ठ से बोरो—वातुसः सविष्ठ । एसा कह कर आप बातुष्पान् वात्व को क्वा बढ्वा बाढ्य है !

काबुस आनन्त्र ! में बाबुध्यान् नारह को कुशक और क्षमाण क्षोड़ कर कुछ दूसरा करना नहीं भारता है।

§९ उपमन्ति सच (१० ७ ५)

### जरामरण का बतना

पेसा मैंने सुवा ।

एक समय भगवान आवस्ती में अलाराधिकिक के आतम जलवन में विदार करते थे।

सिक्षको | मुसी तरह अधिया बहकर संस्कारों को बड़ा चेती है | सस्कार बहकर विज्ञान की बड़ा वेते हैं | ""व्यक्ति बहकर कामरण की अब्दा तेती हैं |

मिस्र को ! महासमुद्र क जीव जाने पर शहा अदिवाँ बीट वाली हैं।

मिसुमा । इसी शरह व्यविधा क इट वाले से संस्कार इट वाले हैं । सस्कारों क इट आने स विकास इट वाला हैं । "काठि के इट आने से करामाका इट करना हैं ।

६ १० सुसीम सुच (१२ ७ १०)

धर्म-स्वमाय-बात के प्रधात् तिथीण का बात

मिनियता कोर की ठरह साधु हो तुःक भोगता है एमा मैंने सुना।

पुरु समय मगवान् राजगृह के पशुक्त कक्षमक-विशाप में विहार करते थे ।

### क

जसं समय अंतरान् का वदा सरकार = पुरकार = सत्यान = पुत्रक = कादर हो रहा ना ! उन्हें चीवर पिरवपात शाववाशय स्थानपावच अंपन्य पहिन्द्रार मास हो रहे थे | भिक्षमंघ का भी प्रशासकार' ।

किन्तु, अन्य तैर्थिको का सरकार: 'नहीं होता था । उन्ह चीवर "प्राप्त नहीं होते थे ।

### ख

उस समय सुस्तीम परिवालक परिवालको की एक धदी मण्डली के साथ राजगृह में टहरा हुआ था।

ता, सुम्माम परिवाजक की मण्डली ने सुसीम परिवाजक को कहा — सिन्न सुसीम ! सुनें, काप अमण पीतम के पान दोशा हे हें । अमण गीतम से धर्म मीन कर आर्य भोर ।मा लोगों को कहें । आप से धर्म मीन्यकर इस लोग शुल्कों को उपन्य देंगे । इस सरह, इस लोगों का भी बस्कार 'होगा, और इस भी चीवर आत नरेंगे।

"सिन्न । नहुत अथप्रा" कार, शुक्षीस परिवाजक अपनी सण्यक्षी को उत्तर है, जारों आशुक्तान् आतन्त्र ये यहाँ गया, ओर हुपाल क्षेस के प्रकत पूपकर एक और बैठ गया।

### ग

एक ओर बैठ, सुमीम परिवालक आयुष्मान आनन्द में वीला--आयुत आनन्द ! में इस पर्म-विनय में प्रक्षचर्य पालन करना चालना हूं }

तप, आधुन्मान् आनन्द सुसीम परिवालक को लेजहाँ भगवान् ये वहाँ गये, और भगवान् का अभिवादन का एक ओन धेट गये।

एक और घैठ, आयुष्मान् आनम्ब अगवान से बोरे —सुसीम परिवायक मुझले कहता है कि आवस आनम्ब ! में बन धर्मविनय में ब्रह्मचर्ष पालन करना चाहता हाँ ।

भानस्य ! सो सुसीम को प्रज्ञजित करो ।

सुसीम परिवाजक ने भगवान् के पास प्रवाज्या और उपसम्पदा पाई।

वत समय कुठ शिक्षुओं ने भगवान के पास ऐसा स्वीकार कर लिया था—जाति क्षीण हो गई, प्रक्रमण पूरा हो नवा, जो करना था सो कर लिया, अब और कुछ नहीं बचा, ऐसा जान लिया।

### ਬ

लायुप्तान सुलीम ने इसे खुना कि कुठ शिक्षुओं ने भगवान् के पास ऐता स्थीकार कर लिखा है '।

तव, आयुष्मान, सुसीम कहाँ वे निक्षु ये वहाँ सबै, और कुशल-सैस के प्रश्न पुछक्र और बैठ गये । पुरु और धैर, आयुष्मान, सुसीस वस निक्षुलों से बोठे —क्या वह सबी बात है कि आयुष्मान में पात्राक्त, के पात्र ऐसा ग्वीकर कर किया है ।

हाँ. आवस १

भावुत्मानों ने यह जानते और टेसते हुये क्या बनेक प्रकार की स्वियों को प्राप्त कर लिया है? एक होकर भी बहुत हो बाते हैं? बहुत होकर भी एक हो जाते हैं? क्या आप प्रवाद होते और छक्ष हो बाते हैं? क्या आप दीवाल, हाता, प्रदास के आर-पर विभा को बाते वाले जा सकते हैं, जैसे आकाद में? पृथ्वों में भी क्या आप दुर्वकियों लगा मकते हैं जैसे पानी में? जल के तक पर भी क्या आप कर सकते हैं, जैसे एप्यी के द्वार ? आकाद में भी क्या आप पत्र्यी क्याकर रह सकते हैं, जैसे प्रशी ? चाँद सुरज जैसे तेनवाद को भी क्या आप हाम से छ सकते हैं ? ब्रह्मलोक तक भी क्या आप अपने दारोर से बदा में कर सकते हैं ? व्यक्षस, मही ।

माप धायुप्तान् ऐसा बालते जीर रेवते हुने क्या दिव्य अवीक्षिक विश्वत्र भ्रोप्तपागु से दिव्य और मानुष तथा तृर और विश्वद के शब्दों को भुन सकते हैं ?

मानुस ! नहीं शुन सकते हैं।

ज्याप आयुष्मान् ऐसा बातते जार देखते हुये पता तुसरे बीवों और युदरी के विक्त को अपने विक से जान केटे हैं ? सराम विक को सराम विक है गुना बाल केटे हैं ? बीवराम विक्त को बीवराम विक है, ऐसा बात कंटो हैं हुये ' ओह बाल विक को "विमा बात केटे हैं ? संक्रित किसिल' , सहायू', असहायू' सीचर जन्मर समाहित अपसाहिय' विसुक्त', अबिसुर पित्त की वैमा-वैसा बात कंटो हैं ?

व्यवस मही।

जार जायुरमाण् पंसा कावते और देखते हुने च्या अमेक मधार के अपने पूर्व जन्म को नातों को स्मारण करोते हैं—ज्या पुरू केमम भी दो खरम भी याँक पुन्न "विद्य पुन्नास सी इजार" कावा"। जनेत संवर्ग करर भी जनेत विवास करण भी सर्वत्र संवर्षात्रियों करन भी। वाँ सा इस्त माम का इस मोन का इस अपी का इस आदार का पेपा खुज्युक जोगरे वाका इत्यों नातुं बाजा। सो वाँ से भर कर वहाँ अस्त्र हुना। वहाँ भी इस नाम बा" या। सो वाँ से मर कर वाँ जरपब हुमा हूँ—हस मकार का आप आवार बीर तहेंच्य के साथ बनेक प्रकार के भरने पूर्व अस्म की वार्षी को समारण करते हैं।

माबस मही।

भाप भागुम्मान पंथा बानते जार ऐकार्त हुने क्या दिश्य शकार्यक्र विश्वस शहा हो सालों की— मार्गत बस्तते सिन प्रमाश शुक्यर कुकन करनी गति की ग्राप्त श्रुपति की ग्राप्त करने वाले हैं कहुमार जनका को रार्थे—देखते हैं है जीव सार्गत बक्त और नम से हुएकार करने वाले हैं क्या दुवरों की विषया कार्य वाले हैं निर्माय सेंद्र बाले हैं निर्माय सिन्ते या कार्यक करने वाले हैं—जो मार्गे के बाद नाक में कार्य हो कर हुगीठि की ग्राप्त होंगे ? वे बीच सारीर बच्च और प्रमुख्य से सहाधार करने बावें हैं जी मार्ग के बाद दुवर्ग में बरुवह हो कर शुपारि को ग्राप्त होंगे है इस प्रकार करा कीर्यों को सारी कममते सीच मनीय शुक्यर कृकर अच्छी गति को ग्राप्त हुगीति को ग्राप्त करने कर्म के अनुसार बचका को गारी—देखते हैं ?

भाइस नहीं।

भाग नामुक्ताल् पृष्टा बानत बीट वृष्टते हुच स्था उस सास्त विमोश कर के परे अक्स जो हैं वर्षों सरीर से स्पर्ध करतं विकार करते हैं १

कानुस नहीं।

क्या क्यमुप्ताओं का स्थीकार काना डीक होते हुने जी आप ने इन ( सहीक्कि ) समी को नहीं पाया है?

नहीं मानुस यह नहीं है।

सा कैसे बढ़ सम्मव है।

भावुम सुमीम । इस क्षीग प्रजा-विश्वक हैं ।

मानुष्यार्थी के इस शंक्षण से कड़े गर्थ कर इस विकार से वर्ष नहीं सवक़ते हैं। इपर कर के आप कोग देशा कहें कि कानुष्याधा के इस संसंप से कड़े गये का इस विस्तार से अर्थ जान हैं।

मानुभ सुसीम ! माप जान में वा न जान कें। किन्तु इस कीग प्रशाविश्वकाई ।

₹.

मव, आयुप्पान मुसीम अल्पन में उठ जारें भगवान थे वहां गये, आँव भगवान का अभिवादन कर एक ओर वेट गये। एक ओर बँद, आयुप्पान सुनीम ने उन भिक्षुओं के माथ जो कपा-मंत्राय हुआ था मुशी भगवान को कह गुनाया।

सुर्योम । पहले धर्म के स्वसाय का जान होता है, पीछे निर्याण का जान ।

भगवान के रूप मुक्तेव से कहे गये का हम विकार से अर्थ नहीं समझते हैं। छूपा कर भगवान ऐसा कहें कि भगवान के इस सब्वेध से कहें गये का हम विकार से अर्थ जान है ।

सुमास । तुम जानी यात्र जानी, किन्तु पारटे धर्म के स्वभाव का काम होता है, वीहे निर्वाण का काम । सुमीस । तो क्या समझते हो रूप निर्वाह भेथवा अनित्व ?

भन्ते। भनिय है।

जो अनित्य रे यह हु न रे या सुन ?

जाआनस्य स्पष्ट हुन र्यन्तुः भन्ते । हस्य री।

गो अनितर, द्वाय जिपतिनामयमां हैं उसे पया ऐया समझता टीक है—यह मेरा है, यह मैं हूँ, यह मेरा लग्मा है ?

मही भन्ते !

पंदना निष्य हे या अनिश्यः ।

सला निया पा अनिय '।

स्कार निग्य र था अनिग्य \*\*\*।

विज्ञान निग्य है या अनिग्य "।

जो अभिन्य, हुन्य, विपरिणामधर्मा रे उसे वया ऐसा समझना श्रीक है--यह मेरा है, यह मै हैं, यह मेरा आतमा है ?

नहीं भन्ते !

सुसीस । तो, जो कुछ अतीत, अनशत - या धर्तमान् के रूप है — आप्यास्म चा यात्र, स्थूच या सुस्म, हीन या प्रणीत, युरूच या निरुटस्थ—मभी न में है, न धुम है, और न इमारे आरमा है।

सुमीय । जो कुछ अतील अनागत या पर्तमान के येथना , सङ्गा'', सस्कार''', विज्ञान हैं सभी न सेने हैं, न हम हं, और न हमारे आस्ता है। इन्य बात का यथार्थ कर ने अच्छी तरह साक्षात्कार इन्य नेला पाति ।

सुप्रीस | ऐसा देखते हुवे झाती आर्थशायक का चित्र क्य में हट वाला है, वेदमा से हट जाता है, क्षमा से हट जाता है। शिक्षात में हट आता है। वित्य के हट जाने पर पेदाग्य उपयक्ष होता है। पेदाग्य से विसुक्त हो जाता है। शिक्षक हो वाले पर विश्वक हो गया ऐसा ज्ञान होता है। जाति सीथ हुई, प्रस् चर्म पूरा हो नाम, ओ करना था तो पर विला, जब और कुछ नाकी नहीं वया—ऐसा जान लेता है।

ससीम । तुम देशते हो कि वाति के प्रत्यय में जरामरण होता है ?

हाँ भन्ते !

ससीम ! तम देखते हो कि भव के प्रत्यव से जाति होती है ?

हाँ मन्ते !

- सुसीम । तुम देखते हो अधिधा के प्रत्यय से सस्कार होते हैं ?

धाँ भन्ते ।

समीम ! देखते हो कि जाति का निरोध होने से जरामरण का निरोध होता है?

हाँ सन्त ै

मुसीम ! देखते हो कि शविया का निरीध होने में मस्कारों का निरीध हो जाता है।

इर्रे भन्ते ।

सुसीम ! क्या तुमने पेता बावते कार नेकते हुवे अनेक प्रकार की शासिकों को प्राप्त कर किया है ? कि एक हो कर बहुत हो बामा [ किन्हें सुसीम ने डम निक्कुर्णी से शुक्रा था ]

महीं सम्त !

सुमीस ! एसा कहना भी और इस बसों को न पा केना सी-सुसीम ! वही इसमें किया है।

### च

समीम ! समने टीक में बढ़ा खपराच किया है।

पुत्तीमा ! जैसे क्षेत्र कियों कोर था दोवी को पकड़ कर राजा के वार्स की कार्स कीर कहूँ—देव ! यह धारका कोर दोवी हैं। काव जमा कार्ड इसे दण्ड हैं। तक राजा करें—जानी इसके हार्सों को पीछे करके रास्त्री स कम कर कार्य हो। माना हुइ हो विश्वान कीर कोक पीरत हम पक राडी से दूसरी गारी भीर एक कीराहे म दूसरे कीराहे क जाते हुए दिश्वान के जातक से विश्वाक कर बार के दिल्ला कोर हुमझ सिर कार हो। इस कोर की ही हो के जाकर उसका मिर कार हैं।

मुसीम ! ती क्या समझते हो उस पुत्रप को उसमें दुःक केवेंबी हांगी या नहीं ?

मन्ते ! अवश्य होगी ।

मुसीम ! उस पुक्त की बुत्य हो था नहीं हो किन्तु जी चीर की ताद इस धर्म-विवन में प्रतिन्ध

हात है करहें अधिकाधिक दुश्य ओगना होता है। वह नदक में पहला है।

मुत्तीस | जो तुस अपने अपराय का जपराय नासकण्यक्तित कर रहे हो इसतिये इस असा कर इसे हैं । मुत्तीस ! आर्थ-विनय में अमझी हृष्टि ही है जो अपने अपराय का चर्मानुकृत प्राथमित कर हैया है और प्रक्रिक में न करने का संक्ष्म कर बेटा है।

श्रदावग समाप्त

# आठवाँ भाग

# श्रमण-ब्राह्मण वर्ग

### ६१. पश्य स्च (१२.८१)

### परमार्थमाता श्रमण-ब्राह्मण

ऐसा सेने सुना ।

एक समय भगवान श्रायस्ती में अनाथिपिण्डिक के जैतवन आराम में विटार करते थे।

ं भगवान पीर्ल-भिक्षुओं। जो असम या ब्राह्मण करासरण की नहीं जानते हैं, जरासरण के ममुख्य को नहीं जानते हैं, जरासरण के निरोध को नहीं जानते हैं, अरावरण की निरोधपासिकों प्रसिद्धा को नहीं जानते हैं, वन अवणों से न ती आसण्य हैं और ब्राह्मणों से ब्राह्मण । वे असुप्तान असण या ब्राह्मण के परसार्थ की हती जन्म से ख्या आन, साक्षण, कर, और ब्राह्म कर विदार नहीं करते हैं।

भिश्वको । यो असण या बाहाण जरासरण को जानते हैं, उन्हें असपों से आसण्य और बाहाणों से बाहाण्य है। ये आयुक्ताण असण या बाहाण के परसार्थ को हमी जन्म में स्वयं जान कर विहार करते हैं।

# § २-१०. पश्चय सुत्त ( १२. ८. २-१० )

परमार्थनाता अमण-ब्राह्मण अवस्त्री ' जेनवन के ।

जाति को नहीं जानता हू । भव को नहीं जानता है । उपादान को नहीं जानता है एगा को नहीं जानता है । देवना को नहीं जानता है ।

पटनाका नहीं जानता है। स्पर्शकों नहीं जानता है। पद्मपत्तन को नहीं जानता है।

पदानतम् का नहा जानता ह नामरूप को नहीं जानता है । विज्ञान को नहीं जानता है ।

§ ११. पचय सुत्त (१२ ८, ११)

परमार्थञ्जाता अमधा-ब्राह्मण संस्कार को नहीं जानता है ।

....2

श्रमण ब्राह्मण वर्ग समाप्त ।

# नवाँ भाग

### सन्तर पेरवाल

# § १ सत्या सुच ( १२ ९ १)

यथार्थज्ञान के छिए बुद्ध की स्रोज

मिश्चना ! बरामरण का व बालते हुए, न देपरे हुए, बरायरच कंपवार्य ज्ञान के किए तह की लोड करनी चाहिये। सञ्जदय निरोध और प्रतिपदा कंपयार्थ ज्ञान के किए तक की खोड करनी चाहिए। यह पहला स्वान्त है।

सभी में इसी माँति समझ सना वादिए।

मिलुको ! कावि को न जानते हुए ।

सिद्धार्था । भव जपादाम राज्या बेदला स्वर्ग पदापराव' नासस्य विद्यान संस्कार को नाबावते दुध बुद्ध की लोज करवी वाहिये ।

§ २ सि**न्छा सु**च (१२ ९ २)

यथार्थकान क विय जिला सेका

भिश्चर्मा | जरामरण को न जानतं हुए करामरण कंपधार्य-जान के किये सिक्ष्य लेनी वाहिय । [कपर क सुन्न के समान ही। "डिक् की लीव करणी व्यक्तिय" के करान पर "सिक्षा कर्मी काहियें ]

डु३ मोग सुत्त (१२ ९ ३)

यथार्थकाम के रिप्य थाग फरना बाग करता च्याचि ।

६४ छन्द सुच (१२ ९ २)

ययार्थशात के लिए शुम्य करता राज्य करता कादित ।

<sup>६</sup>५ उस्सोलि**ड सुत्त** (१००५)

यथार्घजन के सिप उत्साह करना क्ष्मार करना चाहित ।

६ ९ मप्पटियानिय सुच (१२ ९ ६)

यथार्थमान व सिय गीछ न सीत्रमा ..बंधि न सीत्मा कडिये ।

> र् अतिष्य गुन (१० ९ ७) यथाधनान के स्थित स्थान करना

...प्रथाग करना **क**हिये ।

§ ८. विरिय सुत्त ( १२. ९ ८ )

यथार्थ झान के लिए वीर्य करना

.. चीर्य करना चाहिये ।

६ ९**. सातच सुत्त** (१२ ९.९)

यथार्थं शान के खिए सतत परिश्रम करना अध्यक्षमार करना चाहिये।

§ **१०, सति सुत्त** (१२. ५ १०)

यथार्थ ज्ञान के लिए स्मृति करना

.. स्मृति करनी चाहिये।

§ **११. सम्ब**जञ्ज सुत्त (१२. ९ ११) यथार्थ हान के लिए संग्रह रहना

मप्रज रहना चाहिये।

§ **१२. अप्पमाद सुत्त** ( १२. ९. १२ )

यथार्थं ज्ञान के लिए अक्रमादी होना
 अप्रमाद करना चाहिये ।

अस्तर पेप्यालं वर्ग समाप्त ।

# नवाँ भाग

### अन्सर पेरवास

**६१ सत्या सुच (१२ ९ १)** 

यधार्यज्ञाम के खिए बुद्ध को खोज

मिञ्चला ! करासरण को य खानते हुए, न वेपाठ हुए, करासरण थ कोब करनी वादिने ! ससुरण निरोध कीर प्रतिपदा के यक्तार्थ जान वादिए ! यह पहचा सुवान्त है ]

समी में इसी भाँति समग्र क्रेमा चाहिए।

सिध्नमो ! काति को न मानते हथ ।

सिद्धानी मिश्र क्याचान पृथ्या बंदना विकास संस्कार को स्थानशंहुण शुद्ध की कोज करसी

§२ सि**म्छासुच**(

यथार्थकात के स्थित । सिक्षमा ( करामाण को न कानत क्ष्य करामा

[कपर के सूत्र के समात्र हो। क्षेत्री काहिये']

६३ योग

यथार्थका-

भोग व्हरका काहिये।

88 £

श्रुषा

ग्रन्द करना श्राहिये ।

8 4

बरसाइ करना चा

ş

पीछे न बीड्य

भिक्षुत्रो । जैसे, कार्र सस्तनिवर्षों का समस्र रोता है-जैसे गंगा, यसुना, अचिरवती, सरभू, मही निवर्षों का-चार्रों से कोई पुरुष दो या तीन पूँद पानी निकाल है ।

मिश्चओं ! लो क्या समझते हो [ उत्पर के सूत्र जैसा ]

६ ४. सम्भेज्ज उद्क सुच (१२. १०. ४)

महानदियां के संगम से तलना

थायस्ती जेतवन'' से।

भिक्षुओं । जैसे, जहाँ महालिटियों का संगम होता है.. वहाँ का जल सूख कर खतम हो जाय, केवल कुछ देंद यच जाये।

भिश्रुओं ! लो क्या समझते हो..।

§ ५. पठवी सुत्त (१२. १०. ५)

पृथ्वी से तुलना

श्रावस्ती जेतवत मे।

सिक्षुओं । कोई पुरुष केंद्र के बराबर पृथ्वी पर सात गोकियाँ केंक है। तो कौन बदा है, बैर कें बराबर सात गोकियाँ या महाप्रथ्वी ' ?

'पूर्ववत् ]

§ ६. पठवी सुत्त ( १२. १०. ६ )

पृथ्वी से तलना

श्रावस्ती जेतवन में।

मिछुओं | जैसे महापृथ्वी नष्ट हो जाय, खतम हो जाय, यर के बराबर सास गोलियों को छोड़कर।

६ **७. सग्रद सत्त** (१२ १० ७)

समुद्र से तलमा

आवस्ती जेतवन "में। मिछुबी। जैसे, कोई पुरुप महासमुद्र से दो वा तीन पानी के बूँट निकाल से . ।

§ ८, सप्रद सुन (१२, १०, ८)

समुद्र से तुलना

आवस्ती जेलचन में। पिछुली कें, भदासद्वाद थूल कर सत्तम हो जाय, यो या तीनपानी के दूँद छोदकर। सिक्कुको । तो पमा समझे हैं।

> § ९. पब्बत सुत्त (१२, १०, ९) पर्वत की बच्चा

श्रायस्ती जेतवन में।

# दशर्वों माग अभिसम्म धर्म

# <sup>§</sup> १ नखसिख ग्रच (१२ १० १)

धोतापच के चाथ भरवस्य है

पुसा मैंने सना ।

एड समय मयवान् श्रायस्ति में शताश्चिपिष्डक क जेतवन भारात में बिडार करत में । यम मगवान् ने अपने बक्ष के कपर एक पायुका कन रख मिशुओं नो मामन्त्रिय किया—

देव भगवान् ने जनने वज के कार वृक्त पाछ्का कन रहा शिक्षुओं नी वासनिवाद किया— सिक्षुजो | क्या समझ्छे हो व्योज वजा है यह बाख्य कर छोटा कम्प जिसे सबै अपने मुख पर रस खिवा है या सहाप्रका ?

ानने ! सदाहम्मी ही पहुछ वर्षी हैं। सरावान् वै किस वाल्य-वण को अपन नक्ष पर एक किया है

बह तो बहा अहवा है । यह महाप्रदेश का काकवाँ माग भी वहीं है ।

सिहानो । विश्व हो पहिसाववा हातो आर्थमायक का वह तुम्ब वहा है श्री श्रीन हो गया = का गया, जो बचा है यह को अध्यक्त अस्पनाद है। यूर्व के श्रीय हो गर्ध=कर गये उस सुन्द स्कन्य के सामवे यह बचा हुन्य होन्य को अभिक से अभिक सात अन्यों तक यह सकता है । सादार्व मारा भी नहीं है।

सिद्धभा ! कर्मका काम हो काना इतका यहा परसार्थका है। यम पद्ध का प्रतिकास इतना वड़ा परसार्थका है !

# § २ पोक्सरणी श्रुच (१२ १० °)

क्रीतापच के दुःच शत्पस्य हैं

मामस्ति खेतवन" मैं।

मिहुसी | पवास घोक्त कवी पवास धोजन वीडी भीर पवास घोक्त गहरी पानी से कवाकव मरी भीई पुष्पिणी हो कि किसके किवारे बैठ कर बीचा जी पानी पी सकता हो | तब बोई पुष्प बस पुष्पिणी से कुमार से कुछ पानी विकास है।

मिद्वानी ! को क्या समझते हो अनाम में आवे अकाल में अविक पानी है वा ग्रुक्तरियी में !

मान्ये ! क्रमाम में भागे बक्कन से पुष्पतिओं का पाणी अन्तरत क्रमिक हैं। यह तो उसका कावार्षे भाग भी नहीं उदारता है।

मिश्चनी ! वैसे की चरिसम्बन्ध ज्ञानी आर्वजावक [ क्षपर के सूब के प्रसा हरे ]

### **६ १ सम्बेज्जउरक मुत्त (१**२ १० १)

महानविधी के संगम से त्रखना

भावसी 'बेल्बर हैं।

# दूसरा परिच्छेद

# १३. धातु-संयुत्त

# पहला भाग

### नामान्य वर्ग

( आध्यात्म पञ्चक )

### § १, भातु सुच (१३ २,१)

धातु की विभिन्नता

थ्रावस्ती क्षेत्रवनः में ।

मिश्रुक्षो । प्राप्त के नानात्व पर उपवेश करूँगा । उसे युनो, अध्यी सरह मन खगाओ, में कहता हूँ ।

"भन्ते । बहुत अच्छा" कह, श्रिक्षुओं ने भगवान् को उत्तर दिया । भगवान बोले—श्रिक्षओं । धान का सामान्य क्या है ?

चक्कपातु, रूपधातु, पञ्चितवान चातु । श्रोत्रचातु, श्रवण्यातु, श्रोत्रविकास धातु । श्रालधातु, गान्यवातु, प्राणविज्ञान धातु । शिक्क्षपातु, रस्त्रधातु, विद्वाविकानचातु । कायचातु, रुष्ट्रध्य धादु, काय-विज्ञानचातु । मनोचानु, समोविज्ञानधातु ।

भिश्वभी । इसी को धातुनानात्व कहते हैं ।

# § २. सम्फस्स सुत्त (१३ १ २)

स्पर्श की विभिन्नता

शावस्ती' जैतवन में। भिक्षभी! धातुनानास्व के होने से स्पर्धनानास्व होता है।

सिक्षुओं । धातुनानास्य क्या है ? चक्षुधातु, श्रीलधातु, बाणधातु ।

भिक्षकी ! भ्राहुनानास्य के होंगे से स्पर्शनानास्य कैसे उत्पन्न होता है ?

मिह्नुली । पहुचातु के होने से चहुतस्पर्यं उत्पन्न होता है। अंत्रतस्पर्यं उत्पन्न होता है। अगलसप्परं उत्पन्न होता है। ''जिल्लासप्परं उत्पन्न होता है। ' कन्यसप्परं उत्पन्न होता है।'' सन स् सस्परं उत्पन्न होता है।

मिश्रुकी ! इस प्रकार, घातुनानात्व के होने से स्वर्धनानात्व उत्पन्न होता है ।

§ ३. नो चेतं सुत्त (१३ १ ३)

घातु विभिन्नता से स्पर्श विभिन्नता

श्रावस्ती जेतवन में।

२५२ | संयुक्त-निकाय

ि १२ १० ११

मिसुमो | जसे, कोई पुरुष पश्चतस्य हिसास्त्रप्य से मात सरमों कं शराबर कंड़न से ले | मिसुमी | तो नरा ममसन हो "]

§ १० पम्बत सुच (१० १०)

४ १० पश्चत सुच (१° १

धायस्त्री जेतवत में।

शायरना अतयन भा

मिगुको ! जैसे पर्यताज द्विमास्य नद हो जाय न्यतम हो जाय मात सरसों के बरावर कंकर

फ'दकर। सिराको ! हो पत्र समझसे हो ।

5 ११ पम्बस सत्त (१२ १० ११)

ਪਹੁੰਜ ਵੀ ਰਚਸ਼ਾ

धायस्त्री 'जेतसन में । मिलुओ | बैसे वर्षकराज सुसन संबोई पुरुत सात सूँत क बरावर चंचन केंक् दे । मिसुजो !

ता गरा ममगते हा पनतरात्र सुमेद नदा होता वा थे मात मूँत के बरावर कंडन ?

मर्न्त ! पपतराज सुमेठ ही जन जात मूँग ने बराबर नंबाई से बदा होगा । वे सी इसकी

सामर्पी सार नहीं हो सकते । मिलुओ | यमे ही रहिमागत जाती आर्थ सावक का यह कुल बका है जो क्षीम ही गया≔पट

निश्च मो ! वर्षे ही रहिमानक जानी व्ययं सावक का यह तुल्ल बहा है जो श्लीम हो गवान्त्रर गया। योजवा है यह वोजगयन अपरशाज है। पूर्व व श्लील हो गर्वेककर गये उस तुल्ल स्वाय के सामने वह यथा हुआ दुला यो अधिक स जीवक मात उसमें शक रह सकता है!! व्यायकों सास स्वीताहीं है।

भभिनमय नंदन समाप्त

भिक्षको । ध्रोप्रधान सनोधान

13.9 61

भिक्षमा । इसी सरह, धामुनानास्य के होने से स्वर्शनानास्य उत्पन्न होता है; स्पर्शनानास्य के होने से बेदनानानास्य उत्पन्न होता है । बेदनानानास्य के होने से स्पर्शनानास्य उत्पन्न नहीं होता है, स्पर्शन सानास्य के होने से धातुनानास्य नहीं होना है।

( भारत प्रदेशकः )

ह ६, धातुमुच (१३,१,६)

धान की विभिन्नता

धावस्तीः जेतवन मे ।

भिक्षको । धातुनानास्य के विषय में उपरेज करू गा । उसे सुनो, अच्छी तरह सन लगाओ, से कहता हैं।

भिक्षको । धातुनानास्य वया है ? रूपधानु, प्रव्दधातु, गम्धधानु, रसधातु, रष्टस्यधातु और धर्मधात ।

भिध्यओ । इसी को फड़ते हैं धातुमानास्व ।

§ ७. सञ्जासत्त (१३ १ ७)

संबाकी विधियना

श्रायस्ती'' जेतवन में।

शिक्षको । प्राप्तनानास्य के होने से संज्ञानानास्य उरपक होता है। सज्ञानानास्य के होने से सकदप्तामाध्य स्थापत होता है। सफदपतामाध्य के होते से छन्दनानाध्य स्थापत होता है। छन्दनानाध्य के होने से प्रदय में तरह-तरह कीक लगन पेदा होती है। तरह-तरह की लगन पेदा होने से ( उसकी पति के किये ) तरह-तरह के यम होते हैं।

भिक्षको । धाननानास्य क्या हे ? रूपधात धर्मधात ।

भिक्षभी ! मेंसे सरह तरह की छनन पैटा होने में ( उसकी पर्ति के छिने ) तरह-तरह के यल होते हैं ?

भिक्षशी । रूपधात के होने से रूपसञ्चा उत्पन्न होती है । रूपसञ्चा के होने से रूपसज्ज्ञ उत्पन्न होता है। । रूप में तरह-तरह की लगन पैदा होने से ( उसकी पूर्ति के लिये ) तरह-तरह के यव होते हैं ?

धर्मधात के होने से ।

भिक्षुओं । इसी तरह, घातुनावास्त्र के द्वीने से सञ्जानानास्य होता है ।

§ ८, नो चेतं सच (१३,१८)

घात की विभिन्नता से संबा की विभिन्नता

धारस्ती लेनवन मे।

' तरह-तरह के यह होने से तरह-तरह की छगन पैदा नहीं होती हैं। तरह-तरह की छगन

<sup>%</sup> परिलाइनानच⊐किसी चील के पाने के लिये हृदय में एक लगन !

मिमुनो । चातुनावास्य कं हाने से स्पर्शनानास्य कराय होता है। वह गड़ी कि स्पर्शनानास्य के होने से बातुनावास्य करावः हो ।

| भारतमानास्य उरपक्ष हो | | सिद्धामो | धारतमानास्य क्या है ? चक्क्ष्रायाः समीचार्ताः सिद्धाची | इसी का कहते हैं धारतभागस्य ।

सिमुखी ! बातुनानास्य के होने से स्पर्धनानास्य कैसे होता हैं। और नह नहीं कि स्पर्धनानास्य के होने सं पात्रवानास्य हो !

मिसुकी । चसुवात के होम से बसुसंस्थर्य कलकहोता है बसुसंस्थर्य करोने से बसुवात करान मर्दी होता । मनोपात के संस्थर्य होने से मकसंस्थर्य जलक होता है, मनासंस्थर्य के होने से मनापात करक नहीं होता ।

पिशुको ! इसी प्रकार, चातुनामास्य के होने में व्यवस्थानास्य करून होता है। स्वर्धनामास्य के होने में भाजनामास्य नहीं होता है।

# § ४ पदय वेटना सत्त (१३ **१** ४)

# वेदमा की विभिन्नता

धार्यक्षी जेतवत वै।

सिश्चरी । बाहुमानात्व के होने से स्वर्धनावात्व करास होता है । स्वर्धवानात्व के होने से बेदबा माजाब कराब होता है ।

भिक्षको । पालुकाभाव्य क्या है ? बाह्यपातः मनोपाल ।

सिद्धको । बाहुनाकार के होने से स्पर्शनानात्व कैमे चत्त्व होता है और स्पर्शनावात्व के होने अवेदनानानात्व कैसे बत्त्व होता है ?

मिल्लुभी ! बहुपानु के होने से बहु-सरायों बराब होता है। बहु संस्ता के होने से बहु-संस्ता र्राजा बैदना बराब होती है। । अभोषातु के होने से समासंस्त्रमें बनाब होता है। समासंस्त्रभे के होवे में समासंस्त्राच्या केवल बराब होती है।

मिश्रुजी ! इसी तरह बाहुबानात्व के होने से स्पर्सवानात्व वत्वव होता है। स्पर्सनानात्व के होने से बेहबानावहरू जायब होता है।

### ८ ५ दक्षिय वेदना सच (१३ १ ५)

### बेदना की विभिन्नता

### चत्या का स्वासक्त भाषसी अंतरमण में।

मिहानी | बाहुआजास्य के दोने से स्वर्धनामास्य उत्तरक दोता है । स्वर्धनामास्य के दोने से देशन भाजास्य उत्तरक दोता है । वेष्ट्रम-नामास्य के होने सं स्वर्धनामस्य नहीं होता है । स्वर्धनामास्य के होने से साहनामास्य नहीं दोता है ।

मिलुओ | पानुनाशास क्या है ! सह " सह"

भिद्यानों । प्राप्तकारय के दोने से ज्यानिकार्य कैसे अवस्थ होता है। स्वसीनाताय के होने से बेर्ना-नाताय अपन होता है। वेदनातानाय के होने से व्यानिकारय अवस्थ नहीं होता। स्वानिकारय के होने से प्राप्तकारय नहीं होता है ?

सिनुमों ? काम्रपात के हाने में पशुसंदर्श जलात बांता है । काम्रसंदर्श के हाने स काम्रसंदर्शन वेद्या बराब बागी है। काम्रसंदर्शन वेद्यान के बाने से काम्रसंदर्शन वीदान है। काम्रसंदर्श के होने कार्यात जनक महिन्दा। भिक्षको । श्रोत्रधातः सनोधातः ।

भिक्षुओं! इसी तरह, धातुनानात्व के होने से स्वर्धनानास्व उत्पन्न शोता है, स्वर्धनानास्व के होने से बेदनानानास्व उत्पन्न होता है। बेदनानानास्व के होने से स्वर्धनानास्व उत्पन्न नहीं होता है, स्वर्ध-नानास्व के होने से धातुनानास्व नहीं होता है।

(बाह्य पञ्चक)

### ८६. धात सत्त (१३ १.६)

### धात की विभिन्नता

थादस्ती'' जेतदन में ।

भिञ्चको 'धातुनामास्य के थिपय में उपदेश करूंगा । उसे खुनी, अच्छी तरह सन खगाओं, से कहता हैं।

भिद्धनो ! धातुनानास्य क्या है ? रूपधातु, शब्दधातु, शब्धधातु, रतधातु, रतधातु, रतधातु, स्ट्रस्टस्यधातु स्रोर धर्मधातु ।

सिक्षुओ ! इसी को कहते हैं धातुनानारन ।

### § ७. सञ्जासुत्त (१३ १. ७)

### संबा की विभिन्नता

आयस्ती' खेतचन में।

सिक्षुओं ! घातुमानारय के होने से सज्जानानारय उत्पन्न होता है। सज्जानामारय के होने से सज्ज्ञवनाताय बरपत्न होता है। सज्ज्ञवनाताय के होने से क्रम्यनातारय ज्ञप्त होता है। क्रम्यनाताय के होने से हृदय में तरह-तरह कीक कान पैदा होती है। तरह-तरह की क्षान पैदा होने से ( उसकी पृत्ति के किये) तरह-तरह के यब होते हैं।

मिश्रको ! चातुनानास्य क्या है ? ऋपधास धर्मधास ।

भिक्षुओ ! कैसे तरह-सरह की खबन पैदा होने से (उसकी पूर्ति के किये ) तरह सरह के यह होते हैं ?

बत हात व ! शिक्षुकों! रूपवासु के होने से रूपसंजा उत्पक्ष होती हैं। रूपसक्त के होने से रूपसक्वय उत्पक्त होता हैं। । रूप में तरह-सरह की छमन पैदा होने से (असकी पूर्ति के किये) तरह-सरह के बत होते हैं?

ए ! भर्मभातको होनेसो ।

भिक्षत्रों। इसी तरह, धातुनावास्य के होने से सजानावास्य होता है।

§ ८. नो चेतं सत्त (१३,१.८)

धातु की विभिन्नता से संद्या की विभिन्नता

श्रायस्ती जेतवन गे।

' सरह-तरह के यक्ष होने से तरह-तरह की खगन पैदा नहीं होती है। तरह-तरह की छगन

<sup>स् परिलाइनानच⇒िकसी चीज के पाने के लिये हुटय में एक क्ष्यान 1</sup> 

पैदा होने से सम्बनातात्व अल्प्स नहीं होता । सम्बनातात्व क होन में संस्थानातात्व अल्प्स नहीं होता । सन्त्रनातात्व के होने से संज्ञानातत्व नहीं होता । संज्ञानातात्व के होने सं चातुनात्रात्व महीं होता ।

मिश्रमी । पातुवावास्य क्या है ? क्याबात धर्मधात

मिसुको ! केसे चातुनामान्त के होने से संज्ञानाकान्य उत्पन्न होता हं ? जार [प्रतिकीमनस स वह ठीक गरी होता है ] संज्ञानामान्त के होते से चातमान्तरत मही होता है ?

मिल्लामी (करायात कहींमें में कर संज्ञा उत्पन्न होती है। कर में तरह-तरह की काम पैदा हान से (बसरी पूर्ति के किये) तरह-तरह के पक्ष होते हैं। तरह-तरह के पक्ष होने स तरह-तरह की काम पैदा नहीं होती है। संज्ञालमध्य के लोगे से कालमाश्य उत्पन्न पार्टी होता है।

सदद्यान् । राज्यकान् ": रसमानः । स्टब्रुव्यमान् ": धर्मवातः ।

सन्दर्भातः । शास्त्रवातः "इ स्त्यातः के हाने से संज्ञानावास्य करानः होता है। भार संज्ञा नानास्य के होने से धातकातास्य कर्षी होता है।

# ह**९ पटम फस्स सच (१३ १९)**

## विभिन्न प्रकार के काम के कारण

भावस्ती 'जेतवन में ।

मिह्नभी ! भातुनामाल के होने से संशानानात्व उत्तर हांवा है । संशानानात्व क होन से संकर्म मानात्व उत्तर होता है । सक्काभावात के होने से स्वर्शनामान्व उत्तर होता है । स्वर्शनात्व के होने से देवनावानात्व उत्तर होता है। वेदनानातात्व के हात से कल्पनातात्व उत्तर होता है। स्वर्गनावात्व के होने से हत्व में सह तरह की काम पैदा होती है। सरह-तरह के कप्प पैदा होने से सरह-तरह के एक सेने हैं। स्वरत्व तरह के कुक होने से सरक-तरह के क्षाप्त होते हैं।

भिञ्जयो । बातुकामाल्य कथा है है कपवातु वर्णवातु ।

मिछुनी ! अस सरह-सरह की क्यान पत्रा होने से तरह-सरह के वक होते हैं ?

मिहानी ! क्यानात व होता मा क्यारंजा कराइ होती है । क्यारंजा के होन मा क्यारंज्य कराव होता है । क्यारंज्य के होने के क्यारंज्य कराव होता है । क्यारंज्य के होने के क्यारंज्य के जान के ज

बाध्य बातु वर्भवातु ।

भिश्रुको | इसी तरह चातुनानात्व के होने सं संका-मानात्व करणक होता है । । तरह-सरह के कल होने सं तरह-तरह के काम होते हैं ।

# **३ १० द्वतिम फस्स सुच (१३ १ १०)**

### चातु की विभिन्नता से दी संदा की विभिन्नता

भागस्ती" सतक में।

निर्माणी (वाह्यकार के होने स सङ्गलावात्त्र वालक होता है। संवाह्यकार के होने स संक्रमत्रवामाण्य अस्त्र होता है। "स्थार्थ । वेह्या |... श्रम्य । स्वत्र । स्वत्र । स्वत्र । ... ताह-ताह के क्षा होने से शहरूतह के स्वत्र वहीं होता । [हुसी तरह वित्रकोमसम से ]। मंत्राह्य-ताह के क्षाम होने से ताह्यकार करण कार्यों होता । जिल्लाचे । धारतालाख स्था है १ स्था असे औ

विश्वको । केर्य पातुनावास्य ६ होने में यशानामास्य उस्त्रज्ञ रोता है । ता प्रजानामास्य के होते में पातनामास्य उस्तर नहीं रोता ?

भिन्दभी ! ज्यापातु वे होने से ज्यामका उत्पन होनी है ].

भवन्याम् अपनेपाष्ट् ..। भिद्युओ । इसी सरह, प्रातुनानास्य ४ इसी से स्यञ्जानास्य उपन्न होता है।..। संज्ञानास्य ने होने से पासनामस्य उपना नहीं होता ।

नानात्ववर्ग समाप्त ।

# दसरा भाग

# द्वितीय वर्ग

# §१ सुत्तिमं सूच (१३ < १)

### सात धानुर्वे

थायसी-अनवन में।

मिझुओ ! बातु यह सात है।

कीन मंसार १ (१) ध्यक्षपातु (१) शुरुषातु, (१) ध्यक्षात्रावस्थात्रत पातु, (१) विज्ञानामन्द्रपतन पातु, (५) काक्षित्रपादतन पातु, (१) नैवर्सशानासद्यापतन पातु (७) संज्ञानविधितनिरोध वातः।

मिशुमी ! वही सात बातु हैं।

सिद्ध | को सामाचातु है वह अन्यकार के मत्वप से वाना काता है। को सम्मानु दें यह महाम के मत्वप से बाना काता है। को आकासावज्ञायरत चातु है वह दस्य के प्रत्यद से बावा काता है। को विज्ञायनच्यायत्व पाद्ध दें वह जाकासावन्यायत्व के प्रत्यव से जाना वाता है। को आकिनवन्यायत्व पाद्ध दें वह विद्यानावन्यायत्व के प्रत्यव से जाना आता है। को नेवसंहायत्वसंदायद्य पातु है वह स्पष्टि-क्ष्यायत्वत के प्रत्यय से बाना वाता है। को संज्ञावेद्यितिवृशेष चातु दें वह विशोध के प्रत्यप से जावा कार्य है।

मन्ते ! इन साठ पातुनीं की शाहि कैस होशी है ?

सिद्धं ! वो क्षामावातु, सुमयातु, व्यवस्थात्मः वावत्य-वातु, विद्यावात्मन्वावतत् यातु, काविन्याया-पदन-यातु है वयकी प्राप्ति सञ्चा से बोती है।

भिष्ठ ! को मैवर्स खानार्स मानवन यस्तु है यह संस्कारों के जिल्लूक अवसिष्ट हो बाने से प्राप्त होता है।

मिद्ध ! की शंशानेव्यासनिरीध कांग्र है वह निरोध के ही काने से मास होता है ।

### \$ २ सनिदान सुच (१३ २ २)

#### कारण से ही कार्य

भावसी जेतक में।

सिञ्जनों !: कारमितकों निकार निवाल से वर्ष बोता है, सिका निवाल के गरी । कारमासितकों *दिनी* निवाल से दरें बीता है : विभार निवाल के नहीं । विश्वीसायिकों किसी निवाल से वर्ष देशेया है, विवार निवाल के नहीं । के नहीं !

भिद्वाचाकी १

भिक्षुओं ! कामजात के प्रत्यंत से कामजज्ञ उत्पन्न होता है ! कामसङ्ग के प्रत्यंत्र से कामसंकल्य उत्पन्न होता है । कामसंकरण के प्रत्यंत्र में कामजन्य उत्पन्न होता है । कामजन्य के प्रत्यंत्र से काम की और एक क्लान पैदा होती है । काम की और एक जन्म पैदा होने के प्रत्यंत्र से काम की प्राप्ति के लिये यन होता है। भिक्षुओं ! काम की प्राप्ति के किये यान करते रह अविहान, प्रत्यंक बन सीन जगह मिण्या प्रतियान होता है—कारीर से, त्यंत्र से और मार्ग में ।

भिक्षुओं ! व्यापादधातु के प्रत्यय से व्यापादसमा उत्पन्न होती है'"।

भिक्षुओं ! बिहिंसापास के प्रत्यव से विहिंसार्चझ उरपच होती हैं । सिक्षुओं ! जीसे, कोई पुरुष प्रक्रमी हुई एक खुकारी को सूची बाला की देर पर फॉक है। उसे हाथ पा पर से लीज हो पीट कर हुआ न दे। सिक्षुओं ! इस प्रकार, वाला उन्हरी में रहने वाले प्राणी वडी विक्रित में यह जातें पर जावें।

भिक्षुको । वेसे ही, जो अमण या बाह्रण पैदा दुरी-दुरी सजा को शीव ही छोद नहीं देता, दूर नहीं कर देता ' बिल्कुल दक्ष नहीं देता है, यह इसी जम्म में हु खपूर्वक विहार करता है, विधातपूर्वक, दुराधातपूर्वक, परिकाहपूर्वक। सारिर छोड़ मुरने के गाट उसे क्यी दुर्गीत प्राप्त होती हैं।

निश्चको । निष्टान से ही नैपक्रम्य-बितको ( = त्याग विवस् ) उत्पन्न होता है, यिमा निद्वान के महीं । निवान से ही आयापादविवर्क उत्पन्न होता है, विना निवान के नहीं । निवान से ही आयिहिंसा-वितर्फ उत्पन्न होता है, यिना निवान के नहीं ।

भिक्षओं । यह कैसे ?

भिश्चभी । नैरुक्तम्यशातु (= सत्सार का स्थाग ) के प्रस्थय से नैरुक्तम्यसङ्गा डाएक होती है। ' भैरक्तम्य-सकत्व । नैरुक्तम-रुक्त । स्थान । यत्न । भिञ्चभी । नैरुक्तम्य का यत्न करते हुचे खिद्वान् आर्थआयक तीन नगह सम्यक् प्रतिश्व होता है—यारिर सं, यचन सं, सन से ।

सिञ्जनो । सन्यापादधातु , समिद्विसाधातु ।

भिञ्जातो ! जैसे, कोई पुरुष बजती हुई पुरु जुकारी को सुली वासों की देर पर फेंक है। उसे हाथ पा पेर से बीझ ही पीटकर कुछ। है। भिञ्जुली ! इस बकार, बाग सकवी में रहनेवाले प्राणी विपक्ति में र पढ़ वार्षे, न मर वार्षे।

मिल्लुमी ! बैसे ही जो असन वा बालाण पेवा हुई सुरी संखा की सीझ ही छोड़ देता है=दूर कर वेता है=पिक्कुल वड़ा हेजा है, वह इसी जम्म में सुल्लुमुक्त पिक्टर करता है, विचातरहित, उपायासरहित, परिकाहरिति ! होरीर छोड़ मरोज के बाद उसकी अच्छी सिक्टों सिक्टर करता है,

### ६ रे. गिडाकावसथ सत्त (१३ २ ३)

थात के कारण ही संजा, रिष्ट तथा वितर्क की उत्पत्ति

एक समय गमवान आतिकों के साथ विश्वकावस्थल में विद्वार करते थे।

भगवान् बोले--- भिक्षुको । घातु के प्रत्यय से सन्ना उत्पन्न होती है, वितर्क उत्पन्न होता है।

ऐसा कहने पर, आयुष्मान् अञ्चाल धात्यायम भगवान् से योले —अन्ते ! बुद्धस्त्र न प्राप्त किमे हुचे लोगों में भी पृष्टि होती है वह कैसे जानी जाती है ?

कारमायतम । यह जो अधिया-घातु है सो एक बढ़ी धातु है।

कात्मायम 1 हीन घातु के प्रत्यक्ष से हीन खड़ा, 'हीन इटि, हीन पितक', हीन चेतना, हीम अभिकापा, हीन प्रणिधि, हीन पुरुष, हीन वचन उत्पन्न होते हैं। वह हीन वार्से करता है, हीन उपदेश

**<sup>%</sup>ईंटों से बनी हुई आला**—अद्वक्ष्या ।

रेता है. हीन प्रमापन करता है. हीन पछ की न्यापना करता है. हीन विवारण देता है, हीन विभाग करता है. हीन समझता है। कसकी उप्पत्ति भी हीन होती है—प्येशा में कहता हैं।

करपायन ! मध्यम बाहु के प्रश्यम क मध्यम संद्या । उसकी बल्पिक भी मध्यम होती है— ऐमा में कहता हैं।

कात्मायमः । उत्तम भातुके मध्यमः संज्ञतमः संज्ञाः । उसकी उत्पत्तिः भी कत्तमः होती है— पैमा मैं कहता हैं।

# ६ ४ द्वीनाचिम्रचि सच (१३ २ ४)

धासमी के बनसार ही नेस्टडोड का होना

धायस्ती जेनवन कें।

मिश्रमो | याद्र से सन्द सिक्तिका में चकते और प्रिकृते हैं। होन प्रवृत्तिवासे सत्त्व होन प्रवृत्तिवा के नाय ही सिक्तिका में चकते और सिकृते हैं। कश्याण (= अपकी) प्रवृत्तिवाके सत्त्व कश्याम प्रवृत्तिवाके साथ ही सिक्तिका में चकते और शिकृते हैं।

मि£मी ! मतीतकाक में भी चात ही से संस्व सिकसिका में चवते रहे बीर सिकत रहे ।

मिह्नभी ! समागतकाळ में जी ।

भिद्यभी ! इस समय में भी

### ६५ चक्रम सच्च (१३ २ ५)

थापु के मनुसार ही सत्त्वों में सेन्डजोन्न का होना

पुरु समय भगवान् राज्यसृष्ट में सुद्युक्ट पर्वंत पर विद्वार करते थे।

क्स समय जानुष्मान् सारियुक्त कुछ मिश्चर्यों के शाक्ष धनावाज् से कुछ दी दूर पर चंत्रसम वर रहेंथे।

णापुमान् सहामीहरूदायनः । सहाकार्यपः । अनुस्दः । पुण्या स्थानिपुत्रः । वपानिः । सामन्दः । वैद्यव्य सीकुक सिद्धणी के साय सगवार् से कुन ही दूर पर चेत्रसणका नरे थे।

तव सरवान में शिक्षकों को लागन्तित किला:---

मिछुनी | तुम सारिपुत्रको इस मिलुनों के शाय चंड्रगन करते देखते हो न ?

हाँ सम्बे

मिश्चभी । वे मनी मिश्च बढ़े ग्रजाबाके हैं।

मिद्युची ! द्वार सीज्ञकावन को कुछ मिद्दुसों के साथ चंत्रश्राण करते देखते हो स ?

र्शी भन्ते !

विश्वजो | वे सभी विश्व वर् जादिवाक हैं ।

मिलुको ! तुम नाइवप को कुछ शिक्षुत्रों के साथ वीक्रमण करते देखत हा व ?

हाँ मन्ते ।

भिश्ववी | वे सभी मिश्व चुवाह बारण करनेपाके हैं।

मिशुओं ! तुस अनुरुद्ध की कुछ सिशुओं के साथ चंत्रमध करते वैदाने दा व ?

हाँ भाग ।

मिशुओं ! वे लगी विद्या विका वहावास है ।

भिञ्जुओ ! सुम पुष्ण मन्तानिपुत्र को कुछ मिञ्जुओ के साथ चक्रमण करते देखते हो न ? हाँ भन्ते !

भिक्षको ! चे सभी भिक्षु वहे घर्मकथिक है ।

भिक्षतो । तम उपाक्ति को कुछ भिक्षकों के माथ चंक्रमण करते देखते हो न ?

हाँ भन्ते !

भिक्षओं । वे सभी शिक्षु वई विनयधर है ।

भिक्षुओ । तुम आनम्द की कुठ भिक्षुओं के साथ चक्षमण करते देखते हो न ? हाँ भन्ते !

भिक्षको । बेसभी भिक्ष बहशत है।

भिक्षओं । हुम देवदत्त को कुठ निक्षुओं के मात्र चक्रमण करते देखते हो न ?

हाँ भन्ते ।

भिक्षओं । वे सभी भिक्ष पापेष्ठ है।

मिश्रुको । धातु से ही साथ सिरुसिका में चरुते और मिरुते हैं । हीन प्रवृत्तिवारू साथ हीन प्रवृत्तियों के साथ ही सिरुसिका में चरुते और मिरुते हैं । क्रपाण प्रवृत्तिवारू सन्य क्रव्याण प्रयृत्तियों के साथ ही सिरुसिका में चरुते और मिरुते हैं ।

सिक्षको । अतीत में भी , अमागत से मी , इस समय भी ।

§ ६. सगाथा सत्त (१३. २. ६)

धात के अञ्चलार ही मेळजोल का होना

थायस्ती 'जेतवन में ।

### क

सिक्षुओं । चातु से ही सरक सिकसिका में चक्रते और मिकते हैं। हीन प्रश्नुसिवाले सरव हीन मयसियों के साथ ही सिकसिका में चक्रते और मिकते हैं।

भिञ्चली । अतीत में भी , भनागत में भी , इस समय भी ।

िमुझी । जैसे, मेका मैके के सिकासिके में जब्द आर्था और मिक जाता है। मून सून के । युक्त के , पीड पीन के 'कह कह के । किन्नुको । वैसे ही, होनमञ्जीतवाके सत्त्व हीन-प्रणिपों के साथ ही सिकासिका में जब्द और सिका हैं।

भिक्षभो । अतीत में भी , अनागत में भी , इस समय भी ।

भिश्रुओं ! भातु से ही सत्त्व सिल्सिले में आते और मिलते हैं। करूपण प्रश्नुतिवाले सरद करूपण प्रश्नुतियों के साथ ही सिल्सिले में आते और मिलते हैं।

भिक्षुली ' जैसे, दूप पूपके साथ, तेष्ठ तेष्ठ के साथ, घी घी के साथ, मणु मणु के साथ, तथा गुए गुड़ के साथ सिकसिष्ठे में बाता है और भिल्ता है।

' मिश्लुओ ! अतीत , अनागत' , इस समय भगवान यह बोले । इसना कहकर बुद और भी बोले---

> ससर्गं से पैदा हुआ राग का जगल, अससर्गं से काट दिया जाता है, थोड़ी सी रुक्त्वी के ऊपर घढ़ कर, जैसे महासमुद्ध में दृब जाता है,

बैसे ही निकरमें आपानी के साथ रह कर साल पुरुष भी हुव बाता है। इसिट बेसका पर्माण कर देना बाहिये, बो निकरमा और बीथे-विहित पुष्प हैं। एकान्य में रहने बाले को आर्यपुष्प हैं, महितास और भाग में रत रहने बाले, बिनको सर्थन उत्साह बना रहता है बच परिवर्ती का सहस्त्रस्त को ।

६७ अस्सद्धास्त (१३ २ ७)

घातु के मनुसार ही नेकजोछ का द्वीमा

श्रावस्ती जेलवत में°ा

क

मिश्चनो । चाह स ही । अव्हारिष्ठ पुरुष अव्हारिष्ठी के साथ निकंत निर्वनी के माव वेदमान वेदमानों के साथ पूर्व जूकों के साथ विकस्मा निक्रमों के साथ व्यूक व्यूक्तिकों यूक स्थापिक के के साथ रामा दुष्पन दुष्पनी के साथ विकसिक में बादे और मेक बाते हैं।

मिश्रमो ! मर्तातकाक में । सनायतकाक में । इस समय ।

स्व

सिद्धानी । प्राप्ते संदी । सदाल पुरुष नदालुधी के साथ [दीक उसका उन्ह्या] प्रज्ञावार्त् प्रज्ञावार्ती के साथ ।

§ ८ अभदा मृष्टक पचा (१३ २ ८)

६९ निर्छन्ज मृलक भार (१३ २ ९)

**६ १० वेसमझ मृठक ती**न( १३ २ १० )

§ ११ अन्यभत (= मुर्ख) द्वोने से दो (१३ २ ११)

इ १२ निकम्मा (१३ २ १०)

[ इन सूका में कवर की नहीं गई कारों ही सोच-मरीवृक्तर कही गई है ]

ब्रितीय वर्षे समान

# तीसरा भाग

# कर्मपथ वर्ग

# ह १. असमाहित सुच (१३. ३. १)

### धसमाहित का असमाहितों से मेल होना

श्रायस्ती जेतवन में '। मिश्रुको । शातु से सार '। श्रवासीहत श्रवासीहतो के माय, निरुंज विश्वंजों में साथ, घेसमझ वेसमझों में साथ, श्रतमाहित असमाहितों के माय, हृष्यज्ञ दुष्पज्ञों के माय सिलमिक्षे में आहे और निरुंति !

'' [ उक्टा ] । प्रजाबान् प्रजावानी के साथ

# § २. दुस्सील मुत्त (१३.३.२)

द्रश्रील का द डीलां से मेल होना

श्रावस्ती जेतवन में ।

भारता पार्चना । मिश्लुओं । धातुमे सत्व '। अङापहित , निर्कल ', त्रैमसम्म ', दुसीरु दुर्शाकों के साथ, दुष्पद ।

ि उल्टा ो । • शीलवान् शीलवानो के साथ

# § ३. पश्चसिक्खापद सुत्त (१३ ३ ३)

युरे वुरों का साथ करते तथा अच्छे अच्छों का

श्रावस्ती जेतवन में ।

मिक्षुओं। धातु से सत्थ । हिंसक पुरुप हिसकों के साथ, चोर कोरों के साथ, छिनालां छिनालां भे साथ, बढ़े हुटों में साथ, नद्याचोरा नेशासीरों के साथ सिङसिङ में आने और सिङसे हैं।

ं [ ठीक इसका उकटा ही ] । नहा से परहेज करनेवाले पुरूप नहा से परऐज करनेवाले पुरूपों के साथ सिलसिले में आने और मिलते हैं ।

### '§ ४. सत्तकम्मपथ सुत्त (१३. ३. ४)

सात कर्मपथ वार्टी में मेळजोळ का होना

थावस्ती जेतवन में ।

भिक्षुओं । यातु से सस्य । हिंसक पुरुष ', चोर , हिनाळ ''', झु ठे ', चुनळलोर चुनळलोरों के साथ, गणी गणियों के साथ सिळसिछे में आते और मिळते हैं।

। गप्प से परहेज करनेवाले गप्प से परहेज करनेवाला के साथ ।

§ ५ दसकम्मपथ सुच (१३ ३ ५)

इस कर्मप्रथवारों में मेळजोळ का बाग

वस्त करवयवाला स सकताल का द्वाना भावस्ती जेतवह में ।

कडनेवास गप्पी कोसी ब्यापक्रवित्त सिम्बा इप्रि ।

मिसुमा | पाद से सरव<sup>ार</sup>। हिंसक चोर क्रिनाक बड़े जुराककोर क्रस्ते वचन

<sup>§ ६ अद्वक्तिक सच</sup> (१३३६)

भगाक्रिकों में मेळडोख का होना

भाषस्ती जेतवस्त्री ।

मिन्ना । वाह मं सात । सिच्याचिटवाके । सिच्या वंकरपनाकं सिच्या वनताकं , निन्ना कर्मान्तवाठः सिच्या वीविकावान , सिच्या व्यापासकंके सिच्या पट्टिवाके सिच्या समाधिवाके प्रत्य सिच्या समाधिवाके प्रत्यों के साथ सिक्टिविके से कार्ट वीए निक्की ई ।

[ दक्या ] । सम्बक्त समाधिवाके पुरुष सम्बक्त समाधिवाले पुरुषीं के साथ ा

8 ७ दसङ्ग सच (१३ ३ ७)

वधालों में मेक्षजोछ का दोना

भावस्ती जैतयन में । |मिहमी ! भाउस सल्व<sup>ा</sup>। [उपर के ब्राह में दो और क्रोद दियं गयें हूं]। सिच्या ज्ञान पार्ट निकास विक्रिक्तिकार्ट ।

जिल्ह्यो।

कर्मपथ धर्ग सराप्त

# चौथा भाग

# चतुर्थ वर्ग

## ६१, चतुसुत्त (१३४१)

चार घातुये

थायस्ती जेतवन में।

भिक्षुओं ! धातु चार है । कोन से चार १ (१) पृथ्वीधातु, (२) आपो धातु, (३) तेजो धातु क्षोर

(४) वासुधातु ।

भिक्तुओ । यही चार धातु हैं।

s २. पुट्य सुत्त (१३,४.२)

पूर्वज्ञान, धातुओं के आस्वाद और दुणरिणाम

धावस्ती ।

ानार्याः सिक्षुमे । बुद्ध्य प्राप्त करने के पहले, गोधिस्तरन रहते ही, मेरे मन में यह हुआ —एर्गाधात् का आस्थाद चया है, आदिनन (= डोप ) ग्या है, आर नि सरण (= सुष्कि ) ग्या है ?

भिक्षुओं। तब, मेरे मन में यह हुआ—पृथ्वीभात से बी खुल और चैन होता है वह पृथ्वीभात का आस्वाद है। बी पृथ्वी में अनित्य, हु ल और विपरिणाम धर्म हैं वह पृथ्वीभात का आदिनव है। जो पृथ्वी में अनित्य, हु ल और विपरिणाम धर्म हैं वह पृथ्वीभात का अदिनव है। जो पृथ्वीभात के प्रति ग्रेन्ट्रिया की द्याना और हुदा देना है यही पृथ्वीभात का निसरण (= म्रक्ति) है।

जो आयोधातु.के प्रत्यवसे , जो तेजोधातु के प्रत्यव से , जो वायुधातु के प्रत्यव से ।

भिद्धभी जियतक इत पृथ्वीधातु के आस्त्राय, आदितव ओर नि सरण का ज्यासूत ज्ञान सुसे प्राप्त सही हुआ था, तब तक सैनो—देखताओं के साथ, प्रार के साथ, श्रद्धा के साथ—इत क्लोक में देवता, सहुप्त, ब्राह्मण और श्रमणों के बीच पृक्ता दावा नहीं किया कि सुझे अनुवार सम्बन्ध् सम्बद्धत्व भाव हुआ है।

भिक्षुओं । जब, इनका " शान प्राप्त हो गया, तभी मैंने ऐसा दावा किया " ।

गुझे ऐसा ज्ञान = दर्शन उसला हो बचा कि अपश्य ही मेरे चित्त की विद्युक्ति हो गई। पट्टी अन्तिम जन्म है, और अब पुनर्जन्म होने का नहीं।

## § ३. अचिरि सुत्त (१३ ४ ३)

घातुओं के आस्तारन में विचरण करना

श्रावस्ती '। मिहुलो । पूरवीधातु में आस्वाद हुंबते हुवे मैंने विचरण किया । पूरवीधातु का जो आस्वाद हे इंध वर्षे दक में पहुँच गया । 'यूपी धातु का जहाँ तक आस्थाद है मैंने महारे से देख किया | मिछुमा । यूप्पी पात में काटिनव ।

मिलुओ ] प्रविधाय के निःसरण को बूँदरा हुवे सैंशं विश्वरण किया 1 पूर्व्याचादु का जो जिल्लाम इ वहाँ तक में पहुँच गया । जिलसे प्रवीचातु का निःसरण होता है सैंसे प्रणा से संख् किया !

" [ इसी तरह आयोपातु वंडीशतु और वायुवातु के साथ भी ]

मिमुनो ! जबतक इन चार चातुसों के जास्ताद स्थादिनव धार निःसरण का स्वामूत जाव द्वरा प्राप्त नहीं हुआ था; तब तक मैंने ऐसा दावा नहीं किया कि सुसे सशुक्तर सम्बक् सम्बुद्धरा प्रस्त हुआ है।

मिम्रजा ! जक इका आन प्राप्त हो गया सभी ग्रीने पेसा दावा किया !!!

पुरित कार्यक्रमी अरुक हो तथा कि स्ववस्य ही मेरे विश्व की विद्यक्ति हो गई। यही अभिना अन्य हे स्टेर जब पुणकान्य होने का नहीं।

#### § ४ नो चेदंसच (१३४८)

भातुमा क यथार्थ जान से 🗊 मक्ति

भावस्ती

मिसुमी ! यदि पृष्वीकातु में आसीद वहीं कोला तो याली पृष्यीकातु में रक नहीं हाते ! मिसुमी ! वर्जीक पृष्वीचातु में आस्थाव है इसीक्रिये प्राणी पृष्वीचातु में रक क्षेत्रे हैं ।

भिमुनी ! पदि पुरुषीवानु में व्यक्तिव नहीं होते ती प्राणी पृथ्वीधातु से उच्यते नहीं । मिसूनी !

क्योंकि प्रवीवाद में व्यक्तिव हैं हुनीकिने शानी प्रवीवाद से उच्छ बादे हैं।

मित्रमा ! यदि प्रशीयात स निन्तरल (= सुक्ति ) नहीं होता सो मध्ये प्रशीयात म सुक नहीं होत । निद्धमा ! नहीं दि प्रशीयात स विकास होता है इसीकिने मध्ये प्रशीयात से सुद हो बाते हैं ।

[ इसी तरह आयोजानु तशोबानु और बानुबानु क साब भी ]

भिश्वभी । जब तक वृत्र कार पातुओं के आर्यवाद, कादिवक और निवारण का लगा यवासूत नहीं जान ऐसे हैं तक तक वे न्दान काक स नहीं ग्रामी हैं?" ।

सिगुजा | यह स्थान बुरुकी प्रधानन करते हैं तक के इस ओक स सुद्र आते हैं तकी विमुक्त किस स विदार करते हैं।

## र्ध प्रकास्य (१३ ४ ५)

पानुमाँ क प्रधास बात स मुक्ति

भारतमी ।

निहुनी ! परि इस्पान में दवन हुन हो हु न होता और सुन्न स दिस्क्र हुन्त हो प्रानी इस्पान में एक नहीं होने ! निहुन्त | क्वींदि दुर्गामानु में नृपा है हुन्य का न्याव है इसेन्टिं कारो इस्पान में एक दोने हैं

···[ हुगी तरह आवापातु, तत्रायातु श्रीर वायुपातु के साथ श्री ]

िर्मुणी १ वर्ष दश्यीचानु में देवल शुरा हो साथ होना मार्कीर द्वाल में दिव्हल ग्राम गा इश्योचानु में विरूक करों होने । लिसुनी १ वर्षोकि प्रश्यीचानु में दुश्य है सुन्य वा स्वतान है हमीनिवे बार्ची प्रश्योचानु में दिवल हात्रों हैं।

" [ इसी माद आरीवाएं, मेशपापु भार बामुबापु के माप धा ]

## § ६. अभिनन्दन सुत्त (१३ ४. ६)

## धातओं की चिरकि से ही दःच से मकि

थावस्ती ।

क

भिश्चओं। जो एध्यीधातुं से जानन्य बठाता हे वह हु ख का स्थागत करता है। जो हु:ख का स्थानन करता है। यह ट ख से सक नहीं हवा है—ऐसा में कहता हूँ।

··भाषोधात् ···, तेलोधातु · · , वास्रधातु ।

ख

भिक्षुओं । जो पृथ्वीधातु से विरक्त रहता है वह हु ख का स्वागत नहीं करना । जो दुःख का स्वागत नहीं करता है. वह ट ख में विश्वन, हो गया—पेगा में कहता हैं।

६ ७. उप्पाद सुच (१३. ४ ७)

धात-निरोध से ही प्रःस्त-निरोध

थावस्तीः ।

सिञ्जमो ! जो एटमीचातु का होना, रहना और त्य हो लाना है (= उरपाद, स्थिति, अभिनिर्श्वि), बढ़ हु.फ ही का प्राहुसीय है, रोग तथा जरामरण का ही होना और रहना है !

कारोधातु , सेजीधातु , वायुधातु । मिश्रुको ! जो पृथ्वीधातु का निरोध="युपतम=मस्त हो जाना है, वह दुख का ही निरोध है, रोग तथा नतमरण का ही स्थुवसम और अस्त हो जाना है ।

§ ८. पठम समणनाञ्चण सत्त (१३. ४, ८)

बार धातवें

थावस्ती

सिक्षुमी ! धातु चार हैं । कीन से चार ? पृथ्वीवातु, आपीधातु, तेजीधातु, वायुधातु ।

सिद्ध भी ! को असण वा आहण हन चार अूता के आसाद, आदिवय और दि सरण की यागञ्ज नहीं वानते हैं, न तो उन असणों में आसण्य है और न माहणों में माहण्य । वे आयुरमान असण या आसण के परमार्थ को हसी जन्म में स्वय जान साक्षाय कर और प्राप्त कर विहार नाहीं करते हैं।

भिश्रुमी ! जो वयामूत जानते हैं वे प्राप्त कर विद्वार करते हैं।

§ ९. दुतिय समामत्राह्मण सुत्त (१३ ४.९)

चार घातर्थे

श्रावस्ति ।

। जो प्रमण या प्राक्षण हुन चार धातुओं के समुद्रय, अस्तगम, आन्वाद, आदिशव, ति सरण को यथाभृत नहीं जानते हैं [ जपर के ऐसा ]। **६ १० तति**य समणमाद्मण सुप (१२ ४ १०)

चार धानुर्ये

भाषस्त्री ।

मिश्वमी | को समण था प्राक्कण पृथ्यीचातु के समुत्य को सही जागते हैं ; पृथ्यीचातु के विरोध

की महीं वागते हैं। इन्योयात की विरोधपासिनी प्रतिपदा को मही वागते हैं। अपोयात ; रोबोपात ; वाजुयात ।

सिद्धभी देशे आणते हैं।

चतुर्थं वर्गं समाप्त धानु-संयुक्त समाप्त

# तीसरा पश्चिछेद

# १४. अनयतम्म-संयुत्त

## प्रथम वर्ग

## § १. तिणकष्ट सुच (१४. ४. १)

संखार के बारमभंका पना नहीं, बास छकड़ी की उपमा

ऐसा मेंने युना ।

एक समय भगवान् आवस्ती में अनार्थापिएडक के आराम जेनसन में पिहार करते थे। वारों, मगवान ने भिक्षुओं को अमिन्द्रत क्यिं—है भिक्षुओ । "भड़क्त" कहतर शिक्षओं ने सगवान को उत्तर दिया।

भगाम गोष्टे—इस ससार का प्रास्थ्य (= आदि) निर्धासित गर्हा किया जा सकता है। अविद्या में पटे, तृष्णा के बस्बन से बंधे. चरुते-फिरसे नर्ग्या की पर्वकीटि अली गर्ही जासी।

भिञ्जुकी । जैसे, कोई पुरप सारे जागृडीय के चान, इकारी, दास्त्री को तोद कर एक बागह कमा कर ने, और बार-चार अगुडी भर के इन्हें करके कैंकता जाय—चर मेरी माता हुई, पह मेरी माता की माता हुई—मां यह माता का सिरानियज समाह मही होगा, किन्तु वह सारे जम्मूद्रीय के बाग, करूरी, टाकी और यसे नमाह हो जायें ।

मी क्यों ? निश्चली ! क्योंकि, इस समार का प्रारम्म निर्धारित नहीं किया का म्कता है। अविद्या में वहें सरवें की पूर्वकोटि जानी नहीं जाती।

भिक्षुओं । चिरकाल से हु पा, पीड़ा और अवर्थ हो रहे हैं, इसशान भरता जा रहा है।

भिश्वनो । अत तुम्हें नभी सहकारों से विरक्त हो जाना चाहिये, राग नहीं करना चाहिये, विसुक्त हो जाना चाहिये।

## § २. पठवी सुत्त (१४१ र र्

#### संसार के प्रारम्भ का पना नहीं, पृथ्वी की उपमा

धायस्ती ।

क्षिन्नुजो ! दूल बढ़ार का प्रारम्भ । निश्चमी ! केंसे, कोर्ट पुरुष वारी महाप्रभी को बेर के बरायर करके फेंक्स आय—पष्ट मेरा पिता, यह मेरे पिता का पिता—पो उसके पिता के पिता का क्षिक्तिका समास नहीं होगा. महाप्रभी समास

" कियर के पेसाी।

हो जायगी।

#### ६३ अस्ट्रह्मच (१४ १ ३)

संसार के प्रारम्भ का पता नहीं, ऑस्ट्र की उपमा

श्रावस्ती ।

भिक्षओं ! उस मनार का प्रारम्भ '।

भिभुषा ! क्या समझसे हो जो किरकारु से अनुमतः भरत अधिव क संबोध और धियम विवेध से रोवे हमें कोतों क अम्र अधिक गिरे हैं जह अधिक है या चारों महासमूत के कम्प !

सस्ते ! सगवान के घताचे धर्म का धैमा इस बानतं हैं। इसमें तो बड़ी पना वक्ता है कि को अभ गिरे हैं वही वारों सहाससङ के कब्स अधिक हैं।

मच है जिल्ला मच है। तमने महै बताये धम को डॉक स जान निया है।

मिश्रुको | चिरकाक में तुम माता की सम्यु पुत्र की सम्यु पुत्री की सम्यु परिवार के अनर्थ भीत की द्वारि और सेता के तुत्रस का अनुसब करते आ रहे हो । तो अन्न तिरे हैं बड़ी करिक हैं।

सो वर्गे ? सिश्लको ! इस संसार का पारश्त ।

सिद्धार्थः | भक्तः मुक्टू सभी संस्कारी से पिरण्ड हो प्राप्ता चारित्। साम नहीं करमा व्यक्तिः । विसन्द हो जाना चाहित्।

## § ४ सीर सच (१४ ° ८)

सेसार व्हां प्रारक्त्य का पता नहीं तथ की उपमा

मिश्रमी ! इस संसार का प्रारम्म "।

मिश्चनी ! तुम न्या समझते हो को विश्वनक में अनमते मरत रह सादा का कृप पीया प्रण है वह प्रथिक है या जारी महासमुद्र का जक ?

मान्ते ] सरावार के बताये वर्ष को बसा इस कामते हैं। ओं साता का कूप पीमा गया है वहीं पारों सहासदह के बन्द से अधिक है।

मच है मिश्लभी ! . [ उपर के ऐसा ]

## 8 **५ पन्त्रत्त सुत्त** (१४ १ ५)

करूप की वीर्घता

भावस्ती ।

त्तव कोई सिद्ध काँ समयान् ने वहाँ लागा धीर समबाद का असियादव कर पुत्र और मैठ गया। एक भीर बैठ वह निद्ध समयान् से जैका—अस्ते एक करन किराया वहा होता है ?

सिद्ध | करूप बहुत बड़ा होता है। उस्तमी मिनती नहीं की का सकती है कि इतने वर्ण मा इतने सी वर्ण मा इतने इतार वर्ण मा इतने काक वर्ण ।

मन्ते ! प्रपत्ना करके क्रम समझा का सकता है ?

भागवान् पोकि- उपमा करके हाँ कुछ समझा वा सकता है। सिद्धा किसे एक पोक्षय करना एक पोक्षय पीदा भीर एक पोक्षय ठीवा एक महान् पर्वत हो- दिव्युक दौरा किसमें कोई किस भी न हो। वसे कोई दुक्तर सी-नी वर्ष के बाद काहात्री के रोक्षम से परू-पुक बार पोंडे। सिद्धानो ! इस प्रकार वह पर्वत सीम ही समझ हो वाच्या किस्तु एक कब्द जी वहीं पुरुषे पावारा !

मिझ् । एक ऐसा वीर्व होता है । ऐसं काकों करप श्रीत अते ।

सी पर्यो १ क्योंकि संसार का धारम्म ।

## ९६. सासप सुत्त (१४. १ ६)

#### कल्प की दीर्घता

श्राचस्ती ' ।

एक और चैट, वह भिक्ष भगवान से बोला-भन्ते ! कल्प कितना बढ़ा होता हे ?

• भगवान् वोले—चाँ, उपसा को जा सकती है। भिक्षु! जैसे, छोडे से विषा एक नगर हो— बोजन भर छन्ना, योजन भर चोना, योजन भर केंचा—चो थोप-योप कर सरसा से भर दिया गया हो। कोई पुरुष उससे पुरुषक सो वर्ष के बाद एक-एक सरसा निकाल छै। भिछु! तो, इस प्रकार वह सरसा की बेर तीच ही समास हो जायगी किन्तु एक कहर नहीं पुरुने पायगा।

•[ क्षपर के ऐसा ] ।

## s ६, सावक सुत्त (१४, १.७)

#### चीते हुए करूप अगण्य है

आवस्ती ।

त्तव, कुछ भिक्षु जहाँ भगवान् थे वहाँ आये जीर भगवान् का अभिवादन करके एक और बैठ नये। एक और बैठ वह भिक्षु अगवान् से बोले—अन्त ! अभी तक कितने करण पीत चुके है ?

" भन्ते । क्या उपमा करके कुछ समझा जा सकता है ?

भगवान् चोले—हाँ, उपसा की जा सकती हैं। मिश्रुको । सी वर्षों की आयुवाले चार प्रावक हाँ। वे प्रतिदिन एक एक लाख परपा का सरण करें। मिश्रुको । वे वेवल करपा का सरण ही करते आयें। तब, सी वर्ष की आयु समाह होने पर वे चारों मर जायें।

इस प्रकार, अधिक करन बीत गये हैं। उनकी गिनती नहीं की जा सकती है।

[ कपर के पेसा ]

#### ६८, गर्जा सत्त (१४ १ ८)

#### बीते हुए करूप अगण्य है

राजगृह वेळुवन मे।

प्रक ओर बैठ, वह बाह्यण समयाज्ञ से योच्या, है गीतमा । अभी सक कितने करण बोल खुके हैं ? भगवाज बोके — हॉ बाह्यण । उपमा की जा सकती है। ब्राह्मण । जैसे, जहाँ से गङ्गा नदी निकक्ती है और अर्हे समुद्र में गिरती है उसके बीच में कितने बाह्यकण हैं। बनकी गिनती जहीं की जा सकती हैं

याद्मण ! हतने अधिक करप बांस चुके हैं। उनकी गिनसी नहीं की जा सकती हैं।

सो क्या १ मासण ! क्योंकि इस ससार का प्रारम्म विश्वित महीं किया जा सकता है। विश्वसा में पड़े, तृष्णा के बन्धन में वें चे, जीते मरते सत्यों की पूर्वकोटि जानी नहीं जाती।

शास्त्रण ! इतने चिरकारु से टु ख, पीढ़ा और चिपत्ति का अनुभव हो रहा है, इमशान सरता जा रहा है। शास्त्रण ! जत , सभी सरकार्य से चिरक रहना चाहिंगे, विशुक्त हो जाना चाहिये ।

पेसा कहने पर वह माक्षण भगवान् से बोला —हे गीतम ! आप घट्य हैं ! आज से जन्म भर के लिये मुझे अपना शरणागत उपासक स्वीकार करें ।

#### ९ दण्ड सभा (१४ १ ९)

#### ससार के प्रारम्भ का पता नहीं

भाषस्ति ।

मिक्समा ! इस संसार का पारस्थ पिकिस नहीं । ।

मिशुना | बसे कपर फेंडी गई काडी जपन ही कमी तो सूक से कमी सम्बास सी सीर कमी बम मान से गिर पहारी हैं। वैसे ही शक्तिया में पड़े मुख्या के दल्यन में बैंचे बारि मरते सत्त्व कमी तो इस बोक से उस कोक में पहारी है जीर कमी इस बोक से इस बोक में |

सो क्यों ? शिक्षुत्री ! अतः सभी संस्कारों स बिरक रहवा चाहिये, बिमुक हो बागा चाहिये !

**४ १० पुरगल सुत्त** (१८ १ १०)

#### संसार के प्रारम्भ का पता नहीं

राजगृह में शुद्धकृष्ट पत्रव पर ।

'मिश्रुओ ! इस सक्तार का मारस्म निक्षित नहीं । मिश्रुओ ! कस्प मर सिव-मिश्र बोनि में पंत होनेक्क एक ही पुरुष की बहुवाँ कहीं एक कमाइ हकड़ी की कार्यें—और वह नट नहीं हों—की बक्की हैर क्षेत्रक पर्यंत के समान हो बाव।

सी क्यों ? शिक्षुमा | यतः सभी संस्कारों से विरक्त रहता वाहिये विशुक्त हो जाना वाहिये। भगवान पह योख । हतना कहकर शह किर भी बोखे —

> एक पुरुष तो पहाच-ता यक है। कात काय सहाँ में ऐसा कहा— की कहा सा की हिन्दों पदि जसा की जायें। बेसा वह सहाण बेपुछ पर्यंत हैं पूबकूर के दक्षर सामने का गिरियन म जा आदेतारों को सम्बद्ध शहा से देख केता ह हु-ख हु-तसमुद्ध दु-ख का बन्त कर देगा सार्थ कहारिक सार्थ दिल्ली हु-य से मुक्ति होगी हैं सर्थिक स अधिक सार्थ यह समस्म केकर दु-खीं का अन्य कर देगा है

> > क्षांत्र धर्म स्टबाहर ।

## द्वितीय वर्ग

## § १. दूग्यत सुत्त (१४ २. १)

इ.सी के प्रति सदानुभृति फरना

श्रायस्ती'''।

• भिक्षओ ! इस स्थार का प्रारम्भ''' !

भिक्षुको। चिद्र किसी को अन्यन्त हुर्गति में पहें देनो तो सोची-इस टीर्घशक में हमने भी कभी न कभी इन अवश्वा को भी ब्रास कर लिया होता।

मो क्या ? विमुक्त हो जाना चाहिये।

६ २. सखित सच (१४ २ २ २)

सर्धा के प्रति सहात्रभृति करना

श्रावस्तीः ।

भिक्षत्रो । इस समार का आरम्भ ''।

भिष्नुओं। यदि किसी को एव वृत्य करते हेटो तो साँची—इस दीर्थकाल में हमने भी कभी न कभी इस सुद्रा को भोगा द्वोगा।

स्रो पर्या १ • विशुक्त हो जाना चारिये।

## ६ ३. विंसित सच (१४ २ ३)

आदि का पता नहीं, समुद्रों के जल से खून ही अधिक

राजगृर चेखुवन मं

त्तव, पाया के रहने वाले तीस सिक्ष सवी आरण्यक, सभी पिण्डयतिक, सभी पासुकृष्टिक, सभी तीन ही चीवर धारण करने वाले, सभी सपीअत ( =वन्धन) में पड़े हुए ही—जहाँ भगवान थे वहाँ भाषे, भीर भगवान का अभिवादन कर एक और बैठ गये।

तव, भगवान् के मन से यह हुआ —वे "भिक्षु सभी सथोजन में पढ़े हुये ही है। तो, मै इन्हें ऐसा धर्मापटेस हैं कि इसी आसन पर बैठे-बैठे इनका चित्त आधर्वों में विमुद्ध और उपाटान-रिहत हो जाय !

तव, भगवान् ने भिक्षुओं को आमन्त्रित किया—हे भिक्षुओ !

"भवन्स !" कह कर मिश्रुकों ने भगवान् को उत्तर दिया ।

भगवान् योष्टे —सिक्षुओ ! ससार का प्रारम्भ विश्वित नहीं किया का सकता है। अविधा भ पष्टे, तृष्णा के बन्धन में बेंधे, बीते मरते सत्वों की पूर्वकोटि जानी नहीं बाती ।

मिश्रुको ! क्या समझते हो, जो चिरकाल से जीते सरते लोगों के शिर कटने से खून यहा है यह अधिक है या चारों महासश्रुट का जल १

## ९ दण्ड सुच (१४ १ ५)

कसार के प्रारक्ष्य का पता नहीं

भावस्ती ।

मिछुणा ! इस संयार का प्रारम्भ निधित नहीं ।" ।

णियुका । जयं उपर केंदी गई जारी जयता ही कभी तो मूल स्न, कभी मध्य सा और कमी अग्र भाग से गिर पदती इं। धैन ही अविधा में पढ़ मुख्या क जन्मन में धैंपे जीत महते साद कमी तो इस काम सा सा कोक में पदन हैं आर कभी उस लाइ सा इस लाइ में ।

सी क्यों ? सिधुनी ! अतः सभी सन्दारों हा बिरण्ड रहना चाहिये, बिमुन्ड हो ताना चाहिन !

है १० पुग्गल सुत्त (१८ १ १०)

संसार के प्रारक्ष्य का प्रशा नहीं

रामग्रह में ग्रहकृष्ट वनत पर ।

निहासी ! इस समार का आरम्म विश्वित गरीं । शिहासी ! करन घर मिस-सिस वानि में पैदा हानेवाले एक ही जुग्य की हड़ियों कही एक बनाह इक्ही की बार्ये—स्टर वह नष्ट नहीं हों—सी वनकी देर स्पृत्त पर्वत क समाय हा जाय।

सी क्यों १. भिश्चमा ! जतः सभी संस्कृति स विरक्त रहना चाहिये विद्युक्त हो सामा बाहियः। भगवान वह चोसः। हमना कड़कर पुद्र फिर भी वोक ---

एक पुरुष तो पहाड़ सा एक है। कम आप महर्षि में एमा कहा— की कपन भर की बहिन्दों पदि जमा की जातें। कसा यह महान सेपुछ पर्यंत हैं मृद्धपुर के क्यार मामनें का गिरित्यज्ञ । जा आप्रेसरामी को मानक महा पर एक करा है दुःख दुःमसमुद्ध पुरुष का मन्त्र कर गा सार्थ अप्रियेश माम जिसार हु जा में मुक्ति हाती हैं कपिक से लिक्कि सारा बार जन्म क्षेत्रर दुःखों का मन्त्र कर देशा है

प्रथम को स्वस्ता ।

भिक्षओ । बहत ही पूर्वकाल में इस वेपुरल पर्वत का नाम वंकक पड़ा था । उस समय मनुष्य रोहितस्स कहे जाते थे । आयुगमाण सीम हजार वर्षों का था। वे रोहितस्य मनुष्य वकक पर्वत पर तीन दिनों में चढ़ते थे ओर तीन दिनों में उत्तरते थे।

भगवान् कोणागमन । सिरुयो और सुत्तर नाम के टी अग्रशावक ।।

विमुक्त हो जाना चाहिये।

× · पर्वत का सुपस्स नाम पक्षाथा। मनुष्य सुष्पिय कहे जाते थे। वीस हकार वर्षी का आसुप्रमाण '। 'दो दिन में चढ़ते थे'।

भगवान काश्यम । "तिस्त और भारहाज नाम के वो अग्रशायक थे।

बिस ह हो जाना चाहिये।

भिश्रभो । इस समय इस पर्वत का नाम बेयुक्त पड़ा है। ये मनुष्य मागध कहे जाते हैं। निश्चकी । मागाय मनुष्यों का आयुप्रमाण यहत घटकर कम हो गया है। जो बहुत जीता है वह सी क्षर्य ताम के कात कम या अधिक भी जीता है। मागध मनव्य बेयुएल पर्वत पर अवर काल ही में चढ जाते हैं और उत्तर भी आते है।

भिक्षको । इस समय, अर्हत सम्बद्ध सम्बद्ध में ही कोक में उत्पन्न हुआ हूँ। मेरे सारिएन

भीर मौद्रगाल्यायन हो अवश्रायक हैं।

सिक्षको । एक समय अधिगा कि इस पर्वत का यह नाम छुछ हो जायगा । ये मनुष्प भी मर जार्थेंगे । मैं भी परिनिर्धाण को ब्राह्म हो जार्कींगा ।

भिश्रुओ ! सस्कार इतने अनित्य हैं, अध्रुष हैं, चळायमान है । भिश्रुओ ! अत सभी सस्कारों से विरक्त रहना चाहिये, विमक्त हो जाना चाहिये।

भगवान यह थीले । यह कहकर बुद्ध फिर भी धीले-

पाचीनवद्म तिवराका, रोहिलींका वकक, सुष्पियों का सुपस्ल, और मागधीं का वेपुस्ल ॥ सभी सस्कार अनित्य हैं, उत्पन्न और न्यय होनेवाछे. उरपन होकर निरुद्ध हो जाते हैं, उनका शान्त हो जाना ही सुख है ॥

> द्वितीय वर्ग समाप्त अवमतग्ग-संयुक्त समाप्त ।

मन्ते । भगवान के बताये धर्म को बैसा इस कातते हैं। बससे तो बडी, मालम होता है कि खम ही समित्र करा है।

सब है भिक्षणों सब है। तम मेरे अपनेस किये गर्ने क्रमें को ठीक से बावते हो । मिल्ला ! चिरकाक से नीवों के किर करने से की चन बहा है वह चारों समूत्र के चक से

सरिक है।

"भैंस : भेंका : बक्की : सूत्र अक्कार : सूत्रर ी खाउँ में की को गीं के सिर कार कर सन बहाया है ... । क्रियाकों न ...

सी क्यों १ विमुख हो अला शाहिये।

भगवान् यह बोखे । सिद्धार्को न संश्रह शत से शराबाम् के कप्त का व्यक्तिनन्दव किया ।

इस उपनेश के दिये काने पर उन पाका के शीश शिक्षाओं का किस विमुक्त हो गया उपादान रहित हो सपा:

## **९ ४ माता स्**च (१४ २ ४)

माता न इद सत्ब बसम्भव

भावस्ती ।

मिश्रमी ! इस संसार का प्रायस्य ।

सिक्षणी ! पैसा कोई साथ 'सिकंग सुविश्व है भी जिएकाक में कभी न कभी शादा न रह लका हो।

सो क्यों ? विमुक्त ही बाना वाहिये।

ई ५-९ पिशा सचा (१४ २ ५-९)

विवा न इप सत्य शसम्भव

वा चिरकार में कभी न कभी पिता भाई बहन बेटा बेटी '।

६ १० वेपक्लपञ्चत सच (१४ २ १०)

पेपस्ट पर्वत की प्राचीनता सभी संस्कार मनित्य हैं

राज्ञपृह में शुक्कार पर्वत पर ।

मगवान् वोके-मिहामी | इस संबाद का जारका "। विद्यानी ! वहल ही पूर्वकार में इस घेपुस्स पर्वत का नाम पाचीनपैदा पत्रा था। वस समय अनुस्त लियर क्ये बारे थे। इन तिवर मनुष्यं का कापुत्रमाना कालीस हजार वर्षों शक का था। मिश्रुको । वे तिवर सकुष्य पार्थानवंस पर्वेट घर कार दिनों में चरते थे और कार दिनों में बीच असरते थे !

निश्चमा ! यस समय बर्डन् सम्पन् सम्पन् अनुकृत्र अगुवाकु अनुन्तान्छ कोक में वापक्ष हुने से । वार्तने

पिपुर और संजीय नाम के शे अप्रवासक थे।

×

मिलुओं ! देली इस पर्वत का वह नाम सूत्र हो गवा । वे अनुष्य सभी के सभी पतम हो गवे ! वे भगवान् भी वरिनिशीक का जास हुने ।

मिमुओ ! मंद्रकार इतने अभिन्त हैं अध्या हैं 'वकावसान हैं । निभूती ! अता सभी संस्थारी से बिरण रहवा काहिये विमुक्त हा बाला काहिये । ×

×

मिश्रुओ ! बहुन ही पूर्वकाल में रूप येपुरण पर्यंत का नाम बक्क्स पड़ा था । उस समय महाण्य रोहितस्स कहें जाते थे ! आयुक्ताण सीम हजार वर्षों का था ! वे रोशितस्स मनुष्य वरुक पर्यंत पर तीन दिनों से पहले थे और होन दिनों में उत्तरते थे ।

''भगवान कोणागमन' । 'भिरुषो ओर स्नुत्तर नाम वें हो अग्रधावक ' ।

• विमुक्त हो जला पाहिये। ४

×

''प्यंत का अपुयस्ता नाम पदाया। मनुष्य सुन्धिय करें जाते थे। यीम हजार पर्पे का अपुरमाण '। 'डो डिज में पड़तें 'धे।

'भगवान काइयप । 'तिसम और मारहाज नाम के हो अप्रधायक थे।

· विमुक्त हो जाना चाहिये।

\_

भिञ्जभो । एस समय इल पर्यंत का जाम बेयुर्छ पदा है। ये मजुष्य माराध कहे जाते है। भिञ्जभो । माराभ मजुष्यं का भायुत्रमाण यहुत घटकर कम हो गया है। जो यहुत जीता है यह सी पर्यं, उसके कुछ कम पा अधिक भी ओता है। सामघ मजुष्य बेयुष्य पर्यंत पर कार काल ही से यह जाते हैं और उत्तर भी कार्त है।

भिष्ठुजो [इस समय, अर्रस सम्यक् सम्द्रुव में ती लोक में दरपत्र हुआ हूँ। मेरे सारिपुत्र जीन मोदनस्थायन को अन्नश्रापक है।

भिक्षणी । एक समय आयेगा कि इन पर्वत का यह नाम लुझ हो जावगा । ये असुष्य भी मर जायेंगे। में भी परिनिर्वाण को प्राप्त हो जार्कगा ।

सिक्षुओं। मस्कार देवने भनित्व है, अधुव हैं, चलावमान है। भिक्षुओं। अत सभी संस्कारों से विरक्त रहना चाहिने, पिछुक हो जाना चाहिने।

भगयान् यह घोले । यह कहकर ब्रद्ध फिर भी घोले—

पाचीनवश सिपरंका, रोहितांका वकक, दुष्पियों का सुपस्त, जार मागधां का बेयुक्ल ॥ सभी सन्कार अगिरव हैं, उपक्र जीर व्यव होसेवाले, उपक्ष होक मिरह हो वाले हैं, उनका शान्त हो जाता ही सख है ॥

> द्वितीय वर्ग समाप्त अनमतग्ग-संयुक्त समाप्त ।

# चौथा परिच्छेद

# १५ काञ्चप-संयुत्त

## **११ सन्तद्व सुच (१५ १)**

प्राप्त चीवर आदि से सम्प्रद रहना

भावस्ति ।

मिसुनो ! काइयप फैसे ऐसे चीवर से संतुष्ट रहता है। भैमें ऐसे चीवर से संतुष्ट रहवे की मर्साता करता है। चीवर के क्लिके अनुस्तिक अन्येषण में नहीं करता है। चीवर नहीं मास होने से लिख वहीं होता है, और मिकने से विमा बहुत कक्षणोध्यक्तियोर हुप्ये=श्लोक किये वसके आदिवय (= दोष) को देखते करें मिक की माता के समय वस चीवर का भोग करता है।

निक्काभी (कास्त्रप जैसे वैसे पिण्डपात 😗 पार्श्वासन 🤙 स्काम परवय सपरव-परित्यार से' !

सिद्धारी | इसकिये तुन्हें भी ऐसा ही सर्थियन वाहियो — वैसे मैसे वीवर से संतुष्ट रहुँगा। " सनुष्ट रहते की प्रसंता करूँगा। चीवर के किये अनुस्थित कालेयन हैं। नहीं कार्युगा। हुन्ति की प्रशंत के साथ दस चीवर का ओग करूँगा। विज्ञयास । स्वनासव । 'गकान प्रस्व ! निश्चकी ! तुन्हें ऐसा ही सिक्कान चाहिये।

मिद्धानी | कारूपन जयवा उसी के समान किसी दूसरे का दिकाचन तुन्हें उपदेस करूँगा । उपनेक पातन तर्ने ठीक देसा हो वर्तमा जाहिये ।

## ६२ अनोत्तापी सुत्त (१५ २)

भातापी भीर भोचापी को ही जान-प्राप्ति

पेसार्में सुनाः

एक समय आयुष्पान् महाकाइयप और आयुष्पान् सारियुच वारावसी के पास ऋषिपतन सगराप में विता करते थे।

तत आयुष्मान् सारिपुत्र साँस को ज्यान से दढ वहाँ आयुष्मान् सद्दाकास्थर ये वहाँ गवे जीर

कुछक-द्रोत के प्रध्य पुक्रकर पृष्ठ जोर वैद गये ।

्क भीर चैठ आधुन्मान् सारिश्वन बाबुध्यान् प्रहास्त्रहच्य से बोके — बाबुध्य करवचन । वह क्याँ बाता है कि बनातारी (= को अपने कहेती को नहीं तथाता है) और जानेचारी (= को नकेसी के बचने पर साच्यान नहीं रहता है) परम-बाल विवांत जनुन्यर सोराक्षेत्र को नहीं पर सच्छा है। बातारी बीर कोचारी ही परम-बाल को पा सकता है।

भ्यवस ! यह कीने १

#### 弔

आयुगः [ निष्ठु अयुग्यम पाप अकुसक वार्ती क्षप्यका होकर अवर्थ करेंगे इसके किये आराज्य नहीं करता है। उत्पन्न पाप अकुसक वार्ती सहीय नहीं होने में अवर्थ करेंगे इसके किये आराज्य वहीं करता है । मेरे शतुष्यत पूजार धर्म उत्पन्न नहीं होने से अनर्थ परेंगे, हमके लिये आताप नहीं सरता है । मेरे उत्पन्न कुराल धर्म नए होने हुये अनर्थ करेंगे, इसके लिये आताप नहीं करता है ।

आयुम । इस प्रशार यह अनातायी होता है।

#### स्व

अञ्चल । केले कोई अनोत्तापी होता है ?

भाषुतः ! भिक्ष, अञ्चापा पाप अकृताल धर्म जापल होकर अनर्थ करेंगे, इसके क्षिये उत्ताप नई। करता हा ! ! क्षिपर के ग्रेमा ]

आहुत ! हम तरह, अवातापी और अनीचार्या परम-ज्ञान, निर्वाण, अनुत्तर योगश्लेम की नहीं पा मकतार्थ।

#### ग-ध

डिल टाकरके र

ृ बलदा करक । आयुम । इम नस्ह, आतापी और औत्तापी ही परमन्त्रान 'को पा मकता है।

## § ३. चन्दोपम सुत्त (१५ ३)

#### चाँद की तरह कुली में जाना

थ्राचस्ती ः।

मिक्षुओं । चाँद की नरक कुछों में जाओं । अपने शरीर और चित्त को समेरे, सबा नये अनजान के ऐसा, अमरारभ रचे ।

भिक्षुओं। तैन कांद्रे पुरुष पुराने कुयें, तीरड़ पर्यंत, प्रतरनाक मन्नी की देखकर अपने द्वारीर और सन को मनेटे रहता है, बैसे ही भिक्षुओं। बाँड की तरह कुळो के आओ। अपने द्वारीर और बिक्त की मनेटे, नया नये अनजान के ऐसा, अमगदन हुए।

भिक्षुश्री ! काक्ष्यप कुलों से चाँड की तरह जाता है

× × ×

भिक्षुष्रो । तुम क्या समझते हो, कैया भिक्षु कुकां में जाये के छायक है ? भन्ते । भर्म के आधार भगवान् ही है, धर्म के बायक और आध्यय भगवान् ही है। बच्छा हो कि भगवान् ही दुस कहें गये का अर्थ बताते । भगवान् से सुवकर भिक्षु चारण करेंगे ।

तप, भगवान् ने आकाश में हाथ फेरा । निश्चओं। जैसे, यह हाथ आकाश से नहीं समता है, नहीं फेंसता हैं = नहीं चासता है, बैसे ही जिब्द निश्च का वित्त कुछों में आवस भी नहीं कराता = नहीं फेंसता = नहीं चहता है। जो लाभकासी है वे लाभ करें, जो कुणवकासी है वे तुपद करें। जैसे अपने जाम से सन्तृष्ट और तमला होता है, वेसे ही दूसरों के 1भी लाम से। मिल्लुओं। ऐसा ही निश्च क्रांते

में जाने के लायक हैं । मिश्रुको ! काश्यक का चित्र कुछों से जाने पर गईी लगता है≔नहीं फैंसता है≔नहीं वहता है ।

म् म् भिक्षुको । तुम क्या समझते हो, किस मिश्रु की धर्मेंग्रेशना अपरिशुद्ध होती है, और किस भिक्ष की परिशुद्ध ? भगवान् सं शुनकर शिक्ष धारण करेंगे ।

मरवाज् वोले:--शिशुमी ! को शिशु अन में पैसा वन्तृक पर्तरेशवा वरता है-जहां ! कोग मरी पर्तरेशना को सुने सुनकर प्रसन्न हो, चीर ग्रसन्न होकर मेरे सामने व्यवशे ग्रस्कात दिवायें--

बमकी धमक्समा अपरिश्रह होती है।

मिनुमी । जो जिलु सन में पैया करक पर्श्ववाना करवा है—समवान का पर्म स्वास्थात है, सांत्रिक है पर्शासिक है मार है निवाल को से आनेवाका है निवाल के बार अपने सीतर ही सीतर जानने के पोस्प है। जहां ! क्रांग मेरी करोत्रिका की सुन्ते, सुपकर पर्म की बार्ने, आवकर उसका जस्मार करें। एस वह विकार रिति से दूसरों को वर्म कहता है। कहना से व्यासे अनुक्रमा से दूसरों की वर्म कहना है। निवाली। इस सजार के सिन्नु की वर्मनेवाना परिक्रय दोत्री है।

मिहामी ! कारवण ऐसे श्री चिक्त से वर्शनेसवा करता है ।

मिसुभी ! वैसा श्री तुन्हें भी वर्तना चाहिये !

#### § ४ कलपग सच (१५ ४)

#### क्रसॉ में जान चोग्प मिश्र

भाषस्ति १

मिल्लुनो ! तो क्यासमझते हो कमा लिल्लुकुकों में बात के पोरव है आर कैशामिल्लुनहीं ! मिल्लुमो ! को मिल्लुकम किल से करते में बाता है—सने दे ती पेसा तर्जी कि पूरी वहते

ामहामा! चानिश्च इत्याचिक्त संक्रमाश्च कारा है—हात देवी पीरा नहीं कि यदै, चड्डिय य, पादा पर्दी, पित्रेचा दी दे परिचा नदीं, योग्न दूरे ये येरण क्याचे, सरकारद्वेंक दी दे जिला सरकार के नहीं।

मिलुओं 🤨 पनि अस नहीं नते हैं भोषा वेते हैं "तो उसे बदा हु स होता है वेसेनी होती है।

भिशुमी। वह मिल्लु कृत्यों में बाने के बोध्य वहीं है।

शिमुमी ! वहि बमे नहीं देत हैं योदा नेते हैं तो उसे तुःय नहीं होता है।

मिलुनी ! बद सिलु कुकी में बाने के बोध्व है।

मिशुमा ! काइयप कुनों में इसी चित्र से जाता है । उस हुन्त नहीं होता है।

मिश्रुणी ! येथा ही तुरहें भी वर्तना काहित !

#### डु५ बिण्ण शुत्त (१५ ५)

#### भारण्यक होते के स्टास

राजगृह यस्त्रम में "।

ण्या और वैक्षे आनुष्पान् यहायादियां से जानवंद बीकें:---कादवर्ष ! तुम बहुत यहे हो तारे हो यह जना बांगुहरु हार्षे कहात व साम होगा । इस्तिकं तुम गुरुव्यों के विशे वर्षे कोवर को पहसी निमन्त्रण के शासन का आग कर और हैंद पास हता ।

पने । भी बहुत काल या जारणक हैं और आरणक काले की अशंता करता हैं। विकासीतक "। वीतुर कि "। तात चीवरों को चारण करतेवामा । अस्तरधा"। मंतृष्ट"। व्यात्मवासी"। अर्थपुर वासाक्षीकः।

कारणप ! किंग उद्देश्य से तुम बहुत काल स्ट आरण्यक हो। और आरण्यक रहते की बर्रामा करत हो। "

भारते ! या प्रदेश्य श । क्या शो नवर्ष हुन करना में शुरूपुत्रक विदार करते के किये। और बुनरे

भविष्य में होनेवाली जनता के प्रति अनुकम्पा करके, कि कही वे अस में न पष्ट झार्ये |---जो बुद्ध के आवक ये वे यहुत काल से आरण्यक थे । पिण्डपातिक थे उत्प्ताहृद्दाशि थे '---ऐसा जान वे भी उपित सार्ग पर आर्थेंगे जिससे उनका चिरकाल तक हित और खुल होगा।

भन्ते । इन्हीं दो उद्देश्यों से ।

ठीक है, काइयप ठोक है। तुम बहुतों के द्वित के लिये, बहुतों के सुरा के लिये, लीक पर अनुकम्पा करने के लिये, टेव और समुद्धों के परमार्थ के लिये, द्वित के लिये, और सुल के लिये ऐसा कर रहे हो।

काइयद । सी, तुम रूपी पासुकूछ चीवर धारण करो, पिण्डपात के लिये चरो, आरण्य में रही।

## § ६. परम ओवाद सत्त (१५.६)

## धर्मीपदेश सुनने के लिए अयोग्य भिश्न

राजग्रह बेखबन में ।

एक और बैठे हुन्ने आधुनमाल महाकाइयप को अगवान योहें — काइयप ! निश्चओं को उपदेश हो। काइयप ! शिश्चओं को धर्मोपटेश करो। चाहे इस या तुस सिश्चओं को उपटेश हैं, धर्मोपटेश करें।

भन्ते। इस समय निश्च उपयेश ग्रहण करने के योग्य नहीं हैं, इस समय उन्हें उपयेश देशा कींक नहीं। उपदेश को वे स्पीकार और सरकार नहीं करेंगे। भन्ते। इस समय मेंने आत्मह के अनुबर निश्च भण्ड और अनुबद्ध के अनुबर निश्च अधिकड़क्क को आपस में कहते सुना है—सिश्च 19 डेंजें, कींन बहुत योखता है, कीन पश्चिम बोक्सा के कींन अधिक केंद्र तक बोकता है?

तव, अनवान, ने किसी शिक्षु को आसन्त्रित किया—है मिश्रु ! सुनी, सेरी ओर से जाकर '' मिश्रु सण्ड, और अञ्जितक को कही कि ''बुद्ध जायुद्धानों को बुक्त रहे हैं'।

''भन्ते । बहुत अच्छा' कह, वह भिक्षु अगवाल् को उत्तर दे जहाँ वे भिक्षु ये वहाँ गया, और वोका—शुद्ध माधुष्मानी को छुळा रहे हैं।

बोला—बुद्ध काप्रुप्तानों को दुला रहें हैं। ''अलुद्ध ! बहुत अरुश' कह, वे उस शिक्ष को उत्तर ने जहाँ सगधान् में बहाँ गये, और सगबान् का भनिवायन कर एक और हैट गये।

एक ओर बेंटे हुने वन विश्वामा से समयाल बोळे — विश्वामी । बचा यह सच है कि ग्रुम आपस में ऐसी बातें कर रहे थे कि, 'टेखें । श्रीन बहुत बोळता है, श्रीन वदिया बोळता है, श्रीन अधिक डेर सक बोळता है।'

हाँ भन्ते ।

मिक्षुको । क्या मैने तुम्हे ऐसा धर्म सिखाया है, कि तुम भिक्षुओ । धापस में ऐसी बातें फरो कीन अधिक टेर तक घोछता है ?

नहीं भन्ते !

मिक्कुली ! जब सुम जानते हो कि सैंने ऐसा पर्मा नहीं बताया है, तो तुम निकम्मे आदमी क्या जानवृक्त इस स्वाय्यात धर्मियेनय में प्रजलित होकर ऐसी बातें करते हो ' कीन अधिक टेर तक बोहता है'?

तक्ष, वे भिद्ध मगवान् के चाणो पर किर टेककर बोले—शाल, सून, पार्या के जैसा हमलोगों ने यह अपराध किया है, कि इस स्वाख्यात धर्मधिनय में प्रवश्चित होकर ऐसी वालें कर रहे थे । भन्ते ¦ भविष्य में ऐसा अपराध न होगा, कृषचा सगवान् क्षमान्यदान करें।

मिल्लुसो । बच तुम अपना डोप समझकर स्वीकार करते हो, तो में क्षमा कर देता हूँ।

सिक्षमां ! इस काम जिल्लामां यह कृति ही हो जो अपन सीप को जानकर स्वीकार कर सेवा है और मिदान में किर पेसान करने की सिक्का छेटा है।

## § ७ दुतिय ओवाद सुन (१५ ७)

#### घर्मीपदेश सनने के सिप अयोग्य शिक्ष

राजगृह चेल्यन में "।

पुरू और वैठ हुन आयुक्ताच् सहाकाद्यय झ सगवान् कोक—काद्रप ! सिद्धमीं हो ठपरंग्र सः ।

भन्ते ! इस समय मिछ्न वपदेश प्रदूष इतन के योग्य नहीं । भन्ते ! जिस किसी को इसक धर्मों में अदा नहीं दें! अध्यक्षपा बीर्य प्रजा नहीं है। रात दिन कुनक धर्मों में बनमें भवनति हो दोनी बन्दी है उचनि कहीं।

भारते | पुत्रव कामबाह्य होके यह परिहासि है, कही के वावतपा-रहित काहिक हुन्धक काबी " वैदि यह परिहासि ही है | अस्ते | अपनेता वेबेक्स स्मित्स भी नहीं हो यह परिहासि है |

मन्ते ! जिन पुरुष को श्रद्धा ही अस्तवया चीर्थ प्रशासुनक चर्नी में हैं, उनकी दिन राठ कारक कर्मी के बिकि डी कोली है परिवासि नहीं।

भन्ते ! मेंसे मुद्धारक्ष का को चाँद है बहु राख-दिन वर्ज क्योगा न्यामा आर जारीहपरिनाह से

बरता हो बाता है। अन्ते ! वैसे ही जिसे शका हैं।

सम्मे । पुरुष अद्यास होच यह अपरिदानि है होक ; अपवापमुक्त ; उपसाहसीस । प्रकाशाम् । क्रीय-रहिता । क्रि-रहिता यह अपरिदानि है। उपक्स दनेवाके मिछु ही वह मी अपरिदानि है।

टीक है, काइयप डीक है !

कारवर्ष । वेंस कृष्ण-पश्च का वाँद शता-दिन वर्ण संदीय शता वाता दे वस दी जिल कृषण धर्मी में भद्रा नहीं दे दो नहीं के अव्या नहीं दे, उसे दिन-शन कुशान धर्मी में परिदायि दी दोनी है विकासी

[ कारवय क क्यें गर्व की पुनरायृत्ति ]

इ ८ त्रविय ओवाद सुत्त (१५८)

धर्मीपद्दा सुनन क किए भवाग्य मिश्रु

राजपुद्द वसूयन में ।

मानी ! इस समय मिल्ल प्रश्तेश ग्रहण करन के बाध्य वहीं ।

स्वाइरण को भी प्रवास में क्यांवर मिशु आरण्यक थे और आरण्यक होन के सरीसक ! " रिण्डसानिक | परंमुद्दकिक । को आ मृत्ये सिशु हात थे उन्हीं को द्यविद धर्मासन पर निसम्बद्ध सरते के—सिशु जी आर्थे कोण कृतना भन्न और शिक्षाकानी होता | सिशुओं आर्थे हम क्यांनि वर्ष केंद्र।

कारण [ ता वर्ष निश्चमी के जन में यह होता था :---का निश्च स्वरणक में दन्ती हो त्यांतर प्रमानन पर निमन्तित कान हैं " ) इस नव में भी वैशा ही आपत्म काने में भी विद्याल तक जनमें तिन भी ताम कि किमें होता में

कारपर ! इस समय व्यक्ति शिशु आह्यपुद्ध नहीं हैं। और आह्यपुद्ध होत के मर्शस्त्र । सर

का मिश्रु प्रशासी है, और चीवर एत्यांटि जिले पहुत प्राप्त होते रहते हैं, बन्तें। को स्थित भिन्नु पर्मासन पर निमन्त्रित करते हैं। वे बेसा करते हैं, जो चिरकाल तक उनके अहित और हुन के लिये होता है।

कादवय । जिसे अधित कर्नियाले कहते हैं - ये तक्षाचारी मराजर्य मन के अपट्टव में पर गये,

सिर सर्थे ।

## § ९. झानाभिञ्जा मुत्त (१५. ९)

#### ध्यान-अभिधा में काष्ट्रयप युद्ध-तुस्य

श्रावस्ती

भिक्षुओ । जब में चाटता हैं, कामों में स्वक्त हो, अकुबल घमों में "वक हो, निप्ततक मिल्यार विवेक्त ब्रीति-सुरावाले प्रथम स्वान को प्राप्त होकर विदार करता हूँ।—शिक्षुओं । काइयर भी । प्रथम स्पार को प्राप्त ।

भिक्षको । जर्र में चाहता हूँ, जितकं विचार के ज्ञान्त हो जाने ने आध्यारम सदमार, जिस की क्कामता से युक्त, समाधित ग्रीसि सुग्राक्षे दिनीय ध्वान को प्राप्त होकर विदार करता हूँ—भिक्षको ।

कारपय भी। हिसीय ध्यान की मास

सिंहुओं। जब में चाहना हूँ तो प्रीति के इट जाने से उपेक्षा के साथ विदार करता हूँ, स्वृति-मान, शार संत्रष्ठ हो कावा में सुग्य का अनुभव करते हुई। जिसे भागेंपुरूव करते हैं कि, उपेक्षा के साथ स्वृतिमान हो सुग्य से विदार करता है इस सीसरे ज्यान की प्राप्त कर सुप्त में विदार करता हूँ ।— सिंदुओं। कादवय भी तीसरे ज्यान की प्राप्त

क्षिश्चको । अत्र में चाहता हूं, सुख आर हुए के प्रहाण में, पूर्व ही सीमनस्य भोर टोर्मनस्य के अन्त हो जाने हें, अद्र य, अनुस्य, कपेक्षा से स्वृति-पारिशुद्धियारे चतुर्य प्यान को प्राप्त कर यिहार

करता हूँ।--भिक्षुओ । काइनप भी " चीचे ध्यान की मास"।

सिक्षुको । कर के चाहता हुँ, नवंश रूपसङ्काओं के समितिमाण से, प्रतिघ सङ्काओं के अन्त हो जाने से, नामास्य सङ्काओं के अभनमिकार से, आकाल अनन्त हे—ऐसा आकाशानद्वायसन की प्राप्त कर विद्वार करता हूँ |—अिक्षुओ । काश्यप भी ।

भिक्षुओ ! जब में चाहता हूँ, सर्वधा आकाशानन्यायतन का समितकमण कर 'विज्ञान धनन्त है'

पैमा विज्ञानबायतम को प्राप्त कर विद्यार करता हुँ-भिक्षुओ ! काइयप भी

सिक्षुओ । अय मै बाहता हूँ, सर्वया विज्ञानक्षायतन का समितिकसण कर 'कुछ नहीं है' ऐसा आकिक्षण्यायतम की प्राप्त कर विहार करता हूँ। – मिक्षुओ ! फास्पप भी ।

निश्चनो । जय मे चाहता हुँ, सर्वथा आकित्तन्थायतन का समितिक्रमण कर नेयसज्ञानास ज्ञायतन

को प्राप्त कर विद्वार कराता हूँ । — सिक्षुको । काश्यप भी ।

मिक्षुको । जय भे चाहता हूँ, सर्वथा नैनसञ्चाभासकायतन का समतिक्रमण कर सञ्चावेदिवत

निरोध को प्राप्त कर विद्वार करता हूँ—शिक्षुओ। काइथप जी\*\*।

[मञ्जो ! जब मैं चाहता हूँ, अमेक प्रकार की करिद्धयों का अञुभव करता हूँ—पुरु होकर पहल

भिद्धता । जब म चाहता हूं, अनेक प्रकार की जरिद्धयों का अनुभव करता हूँ......प्र होकर वहुत हो अक्षा हूँ [देखों पृष्ठ २४३]।....भिक्षुओं। कास्थप भी ।

सिक्षुको । कें जालको के श्लीण हो जाने से, जायब-रहित चेतोविश्रुक्ति और प्रशाविश्रुक्ति की हूसी जन्म में क्षम जान, साक्षाकार कर और प्राप्त कर जिहार करता हूँ।—निश्रुओ । काश्यप भी आश्रयों के शीण हो जाने से, आवब-रहित चेतोविश्चक्ति और प्रशाविश्चक्ति को हसी जन्म में स्वय जान, साक्षात-कार कर और प्राप्त कर विहार करता है।

# § १० उपस्सय सुच (१५ १०)

### यस्टतिस्सा भिक्षणी का संघ से विविध्कार

पुसा मैंने सुवा ।

पुरु समय आशुप्तान् काश्यप आयस्ती में अवायपिन्डिक के नाराम जल्लान में विदार करते में।

#### व

त्रव मापुष्पान् मानस्य पूर्वाह्मसम्य पहण क्षेत्र पाववीवर क्षेत्रवर्षे भाषुष्पान् महाकास्थ्य से वहाँ रामे | बावर भाषुष्पात् महाकास्थ्य से बोके:---सम्सं कास्थ्य | बहाँ मिह्निकाँ का स्थम है वहाँ वहाँ ।

बाहुस मानन्त ! आप कार्चे भापको बहत कारा धारा रहता है।

बूसरी बार भी "।

वीसरी बार । तब व्यक्तमान् महाकाहपर पहन बार पात्रबीवर के बायुप्पान् आनन्त्र की पीठें किये वहाँ मिसुभियों का खान वा वहाँ गये । बाकर विक्रे आसन पर वैठ गये ।

#### E

त्य कुछ निद्धितियाँ बहाँ आवुष्मान् सदाकाश्यर व वहाँ गई बावर आयुष्मान् सहाकाश्यर के स्रितास्य कर एक धोर बैठ गई। एक भोर बैठी हुई का सिद्धतियाँ को बायुष्मान् अदाकाश्यर ने बसीपरेशकर दिवा विधा वाठा दिया और कमके बार्मिक सार्वों को उत्हाह कर दिवा। बसीपरेश कर बायुष्मान् सक्तकाश्यर बातम् से बठकर वादे गथ।

वन पुस्तित्सा मिञ्चणी वसंतुष्ट होकर वसंताप के सन्द बहुने वसी:—न्या वार्य महाकारप को वार्य वेदेहिति आस्त्रम् के सामने पर्योपचेत्र करना अपन्न वा ! केसे, कोई पूर्व नेवचेत्राका किसी पुर्व वार्योग्यों के पास पूर्व वेचावे को बाद। वेसे ही कार्य महाकारपर ने कार्य आमन्द के सामने वर्षों प्रचेश करने का साहस विवाद है।

भाष्ट्रप्यान् सद्वाचाहवयं ने शुक्कविस्सा निद्यानी को ऐसा श्रद्धतं शुना ।

#### ग

एक, अपुष्पान् महामान्य बायुष्पान् कालक से बोके —मायुस वालक १ का में सूर्व वेचने बाका हूँ और बाप सूर्व बनावेवाके या में सूर्व बनावेवाका हूँ और बाप सूर्व वेचनेवादे ?

भन्ते कास्तव ! मह मूर्ण थी है इसे समा कर हैं।

आधन्त ! कहरें संग्र आपके विषय में और चर्चा व करे ।

काबुरा व्यवस्थ । आध वया समझते हैं १

च्या भागवार् वे कावके विषय में सिद्धारंत के सामावे उपस्थित किया वा कि:—सिद्धानो ! अप मि बाहवा है, सभय ज्यान को बाह जर विवार करता हैं—आर कालस्व भी 'प्रथम ज्यान को प्रस कर विदार करता है ?

नहीं मन्ते !

भारता । मेरे विचव में भगवाब ने भिश्चतंत्र के सामने पेसा अपन्यित किया वा । [ नवीं प्वाताबालाओं के विचय में धेसा समझ केना वादिल ] आदुत्त । यह समझा जा सकता ह कि मात हाथ का उँचा हाथी डेंद्र हाथ के तालपत्र में छिप बाय, किन्तु यह सम्मय नहीं कि मेरी छ अभिजायें छिप जायें ।

#### घ

श्रम्ळतिरसा भिक्षणी घर्म से च्युत हो गई।

### ६ ११, चीवर सुत्त (१५ ११)

शानन्द 'कुमार' जैसे, असुनन्दा का संघ से चहिएकार

एक समय आयुष्पान महाकाद्यप राजगृह में बेल्डबन कलन्दक निवाप में विहार करते थे।

#### क

उस समय आयुष्मान् आनम्ब दक्षिणाभिति में भिक्षुओं के एक वदे सब के साथ चारिका कर रहे थे।

उस समय भाषुष्मान् आनश्य के तीस अनुचर भिक्ष जो विशेष कर कुमार थे, शिक्षा को छोड़ कर गृहस्थ हो गये थे।

#### ख

तव, आयुप्तान् आपन्द दक्षिणातिषि में वर्षेच्छ चारिका कर, राजगृह के नेस्त्रवन में नहीं आयुप्तान् महाकादय थे वहाँ पथारे, शीर आयुप्तान् महाकादयप का अभिवादन कर एक भीर वैठ गये ! एक और वैठे आयुप्तान् आजग्ट को आयुप्तान् सहाकादयप योठे.—आयुस्त जातन्त्र ! किस

एक बार येठ जालुकान् जानन्द का चालुकान् सहावाद्यप वाळ.—जालुस उद्देश्य से भगक्षान् ने कुको में 'त्रिकमोजेन' की प्रज्ञसि दी हैं १

भन्ते कादयप ! तीन उद्देश्य से । खुरे छोगों के निग्नह के लिये, शीलवन्त भिक्षकों के शाराम के किये, कि पापेष्ठ लोग पक्ष केकर कहीं सच में फ्रट पैटा न कर दें, और फ़लों की भलाई के किये।

ं शासुल आषण्य ! तो, आप चर्यों इन भये त्रिश्च कों के लाथ चारिका करते हैं, जो अस्तयमी, पेह, और सुत्तक हैं हैं माल्ड्रम होता है कि जाप शस्य और कुर्जों को नष्ट करते हुये विचारते हैं। आहुत आमन्य ! आप की यह नई मण्डली वट रही है, कमरी जा रही है। यह नया कुमार साला को नहीं जानता है |

भन्ते काश्यप ! मेरे बाल भी पक चले, किंतु आज तक आयुप्मान् महाकाश्यप के 'कुमार' कहकर प्रकारे जाने से नहीं ऋटे हैं।

भागुम भागन्द ! इसी से तो मैं कहता हूँ, यह गया कुमार माग्रा को नहीं जानता है ।

#### ग

थुलुनन्दर भिक्षुणी ने सुना कि आर्थ सहाकाश्यप ने धार्य बेटेडसुनि आसन्द को ''कुमार'' कहकर प्रपा वताया है।

सब, बुहनन्या निश्रुणी अवनुष्ट होकर असतीप के वचन कहने स्ता —आयुप्तान् महाकाश्यप, जो पहले अन्य तैर्थिक रह चुके हैं, आर्य आनन्ट को 'कुआर' कहकर घचा बताने का केसे साहस करते हैं ? आयुप्तान् सहाकाश्यप ने युखनन्या शिश्रुणी को ऐसा कहते सुना ।

# § १० उपस्तम सुच (१५ १ )

### पुरुष्ठतिस्सा भिश्चणी का संग्र से वदिष्णार

पसा भने सुना ।

पुरु समय आसुरमान वर्षद्वप आस्माती में अशायविश्विक ह आराम अत्रथम में विद्वार कार थे।

#### क

त्रचं आयुष्पान् आनिष्यं पूर्वाहसमय यहन कार वादाबीहर हे बहाँ आयुष्पान् महाकास्य में बहाँ गये । बाहर आयुष्पान् सहावादवप् स बोस्थ-अन्ने काइयप् । बहाँ भिभुषिणों का स्वान है बहाँ वहाँ ।

भाइस बानन्द ! भाष कार्वे भाषकी बहुत काम धान रहता है । इसरी बार भी "।

पीसरी बार । यब आयुष्पाल् महाकाहयय पहल और पात्रश्रीवर के आयुष्पाल् आवल्य की पीछे किय कहाँ मिल्लियों का स्थाल था बढ़ी गये। जाकर निष्ठे आसल पर बढ़ गये।

#### 酒

तन कुछ निष्ठिणियों नहीं बाह्यसाथ सहाकाश्यय थे बहीं गई बाकर बाह्यसाथ सहाजाश्यय का क्षींसदान कर एक बीद केंट गई। एक जीद बैसी हुई कर सिक्षुनियों की आहुप्साय, सहाकाश्यय में कार्यपरेशन्तर दिका दिया पता दिवा और उनके वार्तिक सालों की उन्हेंक्ट कर दिया। धर्मीयदेश कर बाहुस्तान सहकाश्यय बातन से उनकर चके गरे।

त्व युक्छितिस्ता सिञ्चणी असंतुष्ठ ब्रोक्ट अमताय के बाल्ट कड्डने कमी — क्या बार्न सङ्गाकास्प की अपने वेदेहानूनि आन्त्रम् के सामने यानीपदेश करना अपक्र या है जिसे, कोई यह है वेदने बाक किसी सूर्त कालेगाके के पास यह वेपने का आवा बैसे ही आप महाकादय वे आवे बासम्प के मामने वर्मों परेक करने का सामर किया है।

भाषुच्यात् सहाकाश्यव न शुक्कतिस्था सिद्धवी की पृशा कहते सुना ।

#### ग

यव, वायुप्पात् महाकासम्य कायुप्पात् कामन्य स वोको---वायुस कामन्त १ वटा में सुई। वेबने-वाका हैं जीर बाव सुई वचानेवाके वा में सुई बचानेवाका हैं जीर बाव सुर्व वचनेवाके ?

भागते कारमण ! यह मूर्च जी है इसे कमा कर हैं।

आनम्ब ! उद्दर्र संब आएके विषय में और चर्चा न करें।

माश्वस मानन्य । धाप क्या समझते है ?

क्या समझक् ने कावके विवय में मिह्नुसंघ के लासने उपस्थित किया वा कि!—सिह्नुओ ! वद मैं बाहता हूँ, मयम प्यान की शांत कर विदार करता हूँ—जीर आतत्त्व सी 'सबस प्यान को प्रारं कर विदार करता है !

नहीं भन्ते !

म्यकुत्त । मरे विषय में भागवाणू न भिक्कृतंत्र के सामने पैता वपित्रत किया था । [वदा प्यानाशस्थाओं के विषय में पैता समझ क्षेत्रा चाहिये । आपुस ! कोई यह ठीक ही कह सकता है—यह भगवान् का पुत्र, सुक्षसे उत्पन्न, धर्म से उत्पन्न, धर्म से निर्सिति, धर्मदायाद है जो उनके टाट जैसे रूखे पासुकूछ को धारण करता है ।

आबुस । जय में चाहता हूँ, शयम ध्यान "को प्राप्त कर विहार करता हूँ।

आयुत्त ! में आश्रचों के क्षीण हो जाने से, आश्रव-१हित चेतोविश्वर्षिः ओर प्रशाविश्वर्तिः को इसी जन्म में स्वय जान, साक्षात्कार कर और प्राप्तकर विद्वार करता हूँ ।

आयुम ! "मेरी छ अभिज्ञार्ये नहीं छिप सकतीं।

#### घ

धुलुनन्त्रा भिक्षणी धर्म से ज्युत हो गई।

#### ६ १२, वरम्परण सुच ( १५. १२ )

#### अभ्याकृत, चार आर्यं सत्य

एक समय लालुप्मान् महाकास्त्रयं और लालुप्मान् खारिपुत्र वाराणकी के पास आविपतन मृगदाय में विदार करते थे।

तब, आयुष्मान् सारिषुत्र सांझ को ध्यान से उठ वहाँ आयुष्मान् महाकाश्यप थे वहाँ गये, और कुशक क्षेम के प्रदम पुरुकर एक ओर बैठ गये।

पुरु और नैठ, आयुष्मान् सारिपुत्र आयुष्मान् महाकाश्यप से बोले— आयुस्त काश्यप । क्या जीव मरने के बाद रहता है ?

थाबुस । भगवान् ने पेसा नहीं यतकाचा है कि जीव भरने के बाद रहता है।

आग्रस ! तो क्या जीव सरने के बाद नहीं रहता ?

भाइत । भावान् ने ऐसा भी नहीं वतकाया है कि जीव मरमे के बाद नहीं रहता है।

आबुस । तो क्या होता भी है, नहीं भी होता है ', न होता है, न नहीं होता है

आबुत । भगवाम् ने इसे क्याँ नहीं बताया है ?

आ खुत । क्यों कि, यह न तो परमार्थ के किये है, न महत्त्वर्य का साथक है, न निवेंद्र के किये हे, न विदास के किये है, न निरोध के किये है, न शान्ति के किये है, न झान के किये है, न सम्बोधि के किये हैं, और न निर्वाभ के किये हैं। इसीकिये भगवान् ने इसे नहीं बताया।

आबुस ! तो, सगवान् ने क्या वताया है !

आयुक्त । यह हु ख है---ऐसा अगवान् ने बताया है । यह हु ख-समुद्दय ' , विरोध ', निरोध-गामिनी प्रतिपदा है---ऐसा अगवान् ने बताया है १

जावुस ! भगवान् ने इसे क्यों घटाया है ?

सायुक्त ! क्योंकि, यही परमार्थ का साधक है, ज्ञावर्य का साधक है, जियेंद् के लिये हैं विवाण के लिये हैं। इसी से अगवान् ने इसे बताया है।

## § १३. सद्धम्मपतिरूपक सुत्त (१५, १३)

नकली घर्म से संदर्भ का लोग

ऐसा मैंने सुना।

एक समय भगवान् आवस्ती में अनार्थापश्चिक के भाराम जेतवन में विहार करते थे।

तव जायुष्मान् महाकाश्यप जाजुष्मान् भानम्ब से बोक्रः-भावस भानम्ब ! श्रहनन्या भिधुमी का सहसा पेमा करना अविक महीं। आवस ! अव मैं किर रावी सववा कापाय वस पहन घर से नेपर हा प्रजानित हो गना हैं भार उन आईन् सम्भक सम्बद्ध समझान् को क्रोड़ किसी दूसरे की गुरु नहीं मानता हैं।

आयुस ! पहले घरवाणी रहते मेरे मन में यह हुआ—धर में रहना वहा शंशर है गैदा है। बीर मजञ्चा सुका माकास सा है। घर में रहत हुये विकास अहा पूर्ण साझकिकात-सा शहावर्य पासम करना बदा करिन है। सो नवा न में शिर नावी सवता काधाबबाद पहल बर से वेचर होकर प्रकृतित

हो सर्हे । भातुस ! तब में गुवदी का एक चीवर बवा को कोक में कईत हैं अनके बदला से फिर राजी

सदवा कापाय वद्ध पहल यर सं वेदर होकर महावित हो गया ।

सी मैंबे इस प्रकार प्रवृतिक हो। रास्ते में बाते हुये राजगृह और बाक्रम्या के बीच सहुपूत्र वाल पर मगवान को कड़े हुन देखा । देशकर मेरे मन में हुवा-वहि में किसी गुढ़ को देखें तो मगवान ही को देगी सुगत भीर सम्बक सम्बद्ध ।

भाइत ! सी मैंने बढ़ी अगवान के चरवों पर शिर कर कहा-सपवान और ग्रव हैं में

मापका मानक हैं।

नामुस ! पंसा बहुने वर भगवान समग्रं बोके--कारवप ! को इस प्रकार के चित्र से समजागत मायक को विवा बाने कह है कि 'जातता हूँ विभा वंश्वे कह है कि 'वेशता हूँ' उसका सिर हम-हैं-कर गिर बाब 1 काहमय ! में बावकर कहता हूँ कि 'खानता हूँ वेशकर कहता हूँ कि 'वेशता हूँ !

काश्यप ! इसकिये तुम्ह ऐसा सीकाग चाहिये—स्थिवरों में वये कोगा में और मध्यम में ही

भपध्या मख्यस्थित होशी ।

काइयप ! इसकिये चुन्हें पैसा शीखना चाहिये--कुशकापसंदित को धर्म धुन्ता। सभी को इस-कर मन में सा प्रध्यावित से सर्वेगा। \*\* \*\*

कारवप ! इसकिये तुर्व्ह पेसा शीराण चाहिये- अत्यन्त कामकारी कापगतास्यृति मुझसे कमी भी छडने व पायगी।

त्रव भगवान मार्थ येथा जपवेश न स्थासक में उरकर करे गरे।

भावुस ! सात विकों तक में विका मुक्त इसे ही शहपिया का भोग करता रहा । भारतें दिव ममे विष्य जान बस्पन्न हो गया।

भातुम ) यह सरावान् रास्ते से इट एक इक्ष के बीचे गते।

मान्स ! तब मेंने नवमी गुरुषों के शवारों को भौतेत कर निधा दिया और मानाय से यहा-मन्ते ! मगवान् इस पर वैदें का किरकाक तक मेर हित और ग्रुवा के किये हा ।

भगवान विधे बासन पर बैंड गये ।

भारुम | यद कर मराधान मुख्ये बोक कादवप | मुख्यारी वह शुक्ती की संबादी तो अहुत सकारम है।

मन्त्र ! मुस्पर अनुकरण करके वगवाद इस संवादी को स्वीकार करें !

कार्यप ! हुम मेरे शह जसे क्यो प्राने पांसकक को चारण करोंगे ?

मन्ते ! श्री चारण काशीय ।

मापुत्र ! मा विवे भगवान को अपनी समाती है हो और उनके पौसुकन को अपने भारण कर निया।

# पाँचवाँ पारिच्छेद

# १६. लामसत्कार-संयुत्त

## पहला भाग

## प्रथम वर्ग

§ १, ढारुण सुत्त (१६, १, १)

ळामसरकार दारण है

ऐसा मैंने सुना ।

एक समय भगतान् श्रावस्ती में श्रनाथ पिणिडक के भाराम जेतवन में विहार करते थे।

•भत्तावान् वीक्षे—िसञ्जो । शतुचर निर्वाण की प्राप्ति के मार्ग में छामसकार वथा दान्तण है, कह है, तीरता है, विकरूर है।

शिक्षको ! इञ्चलिये, बुन्हे ऐसा सीयना बाहिये कि —श्त्रभ, सत्कार, प्रशासा आदि को छोड़ हुँगा, उन्हें बन में टहन्ने नहीं हुँगा।

भिक्षशो ! तुर्हे ऐसा ही सीखना चाटिये ।

§ २. वालिस सच (१६. १. २)

लाभस्तकार दारुण है, वंशी की उपमा

श्रावस्ती ' जेतवन में

भिक्षुको । अञ्चलर निर्वाण की प्राप्ति के भागों से छात्यसरकार यथा वादण है, कहु है, सीखा है, विभक्त है।

सिक्षुओं । जैसे, अंकुसी फॅकनेवाला चारा लगाकर अकुमी की गहरे पानी में फॅक हे । तथ, चारे के लोम से कोई मत्नकी उसे निगल जाय । सिक्षुओं । इस तरह, वह मत्नली अकुसी को गिगल कर वहें हु ज और विवित्त में पद जाती है, मञ्जूला जो चाहे उससे करता है ।

मिश्रुओ ! यहाँ अकुसी फेंक्नेवाला मधुवा पापी मार को ही समझना पाहिये, ओर उसकी शंकुसी यही लाम, सनकार, प्रशस्ता आदि है।

िसंडुकों । जो मिछु छामादि पाने पर वहा सुक्त होता हे जौर आकन्द उठाता है, यह आर की अंकुली में सेंसा हुव्या समझा आता है। यह हु सा और विषयि में पढ़ता है। मार उसमें जैसा चाहता है करता है।

इसकिये, भिक्षुओ ! तुम्हें ऐसा सीखना चाहिये ।

तव आयुष्मात् सहाकाश्यम कहाँ भगवान् थे वहाँ आये और मगवान् का अभिवादन कर वक

क्षोत्र बद गरे । एक जोर बैठ आयुष्मान् महाकाह्यप समजान् से बोके :-- सम्ते ! श्या हेतु है श्या अस्पय है कि पहरे अपन ही शिक्षापत भे और ( उस पर भी ) बहुतों में अहैत पत था किया था ! भन्ती ! क्या

इन् हे चया प्रत्यय दे कि इम समय सिम्रापद बहुत हैं और कम अईच-यह वर प्रतिक्रित हैं ? कान्यप | पेमा ही दाता है-साओं के दीन होते और सबमें के श्रव होने पर बहुत शिक्षापह

हात है और बदय मिश्र महीन-पर पर प्रतिदिन होते हैं।

कारबंद ! तब तक सदार्थ का कोच नहीं होता है जब तक कोई दूसरा शककी धर्म उठ तका मही होता । अब कोड् नकसी धर्म उट खदा होता है तो सद्धर्म का कोप ही जाता है। काश्यप ! जैसे सब तक सरब सात का कोप नहीं होता कब तक नक्की सैयार होने नहीं लगता "बसे ही ।

कार्यप ! पृथ्वीचानु, सब्से का सुस कहीं करता; न बापोबातु न तेब्रोमातु, और न बायुपातु ! किंतु यहीं वे मूर्ज सोग उपना होते हैं जो शब्दर्म का हुस कर इंग हैं। काइपप ! बसे अविक मार से नाव कृष वाती है यम धर्म इब नहीं काता ।

बाइबय ! एसे पाँच बारण है जिससे सबसे नह बोकर लूल हो जाता है । कीन से पाँच ? (1) बाइपप ! मिश्रु मिश्रुणी अपाणक क्यासिकार्थे हुन क शति गीरव नहीं करती कनक

रवात नहीं करतीं हैं। (२) चर्म के प्रति । (३) संघ के प्रति । (३) शिक्षा के प्रति । (५) समापि के प्रति ।

काइयप ! पड़ी पाँच कारण है जिसमा संख्यों नह हो कर सुद्ध हो बाता है ! बारवर ! ऐसे पाँच बारवा हैं जिनस सबसे बहरा रहता है कीय और लुस नहीं होता !

(1) " इक् इ प्रति शारव । (१) थम के प्रति । (१) संब के प्रति । (४) शिक्षा है प्रति " । (५) समाधि के प्रति

कारबंद ! बड़ी चाँच कारबा के जिलम सकस उद्धरा रहता है शीम और साम नहीं दोता !

काइयपश्चेयत्त समाप्त ।

वह भिक्षु छाशादिकों वर फूछ जाता है और दूसरे बीछवन्त भिक्षुओं को नीवा समझता है। भिक्षुओ। उस मूर्व भिक्षु का वह चिरकाछ तक अहित और हुख के किये होता है।

·· । ऐसा सीखना चाहिये ।

## § ६ असनि सुत्त (१६.१.६)

#### विज्ञानी की लगमा और सामस्कार

श्रावस्ती''।

भिक्षुमो ! विजली के गिरने की उपमा उस मीद्य भिक्षु से दी जाती है जिसका मन लाभादि में फैंसता है ।

. भिक्षभो ! लामादि को ही विजली का गिरना समझना चाहिये।

• पैसा सीखना चाहिये ।

## § ७. दिड सुत्त (१६. १ ७)

#### विवेका तीर

श्राद्यस्ती • ।

विपेके तीर से चुने पुरुष की उपमा उस शैश्व भिक्षु से वी आसी है जिसका चित्र लाभावि में फैंस जाता है।

""पेन्द्रा सीखना चाहिथे ।

## ६८. सिगाल सत्त (१६.१८)

#### रोगी भ्रशाल की उपमा

श्रावस्ती

मिश्रमो ! रात के भिनसारे में तुमने श्रगालों को रव करते सुना है ?

माँ यस्त्रे ।

्राप्तः । सिक्षुक्षी । यह प्रयाल बृद्धा, बनकण्यक सामक रोग से पीपित हो न तो प्रकान्त में सेन पाता है, न युक्त के नीचे क्षीर न खुळी जयह में । बाहॉ-बाहॉ खाता है, बाहॉ-बाहॉ खाना रहता है, बाहॉ-बाहॉ सैवता है और बाहॉ-बाहॉ लेटता है बाहॉ-बाहॉ बाबा द्वा खा मोगता है।

मिश्रुओ | वैसे ही, कितने मिश्रु लामादि में चित्र फैंसा कर न तो झून्यागार न ग्रुक्ष के मीखे और ≡ स्तरी जगड में स्मते हैं। जहाँ-जहाँ जाते हैं ... इस्त उठाते हैं |

पैसा सीखना चाहिये।

#### § ९. वेरम्ब सत्त (१६ १ ९)

इन्द्रियों में संयम रखना, वेरम्य वायु की उपमा

'''निक्षुकी' अपर काकाज्ञ में बेरन्य वासकी एक हवा चळती है। इसके बीच में जो पक्षी पदता है वह फेंग काता है। उन्ह पक्षी के पैर, पाब, क्षिर और अरोह सभी जळग कळग हो जाते हैं। निक्षुकी! पैसे ही'''निक्षारण के किये पेठता है। उसके झरीर, घचन और मन जरक्षित रहते हैं। स्त्रुति और डिन्यियां का स्वस्त नहीं राज्या है।

### / 🗜 ३ क्रम्म सच (१६ १ ३)

काभावि भयानक हैं, काइना और स्याधा की उपमा

धायस्ती ।

मिल्लुओ । पूर्वकाल में किसी बढासय में कसूलों का पूक परिवार बहुत समय से वास करता था। यथ एक कमूने ये तुसरे कमूचे से क्या-व्यारे कम्रचे ! उस बगह सस बाधी । किन्तु वह क्यामा उस बयह पर बड़ा राया । वहाँ किसी व्यापे ने उसे बाला बकावर वैस हिया । तब वह क्युका बर्दी देखरा करूबा वा वहाँ गया। यस करूपे ने इसे दम ही से बाते देखा। देखका उत्तरे कहा-प्यारे ! बस स्थाय पर रावे तो नहीं थे !

प्यारे । मैं क्स स्थान पर तथा का ।

प्यारे ! यो सम माछे से छित्र-विश्व यो नहीं यथे ?

प्यारे ! में माछे से किय-बिच तो नहीं शया हैं. किया वह बाया मेरे पीड़े-पीछे क्या है ।

प्यारे कपूर्व | द्वम किय पर्व हो विश्व यवे हो । हसी स्वापे से द्वमारे किसने वाप बादे फैसाकर मार दिसे गर्थ है। काची सम अब गरे बाम के वहीं गई।

मिहाओं ! यहाँ स्थाना पापी मार को ही समझना चाहिये। माना यही कामाहि है। पापा संसारमें स्वाद केना और राग करवा है।

कियर के वेसा 1

## इ.४ दीघलोगी सच (१६ १ ४)

सम्बे बास बार्ड में के की बपमा

भाषस्ती जेतका है ।

निहाकी ! बैसे कम्मे-कम्मे बाक वाका कोई मेंदा कैंदीकी झावी में पेड बाव । वह इवर क्षर कम काम कीस काम कह काम अभी विभक्ति में यह जाय ।

मिल्ला ! वैसे ही किसने भिल्ला कामानि में पड़कर निकस किस से सुबह में पहल और पात्र

चीपर के गाँव वा करने में निकारन के किये पेतता है। यह इसर उपर क्या करता है चैंस बाता है पार काका है ।

िपूर्वपत् ।

## <sup>8</sup> ५ एकक शुचा( १६ १ ५)

सामधारकार से बातन्त्रत होता शहितकर है

मिहाको ! वैदे रीका वावेबाका कोई पिद्यस मैका से कवपथ सवा हो और उसके सामवै मैक की एक देर पड़ी हो। इससे बह जपने की बुसरे पिक्क्स हो बदा समग्री—में मैका आनेवाका विस्तु मैका से कथरक समा 🐔 भीर तेरे सामन मैके की पुत्र देर पड़ी 🖁 ।

मिलुकी ! बेसे की किसारम के किसे वैदसा है । यह वहाँ शोका करके इसरे दिन के किसे

मी बिमन्त्रित होता है और उसका पास पूरा होता है।

वह ब्यास में ब्यावर मिश्रुवी के सामने गर्व के लाग पहता है—दीने मोजन कर किया बूसरे दिव के किये भी निश्चनियत हूँ और मेरा पाश्च मी बुता है। में चीवरादि का काम करनेपाका हूँ। वे क्षारे भगारी अप्रकृत्य सिद्ध चीवशदि का कास तहीं कारी ।

## द्सरा भाग

## द्वितीय वर्ग

## ६ १. पठम पाती सुत्त (१६. २. १)

#### लाभसरकार की भयंकरता

श्राचस्ती'''।

भिक्षको ! "'लाभसत्कार यदा दारुण है।

भिश्रुओं | मैंने एक समय एक पुरुष के चित्त को अपने चित्त से जान किया. — यह भिश्रु सोने की धाड़ी में भरे हुये एजत-चुर्ण के लिये भी वान-चुड़ा कर झुठ नहीं योलेगा।

उसी पुरुप की मैंने आगे चळकर कामसरकार के लिये जान वृत्र कर झूठ घोलते देखा । • इसलिये, ऐसा सीकाना चाटिये ।

## § २. दुतिय पाती सुत्त (१६. २ २)

#### लाभनकार की मयंकरता

श्रावस्ती''।

90

सिक्षुओं ! सैंने एक समय एक पुरुष के विच को अवचे चित्र से जान किया—यह सिक्षु वॉदी की पाक्षी में भरे हुने क्षुवर्ण-वृशं के किये भी जान युग्न कर झुट नहीं दोरोगा । जन्मी एकर कोण ।

## § ३-१०. सिङ्गी सुत्त (१६ २ ३-१०)

#### ळाभसत्कार की सर्वकरता

- सुवर्ण-निष्क के लिये भी जान बृझकर झ्ड नहीं।
- प्क सी सुवर्ण-निग्क के लिये भी
- ५ " निप्कों की एक देर के लिये भी ।
- किल्कों की सी डेर के लिये भी ।
   जातरूप में मरी हुई सारी प्रथ्वी के किये भी ।
- ससार की किसी भी चस्त्र के लिये ।
- ९. 'प्राणों के निकल जाने पर भी ।
  - समसे सुन्दरी स्त्री के किये सी ।

#### हितीय वर्ग समाप्त ।

बर बहाँ किसी की को देखता है तो अपन अंधों को ब्रीड स र्डेंकी नहीं। उसे देख उसके दित में राग बया आदा है। बिक्त में दारा को आने से बह दिखा को छोड़ सुहस्य हो बाता है। तह, दूसरे सोग उसके बीजर को, पास की आसन को व्यंत सुहंदानी को बडा-उटा बर के बाते हैं। वेसन इस में पूरे पूछी की नाह।

" पेमा सीप्रमा चाहिए ।

### ६ १० संशोधा सच (१६ १ १०)

## त्यामसस्त्रार वारण है

भाषस्ति\*\*\*।

भिप्तुची ! अनुचर निर्वाण की प्राप्ति के मार्ग में सामसत्कार बदर प्रादण है, कड़ है जीया है विस्तर है !

विभाग ! में देखता हैं कि कितने कोय सतकार में अपने चित्र को चैंसा कर माने के नाद नात

में बलक हो दुगवि की मास होते हैं।

भियुको । में देशका हूँ कि कितने कोण असन्धर में चित्त को शमा कर मरन के बाद मरक में बरदह हैं। बर्गित को ताम होत है।

भिश्वानी ! में देलता हूँ कि कितने कोग समस्कार और सरकार में विक क्याकर माहारीत के

मास दावे दें र

मिशुनो ! अनुगर निर्वाण की प्राप्ति के साथे में साधसत्कार इतना दरण है कड़ है सीकार किलका है।

मिश्रुषी । हमलिए, ऐना सीमना चाहिए कि — स्थम सरकार, बरांमा की छाद हूँया वर्णे मन में दहरने नहीं हैंगा ।

मगरान वह शके ! इतना बदकर पुत्र किर भी बाके-

भा सम्बार वा कसरकार के मिकने पर भगमार स बिहार करते हुए गमाधि को नहीं विचाला है । यस प्याय में सम्बर्ग शहूम एकि रगमकाम को, सम्बर्ग प्रपादान-सीन दोकर रामन करनवाका कहना है स

प्रथम यग समाप्त ।

•••उपासिका श्राधिकाओं में यही दोनों आदर्श हैं।

सेटी ! यदि तुम घर से बेघर हो श्रवित होना तो चैंगी होना बेगी कि मिशुणी श्रोमा और उत्पत्नवर्णा हैं।

·· निक्षणी ध्राधिकाओं में यही डोनो आर्ट्स है।

••• [ उत्तर के ऐसा ]

§ ५. परम समजवायण सुच ( १६. ३. ५ )

लाभसत्कार के यथार्थ दोप-वान से मक्ति

थावस्ती

भिक्षुओं ! जो श्रमण या माहाण लाभादि के भाग्याण, भाषीमव, और निःसरण की यथानृत नहीं जानते हैं, वे ' प्राप्त कर नहीं विदार करते हैं !

भिक्षको । जो जानते हैं । प्राप्त कर विद्यार करते हैं ।

§ ६. दतिय समणबाद्यण सुत्त (१६ ३. ६)

लाभसत्कार के यथार्थ दोप-जान से मक्त

थाचस्ति ।

भिक्षुओं । वो श्रमण या जावाण कामादि के समुदय, अस्तराम, आस्वाट, आदीनय और नि सरण को प्रतासन नहीं जानते हैं, वे "प्राप्त कर नहीं विद्वार करते हैं ।

प्राप्त कर विद्वार करते हैं।

९ ७. ततिय समणवादाण सत्त (१६, ३ ७)

लागसत्कार के यथार्थ निरोध-वान से सकि

आवस्ती । शिक्षुओं । जो काभादि के सञ्चय, निरोध, और निरोधमासिनी प्रतिपदा को नहीं जानते हैं, वे प्राप्त वर नहीं पितार करते हैं ।

' प्राप्त कर विहार करते हैं।

§ ८. छवि सुत्त (१६. ३ ८)

लाभसत्कार खाल को छेद देना है

" भिक्षुओं } लामादि खाल को छेंद देता है, खाल को छेंद कर चाम को छेद देता है, मांस, महारू, हड्डी, सजा को छेद देता है।

§ ९. रज्जु सुत्त (१६ ३. ९)

लाभसत्कार की रस्सी खाल को छेद देती है

श्रावस्ती ।

•••कामसन्कार दारुण है।

भिश्रुओं ! काशसरकार हुड्डी को छेदकर सजा में जा कराता है।

## तीसरा भाग

## तृतीय वर्ग

## § १ मातुगाम सुच ( १६ ३ १ )

#### सामसत्कार वादण है

धावस्ती ।

कामसस्कार वाद्यतः है।

मिल्लुकी ! एकान्य में कोई अकेकी की भी निवस्त विश्व को लुगाने में बसामधे होतृ। हं, उसका चित्र काम सत्कार कीर वसंसा में जैस काता है।

पैसा सीप्रका चाहिए।

§ २ करवाणी सुच ( १६ ३ <sup>२</sup> )

द्यायमस्त्रार वाराण 🛊

'प्कान्त में सुन्दरी सीधी ।

§ **३ पुच सुच** (१६ ३ ३)

भामसत्कार में न फैंसना दुद के शावधी शायक

भावसी ।

कामसरकार शक्या है।

सिद्धानी ! अञ्चल अपासिका जपने इकसीते आपके युत्र की इस तरह शिकाचे हे-सात ! वैसा वचना वैसी श्वित्र गुरुपति या आक्षत्रक इत्याक है ।

मिश्रुभी ! क्वोंकि मेरे गुहरूव जावकों में वही दो बादर्स माने करते हैं !

—ताथ | बदि तुम घर से नेवर हो थाओं तो वैसा हो वनता बीसे स्तारियुत्त और स्ताहियुत्त कीर स्ताहियायम हैं। किसुकी ! क्रांकि मेरे सिम्स आवर्षों में वही दो जादर्श आने कार्स है।

—कार ! बप्रमण होकर सिका का शाका करते हुए कासाबि के छेर में सत ऐसला । कासाबि के फेर में प्रमण से बहु समारिक के किए होगा ।

" येसा गीखवा चातिय ।

§ ४ **एकपीता शुच** (१६ ३ ४)

सामनत्त्रार में न गेंसना तुज की बाददाँ धाविकाएँ

भावस्ति ।

'कामसन्त्रार दारण' है।

सिशुणी ! बद्धालु उपाधिका नपती हकतीती काइडी कहडी को इस तरह सिधानै—नेसी ! सुम पैसी होना जैसी की उपाधिका लुपुञ्चलाग और येखुक्चक्रिय नन्द शासा हैं ।

# चौथा भाग

# चतुर्थ वर्ग

## १. भिन्दि सुत्त (१६ ४.१)

सामसत्कार के कारण सघ में फ्रट

श्रावस्ती'''।

··· छाभसत्कार दारण है।

काभसत्कार में फैंप और पदकर देवद्त्त ने संघ को फोड दिया। ऐसा सीखता चाहिए।

> § २. मूल सुत्त (१६ ४.२) पण्यकें मल का कटना

""देवद्य के प्रव्य के मुक्त कर गये ।""

§ ३. ध∓म सत्त (१६. ४. ३)

कुशल धर्म का करना

'''देवद्त के कुशल धर्म कट गये।

§ ४. सुक्रधम्म युत्त (१६. ४ ४)

शुस्क धर्म का कटना

देवहन्त के ऋल्क धर्म कर गये।

§ ५. पकन्त सत्त (१६. ४. ५)

देवदत्त के बध के लिए लाभलत्कार का उत्पन्न होना

एक सभय देवहुक्त के जाने के इन्छ ही बाद भगवान राजगृह में गृदक्ट पर्वत पर विद्यार करते थे।

वहाँ, भगवान् ने देधदत्त के विषय में मिक्षुओं को आमन्त्रित किया।

भिश्रुकी! देवदत्त के अपने धभ के किए उसे छ्तना कामसक्कार उत्पन्न हुमा है। अपनी परिहानि के किए ।

निश्च को । जैसे, केळा का जुक्ष अपने वच और जयनी चिरहानि के लिए ही फल देता है, जैसे ही देवदत्त के अपने वच के लिए ।

भिक्षुओं ! जैसें, षेणु का बुक्ष अपने घष और खपनी परिहानि के लिए ही फल देता है · । भिक्षओं ! जैसे नल ° ।

भिक्षको ! जैसे, खबरी अपने वध और अपनी परिद्वानि के किए ही बचा देवी है ।

मिक्क्षभी ! बैसे काई वकवान् प्रदूप एक सकत्त कभी धारी से बंधे में करीड कर वैसे । वह बाधा पास को बेरबर इसी को बेरकर मजा में का बते।

बसे ही ।

## ६१० भियस्य सुचा ( १६ ३ १० )

## सामसकार महत्त्व के छिए भी विष्मकारक

भाषस्ति । थिहाओं | को मिक्स श्रीणायन काईत् है उसके किने भी में कामसकार को निम्न बताता 🧗

पेसा कहने पर कायुप्तान् धानन्य मगवान् से बोडि-सन्ते ! सका खीवासव कहन् मिह्न की बामगाबार देशे विच्न वर सकता है ?

भातन्त्र ! जिसका चित्र विस्कृत विमुक्त हो चुका है उसके किये में आमसकार को विज्ञान सर्वे बताता ।

जावल्य ! जो तुक जाताची प्रदिशास्य इसी कम्म में शुक्त विश्वार को मात कर केनेदराकों के किने II अप्रमासकार को किम्बकर बताता है<sup>\*</sup>।

बावल्य ! निर्वाण गाप्ति के मार्ग के किये कामसत्कार गुँका दादल कड़ तीका और विभावन है। धातान । इसकिये तुम्हें पेसा सीक्षण काहिये-काभ सत्कार और मर्समा की मैं कोड़ हूँया प्रकार अपने किस को बाँसने नहीं बाँगा।

सामन्द ! तुम्हें ऐसा श्रीकरा चाहित्र ।

वर्तीय वर्ग समास ।

# छठाँ परिच्छेद

# १७. राहुल-संयुत्त

## पहला भाग

## प्रथम वर्ग

### § १. चक्तुसूच (१७. १ १)

इन्द्रियों 🛱 अनित्य, दुःख, अनारम के मनन से विमुक्ति

प्रेसा सैंने छुना ।

पुक समय भगवान् श्रावस्ती में

• एक शोर थेठ, आयुष्मान् बाहुछ अगवाव् से योडे---अन्ते ! अवधान् सुद्धे उपदेश दें कि जिसे सुनकर में एकान्स में अकेटा अप्रवत्त, आतापी, और प्रहित्तत्म होकर विदार करूँ ।

राहरू ! सो. पया समझते हो चक्ष नित्य हे या अभित्य ?

अनित्य, भन्ते ! को अविद्या में तह हु:स्व

को भनित्य हे यह हु ख है अमन। सुख ? ए ज. भन्ते !

हु ज, भन्ता ? की क्रिक्त, हु ल कीर परिवर्तनतील है क्या उसे ऐसा समझना चाहिये—यह मेश है यह में हैं. यह मेश आसा है ?

नहीं अन्ते ।

[वंते ही]—श्रोत्र , ब्राण , बिह्ना , कावा , सन ।

राष्ट्रक ! यह जान और सुनकर भार्यश्रायक चश्च से सन को डबटा देता है।

उच्या कर विरक्त हो जाता है। विरक्त रह विभुक्त हो आता है। विभुक्त होने से विभुक्त हो गया ऐसा झान हो जाता है। खाति क्षोण हुईं, ब्रह्मचर्य पूरा हो गया, खो करना था सो कर किया, और इन्ड याकी नहीं यपा---पेसा जान लेता है।

## § २ रूप ग्रुच (१७ १ २)

रूप में अनित्य, दु'छ, अनात्म के मनन से विमुक्ति

राहुळ ! सो पया समझते हो, रूप , शब्द , शब्स , रस , स्पर्श , धर्म निर्द्य है वा अनित्य ?

भनित्य भन्ते ।

[पूर्वघत्] ३८ पुसा सीधना चाहिने।

भगवान् यह जोके । इतना कह कर चुद्र फिर भी बोसे---

क्रम केवा को भार बंदा है

फल वेणु को एक वल को सरकार काएरप की मार वेशा है

हिमे भवना गर्म सत्त्वती को ॥

#### <sup>8</sup> ६ रथ सच ( १६ ८ ६ )

## देयदत्त का सामसत्कार उसकी हाति के सिप

राष्ट्रपद चेउवन ।

उस समय कुमार सकाधेशाचु सांध सुवह पाँच सी रखें को लेकर वेश्वरण के उपस्थान के के किसे भाषा करता था। पाँच सी पकवान की शाकियाँ भेकी भाषा करता था। पाँच सी पकवान की शाकियाँ भेकी भाषा करता था।

तम इन्ह सिद्ध बहाँ परावान् ये वहाँ काचे थीर स्मावान् का अभिवादन कर एक और बैट रावे । एक और बैट कर उन सिद्धालों ने सरावान् को कहा—सन्ते | कुसार अवस्पात्रम् पाकियों सेवी

वाती है। सिम्मुली | देववरा के कामसरकार की हैंच्यों मत करी | हमासे कुमाच पर्मी में देववरा की काणि सी है विक करी।

तिमुची ! बैस चण्ड कुचे के नाक पर कोई चित्र काट है । उससे कुचा और भी चण्ड हो उदे। कैसे पूरे, बच दक कुमार मजाय अबु देवदच का दमस्थाय हुस प्रकार करता रहेगा तद तक कुसक वर्गी में बसकी हानि ही है चलि कार्री।

मेस्य स्टी**ल**का जातिसे ।

रामसत्कार वादन ह

भावस्ती ।

सिश्चमी । काससम्बद्ध वृक्षण है।

निमुजी । मैं किसी पुरूर के किया को अपने किया से बाब केता हूँ—वह माता के कारण भी बाब वृक्ष कर बढ़ वर्षी बोकेंगा । मिछुमा | वसी की कामसम्बद्धार में कैंग व्यववृक्ष कर बढ़ बोकते देवता हूँ।

मिह्नुका | इसकिये गुर्वे पेसा श्लीकता आहिये—कामसरकार को क्लीव हूँ या कामसरकार में अवने वित्त को नहीं कैंसते केंगा।

। स्थापकः मद्दाकसन्यूनाः। सिन्नसी। यैसासन्यनाच्यास्ये ।

स्नासलकार ब्राटण है (८) पिता; (१) मार्घ; (१) शहन; (१२) पुना; (१२) स्त्री ' करा ने रेसा |

चतुर्चे पर्गे समास ।

# द्सरा भाग

#### दितीय वर्ग

# **१. चवन्तु सुत्त** (१७. २. १)

बक्ष आदि में अनित्य, दुःख, अनारम की भावना से मुक्ति

श्रावस्ती १

· एक ओर घंठे हुये आयुष्मान् राहुङ सं भगवान् योले —राहुङ । · · चक्षु नित्य है द्या अनित्यः ?

अनित्य भन्ते ।

जो अनिश्य है वह दु ल है या सुख ?

दुख भन्ते !

जो भनित्य, हुन्स और परिवर्तनक्षील है उसे क्या यह कहना उचित है कि—यह मेरा है, यह मैं हैं, यह मेरा आत्मा है ?

नहीं भन्ते !

श्रोत्र \*, प्राण \*, जिह्ना , कावा , सन \*।

राहुल। ऐसा देख कीर सुमकर आवेदानक इनसे उच्छा रहता है। उच्छा रह चैराज्य करता है। बैराज्य से पिमुक्त हो जाता है। बिमुक्त होने से बिमुक्त हो गया ऐसा ज्ञान उत्यक्त होता है। आग्नि क्षीण हुई, ब्रह्मचर्च पुरा हो गया, जो करना था सो कर किया, और कुछ वाकी नहीं वचा है—पेसा जान केता है।

इसी माँति इस सूत्रान्त कर छेने चाहिये।

अनित्य, दुःस्त्र की भावना

धावस्ति "।

राहुल । तो क्या समझते हो रूप — धर्म , श्रश्चिश्चान — सनोविज्ञान ', श्रश्च स्वर्ध '' — मन सरपर्य , प्रश्च सरपर्य , प्रश्च सरपर्य , प्रश्च सरपर्य , प्रश्च सरपर्य , रूप सर्वा — धर्म स्वर्ध , रूप सर्वा — पर्य स्वर्ध , स्वर्ध स्वर्ध , स्वर्य , स्वर्ध , स्वर्य , स्वर्ध , स्वर्ध , स्वर्ध , स्वर्ध , स्वर्य , स्वर्ध , स्वर्य , स्वर्ध , स्वर्ध , स्वर्य ,

अनिध्य सन्ते ।

# ६ **११. अनुसय** सुत्त (१७ २. ११)

सम्यक् मनन से मानानुदाय का नाश

थावस्ती । • एक क्षीर बैठ, कांसुप्मान् राहुल सगवान् से बोर्क — मन्ते । क्या जान और देख हेने से

# 🛂 ३ विष्ठाण सम (१७ १ ३)

विशान में अनित्य कु या, अनात्म के समत से सचि राष्ट्रक ! तो पंपा समझते को चार्यकेतान क्रोक्षिताल आणविज्ञान विक्राविज्ञान कावाजिलान मधीबिलाम निश्य है का कमिला है

श्वांबरप सम्ते ।

## है ४ सम्बन्ध सच (१७ १ ४)

सस्पर्ध में भनित्य कुत्ता जनात्म के मनन से मन्ति राहुक ! तो क्या समझते हो कार्सस्पदा मनग्रीस्पर्ध मित्र है वा अतिस्य ! सनित्य अस्ते ।

#### १ ५ वेदना सच (१७ १ ५)

धेरमा का अस्त

राष्ट्रक । ही क्या समझते ही बहुएएंत्यर्शका बेदना अन संपर्धका बहना दित्य है का सनित्प १

धनित्य सन्ते !

#### र्द सञ्जासचा (१७ १ ६)

सम्राका समर

राष्ट्रक ! सी पना समझते हो कर-सजा ----धर्म-राजा वित्य है वा समित्य ? भनित्य मस्ते !

इ.च. सञ्चेतना सच (१७ १ ७)

संवेतना का अनम

राष्ट्रक ! स्रो भना समझने हो। कप-संबोधका॰ ---पर्जन्यचीतमा जिल्ल है वा अभिरत ! समित्व धली ! --

हैं ८ तण्हासचा(१७ १ ८)

चच्चा का अनम

राहक ! श्री पना समझते हो कद-मुख्या नित्न है का अमित्य ? व्यक्तिय करते ।

<sup>2</sup>९ भातसच (१७१९)

चात् का मधन राष्ट्रक ! तो क्या समझते हो कृत्वी चात्र जागीवातु - तेजो-वातु वातु पाद्य " भागातान्यास् 🗠 विद्यान पास् जिल्ल है वा अजिला 🤊

विश्व अन्ते !

ई १० खचतुच (१७ १ १०)

रकरण का असल

राष्ट्रक देवा क्या समामते हो कारण केंद्रवा संक्षा संस्कार विद्यान नित्य है बा अभिन्य १

समित्र जली । 🗠

मयम यग समाम ।

# सातवाँ परिच्छेद

# १८. लक्षण-संयुत्त

# पहला भाग

#### प्रथम वर्ग

# § १. अद्रिपेसि सुच (१८. १. १)

#### शक्थि-कंकाल, गौहत्या का उष्परिणाम

ऐसा मैंने घुना।

एक समय भगवान् राजगृह में चेलुचन कलन्दक निवाप में विहार करते थे।

उस समय आयुष्मान् छक्षण और आयुष्मान् महामीद्गल्यायन गृद्धकृट पर्वतं पर विद्यार करते थे।

त्तत था ।

त्वत, आयुज्मान् महामीव्यव्यायन प्वांक्र-समय पहन और पात्रचीवर छे जहाँ आयुज्मान् छक्षण
ये बहाँ गये । जाकर आयुज्मान् छक्षण से वाले---आयुत्त कक्षण । चलें, राजगृह में भिक्षाटन के लिये रैटें ।

'आयुत्त, धहुत अष्टा' कहकर आयुज्मान् कक्षण ने आयुज्मान् महामीहरवायन को उत्तर दिया ।

तम, आयुज्मान् महामीहरवायन में गृहकुट पर्यंत से उत्तरते हुये एक काह सुसकर दिया ।

त्तव, आञ्चन्यान् कक्षण आधुन्मान् महामीहत्यायन से योके—आवुतः । आप के मुसकरा देने का

बातुम कक्षण । युस्प परन का यह दश्वित-काळ नहीं है। भगवाज् के सामने मुझे यह प्रदम पूछना तब, बादुस्मान् कक्षण और बाद्युस्मान्त सुबासीन्द्रस्थायन विश्वादक से छोट शोधन कर छेने के याद कहाँ भगवान् से वहाँ परी, जोर भगवान् का अभिवादन कर एक और देठ राने।

एक और वैड, आंखुप्पान् कक्षण आंखुप्पान् सहामीहक्यम से वोळे — आप आंखुप्पान् सहा-मीहरपायन ने गृहकूट पर्यंत से उत्तरते हुन्ने एक बगह् सुसकरा विषा । सी आपके इस सुसकरा देने का नमा होता था ?

आशुत ! मृह्दकृष्ट पर्वत से उतरते हुये मैंने धृद्धियों के एक ककाल को आकाश मार्ग से जाते देखा । उसे नीध भी, कीए थी, और चील भी झपट-झपट कर सोचते थे, धीपते थे, डुकदे-डुकडे कर देते थे. और वह सार्तस्वर कर रहा था।

आहुस । तब, मेरे मन में ऐसा हुबा--वहा आइन्छें है, वहा अह्भुत है ! ऐसे मी प्राणी है । इस प्रकार का भी आसमगद-प्रतिखाम होता है ।

े तुन भगवान् ने भिक्षुओं को आमन्त्रित किया—भिक्षुओ । मेरे धानक ऑप्टर दोस्ट पिहार करते हैं, सान के साथ निहार करते हैं । मेरे धानक इस प्रकार को भी जान रुते हैं, देख ऐते हैं, साकास्कार कर रुते हैं ।

भिक्षुमो । पहले गैंने भी उस सख को देखा या, किन्तु किसी को नहीं कहा । धदि में फहता तो

विद्याप-सदित इस ऋरीर में तथा वाहर के सभी निमित्तों में वहंवार व्यमगंकार व्यमानानुसम नहीं होते हैं ?

राहुक | अर्थात अगागत या वर्षमान के, काश्मारम या वाहर के स्थूक या सुरुम; हीन वा प्रवीत: तूर के वा निकट के किलने रूप हैं सभी न तो भेरे हैं य में हूँ, व भेरे आरमा है। जो इसे यामपूर्व सम्बद्ध प्रकार से देवता है।

कितनी चेदना संस्कार जीर विजान हैं सभी घ तो भेरे हैं। न में हूँ व भेरे बादमा है। वो

इसे प्रयापत सम्बद्ध प्रजा से देखता है।

राष्ट्रक ! इसे बान और देख केने से विकान-सहित इस शारीर में तथा बाहर के सभी निमित्तों में बहुका क्रमसंबार क्रमानावाच नहीं होते हैं।

ह**१२ अपगत सच** (१७ २ १२)

ममत्व के त्याग से मुक्ति

भाषस्ति ।

" पुरु कोर केंद्र कासुस्तात् राहुक समझान् से बोर्क — अन्ते | क्वा बान और देख केने से विकास-सहित हम सरीर में तथा बादर के सभी विभिन्नों में बहुंबार असंबार और साब हद बाते हैं सब बाद सारू भीर विकास हो बाता है ?

राहुक ! सर्वीय सर्वागत या वर्षभाग के विद्यमें क्या है सभी ॥ को भेरे हैं व में हैं, व भेरे भारता है।

वेदमा इस्का इस्टब्सर (विकास ।

वद्या , स्वा ) सरम्भर , । यहान । राहुक ! हुने बाव और देख केने से विद्याय-सहित इस सरीर में तथा बाहर के समी निर्मिणों में बाईकर सर्पकर और साव हुट कार्य है । यह सुरह साम्य और विसन्त हो बाता है ।

राष्ट्रक संयुक्त समास ।

§ ८. स्रचिसारथी सुत्त (१८ १, ८)

सुई-जैसा लोग और सारथी

सचिलोस प्रक्ष को । · इसी राजगृह में सारथि था

§ ९. स्चक सुत्त (१८. १. ९)

सई-जैसा लोम और स्चक

सुचिलोस पुरुप को । इसी राजगृह में सूचक था ।

§ १० गामक्टक सुच (१८. १ १०)

द्रष्ट गाँध का पञ्च

क्रम्भण्ड पुरुप की आकाश से जाते देखा वह जाते हुये उन अण्डों को कन्धे पर रख कर जाता था, बैठते हुये उन्हीं पर बैठता था।

• वह आतेस्वर कर रहा था।

""वह इसी राजगृह में द्रुष्ट गाँव का पत्र या।

प्रथम वर्ष समाप्त ।

शाबद दूसरे नहीं आनते। को असे नहीं सावते अवका यह चिरकाक तक व्यक्ति और तत्त्व के किने होता ।

भिद्रामा ! यह स्टब इसी राजगृह हैं। गीहरमा काने बाला था । इस पाप के सकामकर बहा कारों कर तक नरक में पनता रहा । कस करीके अपसान में कसने एसा आसमान प्रतिकाम किया है । मभी सर्वे में इसी तरह ।

**६२ गोघातफ सच (१८ १ २)** 

मांसपेदी, गीहत्या का इप्परिणाध

हिंग नव सूचेर में नासुप्तान् महासीहरूपरायन कसी प्रकार सुसकराते हैं जिसकी व्यावधा मगवान् करते हैं---।

भावस मांसपेशी को शाकास से काते देखा" ।

इसी राजगृह में गोधालक था ।

<sup>§ ३</sup> पिण्डसाळणी सच (१८ १ १)

पिण्ट और चिक्रिमार

मसिपिण्ड को आकाश स आसे शेखा । इसी राजगृह में चिकिमार वा ।

§ ४ निष्छयोरिक्स सुच (१८ १ ४)

गास उत्तरा भार मेडों का क्साई

साम बचर हुन प्रदेश को हैया । पद्य इसी राजगृह में शेषों का कसाह या ।

६ ५ जसिस्फरिक सच (१८ १ ४)

सलयार और समर का कसाइ

मानुग । गृहकुर वर्षत स उत्तरते हुने एक असिकाम (अजिस्के शर्मे समसार प्रापे हों ) पुरुष को भाषाता हा यान करता । व अस्म पुत्र पुत्र कर उसी के सरीर वर निरंते थ । यह करासे आहेरकर कर स्टाधाः

बद्द इंगी राजगृह में सुबर वा बसाई वा ।

§ ६ मसिमागवी सस (१८ १ ६)

धर्सी जैसा साम और यहनिया

शब्दिनाम पुरुष को बाहता से करते देखा 👍

इती शब्दगृह में शूनमाह ( व्यव्हेलिया ) था ।

🖁 ७ उसकारनिक सच (१८ १ ७)

याच तेया गाम भीर शक्तपी हार्किम

द्वानीन पुरुष की भाषात से क्षाने देखा। १ प्रमी राष्ट्रपुष्ट 🎚 भावाची द्वावित का 🕕

# § ६. सीमछिन्न सत्त (१८ २, ६)

सिर कटा हवा डाक

·बिना बिर के एक कबन्ध को आकाश से जाते देखा । उसकी छाती ही में आँख और मेंह थे। । यह आर्तस्यर वर रहा था।

" वह सख इसी शजगह में हारिक नामक एक एक था।

§ ७. भिक्ख स्त (१८. २. ७)

भिक्ष

आवस । गुन्हफूट पर्वत में उतरते हुये मैने एक भिक्ष को आफादा से अते देखा ।

उसकी संघाटी कहलहा कर जल रही थी। पात्र भी लहलहा कर जल रहा था। काय-प्रकान भी । दानीय भी । खद आर्लेम्बर खर रहा था।

भिक्षको । वह संस्थ सम्बद्ध सम्बद्ध भगवान् कास्य के कालमें पापभिक्ष था।

§ ८. भिक्खुनी सुत्त (१८ २ ८)

भिक्षणी

भगपान काडवर के काल में पापिमक्षणी थी।

६९. सिक्खमाना सत्त (१८ २ ९)

शिष्टयमाणा

भगवानु काइयप के काल में पाषी शिक्ष्यमाणा थी।

8 १०. सामगेर सत्त (१८ २ १०)

थामणेर

पापी आसमेर था ।

§ ११, सामणेरी सच (१८, २, ११)

थायणेरी

यह आर्तस्वर कर रही थी। आञ्चस ! तब मेरे मन मे यह हुआ---आश्चर्य है, अदसत है। ऐसे भी लख होते हैं, ऐसा भी आसमाब-प्रतिलाभ होता है।

तव भगवान ने भिक्षुओं को आमन्त्रित किया-मिक्षुओं । मेरे श्रावक आँख खोलकर विप्रार करते हैं, जान के साथ विद्वार करते हैं कि वे इस प्रकार को भी जान लेते हैं, वेख लेते हैं, साक्षास्कार कर छेते हैं।

मिश्रुओं ! पहले भी मैंने उस श्रामणेरी को देखा था, किन्तु किसी से कहा नहीं । यदि मैं कहता तो शायद लोग विश्वास नहीं करते, यह चिरकाल तक उनके अहित और दु ख के लिये होता।

. भिक्षस्थी । वह धामणेरी सम्यक् सम्युद्धः भगवान् काङ्यप के कालमें पाप-धामणेरी थी । वह उस पाप के फल से लाखों वर्ष नरक में पदवी रही। उस कमें के अवसान में उसने ऐसा आत्मभाव-प्रतिसाभ किया है।

> हितीय वर्ग **अक्षण-संयुक्त समा**प्त

# दूसरा भाग

# द्वितीय धर्ग

# § १ कृपनिधुग्ग सुर्च (१८२१)

परझी-गमन करने वाटा कुर्ये में गिरा

'भाइस ! गुद्रकुर पर्वत से कपरते हुने शॅले गृह के कुर्वे में विस्कृत हुने एक पुरुप को देखा ! 'बह हुसी राजगृह में परकी के पास काने वाका था !

# 8 २ ग्**यलादी सु**च (१८२ **४**)

गृह कानेवासा तुए प्राह्मण

'पुत्र पुद्रय को देखा जो गृह के कुवें में गिरकर दोनों हानों स गृह या रहा या।

मिहानो । वह सरव इसी राजपूर में एक नावान था। असने सन्तव सन्तव सारात् काश्य इसासन रही मिहा-संव को मोजन के किये निसन्तित कर एक वर्षन में गृह भर कर कहा।—आप कोग जितनी सरकी कार्यें और इस्मी जायें।

# 8 ३ निच्छवित्थी सुच (१८ २ **३**)

चास उठारी हुई सिनास सी

व्यक्त बतारी दर्दे की को व्यक्तात से बाती देखा । ं ावद अर्थव्यर कर रही थीं। वद इसी राजगृह में बड़ी विकास की वी ।

# ु ४ मङ्गलिरमी सुच (१८ २ ४)

रमस वेंकनेवाकी मंग्रकी स्वी

हुगान्द्र से अरी कुक्द की को देखा"। 'आर्यकार कर रही थी। यह हमी राजगृह में रमक केंका करवी थी।

# हु ५ ओ किलिनी सुच (१८२५)

स्रा-सीत पर जंगार पेंकनेवासी

मूर्या चित्री और बद्दबारा एक भी को जाकाल से जाते देगा। वह आर्तकर वर रही थी। विश्वामी १ वह भी कस्तिक्ष राजा की बरावरी थी। वसने देग्यों से अपनी सीत के क्या पर कराही भेगार केंक दिया था।

भिक्षमा । वेसे ही, जिस किमी भिक्ष की मेत्री चेतांविश्वकि भावित और अभ्यस्त रहती है यह असनुष्यों से पीक्षित नहीं किया जा सकता है।

भिक्षभो । इसलिये, तुम्हे पेसा सीराना चाहिये-मेत्री चेतीविसुक्ति मेरी भावित होगी, अस्यस्त होगी, अपनी कर ही गई होगी, सिंह होगी, अनुष्टित होगी, परिचित होगी, सुसमारव्य होगी।

# s ४. ओक्खा सत्त (१९८४)

#### मेजी-माचना

धावस्ती '।

भिल्ला ! जो सुखह, दोवहर आर साँझ को सी-सा ओक्सा का दान दे ! और जो "'गाय के पुक दूहन भर भी मेंत्री की भावना करें, तो वही अधिक फल टेनेवाला है।

भिक्षओ । इसहिये, गुरहें ऐसा सीखना चाहिये-मेन्नी चेतीविमुक्ति मेरी भावित होगी' ।

#### ८ ५. सचि मच (१९. ५)

#### ग्रैजी-माचना

श्चाधस्ती ।

भिश्रुको । जैसे, कोई तेज धारवाली वर्ली हो । तय, कोई पुरूप आवे-में इस तेज धारवाली वर्षी को हाथ और मुक्के से उलट तुँगा, कृट दूँगा, पीट तुँगा। भिक्षओ ! सी, क्या समझते ही वह परुप पेला कर सकेगा ?

सहीं भन्ते !

सो क्याँ १

भन्ते । तेज धारवासी वर्धी को कोई प्रस्प हाथ और सुक्कें से पेसा नहीं कर सकता है । वहिक.

उस पुरुष का हाय ही जरुमी ही जायगा और उसे घटा कट भोगना पहेगा।

भिक्षको । वसे ही, जिस्र किमी भिक्ष की मैत्री चेत्रोविमिक्त भावित रहती है, उसे विव कोई अमृतुद्य दरा देना चाहै तो उसी को विपत्ति में पहकर कप्ट भीगना पहेंगा।

भिक्षों । इसकिये, तुम्हें ऐसा सीखना चाहिये-भीत्री चेतोविमुक्ति येरी मानित होगी ।

#### ६६, धनुग्गह सत्त (१९, ६)

#### अप्रमाद के साथ विहरना

श्रावस्ती । भिक्षुओं । जैसे, चार वीर धनुर्धर्-शिक्षित, हाथसाफ, अभ्यासी-चारों दिशाओं में खड़े हों। तय, कोई पुरुष आवे और कहें-में इन चारों के छोड़े हुये थान को पृथ्वी पर शिरने के पहले

ही हो आऊँगा। भिक्षा । तो क्या समझते हो, ऐमी फुर्टी होने से वह बन्न भारी फुर्तीवाल कहा जा सदेगा ? भनते। यदि एक ही के छोड़े वाण को पृथ्वी पर गिरने से पहले ले आये, तो वह सबसे बदा फुर्तीबाज कहा जायगा, चारों की बास सी दूर रहें।

भिक्षुओं। उस पुरुप की जो तेजी है, उससे भी अधिक तेल चाँद-सुरव हैं। भिक्षुओं। उस

१ भात पकाने का यहत वडा वर्तन ( तीला )--अट्टकथा।

२. उत्तम भोजन से परिपूर्ण भी बदे तोलो का दान करे— अट्टकशा !

# आठवाँ परिच्छेद

# १९ औपम्य-संयुत्त

#### हरे कटसच (१९१)

#### समी बक्रश्रस अविद्यासस्य है

प्सारीने सुवा।

पुरु समय भयवान् व्यावस्त्री में मनायपिणिक के आराम खेतवन में विदार करते थे। प्रमागन् योहे।—सिम्रुको ! बंधे कुरागार के कितन वरत हैं सभी कुर की ओर बाते हैं कुर पर का कार्त हैं कर में कोई रहते हैं कर में साकर मिक बाते हैं।

मिहाली । वैसे की जिसके व्यकुसक पर्म हैं समी अविधासुक अविधा में क्रमी रहने वाके अविधार में अस्तर अरहे और मिकने वाके हैं।

इसकिये हे मिशुशी ! तुन्हें ऐसा सीखवा चाहिये-अप्रमत्त होकर विहार करूँया ।

# ६२ नखसिख शुच (१९ ०)

#### प्रमात् न फरना

भाषस्ती ।

त्तव अपने मात्राप्त पर एक छोटा रक्ष-कप रक्ष कर आगवान् ने मिश्चर्यों को आतमित्रत कियार— मिश्चर्यों । पपा समझते को पद छोटा रक्ष-कण वहा है या अहायुव्यों है

अल्ल ! महाप्रत्यी वरी है। यह रजनाम तो यहा जहता है। यह जहना क्या महाप्रत्यी के किसी

भी भाग में नहीं समझा का सकता है।

भितुको । वैसे ही वे मान वहै जरा है वो समुख्य-वीति में क्ष्म्य क्षते हैं । वे सत्त्व बहुत है वो हुमरो योगि में क्षम्य केते हैं ।

इमिने है मिशुभी ! शुर्वे वेमा सीक्रम बाहिये-बन्नव होकर विदार करेंगा ।

# ६३ इतस्य (१९३)

#### मेची मापना

धायम्ती ।

मिसुना । जैसे वह उच्च जिलमें बहुत दिवाँ और अस्य पुरुष हों कोर अनुभी से सहस्र में नीरित बिथे प्रामें हैं।

िमुखी ! चैन ही जिल कियी भिछ की लगी चेनोविसुणिः अलावित और अन्तरपत रहती है कर असम्बर्ध में महत्र में पंतित किया कारा है।

विश्वभी ! बेरे यह कुछ विनयें अवर विवर्षे और अधिक युद्ध हों चोर-बाकुर्थे से बीदित

नहीं दिया प्राप्ता है।

# § ९. नाम सुत्त (१९. ९)

# ळाळच-रहित मोजन करना

श्रावस्ती''।

उस समय कोई नथा भिक्ष कुवेला करके गृहस्थ कुलों में रहा करता था। उसे दूसरे भिक्षुओं ने कहा—आयुष्पान् कुवेला करके गृहस्थ-कुलों में मत रहा करें।

इस पर पट निश्च बोला—ये स्थविर भिक्षु गृहस्थ-कुलों में जाया करते हैं, तो भला सुझमें क्या लगा है ?

त लगा हूं ? तब, कुछ भिक्षु जहाँ भगवान् ये वहाँ आये, और समयान् का अभिवादन करके एक भीर बैठ गये। एक और धैठ, दन मिक्षुओं ने समवान् को कहा—अन्ते। एक नया भिक्ष कुर्वेला करके। ।''तो

भका सहामें क्या लगा है १

सिक्षिओं। बहुत पहले कोई जराल में एक सरोवर था। कुछ माग भी वहीं वास करते थे। वे बस सरोवर में पैट, बूँद से कसल के बाल को उलाद, अच्छी तरह थी, कविष एटाकर निगल जाते थे। यह उनके बर्ग की र कल के लिये होता था। उसमें न तो उनकी सृत्यु होती थी और न से मृत्यु के समान दृष्क पाते थे।

सिक्षुओं। दमकी वेसावेसी छोटे छोटे हाथी भी दस सरीवर में पैठ, कमल के नाल को उपसाप, उसे थो, द्वीचद लगे इन्द्र ही निगल जाते थे। यह न सो उनके वर्ण के लिये दोला था और न वल के

किये। इतसे वे सर भी जाते थे, और सरने के लमान ह ज भी पाते थे।

निश्वको । बेसे ही, ये कायिर निश्व सुबह में पहन और पात-पीवर ने निश्वाटन के किये गाँव या करने में पेतते हैं, वे वहाँ धर्म का उपवेश करते हैं। उससे गुरूक्यों को बड़ी श्रवा होती हैं। जो निश्वा निक्ती है उसका ये लोमरोहत हो, उसके आदीनक और नि सरणका ययाक करते हुये, भीग करते हैं। यह उनके वर्ण और सन् के लिये होता हैं'।

भिक्षुओं। उनकी देखादेखी नये भिक्षु भी कर्य में पैठते हैं। वो भिक्षा भिक्तती है उसका वे कलचा हदिया कर भीग करते हैं, उसके आठीनव और नि सरण का कुछ ययाक नहीं करते। वह न

तो उनके वर्ण के किये होता है, और न वल के लिये।

भिक्षुओं ! इसकिये, तुम्हें ऐसा सीखना चाहिये—विना कळवाये हिंदिआये, तथा आदीनद और नि सरण का क्याळ रख कर जिल्ला का मोग करूँगा।

#### § १०. बिलार सत्त (१९ १०)

#### सराम के साथ मिश्राटन करना

श्रावस्ती ।

उस समय कोई नथा भिश्च कुवेळा करके गुरूष्य-कुठों में रहा करता था । उसे दसरे भिश्वजां ने कहा---आगुपमान् कुवेळा करके गुहूरच कुठों में मत रहा करें ।

भिक्षको से कहे जाने पर भी वह भिक्ष नहीं मानता था।

सब कुछ सिक्षु जहाँ समयान ये यहाँ गये, और समयान् का अभिवादन कर एक ओर येट गये। एक भीर मैठकर उन सिक्षुकों ने समयान को कहा—सन्ते। वह सिक्ष नहीं मानता है।

भिक्षुओं । यहुत पहले कोई विकार एक गर्दीरे के पास जूरे की ताक में येटा या—र्तसे ही जुड़ा याहर निकटेगा कि में झाट उसे पकड़ कर का आजाँगा । दुष्य की को देवी है। काँत्-सूरक की को रोजी है काँत्-सूरक के आगे आगे वक्तव साक्षे वेत्रताओं की का देवी है, उस सभी सं रोज जालुसंस्कार झील हो रहा है।

मिश्रुको । इसकिने शुर्मे ऐसा शीकमा चाहिने-अग्रमण होकर विहार कर्म गा ।

# १७ भागी सच (१९ ७)

#### गम्मीर धर्मी में मन लगाना, प्रतिध्य-करात

भावस्ती ।

मिश्रुभी ! प्रवंकाक में वसारकों को आगक बाग का एक सर्वन वा ।

उस भागक प्रकृत में बब कोई धेन हो जाता वा दो इसारह क्योग उसमें एक ट्रॉरी डॉक देवे थे। बोरैनीर एक ऐसा समय भावा कि सारे युद्ध की भारती दुरानी ककड़ी हुक भी नहीं रही सारे का सारा खरियों का एक करवर बन गया।

मिनुषो ! मधिष्यकाक में भिद्ध पेसे ही वन कारोंगे। हुन वे को यामीर, राम्मीर कार्य वार्क, कोकोचर सम्प्रतामतिसंयुक्त सुरू कहें हैं उनके वह कार्य पर काम न देंगे, सुनने की दृष्या न करेंगे समझ्ये की कोशिक्ष वहाँ करेंगे। वर्म को वे सीकार्य और अस्पास करने के कोग्य नहीं समझ्ये

को बाहर के लावकों से कई कविया सुन्दर ककर थीर सुन्दर क्यूजन करने को सूच वरेंगे वन्ती के बड़े बाने पर कान देंगे सुनवे की इच्छा करेंगे समक्षये को बोसिस करेंगे। वन्तीं चानों को वे सीकने भीर नज्जास करने के योग्य समझेते।

मिह्नभो ! इस तरह शुक्त ने किन गम्भीर स्क्रों को कहा है उनका कीप हो आवता।

सिद्धारी ! इंग्लिको तुन्हें ऐता सीवाना चाहिने — युद्ध ने जो गम्मीर सूप कहे हैं उनके कहे बाने पर कान हुँचा पुत्रने की इच्छा कहाँगा समझन की कोसिस कहेंगा। उसी वर्स को सीवाने और जनसङ्ख्यार करने के बोग्य समझूँगा।

# ३८ कलिक्स सच (१५८)

अक्दी के बने तकत पर सोना

देसा मैंने सुवा ।

पुत्र समय सथवान् वैद्यासी में मदावन की कुटावारशास्त्र में विदार करते थे।

मापान् बोडे----विद्वावी ! सिष्टक्क्ष्मी कन्दरी के बने तक्त पर लोते हैं व्यवस्य हो उत्साह के माय नपने कर्यन्य क्ला कार्य हैं। माधनाक देवेदियन अक्षाशहायु वनके विकस कोई पॉट-पॅच नहीं वा रहा है।

मिह्नुसो । जनागात काळ में किच्छनी कोम को सुकुमार तथा कोमक दाव पेर बाके होंगे । वे गरेपार विभावत पर गुक्तगुक लक्षिये कमा दिव कर बावे तक सोचे रहेंगे । यब मगचराव " को उनके विभट्ट पॉव पेंच मिक कावगा ।

मिश्चमी ! इस समय क्षिष्ठ कोग ककरों से बने तकत पर लोते हैं अपने उसीग में आठापी और अभगत्त दोकर विदार करते हैं ! याची मार इनके विकल और वॉक-मेंच कार्र पर रहा है !

भिश्चकी । अवागत काक में भिश्च कोग "दिन कर वाने तक सीथे रहेंगे । उनने विरद्ध पार्थ मारे को दाँग-रंग निक्त कालगा।

सिमुक्ती ? इसकिये गुरुवें देशा शीवाना चाहिये—कक्षी के बने शब्दा पर शीवेंना; अपने क्योग में शतापी और प्रवस्त होकर विदार कर्केंगा |

# नवाँ परिच्छेद

# २०. सिश्च-संयुत्त

# **१ १. कोलित सुत्त (्२०. १)**

#### आर्थ मौन-माच

ऐसा भैने सुना।

एक समय भगवान आवस्ती में ।

पहाँ आयुक्तान् सहासाद्गल्यायन ने भिक्षुओं को आमिन्नत किया--है भिक्षुओ !

"आग्रस ।" कटकर मिक्सओं ने उत्तर दिया ।

आयुप्पात् महामोहत्वायन योहे—आयुस ! एकान्स मे प्यान करते समय मेरे मन मे यह वितर्क वडा—आर्य तप्पी-आय, आर्य तप्पी माय कहा जाता है, सो यह आर्य तप्पी-भाव क्या हे !

आहुस ! तय मेरे मन में यह हुआ-भिक्षु वितर्क बीर विचार के शास्त हो जाने से हितीय प्यान को प्राप्त पर विवार परसा है। यहाँ आवै तत्वी भाव है।

आयुता तो में द्वितीय ध्यान को आस कर विद्वार करता हूँ। इस प्रकार विद्वार करते हुये वितर्ज-सहरात प्रचार्च अस में बढ़ती है।

आंधुल <sup>1</sup>तन, भगजान् ने किन्न से मेरे पास आकर यह कहा—हे सीहल्यायन, हे माह्यण ! आर्य तूर्णा-भाव में प्रमाद मत करो । आर्य तूर्णी-माथ से चित्त को रिधर करों, चित्त को एकाम करों, चित्र को छा। हो ।

आदुस 'तय, में दितीय प्यान को प्राप्त कर विद्यार करने क्या। यदि कोई ठीक में कहे, "गुरु से प्रेरित दोकर श्रावक ने सहा अभिज्ञा को प्राप्त किया" तो यह पूरी मेरे ही विषय में कह सफता है।

#### § २. उपतिस्त सुत्त (२० २)

#### सारिपुत्र को शोक नहीं

#### आवस्ती ।

सारिपुत्र बोले —शायुस ! एकान्त में ध्यान करते समय मेरे मन में ऐसा बितके उठा— क्या लोक में ऐसा कुछ है, जिसको विपरिणत होते जान मुझे घोकादि उत्पन्न हों ॥

बाबुत <sup>1</sup> तम, मेरे मन में ऐसा हुआ---छोक में ऐसा कुछ नहीं है, जिसको विपरिणत होते जान मुखे शोकादि हों।

पेसा कहने पर आयुष्मान् आतम्ब बायुष्मान् सारिपुत्र से बोळे---बायुस सारिपुत्र ! क्वा सुद्ध को मी विपरिणत होते बान बायको होकादि न होंगे ?

आबुस आवन्द ! खुद को सी विपरिणत धोते वान खुछे शोकादि च होंगे । किन्तु, मेरे मन में ऐसा होगा---ऐसे मतापी, महर्द्धिक और महाजुभाषी, खुद अन्तर्थान मत होंचें । यदि सगवान् चिरकारू सिक्षुमा ! तब जूहा बाहर निकका | बिकार स्वयद्या मार उसे सहस्रा नियक गया | जूहे ने दस विकार की धॅरुवी-रूपीयी को काट दिया | उससे वह सूखु को मास हुआ वा सूखु के समान तुथ्य को | सिक्सने | वैसे की किसने सिक्स गाँव या करने में सिकारण के किये पैसने हैं—गर्गाग करन

सिद्धको । मैसे ही किसने शिक्ष गाँव या करने में शिक्तरन के किये पैरते हैं — शरीर वर्ष चीर चिक्त से सर्वयत स्थातियाँन इत्तिनों के साथ ।

बह वहाँ किसी अपर्य स्त्री को बेसता है। उससे उसके चित्र में बदरवस्त राग उठता है। उससे

वह बहुत करने वर्ष इस के नुस्ता व । उससे बतक र पर म बताबुद्ध हों में मध्या व । उससे बतक र पर म बताबुद्ध हों मा मध्या व । उससे बताब हो स

मिलुनो ! को शिक्षा छोषकर पुहस्य पम जाता है बसे इस कार्यविश्व में मृत्यु ही कहते हैं ! मिलुनो ! को मनका ऐसा मैका हो जाता है वह सूत्य के समान श्रीफ ही है !

ाशुक्ता । का नगका प्रसानक वाचावा व वव कुप्युक्त काराग कुष्य दाव। प्रमुक्ती : इसकिये दुर्व्हे ऐसा सीकता काहिये— सारीत, वयन और सन से रिम्नात ही स्मृति पर्जविक्तार से गॉव का कामी में सिक्षातक के किसे वैर्तिता।

# ६ ११ पढम सिगाल स**च** (१९ ११)

# अप्रमाद के साथ विद्याना

ध्यावस्ती ।

मिल्ली ! रात के मिनशारे तुमन सिवारों को रोते सुना है ?

शिक्षका । सर्व के निगसार प्रथम सिमारा का सर्व श्रुमा है । हाँ मन्त्रे !

तिमुली | यह कर शामक उद्धाणका बासक रोग से पीतित होता है । वह बहाँ जहाँ बाता है तका होता है बैस्ता है या सीता है वहाँ वहाँ वहाँ वर्ग रहा हमा क्वती है।

तिश्वमो ! कोई शाववपुत्र (च तिश्व ) पैसे शाससमाच प्रतिकास का प्राप्त करते हैं । तिश्वमो ! इमक्रिये तुन्हें पैना मीदना व्यक्तिय—अपमण डोकर विद्वार कर्जां।।

## ६ १२ दविय विगाल स्त (१९ १०)

#### द्दतब होना

भाषस्ती

'दब सियारों में भी कृतकता है किन्तु क्रुड़ निश्च में नहीं है।

भौपम्य संयुक्त समाप्त

इस तरह, इन महानागों ने एक दूसरे के सुभाषित का अनुमोदन किया।

§ ४. नव सुत्त (२०४)

#### जिथिता से निर्वाण की प्राप्ति नहीं

अस्यस्ती । इस समय कोई नया भिक्षु भिक्षाटन से छीट ओवन कर छने पर विदार में पैठकर भव्योक्षुक युपनाप देठ रहता था। भिक्षुओं को चीवर बनावे में सदावता नहीं करता था।

तव, कुछ भिक्ष अहाँ भगवाम् ये वहाँ भागे, और भगवान् का अभिवादन कर एक ओर बैठ गये।

• अस्ते । वह भिक्षओं को चीवर वनाने में सहायता नहीं वरता है।

तव, भगवान् ने एक भिक्षु को आमन्त्रित किया— है भिक्षु ! जाकर उस भिक्षु को मेरी ओर से कडो. "आदस ! बद्ध आएको बला रहे हैं।"

े तय, वह सिक्षु अहाँ भगवान् ये वहाँ आया, और भगवान् का अभिवादन करके एक ओर वैदेशाया।

यक गया। पुक्र और बँटे हुये उस फिक्कु से भगवाच् थोछे—-फिक्कु श्वयानुझ, सचर्मे' महापक्षा नहीं करते हो ?

भन्ते ! में भी अपना काम करता हैं।

तय, भराबाज् में उसके विक्त को अपने विकास सं जान सिक्षुओं को क्षासन्त्रित किया— सिक्षुओं। तुम हर भिक्षु से भत करों। यह भिक्षु इक्षी जन्म में सुख पूर्वक विदार करने वाले चार आभिचैत्रसिक प्यानों को जन जैसे चाहना है माह कर देता है। यह इक्षी जन्म में महाचर्च के उस परम-कल को जान, साक्षात कर, और प्राप्त पर विदार करता है, जिसके किये कुळपुत्र अच्छी तरह वर से वेघर हो प्रमणित हो जाते हैं।

भगवान् यह बोले । यह कहकर शुद्ध किर भी बोले---

श्चिपिणता करने से, भारत हाकि से, यह गिर्नोण नहीं प्राप्त होता, सभी हु खों से खुदा वैभेगस्ता । यह गवत्रवान सिक्कु, यह उत्तम पुरुष, अन्तिम वेह शारण करता है, सार को विश्कुल बीत कर।

> § ५. सुजात सुच (२०. ५) सुद्ध द्वारा सुजात की प्रशंसा

श्राचस्ती ।

तथ, मायुष्मान् सुजात जहाँ भराषान् थे वहाँ आये ।

भगवान् ने बायुष्मान् सुजात को बूर हो से बाते देखा। देखका भिक्षकों को आमिन्त्रत किया — मिल्लुओं । दोनी तरह से कुछतुत्र होमता है। जो यह अभिक्य = इसंनीष = मासादिक = असन्त सीन्दर्य से सुक्त है, वह हसी जम्म में शक्षप्यचे के उत्त परम-फळ को वाब, सालाद कर, और प्राह कर विहार करता है, विसक्त किये कुळतुत्र अच्छी तरह बर से वेयर हो प्रतिनित हो जाते हैं।

'यह कह शब फिर भी बोळे-

यह मिख्र शोभता है, ऋजुभूत चित्र से, सभी बन्धनों मे अलग होकर छट गया है, तक ठहरें तो यह बहुतों के दिल और सुका के किये, श्रीसार की अनुकाश के किये तथा देवता और मनुष्यों के अर्थ हित और सबा के किये होता ।

सबप्तब में बालुप्तान् सारिश्वत से 'बहुंबार, मसंबार, और मानानुसय किरबाध से उठ गया या । इसीकिये दुइ को मी निपरिजत होते जान आसुप्मान् सारिपुत्र को सोकादि वहीं होते ।

#### ह 🤋 घट सच (२०३)

#### भप्रधावको की परस्पर स्ततिः, आरब्ध-सीर्थ

धावस्ती ।

इस समद भाषुष्मात् मारिपुत्र और भाषुष्मात् महामौत्रस्यायन राज्ञगृह हे वेसुवत फलन्द्रक-नियाप में वक ही बगड बिहार करते थे।

तव जामच्यान सारिप्रक साँक्ष को स्थान से वद वहाँ आयुष्पान महासीवस्थायन ये वहाँ गये भीर क्रमन क्षेत्र के प्रकृत पुछ कर वक स्तोर बैड गर्ने ।

प्क जीर 🚉 आयुष्मान् सारिपुत्र आयुष्माप् महामीहृस्थायन् स बोस्रेः—आहुस मीहृस्वायन् ! भापनी इन्द्रियाँ विप्रसक्त हैं। शुक्र-वर्ग सर्वेश और परिश्च है । क्या बाल कायुष्पाल सहासीद्रश्यावन ने सान्य विद्वार से विद्वार किया है ?

मानुम ! कात्र मेंने ओसारिका विद्वार से विद्वार किया है। और पार्मिक कथा भी हुई है।

किमके साथ चार्मिक क्या हुई 🕻 🕈

बाबुस ! भगवाब के माथ।

बाबुध ! मगवान् तो बहुत वृत आवस्ती में विदाद कर रहे हैं। क्वा आप मगवान् के पास क्रकि में गर्म में का भगवान ही आपके पास आये थे ?

अ.इ.स ! व तो ऋषि स में भगवान् के वास गवा वा भीर व भगवान् मेरे पास भावे थे। किन्तु जहाँ भाषामुद्दे वहाँ तक मुझे दिग्य चमु और श्रोण उत्पन्न हुने। देसे ही वहाँ में हूँ दहाँ तर भगवान को दिल्प चनु और सीस उत्पन्न हुने ।

जातुष्मान् प्रद्वागीद्रस्थावन की भगवान् के साथ क्या कर्मक्या हुई है

आसूम ! मेंने भगवान् से वह बहा- मनी ! जारववनी है आरववनीचे बहा बाता है। सी भाररपंथीयं कैसे हाता है ?

आयुस ! मेसा कहते पर मनवाय हमसे वोके-मीहरूपायत ! मिश्च इस प्रकार आरहदवीये को विशार करता है-त्वका जहाक और इसी ही असे क्या बार्ष। सरीर में मांग और मीहित सी मार्न ही गान कार्य। विश्वा प्राप्त के बल्लाह भीते और पश्चम सं जो पांचा का सबता है बस विधा पार्च विभाग नहीं सुता । आहरणावन ! इसी तरह आरव्यशीर्व होता है ।

भावन । अगवाम के साथ हैरी वही बर्जवना हुई ।

आहुत ! असे वर्षतराम हिमाहत्य के सामने पन्यर बंबरों जी वृक्ष देर अवूनी है - वैसे ही आहु रमान् महानीहरूरायम के सामने हमारी अवस्था है। आयुष्माच् सहामीद्रशस्त्रायम वहे सुद्धिवारे अधायमानी है। यदि काई शेर करत भर भी दहर शकते हैं।

आपूर्त । प्रीम नवक के मुख करें करें के सामने बामक का मृद बादा करा अपूर्ता है। सेने ही इस जन्मान गारिका है शासने हैं।

जगराम् में भी भाषुप्ताम् लारियुत्र की अनेक प्रसार से वर्षामा की है-मारा में वार्रिपुत्र की वरद शीक में और प्रशास में यह मिश्र भी बार्रशन है यही वरम-वर है ॥

इस तरह, इन महानामों ने एक दूसरे के सुभापित का अनुमोदन किया ।

# § ४. नव सुत्त (२० ४)

#### क्षिथिलता से निर्वाण की प्राप्ति नहीं

आधस्ती । इस समय कोई नया भिक्ष भिक्षाटन से खेट भोजन कर रेने पर विद्वार से पैटकर अपपीत्मुक खुपचाप केंट रहता था। भिक्षओं को चीवर धनाने से राहायता नहीं करता था।

तय, कुछ भिक्षु अहाँ भगवान् थे वहाँ भागे, और भगवान् का अभिवादन कर एक ओर वंट गये।

' भन्ते !' यह मिश्रभाँ को चीवर यनाने में सहायता नहीं वरता है।

तय, भगवान् ने एक भिश्च को आमित्रत किया— हे भिश्च ! बाकर उस भिश्च को मेरी ओर से कहो. "आद्रस ! बुद्ध आपको उला रहेँ हैं।"

ं सत्र, वह शिक्षु अहाँ भगवान् ये वहाँ आया, और सगवान् का अभिवादन करके एक और वैद्यागा।

एक और बैठे हुये उन्म भिक्षु में भगवान् बोछे---भिक्षु 'क्या तुम सम्म में सहायता नहीं करते हो ?

भन्ते । मैं भी अवना काम वस्ता हैं।

तप, भगवान् में उसके विक्त को अपने चिक्त से बान मिक्काओं को आसन्तित किया— भिक्काओं ।

मून पूर्व मिक्का से मत रूठो । यह निक्षा हुसी जन्म में सुख पूर्वक विदार करने वाले चार आभिचैतसिक
प्यानों को जब जैसे चाहना है प्राप्त कर देना है । यह इसी जन्म में महाचर्य के उस एरम-करू की खान,
साक्षात कर, और प्राप्त कर विदार करता है, जिसके किये कुल्युक्त अच्छी तरह घर से बेबर हो प्रमण्जित
हो जाते हैं।

भगवाम् यद्द बीछे । यह कहकर बुद्ध फिर भी वोके-

शिधिलता करने से, अरप शक्ति से, यह निर्वाण नहीं प्राप्त होता, सभी हु सों में छुदा वेशेषांछा। यह नवज्ञान निश्च, यह बत्तस पुरुष, अन्तिस बेह धारण करता है, सार को विश्कुल नीत कर।

§ ५. सुजात सुच (२०. ५)

वुद्ध हारा सुवात की प्रशसा

आवस्ती ।

सय, भागुदमान् सुस्नास अहाँ भगवाम् थे वहाँ भाये ।

भगवान् ने भागुम्मान् सुजाव को दूर ही से आते देखा। देखका भिक्षुओं को आमिन्त्रत किया -सिक्षुओं। दोंनों तरह से कुळपुत्र शोभवा है। जो यह अधिक्य = इर्सनीय = मासादिक = अस्पन्त सीन्दर्य से युक्त है, वह इसी जन्म में महाच्ये के उस परम-फढ को जान, साक्षात् कर, और प्राप्त कर पिद्वार करता है, जिसके किसे कुळपुत्र अच्छी तरह सर से वैपर हो धर्मित हो जाते हैं।

यह कह बुद्ध फिर भी बोळे—

यह भिक्ष सोभसा है, ऋजुभूत चिस से, सभी वश्वनों में कलम होकर छुट गया है, चनुपादान के क्रिये निर्दाण पा किया है सन्दिम देश भारण करता हैं। जार की विदश्क बीटाकर ॥

#### § ६ मदिय स्तत (२०६)

दारीर से नहीं जान से बढ़ा

मायसी ।

देव शायुच्यान् सकुष्टक अश्चिय कहाँ समावान् से वहाँ आसे ।

भरावान् वे बावुष्मान् वकुण्डक सदिन को दूर हो से काते देखा । वेक्कर प्रिश्नुकों को सामन्त्रित विद्या—मिश्नुको !: इस कोडे कुक्य अव सादे हुने विश्व को काते देखते हो ?

शॅं मन्ते !

भिष्ठको ! वह भिष्ठु वही व्यविकाका वहा श्रवहरी है। किम समाधितमें को इस भिष्ठ ने पा किया है वे मुक्स नहीं है। वह इसी बस्म में ब्रह्मचर्च के इस करिया एक को | ]

पड काकर उट किर भी बोले---

इंस कींच और प्रमुख हाची और फिलकरों हुग सभी सिंह से बरते हैं धरीर में कोई सुस्वता नहीं है इसी मकर मतुष्यों में कम डाव का भी बढ़ि प्रशासन् हो तो बढ़ कैसे ही समाप होता है सरीर से कोई बावक नहीं होता है

# ६७ विसास सच (२० ७)

धर्म का बयवेडा कर

पुँमा मैंने सना ।

एक समय भगवाम् वैद्याखी में महायन की कुटागारदाखा में विहार करते से ।

बस समय बायुरमान् विसारः पाञ्चाखयुत्र ने वपकानशाकः में मिसूनों को समीपदेश कर दिना दिया बता दिया बहु वनमें से उच्छि शैति से बिना विसी वक्षावर से परमार्च को बतात हुये विषय पर ही बहुते हुये।

सब अमर्थाम् साँहा को प्यान स उठ अवाँ यह उपस्थानसाका थी वहाँ गण और विधे आसने पर बैठ गये।

वैद्रवर जगवान् में मिहुओं को शामनिवत विवा-पिशुको । उपस्थानपाया में मिहुओं को कीन पर्मोपदेश कर रहा था १

भन्त । शामुष्याम् विसाधः वाज्ञावनुषः ।

तक समावात् ने कालुप्पान् विस्तान की कामनितः विवार—दीक दे विसारत (सुमने वदा अध्या विया कि भिक्तमी का यमीवदेश कर रहे थे )

" वह बहदर शुद्ध किर भी शारे ....

नर्वा कहने से भी क्षोग जान केते हैं शूनों में मिल हुने वरिवय का उनके वहते वह जान की हैं अद्युवन्त्र का उपनेत करते हुने ह पर्य की नहें मानांतिन करें, चरित्रों के स्वता की वारण करें सुधारित हों चरित्रों हा अवता है पर्यों है अक्षा अवता है ह

# ६८. नन्द् सुत्त (२०.८)

#### जन्म को उपरेक

धारमधी ।

तप, भगवान् के मारेरे भाई बायुष्मान् नन्द सीट और सिजिल किये चीधर को पहन, औंस में अञ्जन लगा, सुन्दर पात्र लिये जहाँ भगवान् थे वहाँ बाये, और भगवान् का अभिवादन कर एक और बैठ गये।

पुक ओर येंडे हुये आयुष्माण् नन्द से भगवान् बोले---नन्द । अञ्चापूर्वक घर से वैघर हो प्रवक्तित हुन्ये तुम शेमें कुकबुत्र के लिये यह उचित नहीं कि ऐसे सीटे और सिजिल किये चीवर की पहनो, आँख में अझन सताओ, ओर सुन्टर पात्र धारण करों।

गन्द! तुःहे तो अधित या कि आरण्य में रहते, पिण्ड पातिक और पासुकृष्टिक हो कार्सों में अमरेक्षित रहते।'

पाक्षत ४१त

•••यह कहकर शुद्ध फिर भी बोले.—

कप में नन्द्र को देखेंगा.

आरण्य में रहते, पांसुकृतिक,

भिक्षा से जीवन निवाहते,

कामों में अनपेक्षित ।

सर, उसके वाद आयुष्मान् नन्द आरण्य में रहने लगे, विण्डवासिक कीर पासुकृष्टिक श्री राये कार्मों में अनवेक्षित होकर विदार करते छने ।

# **५९. तिस्स** सत्त (२० ९)

#### नहीं विगड़ना उत्तम

थावस्ति ।

तय भगवान् के फुफेरे आई आयुष्मान् तिस्त वहाँ मगवान् ये वहाँ आये, और भगवान् का श्रीसवादन कर एक ओर बैट गये—दु सी, उदास, आँसू टकरासे।

तव, भगवान् आयुप्पान् तिस्त से बोले —ितस्त । तुम एक ओर येंढे दु खी, उदास और आँसू क्यों टक्स रहे हो ?

भन्ते । भिक्षुओं ने आपस में मिलकर मेरी नकल की है, और मुझे बनावा है।

तिस्त ! तुम सो भटे ही दूसरों को कहना चाहो, किन्तु उनकी सह नहीं सकते ।

तिरम्! शब्दापूर्वक पर से नेवर हो बनकित हुने हम जैसे कुळपुत्र के लिये यह उचित नहीं कि अपनी तो भक्षे नुसरी को काना चाहो, किन्तु उनकी यह नहीं सको । यदि इस दूसरों को कहते हो तो उनकी नहीं राजवा भी चाड़ियें

बह कह कर चुद्ध फिर भी थोले —

विगन्ते क्यों हो, अब विगनो, विस्ता ' वुम्हारा नहीं विगदना ही व्यन्त है, फ्रोध, सान, और साचा को दवाने ही के लिने, -विस्ता ' ग्रुस महाचर्य का आयहण करते हो ॥

# **६१० धरनाम सुस (२० १०)**

# भक्तका रहने वाला कौन १

ण्क समय भगवाण राजवाह में ।

यस समय स्पेषिर भार का कीई मिशु अवेका रहता था और शवक रहने का प्रसंतक था। यह शब्दमा ही गाँव में शिक्षारत के किये पैरता था; वहेका ही कीरता था अवेका ही प्रसन्त में वैस्ता था और व्यवस्था की विकास करता था।

तव कुळ मिश्च जहाँ अग्रवान् थे वहाँ आवे भीर धनवान् का श्रीमदादन कर एक मोर वैट तवं:

तब मतवान् वे एक विश्व को जासन्तित किया ।

एक जोर केंद्रे हुने आयुष्मान् स्वविद को समयान् बोका--श्वा शास है कि तुम अकेके ही रहते भीर कार्या करते हो ?

हाँ मन्ते ।

रचीर ! हम महेका ही कैंने रहते और बसकी मर्दासा किया करते हो !

मन्ते ! में अपेका हो गाँव में जिलारम के किये पेटता हूँ अवेका ही चंत्रमण करता हूँ। मन्ते इस सरह में अकेका रहता हूँ और अवेके रहते की ग्रासंसा करता हूँ।

स्पवित | इसे में महेका रहना नहीं बताता । जवार्च में अकेंब्रे कैसे रहा बाता है जसे गुनी

भव्यी तरह सन कराजी में कहता हूँ ।

स्ववित ! को बीठ गया वह महीज हुना; को कभी अनागत है उसकी बाद छोड़ी; वर्तमाय में जा सन्य-राग है उसे बीठ को । स्ववित ! पेसे ही शक्तार्थ में अकेका रहा काता है ।

" वह कर कर शह किर भी बीके!---

शर्माभिम् सर्वेषिष् पण्डित समी वर्मों में अञ्चलक्षा मर्वेष्मापी गुल्या के शीच हो बावे से विश्वका पेने ही पर को में जोच्या रहते वाका कहता हैं ह

६११ कप्पिन छच (२० ११)

मायुष्याम् कव्यन के ग्रणी की प्रशासा

भावसी ।

सर्व आर्पुरमान् महाक्रियम वहाँ भगवान् ये वहाँ वाये।

सावाद में व्यवसाद कियार की दूर ही ही जाते देखा । देख कर सिश्चर्यों को आसर्तित विका--सिश्चर्यों पुरा देखा गोरे जाके कैंदी बाक बाके शिश्च को जाते देखते हो ? हों सरों!

हों मन्छे ;

मिह्नुको | यह सिह्नु वर्षा कविष्यका वहा अनुसाव वाका है। जिन समापश्चिमों को हसने पा किना है ने सुक्त नहीं है। इसने नहावने के जब अनिया फक्को । यह कह कर मनवानु किर भी जीके---

नमुर्की हैं कतिए केंड हैं जी गीत का नवाक करने बाद है।

विद्याचरण से सम्मक, देव-मनुष्यों में श्रेष्ट हैं। दिनमें फुर्य तपता है, रात में चाँट शोभता है, सन्मद्ध हो क्षत्रिय तपता है, ब्राह्मण ध्यान से तपता है, सौर, सदा ही दिनराह, अपने तेज से ब्रुट तपते हैं।

§ १२. सहाय सुत्त (२० १२)

#### हो ऋदिमान भिक्ष

श्रावस्ती

तव, आयुप्तान, महाकप्पित के दो अञ्चर वित्र मिश्रु वहाँ भगवान् ये वहाँ आये। भगवान् ने उत्तरोगों को दूर ही से आसे देखा। टेप्स कर भिश्रुओं को आमिलता किया — भीरता ने से आप वे स्वर्ध के ?

भिञ्जुओं । इन दोनों को आते देखते हो ?

हाँ भन्ते ! ये दोनों भिक्षु बड़ी ऋदिवाछे और बढ़े अनुमान वाले हैं .।

यह कह कर सरावाज् फिर भी बोकें :---

ये भिछु जापस में भिन्न हैं, चिरकाल से साथी है, मदमं को उनने पा लिया है, कप्पिन के द्वारा, दुद्ध के धर्म में सिखाये गये हैं, जो आर्थ प्रयोदित है, अन्तिम टेंड को धारण करते हैं, मार को विश्वकृत जीत कर ॥

> भिश्व-संयुक्त समाप्त । निदान वर्ग समाप्त

तीसरा खण्ड

खन्ध वर्ग

# पहला पारिच्छेद २१. खन्ध-संयुत्त

*सल पण्णास*क

प्रहला भाग

मकलिता वर्ग

§ १. नकुलपिता सुच (२१-१: १ १)

चित्र का आतुर न होना

ऐसामिने समा।

एक ममग्र भगवाल भगें ( रेस ) में सुसुमारशिरि के भैस कला-वन मृगवाब में विदार मरते थे।

तब, गृहपति मक्कुलिपता कहाँ भगवान् थे वहाँ भाषा, और एक ओर बैठ गया।

एक और बेट गृहपति नकुरुपिता अगवान् से बोला--अस्ते ! में जीर्ण = बुद्ध = महरलक = पुरिषया = आयु-प्राप्त = हारे शरीर बाला हुँ, न जाने कब सर जाऊँ। भन्ते । सुही भगवान् और समी-भावनीय भिक्षुओं के दर्शन प्राप्त करने का बरायर अवकाश नहीं सिकता है। सन्ते ! भगवान सड़ी उप-वेश दें, जो चिरकाल सक मेरे हिस और खुल के लिये हो।

गृहपति, सच है। तुन्हारा करीर हार गया है, तुन्हारी आयु पुर गई है, तुम जीर्ण हो गये हो। गृहपति ! जी पैसे बारीर की धारण करते सुहुएं भर भी बाशेग्य की बाजा करता है वह भूर्ज छोए कर और क्या है ? गृहपति । इसिछिये. श्रम्हें ऐत्या सीखना चाहिये-भेश शरीर भक्षे ही जातुर हो जाय, किन्तु चित्र आसर होने नहीं पायगा।

तब, गृहपति नकुलियता अगवान् के कहे का अभिनन्दन और अनुमोदन कर, आसन से उठ, भगवान का अभिवादन और प्रदक्षिणा कर, जहाँ आयुष्मान लारिएल थे वहाँ गया, और उनका अभि-बावम कर एक और बैठ गया।

एक और येंडे शृहपति मकुलिपता से आयुष्मान् सारियुच बोले --शृहपति ! तुम्हारी इतिह्याँ प्रसन्त दील रही है, मुखवर्ण सतेन और परिशुद्ध है। क्या शुक्ते आज सराधान से धर्मकथा सुनने की मिछी है 7

भटा और क्या भन्ते ! अभी ही में अगवान् के धर्मोपदेशरूपी अभृत से अभिपिक किया गया हूँ। ... भगवान् ने कहा--गृहपति ! तुम्हें पैसा सीखना चाहिये-- मेरा क्षरीर भछे ही सत्तर हो जाय. किन्त चिच आतर होने नहीं पायशा ।

गृह्पति ! इसके आगे की बात अगवान् से पूछने को तुग्हें नहीं सूक्षी १- अन्ते । कैसे दारीर के भाष्ट्रर होने पर चित्त आतुर होता है ? मन्ते ! कैंसे पारीर के आतुर होने पर चित्र आतुर नहीं होता है ?

भन्ते ! मैं बड़ी दूर से भी इस कहे गये के अर्थ को समझने के लिये मायुप्तान साहित्रत्र के पास भाऊँ । अच्छा हो, भाबुप्मान् सारिपुत्र ही इसका मर्थं वताते ।

गृहपति ! तो सुनी सच्छी तरह सब खगाओं में बहता हूँ ।

सन्ते ! बहुत अध्या" कह गृहपति नकुक्षिता ने बाधुष्मान् सारिप्रथ को उत्तर दिया ।

बायुद्धान् सारियुत बोके—्यूद्धि ! कैस वारीर के बायुर दो बाने पर विक मी बायुर दो बाता है ! युद्धि ! कोई प्रयक्षण व्यवहान, बानों को न देवने वाका व्यवदार्थ को नहीं बानने वास्त , सार्य-पाँ में विनीत नहीं हुआ सप्युद्धां को न देवने वाका स्वपुत्यों के पाँ को गई बानने वाका सप्युद्धों के पाँ में विनीत वहीं हुआ स्प को अपनापन की विद्धि को देवता है। या करवान् को बयता सा अपने में कर को; वा क्या में अपने को देवता है। में कप हूँ, मेरा कर दि—पेसा मत में बाता है। वह जिस कप को अपने में बीर अपना समझता है वह विपरिश्वत हो बाता है वदक बाता है। उस कर के विपरिश्वत बीर अस्थान हो जाने से बसे शोक, रोजा पीडवा हु, ख, दोमंत्रस्य और जगागा को में !

अस्ता को अपनायत की प्रति से बेकाना है ।

संद्रामी ; सरशारों को ; विद्याल को व्यवसायन की इष्टि से देखता है। या विद्याल को क्ष्यमा; या जपने में विद्याल को; या विद्याल में क्ष्यमें को देखता है। में विद्याल हूँ, मेरा विद्याल है— पेसा मन में काता है। जह किस विद्याल को क्ष्यमें में और ज्यावा समझता है जह विपरित्त हो जाता है जन्मवा हो बाता है। उस विद्याल के विपरित्तक और जन्मवा हो जाने से उसे लोक रोबा-पीटना हुन्ज दीनेनस्य कीर बनायस होते हैं।

गृहपति ! इसी तरह अरीर के मातुर हो काने पर चित्र भी आतुर हो बाता है।

गृहपति ! कैसे बारीर के कातुर हो बावे पर क्रिय कातुर वहीं होता है ?

गूरपि ! कोई विद्वार आवैधावक, आवै को देवने वाका, आयों के वर्त का कानने वाका आवों के पर्त का कानने वाका आवों के पर्त में मुनिनीए सायुव्यों के वर्त में मुनिनीय होता है। वह क्य को नयागय की दीव से नहीं देखता है। में क्य को अपना; पा नयने में क्य को, वा क्य में क्य के नहीं देखता है। में रूप हूँ मेरा क्य से—पेसा मन में नहीं काता है। से क्य हूँ मेरा क्य से—पेसा मन में नहीं काता है। तक वस क्य के विपरिचय और अन्यवा हो जाने से साथावित नहीं होते।

वेदना को ; संहा को ; क्लानों को ; विकास की अपनायम की होई से वहीं देखता है । तक उस विज्ञान के विपरिनत और अन्यया हो वाने से क्ये सोकारि वहीं होते ।

गृहपति, ! इसी तरह वारीर के बातुर हो काने पर विश्व कातुर वहीं होता है ।

भारतुप्तान् सारिपुत वह वोके । गृहराति वक्किरिता वे सन्तुष्ट होकर बाबुष्पाद सारिपुत्र के कह का मिनन्द्रम किया ।

# ६२ देवद्द सुच (२१ १ १ २)

गुद की किया छन्द-धाग का दमस

वेमा प्रेने सन्।

च्छ मान्य भागवान् शान्यों के देश में द्यापृष्ट्' नामक शान्यों क करने में विद्वार करते थे। सब कुछ पश्चिम को लोग लाने वाले मिछु कहाँ मगवान् वे नहीं लागे और भगवान्का क्षमि बादन कर पक्ष कीर्य के लोग

र रामामा के स्वक्त्र के पात पता हुआ। नगर दनदर कहा जाता या आर आतमात का विकास भी हुनी नाम थे प्रविज्ञ या-सहस्त्रा।

भिक्षुओं ! सारिपुत्र से तुमने छुटी छे ली है १

नहीं भन्ते । मारिपुत्र से इसने हुटी नहीं की है ।

भिक्षुको । स्मरिपुत्र से पुटी के छो। सारिपुत्र भिक्षुकों में पण्टिन ए, सबस्यवादियों का कनुमाहक है।

"भन्ते ! बहुत अच्छा" कह, उन भिक्षुओं ने भगवान् को उत्तर दिया ।

उस समय आयुष्मान् सारिपुत भगवान् के पास ही किसी प्रश्नाला नामक गुम्त्र के नीचे करे हैं।

सव, से भिक्ष भगवान् के भाषित का अनुमोदन और अभिगन्दन कर, आसन से उट भगवान् की अभिवादन और प्रवृक्षिणा कर, जहाँ आयुप्तान् सारितुच ये वहाँ गये। जाकर, आयुप्तान् सारितुच से कुराङ क्षेम के प्रदन पूछ एक ओर चेठ गये।

एक और येंड, वे भिक्षु आयुष्मान् सारियुत्र से योके:—भस्ते ! इस पश्चिम वेंश में जाना चाहते हैं. पश्चिम देश में निवास करने की हमारी इच्छा है । इसने बुद्ध से हुटी के की है ।

जिससे आप भगवान् के धर्म को ठीक-ठीक कह सकें, कुछ उरुटा-पुल्टा न कर दें, धर्मानुक्छ ही बोलें, यातचीत करने में किसी सहीय स्थान पर नहीं पहुँच जायें ?

आहुम ! इस कटें गये का अर्थ जावने के किये इस दूर से भी आयुष्मान् सारिपुत्र के पास आहें ! इसका अर्थ आप आयुष्मान् सारिपुत्र ही कहते तो अच्छा था |

क्षालुम ! तो सुमें, अच्छी तरह सन लगावें, से कहता हैं।

"आयुस ! बहुत अच्छा" कह, श्रिक्षकों ने आयुष्माम् सारिपुत्र को उत्तर दिया ।

भायुद्मान् सारियुत्र योळे — आहुस । पण्डित अतुष्य आप से पूछेंगे, "आहुप्मानों के गुरु की क्या शिक्षा है, क्या उपदेश है १" आहुस । ऐसा पूछे जाने पर आप यो उत्तर डेंगे—छन्द्राग को दसन करना हमारे गुरु की शिक्षा है।

शाबुता! ऐमा उचर देने पर भी, ऐसे पण्डित होग हैं जो आयो का प्रश्न प्रखेत, "आयुक्तानों के गुरू छम्दाना को ईसे दमन करने का उम्हेस देसे हैं १" आखुत ! ऐसा पुळे साने पर आप यों उचर हैंने—कप में छन्दाना का दमन करना हमारे ग्रुस्क सिका है, बेदाना में ', तंत्रा में ', सकारों में ', दिखान में ।

आहुत । ऐसा उचर देने पर भी ऐसे पण्डित छोग हैं जो आने का प्रदन पूछेंने, ''आयुक्तानों के गुरू रूप में पना दोष डेसकर उसमें छन्दराग को दमन करने का उपदेश देते हैं ?'' घेदना , सग्ना , सरकार , पित्राग '। आहुता । ऐसा पूछे जाने पर आप यो उचर होंने—जिसको रूप में राम कपा हुआ है, छन्द छमा हुआ है, पेम कपा हुआ है, उपस छमी हुई है, कपा छमा हुई है , कपा कप्ती हुई है, कपा हमा है है । वेदना , सहा , सहा , सरकार , विज्ञान । इमारे गुरू रूप क्षेत्र में इसी दोप को टेसकर उसमें छन्दराग को दसन वसने

२ दुर्खी का मण्डण । यह मण्डण पानी वाले प्रदेश में या । उसके नीचे ईटों का एक वगला-सा बना दिया गया या, जो बटा ही शीतल या—लाहकथा ।

का उपरेक्ष देते हैं। बेहता । सक्षा । संस्कार । विश्वान में धन्तरात की बसव करने का बपरेस 455

काबुस ! पैसा अचर दुवे पर भी पैसे पविषत हैं जो आने का मदन पूर्वेंने "आमुध्यानीं के ग्रुक वे क्या आम देखकर क्षण में कुन्त-ताग की दमन करने का कपरेस दिवा है। देवना । संसा" । संस्थार । विज्ञान 🍄 शाबुस ! पेसा वृक्षे वाले पर आप वो बक्त होंगे—क्य में जो विगठराग विराजनसङ्ख्या विराज्योक्त विराजनिकाल विराजनिकाल और विराजनक्य है उसे कर के विपरिकार और अन्यया हो बाबे से क्षोकादि वहीं होते । बेदवा ; संज्ञा ; संस्कार; विज्ञान । इसी काम की देख-कर इसारे शुद्ध ने क्य में चेदवा में क्षेत्रा में संस्कारों में विकास में सम्बरास की बार काने का अपनेच विद्या है।

आयुस ! अबुसक वर्तों के साथ विद्वार करनेवाका इसी अन्म में यदि शुक्र से विद्वार करवा उसे विचाद परिवाह का जनावास बहीं होते। सरीर कर कर मरने के बाद उसकी गृदि कच्छी होती।

तो सगवान सकसब धर्मी का प्रदास वहीं बताते।

मानुस ! क्योंकि अञ्चलक प्रमों के साथ विद्वार करने स दूसी अन्य में दूरक से विद्वार करता है उसे दिवात परिकात और क्यापास होने हैं चवा धरीर कर कर मरने के बाथ वर्षति को ग्रास होता है इसी से मगबाब ने महताक बजों का महाभ बताया है।

मात्रस ! क्रमक कर्मी के साथ विद्यार करने से विदे इसी जनम में हुएक से विद्यार करता ता

भगवान असब पर्से का सक्तर करना नहीं बताने ।

बादुम ! क्वोंकि क्रमान क्रमों के साथ विद्वार करते से इसी अन्य में सक स विद्वार करता है बसे विश्वातायि नहीं होते तथा क्षतीर छर कर अरने के बाद उसकी गति वच्छी होती है हमी से अग वान ने क्रसक-धर्मी का सामय करवा बतावा है।

भावप्साय सावितक यह लोके । संतर शोधर का मिस्तकों ने आयस्तात सावितक के अने का

समित्रका किया ।

# 🖇 ३ पटम डाछिरिकानि सच (२१ १ १ ३)

#### ज्ञागन्तिय-प्रश्न की स्थाक्या

वेसा मैने सुना।

एक समय व्यक्तमान् महाकारयायम अवस्ती में कुररदार के बीचे पक्त पर विहार करते में। त्रण, शहरति शासिशिकाणि नहीं आयुष्मान् सहाकात्वाथव थे वहाँ आवा और शबका समि-बार्थ कर एक और वैद राया । यक और बैद, गृहपति हाकिरिकाणि काक्यान प्रशासाकास्य के स्रोतान भन्ते । भगवाम् ने अध्ववनिक ग्रामन्तिय प्रदेश में क्या है---

वर को छोन देशा दूसनेशका

सुनि गाँव में कगाय-बसाय व करते हुये कामी से रिश्व कहीं अपनापन न स्रोड किसी मनुष्य से कुछ संग्रद वहीं करता है ॥

भन्ते । भगवाबु में जो बहु संक्षेप से कहा है उसका विस्तार-पूर्वक कैसे कर्व समझवा चाहिये ! गुरुपति | करवाद विशास का कर है । क्यवात के कप में बैंबा हुना विशास कर में १ हमेवाका कहा क्षाचा है। गृहपांत ! वेदवायानु विशास का जर है। वेदवाबातु के साम में बँबा हुआ। विशास वर में रहने बाका कहा काता है। गुहरति ! संशाधातु विद्यान का नर है। संशाकात के रागा में वेंबा हुना षिज्ञान घर में रहने वास्त कहा जाता है। सृहपति !संस्कारधातु विज्ञान का घर है। सरकारधातु के राग में विधा हुआ विज्ञान घर में रहने वाला कहा जाता है।

मृहपति ! इसी तरह कोई घर में रहने वाळा कहा जाता है।

गृह्वति । कोई बेघर कैसे होता है ?

गुह्रपति ! जो स्पषातु के प्रति छन्ड स्राग = नन्दि = तृष्णा = उपादान तथा चित्त के अधिष्ठान, अभितियेदा और शतुक्षय ६, सभी पुद्ध में गर्हाण=डच्छित्रमूल=किर कटे वाष्ट्यक्ष के ऐसा=मिटे=भिवय्य में कभी उठ न मकते वाले हुये रहते हैं। इसीखिये, पुद्ध वेषर कहे जाते हैं।

गृहपति ! जो चेदनापातु के प्रति''', संज्ञाधातु के प्रति''', संस्कारधातु के प्रति'''। इसी क्रिये ब्रह्म जेवर कहे जाते हैं।

गृहपति । पेसे ही कोई वेवर होता है ।

गृहपति । कैमे कोई निकेतसारी होता है ?

गृहपति ! जो रूप निमित्त के निर्मेत में फँसकर बँध गया है वह निकेससारी कहा तासा है । जो शब्दनिमित्त '', गन्धनिमित्त '', रसनिमित्त ' , स्पर्यनिभित्त ' , धर्मनिभित्त ' ।

गृहपति । कैसे कोई अनिकेतमारी होता है 7

गृहपति । लो हप निमित्त के निकेत में फॅसकर येंघ जाता है, यह जुड में महीण = उच्छितस्य = तिर करे तालपुर के पेसा = मिर्ट=भविष्य में कभी ठठ न सकने वाले हुये रहते हैं। इसीलिये, जुद सन्देतसारी करे जाते हैं। बाल्ड', नस्य '', रस''', स्पर्य ', धर्म ।

गृहपति ! गाँव में लगाव-यक्षाव करने बाह्य कैसे होता है ?

गृहपति । कोई (भिक्षु) गृहस्कों से मस्य होकर विहार करता है, उनके आनन्द में आनन्द मनाता है, उनके बोफ में कोकित होवा है, उनके खुल-हु ज में खुली-हु ली होता है, उनके काम काम आ पदने पर अपने भी जुट जाता है। गृहपति | हसी तरह, गाँव में क्याय-वसाय करने साला होता है।

गृहपति ! कैसे गाँव में लगाव-वक्षाव करने वाला नहीं होता है ?

गृहपति ! कोई ( जिल्लु ) गृहस्यों से असंख्य दोकर विदार करता है, उनके आगन्य में आमन्य गहीं मनाता, उनके तोक में बोकिस नहीं होता, उनके खुल-तु ल में खुली-तु भी नहीं होता, उनके कास-काल भा पढ़ने पर अपने भी लुद नहीं जाता है । गृहपति ! इसी वरस्, गाँव में क्याब-यहात करने वाका गरी होता है।

गृहपति ! कैसे कोई कामीं से अश्कि होता है ?

गृहपति ! कोई कार्मी के व्यवस्तराग होता है, व्यवस्तकण्य=अविनात्रभेम=अविनातिवास= अविनात-परिकाह=अविनात्रजण होता है । गृहपति ! इसी तरह, कोई कार्मी से अविक होता है ।

गृहपति ! कैसे कोई कामों से रिक्त होता है ?

गृहपति ! कोई कामों में विश्वतराग होता है, विगतछन्द≔विगतमेम≔विगतिपास≔विगतपि । हाह≔विगततृत्य होता है। गृहपति ! इसी तरह कोई कामों से दिक होता है।

गृहपति ! केसे कोई कहीं अपनायन बोहता है ?

गुहराति ! किसी के मन में ऐसा होता है—अनायतकाल में मैं इस रूप का होजें, इस बेदना ' विज्ञान का होजें। गृहपति ! प्रसी तरह कोई अवनापन नोइसा है।

गृहपति । कैसे कोई कहीं अपनापन नहीं जोसता है ?

राष्ट्रपति ! किसी के सन् में ऐसा नहीं होता है—अनागतकाल में में इस रूप का होकें, इस वेदना " विज्ञान का होकें । गृहपति ! इसी वरह, कोई अपवापन नहीं ओएता है ।

गृहपरि । कैसे कोई किसी मजुद्य से शहर करता है ?

गृहपति ! कोई इस मकार कहता है—तुम इस वर्मिकाय को नहीं बागते हो में इस कर्मिकाय को बानता हूँ तुम इस पर्मिकाय को क्या बानोगे ! तुम निरुषा मार्ग पर आवन हो में तुमार्गपर बावक हूँ ! को पहले कहना पासिये वा उसे पीछे कहा, को पीछे कहान चाहिये या उसे पहले ही कहा दिया ! मेरा कहता विपयानुकूक है तुम्हारा कहना तो विषयान्य हो गया ! को तुमने इतवा कहा सभी अकर गया ! तुमारे विषद तुम ने दिखाना है, वह कुटने की कोशिय करो ! तुम तो पकड़ा पर्म परिता तुम तह है तो किया पर्म हो ताकत है तो विकाश ! गुदर्शित ! इसी तहता कोई किसी समुख्य से स्नीवा करात है !

गृहपति ! कैसे कोई किसी समुख्य स संसद गई। करता है ।

सूरपति ! कोई इस प्रकार नहीं कहता है--तुम इस अमैनिनय को नहीं जानते हो में इस बर्म दिनय का कामता हूँ । गृहपति ! इसी तरह कोई किसी मञ्जूष्य से इंसर नहीं करता है।

राहपति ! यही मनवाय ने शहकवर्तिक मानन्तिय प्रकृत में कहा है-

बर को छोष वेचर धूमने वाका

सुनि गाँव में बनाय-वस्ताय व करते हुये कामों से रिन्त, कर्सी अपनापण म बोद

किसी मनुष्य स इक शंशर वर्श कारत है।

गृहपति ! मगवाम् ने जो यह संक्षेप से कहा है उसका विस्तारपूर्वक एसे 🛒 अर्थ समझका वाक्ति !

# <sup>§</sup> ४ दुतिय हालिदिकानि सुच (२१ १ १ ४)

शक प्रदेश की स्थाक्या

र्यमा सैने सुना।

एक समय मायुष्मान प्रद्वाकृत्यायम अवासी में कुररभ्रट के कवे वदत पर विद्वार करते थे। सप " एक भार वट गृहपति दाकिरिवानि वासुष्मान् श्रहकात्वायम सं वीकाः—सासी । समवाद ने बहु शह भरत में कहा है।—

'जो धानव वा माह्यण एच्या क शय से विश्वास हो गय हैं वन्हीं काएता कर्तव्य प्रा का किया है वन्हीं गया— वोग-क्षेत्र वा क्रिया है व ही सावतः ब्रह्मकारी है बन्दिंग करता श्वाम की पा जिया है तथा देवताओं कीर सन्दर्भी के हो भे बेह हैं।

प्रस्त । याचान् के इस संखेत में नहें गये का विन्तारपूर्वक वर्ष कमें समझमा चाहिय । गृहर्वति ! कणवानु के प्रति जो छन्त्याम=वामन्द सप्टवा=नृष्या=वपास्त्र तथा वित्त के

अधिकात अधिनिदेश और अनुसार है जनके अवस्थितासभीतोत्रकण्यात से विश्व विद्वाल अद्या साहा है। गृहदति ! वेदमा आहुई सति " । स्थार यानु" । शेरकार-साहु । विकास आहु । गृहदति ! नहीं समावाल न जाक महत में जहा है जो समझ वर साहाल तृष्या के अवसे ।

शुद्दति ! नदी भगवान् न वाक प्रदेश में कहा है जो ग्रमल का ग्राह्मल मुख्या अंश्वनसे । १० शुद्दति ! भगवान् के इस संस्था व नदे गये का विन्नारक्षक कर्य तेसे दी समसना वाहिये ।

# ६ ७ समाधि सुच (२१ १ १ ५)

समाचि का अध्यान

रेमा धेने जुना।

[अधुक्ती ] समाजि का अध्यास करो । शिधुका ! समाहित बाकर निध्य चनार्थ की जान सेता

हैं। किसके युपार्थको जात रुता हुए कवा के उसने और दूधने के। बेटना के उसने और दूधने के। संदार्क । सहराही केंग्या विद्यान केंग्या

भिधुओ ! स्व का दसना परा ई ? चेजना " : मजा . संस्कार" , विज्ञान का दसना

ww. £ 2

सिक्षुओं ( कोई ) आवर्त मनाता है, शावस्त्र के शब्द कहना है, उसमें हुए शाता है। किसमें

स्त्य में आतान्द्र समाता है, आनन्द्र के घटन पहला है, उपके द्वय आता है। इसम यह रूप में आपता है। आता है। रूप में तो यह धामफ होना है वही उपादान हैं। उस उपादान के प्रावय से अब होता है। अप है प्रार्थ में जानि होनी है। जानि के प्रावय से जरा, मन्न ''होते हैं। इस तरह सारा हु। समृद्ध उठ पद्म होता है।

पेंडना से ' ; महा। से '', मस्यारी से ' , विज्ञान से आनन्द सनाता है' । इस सरह सारा

द्र छ-यमुद्र टर पथा तीता है।

भिभुक्षी । ऋष, बेदना, मला, मन्कार, विल्लान यहाँ बसना है ।

भिश्वको <sup>1</sup> रूप, वेदना, महा, मरशार, विज्ञान का तथ जाना स्था है ?

भिक्षुओं ! (कोई) न तो आनन्द मनाता है, न आनन्द के राज्य कहता है, और न उससे ह्रय जाता है। किससे न तो आनन्द मनाता है '?

रूप से न सी आजन्द समाता है, न आजन्द के ज़रूर कहता है, और न उससे हुय आता है। हमसे रूप में, उसकी को आसिक है वह निन्द्र हो जाती है। आसिक के निष्द हो जाने से उपादान नहीं होता। उपादान में निष्द्र हो जाने से अय जहीं होता। । इस सरह, मारा हु सन्समृह एक लाता है।

षेटना से , सजा से , सन्कार से , विज्ञान में । इस तरह, सारा दुष्य समूह इक जाता है।

শিপ্তুপী 'यही रूप का मुत्र जामा हे, येदना का दृश आना हं, सङ्ग का दृश जाना है, सहकारों का हुप जाना है. पिकान का द्वय जाना हे ।

# ६६. पटिसञ्चान सुत्त (२१ १ १,६)

ध्यान का अभ्यास

थावस्ती '

भिक्षुओं। प्यान के अन्यास में सम जाओ। भिक्षुओं। प्यानस्थ हो भिक्षु यथार्थ को जान सेता है। फिसके यथार्थ को जान सेता है ?

रूपके नगने और हूचने के यथार्थ की। बेदना ', सजा', सस्कार , विज्ञान ।

[ ऊपर वाले सूत्र के समान ]

#### § ७. पठम उपादान परितस्सना सुत्त (२१ १ १. ७) उपादान और परितस्सना

थावस्ती\*\*\*।

सिक्षुको । उपादान बीर परितस्सना के विषय में उपदेश करूँगा । अनुपादाण और अपरितस्सना के विषय में उपदेश करूँगा । उसे धुनो, अच्छी तरह भनमें लाओ, मैं कहता हूँ ।

"भन्ते । बहुत अच्छा" कह सिक्षुओं ने मगवान को उत्तर दिया ।

भगवाम् वोके-मिश्रकी । बवाबान् भीर परितरसमा कैसे डोशी है ?

सिद्धार्थी ! कोई व्यविद्वार पुण्यक्त क्य को व्यवका समझता है। व्यवे को स्पनाका समझता है। अपने को स्पनाका समझता है। जन वह क्य विपरिणत तथा पुसरा ही हो बाता है। तथा के विपरिणत तथा पुसरा ही हो बाता है। तथा के विपरिणत तथा पुसरा हो हो बाते से क्याविपरिणामाजुवार्धी विज्ञान होता है। उसे स्वयित परिणामाजुवार्धी विज्ञान होता है। उसे स्वयित परिणामाजुवार्धित को परिएसमा के होने से विचा उसमें वहा बाता है। विचा के यह काने से उस कान होता है। वस विपरिणामाजुवार्थित की परिणामाजुवार्थित की परिणामाजुवार

िमञ्जूषो 🏻 वेर्मा को अपना समस्ता है । सङ्गाको जगना समस्ता है । सस्कारों को

मंपना समझता है । "विकाय को नपना समझता है

मिल्लमी | इसी तरह कपावान और परितस्तना होती है। मिल्लमी | जनपावान और कपरितस्तना कैसे होती है।

मिह्न मों ! कोई विहाज वार्तवाशक करको नपना नहीं समझता है। नपने को क्यवाका नहीं समझता है। मण्डे में कम था कर में नपने को नहीं समझता है। वन, वह कर विपरिण्य तथा हुसरा ही हो बाता है। क्या के विपरिण्य तथा चुसरा ही हो बावे से क्यिएरिज्याकुवर्ध विद्यान नहीं होता है। काविपरिज्ञामानुपरिचर्डक करों की करणिय से कसका विच परिल्यान में नहीं वहतों है। विच के वहीं बाते से क्ये बाता हुएक, क्येबा परिवस्तवा नहीं होती है।

लिहानों ! " वेदला" ३ श्रेष्ट्रा ३ श्रेष्ट्रार ३ विकास को स्थयत वहीं समझता है । सिहानों ! इसी तरह अनुसारताल और अधिरितस्तवा होती है ।

# ई **८ दतिय उपादान परितस्सना सच** ( १२ १ १ ८)

#### बपाशांत और परितरसंता

भावस्ती ।

धावस्ती \*\*\*।

'मिछुमो ! बयादान और परिवरसना कैसे होती है !

मिह्नमी १ कोई महितान प्रवक्तन कम को "वह मेरा है। यह मेहूँ। वह मंद्रा सारमा है" समझ्या है। यह कम विपरिकट एका अन्याय हो बात है। कम के विपरिकट एका अन्याय हो बात से के से परिवेद एका अन्याय हो बात से के को परिवेद हुआ छोमंदरस और उपकास होते हैं।

मिश्चनो ! बेहना को । संशा की । संस्थार की । किश्चान की ।

मिश्रुणी ! इसी तरह, क्यादान और परितरसना होती है।

मिल्लामी | अनुपादाम जीर अपरितश्यका जैसे होती है ?

[महानी | कोई विद्वार कार्यकानक करको "वह सेस है। वह से हूँ। यह सेस नात्रा है" वहीं समस्ता है। वसका वह कर विश्वतिकत तथा जनकार हो जाता है। क्या के विश्वतिकत तथा जनकार हो जाने से बसे सोक परिदेव हुन्य चीर्तनस्य और क्यासास नहीं होते हैं।

· वेदमा । संबा · । संद्यार । दिशाम ।

मिश्रुको ! इसी तरह क्युपावान और अवरितस्सना होती है।

# **इ १० पटम मतीतानागत सुच (**२१ १ ९)

भूत भीर भविष्यत

"मगवाब् कोके-भिश्चनी ! अब क्षतीत जीर जनागत में अभित्व है। वर्तमान का कक्ष्मा नजा!

भिश्चमो ! इसे जानकर विद्वान् आर्यश्रावक अवीत के रूप में अवयेक्ष रहता है, अनागत रूपका अभि-नन्दन नहीं करता, वर्तमान रूप के निवेद, विराग और निरोध के किये यत्नवान् रहता है !

•• वेदना • , संज्ञा • , सरकार • • , विज्ञान

§ १०. दुतिय अतीतानागत सुत्त (२१ १. १. १०)

भूत और भविष्यत्

वेदना , संज्ञा , सस्कार , विज्ञान

§ ११, ततिय अतीतानागत सुत्त (२१ १ १. ११)

भृत और भविष्यत्

अ(वस्ती । भगवान् कोळे---भिञ्चको) रूप अतीत और अनातत में अनाध्य है, वर्तमान का कहना क्या ? [व्यंवत्]

नकळिपिताधर्म समाप्त

# द्सरा माग

# अनिस्य बर्ग

# **१ अनिच सुच (२१ १ २ १)**

शमिरचता

पैसार्मने सुना। \*\*\*भावस्ती।

मनिष्य है।

भिञ्चनो ! इस व्यापकर विद्वार, जानैकायक को कर से भी निर्देद होता है, नेदरा से भी निर्देद होता दि संद्वा से भी निर्देद होता है अस्कारों से भी निर्देद होता दि विद्याल से भी निर्देद होता है। निर्देद होते से विद्यक हो बाता है विराग्य से निर्देशक हो बाता है। विद्वाल हो बाते से विद्वाल हो बाते से प्राप्त स्था साम होता है। विद्वाल हो बाते से चूरा हो गया को करना या सा कर किया गया अन सुख्य बाकी नहीं वया—एसा बात केसा है।

# हर दुक्स धुच (२१ १ २ २)

ব্রংল

आपस्ती । मिश्रुणी ! कर कुप्त है नेदन दुःजा है संज्ञा दुःप है संस्कार दुःजा है निकास दुःजा है। मिश्रुणी ! क्रो जान कर ∼।

६**३ अन्य सुच (२९ ९ २ ३)** 

भागमा

भावस्ती' 1

मिल्लो । क्य भगता है 🗝 ।

सिश्चचो । इसे वाच कर ।

हु¥ पठम ग≰निच सुत्त (२१ १ २ ४)

मनिरयता के गुव

भावसी ।

मितुनो । कर व्यक्तिय है। वो अविक्त है वह हु स है। को सुकार वह अनाम है। को अमाम है वह व सो मेरा न हैं। असे आमा है। इसे ववार्यत मंत्रावर्णक देसना काहिये।

```
वेदता''', मुझा''', सम्कार '', चिद्यान अनित्य हे'''।
भिक्षको । हुन्ने जानवर चिटान् आर्यधायम । जाति झीण हुई ''ऐसा जान छेता है ।
```

६ ५. द्विय यदनिच सुच (२१ १ २. ५)

दुःख के गुण

धावस्ती I

आवस्ताः । \*\*\*भिक्षुओः । इत्य द्वानः हे। \* [शेष पूर्वमन् ]

६६. ततिय यदनिच सत्त (२१ १.२.६)

शनात्म के गुण

थावस्ती ।

सिक्षुओ । रूप अनात्म है। [डोप पूर्ववत्]

8 ७. पठम हेत सत्त (२१ १.२ ७)

हेत भी अनित्य हैं

श्रावस्ती ।

अरवस्ता । शिक्षुओं । रूप अमित्व हैं । रूप की बरवत्ति के जो हेंसु और प्रश्यव हैं वे भी अमित्य ह भिक्षुओं । अमित्व से उपक्र होकर रूप निश्य कैसे हो सकता है ।

ि छती सरह वेदना, सज्ञा, सस्कार और विज्ञान के विचय में 1

[ इसी तरह वेदना, सञा, सस्कार आंद विज्ञान के विषय में ] सिद्धओं ! इसे बान कर विद्वान आर्यशायक ""अति श्रीण हुई" पैसा जान लेता है।

§ ८. द्वतिय हेतु सुत्त (२१ १ २.८)

देतुभी दुःस है

श्चाचनती ।

ार्या । • मिछुओं । इत दुःख है। इत की दरवित के नो देतु और प्रवय हैं वे सी दु ल हैं। भिछुओं। दुःख से दरपक्ष होकर इत सुख कैसे हो सकता है।

[ इसी सरह बेदना, सज्ञा, सरकार, और बिज्ञान के विषय में ] भिक्षभी ! इसे जानकर बिद्धान सार्वश्रावक जाति सीण हुई '''वैसा जान लेसा है ।

६९ तातिय हेता सत्त (२१ १ २ ९)

हेत भी गनाता है

आयस्ती । जिल्लुमी । रूप जमात्म है । रूप की उत्पत्ति के जो हेतु और प्रस्पय हैं वे भी अनारम है । सिक्लुमी ! जमारम है उत्पन्न हो कर रूप जारमा कैसे हो सकता है ।

[ पूर्ववत् ]

# § १० आनन्द सुच (२१ १ २ **१०)**

#### तिरोध किसका १

भाषस्टी ।

तम, आयुरमाञ् आतम्ब बहाँ भगवाम् ये वहाँ आवे और सगवाम् का अभिवादन कर एक बोर वैद गर्य ।

पक और चैठ आधुष्यान आजनम् शायाम् से बौकंः रूसन्ये ! कोग 'निरोध' नदा करते हैं। सन्ते ! किस कर्मोका किरोध किरोध कहा आजा है ?

भारतन् । क्या समिक्य स्थाप भारतक्ष प्रशासन्ति । क्या कार्य है । भारतन् । क्या समिक्य है संरक्षत है जारीन्ससुराज है, अवधानों है । क्या कार्य है । है । क्या के निरोध से निरोध कार्य कार्या है ।

नेदना' ; संका' ; संस्कार'' ; विश्वाव' ; उसीकं विरोध से निरोध कहा बाता है ! भावन्द ! इन्हीं धर्मी के निरोध से विरोध कहा बाता है !

अतिरम वर्ग समाम ।

# तीसरा भाग

#### भार वर्ग

## § १. भार सुत्त (२१ १. ३. १)

जार को उतार फेंकसा

श्रावस्ती '।

भिद्धको ! भार के विषय में उपदेश करूँगा भारहार के विषय में, भार उठाने के विषय में और भार उत्तार देने के विषय में । उसे झुनों ।

भिक्षओं। भारक्या है ?

हुन पाँच उपादास-स्कन्धों को कहना चाहिये। किम पाँच ? जो यह, रूप-उपादास-स्कन्ध, वेदसा-उपादास-स्कन्ध, सज्ञा-उपादास स्कन्ध, सस्कार-उपादास-स्कन्ध, और विज्ञास-उपादास स्कन्ध हैं। सिक्कुओ। हसी को भार कहते हैं।

भिक्षको । भारहार भवा है ? प्ररूप को ही कहना चाहिये । जो यह आयुष्मान् इस माम और इस

गोत्र के हैं। भिश्चओं! उसी को जारहार कहते हैं। सिश्चओं! आर का बटाला क्या है? जो यह एटणा, पुर्तजन्म करानेवाकी, आसक्ति और राग-बाजी, बहाँ यहाँ उसा जानेवाली हैं। जो यह कास तृष्णा, भव तृष्णा, विभव-तृष्णा है। भिश्चओं! इसी को भाग का बताना करते हैं।

मिञ्जभी ! भार का उतार देना क्वा है ? उसी गृत्या का को विरुक्तल विराग≄ितरोध≃स्वाग= प्रतिनि सर्ग=ध्रुक्ति=क्षनालय है । अञ्चली रै इसी को कहते हैं भार का उसार देना ।

मगवान् यह बोले। यह कह कर बुद्ध फिर भी बोले ---

ये पाँच स्कन्ध भार हैं, पुरुष भारहार है,

भार का उठाना छोक में हु ख है, भार का उठार देशा सुख है ॥ १॥ भार के बोझे को उतार, बुसरा भार नहीं छेता है,

शुग्गा की जह से उसाह,

हु खमुक्त निर्माण वा छेता है ॥२॥

§ २. परिञ्जासुच (२१ १ ३ २)

परिक्षेय और परिका की ज्यास्या

थ्रावस्ती ।

भिक्षुओ । परिज़ेय धर्म और परिज़ान के थिएय में उपदेश करूँगा । उसे सुनी ''। भिक्षुओ । परिज़ेय धर्म क्या है १, भिक्षुओ । रूप परिज़ेय धर्म है, सेदना परिज़ेय धर्म है, सम्रा परिशेष धर्म है संस्कार परिशास धर्म है जिलान परिशोध धर्म है। शिक्षको ! इस्हीं को परिशोध धर्म बहते हैं।

भिद्धको ! परिका क्या है ! विश्वको ! को शग क्षय और सोड क्षत्र है उसी को परिका कहते हैं !

## § ३ अभिज्ञान सप (०९ १ ३ ३)

### द्भव को समरो विना दाल का शय नहीं

भायस्ती । मिल्लाको । क्य को जिला समसे जाने, त्याय किये तथा उससे विरक्त हुये कोई हुन्से का क्षय नहीं कर सकता है।

'बेबना' । संद्या । सरकार । विज्ञान की विना समझे जाने त्यांग कियं तथा उससे

बिरम इये कोई शुःखों का क्षय नहीं कर सकता है।

मिश्रुको ! रूप को समझ जान त्याय उससे विरक्त हो कोई बु:कों का क्षय कर सकता है।

वेदना । संशा™ । शंस्कार । विद्यान को समझ साथ स्थान कर समा उससे विरक्त हो काई इत्सों का नाम पर सकता है।

## ६ ४ छन्दराग सत्त (२८ १ ३ ४)

#### क्रम्बयम का स्थाम

शावस्ती ।

मिलुजा ! ऋपमें बो छम्पराय है उसे छोड़ दी। इस तरह वह कर प्रहीच हो बादगा हरिज्य मूख करे हुये सिर बाके राष्ट्राझ के समान अनमान किया हुआ फिर भी कमी न उग सकते बाधा । वेदना । संज्ञा । नंदकार' । विद्यान में को सन्दराग है कसे छोड़ को ।

६ ५ पटम अस्साद सच (२१ १ १ ५)

#### कपादि का मास्नाद

धावली ।

सिक्षको ! शहरूव प्राप्त करने के पहके बोविसत्त रहते ही अरे सनमें वह हुआ :--स्पका

शास्त्राय क्या है बीच क्या है झुरकारा क्या है ? बेदका संबा : ? शंदकार ? विश्वात

सिक्ष को । तक मेरे मनमें यह हुका ।-- क्य के प्रत्यक से जो मुख्य और शीमनस्य होता है वही क्य का भारतार है : अप को अमिल जु:क विपरिवासकर्सों है वह क्य का दोप ( :: आदीवब ) है । को कप के प्रति कल्याम को बधा देना. यहीन करना है नहीं क्या से सरकाश है।

विद्वा संमा रोस्कार मीर विकास के साथ भी ऐसे ही ]

मिश्चको ! सथ तक सैंबै इंच पाँच अपायान-स्कार्धों के आस्वाय को आस्वाय के तीर पर दोव को शोध के तीर और स्टरकारे की बुक्कारे के तीर पर बनार्थतः नहीं जाब किया वा - तथ शक ास के क में अबुचर सन्तक सन्त्रकृतन्त्र पाश करने का शाना नहीं किया ।

मिसको ! बन मेरे 'चनार्यतः साम किया तभी तुम कोक में मनुषर सम्बद्ध सम्बद्धान प्राप्त

काने का वाचा किया ।

मसे ऐमा बान = वर्षन पापक क्षवा-मेरा विश्व बीक में विश्वश्व की गया नहीं अस्तिम बाति है अब पुवर्जनम होने का नहीं।

## **६६. दु**तिय अस्साद सुत्त (२१ १ ३. ६)

#### आस्वाद की खोज

श्राचस्ती 1

भिछुओं ! मेंने रूप के आस्वाद की पीज की । रूप का जो आस्वाट ह उसे ममस्र किया। कहीं तक रूप का आस्वाद है उसे प्रज्ञा से अच्छी तरह देखें लिया।

भिक्षुत्रो ! मेंने रूप के डोप की सीज की ! रूप का जो दोप है उसे समझ लिया । जहाँ तक रूप का डोप है उसे प्रज्ञा से अच्छी तरह देख किया !

भिञ्जभी! मेंने रूप के घुटकारे की खोज की। रूपका जो खुटकारा है उसे समझ लिया। नहीं तक रूप का खटकारा है उसे प्रजा से अच्छी तरह देख लिया।

[ देदना, सज्ञा, सस्कार, और विज्ञान के साथ भी ऐसे ही ]

निश्चओं ! जब तक मेने इन पाँच उपादान स्कन्धों के आस्वाद को आस्त्राद के तीर पर '

यही अस्तिम जाति हं, अब पुनर्जन्म होने का नहीं।

#### § ७. ततिय अस्साद सूच (२१ १. ३. ७)

#### वास्वाद से ही वासकि

श्राघस्ती ।

भिक्षुओं ! यदि रूप में आस्पाद नहीं होता तो सरव रूप में आसक्त नहीं होते। भिक्षुओं ! क्योंकि रूप में आस्पाद है इसीकिये सरव रूप में आसक्त होते हैं।

भिक्षुओं । यदि रूप में दोप मही होता तो सध्य रूप से निर्वेद ( = विराग) को प्राप्त नहीं होते । भिक्षुओं । नर्वेफि रूप में दोप हैं, इसिस्प्रें सस्य से निर्वेद को प्राप्त होते हैं ।

भिश्रुओं । यदि रूप से युटकारा नहीं होता तो सत्व रूप से मुक्त नहीं होते । भिश्रुओं ] क्योंकि

रूप से धुटकारा होना है, इसिलिये सध्य रूप से मुक्त होते हैं। विदना, सजा, सस्कार, विज्ञान के साथ भी ऐसे ही ो

्र पपना, क्यो, क्रस्ता, स्वाना क साथ ना प्रत है। भिक्षकों । क्रम तक सरवों ने हम पाँच क्यादान-कर्न्मों के आस्वाद की आस्वाद के तीर पर, दोष को दोप के तीर पर, और छुटकारे की प्रुटकारे के तीर पर समार्थत नहीं जान लिया तय सक'' ये नही निकले≕छ्टे≔मुक्त कुर्व तथा सर्यादा रहिस क्यित से विकार किये ।

भिक्षक्षो । जब सरवों ने " "बधार्यत आव किया तथ " वे निकल गये च्छट गये चमक हथे तथा

मर्यादा रहित चित्त से विहार किये।

## § ८. अभिनन्दन सुत्त (२१ १ ३ ८)

#### अभिनन्दन से दुःख की उत्पत्ति

थावस्ति ।

भिक्षुको ! जो रूप का अभिनन्दन करता है यह पु ख का ही अभिनन्दन करता है । जो पु ख का अभिनन्दन करता है वह दु ख से शुक्त नहीं हुआ है—पुसा में कहता हूँ ।

वेदना , सञ्चा , सस्कार , जो विज्ञान का अभिनन्दन करता है ।

मिशुओ। भीर, जो रूप का असिनन्दन नहीं करता है वह दुख का जसिनन्दन नहीं करता है। जो दुख का असिनन्दन नहीं करता है वह दुख से ग्रुक हो यथा—देसा मैं कहता हूँ।

वेदना , सज्ञा , सर्कार , ओ विज्ञान का अभिगन्दन नहीं करता है ।

## <sup>5</sup>९ उप्पाद सच ( २१ १ ३ ९ )

## कप की सत्पत्ति कुम का पत्पाव है

धायस्ती ।

सिद्धको । कुम के को करपाय हिनति पुणकाम, और प्रावुशांव हैं ने पुःल के बरपाय होगों की स्थिति और करामरण के प्रावधांच हैं।

नेदना : संका : शंस्कार° विश्वाय के को करपात दिवारि "।

मिद्धको ! को कर का निरोध व्युपसम चया जरामरण का नस्त हो बाता है ।

मेक्स : संक्रा भंदनार : विकास ।

## ६ १० अपमूछ सुन (२१ १ ३ १०)

## तुःव का भूछ

भाषक्ती ।

सिद्धानी ! द्वाच के विषय में वपदेश करूँगा तथा द्वाश के सूक के विषय में । उसे सुस्रो ।

मिञ्चली ! कुम्ब नवा है ? मिञ्चली ! कप दुल्ल है । वेदवा दुल्ल है । संस्कार दुल है । विद्याल दुल्ल है । मिञ्चली ! इपी की दुल्ल कहते हैं ।

मिश्रमी ! हु:क का गुक क्या है ?

भी यह पुष्पा पुष्पर्यं कराने वाकी जाशकि आर राग से युक्त वहाँ वहाँ आतम्ब कोलने वाकी। को वह, काम-पुष्पा अव-मुख्या विस्तव-पुष्पा। सिद्धाना ! इसी को दुःख का सुक्त अहते हैं ।

## ६ ११ पर्म<u>शुक्त</u>च (२१ १ ६ ११)

#### क्षणमेगुरता

भावस्ती ।

मिश्रुमी ! बहुर के विषय में बनदेश कहेंगा और बसबुर के विषय में 1

भिक्षको ! क्या सहुर है और क्या असहूर ? सिक्षणो ! क्य सहुर है ! को इसका तिरोध = ग्युपसम = अस्य हो सामा है यह असहूर है !

" बेदना । संज्ञा संस्कार । विश्वास ।

मार वर्ग समसा।

## चौथा भाग

## न तुम्हाक वर्ग

#### § १. पठम न तम्हाक सुत्त (२१ १. ४. १)

जो अपना नहीं है. उसका स्थाग

श्रावस्ती ।

भिक्षुओं । को तुम्हारा नहीं है उसे छोड़ दो । उसका प्रहीण ही अपना तुम्हारे हिन और हुएस के किसे होता।

भिक्षुओ ! तुम्हारा ज्या नहीं है ?

भिक्षको । रूप तुन्हारा नहीं है, उसे छोद वो । उसका प्रशीणमें हो जाना तुन्हारे हित और सुख के लिये होगा ।

चेदमा , संज्ञा , संस्थार , विज्ञान :

सिञ्जनों ! जैसे, कोई आदमी इस ज़िल्लान के दण, काड, शाखा और पचे को के जान, पा जका है, या जो मरती कर ! तो क्या ग्रन्थारे अन में ऐखा होगा—यह आदमी हमें ले वा रहा है। वा जका रहा है, या जो मरती कर रहा है ?

नहीं सन्ते ! सोक्यों ?

सन्ते । क्योंकि यह इसारा आत्मा, आत्मनीय नहीं है।

भिक्षुओं ! इसी तरह, रूप तुन्हारा नहीं है। उसे छोद हो। उसका प्रहीण हो जाना तुन्हारे हित भीर सुल के किये होगा।

**बेदना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान तुम्हारा नहीं है, उसे छोद दो** ।

§ २ दुतिय न तुम्हाक सुत्त (२१.१.४.२)

जो अपना नहीं है, उसका त्याग

श्रावस्ती ।

[ डीक कपरवाले के जैसा, जेतवन का दशन्त नहीं ]

§ ३, पठण मिनस्बु सुत्त (२१. १. ४. ३)

अनुदाय के अनुसार समझा जाना

भावस्ती '।

क

. तब, कोई सिक्क जहाँ अथवान् ये बहाँ आया, और अगवान् का अभिवादन कर एक ओर वैठ गया। एक ओर बैठ कर वह सिक्क स्वानन् से बोला — मन्त्रे । स्तवान् मुद्दे संक्षेप च वर्षं का उपवेश करें, कि मैं मतवान् के वर्ष को सुपकर क्लेका, एकान्त्र में वासक संवसक्षक तथा प्रदिक्षण होकर विद्वार करें ।

दे सिद्ध ! विस्तका केसा अनुसाम रहता है वह बेसा ही समझा बाता है। सेसा अनुसाम नहीं रहता है वैसा वहीं असझा कता है।

भगवन् । समझ गवा । भुगतः । समझ गया ।

116

है मिश्र ! मेरे इस संक्षेप से कहे गये का शुमये विस्तार स वर्ष कैसे समझा !

पन्ते । पनि कम का जनुकाय कोता देशों यह नैसादी समझा वाता दे। पदि वेदनाका । संज्ञाका । संस्थानीका । किलायका ।

सन्ते | पदि ( फिसी को ) कम का अनुकाम नहीं होता है तो वह बैसा नहीं समझा बाता है। पदि बेदना का ; संझा का ; संस्थारी का ; विश्वान का । सगवान के हुए संक्षेप से कहे गये का में पैस ही विस्तार से कब समझता हैं।

बीक हैं मिद्धु शिक हैं | मेरे इस संखेप से कई गये का दुसपे बीक में विस्तार से धर्म समझ किया । "मेरे इस संखेप स कहे गये का येसे ही विस्तार से धर्म समझना चाहिने ।

तन वह मिश्रु समझाएं के कई का कमिनन्दन और सनुमोदन कर आसन से उठ समझाएं को समिनाहन और प्रविद्याला कर चका गया।

#### В

वर उस मिश्च ने कनेका प्रकार में स्थानक में स्थानक संवासकीक स्था महिवास हो बिहार करते हुये सीम ही महत्वर्य के उस अनुकर अनियम करू को इसी करण में स्वर्थ काथ देख और पा किया जिसके किये कुकपुत्र महा से सम्बद्ध कर से नेकर हो कर प्रमुक्ति हो व से हैं। साति हीण हुई, महत्वर्ष सप्तक हो तथा को करना था सो कर किया जब भीर हुक नाकी नहीं रहा---येखा बाव किया।

बह सिक्स महोती में पक हवा।

## 🖁 ४ द्विय मिक्सू स्च (२१ १ ४ ४)

बनुदाय के बनुसार मापना

मावस्तः ।

कोई भिक्ष वहाँ अगवाम ने वहाँ कामा और अधवान का अभिवादन कर एक और वैठ शका ! एक और वैठ कर वहाँ शिक्ष अधवान से ओका !---

याने ! समझात्र पुत्ते संत्रेप से बार्ग का वपहेल करें कि में माताल के बार्ग को सुन कर करेका पुनास में अंत्रमण संप्रमाणि याना महिलामा होकर विद्वार कर्कें 1

है मिशु ! जिसका बैसा अनुकार रहता है यह वैसाही आपका है। वो बैसा आपका है वह वैसाही समारा काता है।

[ कपर वासे सूत्र के समाण हो ]

बद मिश्रु अर्देशी में एक हुआ।

भाषस्ती"।

## इ.५ पठम ज्ञानन्द् सुच (२१ १ ४ ५)

किनका उत्पाद ध्यय और विपरिचाम ?

पुरु और वेंडे आयुष्मान् आनन्द स अगशान् बांक "आवन्द ! यदि ग्रुमस कोई वृत्ते जातुस

आनन्द ! किंत घर्मों का उत्पाद जाना जाता है, न्यन, जाना जाता है, संग्रा स्थित हुओं का अन्यक्षस्य जाना जाता है।'' आनन्द ! ऐसा पूछे जाने पर तुम क्या उत्तर टोगे ?

भन्ते ! ऐसा पूछे बाने पर में यो उत्तर दूंगा .--

आदुस ' रूप का उत्पाद जाना जाता है, व्यय जाना जाता है, तथा स्थिर हुये का अन्ययास जाना जाता है। वेदना का , सङ्गं का , सरकारी का , विञ्चान का । आदुस ¹ हुन्हीं घर्मी का उत्पाद जाना जाता है । अन्ते ¹ ऐसा पूळे जाने पर भे थो ही उत्तर दूँगा ।

ठीक है, आतम्ब, ठीक है। ऐसा पूछे जाने पर तुम यों ही उत्तर दोगे।

## § ६. दतिय आनन्द सुत्त (२१. १. ४. ६)

## किनका उत्पाद, व्यय और बिपरिणाम ?

श्रावस्ती'''।

एक ओर थेंदे हुचे आसुष्मान् आत्मब्द से भगवान् घोले, ''आतम्द ! यदि तुमसे कीई पूछे, आहुस मातन्द ! फिल धर्मों का उत्थाद जाना गया है, क्या जाना गया है तथा स्थित हुचे का अन्यपात्व जाना गया है ? किनका जाना जायगा ? किमका जाना जाता है ?' आवन्द ! धुंहा पूछे जाने पर हम थया उत्तर तीने ?"

भन्ते । ऐसा पूछा जाने पर में वीं उत्तर हूँ गा ---

आधुस ! को रूप अतीत हो गया = निरुद्ध हो गया = विषरिणत हो गया, उसका उत्पाद जाना गया, ज्यय जाना भया, स्थित हुचे का अन्यशास जाना गया । चेठना ,सज्ञा , सस्कार, जी विज्ञान अतीत हो गया ।

. माञ्चल ? इन्हीं धर्मों का उत्पाट जाना गया है, व्यथ जाना गया है, तथा स्थित हुने का अन्ययास्त्र जाना गमा है।

आबुस ! जो रूप अभी उत्पन्न नहीं हुआ है, प्रगट नहीं हुआ है, उसी का उत्पाद वामा नायगा, ग्यंच वाना नायगा, तथा स्थित हुवे का अन्यवात्व जाना वायगा। वेटना , सङ्गा , संस्कार , वो विज्ञान अभी उत्पन्न नहीं हुआ है ।

षाञ्चल ! हर्न्हीं धर्मी का उत्पाद जाना जायगा, व्यय जाना जायगा, तथा स्थित हुये का अन्यधारव जाना जायगा।

भावुतः । वो रूप अभी उत्सव हुआ है, प्रावुर्भृत हुआ है, उसी का उत्पाद नामा नाता है व्यव नामा वाता है, तथा रिश्नत हुने का अन्यभारत जाना जाता है। बेदना , सज्ञा , सरकार , विज्ञान !

कासुत । धर्मों का उत्पाद जाना जाता है, ज्यम जाना जाता है, स्या स्थित हुये का अन्यभाष जाना जाता है।

मन्ते । ऐसा पूछा जाने पर मैं यों ही उत्तर हूँ गा ।

ठीक है जानन्द, ठीक है। [ सारे की पुनस्कि ] ऐसा पूछ जाने पर हुस यों ही उत्तर दोगे।

#### § ७ पठम अनुधम्म सुत्त (२१. १. ४. ७)

#### विरक्त होकर चिंहरना

श्रावस्ती ।

भिद्धको ! वो मिद्ध धर्मातुषमें प्रतिपत्त है उसका यह धर्मातुष्क होता है, कि रूप के प्रति विरक्त होकर विहार करें, बैटना , सज्ञा , सरकार ,, विज्ञान के प्रति विरक्त होकर दिवार करें ! इस प्रकार विरक्त होकर विशार कार्छ हुये वह कप की बाव केता है वैदना । संजा ;

संस्कार । विद्वान को प्रान केवा है। बह क्रम विद्वान को बानकर कम से सफ हो जाता है वेदना से सफ ही जाता है, संद्रा से

बह रूप विद्वास की बागकर कम से मुख हो जाता है विद्याप से मुख हो जाता है, समा सं मुख हो बाता है संस्थारों से मुख हो जाता है विद्याप से मुख हो जाता है। जाति करा मरण सोक, परिदेव हुन्छ सीमेंवस्य क्यापाछ से मुख हो जाता है। हुन्त से हुट जाता है—स्पार्म कहता है।

ईं ८ द्विष अनुधम्म स्च (२१ १ ४ ८)

व्यक्तिम्य स्प्राप्टका

भावस्ती ।

मिञ्चयो । को विश्व प्रमानुषर्यं प्रतिपद्ध है क्सका यह वर्मानुक्क होता है कि रूप को स्रतिक सन्तरे [पूर्वकर]।

हुत्य से सूद बाता है--पैसा में करता हूं।

§ ९ तिरियं अनुषम्म सच (२१ १ ४ ९)

व्यथ समझना

भावस्ती ।

मिश्चभो किकपणो दुःण समझे ।

\$ १० चतुत्य अञ्चमम सच (२१ १ ४ १०)

बसाया समझसा

भावस्ती ।

भावस्तः। सिञ्चनी किक्स को जनायन ससके

न तुम्हाक वर्ग समात ।

# पाँचवाँ भाग

## आत्मद्वीप वर्ग

## § १. अत्तदीप सुत्त (२१, १. ५. १)

#### अपना आधार आप वनना

श्रावस्ती ।

भिक्षुओ ! जपना आधार आप बनो, जपना शरण आप वनो, किसी दूसरे का शरणागत मत बनो, धर्म ही तुन्हारा आधार है, धर्म ही तुन्हारा शरण है, कुठ दूसरा तुन्हारा शरण नहीं है।

इस प्रकार विहार करते हुए तुन्हें ठीक से इसकी परीक्षा करनी चाहिये—ग्रोक, परिवेष, इ ख डीमेनस्थ और उपायास का जन्म = प्रभव क्या है ।

भिक्षको । इनका जन्म=प्रभव नया है ?

मिक्षुओं। कोई अविद्वाज् पृथक्जन रूपको अपना करके समझता है, अपने को रूपतान् सम-इता है, रूप में अपने को समझता है। उसका वह रूप विपरिणत=अन्यद्या हो जाता है। रूप को दिप-रिणव स्था अन्यद्या ही जानेसे खोकादि उराज होते हैं।

बेटना को , सजा को , संस्कारों को , विज्ञानको अपना करके समझता है

सिद्धती। इस के अनित्यत्व, विपरिणाम, विराग, निरोध को वान कर, जो पहले के इस थे और जो बसी इस हैं सभी अनित्य, दुःख और विपरिणाम-सभी हैं, इसे समार्थन प्रकार्य के देखें को से जो सोकादि हैं सभी प्रदाण हो जाते हैं। उनके प्रदाण हो जाने से जास वहीं होता। आसन नहीं होने से सुज्यपंक विद्यार करता है। सुजयुर्व विदार करते हुने वह सिद्धा उस अस में सुक कहा जाता है।

वेदना , सज़ा , सस्कार , विज्ञान , शुखपूर्वक विहार करते हुये वह भिश्च उस

अवा में सुक्त कहा जाता है।

## § २. पटिपदा सुत्त (२१ १. ५. २)

#### सत्काय की उत्पत्ति और निरोध का मार्ग

थ्रावस्ती ।

ं निश्चओं <sup>†</sup> सरकाय की उत्पश्चि तथा सरकाय के जिरोध के मार्ग के विषय में उपदेश करूँगा । उसे सुनी ।

भिश्लुओं ! संस्काय की उरपत्ति का सार्ग क्या है ?

सिक्षुओ। कोई अबिहान् प्रम्कृतन रूप को अपना करके समझदा है, अपने को रूपचान् समझता है, अपने में रूप को समझता है, रूप में अपने को समझता है।

येदना ,सज्ञा<sup>,</sup> ,सस्कार ,विज्ञान ।

मिछुनो । इसी को सकाय की उत्पत्ति का मार्ग कहते हैं। सिक्षुओं। यही दुः स सी उत्पत्ति का मार्ग कहा जाता है, यही समझना चाहिये।

भिद्धलो । मस्काय के निरोध का मार्ग क्या है १

मिलुको ! कोई विद्वास् भाषेभाषक २०१ को वपना करके वहीं समझता है अपने को रूपवास् महीं समझता है अपने में रूप को नहीं समझता है २०१ में अपने को नहीं ममझता है ।

वेदना उमेद्या उसंस्कार उविद्याल ।

मिल्लुको ! इसी को सत्काय के निरोध का आर्थ कहते हैं । सिल्लुको ! चही हुन्क के निरोध का सार्थ कहा बाला है—बही समझमा चाहिये ।

## 🖁 ३ पठम अनिचता स्च (२१ १ ५ ३)

#### वसित्यता

सावस्ती' र

सिद्धानी ! कम अमिल हैं। को असिल है वह हुएन हैं को हुत्य है वह असारम हं। को असारम है सो न मेरा है न मैं हूँ, न मेरा आरमा है। इसे यवार्वक प्रजापूर्वक देश केना चाहिये। विश्व उपायाव-रहित हो आवार्यों से विश्वक कोइ विश्वक हो बाता है।

वेदता ; धंका ; धस्कार ; विश्वान । सिमुजो ! यदि सिम्नु का किया कर के बाति उपायान-पश्चित हो आक्रवों से विरक्त और विमुक्त हो बाता है। जेदना ; श्रीकार ; विकार के मिंतु ; जो रिकार हो साता है; दिवर होने से सारत हो बाता है; बानत होने से बाद वार्टी दोएं। जास नहीं होने से अपने मीतर हो पीतर निर्यान पा केता है। बाति इनि क्रू है ऐसा बान केता है।

## <sup>3</sup> ४ द्विय अनिवताद्वच (२१ १ ५ ८)

#### मनिस्पता

मावस्ती ।

मिञ्जन्ये ! कप व्यापन है [सपर बैसा] इसे प्रवार्यका प्रश्लापूर्वक देश केवा चाहिये ।

बेदना जमिला है संबा , संस्कार । विकास ।

इसे बंबार्वात महापूर्वक देक केने से वह पूर्वान्त की सिच्या-पिक्षें नहीं पहला है। पूर्वान्त की सिच्या-पिक्षों में म पहने से उसे नदरान्त की भी सिच्या-पिक्षों वहीं होती हैं। सरपान्त की पिक्षा-पिक्षों से वह कहीं नहीं हुएका है। वह कर दिशान के मिटे काववों से विरक्ष, विमुक्त दवा उपावान-पिक्षों के स्वान है। उसका विष्ण विपुक्त हो बाते से स्वान हो। उसका विष्ण विपुक्त हो बाते से स्वान हो। स्वान हो बाते हैं। साम हो साम हो साम हो साम हो हो साम हो हो साम हो हो साम हो साम

## 🕯 ५ समञ्जूपस्सना भ्रुच ( २१ १ ५ ५ )

#### वारमा मानने से ही वस्मि की विश्वा

भावस्ती ।

निमुत्री ! वितने ब्राम का जावान कनेक प्रकार से बारमा की कावते और समझते हैं, वे सभी कृती तर्क कपादान सकती की बानते और समझते हैं था कर्नमें से किसी को ! किन पर्कार

निमृत्यों। कोई व्यविद्यार प्रवक्षण करको व्यवना करके समझका है। व्यवने को रूपवार समहता है अपने में रूप को समझका है, क्या में क्यांक को समझका है। ' बेटना ', सज्ञा , संस्कार , बिज़ान । ऐसा समझने से उने "अस्मि'' की अविष्या होती है।

भिक्षुओ । "अस्मि" की अविद्या होने से पाँच इन्द्रियाँ चर्ला आती हैं—चक्षु, श्रीय, प्राण,

जिह्ना, और काया ।

भिक्षुओं। सन है, धर्म है, और असिवा हे। मिक्षुओं! अविवा संस्पर्गोत्प्र वेदना होने से अविद्वार पूर बज़नकों असिनता होनी है। 'क्षट में हैं'—देसा होता है। 'हॉर्जना'—ऐसा भी होता है। 'क्षर्यवान्', 'अस्प्रवान्', 'अस्प्रवान्', 'असंवी', 'असंवी', 'म सबी और म असनी होतें हैं।

आिश्वओ। यदी पाँच इन्डियाँ ठहरी रहती हैं। यदी विहान, आयंश्रायक की अधिया प्रहींग हो आर्ती है, विद्या उपका होती है। उसको अविद्या के हट जाने और विद्या के उपका होने से 'अस्तिता' महीं होती है। 'हाँकैंगा'—ऐसा भी नहीं होता है। 'स्प्यान्', 'अस्पवान्', 'सबी', 'असही, 'क करती कीर क असबी होकेंगा'—ऐसा भी नहीं होता है।

## § ६, खन्ध सुच (२१. १. ५. ६)

#### पाँच स्कन्ध

थावस्ती ।

सिक्क्षको ! पॉच स्कन्य तथा पॉच उपाटान स्कन्थ के विषय में उपटेश करूँगा । उसे सुनी । अिक्षको ! पॉच स्कन्य कीन से हैं ?

भिक्षुओ । जो रूप---अतीत, अनगत, वर्तमान् , आध्यात्म, बाह्य , स्यूक, सूरम, हीन, प्रणीत,

त्र का, या निकट का-है वह रूपस्कन्ध कहा जाता है।

जी बेब्ना , सङ्गा , सस्कार , विज्ञान ।

भिक्षुओं । यही पाँच स्कन्ध कहे जाते हैं। भिक्षुओं । पाँच उपाहान स्कन्ध कीन से हैं १

को बेवना ,सङ्ग ,संस्कार ,विज्ञान ।

भिक्षुओं । इन्हीं को पञ्च-उपाशनस्कन्ध कहते हैं।

## § ७. पठम सोण सुत्त (२१ १. ५. ७)

#### यथार्थ का सान

ऐसा मैंने सुना ।

एक समय भगवान् राजगृह् में बेलुबन कलन्दक निवाप में बिहार करते थे।

तव, गृहपतिपुत्र स्तोण वहाँ सगवान् ये वहाँ आया, और भगवान् का अभिवादन कर एक भोर येंड गया।

एक जोर बैठे हुने गृहपतितुष्ध स्रोण को सगवान् बोळे — स्रोण ! जो असण या आह्मण इस अनित्य, हुस, विपरिजामधर्मा रूप से अपने को बदा समझते हैं, सब्दा समझते हैं, या हीन समझते हैं, वह यथार्थ का अञ्चान छोद कर दूसरा क्या है।

वेदना , सक्षा , सस्कार , विज्ञान ।

होग ! को असल था माहल इस बलिस तुःग विपरिणासधार्ग इस राज्यमे को बचा भी नहीं समझते हैं सदस भी नहीं समझते हैं या होन भी नहीं समझते हैं यह बधार्यका शाम छोड़ कर कीर क्या है ?

बेदमा ; संज्ञा ; संस्थार ; विज्ञान ।

सीज ! तो तम बना समझते हो, कप नित्य है या अनित्य ?

भाने । धनित्य ।

जो जमित्य है यह बाग्र है या सके ?

शन्ते ! दुःस्र इं≀

को समित्य है हुत्य है विवृद्धिणामधार्मा है उसे क्या एमा समस्या श्रीक है कि यह मेरा है यह में हैं। यह मेरा आधार है ?

भहीं मन्ते !

मोज ! बेदना । मेशा । संस्थार । विशाम अविष्य है था नित्य ।

मान ! इसिस्में को क्ष्म — करोड अनागड बासाज् आप्याप्य बाद्य स्पूष्ट सूच्य हीन प्रणीट दूर का या निजय का — है कस बचार्यका प्रकार्यक देख क्षेत्रा चाहिये कि न यह सेरा है न यह है हैं. और न यह सेरा आस्ता है।

को पेटका । संज्ञा । संस्कार । विज्ञाल ।

सोय ! ऐसा देवनियाना विश्वान् आर्पकात्रक हम से निर्वेद करता है । बेदमा स निर्वेद करता है संवा से पंतकरों से ; विज्ञान से । निर्वेद स विच्छा से बाता है। बेरान्य से हुक हो बाता है। विहुक हो बाने से विज्ञुक हो गया देखा जान वरत्रक होता है। बाति क्षित्र हुई प्रसूचर्य पुरा हो गया, को करता या तो कर किया कह कीर कक कार्य कर्मा ज्यास्त कार केता है।

## §८ दुविय सोण सुच (२१ १ ५ ८)

सारण कीर बाबाण कीन १

पेखा सैने सुना ।

एक समय भगवान् राजगृह में बेलुवन कलक्क निवाप में विहार करते थे।

एक भीर वैंडे हुने शुहपतियुक्त शीज की सरावान् थोछे :---

सीज ! बी समज वा जालाय कर को वहीं बागते हैं कर के शहरूर को गर्ही जायते हैं, कर के शहरूर को गर्ही जायते हैं, कर के तिरोज को गर्ही वागते हैं, कर के तिरोज को गर्ही वागते हैं। वेपना ; श्रेष्ठा वागते हैं । वेपना के त्याची में जानक समझ करते हैं वेपना कालायां में जाता है । वेपना कालायां में लाता है के वागते हैं ।

सीम [ वो जराण वा प्राञ्चन कृत की जानत हैं विश्वाप को जानते हैं वे ही प्राप्ती में धरमय समग्रे काते हैं, और माक्रवों में माक्रवा । वे कानुप्तान हसी करम में धरमय वा माक्रव के प्रसार्व

को बाज वैक और पाकर विदार करते हैं।

🕯 ९ पठम नन्दिक्खय शुक्त (२१ १ ५ ९)

शानन्द का क्षय कैसे ।

आवस्ती । मिश्रुको ! शिश्रु को क्य को व्यक्ति के तीर वह देख केता है, उसे सम्बद्ध रहि करने हैं : २१. १. ५. १० ]

हसे अच्छी तरह समझ कर वह निर्वेद को प्राप्त होता है। आनन्द रुने की हृष्ट्या मिट जाने से राग मिट जाता है, राग मिट जाने में आनन्द रुने की इच्छा मिट जाती है। आनन्द खेने की इच्छा ओर राग के मिट जाने से चित्त विस्कृत मुक्त कहा जाता है।

भिक्षु जो बेदना को , संज्ञाकी , संस्कारों को , बिज्ञान को अनित्य के तीर पर देखता है दसे सम्बक्दि कहते हैं। । आनन्द छेने की इच्छा और राग के मिट आने से चित्त विट्कुछ मुक्त कहा जाता है।

§ १०. दुतिय नन्दिक्खय सुत्त ( २१, १, ५, १० )

ऋष का यथार्थ मनन

धावस्ती '।

भिक्षुओं। क्य का डीक से मनन करों, क्य को जीनत्यता को यनार्यंत हैकों। क्य का डीक से मनन करने, तथा क्य की अनियता को पदार्थंत हेकने से क्य के प्रति निर्वेट को प्राप्त होता है। आनम्द केने की क्षण्डा सिंह जाने से त्या सिंह जाता है, राग सिंह जाने से आनम्द केने की इच्छा सिंह जाती है। आनम्ह केने की क्षण्डा और साम के सिंह जाने से चित्र टिक्क्ट सकता जाता है।

वेदना . सङ्गा . सस्कार . विज्ञान का ठीक से सनन करो ।

भावमद्वीप वर्ग समाप्त । सन्द्र पण्णासक समाप्त

# दूसरा परिच्छेद

## मज्झिम पण्णासक

## पहला भाग

रुपय सर्ग

§ १ तपय सचा (२१ २ १ १)

भगासक विमुक्त है

भावस्ती ।

भिद्यको ! भासक गणिमक है भगसक विमुक्त है।

सिद्धानी ! रूप में साराफ होने से विद्यान बना रहता है— रूप पर बाकस्वित रूप पर मिटिडिट स्थानमा कठाने बाबा और कराता बरदा तथा फैकरा है।

मेंस्कारों पर भाकिन्यत संस्कारी पर प्रतिद्वित आवन्य उठाये बाका उगता बनुता द्वार

चैकता है। स

सिञ्चलो ! को कोई ऐसा कड़े कि मैं बिना रूप विना वेदका विना संझा विना संस्कार विना विज्ञान के काथागसन जरुना जीना मा उपना चनुना तथा फैकना शिद्ध कर हूँ।।। यह सम्भव नहीं है।

सिद्धनो ! मदि सिद्धा का कर-मातु में बाग महीज हो जाता है, तो विज्ञान का आक्रमबन्ध प्रतिका महीज हो बाता है। चित्र सिद्धा का बैदना-चातु में ; संबान्धतु में संस्कार-धातु में " विज्ञान चातु में राग महीन हो बाता है तो विज्ञान ना सास्त्रमन=प्रतिवाह महीच हो बाता है।

वह अप्रतिप्रिष्ठ विद्यान जगने नहीं पाता संस्कारों से शहित हो विद्युच्च हो जाता है। विद्युच्च होने स रिस्त हा जाता है स्थित हाने से आत्म हो जाता है। बात्म होने से जास नहीं होने पता। बात नहीं होने स अपने संनार हो जीतर निर्माण को जात कर केता है। चार्ति होन्द हुई बह्मचर्च द्वा हो गया को करना का हो बर क्या जब की हुए जाकी नहीं है—देशा खान केता है।

#### §२ शी**अ शु**ष (२१ २ १ २)

पाँच मकार के बीज

भाषस्ती ।

" मिह्नकी देशील पाँच सकार के दांते हैं। कीव सं पाँच हु सूक-शाल, स्कन्य-शील आप्न-शील सक-शील भीर बीज-शील।

भिष्ठभी ] वे पॉच प्रकार के बीज अगरिकत हों सब बाबे वहीं हैं बमा वा पूर से नष्ट नहीं हो सबे हों भार वाके हों और आसानी से रोपे जा सबने वाके हैं। किया सिही न हो और कब व हो । सिम्ह्रभी | दो पता वे बंध क्योंने कोंगे कींगे और सैकेंगे ? नहीं अन्ते !

भिक्षुओं । ये पाँच वीज खण्डित हों, सदै-गळे हों, हवा या घूप से नट हों, नि.सार हों, और आसानी से रोपे जा सकनेवाले नहीं हों, किन्दु सिट्टी भी हो और जल भी हो। भिक्षुओं । तो क्या वे बीज उनेंगे, वहेंगे, और फैलेंगे ?

नहीं भम्ते !

सिक्षुणो । से पाँच बीज शक्षण्डित हो , और मिटी और जल भी हो । सिक्षुणो ! तो क्या वे बीज दर्गेग, वर्षेगे और फेलेंगे १

हाँ मन्ते ! यहाँ जैसे पृथ्वी-बाह्य है चैसे विज्ञान की दिवतियाँ समझनी चाहिये । यहाँ जैसे जल-बाह्य है चैसे मन्त्रिया समझना चाहिये । यहाँ जैसे पाँच प्रकार के बीज हैं चैसे आहार के साथ विज्ञात को सबसना चाहिये ।

भिद्धुओं । रूप में आसक होने से विज्ञान बना रहता है—रूप पर जाकन्यित, रूप पर प्रति-क्रित मानन्य उदानेवाका, और उगता, यस्ता तथा फेलता है। [ श्रेप क्रपर वाले सुन्न के समान ही।]

## § ३. उदान सुत्त (२१. २. १. ३)

#### आश्रयों का क्षय कैसे ?

थायस्ती…।

षहाँ मरावान् ने उदान के यह दाव्य कहें, ''श्रदि यह नहीं होवे हो सेरा नहीं होवे, नहीं होगा, षह सेरा नहीं होगा--पेसा कहनेवाला शिश्च नीचे के यन्थन (=श्रीरम्मागीय सङ्गोजन) को काट देता है।''

ऐसा कहने पर कोई थिस्र भगवान से घोला, "भन्ते ! यह कैसे ?"

भिक्षुओं ! कोई अधिहान् पृथक्जन रूप को अपना करके समझता है, अपने रूपचान् समझता है, अपने में रूप को समझता है, या रूप में अपने को समझता है।

चेदमा , सङ्कार चिकामको अपना समझता है, अपने को विज्ञानवान् समझता है ।

षह अनित्य रूप की अनित्यता को यथार्थंत नहीं जानता है, अनित्य बेदना की , संज्ञा की ; सस्कारों की ', विज्ञान की अनित्यता को नहीं समझता है।

नह दु असम रूप के हु ख को यथार्थत नहीं आगता है, हु खसय बेदना के , सझा छे ', सस्कारों के , विद्यान के हुख को नहीं जानता है।

मह जनात्म रूप के जनात्मत्य को यथार्थत नहीं जानता है, जनात्म येदना के , संज्ञा के , संज्ञा के , संज्ञा के , संज्ञा के ,

पह संस्कृत रूप को संस्कृत के चीर पर थयार्थत नहीं जानता है। संस्कृत वेदना को , संद्या की , सरकारों को , विद्यान को संस्कृत के चीर पर थयार्थत नहीं जानता है।

रूप नहीं रहेगा वह ययार्थन नहीं जानता।

बेदना ' , सज़ा ' , सरकार , विज्ञान नहीं रहेगा चह यथार्थंत नहीं जानता है । भिक्षत्रो ! कोई विद्वान् आर्थत्रावक रूप को अपना करके नहीं समझता है ' ।

बह अनित्य रूप की अनित्यता को यथार्थंत जानता है ।

वह दुख मय रूपके दुख को यथार्थत जानता है। यह अनारम रूप के अनारमत्व को यथार्थत (जानता है।

षष्ट संस्कृत रूप को सस्कृत के तीर पर यथार्थंत जानता है ।

क्ष्य वहीं रहेता वह बयार्यंतः व्यानता है ।

क्य वेदना संज्ञा संस्कार कार विज्ञान के नहीं होने से को मिश्रु पादि यह नहीं होने ठी मेरा पहीं होने नहीं होगा वह मेरा नहीं होगा —ऐसा कहे वह बीचेके बन्यन को कार देशा है।

मन्ते ! येसा कहवेवाका मिक्कु नीचे के यन्त्रम को कार वृता है।

मन्त्री ! क्या बाव और वृंधा केन के बाद भागमों का खब हो जाता है ?

मिहु ! कोइ सविद्वान् प्रमम्बन् त्रास नहीं करनं के स्थाप पर कास को प्राप्त होता है । मिहु ! अविद्वान् प्रपक्तनों को यह झाछ होता है कि—"वहि यह नहीं होने को मेरा नहीं होने; नहीं होना कर देन भी होता ।

सिक्ष ! विद्वान आर्थकावक जाम पहीं करने के स्वान पर बास को नहीं प्राप्त होता है। मिस्सू !

विद्वान कार्यभाषक का यह जास नहीं होता है कि-विदे यह गई होते ।

हार्य्यसम्भायककायद्वाराजना वाराचा वाक्यान्य प्रस्ति । सिक्षु ! क्या में जासका दोने स विद्यान क्या रहता है—क्या पर आक्रमित क्या पर शतिहित क्रिय देत देता के समान }।

मिस ! वह बान और देख केने के बाद उसके आधर्मी का शव हो बाता है।

## ६ ४ उपादान परिवच सच (२१ २ १ ४)

इपातान स्कल्पी की स्पाक्या

धायस्ती ।

'निश्चनी । पूर्वि कपादाल-स्काम हैं। कांव से पूर्वि १ को यह समोपादाल स्काम नेहसी-पादाल स्काम, मोहोपादाल स्काम लेस्कारोपादाल स्काम और विज्ञानीपादाल स्काम ।

मिशुमी ! अब तक रीमे देन चीच उपादान रकावीं को चारी शिक्षतिके में बधावेंट। नहीं समझा वा तब ठक हम कोक में 'कानुकर सामक सम्बद्धत्व मान करने का दावा नहीं किया था।

ना देव देव इस काक ना 'काशुद्ध सामक सम्प्रक्त नात करण क भिक्षाको ! चव मैंचे पनार्थका समझ निया दसी दावा किया।

भारता । वाव साथ पाणायका समझा तथा या वावा पाणा । वा पार सिकसिक करी है कर को बाल किया। कर के समुद्दव को जाव किया। रूप के निरोध को जाव निया। कर के निरोधनात्री शर्मा को आव किया। व्यवस को ; संका को । संस्थार्थे

हो" ; विद्यान को । निश्चमी ! क्या क्या है ? बार सहाबूत और बार सहाबूत से बबने बाके क्या । यही क्या है । आहार के समुद्रक स क्या कुमुद्रय होता है । बाहर के लिएक स क्या का निरोध होता है । वहीं

मितुनों । वो असल या महाल हुने पान कर क्य के निवेद के किये विशाग के किये विशेष के लिय मतियान होते हैं से ही सुश्चित्यक हैं। को सुप्रविद्यक्त हैं ने इस धर्म दिवस में मविद्रिण होते हैं।

सिशुमा ! का क्षत्रण का शाक्ष्य पूरी जान का क्ष्य के निर्मेष से निराम से, निराम से सनुपास में सिशुम्क के नावे हैं था से क्षामां में निशुम्क हुन हैं। जा नवार्य में निशुम्क हो नाने हैं ने ही करनी हैं। जो करनी हैं जाने किस जेंगा नहीं

भियानो | वेदना बना दें ? भियानों | वेदनात्काच का दि। व्यवसंवरणीया वेदना। आवसंवर्षाया वेदना । प्राप्त-संग्याता व्यवसंव निकार्यावर्षाया वेदना । व्यवसंवर्षाया वेदना। व्यवसंवर्षाया व्यवसंवर्षाया व्यवसं विद्याभी | दुर्ग वेदना वदने दें शवदों के गानुक्य से वेदना का सामुख्य काला दें। वयसे के विद्याद सं वेदना का विरोध काला है। वदी व्यवसंवर्षाया व्यवसंवर्षाया विद्यान के निर्माण का सामें दें ।

निपूर्णी रेका क्षत्रात का माझन हुने बान् ।

विद्यार्थी । संदा क्या है १

भिक्षुओं । संझत्काय छ हैं। रूपसंजा, अव्यस्तज्ञा, गन्यसंज्ञा, रासन्यज्ञा, सर्यान्यज्ञा, धर्म-संज्ञा । यही संज्ञा हैं। रुपकों के समुद्रय से मज्ञा का समुद्रय होता है। न्यर्भ के निरोध से संज्ञा का निरोध होता है। यही आर्य जाशद्विक मार्ग सज्ञा के निरोध का मार्ग है।

मिक्षओ ! जो ध्रमण या बाह्यण '' इसे जानः''।

भिक्षओ ! सरकार क्या है ?

भिद्धको । चेतना-काय छ हैं। क्य-सचेतना, शञ्च-संचेतना, शन्य-सचेतना, रग-संचेतना, व्यर्ध-संचेतना, प्रर्म-संचेतना । भिद्धको । इन्हीं को संस्कार कहते हैं। म्यर्श के समुदय से अकारों का समुदय होता है। एकां के निरोध से सस्कारों का निरोध होता है। यहाँ कार्य-अद्यक्तिम मार्ग संस्कारों के निरोध का मार्ग है। "

भिधुनो । जो श्रमण या बाह्मण । इसे जान ।

भिक्षुओ ! विज्ञान क्या है ?

भिद्धाओं ! विशास-काय ए हैं। चल्लुचिज्ञान, श्रोप्रविज्ञान, झाणचिज्ञान, जिल्लाविज्ञान, काय-विज्ञान, मनोधिज्ञान। क्षिश्लओं । इसी को विज्ञान कहते हैं। नामरूप के समुदय से विज्ञान का समुद्रय होता है। नामरूप के निरोध से विज्ञान का निरोध होता है। यहां आये अधाक्षिक आर्ग विज्ञान के निरोध का आर्थ है।

भिञ्ज । जो अमण या प्राह्मण इसे जान कर रूप के निर्वेद के िय, विराग के लिये, निरोध के लिये प्रतिपत्र होते हैं वे ही सुप्रतिपत्र हैं। जो सुप्रसिपत्र हैं वे इस धर्म विनय में प्रतिश्वित होते हैं।

सिक्षुओं। जो असम या प्राक्षण हसे जान कर रूप के निर्देद से, अनुपाना से बिहुक्त हो गये हैं वे ही यथायें में बिहुक्त हुये हैं। जो यथार्थ में बिहुक्त हो गये हैं थे ही नेपनी हैं। जो सेपनी उनके किये भैंवर नहीं है।

## § ५. सत्तद्वान सुत्त ( २१. २. १. ५ )

सात स्थानों में क्रशल ही उत्तम पुरुप है

श्रासकती ।

भिक्षुओं ! जो भिक्षु सात स्थानों में कुशक तथा तीन प्रकार से परीक्षा करनेवाका होता है, वह इस अमेरिकनय में केवकी, सफक मझावर्षवाका, और उत्तम पुरुष कहा जाता है।

मिश्रुओं । भिश्रु सात स्थानों में कुशक कैसे होता है ?

शिक्षुची ! निश्च रूप को वानता है। रूप के ससुदय को वानता है। रूप के निरोध को जानता है। रूप के निरोधपानी सार्थ को कामता है। रूप के आस्ताद को वानता है। रूप के दोप को जानता है। रूप के रूपलाई ( ⊶ाक्षिक) को जानता है।

• वेदना , सज्जा , संस्कार , विज्ञान ।

सिक्षुमी ! क्या बचा है ? चार महायुत और उनसे होनेताले कथा। सिक्षुमी ! दूर्यों को स्था कहते हैं। आहार के समुद्रय से रूप का समुद्रय होता है। आहार के निरोध से रूप का निरोध होता है। यही भार्य कार्तिक मार्ग कप के निरोध का मार्ग हैं।

ा. जो रूप के प्रथम से सुख और सीमनस्य होता है वही रूप का आस्वाद है। रूप जो अनित्य, हु ख, विपरिणामधर्मा है यह रूप का दोप है। जो रूप से छन्द-राग का प्रहीण हो जाना है पह रूप की सुक्ति है।

भिक्षुको जो असण या बाह्यण इस प्रकार रूप को जान, रूप के समुदय को जान, रूप के निरोध को जान, रूप के निरोध के सार्य को जान, रूप की आस्थाय को जान, रूप के दोध को जान, रूप की क्रम वहीं रहेगा यह यथार्थतः वानता है ।

कप थेडना संजा संस्कार और विज्ञान के नहीं होने से की मिश्र 'यदि वह नहीं हाने तो मेरा नहीं होने नहीं होगा वह भेरा नहीं होगा --- प्रसा कड़े वह बीचेके बल्यम का कार हैता है।

सम्ते । ऐसा कश्रमेशका मिश्र नीचे के बल्बन की काट वेता है।

मन्ते ! क्या साम और देख अने के याद आधार्यों का अग हो बासा है ?

मिहर ! कोई अविद्वान प्रयक्तक तास नहीं करने के स्थान पर बास को प्राप्त होता है । जिस ! अविद्वाम् पृत्यकृत्वतां को यह ग्रास होता है कि-पादि यह नहीं होने ती शेरा नहीं होने। नहीं होगा बद्द मेरा नहीं होता ।

मिह्य ! बिद्वाम् वार्वकाषक बास वहीं करने के स्वान पर बास को नहीं मान्न हाता है । मिक्स !

विद्वान कार्यसायक को यह बास वहीं होता है कि-पादि यह नहीं होते ।

सिक्त ! क्रम में आसक बाने स विज्ञान बना रहता है—क्रम पर जाकन्त्रित क्रम पर प्रतिहित सिंध ३१ ३ १ शक्त के समावी।

निक्षा | बह बान और देश क्षेत्रे के बाद उसके बाववों का सब हो बाता है।

## § ४ डपादान परिवत्त सत्त (२१२ १४)

क्यातान स्कन्धों की स्थाक्या

धापस्ती ।

सिश्चको ! पाँच जपानाम-स्काम हैं। कीन सं पाँच ! को यह कर्तापादान स्काम वेदनी-पादान स्कन्य, संजीपादान स्कन्य संस्कारीपादाव स्कन्य और विज्ञानीपादान स्कन्य ।

मिसूची ! बब तक मैंबे इन वॉब उपादान शक्कों को चारों सिकसिडे में बमार्वतः नहीं समझा था तथ तक इस छोक में 'खनुकर सम्बद्ध सम्बद्धात्व बात करने का दादा नहीं किया था।

सिक्षको । अन हैने जनार्थका समझ क्रिया सही 'बाबा किया।

वे चार सिकसिके कैसे ? कम को बान किया । कम के समुद्रण को बाव किया । रूप के निरोध को बान किया । क्य के निरोधनानी शार्ग को बाव किया । वेदना को । संज्ञा को : संस्कारी

कां । विद्यान को । भिद्राओं ! कर क्या है ? चार सहाअूत और बार सहाभूत से बनने बाके क्य । बही स्म है। आहार के शमुद्द से कम का समुद्द्य होता है। बाहार के गिरोच से कम का मिरोच होता है। यही

आर्थ महाद्विक मार्ग क्या के लिएेच का आर्ग है। को वह सम्बक्धि सम्बक्धि सम्बक्धि। मिहात्री ! को समय वा माह्यल होसे खाल कर क्या के लिवेंच के किने, विराग के किने निरीच के किने प्रतिपुत्त होते हैं से ही सुप्रतिपुत्त हैं । को सुप्रतिपुत्त्व हैं ने इस बर्म विवन में प्रतिक्ति होते हैं ।

मिश्रुका ! को अग्रम या आञ्चन प्रसे जान कर पूर्व के निर्वेष से. विराग से निरोत्त में समुपादान से विमुक्त दो गये हैं ने ही बनार्ज में विमुक्त इसे हैं ! जो बचार्ज में विसुक्त हो गने हैं ने ही केवानी है। को केवानी हैं जनके किने रेंबर मार्थ है।

मिश्रको ! मेदना क्या है ? शिश्रको ! बेदनान्द्राव का है। बहुसंस्पर्धका बेदना। मोप्रसंस्पर्धका वेदना । शाक-संस्थर्यना वेदना । विद्वासंस्थर्यना वेदना । कायसंस्थरीना वेदया । अनुसंस्थनी वेदना । भिद्युका । इस बेदना कहते हैं । स्वर्त के समुद्रय से बेहवा का समुद्रय होता है । स्वर्त के विरोध से वेदना का निरोध दोता है। वही आवें नदायिक सार्य नेतृता के निरोध का मार्ग है।

मिसनो ! जो समय पा माळव असे जाव

मिश्रभी । मंत्रा क्या है ?

## 🖁 ६. बुद्ध सुत्त ( २१. २. १.६ ) वज और प्रशाविमुक्त भिक्ष में भेट

भावस्ती '''।

भिक्षुओ । तथागत अर्हत् सम्यक् सम्बद्ध रूप के निर्वेद, विराग तथा विरोध से उपादान-रहित हो थिमुक संस्यक्सम्बद्ध कहे जाते हैं , भिछुओं । प्रज्ञाधिमुक्त भिक्षु भी रूप के निर्वेट. विराग. निरोध तथा अनुपादान से विमुक्त हो प्रज्ञाविमुक्त कहा जाता है।

भिक्षुओ । तथागत अहंत सम्यक्-सम्बद्ध बेटना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान के निर्धेद, विराग, तथा निरोध से उपादान-रहित हो विद्युक्त सम्यक् नम्बुद्ध कहे जाते हैं। भिक्षुओ । प्रज्ञाविद्युक्त भिक्ष भी घेदना , सज़ा , सरकार, विज्ञान के निर्वेट, विराग, निरोध, तथा अनुपाडान से विद्युक्त हो प्रज्ञाविसक्त कहा जाता है।

भिक्षुओ ! तो, तथागत अर्हत् सम्प्रक् सम्बद्ध और प्रज्ञाविसुक्त भिक्षु में क्या भेद है ?

भन्ते । भगवान् ही हमारे धर्मे के अधिष्ठाता है, भगवान् ही नेता हैं, भगवान् ही प्रतिशरण हैं । भण्डा होता कि भगवान् ही इसे बताते । भगवान् से खुनकर भिक्षु धारण करेंगे ।

भिश्रुको । सो सुनी, अच्छी तरह मन रुगाओं में कहता हूं।

"भन्ते । यहुत अच्छा" कहकर भिक्षुओं ने भगवान् को उत्तर दिया ।

भगवान् बोले-भिश्वभो ! तथागत महंत् सम्यक् सम्बद्ध अनुत्पन्न मार्ग के उत्पन्न करनेवाले होते हैं, अज्ञात मार्ग के जनाने वाले होते हैं, नहीं बताये गये मार्ग के बताने वाले होते है, मार्ग-विद् सीर मार्ग-कोविट होते हैं। भिक्षको । इस ममय के जो आवक है वे वाद में मार्ग का अनुगमन करते बाह्ये हैं।

भिञ्जभो । तथागत अर्हत् सम्यक् सम्यद् और प्रकाशिमुक्त भिञ्ज में यही भेद है।

## § ७ पश्चविगाय सत्त (२१.२ १.७) अनित्य, द्रास्त्रं, बनातम का उपदेश

पेसा मैंने खुना।

एक समय भगवान् धाराणसी के वास ऋषियतम सृगदाय में विदार करते थे।

वहाँ भगवान् ने पंचावर्गीय शिश्चओं को आमन्त्रित किया।

भिञ्जुओ ! रूप अनातम है । भिञ्जुओ ! यदि रूप आतमा होता तो यह दु ल का कारण नहीं बनता, और तब कोई ऐसा कह सकता, 'सेरा रूप ऐसा होवे, मेरा रूप ऐसा नहीं होवे ।'

भिञ्चओ ! क्योंकि रूप अनात्म है इसीलिये यह दु ल का कारण होता है, और कोई ऐसा महीं कह सकता है, 'मेरा रूप ऐसा होवे, मेरा रूप ऐसा नहीं होते ।'

भिञ्जुली । बेटना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान अनातम है

मिक्षशो ! तो क्या समझते हो, रूप अनित्य है या निस्य ?

समिल, अन्ते !

जो सनित्य है बहदु ख है या सुख <u>१</u>

दु ख भन्ते ।

जो अनित्य, दुःख, और विपरिणामधर्मा है क्या उसे ऐसा समझना दीक है कि 'यह सेरा है. यह में हूँ, यह मेरा आस्मा है ?

नहीं भन्ते ।

वेदना , सन्ना , सस्कार , थिज्ञान नित्य है या अनित्य ?

मुख्ति को साम निर्वेद के किये विशास के किये तथा निर्वाय के किये प्रतिपन्न होते हैं वे ही सुप्रतिपन्न हैं। जो सप्रतियम्य हैं के इस विवय में प्रतिक्रित होते हैं।

भिद्युको ! को ब्रामण या आहान इस प्रकार कृप को बात कुप की मुक्ति को बात रूप के क्रिकेंड से बिरास से जिसेक से तथा करपावान से बिसक हो गये हैं वे ही बचार्य में विसक्त हुने हैं। का प्रयार्थ में बिमुक हो गने हैं ने केवसी हैं। जो केवसी हो गये हैं उनके सिये मैंकर नहीं है।

धिकाओं । बेदला क्या है ?

मिश्रको ! वेदना-काव छ हैं । वशसंस्पर्धका वेदमा मनःसंस्पर्धका वेदना । मिश्रको ! इसे बदना बदरों हैं। एरहाँ के समुद्रण स बेदना का समत्वय क्षोता है। स्पर्श के निशेष से बेदना का विरोध कारत है । बारी कार्य अवस्थित सार्थ केवार के जिसेक का सार्थ है ।

का बहुमा के प्रत्यक स सब सीमनस्य होता है वह बेहमा का कास्त्रात है। बेहमा को अनिव कुन्स विपरियानयमां है वह वेदना का दोप है। को वेदना के प्रति खन्तराग का प्रशीम हो जाना है बह बदवा की मुक्ति है।

मिसको ! जो क्रमक या शक्कण इस प्रकार बेदमा की जान ।

सिमाओं । सका बया है १

भिसमो ! संज्ञादाय क है । क्यसंज्ञा वर्गसज्ञा । मिल्लामो ! इसी को संज्ञा कहते हैं ।

भिश्नानो । जो श्रमण या माञ्चन इस प्रकार संता को जान ।

भिक्षणी ! संस्थार क्या है ! भिक्षणो ! चेत्रणकाय छः हैं। क्रयसंचतना धर्मसंचेतना। मिल्ला ! इसी का संस्कार कहते हैं । स्पर्श के समावय से संस्कार का समस्य होता है ।

भिक्षको । यो समन वा नामम इस प्रकार संस्कारों को पान ।

मिश्रको । बिलाम पना है ?

भिन्नभा । विज्ञानकाय पार्ट । वश्चविज्ञान अधीविज्ञान । शिश्नभी १ इसी की पिज्ञान करते है। नामरूप के समुद्रय सं विज्ञान का सगहर होता है। नामरूप के निरोध से विज्ञान का निरीय शोला है। बार्च बर्णानिक गार्ग विकास के मिरोब का अपने हैं।

विज्ञान के प्रत्यय में जो मान सीमानाव्य होता है वह विज्ञान का ब्यान्साव है। विज्ञान जो अभिन्य शत्र और विवरिणासधारी है यह विज्ञान का बीच है। को विज्ञान के अति राज्याम का सहीण हा जाना है यह निज्ञान की समित है।

भिश्चमी ! जा समय या माद्याण किलान की हम प्रकार खान । किवेंद के सिने तथा निर्वाण के किये प्रतिपाल होते हैं के ही अप्रतिपाल हैं । को अप्रतिपाल है के बार विकास से श्रावितिक बाते हैं ।

बिलाओं | आ कामन या जाकाय क्षम प्रकार विज्ञान की जान - विज्ञान के निर्वेद सं विज्ञान के जिला में तथा अववादान में विमन्त हो गवे हैं वे ही यथाओं विमन्त हुए हैं। आ यथाओं में विमुक्त हो सबे दे से मेचली हैं। जा केवली हो गये हैं उनके किये भैंपर नहीं है।

जिल्लामाँ ! इसी सकार जिल्ला माल क्यामी में कुछक हाला है । भिश्तको । भिश्त कैमें सीन प्रवार स पर्राक्षा करने बाका दोता है ?

बिद्धाची ! बिश्व चानु स परीक्षा करने वाला दौता है । आवतम स नरीक्षा करने नाका दौता है । ब्रतीन्वसमन्त्राच स परीक्षा काने वाका बाता है :

भिशामा ! बेसे ही बिशा सीय प्रकार म बरीका करन बाना होता है ।

विद्याला ! को लिक्ष साल क्यानों में नुकाल सबर शीय प्रकार से परीक्षा करने बाका द्वारा है यह हरा भग्ने विगय में केशबी राज्य ग्रहाधर्म बाका और क्यांग पुरुष कहा प्राता है।

निवंद नहीं करते ! महालि ! क्योंकि रूप में वदा दुः एं और सुख का लमाव है, इसिलये सत्व रूप से निवंद को प्राप्त होते हैं , निवंद से विरक्त हो जाते हैं; विराग से विश्वद हो जाते हैं ।

महािंछ ! सत्त्वों की विञ्जब्दि का यही हेतु=प्रत्यय हैं। इस तरह, हेतु≈प्रत्यय से सत्व विञ्जद हो जाते हैं।

विदना, सञ्चा, संस्कार, विज्ञान के साथ भी ऐसा ही ]

## **६९ आदित्त सत्त (२१.२ १.९)**

क्रवादि जल रहा है

श्रावस्ती ।

भिक्षुओं । रूप जरू रहा (=आदीस ) है। वेदना । , संज्ञा , संस्कार , विज्ञान जरू हा है।

भिक्षुओ ! विद्वान् आर्यव्यावक इसे समझ कर रूप से निर्वेद करता है, बेदना ', संज्ञा , संस्कार , विज्ञान से निर्वेद करता है। निर्वेद से विरक्त हो जाता है, विदाग से मुक्त हो जाता है, क्षा होने से मुक्त हो गया--ऐसा ज्ञान होता है।

काति क्षीण हुई, प्रहावर्ष पूरा हो गया, जो करना या तो कर खिया, अब भीर कुछ वाकी नहीं धया - ऐसा जान देता है।

§ १०. निरुत्तिपथ सुत्त ( २१ २ १ १० )

तीन निरुक्ति-पथ सदा परू-सा रहते है

श्रावस्ती ।

आवस्ता । ' निश्चको । तीन विश्विष-पश्च = अधिवयन पश्च = प्रकृति पश्च यदले नहीं हैं, पहले भी हभी नहीं दहले थे भीर न आगे चककर धदलेंगे । असण, नासण्या विश्व पुत्प उसे उलट नहीं सकते हैं। कीन से नीन ?

भिक्षुओ ! को रूप अवित्त = निरुद = विपरिणत हो गया, वह 'हुवा या' ऐसा जाना जाता है ! षट 'भभी है' ऐसा जाना नहीं जाता । वह 'होगा' ऐसा भी नहीं जाना जाता !

जो वेदना , सज्ञा , सस्कार , विज्ञान ।

मिल्लुको । जो रूप अभी उपपन्न = प्रायुर्जुत नहीं हुआ है, यह 'होगा' ऐसा लामा जाता हे । 'यह है' ऐसा जाना नहीं आता । 'वह था' ऐसा जाना जाता ।

जो बेदना .सज्ञा .सस्कार :विज्ञान ।

भिक्षुओं । ओ रूप अभी उत्पन्न = प्रादुर्भूत हुआ है, वह 'है' ऐना जाश वाता है । 'वह होगा? पैसा बाना नहीं बाला । 'बह या' ऐसा बाग वहीं जाता है ।

जी वेदना , सञ्चा , संस्कृप्र ", विज्ञान ।

सिहुको ! यही तीन निरुक्ति पत्र = क्षियचन-पत्र=क्षप्तर वदके नहीं हैं, पहले भी कभी नहीं बदके से और आगे पत्रकर भी नहीं सब्देगी। असण, ब्राह्मण या विज्ञ पुरुष उसे उक्तर नहीं सकते हैं।

भिश्रुओं । जो उरफाल (पान्स के रहने वाले ) शस्स और प्रश्न आहेत्रशादी, आक्रियार्टा, गारितक वादी हैं, वे भी हम तीन निकक्ति पय≔श्रविचनन पय≔प्रवस्थित्य को मान्य भीत अनिन्य मानसो हैं।

सो भयों ? जिल्दा और तिरप्कार के भव से ।

उपय-वर्ग समाप्त

सनित्व अस्ति ।

जो अभिन्य है बहु दुन्त है या सुध्य ?

दुःग्व सन्त ।

का अनित्य बुल जोर विपरिचासपर्सो इंच्या कस धूमा समझना ठीक है कि यह मेरा है, यह मैं हूँ, वह मरा आएमा है ?

वहीं सन्त !

मिभुभो ! इसिन्यं का भी क्य-अर्ताल कागात वर्षमान् कावास वाम स्यूक सूक्त होन, प्रणीत मुद्द में या निकट में - है सभी यवारीत। प्रशास्त्रीक श्रेमा समझना काहिये कि 'यह मेरा नहीं है यह मैं नहीं है यह मरा आत्मा नहीं है।

जो भी बेर्वा ; संक्षा ; बंदकार ↔ विकास ।

मिशुभा । यमा समझने वासा विद्वान आर्थसावक क्या में निर्वेद करता है वेदना संभा संस्कार विभाग में निर्वेद करता है। निर्वेद करते स विरक्त हो जाता है। विरक्त होने स विश्वनत हो जाता है। विश्वनत हो जाने में विश्वनत हा गया—देसा झान होता है। वासि सीम हुइ —देसा जान नता है।

भगगन् यह बाछ । संपृष्ठ हो पंचवर्गीय शिक्षुओं ने अगुवान् के कह का अभिनन्त्र किया । हस वर्मीवर्ग के किय जाने पर पंचवर्गीय शिक्षुओं का क्लि उपायान रहित हो आक्षयों से पुन्त हो गया ।

## <sup>5</sup> ८ महालि सच (२१ २ १ ८)

सत्यों की गुद्धि का हुन पूज काइयप का बहेत-वाद

एक ममय अगरान् थैताली में मदायम की कुळाशार-दाख्त में विहार करते थे।

त्रच महाक्रि किप्यवि यहाँ सगरान् ये वहाँ साया आर भगवान् का अभियादन कर एक ओर बंद गया !

ण्य भीर बैंड कर महाकि निष्यावि आगान् स बोला "जन्मे ! पुराय काइयर मेना नहसा है मार्चों के नेक्केस के लिये कोई हेतु प्राप्त वहीं है। विता देतुन्यन्यन के साथ प्रेपास में पहते हैं। मार्चों की विमुद्धि के निर्मे काई हेतु प्राप्त वहीं है। विता हेतुन्यायन के सब विमुद्ध होने हैं। हमेंमें सामान् वा बहा कहना है !

सहाति ! साथी के संकार के तिये हेनू=प्रापय है । हेनू=स्रापय स्व हो तस्य संकार से पहने हैं । साथी की विद्युत्ति के तिय हेनू=प्रापय हं । हेनू=स्रापय साधीराण विद्युत्व होते हैं ।

मन्। गार्थी के लेक्नेस के जिल्ले का हेनु=प्राप्य दें ? करें। हेनु=प्राप्य संस्था से पर प्राप्त दें।

मदानि ! वहि कम बेदल पुन्त ही तुत्व और सुम्य धा सर्वेदा रहिता दाना तो। सन्य कम् से दश्में महीं दान : सदानि ! वर्षीदि कम से वहा तुत्व दि नवा पुन्त नहीं हैं; हमीनिने नत्त कम से हरा होते हैं तुन्त हो जाने से दमका गंदीस वरते हैं, गंदीस से क्लेक्स से वह जाने हैं !

महानि | प्राप्ती के र्गक्तेश का बह हेपूळान्यव है। इस तरह भी हेगुळाग्यय से स व अंक्डों। मैं बक्ते हैं।

[ वेर्ता भीता शंतवार विज्ञान के माथ भी बंता ही ] अर्जी वार्त्वी की विद्युत्त को बैंगुजनवार क्या है है हैज्जनवार से साम कैसे विद्युत्त होते हैं है सार्थित वृत्ति का वेदक सुन्य से तुम्य और युक्त से गर्ववा सीता होता हो सान्य कर्ण में निर्वेद नहीं करते । महालि ! क्योंकि रूप में बक्षा दुख और सुख का अभाव है, इसलिये सत्य रूप से निवेंद को प्राप्त होते हैं , निवेंद से विरक्त हो जाते हैं, विराग से विशुद्ध हो जाते हैं।

महाति ! सत्वीं की विश्वक्षि का यही हेतु=प्रत्यय ह । इस तरह, हेतु=प्रत्यय से सत्व विश्वक्ष हो जाने हैं।

• [ चेदना, सज़ा, संस्कार, विज्ञान के साथ भी पेसा ही ]

s ९. आदित्त सत्त (२१.२ १.५)

ऋपादि जल रहा है

श्राचम्ही ' ।

·भिक्षओं । क्रम जल रहा (=आवीस ) हैं । वेदना , लंबा , सरशर . विज्ञान जल

रहा है।

भिक्षको ! विद्वान आर्थकावक इसे समझ कर रूप से निर्वेट करता है, वेदना . संज्ञा . संस्थार . बिकान से निर्धेद करता है। निर्धेद से थिरक हो जाता है, विराग से मुक्त हो जाता है. मुक्त होने से मुक्त हो गया—ऐसा शान होता है।

जाति श्रीण हुई, ब्रह्मधर्य प्रा हो गया, की करना था सी कर किया, अब और कुछ बाकी नहीं बचा- ऐसा जान लेता है।

8 १०. निरुत्तिपथ सत्त (२१ २ १ १०) तीन निरुक्ति-पथ सदा यक-सा रहते हैं

·· भिक्षको । तीन निरुक्ति-पथ = अधिवयन पथ = प्रश्नित पथ थदके नहीं हैं, पहले भी ६भी नहीं बढ़ते थे सीर न आगे चलकर घदलेंगे। असण, बाह्मण या विक पुरुष उसे उत्तर नहीं सकते हैं। कीन से सीन ?

भिक्षको ! जो ऋप अतीत = निरुद्ध = विपरिणत हो गया, यह 'हुआ था' ऐसा जाना जाता है ।

यह 'अभी है' ऐसा जाना नहीं वाता । यह 'होगा' ऐसा भी नहीं वाना जाता ।

भो बेदना , सङ्ग्रा , संस्कार , विज्ञान । भिद्धओं । को रूप अभी उत्पन्न = बादुर्भृत नहीं हुआ है, यह 'होगा' ऐसा नाना जाता है। 'वह है' ऐसा जाना नहीं जासा । 'वह था' ऐसा जाना जाता ।

जी घेदना , सङ्गा , सस्कार , विज्ञान ।

भिक्षुओं ! जो रूप अभी उत्पन्न = प्रायुर्भृत हुआ है, वह 'हे' पेसा जाना जाता है । 'बह होगा' पेसा जामा नहीं जाता । 'वह था' ऐसा जाना नहीं जाता है ।

जो चेदना , सङ्ग , सरकार , विज्ञान ।

भिक्षको । यही तीन निरुक्ति पय = अधिवयन-पय=अञ्चित्रिय वदले नहीं हैं, पहले भी कभी नहीं बढ़े थे और भागे चलकर भी नहीं बढ़लेंगे। असण, जावाण या विक्र पुरुष उसे उलट नहीं सक्ते हैं।

. भिक्षुको । जो सत्याल ( पान्त के रहने वाले ) शहरत और सद्भा सहेत्वादी, सकियवादी नास्तिक-वादी हैं, वे भी इस तीन निक्कि-पय=अधिवसन पथ=प्रश्चित्ति-पथ की मान्य और अनिन्त समझते हैं।

सो क्यों ? निन्दा और विस्प्रतन के भय से ।

उपय-चर्ग समाप्त

## दूसरा भाग

## अर्हत् वर्ग

## ६१ डपादिय सुच (२१ २ २ १)

## डपादान के स्थाम से मुक्ति

थावस्ती ।

तम कोई निष्टु कहाँ अगमान् थे वहाँ भाषा और अनवान् का समिशाहन कर एक और वैदासा।

एक और बैठ वह सिद्ध अगयान् से बीका 'अन्ते ! सथवाब् सुखे संक्षेप में घर्मोपदेश करें जिसे सुक्कर में एकान्त में अनेका अध्यस्य कारापी और वहितास्त्र ही विहार करूँ।

भिञ्च ! बपादान में पना हुआ माद के कन्त्रन से वैधा शहता है। बपादान को छोड़ देशवाका इस पापी से मुख हो बाता है।

मगवान् ! बान किया । शुगतः ! काम किना ।

मिल्ल ! मरे संक्रेप से बताबे गब का तुमने बिस्तार से कर्ष क्या समझा !

भन्ते | इस्प के जगहान में पढ़ा हुआ मार के बन्धन श वैंद्या रहता है<sub>।</sub> इस के उपादान की फोड़ वंत्रेयाका उस पापी से मुख्य हो आता है।

मेरूना : संका : संस्कार : विकास :

मन्ते ! मगवान् के संक्षेत्र से क्तावे गये का इसने विस्तार से यही अर्थ समक्षा इ ।

मिश्च । डीक है। तुम्हें वही समग्रवा चाहिये।

चन बह मिश्च आपवान् के नहें का लियान्यन कर आपवान् को स्थाम् वर चला गया । सब बम निश्च ने गुप्तम्य में व्यक्तेका व्यमम्च आवार्षा वित् प्रदिवास्त हो -विद्वार वरते हुव सीम ही मेक्सप्त के बस लीत्मार पक्त को प्राप्त वर विदार करने कसा विश्ले किये दुक्युक मकीसीति घर संबेधर हो सम्बन्ध हो निर्माण क्षित्र क्षाप्त क्षाण हुई —्येया अन्य केला है।

बद्द मिश्र कर्त्तों में एक द्वारा ।

#### **६२ मध्यमान सुर्प( ११ २ २ २)**

#### मार से मुक्ति की है

धावस्ती ।

श मुक्त दो जाता दें। भन्ता कर का मानते कुचे कोई मार के वन्त्य में वैचा रहता दें। [बीप कपरवार्ध सूत्र

के समाव हो । ]

## ६३. अभिनन्दन सुत्त (२१.२ २.३)

#### अभिनन्दन करते एए मार के बन्धन मे

श्रावस्ती' ।

.શ. સ. સ. ૮ 1

भिक्ष । अभिमन्द्रम करने हुये कोई मार के प्रनथन से यंथा रहता है।

शिप कपर याने सा के समानी

## ८ ४. अनिच्च सुत्त (२१. २. २ ४)

#### छन्द का त्याग

. शाबस्ती ।

··भिक्ष ! जो असिय है उसके प्रति छन्ड का प्रदाण कर देना चारिये ।

भगवान् ! समझ लिया । सुगत ! समझ लिया ।

भिक्ष ! मेरे इस सक्षेप से कहे गये का तुमने विस्तार से अर्थ केमे ग्रमणा !

भन्ते ! रूप अनित्य है । उसके प्रति छन्द का प्रहाम कर देना चाहिये । वेदना , सजा '. मस्कार . विज्ञान ।

यह भिक्ष अहैता में एक हुआ।

## 8 भ. दक्ख सत्ता (२१. २. २. ५) छन्ट का त्याग

भिक्ष । जो दुःख है उसके प्रति छन्द का प्रहाण कर देना चाहिये। वस भिक्ष अहैतों में एक हआ।

## § ६. अनत्त सूत्त (२१. २. २. ६)

#### छन्द का त्याग

आवस्ती

मिश्र ! जो अनारम है उसके प्रति छन्द का प्रहाण कर देना चाहियें। वह सिक्ष अर्हतीं में एक हआ।

## § ७. अनत्तनेय्य सत्त (२१२२७)

#### छन्द का स्थान

श्रावस्ती''।

भिक्ष । जो अनाव्यमीय है उसके प्रति छन्द का प्रदाण कर देना चाहिये । वह भिक्ष अईसों में एक इका।

## § ८. रजनीयसण्डित सुत्त (२१. २, २. ८)

छन्द का त्याग

था<del>पस्ती</del>

भिल्ल ! जो राग उत्पन्न करनेवांकी चीन है उसके प्रति छन्द का प्रहाण कर दो ।

## 🖣 ९ गाम सुच (२१ २ ० ९)

## धारंकार का सात्रा केले १

श्रायस्ती" ।

तप भायुष्मान् रहाय पार्टी भगवान् थे पार्टी भागे और भगवान् का अभिवादम करके एक और कैट राष ।

पुत्र भीर बेंद्र आयुष्मान् राध सरावाष् स बाल अस्त ! क्या जान और दंशहर इस विजान-पुत्र

सरीर में तथा पादर लगी निमिन्तें में भददार जनदार आर मानानुगय नहीं हाते हैं है

पेद्वा उन्हाः । भैन्द्रार । विचान ।

राप ] इसे जान भार वेराकर हम विशावयुक्त पारीर में तथा बाहर सभी विभिन्नों में ग्रह्कार ममझर और मायञ्जाब नहीं हात हैं ।

मायुष्मान् राच नहंती में एक दुवे।

#### महंकार से विश्व की विश्वक्ति कीले ?

भाषस्ती ।

तक कानुष्पात् सुराध भाषान् स बोक 'मन्ते' ! त्या बात और धनरर इस विशास-पुत्र सर्रोर में तका बाहर के मानी निविकों में महत्रार समझार कीर साम सर्वादत हो पिन्न विमुक्त स्रोता है !

सुराव ! जो क्य है सन्नी 'मेरा पहीं हैं — येना आर्थ और देसका बपादाभ सहित हो कोई पिन्नक होता है।

अंदना : संक्रा : सस्तर : विक्रान ।

सुराय ! इसे बान कोर रेककर इस विज्ञान-कुक सरीर में तथा बाहर के सभी निशिष्टों में ककरार समझार कीर मान से सीता हो जिस विश्वक होता है।

मासुप्ताम् शुराव महीती से एक हुनै ।

मार्थ वर्ग समाप्त

## तीसरा भाग

### ग्यलनीय वर्ग

## s १. अस्साद सुत्त (२१. २ ३. १)

#### मास्वाद का यथार्थ धान

श्रायस्ती '।

भिक्षुओं । अविद्वान् पृथक्जन रूप के आस्वान, जाडीनव (≈डीप) ओर मोक्ष को वयार्थत । नहीं जानता है।

चेदना ,सङा ,यस्कार ,विज्ञान ।

सिक्षुकी । विद्वान आर्थकापक रूप के आस्वाद, त्रोप और सोक्ष को प्रवार्यत जानता है। पेटना , सत्रा ', सरकार , विज्ञान '।

## § २. पटम सप्ट्य सुत्त (२१ २ ३ २)

## उत्पक्ति का झान

थावस्ती

मिश्रुओ ! अविद्वाल धूथक्जन कर के समुद्रथ, अस्त, आस्त्राट, तीप धाँर मोक्ष को यथार्यत नहीं जानता है।

• चित्राम् भार्यश्रायक यथार्थत जानता है।

## § <del>२. दुतिय सम्रुद्य सुत्त</del> (२१. २ ३. ३)

#### उत्पत्ति की शान

आवस्ती ।

भिञ्जभी रे-विद्वान् आर्यक्षापक रूप के समुद्य, अस्त, आस्त्रात, दोप और सोक्ष को व्यार्थंत, जानता है।

वेदना , सझा , सस्कार , विज्ञान ।

#### ६ ४. पठम अरहन्त सत्त (२१ २ ३ ४)

#### अर्धत सर्वश्रेष

श्रावस्ती ।

्राच्या निष्ठुको ! इस अनिष्य है। जो अनित्य हैं वह हुन्त है। जो हुन्त दे वह अनास्त्र है। जो अनास्त्र है वह न मेरा है, च जें हूँ, न मेरा आस्त्रा है। हसे वचार्यंत प्रज्ञापूर्वंक समझना चाहिये।

वेदना , सज्ञा , संस्कार , विज्ञान ।

सिक्ष्मो ! बिद्वाल् मार्चभावक रूप में निवेंद करता है । वेदमा : संस्ता : संस्कार : विकास

निर्वेद से किरक हो जाता है। विराग से विसक हो वासा है। विसक हो वाने से विसक हो रामा पैसा जान होता है। जाति श्लीन हुई' 'यह जान स्टता है।

मिसको ! कितके सरपायाम सवास है उनमें नहींत ही सर्वश्रेद और सर्वांस हैं। मगवान यह बोक्त । यह कहकर बुद्ध फिर भी बोक्ते :---

धर्मत वहे सकी है अम्बें तथ्या नहीं है। सस्ति-मान समुव्यित हो गवा है ओइ-आफ कर गया ह ॥१॥ क्षास्त्र वरसार्थ-प्राप्त सक्षाप्त असावात । कोद्ध में अनुपक्तिम स्वयक विश्वकाले ॥२॥ पाँच रुक्तमाँ को काम सात प्रसाँ में विचरनेवाके। प्रजासकीय सरपद्वप सन्न के प्यारे पन्न सकत साल क्यों से सम्बन्ध भीन विस्तानों में विश्वीत । सकाबीर विचारने हैं। जिसके अब केरब सबील हो गये हैं अधा का बड़ी सं सम्पन्न महा-माग नमाहित। च कोड में भेड़ हैं कच्छे त्यम नहीं है शहर सक्तीका पर प्राप्त अस्तिकार सक्ता साह्य । प्रशासनी का को सार है उसे अपना केने बाके धर। हैस में बारम्यत प्रमीद से बिमक । तास्त अभिको प्राप्त वे कोऊ के विवयी हैं हुन्। करार भीचे देंते कहीं भी उन्हें शासचिक्र नहीं है। में सिंह भार करते हैं कोक के अमृत्तर मुख ॥४॥

५ ५ दतिय अरहन्त सच (२१ २ ३ ५)

#### सर्वत सर्वधेय

धायस्ती ।

मिशको ! कर जनित्व है । जो शनित्व है वह द्वारा हं। ओ जुनर है वह अवास है। वो भवारम है वह न तो मेरा है न में हूँ, न मेरा भारमा है। इसे बचार्यता प्रका पूर्वक केन काहि है।

बेपना (संज्ञा (संस्थार ) विज्ञान ।

भिशाली ! विश्वान व्यापैकाणक क्ष्में वेका कथ में निर्वेष करता है। वेत्रमा | संदा: | संस्कार | विज्ञान में निर्देश करता है। विवेद करत हुए विरक्त हो व्याना है । विरक्त हो विश्वक हा वाला है । विश्वक हो विश्वक हो

रावा' पेना वान होना है । कार्ति शीन हुई --आव नेशा है ।

भिशामा ! जिल्ली मानावाम सवाप है जनमें बहुन ही सर्वश्रह जीत सर्वाध है :

६६ पठम सीइ सुच (२१२३६) बुद्ध का उपरांग सुन बंधता भी भगभीत हो आते हैं

भाषस्ति ।

निवाकी ! जुनराज सिंह गाँछ को अवनी आँड से जिबसता है । आँड स जिहल कर वॉमाई

लेता है। जैंभाई छेकर अपने चारों और देखता है। अपने चारों और देखकर तीन बार गर्मना करता है। तीन द्वार गर्जना कर विकार के लिये निकल जाता है।

भिक्षुओं ! जितने जानवर सिंह की गरजना सुनते हैं सभी भय = संबंग = संत्रास को प्राप्त होते हैं। यिक में रहनेयाले अपने बिक से सुस जाते हैं। जरू में रहनेवाले जल में पैठ जाते हैं। जंगरू-मार्क में रहनेवाले जंगरू-मार्क में पुठ जाते हैं। पक्षी आकाश से ठढ जाते हैं।

भिक्षुओं ! राजा के प्राची जो गाँज, करने या राजचानी में बँधे रहते हैं ने भी अपने हद नन्धन को सीव-साद, दर से पेतान-पाखाना करते जिवर-निचर भाग खड़े होते हैं ।

भिक्षओं । जानवरों में मूगराज सिंह का ऐसा तेज और मताप हैं।

भिद्धको । इसी तरह, अहँद, सम्बङ्-सम्बद, विचा-चरण-सम्पत्न, सुगत, लोकविद, पुरुपों को वसन करने में तारबी के समान, देवताओं और मञ्जपों के गुरु भगवान बुद लोक में जन्म सेकर धर्म क्षा उपरेण करते हैं। यह रूप है। यह रूप का समुदय है। वह रूप का अस्त हो जाना है। यह वेदना . सक्त . सस्कार . विज्ञान ।

भिक्षुओं! जो दोघांखु, वर्णवान, सुन्ध-सम्बद्ध और क्रयर के विमाना में चिरकारू तक वने रहने वार्के देव हैं ये भी बुद्ध के धर्मोपदेश सुमकर भय को प्राप्त होते हैं। अरें! हम भीनता होते हुए भी अपने को नित्य समझे बैठे थे। अरें! हम असुब होते हुए भी अपने को ध्रुव समझे बैठे थे। अरें! हम अकाश्यत होते हुए भी अपने को हासक उसमझे बैठे थे। अरें! हम अनित्य = अध्रुव = अनाश्यत हो सरकाय के बीर अविधा-मोह से पुषे थे।

मिक्षओं । वेचताओं के साथ इस लीक में बढ़ ऐसे तेजस्वी और प्रतापी है।

भिक्षुभी । युवताश्चा के साथ हूत लाक म जुद्ध पूर्त ताबस्या आर प्रता भगवान यह वोले । यह कह कर छुद्ध फिर भी बोले — जल लुद्ध अपने क्षान-चल से धर्मचक का प्रवर्तन करते हैं, वेपताओं के साथ हुस लोक के सर्वश्रेष्ठ ग्रुव ॥१॥ सत्काय का विरोध और सत्काय की उत्पित्त, और आर्थ अप्रक्षिक मार्ग, हु खाँ को जान्य करमेवाका ॥२॥ वो भी डीपांसु देव हैं, वर्णवाद, यसकी, ये हर जाते हैं, जैसे सिंह से दूसरे वानवर ॥२॥ क्योंकि ये सत्काय के पोर में पढ़े हैं। और इस जीतव हैं। वेरी पशुक्त लाईन के उपर्वर्श को सुनकर ॥॥॥

§ ७. दुतिय सीइ सुत्त (२१ २.३ ७)

#### देवता दुर ही से प्रणाम करते हैं

श्रावस्ती "।

भिक्षुजी ! जो अमण या ब्राह्मण अपने अपेक पूर्व जन्मों को बातें याद करते हैं, ये सभी पाँच उपादान स्कन्धों को या उनमें किसी एक को बाद करते हैं।

भूतकाल में में ऐसा रूपवाला वा—यह बाद करते हुये सिक्षुओ | वह रूप ही को चाद करता है। भूतकाल में में ऐसी बेदना वाला वा—यह बाद करते हुये सिक्षुओ | वह घेदना ही को चाद करता है। ऐसी सज़ा बाला । ऐसे सरकारों बाला , ऐसे विज्ञान बाला |

भिक्षुओं ' रूप क्यों कहा जाता है ! शिक्षुओं ' क्योंकि यह प्रमानित होता हैं, हमी से 'रूप' कहा जाता है । किससे प्रमानित होता है ! होता से प्रमानित होता है । उरणा से प्रभानित होता है ।

भिभुक्तो | विद्वाल, भार्यश्रावक रूप में निर्वेद करता है। येदना ; सीग्रा ; संस्कार ; विज्ञान ।

निर्में व से किरक को बाता है। विराग सं विशुक्त को जाता है। विशुक्त को बागे से विशुक्त हो गया पेसा जान बोता है। बाति क्षीय तर्तुः "वह बान सेता है।

मिछवो ! बितने सत्वावास मवाम है उममें वर्तत ही सर्वश्रेष्ठ कीर सर्वाम है।

भगवाद पह कांग्रे । यह कहकर शुद्ध फिर भी बोग्रे :---

सहेत को सुर्यो है वर्को स्वया वहीं है।
स्रिस-मान समुश्कित हो नाम है मोह-बाक कर गया है तभा
साल परामार्थ माह प्रस्तुष्ट समाया ।
स्रोज में नसुर्यों को बान साल समें में किस्तिवाके ।
प्रसंस्त्री को बान साल समें में किस्तिवाके ।
प्रसंस्त्रीय सलुकर सुद्ध के जारे पुग्न वश्च
साल रहीं से सम्मान सीन विद्यानों में विश्वित ।
महासीर विचारते हैं विक्रके प्रमाने स्वर्योग हो गये हैं तथा
चून बही से सम्मान आहा भाग स्वर्याक्ष में

क्सेक्य रह प्राप्त कम्बास कम्बा वाके । प्रकृतियों का को सार है उसे अपना क्षेत्रे काके ॥६॥ वैत में कास्पात प्रकार से विश्वका।

रान्त भूमिको शस्त में कोक के विकाश हैं शका कपर मीमें देरे कही सी उन्हें मासकि नहीं हैं।

वे सिंह-नाव करते हैं। कोच के अनुचर ग्रह ॥४॥

🧯 ५ दुविय अरहन्त सु<del>च</del> (२१ २ ३ ५)

#### नहंत सर्वेशेष्ट

भावस्ती ।

मिम्नुनो | क्रम वाकित्य है। यो वानित्य है वह हुन्य है। यो हुन्य है वह बनाया है। यो समाया है वह म यो सेरा है म में हूँ न सेरा स्थाया है। इसे यवानंता प्रवा-पूर्व वेद सेना वाहिये। चेदना : सेवा : संवा: संवार | विकास !

निकामी ! विद्वाल सार्यधानक इसे वैक कप में निर्मेष करवा है। वेदवा । संका : संस्कार :

विज्ञान में निर्वेद करता है।

(बज़ान स तबब करता हूं। - विवेद करते हुए विश्ला हो जाता है। विश्ला हो विश्ला हो जाता है। विश्ला हो विश्ला हो गुवा देना कुछ होता है। काठि कीण हुई —आज केता है।

मिसूनो ! कितने सत्वाचास भवाग है जनमें कहेंच ही सर्वजन और सजोग हैं।

ठु६ पठम सीइ सुच (२१ २ ३ ६)

पुत्र का अपन्धा सुन देवता भी सवसीत हो जाते हैं

आयस्ती । --- मिश्रुची ! बागराव सिंह सोँग्र को बावनी सोंब से निरुक्ता है। सोंबु से निरुक्त कर वेंशार्ट कियको छोड़मा है, ब्रहोरता नहीं , ब्रह्मा देता है, खुलमाता नहीं ? स्त्रा हो ''. बेटना को , सजा को ' , सस्कारों को '; विज्ञान को

भिक्षुओ । यह समाल कर, विद्वान् आर्यश्रायक रूप से भी निर्वेद उत्ता हैं। वेदना से भी '', संज्ञा , परन्तर , विज्ञान '। निर्वेद करने में विरक्त हो जाता है । विरक्त हो जिसुक्त हो जाता है । विमन्त होने पर विस्तक हो सबरे ऐसा ज्ञान होता है । जाति श्रीण हुईं — ज्ञान देता है ।

िसञ्जा । इसी को कहते हैं कि न छोड़ता है ओर न उदोस्ता है , न खुदाता है, न सुरुगता है। किछकों न छोटता है आर न उदोस्ता है , न खुकाता है, न सुरुगता है ? रूप को '' , वेटना को , सद्धा हो! , सरकारों को , विकान का ।

निश्चओ । इस तर वित्तृत जुलाकर विश्वकःचित हो गये भिश्च को इन्छ, महारा, मजापित आदि सभी देश हर ही से प्रणास करते हैं।

हे पुरुष-श्रेष्ट ! आपको नमस्कार हे, हे पुरुषोत्तम ! आपको नमस्कार हें ! जिसने हम भी उसे जाने , जिसके किये आप ध्यान करने हैं !!

## ८८. पिण्डोल सत्त (२१२३.८)

## लोगो की मुर्दाडी से तलना

एक समय भगवान् शांक्य अमपन् में कपिळवस्तु के निश्रोधाराम में विहार करते थे। सन, भगवान् किसी कारणवश मिक्षु-सब की अपने पास से हट, सुवह में पहन और पात्र-श्रीवर के रुपिकवत्त में निश्राटन के किये पेंडे।

भिक्षाटन से कीट मोजन कर लेने के उपरान्त दिन के बिद्धार के किये जहाँ महाचन है यहाँ गये,

कोर एक सरुग थिरुष यक्ष के मीचे घेठ गये।

त्व, एकाण्य में च्यान करते समय सगवान के चित्त में यह वितर्क उठा —मैंने भिक्षसम को स्थापित निवा है। यहाँ कितने नव-प्रवितित मिक्ष भी है वो इस धर्मीवित्य में अभी तुरत ही आये हैं। सुझे न देखने से वायद उनके मन में इड अन्ययाल ही, सैसे साता को नहीं रेटाने रो तरण बस्त के मन में अन्ययाल होता है, जैने पानी नहीं मिकने से अभी तुरत का स्माया वीज अन्ययाल को प्राप्त होता है। वे भी मुन्त को स्थापित के स्थापि

तव, सहस्पति श्रष्टा अपने चित्त से अगधान के चित्त को जाय-जैने वरुवाल पुरूप समेदी बांह को कैला है और फैलाई बाँह को समेद के बैसे-नाम्रकीक से अन्तर्यान हो अगयान के सम्मुख

mara and

तथ, सहस्पति महाग उपरणी को एक कन्ये पर सम्हाल भगवान् की ओर हाथ ओड़ कर पीले — मगवान् ! ऐसी ही बात है । सुमत ! ऐसी ही बात हैं । अन्ते ! अगवान् ने ही सिक्कु-सच की स्थापित किया है ।

यहाँ फितने नव-प्रतिवत मिश्रु भी हैं जो इस धर्मविनय में कभी तुरत ही आये हैं। भगवान् को न छेखने से भावर उनके भन में बन्वधाव हो, जैसे माता को नहीं देखने से तरण वरस के मन में अन्यपात्य होता है, जैसे पानी नहीं मिछने से अभी तुरत का कगाया बीज अन्यधात्य को प्राप्त होता है।

भन्ते ! भगवान् सिक्षुसंघ का अभिनन्दन करें । मन्ते । सगवान् सिक्षुसंब का अभिनन्दन करें । जैसे भगवान् सिक्षुसंघ को पहले से स्वीकार कर रहें हैं, वैसे ही अभी भी स्वीकार कर हैं ।

भगवान ने जुप रह कर स्वीकार कर किया।

मूर स प्रभावित द्वारा दे। प्याप से प्रभावित होता है। दैन अप्यत्न देवा पूर तम धोई-सकेहें के एनों न प्रभावित दाना है। सिनुका | वसांकि यद प्रभावित होता है हसी से 'फर्य' कहा जाता है।

िरशुका । पारना नयों कहा जाता है । सिशुका । नयोंकि धनुमन करता है इसी सं बेदना रहा चना ह । नया धनुमन करता है । मुल का भी अनुमन करता है जुरक का भी अनुमन करता है गुरा भार दुगर म रहित या भी धनुमन करता है । सिशुमो । नयोंकि अनुमन करता है इसीसे भीदगा करा जाता है ।

रिशुको । संचा वया वदा जाता है ! सिशुका ! वर्तीकि जातता है इसकिये 'सहा वहा जाता ह । वया जातता है ! सीस का भी जातता है । पीसे को भी जातता है । काव को भी जातता है । उत्तर का मो जातता है । सिशुको ! वर्तीकि जातता है इसकिये 'संशा' कहा व्यक्त है ।

निपुत्रों । संस्कार करों कहा जाना है । निपुत्रों । संस्कृत का क्षमिसंस्कार करता है। हगारिय गंग्कार क्या जा। है। दिन मंग्कृत का क्षांजियंग्करण करता है । क्ष्यात के किये संस्कृत रूप का श्रीमें गंग्यरण प्राप्ता है। वेदनाय के निये मंग्कृत वदना का अमिर्ग्यकरण करता है। संसारव के स्थि मंग्कृत गंगा का । गंग्याय के किय माग्कृत गंग्याय का । विकास के स्थित संस्कृत विकास का । निप्ताना । गंग्याय का क्षांचार करता है हमागिय संस्कृत करता है।

सितान ! विज्ञान करा कहर जाना है ! जिल्लामें ! वर्षीक वहत्वमाना है इसलिय विज्ञान करा जाना है । वना वहत्वमानता है ! वर्षान का भी वहत्वमानता है ! भीते को भी । कन्य की भी । आँ हो वे भी । त्यारे का भी । आ गाना नहीं है उस भी । नमर्कान को भी । शी वसकीन नहीं है उस भी । जिल्ला ! क्यांकि वहत्वमानता है इसलिये विज्ञान कहा जानता है !

भिशुष्टी ! वहाँ शिहालू वार्षभाषक देखा सनव करता है।

दूस राज्य में रण शारपा या रहा हूँ। क्रमीन काम में भी भए साराया गया है जैसे हैंय गयप स्थापा या रहा है। या पूर्व अनागत रूप का अभिनत्त्र करोंगा का भागाना रूप से भी धेसे ही गापा आदिया पार हम क्षेत्रात रण का। बढ़ रूपा समय कर भागित रण में अनपस रहता है। अनागत गण का भी अस्ट्रित सहै। करता है। स्थापनागत कर क विवेद विराग और निरोध क किने स्नित्य

इस राजा के बहुता में स्वापा का रहा हूँ। यंत्रा म । शंगकार म । विज्ञान सं ।

निस्भा (भा नुम क्या सम्माद हा रूप नित्य है या भनित्य है

भ नाम माला है

अक्षत रह बहुतुल देशा सुल है

t petate of

क अन्य पुरुष विवासिकामाना है प्रशा करी देशा समाग्या पादिने "यह सेरा है बह में हैं पर मेरा अना ह" ?

40 H 11

beer ifter inten iferm :

िर्मा के हिंदा तथे. आ कह क्षति अनामन वर्गमान —है मंती कंग्रेश है स्र हिंदू के हैरा कंग्रहा हु-नेना सम्मान कंप्रिय है

s gin inte lutes likes t

निमु १ दर्भ क बद्दव वैकि मानेबादक शादण है बद रशासरी १ वृक्त देशा है सूर्य रूप सर्थि । वित्तको होइस है, बटोस्सा वहीं , बुखा देस है, मुख्यासा नहीं १ इस को , बेदना को , सन्ना को , संस्कारों को , विज्ञास को ।

भिक्षुओं। यह ममञ्ज कर, विहान, आर्यक्षायक रूप में भी निर्मेट करता है, वेदना से भी ', सहा , सम्कार , विज्ञान । निर्मेट करने से विरक्त हो बाता है। विरक्त हो विमुक्त हो जाता है। पिमुक्त होने पर 'विमुक्त हो गया' ऐसा जान होता है। जाति खीण हुई —जान लेता है।

निशुओं । इसी को कहते हैं कि न जीदता हैं और न प्रशेषता हैं , न शुक्राता है, न सुक्राता हैं। किसकों न जीदता है और न यहोरता है , न जुक्राता है, न सुक्राता हैं ? रख की ', वेडना की '', पहा की . सस्कारों को , विज्ञान को ।

भिक्षओं। इस तरा बिरकुल बुझाकर विसुक्त चित्त हो गर्वे भिक्षु को इन्द्र, प्रह्मा, प्रजापति

आधि कभी देव हर ही से प्रणाम करते हैं।

हे पुरुव-श्रेष्ठ । आपनो नमस्कार हे, हे पुरुषात्तम । आपको नमस्कार हे। जिनमें हम भी उसे जाने, जिसके छिये आप ध्यान करते हैं॥

## ह ८. पिण्डोल सत्त (२१.२ ३.८)

### लोभी की मर्दारी से तलना

एक तमय भगवान ज्ञांक्य जानपद में कविलयस्तु के निश्रोधारास में विशर करते थे। सब, भगवान् किसी कारणका शिक्षु-सब को अपने पास से इट सुयट में पहन और पात्र-बीकर से कविलयन्तु में निश्नाटन के लिये पैटे।

भिक्षाटम से छीट भीजन कर छेने के उपर न्त दिन के विदार के छिये वहाँ महायन है वहाँ गये,

और एक सर्ग विख्य युक्त के नीचे बैठ गरी।

त्व, एकान्य में ज्यान करते समय भगवाण के चिन्न में यह दिवस वें उठा '—भैने भिश्चलम को स्थापित किया है। एका कितने बन-प्राणित विश्व भी हूं जो हुद चर्मीविषय में अभी तुरत ही आये हैं। मुहें न ठेटमें से लायत उनके मन में जुक कान्यकार हो, जैसे मान हो है। है ने देन से तहण वस्स के मन में कन्यापत होता है, जैसे पानी नहीं मितने से अभी तुरत का हमाया वीच अन्यवश्य की मास होता है। तो प्योन्न में मिश्च-तथ की स्थास होता है। हो पर्योन्न में मिश्च-तथ की स्थास होता है। तो पर्योन्न में मिश्च-तथ की स्थास होता है।

तव, सहस्पति प्राष्टा अपने चित्त से भगवान के चित्त को जान—जेमे बलवान पुरुप लमेही वॉह को फीला दे और फैलाई वॉह को समेट ले बेसे—प्रहालोक में अन्तर्यान हो भगवान के सम्मान

प्रगट सर्वे ।

तय, सहस्पति मक्षा उपस्पी को एक कन्ये पर सम्बाल समावान् की ओर हाथ बोक्ट कर योडे — अनावान्। ऐसी ही बात है। खुगता ऐसी ही बात है। अन्ये। समावान् ने ही भिक्षु-सप को स्थापित किया है।

यहाँ कितने नय-प्रबन्धित मिक्कु भी हैं जो इस धर्मीवेनय में अभी तुरत ही आये है। भगवान् को न वेचने से शायट उनके भग में बन्धपात्व हों। जैसे माता को नहीं देखने से उरूण बन्द के मन में अन्ययात्व होता है, जैसे पानी नहीं मिळने से अभी तुरत का खगाया बीज अन्ययात्व को प्राप्त होता है।

अन्ते । अगवान् भिष्ठुसय का अभिनम्दन करें । अन्ते । अगवान् भिश्रुसय का अभिनम्दन करें । जैसे भगवान भिष्ठुसय को पहले से स्वीकार कर रहे हैं, वैसे ही अभी भी स्वीकार कर लें ।

मगवान् ने जुप रह कर स्वीकार कर लिया।

तर सद्दर्शत महाजगरम् क्रिकाहित को जात सगरान् का अभिवादन शर प्रदिशास कर वर्षा सन्तर्शन हा सब्

नप माँहाको प्रकृति अध्यक्षण आहीं विश्लोधारास या यहाँ गर्वे आर किछे आसम पर बड़ गया नच समाराल्य अपने काबि-चय्द को यसा क्रिया कि सारा विश्वाचित्र एक साथ यह प्रेस से समाचार्यक सम्मुग ज्ञा उपनिथन दुआ। व लिछु समाबाल्के पास आ अभिवादत कर एक ओर बड़ गया।

ण्ड आर पेंड इय तन भिक्षाओं स भगवान वालः---

निशुमा । यह वा निश्चारत करके जीवा है सो सभी जीविकाओं में होन है। कियु, तुम अपने हाज में पान के सारे साम का साथ निश्चारत करने कियी हात में पान के सारे साम का साथ निश्चारत करने कियी चार म विवत हाकर देमा नहीं करते के हार के बार हों। विकास करते हैं। व जिसी राज्य या जिसी चार म विवत हाकर देमा नहीं करते के हा दिगी और साथ भी पा जिसी वृत्यां की विकास में साथ जिसके के कारत ही। विकास कार यायु, ताव राज्य पंजना पुन्त प्रामित्य कार क्यापन (वर्षसार्मा) स सुक्त हा काम के लिए ही ये प्रणा सदावारत करते हैं जिसमें हमें हम विकास कुत्यराधि का सम्म निश्च साथ। सिशुमों ! कुन्यपं देगी साथ सरीधा के नदर प्रामित्य हाता है।

यदि बहु (कृत्युक) लाली जोग बिकास में लीख रता करनेवान्य गिर्ते दुव चित्रवान्य वोषक्ती संस्करावास्य सुर स्कृतिवाका अन्येत्रक अन्यसाहित विश्वास्त्र विश्वास्त्रम्य और अस्वतिस्तृत हो ता है सिशुक्त ! वह स्काता में क्रेंड हुई तम अन्य कर्डकों क स्वास्त्र के वृत्तां साथ जर्का हुई और बंच में सर्गति स्त्री हुई है जा व साँव में अंतर कहा कार ही से क्ष्युक्त के बाम में आ सर्गती है वह सुरुग्त क भाग साथी कृत्रिक हरता है और अपन भ्रम्यक नाम कारी वहाँ प्रावस्त्र स्त्रास्त्र है।

सिशुमा! मीन अपुगान (=1994) विक्र हि—(1) काम विक्र (१) प्यापाद विक्र अंश (1) विदिगा विक्र : विशुभा! यह मीन विक्र वहीं दिन्तुन निरुद्द हा जस हैं ! चार वसूनि प्रस्थानी में गर्जानिका वा अनीतम नमाधि के अध्यक्त विक्र में ।

िनस्था । अन् नुखें इस अजिनिक समाधि की भावना बरनी बाहिए । भिशुभा ! इस समाधि

की मादना तथा भारतच्य का चार महाबू है।

िम्तुभी ! ऐ। (स्वता) रिवर्षी है। (३) सब रिवर्षी से (३) विशव रिवर्ष । सिशुभा ! मी कोई परिवत्त आर्थक क्या विकास्त है—अवा इस शाह में केसी काई फीज है जिस पावर में दाय में क्या वह सकें।

बह रेमा जान शमा है—हम स्पन्न में केनो काहूँ चीज नहीं है जिस पायर में दिन में क्या रह मही में सभे की अर्थना करेंगा का उत्तर हो का वेहमा हो का जीमा हो को मीनार हो की या किमान हो की पार्टिंगा के हम बाथ की का सार (अहमार में) मा अब हामा भव मा जानि जानि से सरावरण को मी हम प्रकार नाता हुन्य समूद यह सहार हुगा।

formit bi eri bune et un fam fen unt b

-

महिलाना है मा घट कुला है वर गुला है

भार । पुरुष है। क मरित पुरुष परिवर्ष कीम है उसे क्या नेशा समझाना डीक इंडि—चड्सेस है गर किट्टैं पढ़ित अन्यार है।

िष्ठ रेक कर सम्मान व केहत । सहस्य स्टेस ह विकास स्टू

भिक्षुओं ! हुन्सी से ऐसा समझने वाला "फिर जन्म की नहीं ग्रहण करता है ।

## § ९. पारिलेम्य सुत्त (२१ २ ३.९)

#### आश्रवां का सय कैसे ?

एक समय भगवान् कौजाम्बी के बोपिताराम में विदार करने वे।

ता, भगवान पुनांस समय पान और पात-घीषर ले कीवान्त्री में भिक्षाटन के लिये पैठे। कोशान्त्री में भिक्षाटन करके लीड, भोजन कर छेने के बाद स्थय अपने आसन लपेट, पात ओर चीवर है, किसी महापक को बिना कुछ कहें भोर भिक्षु-यद्य से भी विना मिले बिस्कुल अकेटे रमत के लिये पाक परे।

ह्म भगवान के बाले वाले के हुए ही चेर प्राय पोर्ड भिश्च वार्टा आयुत्पान झानन्य थे बर्टा आया! आतर आयुत्पान आनन्त्र में प्रोश्त — अपुत्र आनन्द ! अभी तुरह भगवान स्थय अवने आपन रुपेट, पात और चीवर है, किसी महाचक की निना हुए उन्हें और भिश्च-मच में भी विना सिर्फ विस्तुख अकेल रसत के किसे निरुक सर्वे हैं। अपुत्र । ऐसे समय अववान अवेल्य विदार करना चाहते हैं, अस किसी को उनके पीर्ट-पीड़ ही होना अस्प्राय ही।

त्तव, भगवान् रमत (= चारिका) लगाते हुयै कमश वहाँ परुँचे जहाँ पारिलेटयक है। वहाँ

भगवान पारिलेक्यक में भड़काल वृक्ष के नीचे विकार करने लगे।

तय, कुछ सिक्षु कहाँ आयुप्तान् आनन्द ये यहाँ पहुँचे, ओर कुशल-पसाचार पूछ कर एक और येंड गये। एठ और थेंड, ये लिख्नु आयुप्तान् आनन्द से योले---आयुस आनन्द । सगवान् के हुँद से धर्म सुने पहुत दिन बीत गये। यदी इपछा हो रही है कि किर भी भगवान् के हुँद से धर्म दुनें

तव, आयुष्मान आनन्द्र उन भिक्षुको को साथ है पारिलेज्यक में भद्दताल बुक्ष के नीचे वहाँ मगवान् विहार कर रहे थे वहाँ गये और अगवान् का अभिवादन कर एक और बैठ यये।

पुक्त और बैदे हुये उन जिल्लुको को भगवान् ने धर्मोपटेश कर दिखा विया, वर्त्तला विया, उस्साह से भर टिया और पुक्तिल कर दिया।

इस समय किसी भिक्षु के चित्त में ऐसा वितर्क उठा---क्या जान और देख होने से आध्यों का झर होता है ?

भिक्षको ! क्या जान और देख छेने से माधवों का क्षत्र होता है ?

मिश्रुखो । कोई शत्र = पूपक्वन = बार्य संयो को न समझने वाला संपुरुयों के भ्रमें में अदिनीत रूप को वात्मा करके जानता है । मिश्रुखो । ऐसा जो जानवा है वह सरकार कहलाता है । उस सरकार था क्या निदान = समुदय = जादि = प्रमय है ?

सिक्षुओं ! बाविचा पूर्वक सस्पर्य से जी वेदना दोती हैं उससे अश्र≃प्रकलन को तृष्णा उसस्त होती है । उसी से सस्कार पैवा होता हैं । मिश्चुको ! इस तरह, वह सस्कार भी अनिस्त, सरहत और किसी कारण से उस्पन्न होने बाला है । वह तृष्णा भी अनित्त, सस्हत और किसी कारणसे उस्पन्न होने तत सहस्पति प्रकासगवान् की स्वीकृति को जान सगवान् का समिवादन और प्रदक्षिणा कर कर्षाभक्तवान को गये।

टर साँह को प्यान में उठ भगवान बहाँ निमोधाराम या बहाँ गये और बिधे शासन पर वैर गर। तय समवान ने अपने काकि बढ़ से प्ता किया कि सारा शिक्षार्यंव एक साथ बड़े भेम से मगवान प सम्मान का उपनिषत हुआ। वे निधु भगवान के पास बा बांसवाइन कर एक ओर कि गत।

एक बार बंद इसे उन शिक्षकों से भगवान बोखा---

भिश्वसो । यह सां निश्वारण करके जीवा है सो सभी बीविकाओं में हीण है । किन्तु, तुम अपने हाथ में पात्र के सारे भाग का छाड़ मिछारण करते किरते हो । निश्वसी ! यह इक्युज सपने किरते उद्देश के कारण हो प्या करते हैं । वे किसी राजा या दिस्ती चीर में वृध्वत हाकर ऐसा नाहीं करते व तो किसी और मय सा और न किसते वृद्धती वीविका न मिक्की के कारण ही । विके सम्म जार मृत्यु, बीक राना पीदाण हुए दांनेगस्स और उपाचान (=परेशामी) से मुक दां बात के किए ही वे प्या मताचान करते हैं किसने हमें हमें हम विकास कुछ हम ता करते कि कारण । मिछुमी ! कुळपुड़ प्या मताचान को स्वस्त प्राविका को सा किस्त हमें इस विकास कुफरार्सि वा अन्य निक बाय । मिछुमी ! कुळपुड़

पदि बहु (कुब्रुष्ठ) कामी भीग विकास में तीब राग करनेवाका विर हुए विचयाका वोपप्ती संदर्भोवाका सुद स्थाविषाम क्रमंग्रह कमभादित विद्याल विक्वाका कोर असपदेन्त्रित हो तो है सिद्धाना ! बहु समाग में फेंग्रे हुई दस कड़ी करवी के समान है जो वीने कोर स ककी हुई भीर वीच में गरूगी समी हुई है जो न गाँव में भार न दो जगक ही में स्कर्ण के क्या में मा सबसी है। बहु शहस के माग सुनी वीचेल रहाता हु और क्याने क्रमण आप को भी नहीं दूरा कर समस्त है।

तिश्वभां ! तीन बनुरास ( =पापक ) विक हैं—(1) कास विक (२) ध्वापाद विदर्भ और (1) विद्विमा-विक । शिश्वभां ! यह तीन विक नहीं विस्तृत्व निवह को वार्च हैं ! चर रक्षि प्रस्थानों में समितिकत या वितित्व समाधि के अध्यक्त विक में !

क्रिकाचा ! भारः तरहें इस अविशिष्ठ समाचि की भावना करनी चाहिए । सिक्षाना ! इस समाचि

की भावना सभा भरपाम का धम महानु है।

भिश्चमां ] वो (सिन्ना) रोष्ट्रणी हैं; (1) अब रोड और (4) विसव रोट । सिश्चमा ! सो काई परिटट कार्यकायक नेना विचारता है—जवा इस साक में पूनी काई कोज है जिस पाउर में दौर में क्या रह नार्षे !

बह जगा जान लेना है—हम लाक में गो कोई चैत वहीं है जिसे पापर में हीय से बचा रह मध्यें भी पात की वर्गका करेंगा ता रूप हो को बेहमा ही का लेगा ही को मंतरह हो को या विज्ञान ही का पार्टिया। उस्प पाने की वादिया (क्यापान) न अब होगा जब मा सानि जाति से सामराज हैंगा। हम ममरा गारा बुल्य महसू कर पहा होगा।

जिल्ला र का क्या समामें का अप मिला है था जा न का

सन्त ! सनिष्य ।

व्यक्तिक है सा बहु चुला है वा गुरह है

भ ने | दुःग है।

का अभिन्य पूरा वरिवर्णन सीम दे जार क्या गेरा श्रमकारा श्रीक इंडि-सह सेरा हे बड मिट्टें बढ़ किरा आपना है।

- भारते र जन्मा स्थापात्मा सीह मही ।

जिल्ला मा का नामान का बेदन में ता नी नाम विशास है

## § १०. पुष्णमा सुत्त (२१. २. ३. १०)

### पञ्चस्कन्धों की व्याख्या

पुक समय भगवान् वदे भिक्षु-संघ के साथ श्रावस्ती में [मृगारमाता के पूर्वाराम प्रासाट मे विहार करते थे।

उस समय, भगवान् वर्षोस्य को पूर्णिमा की चाँदनी रात में भिक्षु-सघ के वीच खुळी गगाः में थेंद्रे थे।

तव, कोई भिक्षु अपने आयन से बड़, उपरनी को एक सम्बे पर सम्बाल, भगवान् की और हा*व* शोहरूर बोला—यदि भगवान् की अनुमति हो तो में भगवान् से कोई प्रश्न प्रश्नें ?

मिश्च ! तो, तुम अपने आसन पर बैठकर जो पूछना चाहते हो पूछो ।

हाँ भिक्ष । यही पाँच उपादान-स्कन्ध है, जो रूप-उपादान स्कन्ध ।

सायुकार है, वह भिक्षु भगवाज् के कहें का अभिनन्त्रन और अनुमोतन कर उसके आगे ऋ प्रश्न पूछा—सन्ते ! हन पाँच उपादान-स्कान्धों का मूछ क्या है ?

भिक्ष ! इन पाँच उपादान-स्कन्धों का मूळ इच्छा ( =छन्द ) है ।

सायुकार हे प्रश्न पुछा-अमन्ते ! जो उपादान है क्या वहरी पच-उपादान-स्कन्ध है, था पय-उपादान स्कन्ध दसरा है और उपादान हसरा ?

भिक्षु <sup>†</sup> में तो जो उपादान है बद्दी पच-उपादान-स्कष्य हैं, और न पच-उपादान-स्कष्य से भिक्ष ही कोई उपादान हैं। यक्कि, जो जहाँ उच्दराज है वही वहाँ उपादान हैं।

माधकार है प्रश्न पुछा-भन्ते । पाँच उपादान स्वन्धों में छन्दराग का मामास्य होता है या नहीं ?

भगवान् गोले, "होता है। भिक्षु । किसी के सन में पैसा होता है—में जागे चलकर ऐसा कर-वाला हूँगा, ऐसी वेदनावाला हूँगा, ऐसी सहावाला हूँगा, ऐसे सस्कारवाला हूँगा, ऐसा विद्यान जाला हुँगा। भिक्षु, हस तरह पांच उपायान स्कन्धों में छन्द राग का नाताल्य होता है।

सापुजार वे फिर आगेका प्रथम पूछा – अन्ते ! इस स्कन्धों का साम "स्कन्ध" ऐसा क्यों पड़ार

भिक्षुको । जो रूप-अतीत, अनागत, वर्तमान, अध्याप्त, वाडा, स्थूठ, सूक्ष्म, हीन, प्रणीत, दूर, निकट हैं—वह रूप-स्कृत्य कहा जाता है। जो वेदना । जो सका। । जो सस्कार । जो विद्यान-अतीत —दे वह विज्ञान-स्कृत्य कहा जाता है। भिक्षु । इसी से स्कृत्यों का नाम स्कृत्य पहा है।

साधुकार है फिर जाने का प्रकृत पूछा—भन्ते ! कप-स्कृत्व की प्रकृति का क्या हेतु = प्रस्था है श्वेदमा-स्कृत्व की ! साध्या-स्कृत्व को ! साध्यार-स्कृत्व की ! विद्यान-स्कृत्य की प्रजृति का क्या है = प्रस्या है !

सिक्षु ! रूप-स्कृत्य की प्रश्निक का हेतु = प्रत्यय यहाँ चार सहाभूत हैं । वेदना-स्कृत्य की प्रज्ञिक का हेतु = प्रत्यय स्पर्त है । सक्ता-स्कृत्य की प्रज्ञित का हेतु = प्रत्यय स्पर्श है । स्वस्ता-स्कृत्य की प्रज्ञित का हेतु = प्रत्यय स्पर्त है । विज्ञान-स्कृत्य की प्रज्ञित का हेतु = प्रत्यय नाम-स्त्य है ।

साधुकार दे फिर आगे का प्रकृत पूछा-मन्ते ! सत्काय-दृष्टि कैसे होती है ?

भिक्षु ! कोई जज्ञ = प्रवक्षान ' रूप को आत्मा करके जानता है, या भाग्मा को रूपवाला,

वासी इ.। यह वेदनाभी । यह स्वर्धनी । यह कविद्यानी । शिश्लुको ! इसे भी भान शांर देन करेसे शासनों का क्रम कोनाहै।

वह कर को सारमा करके नहीं बालता है किंद्र कारोमा को कर बाका जानता है। मिहामी ! उसका जो ऐसा जानना है नह संस्कार है। वस संस्कार का नया निवान ≔ समुद्रय = वाति = मनव है! मिहाभी! जिद्यान-पूर्वक संस्थार्स से जो बंदना होती है उससे सज्ज ≔ पुषक्कन को तृष्णा उस्पन्न हातों है। उसी से संस्थार पैदा होता है। मिहाभी! इस तरह वह लेटकार भी सिन्तर्य नृष्णा मी पदना मी । स्पर्त मी किंद्रा भी कवित्य संस्कृत और किसी करवा से उस्पन्न होने सार्थि है। विक्रमी! इस भी बाद भी रहे के को से साम्यादों का कर होता है।

बहु क्रप को मारमा करके पहीं बातता है और प बादमा को क्यबाका जानता है किन्तु मारमा में क्रप है पेमा जातना है। सिम्नुजो | उसका को ऐमा जानना है वह सरकार है | उम संस्कार का नया निहान | निहामों | इसे भी बाज कीर देख को से मायहों का सब होता है।

यह रूप को जारमा करके नहीं बाबता है, य धारमा को स्वचावा बाबता है न बादमा में रूप ह एसा बाबता है किन्तु रूप में धारमा है, ऐसा साववा है। मिसुमी | उससा को ऐसा बातवा है वि स्वचार है। उस मंस्कार का क्या निहान = धानुष= जाति = ममाव है (निमुसी | बतिबान-पूर्व-गंतवर्ध में यो बदाना होती है उससे माझ-पुषक का को तुष्मा उत्पक्त होती है। उससे में मंस्कार पैया होता है। निमुसी | इस तरह बहु संस्कार भी जनित्य नुष्मा की बेदबा भी रूपरी भी भिवार भी कीमा संस्कृत वह किस्सी करन से उत्पक्त होने बाकी है। मिसुसी ! इस भी जान कर देग को से कावारों का तरा होता है।

बहु रूप को आरामा करके नहीं जावता है न आरामा को रूपवाला वानना है न आराम में रूप है ऐसा चनना है और सुरुष में आरामा है ऐहा ब्यानता है किन्तु वह बेहना को धारमा परके बातता है आरामा को धारणा चाला जानता है आरामा में बेहवा है ऐसा आनता है येहना में आराम है ऐसा बातता है। श्रोता को । शेराकर को । विकास को '।

बहुन ता क्य को न बेहना का न संद्र्या को न संस्थार को लार न बिद्यान को अपराग करने सामता है। किन्तु मेगा मत सानता कि—को आरमा कि नहीं कोच कि। ता मैं मरने के बाद किन्य भुव शाहरून और परिवर्गन-पिक्त का कार्किंगा।

भिमुनी ! उसकी जो यह शाहरव रहि है यह संस्कार है। उस संस्तर कर क्या विदान है। मिलुना ! इस भी जान भार हैए। कर भाकालों का दाय होता है।

हिन्तु 'ह नेना सन सार सार है — असे हुआ हूँ और न सरा कुछ होने न से हूँगा और न सरा कुछ होगा।

सिहामां ! बरस्की का यह बच्छेत् इक्षि है यह संस्कार हैं। । शिहाको ! इसे मी बान और दैंग कर समार्थी का प्रण प्राप्ता है।

पर का अपना कर करण कर किन्तु बह सन्दर पारंग दोना है विविक्षित्या करने वाला और सद्दर्स में उसकी तिद्या नहीं दोगों द

िता औं। उपना को यह नान्देद बरमा और राज्यों में निष्ठा का नहीं हाना है यह संस्तार है। उस संकार का बरा निष्ठान = ममुद्दा कार्यात कारक है। तिशुका | करियान्यों कारेस्सर से जी वेदना होनी है जामा आग क्ष्यप्रज्ञान को मुस्ता जनका होनी है। क्यों से संस्तार पेदा होता है। तिशुकी | दूस नार वह वह लेक्सर की अनिवार कुष्या की विद्या की दूसरे की करिया की व्यक्ति मेरान भी दिसी वाला मा जवल होने वाली है। तिशुकी | दूसरे की तक भीर देग सैने के अन्यवार का कार्याण है।

# चौथा भाग

# स्थविर वर्ग

# **६१. आनन्द्र मुत्त (२१ २ ४ १)**

#### उपादास से ही अहंभाव

ऐसा मैंने सुना।

एक समय अञ्चलान् आनन्द आवस्ती में अनाधिपिण्डिक के अराम जेनवन में विहार करते थे।

वहाँ अञ्चलकान् आनन्द ने भिक्षुमी की भामत्रित किया—आमुख भिक्षुकी ।

"आवस !" कहकर उन भिक्षको ने आयुष्मान आनन्द को उत्तर दिया ।

आयुप्तान् आनन्द योखे---आबुस ! यह आयुप्तान् मन्तानिषुच पूर्ण इम नये भिक्षुओं से बहे उपकार करने वाले हैं। वे हमें ऐसा उपदेश देते हैं, "आबुस आनन्द! उपकार के कारण ही 'क्षस्ति' होता है, असुपादान के कारण नहीं।

"किसके उपादान से 'अस्मि' ( म्में हूँ ) होता है ।

"रूप के उपादान से 'अस्मि' होता है, उसके अनुपादान से नहीं। वेदना के । सङ्घा के । सस्कार के । विज्ञान के उपायान से 'अस्मि' होता है. उसके अनुपादान से नहीं।

'शाहुस आनन्द । जैसे कोई की, पुरुष, जनका या ग्रुवक अपने को सज-अज कर हर्षण या परि-हुद्ध निर्मत जल्पाल में अपने बेहरे को देखते हुए वपादान के साथ मेंचे, अञ्चपात्रान के साथ नहीं। आहुद्ध सानन्व । इसी तरह रूप के उपादान से 'शिंग्स' होता है, उसके अञ्चपादान से नहीं। बेडना । सज्जा । सन्कार । विज्ञान के उपादान से 'अनिम' होता है, उसके अञ्चपादान से नहीं।

"अञ्चल आनन्द ! तो तुम क्या समझते हो, रूप नित्म है या अनित्व ?

भाषुस <sup>।</sup> जिमस्य है ।

"वेदना , सङ्गा , सस्कार , विज्ञान ।

आञ्चल । अनित्य है ।

"इसिक्टिये , यह जान भीर देश कर धुनर्जनम में नहीं पक्ता है।"

अ.सुम । शत्युप्पान् भन्तानिषुत्र पूर्णं हम नये सिक्षुओं के वर्षे उपकार करने वाले हैं। वे हमे ऐसा उपदेश देते हैं। उनके इस धर्मोंबदेश को सुन में सोतापक्ष हो बया।

#### § २. तिस्स शुरव (२१,२,४.२)

#### राग-रहित को शोफ नहीं

थायस्ती जेतवन

उस समय भगवान् के चचेरे भाई आयुष्पान् तिष्य कुछ भिक्षुओं के बीच ऐसा का रहे थे— आउस ! सुदे कुछ उत्पाह नहीं हो रहा है, सुबे दिनार्थे भी नहीं होन्य रही हैं; धर्म भी सुबे नहीं स्वाह पा आरमा में रूप था रूप में आरमा शतका है। वेदवा को । संज्ञा को । संस्कार को । विज्ञान को सारमा करके । मिन्नु | कुमी तरह सत्काय-इष्टि होती है।

सायुकार दे किर शाने का प्रकृत पूछा— मन्ते | रूप के क्या शास्त्रात दोप शार सोस हैं ? वैदना संद्रा संस्कार विज्ञान के क्या शास्त्रात क्षांत्र शार सोस हैं ?

मिश्र ! कर के कारण को शुक्त जीर आराम करना होता है वह कर का आसाद है। कर मां क्षित्र ! कर को कारण होता है। कर मां क्षित्र होता के वह कर का आसाद है। कर मां क्षित्र होता के दिन कर के मित्र को कन्दराग कर महाण है वह कर सं मोश्र है। चेत्रण के । संज्ञा के । संस्कारों के । विद्याल के कराना को शुक्त भीर भाराम करना होता है वह विद्यान का अस्ताद है। विद्याल को अस्ति होता है वह विद्यान के मिर्ट के मिश्र न कर दोरा है। विद्याल के मिर्ट को कन्दराग का महाच है वह विद्याल से मोझ है।

साहकार दे फिर काने का प्राप्त बुका—अन्ते ! क्या कान और देखकर इस विज्ञान वाके सरीर में तका बाहर के सनी निशिष्ता में काइकार मर्मकार साव और अनुसव नहीं होते हैं !

सिक्ष ! को कम-अतीत कमायत वर्तसाम मामकार बाह्य न्यूक सुद्दम द्वीन प्रणीत हुए, निकट-हे सभी म लेता है व भी हूँ, बाद व जेता कामा है। इसे क्यांचेता सवा-पूर्वक बात छेता है। वो वेदमा संक्षा संस्कार विकास म नेया है न भी हैं पीता प्रका-पूर्वक काम केता है। तिक्ष ! इसे ही काम और वेक्का दश विद्यानवाक सरीर में तथा बादर के सभी वित्या में महंकार समंज्ञार, प्रांत और सञ्जाव वाही होते हैं।

क्ष समय किसी शिक्षु के किल में ऐसा विलक्षे करा—यदि कप जनाव्य है वेदना संबा संस्कार विज्ञान सभी जनाव्य है तो जवाव्य से किये गये कमें कैसे किसी को कॉमें। !

त्व मागवा ने भवने विक से उस मिश्ल के विश्व के विश्व को बाल मिश्लमों को बासनितर किया—सिश्लमों ! डो सकता है कि वहाँ कोई वेससक अविदाल त्यास सिम्स्य हो अवने किस से बुद के पत्ती को कोव जाये बोल्य समझ केटे—कि वॉद कर कमत्या है तो बसल्या से किये गये कर्न कैसे किसो को कोंगी ! मिश्लको ! वर्ष में में वेसी-वेशी कार्य पर तुर्वे पुरू कर समझ खेना चाहिये ! सिश्लको ! तो त्यासकरों को कर निका है या क्षिक !

अक्रिय मन्त्री

वदना संज्ञा संस्कार विज्ञान

को भनित्व है वह बुज्ब होगा या सुब !

मन्ते 1 शुन्त्र होगा ।

वा अभिन्य हुन्य और परिवर्तवसीक है उसे क्या ऐसा समझना वश्वित है—वह मेरा है वह मैं हैं, यह मरा आरमा है है

महीं मन्त्रे !

इमलिये । यह बान और देख वह पुलर्जन्म में नहीं पहला।

जब्बनीय वर्गे स्वयास

# चौथा भाग

# स्थविर वर्ग

# **६१. आनन्द सुत्त (२१ २ ४ १)**

#### उपादान से ही अहंभाव

पुँखा मैचे सुना।

एक समय आधुष्माण् आनन्द आवस्ती में अनाथिषिडक के अराम जेनवन मे विदार करते थे।

वहाँ अत्युपम्बन् आनन्द ने भिक्षुओं को आसंत्रित किया---आबुस भिक्षुओ ।

"आधुस !" कहकर उन भिक्षुओं ने आयुप्मान् भानन्द की उत्तर दिया ।

क्षायुप्तान् आतम्य वोले—आहुस । यह आयुप्तान् मन्तानिपुत्र पूर्ण हम नये भिक्षुकों के यह उपकार करने वाले हैं। वे हमें ऐसा उपवेश देते हैं, "आहुस आतन्द । उपावान के कारण ही 'झस्मि' होता है, अनुपादान के कारण नहीं।

"किसके उपादान से 'अस्मि' ( =मैं हूँ ) होता है ।

"रूप के उपादान से 'अस्मि होता है, उसके अनुपादान से नहीं। बेदना के । सद्या के । सरकार के । बिद्यान के उपादान से 'अस्मि' होता है, उसके अनुपादान से नहीं।

''शाहुस आनन्त्र । जैसे कोई की, पुरुष, क्ष्मका वा पुषक अपने को सज-अज कर वर्षण या परि-एकु निर्मेश नकपाल में अपने चेहरे को देखते हुए, उपाजान के साथ नेखे, अनुसादान के साथ नहीं । आहुस आनन्त्र । इसी तरह रूप के उपादान से 'अस्मि' होता है, उसके अनुसादान से नहीं । वेदना । सर्वा । सरकार । विकास के उपादान से 'अस्मि' होता है, उसके अनुसादान से नहीं।

"आहुस आनन्द ! तो तुम क्या समझते हो, रूप नित्य है या अनित्य ?

आबुस ! अमित्य है ।

''वेचना , सङ्गा , सस्कार , विकान ।

आञ्चस । अनित्य है।

"इसकिये , यह जान और देख कर पुनर्जन्म में नही पड़ता है।"

काञ्चल ! जाञ्चच्याल् मन्तानिष्ठत्र पूर्ण हम नये भिछाओं के बढ़े ' इपकार करने घाले हैं। वे हमे ऐसा उपनेत्र देते हैं। उनके इस घर्मोपदेश को सुन में स्वीतापक्ष हो गया।

# **६ २. तिस्स धु**च (२१. २. ४ २)

#### राग-रहित को शोक नहीं

श्रावस्ती जेतवन ।

उस समय भगवान के पचेरे आई आयुष्मान तिष्य फ़ुठ मिश्चओं के बीच ऐसा कह रहे थे— आतुम ! मुझे कुठ उत्साह नहीं हो रहा है, मुझे दिशार्थ भी नहीं दांख रही है, धर्म भी सुझे नहीं हवाल हारहाई, मरे विक्त में बढ़ा आकरन हो रहा है, बेसन से मैं श्रद्धावर्ष का पाकन कर रहाईँ, धर्म में मधे विविधित्या उपलब्ध हो रहाई है।

तब कुड लिश्च वहाँ आपशाल से वहाँ कासे और धारवाल को अभियातन कर एक ओर बैंड गये।

प्रकार कर उन सिक्षां में भागाल शिक्श "अमरे ] धारवाल के क्वेरे माई आयुष्मान् तिष्य कुछ

भिक्षां के बीच ऐसा कह रहे के — पर्य में श्रव शिक्षित्या उत्पन्न हो रही है।"

त्तव स्ताव मृत्र किसी सिक्षुको अस्तिभिक्षत किया "सिक्षु|सुबी सेरी भौर से आकर दिण्य भिक्ष को कडो----भ पस दिल्य | भाषको सुक्ष तकारहे हैं।"

मन्त्रे बहुत अन्त्रा" कह वह मिलु भगवान को उत्तर है कहाँ आयुष्माम् तिय्य ये वहाँ गया आर तोका---अवस्य निया । यह आपको बाल को हैं।

श्र तुम ! बहुत अवजा" कह आहुत्याल दिवा जस सिह्य को उत्तर दे वहीं सगवाय ये वहीं सावा और सगवात को स्पेनिवान कर एक लोग के गया !

सामा भार मनावात, का अध्यवादक कर एक कार कर गया। एक बोर किंदु को धार्चम्यान ठिव्यं से सनावात बोडे "तिव्यं १ वना दुसने सबसुब कुठ सिद्धार्सी के प्रीव परा। कर है— यूर्य में प्रके विधिक्षिता अनाव को ग्रोरी है है

मन्ते। सी।

शन्त ! हा । जिल्प ! की दुम क्या समझने हो किसे क्ल के प्रकि शा म कक्य = प्रेम क पिपासा क परि ट इ = कुल्ला पने हैं जने क्या कल के विश्रियन तथा सन्द्रवा हो जाने से क्या सीक रोजा पीरमा सुनर पीर्मनर अस ज्यासास (क्योंकार्ता) वहीं कोते हैं ?'

काँ सन्ते ! इस्ते हैं।

र्देक हैं लिप्प | पेमी हो चात है। एम कंप्रति ; चयुना के प्रति ; सद्मा के प्रति ; मेरबार के प्रति : रागांवि में शोक परिवेच उत्पन्न होते हैं?

हाँ सस्त है

दीह ६ किया । धर्मा ही जात है। बिहान के प्रति हिसे सम = छर्म = प्रेस = पिपाला प्र परिक्र इ. म्यूप्या वर्ष हैं उसे उस बिहान के बिपरिजत तथा अन्यक्षा हो जाने से शीक रोजा परिवा इ.प. वर्षानदर अर्थ क्वापाल हात ही है।

शॉं सम्य !

निष्य | मा चना ममझसे हा जिल कन के बंदि त्यमी शतादि तह ही गय है उसे उस कर के विवरित्तन तथा अन्यका हा जाने स ताजादि होती है

वहीं भन्दे !

बांक है निष्य | जारी हो कार्य है। जिसे रूप के सति । वेद्या के सति । संद्र्या के सति । संस्थार के मति । विशास के मति तसी सामादि लग्न हो तब है उस उस विशास के विवरित्तन तथा भाषाय हो जाने संशास्त्रीद कही होते।

निष्य ! सा तुल यथा रासक्तों द्वा श्रम तित्य ह वा अनित्य !

mary may t

बेरमा त्येला त्येरकार । विभाव है

अस्तित्व भागते 🖠

इपान्तिक यह अन्य भार देश लेने में भी पुनर्जन्य वहीं होता है ।

तित्व असे बी पुरुष हो। वृक्ष बुरुष आसी वृत्ताल ही और बुसस नहीं। सब वह समुख्य को अर्लाहुनान नहीं है वस आसी दुशक अनुष्य से आसी बुधे। वह नेपा वहें--हैं पुरुष १ पर आसी है। हम वर कुछ दुर अर्थी। इस दुरुष अपना मुख कह बीसामा देखाते। वहाँ वर्षे दी ग्रीव दुरुष सा प्रवास । उस रास्ते पर भी कुछ दूर जानो । कुछ दूर बाकर तुम्हें एक घना जगरु सिलेगा । उस पर भी कुछ दूर जानो । कुर दूर जाकर तुम्हें एक नीचा गड्डा मिलेगा । उस पर भी कुछ दूर बाको । कुछ दूर बाकर तुम्हें एक खाढ़ें और प्रपात मिलेगा । उस पर भी कुछ दूर बाजो । कुछ दूर बाकर तुम एक समतल रमणीय प्रदेश में पहुँचोंगे ।

तित्व । बात को समझाने के लिये मैंने यह उपमा कही हैं। उसका मतलब यह है। तित्य । वहाँ मार्ग में अकुगल मनुष्य में पृथकान समझना चाहिये, जोर मार्ग में कुञल मनुष्य से अईन् सम्यक

सम्बद्ध तथलात को।

तित्य । टो रास्ता विविकित्सा का बोत्तक है, यायों सस्ता अष्टाद्विक सिध्यामार्ग का, टाहिना रास्ता आये अष्टाद्विक मार्ग का—जेसे सम्यक एष्टि सम्यक समावि ।

धनः जराल अविचा का चोत्र है। येडा नीचा गङ्गा कामो का, म्याई और प्रपात क्षोध तथा उपायत्य का, और समत्तल रमणीय प्रदेश निर्माण का चोत्रक है।

तित्य । इसे समझ कर श्रद्धा से रहो, में तुम्हें उपडेश देता हूं।

भगवान यह बोले ! सतुद्र हो आयुप्तान तिच्य ने भगवान के कहे का अभिनन्दन किया ।

# **९३. धमक सुत्त (२१. २ ४ ३)**

# मृत्यु के बाद वर्डन् क्या होता है ?

एक समय आयुष्मान् सारिपुत्र आवस्ती में सनाथिषिष्टक के अस्तम जेतवन में विहार करते थे।

उस समय प्रमक नामक निश्चको इस प्रकार की पाएयुक्त मिथ्या धारणा हो गई थी—में भग-धान के बताये धर्म को इस प्रकार जनता हूँ कि श्लीयाश्रव निश्च शरीर के गिर जाने पर (≭मृत्यु के बाद) इच्छिक हो जाते हैं, विनष्ट हो जाते हैं, मरने के बाद वे नहीं रहते हैं।

कुछ सिक्षुओं ने नाम सिक्षु की यह पापलुका सिष्या चारणा को झुना । तथ, में सिक्षु जहाँ भोजुम्मान प्रमक थे वहाँ गवे, और कुलार-अस पूछने के बाद एक और वैठ गये। एक और वैठ, उस सिक्षुओं ने आयुम्मान चमक हो कहा, 'आजुस यसक। नया समझुन से आप को ऐसी पापसय सिध्या-धारणा उराष्यु हुई है ।'

अाहुम ! में भगधान के बलाबे धर्म की इसी प्रकार जनता हूं कि क्षीणाश्रव मिश्च दारीर के

गिर जाने पर उच्छित हो जाते हैं, विनष्ट हो जाते हैं, मरने के बाद वे नहीं रहते हैं।

आहुस यमक । ऐसा मतं कहें। लगवान पर झूड़ी वात मत नार्षे। यह अच्छा नहीं है। भगवान ऐसा नहीं कह सक्से हैं कि, क्षीणाश्रय निश्च हारीर के गिर जाने पर उन्छिन्न हो जाते हैं, बिनद्र हो जाते हैं, सिन्द्र हो जाते हैं, सरने के बाद वे नहीं रहते हैं।

उन मिधुओं से ऐसा कहे जाने पर भी अत्युष्मान् यसक अपने आग्रह की पकदे कहने छो।

"आसुस ! मैं भगवान के बताये धर्म की इस प्रकार जानता हैं ।"

जय में भिद्धा आंधुंन्यान् यसंक को इस पापमय मिच्या धारणा से गर्ही अलग कर सके, तव आराम से बट वहीं आंधुंन्यान् सारिपुत्र ये वहीं चले गये । आकर आखुन्यान् सारिपुत्र से मोले, "आदुत सारिपुत्र । यसक सिश्च को ऐसी पापमय सिष्या धारणा हो गई है । अच्छा होता यदि आप रूपा करके वहीं आंधुंन्यान् यसक हैं वहीं चलते ।

भागुप्मान सारिपुत्र ने चुप रह कर स्वीकार कर लिया ।

सब भारतुष्मान् सारिपुत्र ने संन्या समय ध्वान से उठ जहाँ आयुष्मान् वमक ये वहाँ गये, और ४९

दारहादें, मेरे लिख में क्याजलकरण दारहा दें, जेसन से मैं प्रक्रावर्थका पाकत कर रहािं पर्ममें ससे विविक्रिया उत्पक्त को की दें।

यह कुछ निश्च बहुँ भगवान में नहीं अभे और भगवान को अभिवादन कर एक भीर के गय। एक भर के उन निश्चमां ने मगवान से कहा "मन्ते ! भगवान के बचेरे माई आयुष्मान विष्य इस् निश्चमां के बीच ऐपा कह रहे थे— पर्म में सुझ विधिकत्सा उत्पन्न हो रही है।"

त्तव सगव म में किसी सिक्षु को कासन्त्रित किया सिक्षु ! सुनो सेरी कार से पारूर तिष्य निक्ष को को --- में क्स तिष्य ! कारको तक तका रहे हैं !

'शुका कहा----न बुना तरावा विश्वपका जुढ़ जुका रहे के। 'सम्म बहुत सब्द्राः कह बह सिशु अगवान् को उत्तर दे कहाँ आयुष्पास् तिष्य से वहाँ गया

और बोका—अबुस तिष्य ! बुद आपको बुका रहें हैं । अबुत ! बहुत सरका कह आबुत्ताव किया कत जिल्ला को कलर ५ वहाँ सरावाद से वहाँ

आवा भीर भरावाय को कमिवादन कर एक और बैठ गया। एक और बैठे क्रुपे मायुष्यान तिच्या से सगवान कांक्रे "तिच्या नवा तुससे सबसुण कुछ सिश्चर्यों

के बीच ऐसा कहा है— वर्ज में सुझे विधिकित्या उत्पंच हो रही है ? सन्ते। हाँ ।

सन्त ! का । तिरुप ! यो तुम नया समझये हो जिसे कप के मित राग = कुन्द = मेम = पिपासा = परि छाइ = तुमा को हैं क्के वक्त कप के विपरित्तन तका सम्प्रया हो जाने से नया गोक रोगा पीटणा हुन्त वोसनस्य भीर क्यामाश (=चरेगााली) सभी बीते हैं भ

हों सक्ते ! होते हैं।

ठीक है, किरच ! ऐसी ही भात है। कर के मति ; संज्ञा के मति ; संज्ञा के मति ; संस्थानों के मति : शामकि से सीक परिषेत्र जरूरक होते हैं!

हाँ मन्ते !

श्रीक है, तिला । पेकी ही बात है। विकास के प्रति जिसे तम ज रूप को में मानियाना ज परिकाह ज तुष्या करें हैं उसे उस विकास के विपरिकात तथा अन्यया ही बावें से सीक रोजा पीटना दान्न दोर्सनस्य कोर उपायक्त कोटे ही हैं।

हाँ मस्ते !

विष्य ! को क्या खसकते हो जिसे कर के श्रीय खसी हागादि यह हो शर्ज है करे उस कर के विपरितत तथा कम्मधा हो कते से सोअबि होंगे ?

वहाँ सम्ते !

डिक है किया | पेशी हो बात है । जिसे क्या के मित्र | नेतृता के मित्र | संक्षा के मित्र | संक्षा के मित्र | संक्षा के मित्र | संस्था के मित्र | संस्था के मित्र | स्था संस्था से मित्र | स्था संस्था से स्था से

तिप्य ! की तुम कथा धमझते हो क्षप नित्य है या अजित्य !

व्यक्तिय सन्ते 🗓

भेदमा ; शंशा । शंशकार । विशास १

कानिएवं मान्ते ।

इससिय यह बाब और वैण केने से भी पुनर्जन्य नहीं दीता है।

तित्व | जैसे वी प्रवय हो । वह पुरुष मार्ग-कृषक हो और तुसरा नहीं । तब तह महुण्य की मार्ग-कृष्ण वर्षों है उस भार्ग-कृषक महुण्य से मार्ग-कृष्ण वह बेला कहें—है पुरुष ! यह नार्ग है । इस यर कुत्र कृष्णों । कुत्र तृत्व वाकर पुरुष पुरुष होगा को प्रति । वहाँ वार्व को कीक दाहिने को वकरमा । मन में ऐता हो, "'''इसके साथ महा आरक्षक देवार रहते हैं, इसे पटक कर जान से सार देना सहज नहीं है। तो पया न में बाल से भीतर पैठ कर अपना काम निकाल्ट्रें।" वह उस गृहपित या गृहपित-पुत्र के पान्य जा उन ऐता कहें—'हेव ! में आपकी सेवा भरता चाहता हूँ। तथ, उसे वह अपनी सेवा में नियुक्त कर लें। वह सेवा करें, न्वामी के उठने के पहले ही उठ जाना, स्वामी के सीने वे याद सीये, आजा सुनने में नाथ तरपर रहें, मनीहर आचार-विचार का बनके रहें, और यह किया किया कहा गृहपित या गृहपित या गृहपित या अपना का जान कि सीने हो जात कर नाम सेवा के सीन हो जात कि सीने हमें सुन हमें सीने हमें साथ हमें सीने हमें साथ हमें सीने हमें सीने इस गृहपित या गृहपित वा के बिहवान को जीत लिया है, तथ कही एकान्य में उसे अकेला पा कर नेज सलवार से जान से सार है।

श्राञ्जल यसक । तो आप ज्या समझते हैं—जब उम मनुष्य ने उस मृह्यति या मृह्यति या मृह्यति प्रश्न से इहा था—नेय । से आपकी मेथा करना चाहता हूँ—उस समय भी वह उसका वणक ही था। वथक

होते हुये भी उसने नहीं पहचाना कि यह मेरा वधक है।

जय बहु सेघा कर रहा था, स्वामी के उठने के पहुले ही उठ जाया करता था, स्वामी के सोने के बाद सीता था, आहा सुनने में सब तरपर रहता था, मनोहर अत्यर-विचार वाका होने रहता था, धीर महा प्रिय बोहता था, उस समय भी वह यथक ही था। यथक होते हुए भी उपने नहीं पहचामा कि यह मेरा यथक है।

जब उसने एकान्त में उसे अकेला पा जान में भार विवा, उस समय भी वह वर्षक ही था। यथक होते हुवे भी उसने नहीं पहचाना कि वह मेरा वषक है।

आबुस ! ठीक है ।

अहुत ! इमी तरह, अज प्रथकतम रूप को अध्या करके जानता है, या आस्मा को रूप बाखा, या आस्मा में रूप, या रूप में आप्ता, वेदला , राकः, , गरकार , विक्रला । वह अनित्य रूप को अभिन्य रूप को अभिन्य रूप को तरि पर प्रथार्थेत कर्ष के तीर पर प्रथार्थेत कर्ष को तार पर प्रथार्थेत नहीं जानता है, अनित्य बेदमा को अनित्य विकास को । यह हु सा रूप को हु जा रूप के तीर पर प्रथार्थेत नहीं जानता है, हु जा देग्य को , हु जा स्वां को , हु जा स्वं को , त्रा संस्थार को , अनारम स्वं को , अनार

वह रूप को प्राप्त होता है, रूप का उपादान करता है, और समझता है कि रूप मेरा आख्या है। वेदमा , संज्ञा , महत्त्वार , विज्ञान । पंच-दपात्राम स्वन्य को प्राप्त हो, उनका उपादान कर बसे दीर्थकाल तक अपना करित और हु स्व होता है।

अञ्चल <sup>१</sup> झात्री आर्यश्रापक रूप को अरमा करके नहीं जानवा है, न आरमा को रूप बाळा, न आरमा में रूप, न रूप में अरमा, न नेदना , सज़ा , सरकार , बिझान ।

वह अनित्य रूप को जनित्य रूप के तोर पर यथार्थत जानवा है। अनित्य वेदना को '। अनित्य समा को । अनित्य संस्कार को । अनित्य विकान को ।

वह दु स रूप की दु स रूप के तोर पर यथार्थंत जानता है ।

घह अमारम रूप की अनात्म रूप के तीर पर यथार्यंत आमना है ।

यह संस्कृत रूप को संस्कृत रूप के तीर पर यथा वैत जानता है । यह अधक रूप की अधक रूप के तीर पर गवार्थत जानता है ।

बह रूप को नहीं प्राप्त होता है, रूप का उपादान नहीं करता है, व प्रेमा समझना है कि रूप

इसक-दोन पुठकर पु≽ और वैठ गय । एक जोर वैठ अ बुद्ध ज्लारिपुत अ युद्धाल मसक से बोध 'भावम ! क्या मच में अपको धैमी वापक्षम क्रिया बारणा हा गई है

म बन्द ! में मगबान के चताये धर्म को इसी प्रकार बानवा हैं जाबम धमक ! तो श्वा समधते हैं कर नित्य है वा भ नत्य !

अवस्य ! अमित्व है।

**बदना :** मजा : संस्कार : बिजान !

सक्तार समिन्य है।

इसक्रिय यह अन कर देश कर प्रत्यंत्र में नहीं पहला।

भ.बुम पसक ! तो क्या समझते हैं जो वह क्य है बड़ी बीब (= तयानत) है ?

नहीं अनुसः!

बेदमा , मंत्रः , संस्थार , विशास है वही जीव है है

नहीं संख्य ! भ चून वतक रे हो क्या समझत है कर में कीव है !

नहीं सावम !

ता क्या अवि रूप स मिल कहीं है।

महीं अञ्चल । बेहना । बेहना में निश्च ?

मंत्रा । मंत्रा से सिंख 📍

संस्कार । संस्कार स भिन्न ।

विज्ञान । विज्ञान से शिवा 1

नहीं अवस्य ! भावूम यसक । ता क्या समझत है कप देशका-संक्षा-मंद्रसर भार विद्यान सीव है (

नहीं अध्युम ! अपूज पमद ! तो क्वा समस्त्र हैं जीव कोई कप-रहित बंदना-रहित संज्ञा-रहित संस्कार रहित और बिलान रहित है ?

नहीं जात्म !

अभूम बमद । जब प्रवार्थ में ललतः काई अब उपकृष्य नहीं हाता है तो बचा आपका ऐसा करता द्वीक है "सरावर्ष के बनाय पार्म का में इस प्रकार नातता हूँ कि क्षीयामय सिद्ध सारीर के गिर जान पर विचाल को जान हैं जिनक हो जाने हैं जाने के नाम में मंदी रहते हैं' ह

अनुग मारिपुत्र ! सुग्न अर्थ का डॉक में पापसव शिष्या आएमा दा गई थी किन्दु अपके इस

क्रमींपरेश का गुत्र मेरी वह जिल्ला धारणा जिह गई और धर्म मेर लगश में आ राजा ।

अभूग बसक । यति कागका काहै एमा पूरा---है शिव यसक शीमाश्रय अहँग भिन्न सर्व के बार क्या होता है र-मा आव क्या उत्तर हैंगे रै

कान्य गारिपुत्र ! वहि मुझे कोई ज्या पूर्णमा तो हैं वह अत्तर पूँचा--- मित्र अस अनिवाही अर का अन्य है जह राजा है। आ पाना है यह विराह का अरुत हर गया । पंता । गीतर । गीरपार । বিচাস

आजग बसक रे आपने दंग्य कहा । में कह अपना देना हूँ जिलमें बान और भी शहद हो जानगी। अ चुन पत्रक रे जैन काई गृहपनि वा गृहपनि पुत्र महाधनी वैभवशाली हा जिसके साथ सहा अमान क्षित हरते हा । तथ जनका चीई तक बन अन जो जो अन म मार बत्यवा चाहे । उसके

भन में ऐसा हो, ""डिसके साथ मदा आरक्षक देवार गृहते हैं, इसे पंडक कर जान से सार देना सहज नहीं है। तो क्यों न में चाल से भीतर पंड कर अपना काम निकाल्हें।" वह उस गृहपित या गृहपित-पुत्र के पाम जा कर ऐसा कहे—चेव ! में आपकी सेवा करना चाहता हूँ। तब, उसे वह अपनी सेता में नियुक्त कर ले। वह सेवा करें, स्वासी के उठने के पहले ही उठ जल, स्वासी के सोने के पाट सोते, आहात सुनने सं सदा तस्पर रहें, ग्रांबेहर आवार-विचार का वनके रहें, और वडा प्रिय बोले ! पह गृहपित या गृहपित-पुत्र उसे अपना अन्तरम मित्र समक्ष कर उसमें बड़ा विश्वान करने लो। जब उस मनुष्य को यह साल्य हो आप कि मैंने इन गृहपित या गृहपित-पुत्र के बिहवास को जीत लिया है, तब कहीं एकाम्ब में उसे अनेल्य पाट के नेव तलकार से आप से सार है।

शासुस समक ! सो आप क्या समझते हैं—जब उस अबुष्य ने उस मृहपित या गृहपित-पुत्र से कहा था—चुव ! में आपकी सेवा करना चाहता हूँ—उस समय भी वह उसका वधक ही था । वधक

होते हुये भी उसने नहीं पहचाना कि यह सेरा यथक है।

अय बह सेवा कर रहा था, रातमी के उठने के पहले ही उठ जाया करता था, रातमी के सीने के बाड सीता था, श्राह्म सुनने में सबा तरपर रहता था, मनोहर माध्यर-विचार वाला होके रहता था, और कड़ा प्रिय गोळता था, उस समय भी वह वथक ही था। वथक होते हुए भी उपने नहीं पहचाना कि बह मेरा तथक है।

जब उनने एफान्त में उसे अकेला पाजान ने मार विचा, उस नमण भी वह वर्धक ही था। प्रथम होते हुने भी उसने नहीं पहचाना कि वह भेरा वधक है।

आयुस ! ठीक है।

असुद्धा १ इसी तरह, अज एथफजान रूप को अध्या करके जानता है, या आरमा को रूप याछा, या आरमा में रूप, या रूप में आध्या, वेदला , सहका , सरकार , विद्याल । वह जिनला रूप को अनित्य रूप के तौर पर वथार्थत नहीं जानता है, अनित्य वेदना को अनित्य वेदना को तिर पर यथार्थन नहीं जानता है, जिनला सज़ा को , अनित्य सरकार को , जनत्य विद्यान को । वह हु ख रूप को हु ए रूप के तौर पर यथार्थत नहीं जानता है, हु ख वेदना को , दु ख सदा को , दु ख तंदकार को ', हु ए विद्याल को । वह अनाका रूप को जनात्म रूप के तीर पर यथार्थत नहीं जानता है, तनात्म वेदना जो , अनात्म सद्या को , अनात्म संस्कार को , अनात्म विद्याल को । सरकृत रूप को संस्कृत रूप के तीर पर यथार्थत नहीं जानता है । वथक रूप को यथक के तीर पर यथार्थत नहीं जानता है ।

वह रूप को प्राप्त होना है, रूप का उपाटान करता है, और समझता है कि रूप मेरा आत्मा है। वैडमा , सैका , सरकार , विकान । पण-उपाटान स्कृत्य को प्राप्त हो, उनका उपाटान कर उसे टीपैकाल तक अपना अहित और दू ख होता है।

शानुसः । प्रानी आधीत्रावक रूप को अत्या करके नहीं जानता है, न आध्या को रूप बाला, न आत्या में रूप, न रूप से अत्या, न जेवना , सखा , सरकार , विज्ञान ।

त्रह अनित्य रूप को अनित्य रूप के तोर पर ययार्थत जानता है। अनिन्य चेटना को । अनिह्य समा को । अनित्य सरकार को । अनित्य विज्ञान को ।

वद हुए। रूप को दूस रूप के तीर पर यथार्थत जानता है ।

वह अनात्म रूप को अनात्म रूप के तौर पर यथार्यत जानता है ।

वह सस्कृत रूप को संस्कृत रूप के तीर पर यथार्थत जानता है । वह वधक रूप को यथक रूप के तीर पर यथार्थत जानता है ।

पह रूप की नहीं प्राप्त होता है, रूप का उपादान नहीं करता है, न ऐसा समझना है कि रूप

मेरा मात्मा है। बेदना । संज्ञा । मंसकार | विद्यान । वृद्धा समस्रता है कि विज्ञान मेरा भारमा है। देपादान स्टब्जों को व शास्त्र हो उनका देपादान न करते हुए उसे वृश्यकाल तक नपना दित और व सुख होता है।

श बुस सारिपुत्र ! वे पेसा ही होते हैं जिम आयुष्पानी के वैसे कबपासीछ परसामी भीर जपदरा देने बासे गुरू-माई होते हैं । यह भाषुप्यान् सारिपुत्र के प्रसीपदेश की शुन गेरा विश्व उपादान-रहित हो

अध्यक्त से मुत्र ही गवा।

सायुप्तान् सारिपुत्र वह बाढे । संतुष्ट हो आयुप्तान् वसक वे आयुप्तान् सारिपुत्र के नवे का अभिनन्तन किया।

# ६४ अनुराध सर्प (२१ २ ४ ४)

### प्राण का निरोध

मेसा मैने सुना।

पुत्र समय मगयान् वैद्यासी में महाचन की कुटागारहाग्छा में विदार करते में।

बस समन भ युव्याम् अनुराध भगवाम् के पास हो आराज्य में इसी अमाका विहार करत थे। तव कुक निर्मित परित्र मत स्वास्त्र में सुध्यान सद्वार ये वहाँ माणे और कुसक-देन पुरू कर एक सार बैठ गये। एक मीर बठ जम तैथिंक परित्र कहाँ ये कालुप्तम माजदाय के बहुत्य को कहा——मनुसा । की त्यागत कत्तर पुरुष = परमपुरूष परम गांति ग्राह है ये पूछे काले पर बीच के विषय में बार समाम में से किमी एक को बताये हैं—(१) अरने के माद कोच रहता है (१) था अरने के बाद और नहीं रहता है (१) या मरने के बाद कोच रहना भी है मार नहीं भी रहता है (१) या मरने के बाद और न रहा दें भीर न गाँव रहता है।

अनके पेशा करते पर अधुराय में उस सीविक परिश्व बजा को कहा-अधुम ! हाँ छव गत

चार स्थाना में संकिसी पुक्र को बताते हैं।

इस पर उन रैपिंक परिश्वकों ने कहा-अवस्य वह कोई पना अभी दूरत का बना मिछ भौगा था कोई सूर्व बेससस्य काविर ही होगा ! इस तरह व अपुष्पाम् अपुराव की अबहेकना कर आमन से उट बढ़े गये !

ता उस परिस्ताकों के बाने के बाद ही अंजुष्ण न शहराज के सम में नह हुन्य---विद में परि संजक हुने समके अभी का मान पुढ़े जो तेरे किया सकार कहने में सावव मु के सिद्धालन का बीज-प्रैक प्राचन होता भागीन पर हुईने बात का बावना बड़ी होता जर्मीहुक्क बात होगी और कोई अपने पर्म का बाद के सिर्ध्योक में कि नेपन स्थान नो नार्ट बात होगा है।

तब आधुष्पाम् जनुराव वहाँ भगवाम् ने वहाँ गरे और मगवाम् का अभिवादन कर एक

भीर बैठ गर्ने ।

अनुराध । तो तुम वता समातने हैं। कप नित्व है वा अनित्य है असित्व भन्ते ?

इसकिय निकास मार देश के में पुनर्शन्य में वहीं पहता। अनुराग ! नी सुस पना नमझने दा अनु श्रीव के ह नर्शभन्ते।

चेवना ,संज्ञा ,सस्कार ,विज्ञान \*\* १

नहीं भन्ते ।

अनुराध ! तो तुम क्या समझते हो, रूप से जीप है ?

नहीं भन्ते ।

क्षा रूप से भिन्न कार्र जीव है ?

नहीं भन्ते ।

चेदना , सङा। , यस्कार , विज्ञान से भिन्न कही जीव है ?

नहीं भन्ते।

अनुराध ! तो तुम पदा ममझने हो, रूप-नेवन-संज्ञा-सरकार और विज्ञान के दिना कोई जीव है ?

मही भन्ते ।

अनुराधा। तुमने स्वय टेरा लिया कि यथार्थ में मत्यात किसी झील की उपलब्धि मही होती है, तो क्या तुमला ऐसा फहाना डॉक का कि—"आहुता ! हो, जो तथागात उन्नामपुरा = परमपुरा परस-मासि-प्राप्त हैं वे पूंडे जाने घर जीव के विषय में चार श्वांत में से तिसरी एक की बसाते हैं —-(1) मरने के बाद जीव रहता है, (२) या, मरने के बाद जीव नहीं रहता है, (३) या, मरने के बाद जीव रहता भी है और नहीं भी रहता है, (३) या भगने के बाद जीव नहां रहता है और न नहीं रहता है।

नहीं भन्ते ।

ठीक है अनुराय , में पहले ओर अब भी हु स्व और हु स्व के निरोध को यहा रहा हैं।

६ ५. वक्किलि स्रच (२१ २. ४.५)

जो धर्म देखता है, यह बुद्ध को देखता है, वक्कि हारा भारम-हत्या

पेसा सैने सुना।

पुरु समय भगवान् राष्ट्रगृह में वेलुवन कलन्दकनिवाप में विहार करते थे।

उस ममय आञ्चामाम् चयक्ति छ एक कुम्हार के घर में रोगी, हूँ खी और बढ़े बीमार पहें थे।

सब, आयुष्पाण् पक्षित ने अपने टहरू करनेवालां को आसन्त्रित किया, "आवुत्त। सुनें, जारों समावाद है वहाँ जायें, ओर मेरी ओर से भावान्त के चरणों पर विश्व से प्रणास्त करें, और कहाँ—भन्ते। बक्षित सिक्ष रोगी, हु को और नवें बीसार हैं, वे आपके चरणों पर विश्व से प्रणास्त्र करते हैं। और प्रेमी प्रार्थना करें—भन्ते। प्रति आपवान् जहाँ वक्षित निक्क हैं वहाँ चलते ने वक्ष कुरा होती।"

"आदुस । यहुत अच्छा" कह कर वे भिक्षु अखुष्माच् बारूकि की उत्तर हे जहाँ भगवान् ये वहाँ गये, और मगवान् का अभिवादन कर एक और बैठ गये। एक और बैठ, उन सिक्धुओं ने भगवान् को

कहा, "भन्ते । यक्कि मिध्र रोगी , वहाँ चळते तो वड़ी कृपा होती।"

भगवान ने जुप रहकर स्वीकार कर किया।

तय, भगवान पहन और पात्र-चीवर छे जहाँ शायुप्मान वक्कि ये वहाँ आये।

भायुष्मान् बक्कि ने मगवान् की दूर ही से आते देखा, देखकर खाट ठाँक करने छते ।

तव, मगवान बाजुप्पात बाहिल से बोले, "बाहिल । रहने हो, खाट ठीक सत करों, ये आपन थित्रे हैं, में इन पर बैठ बाजेगा।" भगवान विदे बावन पर बैठ गये। बैठकर, भगवान बाहिल भिक्ष में बोले, "बाहिल। कहो, तबीयल फैसी है, बीमारी घट तो रही है ?"

भनते ! मेरी त्वांवत बच्छी नहीं है, वर्डी पीडा हो रही है, बीमारी बढ़ती ही माल्ड्स होती है ।

वक्षि ! तुम्हें कोई मखास वा पद्मतावा सी वहीं रह गया है ?

मन्ते ! मुझे बहुश सकास जीर पद्मनावा ही रहा है ।

नवा गुम्हें सीक नहीं पाछन करने का प्रवाचाप है ?

नार प्रत्य राज्य गरूर पाक्षण करने को प्रशासाय हुए नहीं सन्ते ! सुझे यह प्रशासाय कहीं है।

चक्कि । सब तुम्हें श्रीक नहीं पाकन करने का प्रकालाय नहीं है तो तुम्हें किस बात का समाज और पढ़ताबा हो रहा है ?

सम्ते ! यहुत दिमां से समयान् के दर्शन करने को आने की हरूता भी किन्तु सरीर में इतना वक ही नहीं भा कि भा सबता।

वसकि ! मरे इस गान्यागी से अरे अगीर के दर्शन सं क्या होगा ! सक्कांकि ! जो अर्थ को देखता है यह मुझे देखता है का मुझे देखता है यह अर्थ को देखता है |

वककि ! यो तुस ववा समझते हो क्या जिला है या अभिन्य !

भनित्य भन्ते !

चेदना । संज्ञः । ग्रेंश्कार । वि*ज्ञान* १

विश्व मन्ते 🗓

इस्रीसिने यह कान और देककर पुपर्जन्म में नहीं पदता है।

तम समसान् मानुष्मान् वक्षि की इस तरह उपदेश दे जासन सं ६८ वहाँ गुर्खकूट परेत हैं नहीं करे गर्थ !

तम सरावान् के पके वाले के बाव ही बालुप्यान् बक्कि वे बलवे बहुक करसेवार्के को स्थानिकत किया व्यक्तस्य प्रति सुक्ते बाद पर बका बहुवै क्यियिसिस्स शिक्षा है वहाँ से पहें। सुन्न सैसे का बर के प्रतित सरका सम्यानां स्थाना है।

"नामुख्य | बहुत अच्छः कर्य ये आयुष्मान् वक्ककि को उत्तर ये कर्म्य साटपर चका कर्रो क्रिपितिक क्रिका है क्यों के गये ।

तथ असाव मुंबस रात को जीर दिन के अवस्थि तक गुबक्क पर्यंत पर विहार करते रहे। तब रात बीतने पर हो जायन्त्र सुन्यर देशवा जवनी चामक से सारे गुबक्क पर्यंत को काकाने हुने वहाँ मानवान के जीर समावान को जीरवादान कर पृक्त कोर को हो राव । एक और को ही प्रश्नाव के जीर समावान को जीरवादान कर पृक्त कोर को हो राव । एक और को ही प्रश्नाव के स्वाप्त का का प्रश्नाव के जीरवाद होगा । इतमा क्य के देवता समावाब को जीरवादान का प्रश्नाव का प्रश्नाव का प्रश्नाव का स्वाप्त का प्रश्नाव के जीरवाद वास का प्रश्नाव क

तक बता रात के बीत मध्ये वर जनवान् ने निश्चयों को क्यानिका किया "निश्चयों ] प्रती वर्ष पक्कि निश्च है वर्ष कार्यों और उक्षते करी—जायुक्त वक्कि | जरवान् ने कीर को हो देवराओं ने कहा है वर्स सुत्रों।

पुरु बार को हो एक देवता मगवान से बोका 'मन्ते ! नक्ति मिश्च निमोध में बित क्या रहा है। इसरा देवता । माहुस बक्ति ! मीर धरायान बारसे कहते हैं—बक्ति ! मत हरो मत करें गुरुवारी बुख्य निष्पाप होगी !

"मार्ड ! बहुत बच्छा" वह ने मिस्र सगवाज़ को तभर ने वहाँ व्यवुच्याज़ नककि ने नहीं गरे ! बाकर व्यवुद्धान् नककि सं मेकें-स्थापुर नककि ! सुर्जे आवाज़ से और मो वक्ताकों ने नवा बढ़ा है !

तात्र आयुष्पात् वण्डकि में जापने ब्याम करने वास्त्रं को कामन्त्रितः क्रिया अपनुष्प ! सुर्थे होते वत्तर कर पार से बीचे उतार में। हास कैसे को इस की मामन पर मेठ सगवान् ना उवस्त्र सुमया सम्बद्ध मही।

'अ.सु.म । बर्त्त अन्त्रा'' वह, उन भिक्षुओं ने जा.खुटमान् प्रकालि की उत्तर हे, उन्हें पकड़ कर गाट में उतार दिया।

आजुम ! आज की रात को अध्यन्त सुन्दर देवना । आजुम ! आर भगवान भी आपसे कहते 

आदय । तम् काप लोग मेरी और से भगवान के चरणे। पर प्रणाम् करें---भन्ते । वस्कलि सिध्य रोगी, पीदित और प्रहुत बीमार है, यो या भगपान के चरणा पर किर से बणाम् करता है और कहता है, "अन्ते । हुए अनित्य है, में उसकी अकाक्षा नहीं करता । जो अनित्य है यह है पर है, इसमें मुझे सम्हेत नहीं । जो अनित्य, द य, और परिवर्तनशील है उसके अति सुन्ने छन्छ=रास=प्रेम नहीं, इसमें मुझे क्षत्र सम्बेश नहीं।

वेदना ; सन्ना , संस्कार , विज्ञान अनित्य । "

"अधुस । धट्त अध्या" कह, वे भिक्ष भायुष्मान् चक्रकि को उत्तर है चले गये।

तय, उन भिक्षको के जाने के याद हो आयुष्मान वषकील ने आस्म-हत्या कर ली।

त्तन, वे भिक्ष जहाँ भगनान् थे यहाँ आये, और मगवान को अभिवादन कर एक ओर धेठ गये। पुत्र और वैट, उन मिश्रुको ने भगवान् को कहा, "भन्ते ! वक्कति निश्च रोगी, पीवित और बहुत बीमार है, सो भगवान के चरणा पर जिर से प्रणास करता है और कहता है—सन्ते रूप अनिस्य है से उसकी आकाशा नहीं करता। जो अनित्य है वह दु त्य है, इन्त्रमें मुझे सन्देह नहीं। जो अनित्य, दु एर और परि-वर्तनवील है उसके प्रति सुझे छन्द्र≈राग=भेम नहीं है, हममें मुद्दों कुछ मन्देह नहीं । बेहना . सहा सरकार ,धिज्ञान ।

तथ, भगवान् ने भिक्षुओं को आमन्त्रित किया, 'भिक्षुओं ! बड़ों, उहाँ ऋषिशिक्षि शिक्षा है यहाँ चल चले, जहाँ प्रकालि कुलपुत्र ने भारम-इत्या करली है ।"

"भन्ते । बहुत अच्छा" कहकर उन भिक्षुओं ने भगवान् को उत्तर दिया।

त्र , कुछ भिक्षुओं के साथ भगवान् जहाँ ऋषिगिलि शिला है वहाँ गये । भगवाम् ने आयुष्सास वनकि को दूर ही से स्वाट पर गला कटे सीये देशा । उस समय, कुछ बुंबाती हुई छाया के समाम पूरव की ओर उद रही थी, पन्ठिम की और उद रही थी, जपर की ओर उद रही थी, नांचे की ओर उद रही थी. सभी और उद रही थी।

तय, भगवान ने भिक्षुओं को आमन्त्रित किया, "भिक्षुओं ! इस कुछ धुँवाती हुई छात्रा के समान प्रवक्ती और उद रही हैं इसे देखते हो न ?"

भक्ते! हाँ।

भिक्षुओं । यह पापी मार है, जो कुलपुत्र वक्किल के विज्ञान को खोज रहा है--- वक्किल कुछ-प्रम का विज्ञान कहाँ लगा है।

भिक्षयो । वक्किछ कुलपुत्र का विज्ञान कहीं नहीं छगा है । उसने सो परिनिर्वाण पा छिया ।

६६ अस्सजिसुत्त (२१ २.४ ६)

वेदनाओं के प्रति वासक्ति नहीं रहती

एक समय भगवान राजगृह के बेलुधन कलन्दकशिवाप में विहार करते थे। उस समय आयुष्मान् अस्पति काञ्यपकाराम में रोगी, पीक्षित और बहुत वीमार ये। तथ, आयुज्मान् अस्तिक ने अपने टहुङ करने वाला को आमिश्रत किया, "आनुस ! आप जहाँ मगधान हुन। वहाँ आये, और मेरी ओर से भगव के करणों पर शिर से प्रणाम करें - मन्ते। अस्सणि भिक्ष रोगी पीड़त और बहुत बीमार हैं सो अगवान् के चरणें पर शिर से प्रणाय करते हैं। बार कहें—अन्ते ! पदि छुपा कर वहाँ अस्सकि मिन्नु हैं वहाँ चलते तो वहाँ अच्छी बात होती।

"जानुसा | बहुत अध्या' कह में भिन्नु आयुष्मान् अस्तित्र को उत्तर से बहाँ भगवान् में वहीं जाये जीर मगवान् का व्यक्तिवादन कर एक और कि गये | एक और कर बन मिन्नुओं ने मगवान् को कहा मन्ते | सस्तित्र मिन्नु रागी | वहाँ क्कते तो वजी अच्छी यात हाती |

भगवान में भुष रह कर स्वीकार कर किया ।

तम मार्ग न संच्या नमान स्थान से वट वहीं भाकुच्यान जस्मति ये नहीं गर्थ ।

म युप्पान भस्सकि में भगवान को दूर ही मं आते देखा देख कर साट ठीक करने स्ते ।

त्तव मगदान् आयुष्पान् सस्तक्षि संबोक शहने दो अस्तक्षि । आरट श्रीकसत करो । ये भागन विकेष में इक्वर कि बार्टिंगा।

भगवान् विके बासन पर वैद गयं भीर बायुप्पान् कस्मिति सं वोकं 'बस्सिक ! क्यों तर्वावत क्यों है १<sup>९९</sup>

भन्ते । मेरी सबीवत नवडी नहीं है ।

अस्पति ! तेम्ब्रॅ कोई सकाक या पंत्रश वा तो नहीं रह गंपा है ?

मनी र में हो बहुत बहा महाक रह गया है।

अस्मति ! क्यों मुखें क्षींक व पाकन करने का प्रधात्ताच ता नहीं रह शया है ?

मन्ते ! नदी अुझ लीक न पाळन केटन का पश्राचाप नहीं रह गया है ।

अस्पनि । यदि गुःहें स्रोक न पास्त्र करने का प्रवाचाप वहीं रह शया है तो फिस बात का मलाल वा प्रस्तावा है ?

मन्ते ! हार रोग के पहक में काले आवाम-श्रवाम पर प्याव सगर्थ कर अन्य रा किया करता या सा मुद्दों कम मन्नायि का काम नहीं हुआ। अना महे यन में यह यात आई—कहीं में सासन से गिर ता नहीं कार्कमा है

अस्मिति ! किंग प्राप्तण जार काव्यण का यूपा सत है कि समाधि की जसर कांत्र है (जीवसके चिना सुष्टि नहीं हो सकता है ) वे शक्ते ही ऐसा समझते है कि समाधि के विता कहीं में स्त्रुत न हो बार्के !

अस्पति ! ता पदा समझते हा ऋप निन्त है या अनित्य !

असिंग्य अन्दे ।

बेदमा इमें आ इमेंस्कार इ जिल्लाम ?

भनित्य अन्ते (

इमोलिए बह जान और देख शुनर्जन्म में मही पन्छ। है ।

मदि जसे मुलाइ वेदना होती है तो जानना है कि वह बेदना अतित्व है। यह बातता है कि दममें लगाना नहीं चाहिए। यह जानना है कि दूसका कॉननपुन नहीं करना चाहिए। यदि उसे दुनाई वेदना होगा है का जानना है कि बाद वेदना अनित्य है। यह जानता है कि दूसमें नदाना नहीं नाहिए। वह जानना है कि दूसका अधिनपुन नहीं वेदना चाहिए। यदि असे न सुरा न दुनाव द्वार्स सामी वेदना हार्स है।

यदि उन सुम्पर वेपना होना है नो यह असासना हो उने अनुश्चय शरसा है। यदि उने पुन्तरूम । यदि उस न मृत्य मधुन्तवाली वेपना ।

वह बायपर्यन्त बेहमा का अनुसब कार्न प्रामाना है कि बह बाउपर्यन्त सेहब है। सीवितपर्यना

बेदना का अनुभव करते जागता है कि यह जीवितपर्यन्त वेठना है। वेह छूटने, मरने के पहले, यहीं सभी बेदनलें ठही हो जाउँगी ओर उनके प्रति कोई आखफि नहीं रहेगी।

अस्सिति । जैसे तेल जार बची के प्रत्यय से प्रदीप जरूता है, तथा उसी तेल और बची के न होने से प्रदीप पुत्र जाता है, बेते ही भिछु कात्रपर्यन्त वेदना का अनुभव करते जानता है कि कायपर्यन्त बेदना का अनुभव कर रहा हूँ, जीवितपर्यन्त , वेह छूटने तथा सरने के पहले यहीं सभी वेदनाथे ठंडी ही जाउँनी और उनके प्रति कोई आसिक नहीं रहेगी।

# § ७. खेमक सुत्त (२१ २. ४. ७)

उदय-व्यय के मनन से मुक्ति

एक समय कुछ स्थविर शिक्ष कौशास्त्री के ब्रोपिताराम में विहार करते थे । इस समय खासुकान् खेमक बदुरिकाराम में रोगी, पीटित और बीमार थे ।

त्व, संच्या समय च्यान से उठ उन स्थाविर भिक्षुणा ने आयुष्मान् दासक को आमन्त्रित किया, "आयुत्त दालक ! सुनें, जहाँ लेमक भिक्षु हैं बहाँ जाय और उनमे कहें—आयुत्त ! स्थाविर भिक्षुणों ने पूछा है कि आपको तथोवत लेखी है ?"

"आहुस ! बहुत अरङा" कह, दासक सिक्षु उन स्थियर सिक्षुआंको उत्तर हे जहाँ ऐसक सिक्षु थे वहुँ आये, और मोरू—अ हुस खेसक ! स्थविर सिक्षुओं ने पूछा है कि आपकी तथीयत कैसी है ?

आवुत ! मेरी तयीवत अच्छी नहीं है ।

तव, आयुष्मान टासक जहाँ स्विवर भिक्षु वे वहाँ अप्ये और वोले—आवुस ! सेमक भिक्षु ने कहा कि मेरी तवीयत अच्छी नहीं है।

भावुस्त वासक । श्रुने, वाहाँ सेनाक शिश्च है बहाँ वार्ष । आकर खेनक शिश्च से कहें, ''आवुष्त खेनक । स्थिति निक्छां ने आपको कहा हे—अशवाल् ने पाँच वयादाल ऋक्त बताये हैं, तीले—रूप, वेदमा, संदग्न, सहनार और विद्यान-वपादान-स्कन्य । इन पाँच में क्या आयुष्माल् खेमक किसी को आत्मा या आत्मीय करके वेदते हैं ?

"आयुत्त । पहुत अच्छा" कह । इन पाँच में क्या आयुक्ताम् खेसक किसी को आतमा या आतमीय करके देखते के ?

भारताय करक देखते हैं।

भाषुस १ भगवाण् ने पाँच वपादान स्कन्य दताये हैं । इन पाँच में मैं किसी को आत्मा पा भारमीय करके नहीं देखता हूँ ।

तय, आयुष्मान् दासक नहीं स्थानिर भिक्षु थे वहाँ आये और वोले, ''आबुस ! सेमक भिक्षु फहता है कि—— इन राँच स्कम्पों में में किसी को आत्मा था आक्षीय करके नहीं देखता हूँ !

कानुस दासक ! सुर्वे, जहाँ दोसक बिक्षु हैं वहाँ वार्वे । वाकर खेसक निष्टु से कहें, "आहुस खेसक ! स्थपिर मिक्षुओं ने आपको कहा है— वदि आयुद्धार, खेसक इन गाँच स्कन्धों से से किसी को मी शासा या आसीब करते कोई देखते हैं। के बच्च क्षीताय कार्यु हैं।

"बाबुस ! बहुत धन्छा" कह, आयुष्मान् दासक स्थविर मिछुओं को उत्तर दे, बहाँ खेमक भिछु ये वहाँ गये, और बोले, ''बाबुस सेमक ! स्थविर मिछुयों ने कहा है— यदि बालुप्तान् खेमक हुन पाँच स्कन्यों में से किसी को भी बारमा या आसीय करके नहीं देखते हैं तो अनश्य सीणाक्षय शहंत हैं ।

आसुस । इन पांच बपादान रुक्न्यों में मैं किसी को आसा या आसीय करके नहीं देखता, किना में श्रीणाश्रव कहत नहीं हूँ। आसुस ! किन्तु, सुझे पाँच उपादान रक्ष्म्यों में 'करिन' (=मैं हूँ) की सुदि है ही, परापि मैं नहीं जानता कि मैं 'यह' हूँ।

त्तव, भायुष्मान् दासक जहाँ स्थविर जिल्ल थे ।

पीडित और बहुत बीसार है सो समावान के चरकों पर डिस्टे से प्रणास करते हैं। कार कहें—सन्ते ! पदि हुपा कर बहीं जस्सकि भिन्न हैं वहीं चकते तो वही अध्यक्ष बात होती।

आदुमः ! बहुत जच्छा" कद्म वे मिश्च आयुष्पान् अस्तवि को उत्तर वे वहीँ मगवान् व नहीं जाने बीर भगवान् का धरिवादन कर एक बीर बैठ गर्ने । एक बीर बैठ उन मिश्चर्यां न प्रगवान् को कहा 'सन्ते ! जस्ति मिश्चरोगी । वहीं बकते तो बढ़ी अच्छी वात होती।

भगवान नै लुप रह कर स्वीकार कर किया ।

तब भगवान संस्था समय ध्यान से उठ वहाँ बायुप्मान अस्मक्ति ये नहीँ गये ।

म पुप्पात भएमांब न मगवान को दूर ही में आते इंसा देख कर साट ठीक करने हमें ।

तक मतायान् शायुष्पाम् अस्ति के सोके "रहमेदा अस्मिकि । साट श्रीक सत करी। से आसरम किके हैं सेंडन पर बैठ कार्दिया।

मानान् विके अन्तम पर वेठ गये और साकुष्पान् अस्मति से क्षेके अस्मति ! कही धर्मीवर्ग किसी है !

सन्ते । प्रेरी सबीयत अध्वी मही है ।

अस्मति ! तुम्हें कोई महाक वा पंछतावा की नहीं रह गंवा है ?

भन्ते ! हमें तो बहुत बढ़ा सकाक रह गया है ।

सरसंबि ! कही तुम्हें शीक न पाकन करने का प्रधात्ताप तो नहीं रह गया है ?

भन्ते ! नहीं असे सीक न पासन करने का पश्चाचाप नहीं रह गया है ।

अस्यकि ! वदि तुःहें शीस्त्र न पाकन करने का पक्षाचाप नदी रह गया है ता किस बात का सकाल वा पळतावा है !

मन्ते ! इस रोग के पहक में कपने काकार-प्रशास पर प्रशास कराते का जरण स निया करता या सो शुश्चे कस समाविका काम नहीं हुआ। जता मेरे सब में वह बात वाई—कहीं में सासन से गिर दो नहीं बार्डिंगा !

बस्मित ! जिंदा समाध सीर माहाल का प्रसा अत है कि समाधि ही स्पन्न पंज है (अविसने पिना मुक्ति नहीं हो सकतो हैं) वे अके ही एमा समझते हैं कि समाधि के जिया कहीं में स्तुत न हो कार्के।

अस्मिति ! दो वना समझते हो रूप नित्य ई पा अतिस्य ?

अभिनय अन्ते !

भरता । संका । संस्कार । विकास ?

क्षमित्य मन्ते !

क्ष्मोदिन्य । यह बान और देख पुनर्जन्म में नहीं पहता है।

भित उसे सुराद वेदमा होती है तो जानता है कि वह वेदमा अधित्य है। यह बानता है कि इसमें स्थाम नहीं चाहिए। वह जानता है कि वृद्यका अधिवन्ध्य नहीं करना चाहिए। यह जसे दुन्तर वेदमा हार्सी है तो जानता है कि बाद वेदमा अधित्य है। वह जानता है कि इसमें बाता नहीं चाहिए। यह जानता है कि इसका अधिनन्दन नहीं करवा चाहिए। जीद वसे न सुक्ष व हुन्द बाड़ी वेदगा होनी हैं।

पवि उने सुगव वैदना होती है तो बह अनासकः हो असे अनुसय करता है। विदेशसे पुनवद । वदि उसे न मुख्य महत्वपार्ध्य वैदना ।

वह बावपर्वेन्त वंदना का अनुसब करते जातमा है कि वह कावपर्वन्त वेदशा है। प्रीवितपर्वन्त

उपादान-स्कन्त्रों से उदय ओर व्यथ देखते हुये विहार करने से उसके पाँच उपादान स्कन्यों के साथ होने बाले "से हूँ" का मान, उन्द और अनुसाथ छुट जाता है ।

दूस पर, से स्थित भिक्षु आयुष्मान् सैमक से गीले, "हममें आयुष्मान् सेमक को कुछ नीचा दिखळाने के किए नार्री पूछा था, किन्तु आप आयुष्मान् यथार्ष से भगवान् के घर्म को विस्तार-वर्षक वता सकते हैं, समझा सकते हैं, जना सकते हैं, शिद्ध कर सकते हैं, सोख सकते हैं, और विश्लेषण करके साफ साफ कर सकते हैं। तो आपने मेसा ही किया।

आयुप्पान् सेमक यह योजे। सतुष्ट हो स्थविर भिक्षुणां ने आयुप्पान् खेमक के कहे का अभि-

इस धर्मालाए के अवन्तर उन साठ स्थविर मिश्चुओं के तथा आधुप्मान् खेमक के थित उपा-वात-रहित हो आश्रवों से मुक्त हो गये।

# ६८. छचा सुच (२१. २ ४ ८)

# बुद्ध का मध्यम मार्ग

एक समय एउ स्विद शिक्ष दाराणसी के वास ऋषिपतन सृशदाय में विहार करते थे। सब, आयुष्पान् छन्न संज्ञा समय ज्यान से डठ, बाभी छे एक विहार से दूसरे निहार का स्विदर भिक्षनों से बोड़े, ''आप स्विदर छोग छन्ने डपदेश हैं, दिखानें और धर्म की बात कहें जिससे में धर्म की जान सर्कें।

इस पर, उन स्थविर मिश्रुओं ने आयुष्मान् छन्न को कहा, "आयुस छन्न । इस अनित्य है, बेदना , सन्ना , सरकार , विज्ञान अनित्य है। इस अनारम है, वेदना , सन्ना , संस्कार , विज्ञान अनारम है। सभी संस्कार जीनन्य है, सभी धर्म जनारम हैं।

त्तव, आयुष्मान् छक्ष के जम में ऐसा हुआ, 'भी भी इसे ऐसा ही समझता हूँ—रूप अनित्य ज्ञासम है। सभी सस्कार अनित्य हैं, सभी धर्म अनात्म हैं। किन्तु, मेरे सपी सन्कारों के शान्त हो जाने, ताभी उपाधियों के अन्त हो जाने, तृष्णा के श्लव हो जाने, निरोध, निर्वाण में चित्र जाने, तृष्णा के श्लव हो जाने, निरोध, निर्वाण में चित्र जाने, हुआ, स्थित तथा परिजाल से बिश्वक नहीं हो जाता है। उपायन उपाय होता है और मन को आच्छा-हित कर देशा है। तब, मेरा कोन जात्मा है। हुय तरह धर्म को जाना नहीं जाता है। भला, सुझे जीन धर्मोपरीय करें कि मैं धर्म को श्लक्ष होता है। स्व

त्तव आयुष्पान् रुक के सन में यह हुआ, "यह आयुष्पान् आतनः कौशान्धी के घोषिता-दाम में विदार करते हैं। भगवान् स्वय उनकी प्रश्ला करते हैं, तथा विज्ञ मिसुओं में भी उनका वहा सन्मान है। अत, अ युष्पान् आतन्द मुझे वेला धर्मोपटेश कर सकते हैं जिससे में धर्म को डीकर्डीक आग सहाँ। मुझे अ युष्पान् आनन्द में पूर-पूरा विश्वास भी है। तो, में चर्छे वाहाँ आयुष्पान् आनन्द हैं।

तव, क सुरमान् एवन अपना विकायन समेद्र, पात्र और चीचर के, वहाँ कौशान्यों थे घोषित राम में ब्रायुग्मान् ज नन्द्र विद्यार कर रहे ये वहाँ पहुँचे, और कुतक-क्षेम पुक्रने के याद एक ओरू घेट गये। एक और के, अपुमान् क्रज वे बायुक्मान् कानन्द्र को कहा, "बायुस बानन्द्र! एक समग्र में वाराणसी के पात फायियतन सुनदाय में भुझे अयुष्मान् वानन्द्र में पूरा विश्वास भी है। वो, में चर्ल, जहाँ बायुक्मान बानन्द हैं।

"न सुरम न जानन्द मुझे उपदेश दें समक्षार्त्रं, धर्म की बात बतार्त्रे जिससे में धर्म को जन हैं.। इतने भर से हम छोग असुष्मान् छश्च से सतुष्ट हैं। उसे असुष्मान् छन्न ने प्रकट कर दिया , स्रोल दिया। आसुम छन्न । आप स्रोतापत्तिमाल का खाम करें। आप धर्म अच्छी संस्ट जाम सरते हैं।

बाकुम दासक ! सुने बहाँ रोमक मिशु हैं वहाँ वार्ष बीर वहें, बाबुस रोमक ! स्पविर मिशुमी ने करा है... मामूम ! का आप काले हैं "में हैं. यह 'में हैं" क्या है ?

मता कर को पी हैं। करते हैं। या पी हैं। कर से करी बाहर है ? नेदना | संहा | । संस्कार

विकास १

"बायुस | बहुत अच्छा" कह आयुष्मान् दासक स्थविर मिछाओं को उत्तर दे

धानुस तामक ! यह ताव-पूप वस रहे । मेरी काडी कार्ये में स्वयं वहाँ कार्यमा जहाँ वे स्मविर शिक्ष है।

तव आयुप्पान् सेमक काडी देउते वहाँ ने स्थवित मिश्च ये वहाँ पहुँचे भीर कुमछ समाचार पूछ

कर एक बोर बैंद गरे।

एक भीर बैंट हुने कायुक्तान् जैसक को उन स्वविर मिश्लकों से कहा "आनुस ! को बाप कहते है "मैं हुँ" वह "में हूँ" क्या है ! क्या क्य को "मैं हूँ" करते हैं या "मैं हूँ रूप से कहीं बाहर है ! वैदना । संज्ञा । संस्कार । विश्वाय ?

बाबुस ! मैं कप बेदना संज्ञा संस्थार और विज्ञान को 'मैं हूँ नहीं प्रदेश नार न "मैं हूँ इनसे कहीं बाहर है। जिल्हु वाँच जवादान एकन्यों में "मैं हूँ पैसी मेरी तुन्दि है, मध्यि यह नहीं

बावता पड मिंड नग है। बाबुस ! बैसे उ पछ का या पहल का या पुष्पतीक का राज्य है । यदि कोई करे, "यचे का गान्य

है का इसके रंग का गरूप है या इसके पराग का सत्या है। तो क्या वह डीक समझा जामगा है

वहीं बाह्यस !

भावस ! दो भाग वतार्वे कि किस प्रकार काले से श्रीक समझा बायता ।

बाहुस ! 'कुक का गान्न है' ऐसा कहते से वह ठीक समझा बापगा।

मानुस ! इसी दरह मैं कम को भी हैं नहीं कहता और न भी हैं।" को रूप से बाहर की चीव स्ताता। न वेदमा को । न संबा को । न संस्कार को । च विशाय को । म्युस्स ! महरि पाँच उपादाम एकल्यों में सुधे 'में हूँ की बुद्धि करी है, तथापि में नहीं जानता कि में पर हूँ।

नामुस | भावेंसावक के वाँच बीचे के कन्यव कर आने पर भी उसे वाँच उपादापस्क्रामी के साम होते वासे "में हूँ" का साथ कन्द ( न्वका ) और अञ्चयन कगा ही रहता है। वह जाने वक कर पॉर्व अपादानस्कानों में ठदन और व्यय ( व्यवस्थित और विमास ) देखते. इयं विदार करता है :—यह सर्ग है, बह क्रप की उत्पत्ति है यह क्रम का जस्त हो बाबा है। यह बेहवा । संद्रा । संस्कार । विकास ।

इस प्रकार पाँच उपाव<del>य-स्कार</del>ों में कहन और ध्यान ने<del>करों हुने विदार करने संबस्के पाँच</del>

उत्पादन स्कर्नों के साथ होने बाके 'में हैं" का शाम क्रम्प और मनुसाय कुट वाता है।

बाबुस ! बैसे कोई बहुत मैका गम्या कपका हो । उसे कसका मादिक कोवी को है है । बीमी शास या चार या गोवर में कम कपने की सकत्मक कर कान चीने और साच पानी में जंबार है । अपनी राव साफ उजका ही वार्थ किंद्र उसमें राया का बाद का गोवर का गान्य करार ही रहे । असे पीवी माकिक को है है। माकिक कमें सुगरियत कक से घी के। तब कपने में बाग हुआ राप्य था। बार पीवर का शन्य विकक्षक दर हो जान ।

बाहुम ! इसी तरह आर्वधावक के पाँच नीचे के बन्चव कर आवे पर भी वसे पाँच बदादान स्कर्मी के साथ होने वाके "में हूँ का मान ग्रम्य बीर अनुसाय क्या ही रहशा है। वह जाने कर कर पाँच बचाद व स्कर्मों में बदय भीर जान दंखते हुने विदार करता है :-- वह कम है, यह कम की बचावि है बह कर का करत हो बाना है। यह नेत्रवा । संज्ञा । संस्कार । विकास । इस प्रकार नीय उपादान-स्कन्धों में उदय और ष्यय देखते हुये पिहार करने से उसके पाँच उपादान स्कन्यों के साथ होने वाले ''में हूं'' का मान, इन्ट और अनुअय छूट जाता है ।

रूस पर, से स्थित मिश्रु आयुष्मान् सेमक से बोले, "हमने आयुष्मान् रोमक को कुछ भीचा दिखलाने के लिए नहीं पूरा था, किन्तु आप आयुष्मात् यथार्थ में मगवान् के पर्म को दिस्तार-तूर्वक बता सकते हैं, समक्षा सकते हैं, जना सकते हैं, शिद्ध कर सकते हैं, खोल सकते हैं, बोर विश्लेषण करके साफ साफ कर सकते हैं। सो आपने वेसा ही किया।

आयुप्पान् सेमक यह पोले। सतुष्ट ही स्थविर भिक्षुओं ने आयुप्पान् सेमक के कहे का अभि-नम्बन किया।

इस प्रमांखाद के अनन्तर उन साठ स्थविर भिक्षुओं के तथा आयुष्मान् खैमक के चित्त उपा-टान-रहित ही आध्यों से मुक्त हो गये।

### ६८. छन्न सचा (२१. २ ४ ८)

#### वुद्ध का मध्यम मार्ग

एक समय कुछ स्थविर भिक्षु बाराणसी के पास ऋषिपतन सुधादाय में विहार करते थे। तब, आयुष्मात छन्न सच्या समय ध्यान से उठ, वासी छे एक विहार से दूवरे निहार जा स्थविर भिक्षुओं से योछे, ''आप स्थविर छोग छन्ने डपदेश हैं, सिलायें और धर्म की बात कहे जिससे मैं धर्म को जान सकें।

इस पर, इन स्थिबर मिश्रुकों ने आवुष्मान् छन को कहा, "आयुस छन । इस अनित्य है, वेदना' , संक्षा , सरकार , विज्ञान अनित्य है। इस बनास्त है, वेदना , सङ्गा , सरकार , विज्ञान अनत्स है। सभी संस्कार आनित्य हैं, सभी धर्मे अनात्म हैं।

तब, आयुत्मान् छन्न के मन में ऐसा हुन्ना, ''में भी इसे ऐसा ही समझता हूँ—क्य अनित्य अनात्म हैं । सभी सस्कार अनित्य हैं, सभी भर्म जनात्म हैं। किन्तु, मेरे सभी संस्कारों के चान्त हो जाने, सभी उपपियों के अन्त हो जाने, तृष्णा के क्षय हो जाने, विराग, निरोध, निर्वाण में चित्त चान्त, झुक्क, विर्वाण परिव्रास से विमुक्त नहीं हो जाता है। वपाटान उत्पन्न होना है और मन को आपछा-नित्त कर देता है। तय, भेरा कोन आधान है। हम्य तह धर्म को जाता है। सन्त, सुझे कीन भर्मोग्येश कर कि मैं भर्म को ठाक्कोक जात सईं!

त्तव आयुष्मान् छक्ष के मन से वह हुआ, "यह आयुष्मान् आतन्त्र कौद्राध्यी के चोचिता-राम में विहार करते हैं। अगवान् स्वय उनकी प्रक्षणा करते हैं, तथा विश्व भिञ्चओं में भी उनका वहा सम्मान है। अत्, अ शुष्मान् आनन्त्र मुझे देता धर्मोपदेस कर सकते हैं विसर्व में धर्म को डीकशीक कान सहूँ। मुझे अ शुष्मान् आनन्द् में पुर-पूरा विद्धास भी है। तो, में चर्द्स नहीं अशुष्मान् आगन्द हैं।

त्तव, अ मुत्माम् छन्न जवना विद्वायन समेट, पात्र और वीवर है, वहाँ कीशान्त्रों के घोरिताराम में आयुम्मान् व नन्द विद्वार कर रहे वे वहाँ बहुँचे, और कुश्वरूखेम पूछने के वाद एक ओरू पंट वये। पक और के, अ खुम्मान् इस ने अध्युम्मान् कामन्द को कहा, "अजुल कामन्द! एक सत्य में वारणादी के पात्र क्षिपता मृतदाय में सुझे अधुम्मान् जानन्द में पूरा विश्वास मी है। यो, में चहुँ नहाँ अध्युमान् जानन्द में पूरा विश्वास मी है। यो, में चहुँ नहाँ अध्युमान् जानन्द में पूरा विश्वास मी है। यो, में चहुँ नहाँ अध्युमान् जानन्द में पूरा विश्वास मी है। यो, में चहुँ नहाँ अध्युमान् जानन्द में पूरा विश्वास मान्द हैं।

"अ युद्धा न् आनन्द मुद्धे उपदेश दें समझार्ये, घर्म की थात बतार्वे बिससे में घर्म को तन हैं । इतने भर से हम छोग अधुप्पान् उज से सतुष्ठ हैं। उसे आयुष्पान् छन्न ने प्रनट कर दिया , स्रोल दिया । बाहुस छन्न । बाप सोतागपि-फळ का छाम करें । बाप घर्म बच्छी तरह जार सकते हैं। इसे सुन भाषुष्मान् एक के सब में वही प्रीति वलक हुई—में बार्म कच्छी तर आन सकता हूं।

गाष्ट्रस एक | मेंने सबसे भागवान् को कारपाधानामेज मिश्र को वपनेश हैते सुनकर बाना है।—

कारवायम | यह संसार को खड़ान में पढ़ा है जिनके कारपाधानामेज मिश्र को वपनेश हैते सुनकर बाना है।—

कारवायम | यहार संसार के स्मूचक को व्यापनेश बान केने से संसार के प्रति को प्रात्तान-तुन्धि है वह नहीं
होती है। कारवायम | संसार के निरोध को पत्पार्थना बान केने से संसार के मिले को मानितान की ब्रित है

वह नहीं होती है। कारपायम | यह संसार क्यान क्यान्तान कीर अभिनेश से बेतर ह जकता है। इस

कान केने से किस में अभिक्षान अभिनिवेश और अनुस्वय नहीं कारते हैं और य उसे 'आसार' की

मानित होती है। उत्तवाद केन हुन्त ही अलब होता है, और विवह हो कर हुन्त ही निहह होता

है—इसरे किसी मानका हो कर हुन्त ही रह पाता। मसीरवन्समुस्तार का सुरान्धर हान हो बाता है।

कारपायम | इसी को मानकाह को स्वापनेश काने हैं।

कारपायन ! "सर्तो कुठ हैं" ( क्यार्च करित ) यह एक करत है। "कुठ नहीं हैं" (क्यार्च कारित) यह दूसरा करत है। कारपायन ! इन हो करतीं में न का हुन वर्ष की मध्य से उपवेश करते हैं। व्याप्त के मध्य में क्षंत्रका होते हैं। उपकार के मध्यम में क्षंत्रका होते हैं। उपकार के मध्यम में क्षंत्रका होते हैं। उपकार के मध्यम में होता है। उपना कारपाय में क्षंत्रकार नहीं होते हम मध्या सार्व्य क्षंत्रकार करते होते हो हम मध्या सार्व्य क्षंत्रकार करते होते हो हम

माबुद्ध सातरह ! जिब बाबुज्यामी के इस प्रकार क्ष्यांत्र, परमाधी बीर वपहेरा हेने बाखे गुहसाई होते हैं जनस देसा ही होता है । व्याचुज्यान कामन्य के इस वपहेश को सुन शुमे चूरा-द्वार सर्म-कान हो गया ।

#### १९ परंप राहुल मुच (२१ २ ४ ९) पञ्चम्बन्ध के बाग से महंकार से जिल

धायस्त्री जेतवन

तर आयुष्पाल् राष्ट्रक वहाँ भगवात् वे वहाँ आवे भीर भगवाव् का अनिवादत कर एक भीर कर गये।

पढ़ और बेंद, कायुप्ताम् राहुक धरावान से बोडे धरते ! क्या वान और देख कर मनुज्य को विज्ञानवाडे दून वार्रार में बीर बादर के सजी निमित्ती में बाद्वार ममद्वार, माव बीर बनुषण नहीं शेने दें ?

राष्ट्रक | मा ब्राध कप-व्यक्ति कागात बसंसान कामाम बाह्य स्पृक्त स्ताम इंग्न प्रवीत इर पा निकर-के रामी न का मरा है व में हूँ और व मेरा कामा है। इसी को प्रधानीत पूर-पा बान के वंसे।

भी बुछ बदना । भी बुछ संज्ञा । भी बुछ संख्वार । भी बुछ विज्ञान ।

राहुत ! इसे बाब और देल कर समुच्य को विज्ञानवाके इस वारीर में और वाहर के सभी निमित्तों से बददार समझार साथ और बनुवाब वहीं होते हैं !

#### वै १० दुतिय सहुछ सुच (२१ २ ४ १०) किसके साम न मकि !

भश्त ! पदा बाम कीर देग कर महुष्य विज्ञानकाळे द्वार वारीर में तथा यादर के शर्मी दिमिनों में अदहार, समझार कीर साम सारित सन बाध्य हन्द्र के वरे साम्य और सिमुन्द होता है ! राह्न ! में पूज कर । इस बान और देश कर ।

# पाँचवाँ भाग

# पुष्प वर्ग

# § १. मदी सुच ( २१. २ ५. १ )

# अनित्यता के पान से पुनर्जन्म नहीं

श्रावस्ती' जेतवन

भिक्षुओं। क्षेत्रे पर्वत से निकल कर निरासी-पराबी बार्निवाली नेगवरी नगी हो। उसके दौनीं तट पर कास उने हों, जो नगी की और झुटे हो। इस भी उने हों, जो नगी की और झुके हो। यह ज (= भाभव) भी । धीरण (= होर) भी । इस भी उसे हों जो नगी जी और झुके हों।

मदी की घारा में बहता हुआ कोई मचुप्त यटि कार्यों को प्रश्ने सी थे उराह जाया। इसमें मचुप्त कीर भी रातरे में पढ़ जाय। यटि कुर्जों को पकरें। यटि व्हर्जों को पकरें।

भिञ्जभी ! इसी तरह, अज्ञ=ष्ट्यय्ज्ज=आर्यसर्गों को न जानने यासा=आर्यभर्म में अज्ञान=अर्थ भर्म में अभिनीत रूप को आप्ता करके आनता है, या रूप में आप्ता को जानता है। उसका यह रूप दक्क बाता है, दससे वह और विपन्ति में पद जाता है। वेदना । सङ्ग्र । सम्कार । विज्ञान ।

भिक्षको ! सो क्या समझते हो, रूप नित्य हे या अविस्य ?

जगित्य भन्ते।

षेत्रमा , स*लाः* , सस्कार , विज्ञान १

अनित्य भन्ते ।

भिक्षुओं ! इम्फिये इसे बान बार देख वह पुनर्जन्म में नहीं पदता है ।

# ३२. पुष्कः सुच (२१२ ५ २)

#### बुद्ध संसार से अनुपछित रहते हैं

श्रावस्ती जेतवन ।

मिश्रुओ ! में सलार में थिवाद वहीं करता, समार ही शुक्तसे विचाद करता है । भिक्षुओं ! धर्म-पार्टी संसार में कुछ विधाद नहीं करता ।

मिश्रुओं | ससार में पण्डित कीश जिसे "नहीं है" कहते हैं उसे में भी "नहीं है" कहता है।

भिश्रुओं ! जिसे पण्डित छोग "है" कहते हैं उसे में भी "है" कहता हूँ ।

भिधुजो । ससार में किसे पण्डित कोग "नहीं हैं" कहते हैं जिमे में यी "नहीं हैं" कहता हूँ। भिधुजो । ससार में पण्डित कोग रूप को निस्य=मुद्य=मान्यत=अविगरिणामधर्मा नहीं बताते हैं, में भी उसे 'ऐसा गहीं हैं' कहता हूं। वेदना । संज्ञा । सरकार । विज्ञान । भिक्षको । ससार

में इसी को पण्टित छोग "नहीं है" कहते हैं जिसे मैं भी "नहीं है" कहता हूँ ! भिद्धकों ! किसे पण्टित छोग "है" कहते हैं, जिसे मैं भी "है" कहता हूँ ! इसे मुत्त चातुम्मान् एक के मम में नहीं मीति जराव हुई—मी बर्म कच्छी तरह बान एक्जा हूं।

बादुस छव । मेंने स्वयं मतावान् को काश्यायनमोच मिश्च को उपदेश होते सुनजर बाना है!—
काल्यायन ! पह संसार को बद्धान में पढ़ा है, जिनके करण भरिताल कीर नास्तिल को भ्रमीन होती हैं।
काल्यायन ! संसर के प्रमुद्द को बयावंता बाना के से संसार के मित्र को मित्र को निर्दाय की हिंदी हैं। काल्यायन ! संसर के मिर्ग को प्रमाण को प्रमाण के से संसार के मित्र को निर्दाय की हिंदी हैं। काल्यायन ! संसर के मिर्ग के प्रमाण काल्यायन ! संसर काल्यायन | पह संसर काल्यायन कोर क्षितिकों से सेतर काल्या है। हुस काल्यायन | काल्यायन काल्यायन काल्यायन काल्यायन काल्यायन काल्यायन है। काल्यायन | काल्यायन | काल्यायन | काल्यायन काल्यायन काल्यायन काल्यायन काल्यायन | काल्यायन

कारपायन ! "सभी कुछ है" ( असर्व करित ) यह एक बन्त है। "कुठ नहीं है" (असर्व वास्ति) यह तुमरा बन्त है। काल्यायन ! इव दो बन्ती में य जा हुन्द वर्म को मध्य से वयदेश करते हैं। सरिया के मध्य से संस्कार होते हैं, संस्कार के मध्यम से विद्यान होता है। इस मकार सारा दुग्य-सम्बंद कर यहा होता है। वसी नविषया के विद्युक्त निरोध हो बाबे से सस्कार नहीं होते इम मकार सारा सम्बन्धन वन्त्र को क्यांत है।

मापुर कातन्त्र ! जिब कायुष्माणों के इस मकार कुराह्य, परमाणीं भार वपहेस हेने बाके गुरुमाई होते हैं उनका ऐसा ही होता है । कायुष्मान् वातन्त्र के इस वपहेस को श्रुप ग्रुप्ने इरान्द्रा पर्मन्त्रान हो गया !

#### \$९ पठम राहुल सुच (२१ २ ४ ९) यम्बस्मन्य के द्वान से महस्त्रार से शक्ति

भावस्ती डेतवन ।

तत आयुष्पान् राहुक कहाँ मगवान् ने वहाँ कामे और अगवान् का सरिवाहम कर पृष्ट जोर वैठ गये।

एड भीर बेंद्र, व्ययुष्पान् राष्ट्रक समजान से बोके अस्ते ! क्या बाव भीर देख कर सञ्जय की विद्यानवाके इस सरीर में बीर बादर के सभी निमित्तों में श्रद्धार, समझार सान भीर बच्छाये वर्षी होने हैं ?

राहुक | को हुछ क्य-अवीत कागात वर्तमान अध्यास बाट स्पृत सूत्रम दोन प्रवीत, दूर, वा किस---है समी व का मेरा है व में हूँ जीर व मेरा आध्या है। इसी को बचार्यका सूप्र-रूग बात केने सें।

को इस बेदना । जो कुछ संद्या । जो हुछ संस्थार । जो हुछ विद्याल ।

रातुक ! इसे जान और देल कर समुध्य की विशासताके इस खरीर में और बाहर के समी निमित्तों से परद्वार समझार आव और कलुशास नहीं होते हैं |

# <sup>§</sup> १० दृतिय राष्ट्रसम्ब (२१ २ ४ १०)

किसके प्राम से मुक्ति !

...मन्ते ! च्या आल और देल कर समुख्य विद्यावयाने इस दारीर में तथा बादर के समी विभिन्नों में ब्यह्मार समझार और मान से रहित सब थाका हुम्झू के परे साम्य और दिश्चार होता है ! राहुल ! को इक कर ! हम बाल और देश कर !

म्थपिर वर्ग समाप्त ।

मिश्रुजो ! जैसे कोई बाद्यर या बाद्यर का द्रागिर्द वीच सदक पर खेळ दिसाये । उसे कोई चतुर मतुष्य देखे । भिश्रुजो ! अला बादू में क्या सार रहेगा ?

भिक्षओ ! वैसे ही, जो कुछ विज्ञान ।

भिश्चओं। इसे देख, पण्डित आर्यश्रावक रूपसे बिरक होता है, वेदना से भी विरक्त होता है, संज्ञा ं, सस्कार , विज्ञान से भी विरक्त होता है। विरक्त रहने से वह सम-हित हो जाता है, सग-रहित होने से विमुक्त हो आता है, विमुक्त हो जाने से उसे "मैं विमुक्त हो गया" ऐसा ज्ञान उत्पन्न होता है।

भगवान यह योले । यह योल कर बुद्ध ने फिर भी कहा .---

हप सैनियण्डोपम है, बेदना की उपमा जरूके बुलकुले से है, सद्या मरीचि की तरह है, सद्या है के के पेद की तरह, जाद के खेल के समान विज्ञान है— सूर्य चंत्रीराचक गीतम बुद्ध ने बतावा है ॥ कीर्स-मेंसे गीर से देखता आलता है, भीर अच्छी तरह परीक्षा करता है, उसे रिक भीर तुम्ह परावा है,

बहु, जो ठीक से देखता है।

इस मिनियत धारीर के विध्यन में जो महाज्ञानी ने वपनेश विधार है,

वस प्रहीण भर्मों को पार किये हुये छोने इसर को देखेश।

आधु, ऊप्पा (=्यामीं) जीर विश्वान जब इस धारीर को छोन देते हैं,

तब बहु बेकार चेतनाईन होकर गिर जाता है।

इसका रिख्तिका ऐसा ही है, ज्यां की मागा की तरह,

यह ध्यक फहा गवा है, यहाँ कोई सार नहीं ॥

इसकार्यों को ऐसा ही समझे, उत्साही निक्कु,

सदा दिन और रात सम्जन्य और स्कृतिमान होकर रहे।।

दसी सपीना की छोने है, क्यना धारण आप बने

मिनीयान्य की गायना करते हुये।

§ ४. गोमय सुत्त (२१. २ ५ ४)

समी संस्कार अनित्य है

#### समासस्कार ॰ श्रास्टक्ती 'जेनवत ।

त्तव, कोई सिक्षु जहाँ समधान् वे वहाँ आवा और सरावान् का स्थियादन कर एक कोर बैट गया। एक लोर बैठ, इस शिक्षु ने सरावान् को कहा, "सन्ते। थवा कोई रूप थे जो निव्य = सुव = शायत = परिवर्तनशिंदा है १ अन्ते। थवा कोई बेदना है जो निव्य १ सङ्गा , सस्कार ,

मिश्र ' कोई रूप, वेदमा, सजा, सरकार या विज्ञान मही है जो नित्य = ध्रुव = शायत = परिवर्तनकारत . है। मिसुको । रूप अनित्य तुःस आर परिवर्तनशीक है पैना परिवर्त कोन कहते हैं और में भी पैसा ही कहता है। वेदना । संज्ञा । संस्कार । विज्ञान । सिक्षुओ ! संन्यार में इसी को परिवर्त कोन दि कहते हैं जार में भी जन्म ही कहता है।

मिलुओं ! संसार का को प्रधार्थ पाने हैं जस बुद अपनी तरह कानते और समझते हैं । कात और समझ कर वे जमजो कट्टते हैं जपदेश करते हैं जानते हैं सिज्य करते हैं पोल तेते हैं और विस्त्रेषण

करके साफ कर रहे हैं।

सितुमा ( इन्न मंतार का गयार्थ पर्म है जिस कुद भण्डी तरह जानते और समझते हैं। जाव और समझ कर । मितुमा । जुद के इस मक्कर साम्य कर देवे पर भी जो कोग नहीं जानते और समझता के जन वाक-पूप-इक्सा-भंबामिया आँच केम्बान सञ्चय का में क्या कर सकता हैं। वेदना । गंका । मंद्रमार विज्ञान ।

मिल्लाको । प्रेमे करपक चा पुण्डरीक चा पछ पाची में पेंदा होता है बार पाणी में बरता है तो मी वार्या ॥ बह समय मेंपुरुक्ति ही रहता है। मिल्लामी ! इसी तरह जुड़ संबार में रह कर भी लंसार को जीन संसार म सन्तर्गक्ति रहते हैं।

# § ३ फेम शुच (२१ २, ५ ३)

#### शरीर में कोई सार मही

मक समय भगवान् आयोज्या में शंधा लग्नी के वढ पर विदार करते थे । वहाँ सगवान् ने निभूजों को जासन्त्रित किया ।

भिभुभी। जीम यह गीमा नहीं बहुत फेन का बहा कर के बाती है। इसे कोड़ ऑर बाका मनुष्य देगा भाग भार श्रीक मा परीक्षा कर दगा लाक और डीक दी प्रतीक्षा कर केने वर उस वह रिफ तुष्य भार अमार मर्गत हो निश्लों । असा फेन के पिक्ट में क्वा स्मार कोट्या ?

मिहान। १ वन ही जो कुछ रूप-अतीत अनागत -दि उसे मिहा पैपाता है आरता है और सैंक म परीक्षा करना है। प्रा भाग भीर औक म बरीक्षा का समे पर उस वह रिफ, तुम्छ और असार मनित होता है। भिक्षामां | माना रूप में प्या सार वहंगा है

मितुमी | जन बारद बान में बुछ कुड़ी यह शामें पर जन में बुमबुस उटने और आँग होत दहते हैं। उस बार्ट क्षीन बारा प्रवास केरी

भना बेदना में क्या गार बहता ?

भिपुनी | इसे प्राप्त करा | अपने सहीने हैं चौचहर के सज़व शरीपचा हाती है | इस कोई सीन बाना सहका परे | मिलुआ | क्या शरीपिया है वस सार नहारा |

बिशुमा ! मैन ही भा कुछ मेशा ।

िम्हार्यो अर्थ कोई समुन्द दौर (क्यार) की शाम में वक शीरण बुरार को लंकर जीतर से दैंड मन्द । यह वहीं रूक वर्ष अर्थित नए कोमल जेना के वेष का देगर । यसे यह सब से बाट कर शिरा है विद को सामा आप अर्थ काट कर विभवनिक्तको समार कर है । इस साम साम समार में महीं कि हो। बी रूप मान की करा है

कर कोई बॉल काम समुख देन आब. भीर दोड रा वरीका करें । देन आब बार टीड में वरीका वर केन पा उन वह रिक गुण्ड की बागार शर्मन दर । किश्वमी है अबर देखे के सने में बना सम्बद्धिता ?

निर्धानी हं भने ही का कुछ संस्थाहर ।

अतित्य भन्ते ।

वेदना , सजा , सस्कार , विज्ञान 7

अनित्य भन्ते ।

भिक्ष । इसलिये ् ऐसा जान और डेम्पकर पुनर्जन्म मे नहीं पडता ।

# § ६, सामुद्दक सुत्त (२१ २ ५ ६)

#### सभी संस्कार अनित्य हैं

श्राधस्ती जैतसम । एक और केंट्र यह शिक्षु भगवान् से बोख्न, "भम्छे। क्याकोई रूप है जो मिस्य , बेयूना , सम्रा: सरकार विकास है जो सिम्य ≃ श्रव हो ?

नहीं भिक्षा देखा नहीं है।

#### s ७. पठम गदहरु सुच (२१ २. ५ ७)

#### अविद्या में पढें प्राणियों के दू ल का अन्त नहीं

ਪਾਰਵਰੀ '''ਕੇਰਕਰ

भिक्षुओं । यह ससार अनन्त हैं। अविद्या के अन्यकार में एड़े, तृष्णा के दम्धन से बैधे स्था आदारामन में भटकरें रहने वाले इस स्थार के आदि का पता नहीं स्मता है।

मिक्षुओं ! एक समय आता है जब महासागर स्व सारत कर नहीं रहता है। भिक्षुओं ! तब भी, अविद्या के अन्यकार में पड़े, तृष्णा के वधन से बेंचे तथा वावागमन में भरवसे रहने बाले. प्राणियों के हु एक का बन्त नहीं होता।

सिक्षुओं ! प्ल समय होता है जब पर्वतराज सुमेर बल जाता है, मध्ट हो जता हैं, नहीं रहता हैं! भिक्षुओं ! तब भी अविद्या के अधकार में पड़ें ।

भिक्षुशी। जैते, कोई कुता किसी गडे खूँटें ने चैपा हो। वह उसी खूँटें के चारों ओर बुमता है। भिक्षुओं। वैसे ही, अज = प्रथक्षन क्य को आत्मा करने जानता है, घेडना , सक्षा , सस्कार , विज्ञान को आत्मा करके जानता है।

भारता को विज्ञानवान, या विज्ञान में आरता, या आरता में विज्ञान ।

यह रूप ही के वार्री और धुमता है, वेदना , स्रीका , सस्कार , विज्ञान हो के चारों और धुमता है। इस तरह, वह रूप, वेदना, सीजा, सस्कार और विज्ञान से आुक्त नहीं होता है। जाति, जरा, मरण, प्रीक, परिदेव, टुख, दीर्मनस्य और उपायास में आुक्त नहीं होता है। वह दुख में आुक्त नहीं होता है, ऐसा में कहता हैं।

भिक्षुओं। पण्टित आर्यक्षातक रूप को आत्मा करके नहीं आनता है। यह रूप, पेदमा, संज्ञा, सरकार नीर विज्ञान के चारों और नहीं तूमता है। इस तरह, वह रूप से युक्त हो जाता है। आति, असा से युक्त हो आता है। वह दुख से युक्त हो जाता है—ऐसा में कहता हैं। त्तव सरावान् द्वाय में बहुत योदा गांवर केकर उस निश्च से योवे "निश्च | दूतना भी कारम-माव का प्रतिकास नहीं है को निराय ≈ शुव्य हो । निश्च | यदि दृतना भी कारम-माव का प्रतिकास मिरा-न्यूय द्वार तो महत्ववे-पाकन दुव्य-कार के किये नहीं कामा वाता । निश्च | वर्षोक दृतमा भी भारम-स्वाप का प्रतिकास निराय-सूत्र पहीं है हसीकिये नहाव्यर-पाकन दुव्य-क्ष्म के किये सार्वक सावा सारत है।

मिछ ! यस समय में यन चौरासी हुनार नगरों में एक कुछानती राज्याती ही में रहता था।

वर्म प्राप्तक हो में रहता था। [इसी तरह सभी के साथ समझ केता] मिछु ! वे सभी सरकार क्षतील हो गये विकट हो गये विपरिकत हो गये। सिछु ! संस्कार प्रमे कामद = अनित्य श्रार कालास संशोधक हैं।

मिद्ध ! तो सभी संस्कारों से जिरफ हो बामा प्रकार्ध राग-रहित हो बामा प्रकार्ध सिद्धफ हो बामा प्रकारी ।

# \$ ५ नखसिख सुच (२१ २ **५ ५**)

#### सभी बोक्सर क्रकिल हैं

भाषस्ती केतवत ।

पत बोर के कह सिंहा अगवान् से बोखा "अगते ! वया बोर्ड क्य है जो दिल = हुच न सावत = परिवर्तनरदित हो ? कोई बेदना ? कोई संखा ? कोई संस्कार ? कोई विश्व ?

नहीं सिम्हा | पिया कोई कर्य वेदना रहेता संन्त्रत्य या विशाल नहीं है को तिया = प्रृत्त हो । तर भगारन् अपने नक के कपर एक नृत्त के कम की रक्कर बोक 'निस्हा | सुना सी क्य

ा भागान् चारण चणा क कार एक प्रश्नेक कण को स्वावस्था के निम्ना; हनामा भी दूर भारी देशानियाल भूप हो। निम्ना; वादे हतवायी कर वित्य म्य मुख्हाता तो शहरवर्ष हुला-स्वय करसायक वर्षकामा जाता। निम्ना; वर्षीकि हतवासी क्य निल्ला म्य मुख्याही है दूसी से सहयार हुला-क्षप के नित्ये सार्थक समसा बाता है।

"निमु । इतनी भी केदना । इतनी भी श्रेष्टा । इतना भी संस्कार । इतना भी किशन निष्य = मुज नहीं है । शिम्हा । क्षोंकि इतना भी विशान निष्य = मुख नहीं है इसी से सम्प्रचर्ष हुएते सब के किये नार्यक समझा सन्ता है।"

मितु । तो पत्रा समझते हा कप नित्य है का अवित्य ?

अतिस्य भन्ते ।

घेटना , सङ्गा , सम्क्रार , विज्ञान ?

अनित्य भन्ते ।

भिधु । इसिलिये , ऐसा जान और देखकर पुनर्जन्म मे नही पडता।

# § ६. सामुद्दक सुत्त (२१ २ ५ ६)

#### सभी संस्कार अनित्य हैं

श्रावस्ती जेतवन ।

पुरु और बढ़, बह भिक्षु भगवान से बोला, "भन्ते । क्या कोई रूप है जो नित्य , बेदना ", सङ्ग, ,सरकार बिज्ञान है जो नित्य = धुव हो ?

नहीं सिक्षु! ऐसा नहीं हैं।

# § ७. पठम गर्दृल सुत्त (२१ २. ५ ७)

#### अधिया में पहे प्राणियों के य ज का अन्त नहीं

थायस्ती'''खेतयत

निक्षुओं । यह सरवार अनस्त है। अधिया के अन्यकार में पढ़े, तृष्णा के बन्धन से बंधे तथा आयागमन में मदकते रहने वाले हुल जलार के आदि का पदा नहीं लगता है।

भिक्षुओ । एक समय आता है जब महाखागर स्ट्ख खाख कर नहीं रहता है। भिक्षुओ । तय भी, अविदार के अभ्यकार में पढ़े, कृष्णा के प्रथम से खेंचे तथा आवागमन में भटवते रहने वाले प्राणियों के दू ख का अन्त नहीं होता.।

भिक्षुओं । एक समय होता है अब पर्वतराज सुमेर बल जाता है, नष्ट हो जाता है, नहीं रहता है। भिक्षुओं । तब भी अविधा के अवफार में पवे ।

भिक्षुओं ! एक नमय होता है जब यह महापृष्यी जल जाती है, नप्ट हो जती है, नहीं रहती हैं। भिक्षओं ! नव भी अविद्या के अन्यकार में पर्वे ।

भिक्षुओ। जैसे, कोई कुछा किसी गढे खूँट में धंबा हो। वह उसी खूँट के चारा ओर हुमता है। मिक्षुओ। देसे ही, अज = प्रयक्तन रूप को आप्सा करके जानता है, बेदना , सहा , सस्कार , तिज्ञान को आप्सा करके जानता है।

भारमा को विज्ञानवान, या विज्ञान में भारमा, या भारमा से विज्ञान ।

बह रूप ही के चारों और चुमता है, वेदमा , संका , सस्कार , किजान ही के चारों ओर चुमता है। इस तरह, तह रूप, वेदपा, संका, सस्कार और विकाम से मुक्त नहीं होता है। जाति, जरा, मरण, सीक, परिदेव, हु ख, जीमीनस्थ और उपायास से मुक्त नहीं होता है। वह दुःस में मुक्त नहीं होता है, पैसा में कहता हूँ।

निश्चओ। पण्डित आर्थन्नावक रूप को आत्मा करके नहीं वानता है। यह रूप, बंदना, सज़, सरकार ओर पिछान के वारों और नहीं चुसता है। इस तरह, वह रूप से मुक्त हो जाता है। जाति, अरा ये मुक्त हो जाता है। यह हु का से मुक्त हो जाता है—ऐसा मैं कहता हूँ।

# ई ८ दतिय गवदल सत्त (२१ २ ५ ८) विराधार भारतीय मन करो

धावस्ती जेसका

मिक्षको | यह संसार करूल इ.। अविद्या के जरुपकार में पड़े तुष्णा के बरुपन से बैंधे तथा भावातासम् में मदस्ते रहनेयाके हम संसार के आदि का पना नहीं स्थाता है।

मिक्षणी । बैसे काई क्रचा एक गई मेंटि में बेंधा हा । यदि वह चक्षता इ ता उसी ऐंट के इर्र गिर्द । यदि यह राहा होता है ता उसी लैंड के इन्होंग्ड । यदि वह बैटता है । यदि वह बेटता है ती

समी भी दे के इवेतिये।

सिहाओं | बमें ही श्रक्त प्रवक्तन क्य का समझता है कि वह मरा है यह में हूँ वह मेरा सारमा है। बेदना को । लंजा को । सरकार को । विज्ञान को । वदि वह कसमा है तो इन्हीं पाँच त्यादान एक मों के हर्विति । यदि वह राहा होता है विस्ता है सेन्सा है तो इन्हों पाँच उपासन स्वन्धी के प्रवंशिये।

मिश्रको । इसकिवे जिल्लार बात्म-चिन्तव करते रहना चाहिय । यह वित्त बहत काह स राग हेप और मोह से गुन्दा थना है। मिहाओं ! चित्र की गुन्दगी स प्राणी गुन्दे होते हैं जीर विश्व की

मिक्सभी ! पढदरियोंक के पट का देशा है ?

श्राकि से पाणी विश्वक होते हैं। हाँ मन्ते !

मिक्समो ! परवारियों के वे किल भी किल ही मा किलित किये बात हैं। परवारी अवने किल से ही विचार-विचार कर कन कियाँ को चित्रित करने हैं।

मिक्स में । इसकिये जिल्लार कारम चिन्तन करते रहना चाहिने । यह चित्र नहत कारू से ा मिल्लुओं ! किस को तरह दूसरी कोई जीज वहीं है । तिरहचीन प्राची कपने किस के कारण ही पेसे इन हैं : तिरक्षीन माजियों का भी निच ही मधान है ।

मिश्रको । इसकिये जिल्लार भारम जिल्लान करते रहना चाहिये । यह बिक्त बहुत काई सै 🔃 मिक्षणों ! मैसे कोडे रंगरेज का विश्वकार रंग से वा किवाकर पा इकरों से या शीस से पा मंबीड से अपनी तरह साथ किने गर्ज सरते पर था शीवाक पर की वा प्रवप के सर्वाडक्व वित्र करार है। मिल्लभो देसे ही अब प्रधानका कर में क्या रह कर ही को माल होता है। बेदना में क्या रक ो संज्ञा । संस्कार । विकास ।

मिद्धाची ! तो क्या समझते हो कप निम्न है या मनित्य ?

व्यक्तिस्य भक्ते १

इसकिये यह बान और देक प्रभवंत्य की अईर ग्राप्त होता।

**८९ नावाधका** (२१० ५९) भावना से बाधवीं का सब

धारक्षा जैनवत ।

भिसनों ; कान जीप वैक कर मैं आधनों के सन का उपनेस करता हूँ निना बाने देख नहीं।

चरर्ज नाम चित्र ।-- "[एक बावि के बोग] जो कपडे पर नाना मकार के सुगति-तुर्यीं के अनुसार सम्प्रीय विपाल के चित्र विजया, यह कम करने से वह पाता है वह कर्म करने से मह, देशा किटाते हुने चित्र को किने फिरते हैं।" --- <del>वाद</del> क्ष्मा ।

भिशुओं ! जान और देखकर आध्यों का क्षय गोता गें १—यह रूप गें, या रूप की उत्पक्ति गें, यह रूप का अस्त गो जाना है। या बेदना '', सकार ', सम्बार', विज्ञान'।

भिक्षओं ! इसे मी जाँग और देगकर आश्रयों का क्षत्र होता है।

भिक्षुओं । भारता में छत्रे हुये भिक्षु को ऐसी हरण उत्पन्न होती हे—अरे ! मेरा चित्त उपायन से सीता हो आश्रयों से मक हो जाय, किंत ऐसा नहीं होता हैं।

सो क्यों ? करना चाहिये कि उसका अध्यास नहीं जसा है। किसका अध्यास ? बाह स्मृति प्रस्थानों का अध्यास, चार सम्यक् प्रधानों का अध्यास, चार कदिवादों का अध्यास, पाँच इन्द्रियों को अध्यास, पाँच यको हा, सात योध्यक्तों का, आर्य अष्टाहिक सार्ग का।

भिक्षुओं। जैसे, मुगों को आठ, कम या बारए अण्डे हों। मुगीं उन अण्डों की न सी टीक में देख भारत करें और न टीक में सेवें।

. उस सुर्गी के मन में ऐसी इच्छा हो, "मेरे यथे अपने चगुल से या चोच से अब्दे को कोड कर करालता में बाहर चले अर्थ । तत्र, ऐसी बात नहीं हो ।

सो पैया ? क्योंकि मुनी ने उन अन्हों को न तो ठीफ से देखा भारत और न दीक से लेखा ।

मिश्रुओं। वैसे ही, भाजना में छनो हुए मिश्रु को ऐसी इच्छा उत्यन्न हो - अरे! मेरा चित्त उपात्रान से रश्ति हो आश्रजी से श्रुक्त रो जाय, किन्तु ऐसा नहीं हो।

सी क्यों  $^{9}$  कहन। चाहिये कि उसका अध्यास नहीं जमा है। किसका अध्यास  $^{9}$  चार स्मृति प्रस्थानों का ।

भिश्चती भावना में को हुये भिश्च को ऐसी इच्छा उत्पन्न हो , और यथार्थ में उसका चित्त उपादान से रहित हो आधर्षा में भुक्त हो आया।

सो क्यों ? कष्ट्ना चाहिये कि उसका अध्यास निद्ध हो गया है। किसका अध्यास ? चार स्कृति-प्रस्थानों का ।

सिक्षुको ! जैसे, मुर्गी को बाढ, इस, या बारए अब्दे हो । मुर्गी उन अब्दो को ठीक से देखे साले भीर रीक से नेये ।

उम मुर्ती के सनमें ऐसी इच्छा हो, "मेरे बच्चे अपने च गुरू से या चांच से अपने को फोड़ कर कालता से बाहर चले आर्वे और यथार्थ ने ऐसी ही बात हो

निश्चुओं। जैसे, वहहूँ या यहहें के शांतिरों के बसुले के हच्यह ( चाँद ) में उसले से अगुलियों और मेंतूरे के दाग पड़े माल्ट्रम होते हैं। उसे ऐसा ज्ञान नहीं रहता है कि वसुले का हत्यह आज इसना पिसा और कल इसना चिसेगा। किया, उसके विश्व जाने पर माल्ट्रम होता है कि दिस गया।

मिक्षुको ! वैसे ही, भावना में हमे हुये भिक्षु को ऐसा शान नहीं होता है कि आज तो मेर आश्रव इतना शांग हुये और कल इतना शांग होंगे। किन्तु, जब शांण हो जले हैं तभी माल्द्रम होता है कि शीण हो नये।

भिद्धको <sup>।</sup> जैसे, समुद्र में चलने वाली बैंब से वैंधी हुई नाव ता महीने पानी में चलाने के वाद हैमन्त में जमीन पर बढ़ा दो जाव । उसके बन्वन घ्य हवा में सूख और वर्षों में भींग सह गल कर नध्ट हो जाने हैं।

भिक्षुओं । बैसे ही, भावना में उने हुने मिक्षु के सभी वन्वन (=१० समीजन) नष्ट हो जाते हैं।

# § १० सम्लासुच (२१ २ ५ १०)

#### शकित्य-संबा की सावसा

धावस्त्री जेतवन ।

मिशुओं ! भतित्य श्रंका की भावता करने से सामी कामराग क्यांग सवराग जीर अविधा हर बाती है, मसी अबदार आर अभिमान समक्र शह हो बाते हैं !

मिहुसो ! बैसे पारप्काव में इपक सच्छे हुके से जोतते हुये सभी बद मूक को क्रिकमित्र करते हुये जोतता है बसे ही मिहुसो ! बलिया मेंजा की माजना करने से सभी कामराग कपराग भवराग मिहुसा तथा साजार और समिमान क्रिक्नियोजन हो जाते हैं।

सिद्धार्थ | जैसे यानगावा यास को गढ़ कराइ पकड़ इवाद कर बोका कर फेंक देता है।
सिद्धार्था | वैसे ही असित्य-संका की सावना करने से समी कामराग फिल्म सिव हो बाते हैं।
सिद्धार्थ | वैसे किमी बास के गुच्छे की बहुवी कर काने से उसमें कमें समी बास गिर पड़ते
हैं। सिद्धार्थ | वैसे हो असिन्य-संका की आवात करने से सभी कामराग किस सिव हो बाते हैं।

मिह्नमा । वीस कुरुगार के मुन्नी घरण कुर की ओर ही बार्ट हैं कुर की ओर ही हुके होते हैं

धीर कृद ही बसका प्रधान दोशा है। सिशुओं ! वैसे ही वानित्य-र्मका की भावता ।

मिह्नको ! बसे सब्से सूक्ष गर्न्कों में कास्तानुद्रागी क्यम समझी काती है । मिह्नको ! बसे ही सन्दर्भका की भावनां ।

मिञ्जूको । यसे सनी सार गण्या में क्राइस्त्यण्यत् उत्तम समक्षा आत्मा है । मिञ्जूको । वैसंही सन्ति-संता की भावता ।

मिश्चभौ ! मैसे सभी पुण-गन्मा मैं सुद्धी बचन मनकी बार्ज है ! शिश्चभो ! मैन ही नगिन

संज्ञा की भावना । मिश्चली | बैसे छोटे मोर्ड राजा सभी खज्रावर्ती राजा के आधीन रहते हैं और चन्नचर्ती राजा

बनका प्रवान नमावा काता है ! मिश्रुओ ! वैशे ही क्षित्य-संज्ञा की मावना । भिश्रुओ ! अस्त मानी जाराजी का प्रवास कन्त्रमा के प्रकाशन्त मोजकुर्वों हिस्सा मी वहीं होता है अर कन्त्रमा चाराओं में प्रवान माना बाता है। मिश्रुओ ! वैसे ही जलिन्य-संज्ञा की भावताना।

मिहुनी ! जैस पार्यकाल में नायकों से इट बने म लाकास के निर्मल हो जाने पर सूर्व उपकर भाषात के मानी बन्दका को इस्स व्यानका है नयता है जार सीमित होता है। मिहुको ! देसे ही अभिया मंत्रा की मायला करने में क्यानी कामराम कपराम अन्याम और व्यक्तिया हट बातो है। सनी व्यक्तिय लीए लिसियाल सरक नह हो जाते हैं।

मिश्रुको । अभिनय मेद्रा की कैंसे भावना और अन्यास करने से खभी कामराग सञ्जूक बच

हो जाते हैं ?

"यह रूप हैं जब रूप की ब्रोप्पि है नह रूप का शरण ही आप। है। यह देवता । यह संद्र्या । यह संस्थार । यह सिकाश्च ।"—सिक्कार्था । इस सरक प्रतिप्य-संकारको धावना स्थित सरकार करने संभागी सामारा समूब रूप हो आपे हैं।

> भुत्ववर्गं समाप्त मन्द्रियमण्डलामक समाप्त ।

# तीसरा परिच्छेद

# चूळ पण्णासक

# पहला भाग

अस्त वर्ग

६१. अस्त सुत्त (२१३११)

चार सम्त

थ्रावस्ती जेतवन'''।

भिश्चलो । चार अन्त है । कोन से चार ? (१) सरकाय-अन्त, (२) सरकायसमुदय-अन्त, (१) सरकायनिरोध-अन्त, क्षीर (४) सरकायनिरोधगामिनी-प्रतिपदा-अन्त ।

सिक्षुओं । सरकाय-अपना क्या है ? कहना चाहिये कि यही पाँच उपादान-स्कम्भ । क्षीन से पाँच ? यह जो रूप उपादान-स्कम्भ । भिक्षुओं । इसे कहते हैं 'सरकाय-अस्प' ।

भिक्षुओं। सिकायसमुदय-अन्त क्या हे? जो यह तृष्णा, पुनर्यन्म करानेवाकी, आनन्द और राग के सायवाकी, वहाँ वहाँ क्यांट केनेवाकी। जो यह, काम-नृष्णा, भय-नृष्णा, विभय-नृष्णा। निक्षुओं। इसी को कहते हैं 'सकायसमुदय-अन्त'।

भिक्षुणी ! सरकाय-निरोध-अन्त पया है ? वो उसी तृष्णा से बैराग्य-यूर्वक निरोध = त्यारा = प्रति-नि सर्ग = मुक्ति =अनारूय । भिक्षुणी ! इसी को कहते हैं 'सत्काय विरोध-अन्तः ।

सिक्षुओ । सरकाय-निरोधनाप्रिनी प्रतिपदा-अन्त क्या - है । यही आर्थ अप्टाङ्गिक सार्ग, सन्यक दृष्टि सम्पक् समाधि । शिक्षुओ । इसी को कहते हैं सरकाय-निरोधगामिनी प्रतिपदा-अन्त ।

मिक्षुओं <sup>†</sup> यही चार अन्त हैं।

#### § २. दुक्ख सुच (२१ ३. १ २)

चार आर्थेलस्य

श्रावस्ती'''र्जतवन '' ।

भिद्युको । मैं तुर्म्हे बु ख, बु खसमुदय, हु खनिरोध और हु खनिरोधनामिनी प्रतिपदा का उपदेश कर्षेगा। उसे सुनो ।

भिक्षको । दु स क्या है ? यही पाँच उपाटान स्कन्ध ।

भिक्षुओं। दु लसमुद्य क्या है १ जो यह तृष्णा ।

मिश्रुओ ! टु खनिरोध क्या है ? जो उसी तृग्णा से वैरान्य-पूर्वक निरोध ।

मिक्षुओं ! हु खनिरोप्रसामिनी प्रतिपदा क्या है ? यही आर्थ-अप्टाद्विक मार्स ।

# § १० सम्ङासुच (२१ २ ५ **१०)**

#### महित्य-संज्ञा की भावता

शाबस्ती जेतवम ।

सिद्धानो ! भनित्य संज्ञा भी भावता करते में सभी कामराग रूपराग, सवराग और भविषा हर वाती है। सभी शहरूर आर भनिमान समुक तह हो जाते हैं !

पिश्वमा । जैसे शरम्बाक में कृषक करते हुछ में बोतते हुये मजी बड़ जूम की प्रिवन्ति करते हुय बोतता है बेसे ही मिह्नुमा ! बांधिय संज्ञा की मादना करने से सभी कामराग स्पराग सपराग निकार तक कांकर और विस्तान किन्द-शिक्त हो जाने हैं।

सिहुको | बैसे प्रमावको साल को गड़ स्वप्ट पकक कुमर ककर कोक्स कर फैंक देता है। तिहुको | देसे ही स्वतिकार्गका कर्म प्रावण करने से साली कालगात किन्न नित्त हो सार्वे हैं। तिहुको | बैसे किमों साल के गुण्कं की कर्मों कर साले स उवसें करों सानी साल गिर पूर्वे हैं। निक्कों | बैस की स्वतिकार्यकों के नावण करने से सानी कालगात किस तिक हो सार्वे हैं।

मिश्रुको ! जैसे क्टागार के सभी करण कुट की ओर ही जाते हैं कूट की ओर ही हाते हों है

भीर कृत ही बनका प्रधान दोता है । मिश्रुओ ! मैश ही भनित्य-मैशा की धावना ।

मिह्नजो ! कैसे सामी शुक्र-शर्म्यों में काह्यानुसादी उत्तस समझी जाती है ! मिह्नजो ! वसे ही सिह्नजो ! को सावजा !

मिश्रुभी | कसे सभी साम गर्न्सों में छाछ क्ष्म्यून उत्तम समझा आवा द । मिश्रुनो । वैसे ही अनिन्य मेना की मावना ।

मिञ्चको ! बैसे सभी पुष्प-गन्या में सुद्दी बचम समझी बाती है ! सिञ्चको ! बैस ही व्यक्तिय

र्सद्यानी भावनाः ।

मिछुको | कैसे छाटे ओर्ट राजा नभी सक्दारशी राजा के माधीन रहते हैं और प्रक्रवर्ती राज्य बनका प्रवास समझा जाता है ! निक्कुको ! कैसे ही अनियन्सेका की भाषणा ।

मिश्रुको | बसे सभी साराजा का प्रकास बण्युसा के प्रकास का सोकहर्यों हिस्सा भी नहीं होता है भार बण्युसा साराजों में प्रकास सारा करता है। मिल्लुओ | वैसे ही विविध्य-संद्वा की भाववा | |

मिश्रुमी ! बैसे सरक्षाक में वात्रकों के इट को में आकास के निमंख हो जाने पर यूर्व डमकर माराघ के यानी अन्यकार को डाग्रा अन्यक्षा है चलार है आर कामित होता है। सिश्रुमा ! देने ही माना कहा की आवना करने से अजी कामराग कपराग अवराग और बविधा हट बाडी हैं। सभी अर्चनार और क्षितमान सर्युक नक्ष हो जाते हैं।

मिश्रुओं ! अतिरच-संज्ञा की जैसे मानवा जार जन्त्रास करने से सामी कामराग् समुद्र कप

को बाते हैं १

ंबर क्या है नद्र क्या की अल्पिति है वह क्या का अस्ता हो क्या है। वह बेहना । वह संज्ञा । यह मंस्कार । वह विकास । — सिद्धको है हम तरह अनिक-संज्ञा की सावना और कानाम करने से सभी कामराण सम्बद्ध नतः हो अते हैं।

> पुष्पवर्गं समस मन्द्रिमगण्यासक क्षमास ।

दोव और हुटकारा को जथार्थेत- जानता है, इसी ये वह स्त्रीतापत्र होता है, वह मार्ग से च्युत नहीं हो सकता, वह परमञ्जन को अवस्य प्राप्त करेगा।

§ ८. अरहा सुत्त ( २१. ३. १. ८ )

अईत्

श्रावस्ती'' जेतवन ''!

सिक्षुओं। क्योंकि निश्च इन पॉच उपाडान-स्टम्बों के समुद्रय, अस्त होने, आस्ताड, होप और युड्यार को यथार्यतः जान अपादानरहित हो विम्रुक हो जाता है, इसी से यह अईत = श्लीणाश्रव = इस्त्रवर्षवास समास कर टेनेवाला = इनतुलय = आसमुक = अनुप्राप्तसवर्ण = अवग्रधन जिसके श्लीण हो गर्ने हैं = परमाणन से विम्रुक कहा जाता है।

§ ९. पठम छन्दराग सुत्त (२१.३ १ ९)

छन्डराग का स्थाग

थावस्ती 'जेतवन ।

मिक्षुको ! रूप के मित को तुम्हारा छम्ब्≔रला≈निन्=नृष्णा है उसे कोद दो ! इस सरह बह रूप प्रदीण हो जायता, उध्कित्रसूक, विर कटे लाव के ऐसा, मिठाया हुआ, भविष्य में को उस नहीं सकता। वैदना . सज्ञा , सरकार .. विज्ञान के मित ।

६ १०. दतिय छन्दराग सन्त (२१ ३ १ १०)

छन्दराग का स्थाग

श्रावस्ती जेतवन ।

भिक्षुकी। रूप के प्रति जो तुरहारे छन्द=राग≔निद≔तृष्णा, उपाय, उपायान, चित्त का अधिग्रान अभिनिवेदा, अनुवाय हैं उन्हें छोड़ दो। इस तरह वह रूप प्रहीण ।

वेदना , सज्ञः , संस्कार , विज्ञान

अस्य वर्ग स्वमान

# हु ३ सम्बन्धाय सुन्त (०१३१३)

#### सरकाय

थायस्ती 'खेतवन ।

विश्वभी ! में दुग्हें सरकाय सत्तावसमुद्दयः व्यक्तावनिरोधः और सत्तावनिरोधगामिनी प्रतिपद्दां का उपवेश करेंगाः ।

#### [प्रवर ]

# ६ ४ परिक्लेय्य सूच (२१ ३ १ ४)

#### वरिष्ठेय क्रम

भावस्ती जेतवन, ।

मिहनो | में तुम्दें परिशेष धर्मों का उपहेश करूँ मा परिशा का भीर परिशासा का । सुनी । मिहनी | परिशेष कार्य केंग्र हैं ? कर परिशेष कार्य है बेर्ना संख्या संस्कार विद्यान परिशेष कार्य है । सिहनो | इस्त्री को परिशेष कार्य कर्मा है । मिहनों | परिशासना है ? शास-अब है स्कार सोह-अब । सिहनों ! इसी को परिशास करते हैं ।

ा परिवार प्रस्त के प्रतिकार पुरस्क करा है \* कार्र के सा सायुष्पान इस नाम और सीक्ष के हैं— मिस्रुकी ! वरिवारत पुरस्क नया है \* कार्र के सा सायुष्पान इस नाम और सीक्ष के हैं— मिस्रुकी ! इसे कार्त हैं परिक्राता प्राक्त ।

# **६५ पटम समग्रसच (** २१३१५)

#### ्पाँच उपादान स्कन्ध

भाषकी डेतवन ।

मिश्चमो ! पाँच वपावाम-स्थम्ब है । कीन से पाँच ! को यह स्थय-अपावान-स्थम्म ।

सिक्क्षमो | को असम्य वा आक्रम हुन पाँच वपाहान-कन्यों के भारवाद होण जांर कुरकार को नव्यर्थका नहीं भागते हैं । जानते हैं वे स्वयं द्यान का साम्राज्यार कर द्यान को प्राप्त हो बिहार करते हैं।

# 5 ६ द्वतिय समण स<del>ुच</del> (२१ ३ १ ६)

#### पाँच उपादाश स्कल्य

भावस्ती जेतवन ।

सिह्नुको [ को समझ का माह्य वृत्त पाँच उपावास-सम्बंधि संसुवय, सस्त होते, आस्ताह, दोच चीर सुरकारा की प्रवार्थना नहीं जानते हैं ; कामते हैं, वे स्वयं जान का साहास्त्रार कर ।

# इ.७ सोवायम सुच (२१ १ १ ७)

कोतायक को परमदान की प्राप्ति

भावली जेतवन ।

मिशुजी । क्वांकि कार्वकाशक इन गाँच ब्यायान-स्कर्तों के समुद्रव जस्त दीने, भास्तार

द्रोप ओर युश्कारा को यथार्थेवः जानता है, इसी से यह स्वोनापत्र होता है, यह सार्ग से च्युत नहीं हो सकता, यह परमझान को अवश्य प्राप्त करेगा।

§ ८. अरहा सुत्त ( २१. ३. १. ८ )

अर्दन

थावस्ती'' जेतवन '।

िमुओ । क्योकि निश्च इन पाँच उपाटान-स्कन्धों के समुद्रव, अस्त होने, आत्याद, दोप और पुटमारा को यथायाँ जान उपादानरहित हो विमुक्त हो जाता है, इसी से यह अहंत् = श्लीणाश्च = महत्त्वपर्यवास समास कर केनेवाला = क्रकुलय = भारमुक्त = अनुमासनदर्थ = भवयन्थन जिसके श्लीण हो गरी हैं = प्रसानात से विमुक्त कहा जाता है।

# § ९. पठम छन्दराग सत्त (२१,३ १ ९)

#### छन्दराग का त्याग

थावस्ती ' जेतवन ।

मिक्षुओ । रूप के प्रति को तुम्हारा छन्छ=हागा=निन्छ=तृष्णा है उसे छोद दो । इस तरह वह रूप प्रदोग हो जायाा, उच्छिक्स्यूछ, सिर कटे ताद के ऐसा, मिडाया हुआ, भविन्य में जो उन नहीं सकता। बेदना , सङ्ग्रा , सरकार™, विज्ञान के प्रति ।

६ १० द्वतिय छन्दराग सुन्त (२१ ३ १ १०)

# छन्दराग का त्याग

श्रावस्ती जेतवन '।

भिक्षुओ । रूप के प्रति जो तुरहारे छन्द⇔रागा≔तीन्ट=नृष्णा, उपाय, उपादान, वित्त का अधिष्ठान अभिनिवेदा, अनुदाय हैं उन्हें छोड़ टी। इस तरह वह रूप प्रहीण ।

वैदना , मज्ञा , मस्कार , शिज्ञान ।

थन्य वर्ग समाप्त

# दूसरा भाग

t

# धर्मकथिक वर्ग

# § १ पटम मि**क्सु मुत्त** (२१३२**१**)

### भविधा क्या है ?

भाषस्ती जेतवग ।

तम कोई भिष्ठ कहाँ भगवान्थ थकाँ आधा और भगवान् का अभिवादन कर एक बोर कि गया।

्क सार बैंड इस शिक्षु ने सरावाद से यह कहा "अन्ते | कोग अविद्या सविद्या' कहा करते हैं। मन्ते | अदिद्या क्या है | अविद्या कैसे होती है | सिद्ध | कोई अञ्चल्यकान कप को नहीं जानता है कप के समुद्दय को नहीं बानता है कप के

सिन्तु ! क्षीड् अहाळ्युक्तकक कर को नहीं ज नदा ६ कर के स्पुत्तर का नहा बानदा ६ कर क मिरोघ को नहीं जानदा है, कर की निरोधमा मिनो मिरोपदा ( माग ) का नहीं बानदा है । बेदना को । मोहा को । सेरकार को ; विज्ञान की ।

वद्ताका । सञ्चाका । सरकार का ; । वज्ञान का र निश्चा द्रानी को कहते हैं शक्तियाँ। द्रानी से अधिया दोती दें।

# **६२ दुतिय मिम्स्यु सुत्त (२९३**२)

### विद्या क्या है ?

भाषस्ती जैतयम । एक ओर बढ़ उस शिक्षने भगवानु को कहा "असी ! कोग "विका विवा कहा करते हैं।

क्षण्य ! विद्या पदा है ! विद्या क्षिण्यन होती है !" मिद्रा ! लोड परिकार कार्यकारक रूप को वागणा है जय के महादूच का । रूप के निरोध का जर को निरोधनात्रियों होति होता का जालता है ।

वेदना । संज्ञा । संस्थार । विज्ञान । सिक्त ! इसी को विकास हमें हैं इसी से विका दोनी हैं।

# 🤋 पटम कथिकः शुक्त (०१ ३ २ ३)

### कार प्रमणिक कैस शाहा है

आपार्ला जनपन ।

कारणाः यह जीर वेंद्र यम सिशु में भगवामुका कहाः 'अला है लीग 'पर्मेडपिक 'वर्मेडपिक कहा कार है। सभी ह चीई पर्मेडपिक पैर्मे होता है है

भिन्तु । बहि होई कर से विशेषकरियान करन भार उसके निरोध क विकास स्वयंत्रा करे हो जनसम्बद्धिक प्रमासिक वहा आ सहस्य है । शिन्तु । बहि कोई त्या के विश्वकरियान भीति दिस्ता के निर्दे क्लामिक शोध उसने में कर वर्षावृश्यक्रियान करा का सकसा है । शिन्तु । वर्षिक से कर क निर्वेद≕क्षेरान्य और निरोध से उपादानरहित हो विसुक्त हो गया हो तो कहा जायगा कि उसने अपने देखते ही देखते निर्वाण पा छिया।

वेदना "। संइत्" । संस्कारः । विज्ञानः ।

§ ४. दुतिय कथिक सुत्त (२१३ २४)

कोई धर्मकथिक कैसे होता ?

थावस्ती…जेतवन

सन्ते । कोई धर्मकथिक केले होता है ? कोई धर्मानुधर्मप्रतिपत्त कैसे होता है ? कोई अपने देखते ही देखते निर्माण केले प्राप्त कर लेता है ?

[ ऊपर जैसा ]

§ ५. बन्धन सुत्त (२१ ३. २. ५) -

ਬਵਬਾਜ

भावस्ती जेतवन ।

मिश्रुओं। जङ्ग = प्रथक्तम रूप को आत्मा समझता है, रूपवान् आत्मा है ऐसा समझता है, आसा रूप है, या रूप में आत्मा है ऐसा समझता है। सिश्रुओं। कहा जता है कि यह अज = प्रयक्तन रूप के बन्धम से विधा है, वाहर और भीतर गाँठ से जकड़ा है, तीर को नहीं देख पाता, पार को देख पाता, पार को देख पाता, यह ही उत्पन्न होता है, यह ही अतता है और वह ही इस लोक से परलोक को अता है।

वेदनः । संज्ञाः । सस्कारः । विज्ञानः ।

सिञ्चली! परिव्रत आर्वेश्रायक कर को आरमा वहीं समझता है, क्यवान आरमा है ऐसा नहीं समझता है, जातम में कर है था कर में आरमा है ऐसा नहीं समझता है। मिझलो। कहा जाता है कि पर परिवर्त आर्येशायक क्य के बन्धन से नहीं बेंधा है, यहर और सीतर गाँठ से नहीं जकहा है, चीर को देखतेगाका है, यहर को देखतेबाला है। वह हु का से मुक्त हो गया है ऐसा में कहता हैं,

वेदना । सङ्घाः । सस्कार । विज्ञान ।

§ ६ पठम परिम्रचित सुच (२१ ३ २.६)

रूप के यथार्थ ज्ञान से पुनर्जन्म नहीं

· आयस्ती जेतलन '। मिशुओं 'क्या द्वम क्य को 'यह मेरा है, यह में हूँ, यह मेरा आल्मा है' ऐसा समझते हो ? नार्मिकते

ठीक है, मिक्षुओ ! तुमहे चेखा ही यथार्थंत प्रज्ञापूर्वंक समझ लेना चाहिये।

षेदनः ,सङ्ग ,सस्कार ,विज्ञान ।

इस प्रकार देख और जान धुनर्जन्म को नहीं प्राप्त होता है।

§ ७. दुतिय परिम्रचित सुत्त (२१ ३ २. ७) रूप के यथार्थ शान से पुनर्जन्म नर्हा

थावस्ती जेतवन ।

िठीक उत्पर जैसा 🕽

# \$८ सम्जोजन सुच (२१३ २८)

### संयोजन

धायस्ती 'सेतयन 1

सिम्हानो ! संयोजनीय धर्म और संयोजन के विषय में उपहेना करूँगा । जसे सुनी ।

मिश्रमी ! संघे अनीय धर्म कीय से हैं और संघोतन पता है है

मिल्लमो ! रूप संयोजनीय धर्म है, को बसके मति छन्द=राग है यह संयोजन है।

बेरना । संशा । संस्कार । विज्ञान ।

मिश्रुमी । यही संयोजनीय चर्न और भंदीजब कहकाते हैं।

### 💃 ९ उपादान सुच (२१ ३ २ ९)

#### उपादान

भावस्ती 'जेतवन ।

मिह्नुको । उपादानीय कमें और उपादान के विषय में अपदेश करेंगा। उसे सुनी ''। मिह्नुको ! कप उपादानीय धर्म है, और उसके मित्र को कुन्दरात है वह उपादान है।

केरबा । मंत्रा । शंकात । विकास '।

### डु१० सी**ल सुच (२१ ३ २ ९०**)

### शीक्षयाम् के मनन-योग्य धर्म

एक समय मायुष्पान् सारिपुत्र जीर मायुष्पान् महाक्षोद्वित वाराजसी के पास ऋषिपतन स्राताय में विचार करते थे।

तव कानुष्पात् महाकोद्वित संध्या समय प्यान से वट बहाँ आयुष्पात् शारिपुत्र ये नहीं गर्ने । "" वह बोक "कान्यस सारिपुत्र ! चौकवाप मिल्ल को किय वर्मी का बीक स मवद करना वादियें ?"

अबुस कोडिए ! सीकवान शिक्ष को शैक से सवन करना चाडिये ।कि—मे पाँच कपादान स्वन्य मनिल प्रत्य सेपा प्रपान बाव वाप पीवा परावा सुद्धा, सन्य और अवस्थ हैं।

सीन से पाँच हैं को बह कप जमायन स्कार । स्युक्त है ऐसा हो सरवा है, कि श्रीकमाण सिक्ष पाँच उपादान-स्कार्यों का देसा समय कर क्षेत्रापति के स्कार सामाज्य का के।

अक्षर सारिएक ! कोलापस मिस्र को किन वर्सों का धीक से शवन करवा चाहिने हैं

बाहुए कोहित | कोरायक जिहु को भी नहीं औक से अवन करना नाहिये कि वे पाँच वपाहान-रक्षण्य बविरदः । आहुए | वां सकता वे कि कोरायक जिहु देखा अनन कर सक्रवामानी... जनगामी

भाईत् के फल का साक्षानकर कर के।

बाहुध सारिद्रक ! कहेत् को किन वर्मी का ठीक से मनव करना चाहिये ? बाहुस कोहित ! कहेत् को मी गड़ी सनव करवा चाहित कि—ये गाँव वपादाव रमन्य अनिव हुन्क रोस हुर्गन्य बाद पाप पीड़ा जनारम है। बाहुस ! बहुर को इक बीर करना वा किने का नास करना नहीं रहण है इन पर्मी की मानवा का जनवास पार्टी सुवपूर्णक विदार करने तथा व्यक्तिमाद कीर परीक्ष रहने के किसे होता है।

# ६ ११. सुतवा सुत्त (२१ ३. २ ११)

# श्रववान के मनन योग्य धर्म

घाराणाओं : :

[ 'बीलवान ' के चप्रले 'धतवान ' करके जपर टीमा ज्या का लो ]

s १२. पठम कृष्य सूच (२१ ३ २ १२)

### खहंकार का स्थान

श्रायक्ती '''जेनसन ।

त्तव, शालुप्पाम् करव ' एक ओर बैठ, भगवान् से योडे, 'भन्ते ! क्या जान और देख इस विज्ञानवाडे वारीर मे तथा चाहर के सभी निमित्तों में अर्हकार, समझार, मान और अनुसाय गर्रों होते हैं ?

कप्प | जो कुछ क्र-अतीत, अनागत —है सभी न मेरा है, न में हूँ और न मेरा आतमा है। इसे जो यथार्थेत प्रज्ञाक्ष्येक देखता है। येडना । संज्ञार । विज्ञान ।

कर । इसे ही जान ओर देराकर इस विज्ञानवाले वारीर में स्वया वाहर के सभी निमित्तीं में भर्देकार : नहीं होते हैं।

# ६ १३. द्विय कप्प सुत्त (२१. ३. २ १३)

### अहकार के त्याग से मुक्ति

भन्ते । एया जान और टेस इस विज्ञानवाले जरीर में तथा वाहर के सभी निमित्ती में शहेकार, मर्मकार, मान और शहाय से रहित यन, इन्द्र से परे हो जानत और सुविसुक होता है।

कर्य जो कर-अतीत, अनुगत — दे सभी च मेरा है, च में हूँ और च मेरा आहमा है। इसी को समार्थत अलायुर्वक देख केने से कोई कराव,नरहित ही बिस्तक हैं।

धेरना । सजः । सरकार । विद्यान ।

वन्ता । सद्या । सरकार । ।ववात । फच्य ! इसे ही जान ओर देख इस विद्यासवाले वारीर में तथा याहर के सभी निमित्ती में अहकार मर्मकार, मान और अञ्जया से रहित यन, मन इन्द्र से परे हो, शान्य और खुलिमुक होता है ।

### धर्मकथिक वर्ग समाप्त

# तीसरा भाग

### क्षविचा वर्ग

### **ह १ प**ठम समुद्वयमम सुच (२१ ३ ३ ९)

### मविद्या क्या है ?

आवद्या क्या कः भावस्या जेनसम्बद्धाः

अरवस्याः अरवस्याः । तव कोई सिद्धा कहाँ आयाक् के वहाँ आया श्रीर नगशन् का समिवादन कर एक और तैक गया। एक और बैठ सर सिद्धा में मगशन् को कहा "सम्मे ! श्रीण 'स्विचा अविचार कहा करते हैं। अस्ते ! कविचा नग है ! कोई अविचा में कैंस जनता है !"

निम्हा के क्षात्र व्याप्त के का प्रवेश के हैं। मिह्न क्षेत्र = द्वात्र व्याप्त सहित्यकों (=डरेन्ड होना जिसका स्वमाय है) क्षा की सह्यवस्थाने के ऐसा तत्त्वा नहीं जनता है। व्यापता क्षा को व्यापता के ऐसा तत्त्वा नहीं जानता है। सहयक्ष्म व्यापता कर को सह्यवस्थान क्षा के ऐसा वत्त्वा नहीं जानता है।

ाक्ष्यकासञ्ज्ञदश्याक्षयमाक्ष्यक पूरावल्यकः नदावानकाक्षः। सञ्ज्ञदक्षमाविद्याको ।संज्ञाको ।संदर्शस्यो ।विज्ञानको ।

निम्न 1 इसी को 'अविद्या' कहते हैं। इसी से कोई व्यक्तियां में पहला है।

इस पर, उस निष्ठा ने भगवालु को कहा "भम्ते ! कोग 'विचा विचा' कहा करते हैं। भन्ते ! विचा क्या है ! किसी को विचा कैसे होती हैं !"

मिम्र । परिवृत आर्थकावक समुद्दवमाँ कर को समुद्दवमाँ के ऐसा राज्यतः साकता है। स्वय वर्मों कर को व्यवसार के ऐसा राज्यतः संगतः है। समुद्दव-व्यवसाँ कर को समुद्दय-व्यवसाँ के ऐसा राज्या करता है।

वेदमा । संदर<sub>ी</sub> श्रीरकार । विकास ।

मिद्ध ! पही विचा है । किसी को विचा गैसे ही होती है ।

### हु २ द्विय सञ्चरमध्य (२१ ३ ३ २)

मधिचा पपा है ?

एक धनव आयुष्मान् सारियुव कीर आयुष्मान् महाकोष्ट्रित वाराणसी के पास ऋषिपतन सुगदाय में बिहार करते थे ।

व प्रभाग समय व्यवस्थात् अहात्कीहितः अनुस्मान् शारिपुत्रः हे बोके "कानुस्म सारिपुत्रः है कांग के सेमा अभिवारं कहा करते हैं । जनुत्रः । विश्वसः नवा है । कोई अभिवारं में कैसे पहचा है है" असुन्त । सम्प्रास्त्रका समुद्रकारों कर की । [करर केंग्रा ]

### § २ वर्षिय सद्यदर्थं पस्म शुच (२१ ३ ३ ३)

विद्या क्या है ?

मंग्पियतम झूगशुष्य "। मादुम }क्षोय 'विचा विचा' वदा करने हैं। व्यक्षम } विचा क्या है । वोहे विचा की कान बरवा हैं।

```
२१. ३, ३ ८ |
```

### ८. पठम कोडित सत्त

190

```
भावस । पण्डित भावेशायक समवयधर्मा रूपको 😶
                          जिपर जैसाी
```

§ ४. पठम अस्साद सुत्त (२१. ३. ३. ४)

अविद्या क्या है ?

ऋषिपतन सृगदाय ' 'आयुस सारिपुत्र | लोग 'अविद्या, अविद्या' कहा करते हैं । आयुस । अविद्या प्या है ? कोई

श्रविद्या में कैसे पदला है १ बाहुस । अङ्ध्यकजन रूप के आस्वाद, दोप और मोक्ष को ययार्यतः नहीं जानता है। वैदना के..., संज्ञा के. ., संस्कार के . , विज्ञान के ।

भावस । यही अविद्या है । ऐसे ही कोई अविद्या में पहला है ।

§ ५. दृतिय अस्साद सुत्त ( २१. ३. ३. ४ )

विद्या क्या है ?

म्दिपतन सृगदाय ।

अाबुस सारिपुत्र । लोग 'विद्या, विद्या' कहा करते हैं । अ बुस ! दिशा क्या है …! आयुत्त । पण्डित आर्वश्रावक रूप के आस्वाद, दोप और मोक्ष की यथार्थत जानता है। षेदना के सजा के ? सस्कार के विज्ञान के ।

शाहस । यही विका है ।

६६ पटम समुद्य सुत्त (२१३ ३६)

श्चिता

ऋषिपतन सगदाय ।

आजुल । अज्ञ = पृथक्जन रूप के समुद्य, अस्त होने, आस्वाद, दोप और मोक्ष की प्रधार्थतः नहीं जानता है।

चेदना , सङ्घा , सरकार , विज्ञान ।

जानुस । यही जविद्या है।

8 ७, दतिय सम्रदय सुत्त (२१ ३, १ ७)

विद्या

ऋषिपतन सृगदाय ।

भावस ! पण्डित वार्वशावक रूप के समुद्य, भरत होने, भारवाद. दोप और सोध को पथार्थंत जनता है।

वेदना , संज्ञा , सस्कार , विज्ञानः । मायुस ! यही विद्या है।

§ ८, पठम कोहित सुत्त (२१ ३.३.८)

सविद्या क्या है १

प्रिपितन मृगदाय । तव, सारिएल संध्या समय । एक भोर पंड शालुप्पान् सारिजन कायुप्पान् महाकोहित से बोटे 'बालुस महाकोहित ! कोस 'करिया शरिया' कहा करते हैं । शालुस ! अधिया क्या दें ! '

भाषुता । शत = पूरव्यन का के भारताह होच भार मोझ की बसार्यता नहीं भानता है।

बेद्या पिञ्चान ।

भायुस ! यही भविचा है।

इस पर धारुप्पाण् मारिषुत्र धारुप्पाण् कोहित स बोक " बाबुस ! विद्या वया है !" स्पन्नस ! भारताह इत्तर सार गोश को यमार्थतः वानता है । यही विद्या है ।

### ह ९ द्विय को द्वित सुत्त (२१ ३ ३ ९)

विशा

ऋषियतम सगदाय ।

शत्रप काडित । समिया प्या है है

काबुत ! शह = प्रवस्त्रव रूप के समुद्रव अरत होने आस्वाद, दोष और मोझ को परार्थता वर्ती कारता दें ।

म बुस ! यही भ वेचा है।

इस पर, भाषुप्पाण सारिपुत्र भाषुप्पाल सहत्वोहित से बोले आयुत्त कोहित! विचा क्या है!

भा<u>त्य !</u> परिवर्त आर्यज्ञावक कृत के श्रमुद्दय अस्त होने, आरबाद दोप और मोझ को वजावैतः

मानदा है। शक्ता वादी विद्या है।

६ १० त्रतिय कोद्रित द्वर्ष (२१ १ **१ १०**)

विचा और शविदा

क्षरियदन हारहाय । अञ्चल । सन् = एक्स्पन कर को नहीं बनता है कर के त्सुवय को नहीं कानता है, कर के विरोध को नहीं अनता है कर के निरोधना भी मार्ग का नहीं बनता है।

वेदव विग्रन्।

बाहुस । यही सविचा है ।

स जुस ! परिश्वत कार्यकायक कर की जानता है, कर के सञ्चर को जानता है, कर के विरोध की स नता है, कर के निरोधनाओं सर्च की कांचता है !

नेदला जिल्ला । आवद्या वही विशासी।

विद्या वर्षे समाप्त

# चौथा भाग

# क्रक्कल वर्ग

# ९१, इत्यक्त स्च (२१, ३, ४ १)

रूप धधक रहा है

श्रावस्ती " जेतवन "।

भिक्षुओं ! रूप धापक रहा है । वेदना ''! नज़ा' । नक्कार । विज्ञान वधक रहा है ।

भिद्धकों ! पण्डित आर्यश्रायक रूप की ऐत्या जान, रूप में निर्धेद करता है, बेदना से॰ , संज्ञा से , सरकार में , जिज्ञान में ।

निर्वेद करने से शग-रहित हो जाता हं पुनर्जन्म को नहीं प्राप्त होता।

§ २. पटम अनिच सुच (२१ ३. ४. २)

थनित्य से इच्छा हटाओ

थावस्ती जेतवनः ।

ं भिक्षुओं । जो अनित्य है उससे सुन्हें अपनी इच्छा छटा केनी चाहिये । सिक्षुओं ! क्या अनिक्य है १

रूप अनिस्य है, उससे तुन्हे अपनी इच्छा इटा लेनी चाहिये। येदना '। सद्धा' । सरकार''। पिदान'''।

भिक्षुओ । जो अनिस्य है उससे तुरहे अपनी इच्छा हटा छेनी चाहिये ।

§ ३-४. दुतिय-तिय-अमिच्च सुत्त (२१ ३·४ ३-४.)

श्रतिस्य से सन्दर्शग-इद्याओं 🕝 🤭

थावस्ती"'जेतवन '।

मिधुओ ! जो अनित्य है उससे तुम्हें अपना राग छन्दराग हटा छेना चाहिये ।

§ ५-७. पटम-दुतिय-त्तिय दुक्ख सुत्त (२१ ३ ४ ५-७)

दुःख से राग हटाओ

धावस्ती " जेतवन""।

मिश्चको ! जो हु\*ख है उससे सुम्हें अपना छन्द (≔हच्छा) , राग…, हच्छाराग इस हेना चाहिते । पुक्र और येड आहुप्पाण् सारियुक्त कायुष्पाम् महाकोद्वित से बोबे "बाबुस महाकोद्वित ! बीय 'करिया अविधा' कहा करते हैं । आनुस ! जविका न्या है [

भावुस ! अल = प्रयम्भव क्षे आस्ताव, दोव और भीक्ष को सवार्थतः नहीं बानता है। नेदना विद्यात ।

बाबुस ! यही बविधा है ।

इस पर बायुप्पाय सारिपुत बायुप्पाय कीड्रिक से बोछे " बाहुस ! बिया क्या है !" बाहुस !ं बारवाव होप बीर मोछ की बयार्वतः सावता है । यहि विचा है ।

### ६९ द्विय कोहित सुच (२१ ३ ३ ९)

### विद्या

क्रिपतन सगराय ।

मञ्जूस कोहित ! सविधा परा है ?

भातुस ! सता = प्रवक्तन क्य के समुद्रव अस्त होने आस्ताह दौप और भीश की प्रधार्म नहीं कारता है ।

कानुस ! पड़ी अविद्या है।

इस पर, कायुष्मान् सारिपुत्र बायुष्मान् सहाकोहित से बोक्ने " बाबुस हो विस्ता करा है ?

अपनुष्य । पश्चित साथैमानक कम के समुद्रम अस्त दोने, कास्त्राद, दोष और सोध बावता है ।

आवस ! पही किया है ।

### ऽ १० ततियको दित शत्त (२१ ३ ३ १

### विद्या और अविद्या

क्षिपियतः स्वाहायः । भाष्यः । सङ् = प्रयम्बन कम को नहीं बाक्सा है कप के निरोध को नहीं बाक्सा है कप के निरोधयाओं असी को नहीं =

> वेदनः विश्वन । ध्यत्रस्य । यही अविद्या है ।

ध्यद्वत । पही अभिन्न है ।

म चुस | पणित आर्यधाणक कप की भागता निरोध को कानदा है, कप के निरोधसारी सार्ग को स्था

वेदना' विशास । आयुत्त ! कड़ी विशा है।

मविद्या ह

# पाँचवाँ भाग

### स्प्रि वर्ग

# ९१. अज्झत्तिक सुत्त (२१.३ ५ १)

### अध्यारिमक सुग्र-द ख

श्राधस्ती ' जेतचन ।

मिधुओं। किसके होने से, किसके उपादान से आध्यास्मिक सुख-दु स उत्पन्न होते हैं ?

भन्ते। हमारे धर्म के श्रृण तो अगवान् शिर्टि। मिश्चको ! रूप के होने ने, रूप के उपाटल से आध्यास्मित्र सुरा-दुख उरपल होते हैं। बेदना के होने से । संज्ञा । स्थ्यार । विज्ञात ।

भिक्षुओं। तो मया समझने हो, रूप नित्य ई या अनित्य १

भन्ते। अनिस्य है। जो अनिस्य है यह दृश्य है या सुख १

भन्ते । द्रस्य है।

को अनित्त, हुन्स और परिवर्तनशीरू है उसका उपाटान नहीं करने में क्या आध्यासिक सुख-इन्ह उत्पन्न होंगे ?

नहीं भन्ते।

येदनाः । संज्ञाः । सस्कारः । विद्यातः । इसे जान और देखः, धुनर्जन्य को नहीं बास दोता है ।

# § २. **एतं मम सुत्त** (२१.३ ५.२)

### 'यह मेरा है' की समझ क्यो !

थावस्ती जेतवन ।

भिञ्जलो ! किसके होने से, किसके उपादान से, किसके अभिनियेश से कोई ऐसा समझने खगता है कि—मह मेरा है, यह में हूं, जीर यह मेरा बास्मा है !!

धर्म के मूल भगवान ही हैं।

मिश्रुओं ! रूप के होने से, रूप के उपायान से, रूप के अभिनिवेश से कोई पैसा समझने खगका है कि:—पद भेरा है, यह में हूँ, और यह भेरा आस्मा है । बेदना के होने से । सज्जा । सस्कार । पिजान ।

मिश्रुओं । तो क्या समझते हो, रूप नित्य है या अनित्य । इसे जान और देख . प्रनर्जन्म को नहीं ग्रांस होता है।

48

§ ८-१० पठम-बुविग-धिवम मनच सुच (२१ ३ ४ ८-५०)

बातास्य से शास क्षत्राको

धायसी जेतका ।

मिञ्चनी ! यो नवाध्य है उससे तुम्हें अवना सन्द राग , छन्द्राय इस सेना चाहिने ।

र्रे एउम इन्जपुच सुच (२१ ३ ४ ११)

### यैराग्य-पर्वेष्ट विहरसा

भावस्ती जेतवत ।

भिक्षुको ! अन्तर के मजीवत कुन्नपुत्र का यह वर्ध है कि सदा रूप के प्रति वैतान्य-पूर्वक विहार करें ! वेदना के प्रति । संद्राः । संस्कार । विद्याल ।

इस ग्रजार वैराग्य-पूर्वक विद्यार करते हुने वह कप का जाब क्षेत्रा है वैदना की आण केता है

विद्याय को जान छेता है।

यह कर को बान कर वेदना को विश्वान को बाद कर, कर से प्रक्र हो बाता है। विश्वान से प्रक्र हो करा है। करि बरा सरण लोक परिदेव हुन्छ, हीसँनस्य बीर बरावास से प्रक्र हो बाता है। धनवा प्रस्त से प्रक्र हो बाता है। धनवा प्रस्त से प्रक्र हो बाता है। धनवा प्रस्त से प्रक्र हो बाता है—सेसा से करता है।

<sup>\$ १२</sup> द्विय इस्त्रपुत्त <u>सत्त</u> (२१ १ ४ १२)

अंतिस्थ-यक्ति से बिक्रस्तर

धावस्ती जेनका ।

सिमुको ! भद्रा से प्रवसित हुने कुकपुत्र का यह वर्ष हैं कि कर के प्रति वसित्स-हुद्धि से विद्यव करें । वैदन्य के प्रति । श्रीता । श्रीतान । विद्यान के प्रति ।

काम से मन को बाता है-चेसा में बकता है।

इ. रैने दुक्ख द्वच (२१ ३ ४ १३)

भगारा-विके से विकास

धावस्तीः सेनवन ।

"क्य के मित अध्यान समिद्र से विद्राप करें।

हुन्थ में श्रुष्क हो कता है---पेशा में कहता हूँ।

कुणकुछ वर्षे समास

# पाँचवी भाग

### इप्टिचर्ग

### § १. अज्ञातिक सुत्त (२१. ३ ५. १)

अध्यारिमक सुरा दु.स

अ।यस्ति जैतवन ।

भिद्यभी । विक्ये होने से, स्थिक ठवादान से आध्यापित सुन्यन्तु स उत्पत्त होने हैं १ भन्ते । हमारे धर्म के सम्भाने अभागत से हैं राजा

भित्नुओं! रूप के होने में, रूप के उपाणन में अध्यासिक सुम्पन्तुल उत्पन्न होने हैं। येदना के

होते से ''। सज्ञा''। संस्कार' । विज्ञान '। मिश्रुओं । मो रवा समझते हो, रूप नित्य है या अतिहास ?

भागते । अभिन्य है ।

जी अनिया है यह हु या र पा सुपा है

भन्ते।हुगई।

को असिय, पुराय और परिवर्तनशील है उसका उपादान नहीं करने से क्या आध्यासिक सुख-इन्ह उनक होने o

नहीं सम्ते ।

पेदना '। सङा । मस्कार । विकास ।

एमें जान और देग्य, चुनर्जन्म को नहीं प्राप्त होता है।

§ २. एतं मम सुत्त (२१. ३ ५. २)

'यह मेरा है' की समझ क्या ह

श्रायस्ती जेतवन ।

ारायण । मिंडुकी वित्तवे होने से, किसके उपादान से, किसके अभिनियेश से कोई पेसा समझने रूपता है कि—यह मेरा हैं, यह मैं हैं, और यह सेरा आस्मा है !

धमं के मूल भगवान ही है।

भिश्चको । रूप के दोने से, रूप के उपायान से, रूप के अभिनियेश से कोई पैसा समझने छगदा है कि—गढ़ मेरा है, यह फैं हुँ, और यह मैरा आलग है। बेदना के होने से । सजा । सरकार । विकास ।

मिश्रुओं । सो क्या समझते हो, रूप नित्य है या अनित्य ।

इसे जान और देख , पुनर्जन्स को नहीं श्राप्त होता है। ५१

### §३ एसो अत्तासुच (२१ ३ ५ ३)

#### 'सारमा स्रोक ह' की मिश्याहरि क्यों है

धापस्ती अंतधन ।

मिश्रको ! दिसकं होत से किसक उपादाण सं किससे अभिनिषेश से वैसी मिण्या-टीट (अमिष्या प्राप्ता ) उपपर होती है—को भागमा है वह कांक है को में सरवर गिष्य क शुप क साव्यत = अधिप विवादकारी हो कार्यता !

पर्मे के यस मगवान ही।

मिह्नचो | रूप के होने से पेशी मिल्या-वर्षि करपच हार्सा ई । वैद्वा के हान से । संशा । संस्कार । विद्वाद के होने से ।

मिह्नुको । तो क्या सत्तराते हो क्य वित्य हं था अतिरय । इसे काम कीर तेया प्रसास को नहीं प्रसार होता है ।

# ६ ४ नो भामे सिमा छच ( २१ १ ५ ४ )

न है होना' की क्रिक्सक्ति करों ह

भाषस्तीः 'जतयन 🗥

सिक्रुको | विश्वके दोने से पेटा सिम्बान्दिक उत्तर दोली है—य में दाला व सेरा दाये, व मैं हैंगा व सेरा बोगा:

पर्म के सह सगका श्री।

\_ - (संदुष्पी ) इस्प के दोल से पेसी शिष्पान्तवि उत्पन्न दोवी है । येदवा के दोने छ । संज्ञा । मंददार \*\*! विद्यान के दोले से ।

सिश्चाची ! 'क्य वित्व है या व्यक्तिस्य ।

इसे बाम और देख । तुमर्जन्म को नहीं गास होता है !

# § ५ मि<del>ण्डासुच</del> (२१ ३ ५ ५)

मिच्या-इपि क्यों सपद्म होती है ?

भाषस्ती जंतपन ।

मिल्लो ! क्रिके होते से जिल्हा-दक्षि उपक होती है ?

मन्ते ! वर्ग के सुक मतवान श्री ।

सिक्षणी । कम के दीने से सिम्मानांकि जपना दोशी है। वेदका के 1 संख्या । संख्यार । विकास ।

भिश्चेत्रों १ क्य नित्त है का अभिन्त १ क्ये बाज और वैका अपनेत्रा को नहीं मास क्षेत्रा है।

> {वै सकाय सुर्च( २१ ३ ५ ६ ) सल्काय दक्षि फर्जी होती दें?

धापस्त्री 'खेलपन । सिक्क्रमे । तिलके दोने सं\*\*'सम्बद्धन्ति होती है १ भिक्षुओं ! रूप है होने से ! संस्काय-दृष्टि होती हैं ! चेबका केंग्या संस्काय या संस्काय !! विकास !!!!

भिश्वको । रूप नित्य है या धनिता । १

को जनित्य है । स्वर उसके उपादान नहीं करने से सरकाय-दक्षि उसका होगी ? नहीं भन्ते ।

वेदनाः । संजाः । संस्कारः । विज्ञानः ।

### § ७. अन्तानु सुत्त ( २१. ३. ५. ७ )

### भारम दृष्टि पर्यो होती है ?

मिश्रको । किसके होने सं आका-रिए होती है ?

ं भिञ्जलो । इत्य के होने से ''शास्त्र-रष्टि होती है । वेदना' '। सन्ना' । सस्कार' । विज्ञान'''। मिक्सओं । इत्य निस्य है या अनिस्य '?

जो अनित्य है क्या उसके उपादान नहीं करने से आन्ध-दृष्टि उत्पत्र होती ?

महीं सन्ते । वेदनः । सन्नाः । सन्कारः । पिञ्चन्त

# § ८. पठम अभिनिवेस सुच ( २१ ३. ५. ८)

### संयोजन फर्यों होते हैं ?

श्रापस्ती जेतवन ।

मिक्षुश्री । किल के होने से सबीजन, अभिनिवेश, विविधन्य उत्पन्न होते हैं ?

क्प के होने से '। बेबुना के होने से । सक्ता । सक्कार । विकास के होने से '। मिक्स जो ' कप निल्य है था अनिल्य है

को अनित्य है प्या उसके उपादान नहीं करने ते स्रयोजन उपान धींगे ?

# § ९. दुतिय अभिनिवेस सुच (२१३ ५९)

संगीजन क्यों होते हैं?

श्रायस्ती जेतवन' । [ 'विनियन्य' के अव्हे 'बिनियन्याध्ययसान' करके सारा सुघ ठीक कपर जैसा ]

§ १०, आतन्द सुच (२१ ३ ५. १०)

सभी संस्कार अतित्य और द स हैं

श्रावस्ती:"जेतवन"।

तय, आयुष्मान, आतस्य वहाँ भगवाम् ये वहाँ वाये और समयान् से वोले, ''मन्ते ! सुक्षे मगवान् सक्षेप से धर्म का उपरेक्ष करें, जिसे खुम कर मैं क्लेका एकान्त में आमक्त सपस-पूर्वक परिवास हो विद्वार करूँ।''

### § ३ एसो **ब**चा सुच ( २१ ३ ५ ३ )

#### मारमा स्रोक इ. की मिथ्यावरि क्यों है

alter min e an incatel Anti-

भावस्ती जेतपन ।

तिश्वकी ! किलके होने से फिसके जपानाण से किससे अभिविज्ञेश से येथी मिन्यान्यि (श्रीसम्पा पारमा ) उत्पन्न होती है—को आत्मा है वह कोक है को मैं सहकर मिला ⇒ श्रुव ≈ साक्ष्यठ = मर्विप रिवासयमा हो बार्डिंगा !

वर्मे के मूक सरावात् ही ।

सिह्यों | कर के होने से ऐसी सिन्धा-पष्टि अस्पक होती है । वेदना के होने से । संज्ञाः । संस्थार । विज्ञान के होने से ।

मिश्चमा ! तो क्या समझते हो च्या नित्य है वा मधित्य ? इसे मान मार देखा अनर्जन्य को गई। वास होता है।

8 ४ नो च में सिया द्वच (२१ ३ ५ ४)

न में ब्रोता' की विश्वास्ति क्यों ह

श्चावस्ती' 'जनवन'''।

सिमुक्ती | किसके दोने से थुटी मिण्या-विट उत्तव दोसी है—न मैं दाता न सेरा दाने; न से हैंना व सेरा द्वारा।

धर्म के सुख संयदान ही ।

्र मिद्धारी ! कप के दीमें से पूछी मिल्या-दांडे उत्पन्न होती है । वेदना के दोने से । संज्ञा । मेरकार™। विज्ञान के प्रोमें से ।

रिकासी ! कर नित्य है वा अनिया ।

इसे बान कीर देखां "'प्रनामेंग्य की नहीं मास बोला है।

**६५ मिण्डासच (२१ ३** ५ ५)

गिट्या-रहि वर्गी क्यच होली है ह

भागसी कदमन ।

निश्चमी ! किस्ते होते से निम्मानकि बयस होती है ? अस्ते ! को के सूच भगवान ही ।

सिक्षुमी [क्य के दोने से शिल्पानांति कराय दोशी है । वैद्या के 1 संख्या । संस्थार "! विकास "!

भिश्चभी ! "कप निश्य दे या अनिष्य : ! इसे जान भीर देखां अपार्थमा को गर्दी ग्रास होता है।

{६ एकाम सच (२१ ३ **५ ६** )

सरकाय श्रवि क्यों शाती है ?

भाषाती "अंतर्थन । भाषाती क्रिकेटान से" सम्बद्धान-रक्ति साती है ।

# दूसरा परिच्छेद

# २२. राध संयुत्त

# पहला भाग

प्रथम वर्ग

§ १. मार सच ( २२ १. १)

मार क्या है ?

थावस्ती जेतवन ।

तय, आयुष्मान् राध लहाँ अगवान् वे वहाँ वाये, और अगवान् का अभिवारन करने एक और वैट गरे।

पुरु जोर बैठ, आधुग्मान् राघ सगवान् से बोलें, ''सन्ते ! लोग 'सार, सार' कहा करते हैं । सन्ते ! सार क्या है ?

राज ' क्य के होने से आर होता है, या आरनेवाका, या वह जो सरसा है। राज ! इसकिये, सुभ क्य ही को मार समझो, आरनेवाका समझो, मरता है ऐसा समझो, रोग समझो, फोबा समझो, बाव समझो, पीर रामझो, जो क्य को ऐसा समझते हैं वे औक समझते हैं। येवता । सम्बा ' । सन्कार । विज्ञान ।

भन्ते ! डीक समझने से क्या होता है ?

राथ ! डीक समझने में जैरान्य होता है !

भन्ते ! वैराल्य से क्या होता है ?

राथ ! वैराल्य से क्या होता है ?

राथ ! वैराल्य से नाग-रहित होता है !

मन्ते ! राग-रहित होने से क्या होता है ?

राथ ! राग-रहित होने से क्या होता है ?

राथ ! सम्त-रहित होने से विद्युक्त होता है !

भन्ते ! विद्युक्ति से क्या होता है ?

राथ ! विद्युक्ति से क्या होता है !

राथ ! विद्युक्ति से क्या होता है !

राथ ! विद्युक्त से क्या होता है !

राथ ! व्युक्त सुम क्या होता है ?

ु. २, सत्त सुच (२२.१.२)

आसक फैसे होता है ?

आपस्ती ''क्षेतवन । एक बोर पैठ, आयुष्मान् राघ मगवान् से बोळे, ''मण्डे ! कोग 'सक्त, सक्त' कहा करते हैं । मन्ते । कोई तक्त केसे होता है ? वित्य भक्ते ।

बो बनित्य है वह तुला है या सुख ?

कुम्ब मन्ते ।

जो जानिका पुरस्त कार परिवर्शनशीक है उसे चया पैसा धमशना डीक है कि-पह मेरा है पह

में हैं, यह मेरा थ.ध्या है ? नहीं भन्ते !

चेपना । पीक्षा । मेरकार । विकास ।

महीं भन्ते !

धानन्य ! इसकिये को कुछ क्य--- नर्वात जनागद । इमें देख और काल अनर्जनम को नहीं जास होशा है।

> रुपि वर्ग समाप्त **ब्रह्म प्रकासिक संसा**क्ष स्कृत्व संयुक्त समाप्त ।

# दूसरा परिच्छेद

# २२. राध संयुत्त

# पहला भाग

प्रथम वर्ग

§ १. मार सुच (२२ १.१)

मार क्या है ?

धा**वस्ती** जेतवन''।

तर, आयुष्मान् राध तहाँ भगवान् थे वहीं आये, और अगवान् का अभिवादन करके एक और पैट गरे।

पुक और बैंड, आयुग्मान् श्रथ अगवान् में वोले, ''भन्ते । लोग 'सार, मार' कहा करते हैं। भन्ते । मार क्या है ?

राथ ! इस के होने से झार होता है, या मारनेवाला, या यह वो नस्ता है। राथ ! इसकिये, हुम रूप ही को मार तमाहो, मारनेवाला समाहो, अरता है ऐसा समाहो, रोग समाहो, फीबा समाहो, चाब समाहो, पोढ़ा तमाहो । जो इस को ऐसा समाहते हैं वे ठील समाहते हैं।

वेदना । सक्षां '। सस्कार । विकाल ।
भन्ते । श्रीक समझने से वेदान्य होता है ?
राघ । डीक समझने से पेरान्य होता है ।
भन्ते । वेदान्य होता है ।
भन्ते । वेदान्य से मचा होता है ।
भन्ते । दान-रहित होता है ।
भन्ते । राग-रहित होने में नया होता है ।
भन्ते । राग-रहित होने से विवक्त होता है ।
भन्ते । विक्रमित होने से विवक्त होता है ।
भन्ते । विक्रमित होने से विवक्त होता है ।
भन्ते । विक्रमित होने से विवक्त होता है ।
भन्ते । विक्रमित से वार्या होता है ।
सभ्ये । विक्रमित से विवाण छाता है ।
सभ्ये । विक्रमित से वार्या होता है ।
सभ्ये । विवाण से यथा होता है ?
राघ । वार्य हाम पूछ नहीं वक्ते । अहान्यर्थ का अन्तिम व्यक्तेय विवाण हो है ।

§ २. सत्त सुत्त (२२. १. २)

आसक कैसे होता है ?

आवस्ती ' जेतवन । पक कोर बैठ, आयुष्मान् राघ अगवान् से योळे, ''भन्ते ' कोग 'सक्त, सक्त' कहा करते हैं।

मन्ते ! कोई सक कैसे होता है ?

राय कर में भी फल्क्सानिकारिक जुम्ला है और जा वहीं क्या है, वेसरह क्या है इसी से वह 'सक बहा क्षता है। देवना १ संस्था । संस्थार । विशाप १

राष | पैसे टक्के पा उदिज्यों बाल के पर से धेटते हैं। "अब उक्त बालू के वर्स में दनक राम = प्रम्य = प्रेस = पिपासा = परिकाद = पृष्या पत्नी स्वती द्वता सक वे उनमें बसे रहते हैं। वनसे दिक्के हैं। इस पर क्याफ रचने हैं। उनको करना समानते हैं।

राप । अप शासु के वहीं में उनका हाग नहीं नहता है तब व हाथ-पैर से उन वर्ग की तीव फीट कर नष्ट कर होते हैं और किको हैते हैं।

राव ! द्वार इसी तरह सम्बन्ध तीव्-कोवकर गढ़ कर दो और विकेर दो । शृष्या को सम्बन्धने में क्या काची ।

वैद्याः । शंदाः । संस्कारः । विद्यानः । राषः ! शंकाः का कावः क्षेत्रः व विद्यानः है ।

# 8 ३ मधनेचिसच (०२ १**३**)

### संसार की ओरी

श्चाससीः ।

पुरू कोर वेड, आयुष्पास् राख भगवान् स बोक "सन्ते कोत 'सववेति ! जीर सववेति निरोध कहा करते हैं। सन्ते ! वह "सववेति और सववेतिनिरोध" क्या है ?

राष । इस्य में जो करन् = राग = मन्त्रि अ तुष्णा अ कराय = करायाण = विश्व का सविद्यान, अमिनिवेश अनुसार हे तसे कहते हैं 'अन्तरेश । वनके निवज्ञ हो जाने को बहते हैं 'सवनैधिनिरोध'। वेदना में को । धंका । वेदस्य ""। विश्वाल

# र्ड ४ परिष्येयम् सुच (२२ १ ४) वरिवेय परिवा भीर परिवास

धावसी ।

पुत्र कीर बैढे श्रायुष्पान् राध से भगतान् बोके "श्या | मैं तुन्हें वरिश्चेय वर्स परिशा और परिश्वाता प्राप्त के विषय से अपवेस करूँगा । उसे सनी ।

मगदाम् वोके "राम ! परिश्वण यसं धीन सं हैं ! राम ! कर परिशेष यसं है । वेदवा ।

संद्या । संस्कार । विद्यान । शय ! हुन्हें कहते हैं परिशेष बर्म ।

राव ! परिता क्या है ? राग !की राग-सम्म हेपसम और मोहस्य दे वही परिता कही साती है। राव ! परिताला प्रक्रक क्या है ? व्यर्डेंग्, को जालुक्यान् इस नाम और गोप्र के हैं —वहीं परि ताता प्रक्रम कहे जाते हैं।

# ५ परम समय सुच (२२ १ ५)

**उपादान स्दन्यों के द्याता दी अ**सण-प्रा**ह्म**ण

सायरति । । पृत्र जोर की सामुख्यास् राध से मानाम् पीते "राज । नद पाँच करावृत्तररूप हैं । सीच से पाँच है जो यह रूप कास्त्राकरूपन" (जवान करावृत्तररूप)

भपनेशि—"मारश्क्ष्ण अध्टक्ष्ण। = र्वतार वी क्षोधै।

राप ! जा भवत वा तालाग इन पाँच उत्पादनहारकों के आध्याद, होग भार सोश को वधार्थत. वहीं कारते हैं से धमण न ती धमण कहराने के बोहर हैं, और न वे बाहाग व्हराने के ! ते आयुक्तात् समण या बाहण के परसक्ते की अपने देवते ही देवने जान, देव और श्रास वर नहीं विहार हरते हैं !

भाषा था माराज के परनारा का अपने पूराते हैं। दूसने जान, अप आर आग्र पर नहीं विहार करते हैं। राष ! जो। नागर्यत, जातने हैं। ये आशुसान, असण। या प्राव्याण के परमार्थ की अपने देखते एँ ऐसने सन, देश आहे मार्ग कर दिसार करते हैं।

# े ६६, इतिय सगण सुच (२२ १६)

उपानास-स्टारको के दाता हो श्रमण वाताण

#### श्रापस्ती ।

पुरु और घेट आयुर्गान् राध्य से अगराज् शेलं, 'राध ! यट पाँच वर्णात्व स्काम छ ।'
राध ! जो अन्य या घाएण इन पोच उपाइन्तम्बन्धे के समुत्य, अस्त होने, आस्प्राद, होष, और मोक्ष को यसकेन नहीं पालने हैं जनसे हैं ।

# § ७. सोतायन्न सत्त (२२ १ ७)

खोतापय निरुषय ही जान प्राप्त करेगा

### थायस्ती ।

एक और थंडे आयुष्पान् राध्य से भगपान् पोले, "राध । यह पाँच उपादान-रहन्य है । राध । क्योंकि आयंश्रायक इन पाँच उपादानस्त्रान्यों के समुद्रग, अस्त होने, आस्याव, दोप शीर मोक्ष को यथार्थत जानता हे इनीसे यह रोतायक्न कहा जाता है। यह सार्थ में च्युत नहीं हो सकता, निर्मण की और जा रहा है, निश्चपूर्वक परम झान शाह गरेगा।

### § ८. अरहा सत्त (२२. १. ८)

उपादान-स्कन्धों के यथार्थ ज्ञान से अर्हत्य की प्राप्ति

### श्रावस्ती'''।

पर और बंडे ब्राह्मप्तान् राध से भगवान् बोरे, '' राध ! क्यांकि सिद्ध इन पांच उपाइन सन्त्रों के सहप्रम, अस्त होने, आस्त्राह, दोप और मोद्ध को व्यापंत वाल उपाइनर-रिहत हो निमुक्त हो बाता है, इसो से वह अर्हान्-श्रीणाश्रव-विस्त्रे वाध्ययंवाय इसा कर किया हो-कृतकुळा-विस्त्रेने भार रस दिया है-क्युत्रासस्त्रर्ज-विश्विण-अवस्त्रोवान-अस्त आत से विश्वस्त कहा जाता है।

### § ९. पठम छन्दराग सुत्त (२२ १ ९)

ऋष के छन्दराग का त्याग

### थावस्ती'''।

एक ओर यैठे आयुष्मान् राख से भगवान् बोहे, "राष ! रूप में बो छन्द = शग . है उसे शेष यो । इस तरह, रूप प्रहोण हो बायगा = उच्छिष्ममूळ = शिर कटे ताल के समाम = मिटा हुआ = भिर कमी उपन्न होने में असमर्थ ।

वेदना में जो । सन्ता । सस्कार । विज्ञान ।

# हु रै॰ दुतिय छन्दराग श<del>ुच</del> (२२ १ १०)

क्रम के कल्पनांग का स्थान

भावसी ।

दक और किंदें आयुष्पाम् पान से मागवाद कोने 'तन ! क्या में को कर लाग समित क दुष्पा च उपाप-कारावाद च किंद का कविद्यान किंदिविद्या क्युसम है वसे कोड़ दो । इस ताह वह कप प्रतीन हो बादगा ।

वेदना । संज्ञा । संस्कार । विद्यान ।

प्रयम वर्ग समान्त

## दूसरा भाग

# द्वितीय वर्ग

# § १. मार सुत्त (२२ २ १)

मार क्या है ?

थावस्ती ।

पुक ओर बैठ, आयुष्मान् राध्य मगवान् से बोले, "भन्ते! लोग "सार, सार" कहा करते है। भन्ते! सो वह सार क्या है ?"

राध ! रूप सार है, वेदना मार है, लड़ा , सस्कार , विज्ञान सार है।

राघ ! इसे जान, पण्डित आर्थशावक रूप में भी निर्वेट (=वैराग्य ) करता है ' पुनर्जन्म की नहीं मास होता।

> § २. मारधर्मी सुच (२२ २ २) मारधर्मे क्या है?

श्रावस्ती

भन्ते ! लोग ''आर-धर्म, आर-धर्म' कहा करते हैं । अन्ते । यो वह आर-धर्म क्या है ? राध ! रूप आर-धर्म है । वेटना विद्यान ।

राध । इसे जान, पण्डित आर्बशायक ।

६ **३. पठम अनिच सुत्त** (२२. २ ३)

अनित्य क्या है ?

भन्ते । छोत् "अनिन्य, अनिस्य" कहा करते हैं । अन्ते ! सो वह अनिस्य क्या है ? रोष । इत् अनिस्य है । वेडना अनिस्य है । मझा । सस्कार "। विज्ञान अनिस्य हैं । राष । इसे जात, पण्डिल आर्यश्रावक ।

९ ४**. दुतिय अनिच सुत्त** (२२ २ ४)

अतित्य-धर्म क्या है ?

मन्ते । स्तो वह अतिला-वर्म भया है ? राष ! रूप अतिला-वर्म है । वेडमा । सङ्गा । सम्कार । विज्ञान । राष ! इसे जान, पण्डित आर्थ-श्रावक ी

९ ५−६, **पठम**-दुत्तिय दुक्स सुत्त (२२ २, ५−६)

स्प दु ख है

गाश्चीसप हुग्र है। बेदना ' दिझान ।

બર

```
ंराच ! कम बुत्तवर्म हैं । बंदमा विद्याल' ।
राच ! इसे बाग पण्डित आर्थ-आवकः ।
```

§ ७-८ पठम द्वतिय अनत्त भ्रुश (२२ २ ७-८)

का अनास्य 🕏

राभ किय समास्य है। नेवना विज्ञान । राम क्रिय समास्य सर्वे है। नेवना विज्ञान ।

राज ! इसे काम पनिवत आर्थधानक ।

§९ सम्बन्धसम् सुत्त ( २ १ ९)

समध्ये स्वा है ?

भावस्ती ।

एक जोर बैंट कायुष्माम् राख सगवान् संबोठ "सन्ते ! क्रोग क्षयवर्म सगवमें क्या करते हैं। मन्ते ! सो वह क्षववर्म नवा है !"

राम ! रूप श्रमकर्म है। वेदना विकास । राम ! इसे जन पन्तित आर्थनाकः ।

न पाण्डत बायझावङ ।

§ १० वगघम्म सुत्त (२२ २ १ ) व्यय-कर्म क्या है।

भावस्ती ।

पुरू कोर वैद सायुष्मान् राध मगनान् से बोर्क 'जन्ते | कोग 'व्यवसर्म स्ययममं सदा करते हैं। मन्ते | छो यह स्थयमं क्या है ?

राव किय व्यवसर्थ है। बेतना विकास १

§ ११ समुद्रमधम्म शुचा (२२ २ ११)

समुदय धर्म क्या है !

मानस्ती । "मन्त्रीसो वह समुद्यवर्ध क्या है ?

राम ! कप समुद्रयक्तर है। बेदवा विकाश वा । राम ! क्षमें काल परिवर्ध कार्यकाषक ।

<sup>§ १२</sup> निरोधमम्म सुच ( २२ १२)

निरोध धर्म क्या है 🕻

मानस्ती ।

\*\*\* मन्ते ! सो वह निरोध कर्म क्या है ? राम ! क्य विरोध धर्म है । वेद्शां \*\* विज्ञान । राम ! इस करन पश्चित आर्थकावक ः ।

ाचाइस काच पाव्यत आयज्ञाबक्र⇔ |

वित्तीय बग समास्त

# तीसरा भाग

### आयाचन वर्ग

### ६ १. मार सुच ( २२. ३. १ )

भार के प्रति रच्छा का त्याग

श्रावस्ती. .।

पुक्त और बैट, आयुप्मान् राध भगवान् से बोले, ''भन्ते । भगवान् मुझे संक्षेप में धर्म का उपदेश हैं, जिसे सुक्त में अप्रेटा प्लान्त में प्रहितात्म होकर विहार करूँ ।''

राष । जो मार है उसके प्रति अपनी इच्छा का प्रदाण करी। राज । सार भ्या है ? राज । स्वप सार है, उसके प्रति अपनी इच्छा का प्रदाण करी। बेदना । सज्ञा । सरकार । विज्ञान ।

§ २. मारधम्म सुत्त (२२ ३ २)

मार-धर्म के प्रति छन्डराग का त्याग

राध । जो मार-धर्म है उसके प्रति छन्द, राग, छन्द्रराग का प्रहाण करो ।

§ ३–४. पठम-दुतिय अनिश्व सुत्त (ॅ२२, ३ ३–४ )

शक्तिस्य और अतिस्य-धर्म

राध । जी अनित्य है । राध । जो अनित्य-धर्म है ।

९ ५−६, पठम-दुतिय दुक्ख सुत्त (२२ ३ ५−६)

दु.स और दुःस धर्म

राध ! जो दुख है । राध ! जो दुल-धर्म है ।

s ७-८, परम-दुतिय अनत्त सुत्त ( २२, ३ ७-८ )

अनात्म और अनात्म धर्म

राध । जो अनारम है 1 राघ । जो अनात्म-धर्म है । /

६ ९–१०. ख्रयधम्म-वयधम्म स्त (२२ ३,९–१०)

क्षय चर्म और व्यय धर्म राघ । जो क्षय-धर्म हैं ।

राध । जो व्यय-धर्म है ।

६ ११ समुद्यधम्म सुच (३११)

समुद्रय धर्म के प्रति छन्त्रकार का त्याग

राच ! जो समुद्रव धर्म है उसके प्रति ग्रम्य राग अन्यराग का प्रहाण करो ।

**४ १० निरोधध**स्य सम्र (२० ३ १०)

निरोध धर्म के प्रति सन्दराग का स्थाय

भाषस्ति ।

ण्ड कोर केंद्र कायुष्पाल् राध्य अगवाल् में बोर्क अन्ते ! मगवाल् ग्रुझे संहोप से वर्मोपर्वेस वर्षे विभासन में अधिकास को कर विकार करूँ ।

राव ! जो निरोध करों है जमके प्रति शब्द, इस शब्दता का प्रहाल करो । राध ! निरोध-वर्ग वका है ! राध ! रूप निरोध वर्ग है उसके प्रति हत्त्र का प्रहाल करो । वेदवा । संझा । सस्कार । विकास ।

भागासम् धर्म समाप्त

# चौथा भाग

## उपनिसिन्न वर्ग

# § १. मार सुच (२२ ४ १)

### मार से इच्छा इटाओ

श्रावस्ती ।

एक और मेंटे आ सुष्पान् राध्य से भगवान् बोले, "राधा को सार है उसके प्रति बच्छा को इटाओं । राधा सार क्या है ? राधा रूप सार हे, उसके प्रति इच्छा को हटाओं । वैदनाः । संज्ञा ...। सैंस्कार । विज्ञान ।

# § २. मारधम्म सुत्त (२२, ४ २)

### मारधर्म से इच्छा हटाओ

' राधा । जो मार-वर्स है उसके प्रति हच्छा की हटाओ ।

### <sup>§</sup> रे-४ पटम-दृतिय अनिच्च सुत्त (२०.४ ३-४)

अनित्य और अनित्य-धर्म

राधा ' जो अनित्य है । ' राधा जो अनित्य-धर्म है ।

र्श्ड **५−६. पटम-दुतिय दुक्ख सुत्त** (२२ ४ ५−६)

दुःख और दुःख-धर्म

राधाजो दुख है। राधाजो दुख-धर्म है।

§ ७-८. पठम-दुतिय अनत्त सुत्त (२२ ४ ७-८)

धनात्म और अनात्म-धर्म

राघाजी अनाश्म है। राधाजी अनाश्म चर्म है।

§ ९-११. खयवय-समुदय सुत्त ( २० ४. ९-११ )

क्षय, व्यय और समुदय

राघाजीक्षय-वर्मद्दे।

राभ (को स्वयं धर्म 🕻 ।

राष ! बो सगुदय-धर्म 🕻 ।

§ १२ निरोधधम्म सुत्त (२२ ४ १२)

निरोध धर्म से इच्छा इरामी

भाषस्ती ।

ण्ड और वर्ड आयुष्माल् दाख से मगवान वार्क 'राव ! को गिरोधधर्म है उसके प्रति इच्छा को इदाओं । राव ! निरोधधर्म क्वा है ! राव ! क्व गिरोध धर्म है उसके प्रति इच्छा को इदानी । वेदना । संज्ञा । संस्कार । विकास ।

> क्यनिमिन्न वर्ग समाप्त थाम संयुक्त समाप्त

# तीसरा परिच्छेद

# २३. दृष्टि-संयुत्त

# पहला भाग

### स्रोतापत्ति वर्ग

# **६१. बात सुत्त (२३**१.१)

मिथ्या दृष्टि का मल

#### थायस्ती'''।

निशुको । किन्यके होने से, किसके उपवान से, किसके अभिनियेश से ऐसी मिध्या-दृष्टि उत्पन्न होती है—प्रया नहीं बाती हे, निव्या प्रयादित नहीं होती, गर्भीणियों वचा नहीं जनती, चौव-सूरज उसते हैं और न इयते हैं, किन्यु जिल्हुक टड अचक हैं।

मन्ते ! धर्म के मूल भगवान् ही ।

भिक्षुओं। रूप के होने से, रूप के उपादान हैं, रूप के अभिनियेश से पैसी सिध्या-दृष्टि उत्पन्न प्रोती है—हृषानहीं बहुती हैं। बेदना के होने से । स्वका । सरकार । विज्ञान के होने से ।

भिक्षुओं। सो क्या समझते हो, रूप किया है या अनित्य ?

भनित्य भन्ते ।

'जो अनित्य, हु सा ओर परिवर्तनहीरू हैं उसके उपादान नहीं करने से क्या पैसां मिथ्या-इष्टि उत्तम होगी—हवा नहीं बहुती हैं ी

नहीं भन्ते ।

पेतना । सजा । सस्कार । विज्ञान ।

को यह छेता, सुना, सुवा, खदा, छ्या, जाना गया, पाया गया, खोजा गया, पा मन से विचारा गया है वह नित्य है या अनित्य ?

अनिख भन्ते ।

जो अतिथा, 🛚 स और परिवर्तनतील है। उसके उपाधन नहीं करने से क्या ऐसी। अध्यान्हिं। इसक होगी-—हवा नहीं बहती। १

नहीं भन्ते ।

मिश्रुको ! इन छ स्थाना में आर्थकावक की सभी शकाय मिटी होती है। इ ख में भी उसकी शका मिटी होती है। दुक्त-समुदय में भी । इ ख-निरोध से भी । इ ख-निरोधगामिनी—-भितपदा में भी ।

भिक्षुओ । यह आर्थश्रावक स्रोतापस कहा जाता है ।

मेरा भारता है।

# §२ एस गम स्रुत्त (्रि १)

मिच्या दक्षि का मूळ भागमी ।

काथस्ता । भिद्युओं!किस≭ द्वान संस्थी सिच्या-द्वाष्ट्र उत्यक्ष द्वोती है—चड्ड सहा है बाहुसे हैं, वह

सन्ते ! भम क मुक्त भगपान हो ।

सिंधुमों } रूप के होने सं । हैमा सिध्यान्द्रप्ति उत्पक्त हाती हं | वहता के हान सः । संद्राः । संस्थारः । विकासः ।

जो संनित्य द्वास सीर परिवतनवील है उत्तर उपादान नहीं फरन से क्या एसी सिम्बानीय उत्तर होती—यह मेरा है पह में हैं 9

नहीं मन्ते !

मिह्नभी । इन कः स्थाना स अर्थकायक को सती संकार्ये मिदी होती है। सिह्नभा ! यह भारताबक अराधक ।

# <sup>8</sup> रे सो अत्त सत्त (े ३ १ ३)

### मिच्या राष्ट्रिका मख

भावसी ।

भाषता । मिसुको ! किसके होन से पूर्ण निष्या-बाह बरपण होती है—जा बरपना है सर कोऊ है सो मैं पर कर निरम=अवस्ता=बिषणीयात्रपमां हैनार ?

भन्ती | बार्म के सूक भगवान् ही ।

मिन्नानो | कप के होने से पैस्ता सिल्या इडि व पच होती है~की काल्या । केंद्रता क होने
सा । सीमा संस्कार विकास ।

सिद्धको । इन छ। स्थाना से आर्थआवड की सभी संकार्य मिटी होती हैं । भिद्धको । वह भारतभावड खोतावस्र ।

### १ प्रजी च म सियासच्च (२३ १ ४)

### मिन्या-इप्रिका सस

भागसी ।

भाषक्ती "।

मिश्रमो ! क्रिमके होते वा गयी सिष्या-इष्टि उपाक हाती है—न में होता न मेरा होता न से हुँगा न मेरा होता ।

भग्त ! धर्म के सूच भगवाय हो ।

मिशुमा ! कपके दीने से छेसी सिध्या-दक्षि । वेंद्रमा के दीने से । संद्रा । संस्कार विज्ञान ।

सिम्रुमः । इव छः स्थाने में आर्थमाश्चक की गर्था संकार्वे सिद्धी कोती हैं। सिद्धाने। । वह सार्वभावक गोक्षपन्त ।

### 5 ५ नस्थि सुच (२३ १ ५)

उच्छत्रधार

मिशुभी ! हिमके काने का तेन्या मिन्या क्षति उत्पालन होशी है— 'बाव जल हास ( का बोर्ड कन्द ) नहीं है अब्दें भार जुरे बार्से के अपने कुछ शक नहीं दीने यह कार नहीं है बरसोड़ नहीं है मला नहीं है विका कहीं है, श्लेषपातिक क्या ( = मर्थ में उद्यक्त गोंसे बाल नहीं, किहु स्वयक्षात ), होंह में धमम या मात्रम नहीं है जो क्या हू प्रियान्त है, हों है प्रस्तेष्ठ की न्यय जान और माशास्त्रम कर उपरोध करने हैं। वाद महासर्जे में मिटकर पुरुष बना है। सुन्तु के उपरान्त एक्सी आहु एक्सी में मिटकर होंग होंगे हों। चार महासर्जे में मिटकर पुरुष बना है। एक्स है उपरान्त एक्सी आहु एक्सी में मिटकर होंग हो जाती है, पार्थ पत्तु हैं, होंगे साहर क्या है। एक्स स्वीत्र उपरान्त हिंगों के जात क्या ताती है। स्वार प्रसार क्या होंगे हैं। एक्स स्वार्थ करने पार्ल सुर्य आह पिटक सभी उरिष्ठा है। जाती है, हिंगों अति है, क्या है आहिए साहर है। इस्ते हैं। इस

भन्ते। धर्म के सन् भगवान ना

पेंदन, । संद्राः । सम्भारः । विज्ञानः ।

मिधुनो । सो प्रयासमाति हो, इन्य निपारे पा जीनप १

"'भिश्चना । उन ए स्थानो न आर्थनायक की सभी सकार्ये सिटी होती है। भिश्चओं । यह अर्थन्नायक स्रोतायम्म''।

# §६ करोतांसुच (२३.१६)

### अक्रियवाद

श्रावस्ती ।

मिन्नुओं । किन्निक रोने में "ग्रेमी मिण्या-रिष्ट जरपन्न रोती रे—"करते हुपे, कराते मुणे, काटते हुपे, कराते मुणे, काटते हुपे, सराते हुपे, सराते हुपे, स्वांते हुपे, स्वांते हुपे, सराते हुपे, सराते हुपे, स्वांते हुपे, स्वांते हुपे, क्वांते हुपे क्वांते क्वांतिक क्वांत

भन्ते । वर्म के मृत भगवान् ही

मिश्चओं । रूपके होने से ऐसी सिष्णा-दृष्टि । वेटना के दोने से । सङ्गा । सस्कार । प्रज्ञान ।

भिञ्जको । इन उ स्वानो से आर्थआवक की सभी शकार्ये मिटी हीती है। भिञ्जको । यह आर्थ-श्रावक क्षीतापन्न ।

# ६७. हेतु सुत्त (२३ १ ७)

#### देवबाद

थावस्ती ।

भिष्ठुकों। किसके होने से ऐसी मिण्यान्विध उत्पन्न होती है—"सत्यों के सक्लेश के कोई हैं प्रस्ता के सक्लेश के कोई हैं प्रस्ता की सिक्क होने हैं। सत्यों की विश्वद्धिक कोई हैं प्रस्ता की विश्वद्धिक कोई हैं प्रस्ता की विश्वद्धिक कोई हैं प्रस्ता की विश्वद्धिक कोई है। उत्पन्न विश्वद्धिक होते हैं। यह वार्ष हैं प्रस्ता की स्ता की अपनित स्ता की अपन स

भन्ते। धर्मके मूल भगवान् ही।

### § २ ण्सम्म सुस (ि ४ ०)

मिथ्या-दृष्टि का सर

धायर्सा ।

भिक्षुमो | नियक दान म प्या मिय्या-दृष्टि उत्यक्त दार्ता है---मह मरा है पह में हैं, वह मेरा कारमा है !

भन्ते ! यस कं सूक सगराज् हों ।

भिमुमा | रूप के बोन र्रा एक्स मिन्या-रहि उत्पन्न बोमी व ! वदमा के बान स' । संत्रा । रामका । क्लिक

को अभिरय कुला आर परिवासकांक है उसके कपादान नहीं करन स बना एमी जिल्लान्छि उत्पन्न होगी—यह नेगा है यह में है ?

नहीं सन्ते !

सिमुक्ती । इस छ। स्थाना में आर्थकायक की सजी शैकार्थ सिकी होती हैं। सिभुका ! यह सार्थकायक कातास्त्र

# <sup>5</sup> रे सो अचा सुच ( ३ १ ३)

मिच्या वरि का सल

भावस्ती ।

मिसुमा ! किसके होत संपूर्ण जिल्लानांक उत्तरम होती है---ना आरमा है सां कांज है सो में मर कर निरमक्षण-मानस्त अमोविपीकालयमां हैया ?

मन्ते ! धर्म क मूक्ष मगवाध् ही ।

सन्त | यस कपूरू सावाय हा । मिन्नुस्मी | क्या के होच से पेमी सिन्धा-दृष्टि उत्पक्त होती ई—जो आस्त्रा । बद्धा के होने ॥ । मैंबा संस्कृत विकास ।

मिश्रुको | इन क स्थापा में जायेबायक की श्रमी ग्रीकार्य मिश्री होती हैं। सिश्रुको | यह कार्यकारक वातारक

<sup>8</sup> ४ नो चम सिया सच (२३ १ ४)

V-----

मिण्या रहि का मुख

भागमसी । मिभुमो ! क्ष्मिके बाने सः समी क्षिण्या इष्टि करनक बाती ई—म से बोता म मेरा होते। न से हैंगा न मेरा दोगा।

मन्त । धर्म के मूक मगवान ही ।

सिद्धका ( रूपके होने से पर्या सिन्धा-रिष्ट । शहना के हाने से । संका । संस्कार निकार ।

सिक्षुत्रः । इन छः स्वाता में आर्थधानः की लागी संकार्वे सिद्यी हार्सा हैं। सिक्षुत्री । वह नार्यज्ञायक कादायन्य ।

उँ ५ नतियसच (२३ १ ५)

वच्छत्रवात्र

आपस्ती\*\*। मिमुथी ! कियक हाते मा कंगी शिल्या-रहि उत्पन्न वंशी के---\*वान नव हास (वा कंगी रून) नहीं दे अच्छ भीर हो कसी के जवने वुछ कहा हों। होते यह कांव नहीं हैं परस्कोद्र नहीं है

भन्ते। धर्मके सुरु अस्त्राचुहाः ।

भेरमा । सद्धाः । सरकार । विकास ।

मिधुओ ! तो गया समझते हो, रूप निस्त हाया अनिया?

'''मिश्रुओं ! उन राज्यानों से आर्पनायक की सभी शकार्थे मिटी होती है ! भिश्रुओं ! यह अर्थिनायक सीतापना'''।

# **६ इत्योती सुत्त (२३. १ ६)**

### अक्रियवाद

थायस्मि ।

िशुर्तो । किसके प्रोने सं "ग्रंमां क्रि-शा-एष्टि उरपण्य रोती हे—"करते हुये, कराते दुवे, काहते हुवे, काहते हुवे, काहते हुवे, सराते दुवे, मोवादे हुवे, सोवादे दुवे, अनते हुवे, पकाते हुवे के से देव पका देव पका देव के कि हुवे के से देव पका देव पत्री पर पक्ष प्राप्त पत्री प्राप्त पत्री हुवे के से प्राप्त पत्री हुवे पत्री पत्री पत्री पत्री प्राप्त के से प्राप्त प्राप्त पत्री हुवे पत्री पत्री पत्री पत्री पत्री पत्री पत्री पत्री हुवे पत्री पत

भन्ते। धर्म के मुल असवान् टी। भिक्षुओं! रूप के होने से ऐसी सिध्या-रुष्टि। वेदना के होने से। सजाः। सस्कारः।

पिज्ञान । भिक्षुची। इन छ स्थानो से आर्यश्रायक की सभी शकार्ये मिटी होत्ती है। भिक्षुको। यह आर्थ-प्रायक कोतानन

### ६७. हेतु सुत्त (२३ १ ७)

### दैववाद

#### द्व श्रावस्ती ।

मिशुजो ! फिलके होने से ऐसी जिल्ला-दृष्टि जलाब होवी है—"सस्यों के सनस्टेश के कोई हैं। इस्ता के सनस्टेश के कोई हैं। इस्ता की विद्युद्धित स्वा के स्वा स्वीकृष्ट होते हैं। सत्ता की विद्युद्धित कोई हैं। इस्ता की विद्युद्धित कोई हैं। इस्ता की विद्युद्धित कोई हैं। इस्ता की विद्युद्धित की कोई हैं। वाल, वीर्थ, पोर्टर, पराक्षम इस्त में पार्टिंग की विद्युद्धित की विद्युद्धि

भन्ते । धर्मके सूल भगवान् ही ।

सिद्धमों ! इस्प के होने सं येसी सिन्धानाधि उत्पक्त होती है । बेदना । संग्राः । संस्कार । विज्ञायः ।

मिशुमा ! इन कः स्थारों में आर्थमावक की सभी शंकार्थे मिरी रहती हैं।

### §८ महादिष्ट सुत्त (२३ १८)

### अफततावाट

भायस्ती I

मिहाना! फिसके होने से पूछी सिच्या-पिट बयम होती है—"से खात काना सक्का है सकारित है मिनिमित हैं भनिमांपित हैं बच्चा हैं कुदरम हैं सबक हैं। वे दिकते डोक्टो महीं न विपरित्यत होते हैं सीर न अपांग्य समाधित करते हैं। एक दसरे का न सुप्त ने सकते हैं और न सुन्त ।

"हीम सात १ एन्डी कावा आपकावा सेत्र कावा वाद्यकावा सुक्त दुन्त वीव । पही

सात कावा १

"बो देश इमिकार से किर कारता है। सो कोई किसी की काल नहीं मारदा । साद कार्यों के

बीच में इथियार केवक एक छेत कर बेता है।

"श्रीबृह्स काप्त छाछठ यानियाँ हैं। याँच सी क्यों हैं आर याँच क्यों हैं और तांन क्यों हैं क्यों में और अवेश्वमी में बासठ मित्रवृत्यों हैं वासठ करनत करा हैं का विस्तावियाँ भाठ प्रवर्ष प्रतिपत्तीं करन्यस्त सा व्यावीवक जनवास की परिक्रवाक जनवास सी नागावास बीस सा हिन्द्रवर्ण तीम सी नाम प्रणीस राजेप्यास सात संही-गार्थ सात व्यवित्ताना सात तिर्गित्वनामें सात विद्यास सात मातुष्य सात पैसाच सात सर सात प्रमुख सात प्रपात बीर सात सी प्रपात सात राज्य कीर सात मी स्वर्ण अस्ती से क्या महानक्य सात हवार सूर्य बीर परिव्रत क्यास करमान्तर में पढ़ते हुने दुन्य का सम्त करेंगे।

"जमी बाठ पड़ीं इंकि इस बीछ से पाइस कत से पा इस सर पा वा इस महत्त्वयें से करिएक कमें को परिषक कता मूँगा पा परिषक कमें को उपनीस कर पीरे-पीरे सदास कर मूँगा संसार में न सो सरो तुत्र शुरूर-दुत्प हैं और च बनजी नि इक्त कावधि है। कमना जबिक होता क परना करना भी नार्षे है।

"जैमें मृत की गोर्ड केंकी करे पर खुकती हुई बाती है कैसे ही सूर्य आर पश्चित खुमते हुये

मुत्त-शाल का अस्त करेंगे ह

अनी ! पर्मके सुर भगतात् धी ।

भिशुमी ! स्प के दाने से । बेर्ना । संज्ञा । मंदराद । निज्ञान ।

भिश्वभी हे इन छ स्थानी में सार्वधानक की ।

### 🕽 ९ सस्मरो लोको सुच (२३ १९)

### **धाष्ट्रवत**याव

धावामी १

मिशुमा ! किएक दोन से " पनी विष्णा-रहि कारण होती है— 'यह लोक शास्त्रत है" ! सब्दे ! पर्म क मूल मार्थान हो ।

मिशुभा । यत क हाने से पेगी सिरशान्तिः जन्त्रत्र होनी है—"वह क्षेत्रः साहरत है"। वेदवा के हाने से ११ कोगा । शेरदार ११ विकास ।

शिक्षां । का नित्त दे वा धनित्त ।

भिश्वभी १ इम छः स्थामी में आर्थभाषक की ।

# \$ १० असरसता सत्त ( २३ १, १० )

अभारवसमार

थ। प्रस्ती •••।

निक्षाओं । कियाने लागे से वेहमी निल्यादक्षि उत्पन्त लोगी र--"लोग अशाहास है"? भन्ते । वर्ष वे मत असवान ही ।

भिज्ञाओं। रूप के होने से ।

े विद्याओं ! हम हः, स्थानों में आर्थशायकः ।

६ ११. अन्तवा सुरा (२३ १ ११)

अस्तवान-वाद

थायस्ती । भिश्ववा । क्रिक्ट होने से मूर्खा मिया-दृष्टि उत्पा होता हे-"अम्मवाला होक हे" ? " शिक्षती। इस वे, लेले वे ।।

§ १२. अनन्तवा सत्त (२३ १. १२)

धानस्त-चार सिक्षणो । किनके होने से - "लोक अनन्त है" ह

§ १३ तं जीवं तं स्वीरं तत्त (२३ १ १३)

'जी जीव है वही बारीर हैं' की सिथ्या हरि

भिक्षकों । किसी होने से : -- जो जीय हे पारी शरीर है ?

§ १४. अञ्जं जीवं अञ्जं सरीर सुच (२३ १ १४)

'जीव अन्य हैं और हारीर अन्य हैं' की सिध्या-बर्फ भिक्षुओ ! किसके होने सं - "जीव अन्य है और शरीर अन्य है" ?

६ १५. होति तथागतो परम्परणा सच (२३ १ १५)

भरने के चाद तथागत फिर होता हैं' की मिथ्या-वि भिक्षको ! किसके होने से - "सरने के बाद तथागत होता है" ? •

§ १६. न होति तथागतो परम्मरणा सुच (२३, १ १६)

'मरने के वाद किर तथागत नहीं होता है' की मिथ्या-हि भिक्षको । किसके होने से - "मरने के बाद तथागत नहीं होता है" १

§ १७, होति च न च होति तथागतो परम्मरणा सुत्त (२३ १ १७)

'तथागत होता है,और नहीं भी होता है' की मिथ्या-हिए मिधुओ ! किसके होने से "तयागत होवा है और नहीं भी होता है" ?

§ १८. नेव होति न न होति तथागतो परम्परणा सुच (२३ १ १८) 'तथामत न होता है, न नहीं होता है, की मिथ्या हिए

भिक्षको । किसके होने से - "तवागत न होता है, और न नहीं होता है" 9 भिज्ञो । इन छ स्थानो में आर्थशायक

पहला भाग समाप्त

### दसरा भाग

### ( पुरियगमर्ग-स्थान्ह बेय्यावरण )

# § १ बात सुत्त ( ३ २ १)

### मिष्या रहि वा मूल

आवस्ती । सिद्धमा ! किसके होन मा ध्यमी मिच्यान्ति उत्तव होती है— 'न हवा बहुदी है स सिव्याँ प्रवाहित होती हैं न सर्मिणियाँ काली हैं स स्टूट चाँद उत्तवे हुवते हैं। विस्टूटस सबस स्विर हैं !

शन्ते ! वर्म के सूल सतवाज् ही ।

चित्राओं क्या के लीवे सा १ बेबार के दाले से । बीजा । संस्कार । विज्ञ म

सिद्युओं । कप निरम है मा अनित्म (

ममित्य मन्ते 🚶

दसके द्रपादान नहीं करने स क्या गुर्मा जिल्ला-वाँछ द्रपण होगी ! नहीं मन्ते !

सिद्धारों ! इस तरह युक्त के होने स युक्त के बपादान सं बुक्त के अभिनेदेश संपेसी होडे कलब होती है !

> हु २-१८ सटबे मुचन्ता पुत्रमे आगता येच (२१ २ २ - १८) [ क्यर के वाले १४ वेच्याकरणा को निस्तार कर क्या चारिये ] वित्रीय गमन ( वित्रीय वार )

> > § १९ क्यी अत्तादोति द्वत्त (२३ २ १९)

नारमा ६०वान् होता ६ की मिथ्या रहि

मिक्कमी । इस तरह बुल्ध के होने स जुल्क के क्याशन से बुल्क के अमिनिवेश से ऐसी मिन्नान्तरि क्याब होती हैं ।

> \$ २० अस्ति अचा होति सुच (०३ २ २ ) 'सद्यवाय सारमा है' की मिश्या दक्षि

मिल्लको ! किसके होने से -- 'सरने के बाद बारमा करवडित करोग होता है' ?

§ २१ रूपी चुबरूपी च अत्ता शांति सुत्त (२३ २ २१)

क्षणवास् और अञ्चलवास् कारता होता है की सिक्या-क्षिट्र "मरने के बाद कारता क्षणवास्त्र और क्षणरतित करोग होता है"।

07

२६. शहुपपममुणी शत्ता लेति सुत्त

§ २२. नेयरूपी नारुपी अत्ता होति मुत्त (२३ २. २२)

'न सपवान्, न अक्षयवान शास्त्रा तीता है' की मिथ्या दृष्टि '''गरने दे दार परमा न सपवास आर न स्पर्यतन असेय होता है''।

\$ २३ एकन्तमूची अत्ता होति सुत्त (२३ २ २३)

'आत्मा प्रज्ञान्त सुन्धी होता हैं' की मिथ्या इष्टि मरने के बार जा मा गुरान्त-सूत्र असेन होता है।

§ २४ एकन्तर्क्खी अत्ता होति मुत्त (२३ २ २४) 'आस्मान्दरा दर्गां होता है' की मिध्या दृष्टि

भारते के बाद आग्मा ग्यान्त-् य अरोग होता है।

§ २५ सुखद्दमर्ग अत्ता होति सुत्त (२३ २ २५)

'श्रारमा मुचदु-र्या दोसा है' को सिथ्या-दृष्टि गरने के बाद आसा सुगदु को आरोग होता है।

§ २६ अदृक्षमसुस्ती अत्ता होति सुत्त (२३ २ २६)
'शास्ता मुग दुन्त से रहित होता है' की सिथ्या इष्टि

भारता चुन्य हुन्य स राहत हाता मरने में बाह आस्ता अहु यमसुची असेन होता ॥।

#### दूसरा भाग

#### ( पुरिमत्तमन-मगरह वेम्याकरण )

#### § १ बात सुच (२३ २ १)

#### मिथ्या रिष्ट का मुख

आपस्ती' । सिद्धाओं ! किसके होनं सं ऐसी जिल्हा-राष्ट्रि उत्पन्न होती है—"न हवा बहती है न नहिंगी प्रवाहित होती हैं न गर्मिनियाँ जनती हैं न स्टान वाँद उगते-इवसे हैं। विश्वकृत ववान स्पिर हैं ?"

सन्ते । समे ॥ सूक मगवान् ही ।

ŕ

मिश्रुको कपने होने सं । बैदला के होने सं । संद्रा । संस्कार । विश् प

मिश्चमो ! कर्प निरंग है या सनिरंग !

वनित्य मन्ते !

उसके दपादान नहीं करने से बबा जंबी सिक्श-दक्षि बत्पन्न होगी ?

वर्षी मन्ते ! मिन्नुमो ! इस तदह दुला के होने सं दुला के क्यादाय सं पूला के सभि नेत्रेस संदेसी दृष्टि क्याद इस्त्री हैं:

> § २-१८ सब्धे सुचन्ता पुब्धे आगता येव (२३ २ २ --१८) [ कपर के आये १८ वेबस्करणों की विस्तार कर केंग पाविचे ] वित्तीय गत्मन (वित्तीय बार)

> > § १९ रूपी असा होति श्रुच (२३ २ १९) भारमा रूपपान होता है की मिल्या-दिष्ट

भावस्ती ।

सिश्चभी ! किलके दोने से -- 'प्ररचे के बाद भाष्मा कर बाका भरोग देखा है है

मिशुमी ! क्यके होते स

मिसुमी । इन्य तरह कुश्य के होने से कुत्व के उपादान से शुन्ता के अमिनिवेस से देखीं मिन्ना-रिक्किया होती हैं ।

> § २० अस्त्री अचा होति सुच (२३ २ २०) सहस्रवान आस्मा है' की निष्या क्रि

भिशुओं ! किमके होने स -- "महने क बाद शासा क्यरहित अरीय दोता दे" ?

इ. २१ स्पीच अस्पीच असा होति सुच (२३ ० २१)

क्ष्पवाम् और अद्भाषाम् शास्ता द्वाता है की विषया-वादि वारो के वाद व्याच्या कवताला और स्वयादिन भरीत द्वाता है ।

•

## चौथा भाग

### चतुर्ध गयन

§ १. वात सूत्त (२३ ४ १)

#### मिथ्या-इधि का सल

श्रावस्ती…।

भिक्षुओं । किसके होने से ऐसी मिथ्या-दृष्टि उत्पन्न होती हैं -- "हवा नहीं बहती हैं " 9

भिक्षुओ। एप के होने से । बेटना । सज्ञः । सस्कार । विज्ञान

सिक्षओं। रूप नित्य हे या अनित्य ?

भिक्षुओं ! इसस्ये, जो कुछ रूप—असीत, अनागत हे सभी न मेरा है, न में हूँ ओर मेरा नास्ता है। इसे यथार्थत ठीक से प्रजापूर्वफ जान खेना चाहिये।

थेह जान∗।

§ **२-२६**. सब्दे सुत्तन्ता धुब्दे आगता येव ( २३. ४ २-२६ )

[ इसके भारो ऐसा ही विस्तार करके समझ छेना चाहिये ]

निद्धकों। वह बान, पण्डित आर्थशायक रूप से बैराग करता है। वेदना से । सजा । सन्द्रार विकान । बेदाया करने से रागरिंदत हो बिगुक हो आता है। तन, उसे में बिगुक हो पता रेता हाम होता है। आति श्रीण हुई, यहायर्थ प्रा हो गया, वो करना या सो कर किया, युमर्जन्म मही हैंसा--दिसा बान केता है।

दृष्टि-संयुत्त समाप्त ।

## तीसरा भाग

#### त्रतीय गमन

#### § १ पातासुच (२३ ३ १)

#### मिच्यार्राष्ट्र का मूछ

धावस्ती' ।

मिह्नको ! किसके होने से पूछी सिध्यान्दर्धि उत्पन्न होती है— 'न हवा वहती है

मन्ते ! वर्म के सूक मगवान् ही ।

भिश्वमी ! क्ल के होये से । वेदना । संज्ञा ] संस्रार । विज्ञान ।

िमहुम्मी ! क्य वित्तव है या मणिक्य ? मिहुमी ! इस तत्तव हो समित्रय है यह तुःल है । असके हाणे संबक्तके बपादान से पेटी सिन्द्रयानीक कारी है—क्या मार्टी कहारी है ।

कलक हाता ह— इसा महा बहता है । है २—२५ सम्बे सचन्या पत्रमे आयाता येव (:२३ ३ २—२५)

[ इसके भागे ऐसा ही जिल्हार करके समझ सेमा चाहिये ]

६२६ अरोगो होति परम्मरका सच (२३ १ २६)

भारमा अधेम होठा ै की मिष्या-दर्धि

सिमुका ! क्रियके हाने से पंश्ती तिन्दा इष्टि उत्तव होती है— "सरने के बाद चातमा बहुत्त्रम मुक्ती भरोग रहता है ?

सिश्चको | इस सरह को मनित्य है वह हु।स है। उसके होने से उसके उपादान से उसके क्रांतिनेक्स से ऐसी ६डि उसका होता है । § ५. वेदना मुत्त (२४. ५)

चेद्ना अनित्य है भिक्षुओं । चन्नु-मस्पर्शना वेदना अनित्य हैं।

§ ६ सञ्जासच (२४ ६)

ह र जन्म छन र र स्थानमंत्रा अज्ञिस्य है

मिधाओं ! स्तपन्यज्ञा अग्रिय • है ।

§ ७. चेतना मुत्त (२४. ७)

चेत्रमा असिम्य है

भिञ्जुओ । रूपभरचतना अनिग्य ह ।

§ ८ नण्हा सुत्त (२४.८)

तृष्णा अनिश्य हे भिक्षभी । रूप-तरणा अनिश्य है ।

§ ९, धात सत्त (२४. ९)

पृथ्वी-आतु अनित्य है

भिक्षको । प्रधी-धात अनित्य है।

§ १०. खन्ध सत्त (२४ १०)

पश्चरफन्ध अनित्य हैं

भिक्षुओं। रूप अनित्य है, परिवर्तनशील हे, बदल जानेवाला है। बेदना । सङ्घाः। सस्कार । जिल्लान ।

भिक्षुओं । जो इन धर्मों को इस प्रकार विश्वास-पूर्वक जान लेता है

'मधुआ । जा इन धमा का इस प्रकार विश्वास-पूत्रक जान भिधुओ ! जिन्हें ये धर्म प्रज्ञा-पूर्वक ध्यान में आते हैं ।

'मञ्जूजा I जिन्हें ये धर्म प्रज्ञा-पूर्वक ध्यान में आते हैं । मिश्रुजो ं जो इन धर्मों को इस प्रकार आनता देखता है, वह खोतापन्न कहा जाता है ।

बोक्तम्त-संयत्त समाप्त

# चौथा परिच्छेद

## २४. ओक्कन्त-संयुत्त

### हु**१ चक्खुसु**च (२४ १)

#### खप्त अमिरव है

भायसी ।

मिसुबो ! बधु अनित्व है परिवर्शनक्षीक है वहक काने बाका है । क्रीत समित्व है । प्राप

विद्वा । भाषा । मन जनित्व है परिवर्तमशीक है बदक वाने बाका है।

सिमुजो ! बो इन प्रजों को इस प्रकार विद्यालयुक्त बान केता है वह मुख्य हा बाता है। इसी को करते हैं—सद्यमीसुस्तारी विस्तका मार्ग समास्त हो पाता है स्वत्युक्त-मूमि को जिमन पा किया है प्रकृतिकारीम से को हर गया है। वह उस को को नहीं कर सकता तिस्तके करते से नाफ में दिर सीन वोनि में पानेतों में उत्पन्न होना पड़े। वस तक बोतापशि-कक्क की प्राप्ति न हो के तब तक वह मर नहीं सकता !

सिद्धमा ! किन्हें व पर्स प्रमा पूर्वक प्रशान में जाते हैं वे खर्मी जुलारी कहें करते हैं विस्तरू सर्ग मसाप्त हो सहा है, । वन वत्र कोलायचिन्तक की प्राप्ति न हो के वब वरू नह सर नहीं सकता।

मिलुबी ! बी इन घर्मी का इप प्रकार बामता वेखता है वह कांतापण कहा बाता है ।

## <sup>§</sup>२ रूपसु**च** (२४२)

#### कप मतित्य ई

भाषस्ती ।

मिश्रुमो | रूप मितर है व्यवस्थितनहीस हैं व्यवस्थ बाने वासे हैं। शब्द । शब्द । रम ा स्वर्म | प्रमें मितर हैं परिवर्तनहीस हैं इरस बाने वासे हैं।

मिश्रुमो । को इन बर्मी को इस प्रकार विश्वास-पूर्वक क्षान केवा है [ शैप प्रोबद ]

#### ई दे विष्ठशण सु**च** (२४ ३)

थभु-विकास शनित्य 🕏

भिशुओ । वाधु-विकाल अनित्व है परिवासक सांक है बदक आने वाका है। आंत-विकास । आव-विकास । जिद्ध-विजास । अध्य-विकास । असीविकास ।

## § ४ पस्म सुच (२४ ४)

बाशु-स्पदा श्रामिश्य 🕻

मिधुला [ पशु-न्यर्स कवित्य है परिवतनक्षील है बहुछ क्षाने बाका है। क्षोद्य-त्यर्स । प्राक-रण्यों । जिद्यानवर्स । काश-त्यर्स । धाना-त्यर्स । § ६. सञ्जा सुत्त (२५. ६)

संशा

भिक्षुओ ! जो रूप-संज्ञा की उत्पत्ति । भिक्षुओ ! जो रूप-संज्ञा का निरोध ।

**ઠ ७. चेतना सृत्त** (२५ ७)

संचित्रता चेतना

भिक्षुओ । जो रूप-संचेतना की उत्पत्ति । भिक्षओ । जो रूप-संचेतना का निरोध ।

**८ ८. तण्हा सत्त** (२५.८)

त्रज्जा

निश्चओं। जो रूप-तृष्णाकी उत्पत्तिः। मिश्चओं। जो रूप-तृष्णाका निरोधः।

s ९. <mark>धात सत्त</mark> (२५. ९)

धात

भिश्चओ ! जो पृथ्वी-धातु की उत्पत्ति । भिश्चओ ! जो पृथ्वी-धातु का निरोध ।

८ १०. खन्ध सत्त (२५ १०)

**ENGRE** 

भिञ्चओ । जो रूप की उत्पत्ति । वेदनाकी । सङ्गकी । सस्कारकी । विज्ञानकी ""। भिञ्चओ । जो रूप का निरोध ।

डत्पाद-संयुच्च समाप्त

# पाँचवाँ परिच्छेद

## २५ उत्पाद-संयुत्त

### § १ चक्स सच (२५ १)

पशु निरोध से कुक निरोध

भाषस्ती ।

शिक्षको ! को पहुं की करणिय स्थिति और प्राक्तुमांव हैं यह हुन्ता की उराधि रागों की स्थिति जी सरामरण का प्राक्तिक हैं। को कोज की । जो प्राप्त की । वो शिक्ता की । वो शिक्ता की । वो शिक्ता की । वो शिक्ता की ।

पिहुच्यों | को चहु के विरोध स्त्रुपक्षम कीर स्वस्त हो बाला है वह बुल्क का निरोध रोगों का स्त्रुपक्षम कीर कारमाण का स्वस्त हो काला है। को मीध का निरोध । प्राप्त । किस्क्र । कारा । प्रमु

> <sup>§</sup> २ **इ.प सुच** (२५ २) **इ.प-निरोध से इः⊯-निरोध**

भावस्ती

भिष्ठको । को रूपों को उत्पत्ति रिसति और प्रसुधाँव हैं वह दुःख को उत्पत्ति रोगों की रिसति भीर बरामरण का प्राप्तुमौब है। को वाक्षों की । की रामबी की । की रसों की । को रसों की । को रसों की । को क्यों की ।

मिशुको । को क्यों के विरोध स्युक्तन और कस्त हो जावा हैं यह हुक्सों का विरोध रोगों कर स्युक्तम और बरामस्य का करत हो जाना है। तो सम्ब्री का भी बसी का ।

<sup>§</sup> दे विस्लाण शुच (२५३)

चशु विकास

सिष्ठती [को क्यु-विकास की उत्पत्ति । को कोज विद्यान की । को समो-विकास की । सिष्ठमी [को क्यु-विश्रास का विद्याप ।

🕯 ४ फस्स सुच (२५ ४)

स्पर्धा

मिल्लमा ! को कशु-संस्वर्श की करवति । मिल्लभी ! यो कशु-संस्वर्श का निरोध

<sup>8</sup> ५ वेदना सुच (२५ ५)

----

निशुमो ! को क्यु-संस्पर्धात वेदना की उत्पत्ति । भिशुमो ! को क्यु-संस्पर्धात वेदना का निरोध । २६ १० ] १० सम्बस्त [ ४२९

**६८. तण्हा सुत्त (२६.८)** 

तृष्णा भिक्षभो ! जो रूप-तृष्णा में छन्द्रराग है ।

§ ९. घातुसुत्त (२६९)

. धात

भिक्षओं । जो पृथ्वी धातु में छन्डसग है ।

नुसा । जापृथ्वाधातु म छन्डसगर ।

§ १०. खन्ध सुत्त ( २६. १०)

स्कान्य मिश्रुको । को रूप में उल्टरान हैं । जो येवन से''। जो सहा में । जो संस्कार में 'श नो विज्ञात सें''।

..

क्रेश संयुक्त समाप्त

# छठाँ परिच्छेद

## २६ क्रेश-सयुत्त

#### ह १ चनस्य सच (२६ १)

चस्र का कुन्दराग विश्व का उपहोदा है

धावस्ति ।

सिहायों | को यह में ग्रम्पता है यह विश्व का उपक्षेत्र है। तो कोच में तो मन से । सिहायों | बाव हम ग्रम्मता में ( म्यह्न कोव म्रम्म किहा, कम्पा मन ) निष्का का विश्व उपक्रम-सिंग होता है यो उसका विश्व निकास की कोत हकता होता है। नैकाम में वासता विश्व समार्चिक सावास्वार करने सोगा करों में समार्ग है।

१२ ह्य स्च (२६ २)

इप

मिछनी ! जा क्यों में कन्युराग है वह पित्र का उपलेल हैं। जो सन्दर्श में जो बर्नी में । मिछनी ! जब इन छा श्वानी में निश्च का विन्त उपलेल रहित होता है ।

३ विक्जाण सुत्त (२६३)

विधान

मिधुओं ! बी चधु विज्ञान में छन्। ।

<sup>8</sup> ध सम्पस्स सुना (०६ ४)

क्वडा

भिष्ठभो ! जो कशुर्मस्पर्ध से बन्द्रसम्पर्धः ।

§ ५ वेदना सुच (२६ ५)

पेत्रना

भिश्वभी । जी अञ्चलस्यरीता वेदना में सन्दरता है ।

<sup>8</sup> ६ सम्आः सुत्त ( २६ ६ )

र्मक

भिश्वभी ! बी एप मंत्रा में छन्दराय इस् ।

§ ७ समोतना सुच ( २६ ७ )

चेनमा

निशुभी ! मी क्य लेंचगता में शत्रहरात है...;

### ६ ३. पीति सुत्त (२७ ३)

तनीय ध्यान की अवस्था में

अवस्त्री'''।

.. आञ्चम ! यह में झाँति में ओर विसता में उपेक्षा रमने हुन्ने विहार कर रहा बा-किस पण्डित होंग कड़ते हैं कि उपेक्षा वे साथ स्मृतिमान हो। सुन्तपूर्वक जिलार करता है। उस तृतीय प्यान को प्राप्त हो विहार कर रहा: बा.. !

असुध्मान् यारियुत्र के अहदार ।

## ९ ४. उपेक्सा सुत्त (२७ ४)

चतुर्थ ध्यान की अवस्था मे

आसुत । यह में सुन्य ओर हुन्य के प्रहल हो जाने में, पहले ही सीमनश्य-रोमीनश के शस्त हो जाने में सुन्य-राय से रहित उचेक्षा स्वत्तिवरिष्ठाड वाले चतुर्थ प्यान को प्राप्त ही श्रिहार कर रहा था .।

आयुष्मान सारिपुत्र के अहदार ।

८ ५. आकास सुत्त (२७ ४)

आव ह्यानन्त्यायतन की अवस्था में

निक्षुओं । यह में रूप-मञ्जाकां बिर्जुङ समितिमगण कर, प्रतिप्रमण के अस्त हो जाने से, गानास-सञ्जाके मन में न आने से, 'आकाण अनन्त है' ऐसा आकाणानन्यायतन को प्राप्त हो बिहार कर रहा था।

आयुप्ताम् सारिपुत्र के अहङ्गार ।

## ९६ विञ्जाण सुत्त (२७ ६)

विज्ञानानस्यायतन की अवस्था में

ं शक्ता । यह में आफायान≂पायतन का विद्कुल समतिक्रमण कर, "बिद्यान अगन्त है" पैमा विज्ञाननस्वायन्त की प्राप्त ही बिद्धार कर रहा था ।

आयुप्तान् सारिपुत्र के अहद्वार ।

#### ६ ७ आकिङ्चञ्ज सुत्त (२७ ७)

आकिञ्चन्यायतन की अवस्था में

आपुस ! यह में विद्यानामस्यायतम का विष्कुल समितिकमण कर, "कुछ महीं है" ऐसा जाकितम्यायतम को प्राप्त हो विद्यार कर रहा था।

भायुष्मान् सारिषुत्र के अहक्कार ।

§ ८, नेवसञ्ज सुत्त (२७ ८),

नैवसंहानासंशायतन की अवस्था मे

भावुस ! यह में आकिण्चन्यायतन का बिल्कुल समितिक्रमण कर नैथसञ्जानासञ्जायतन को मार हो विहार कर रहा था ।

आयुक्सान् सारिवत्र के अहद्वार ।

# सातवाँ परिच्छेद

## २७ सारिपुत्र-संयुत्त

## ९१ विवेक सत्त (२७ १)

प्रथम स्थान की अनुसार में

एक समय आयुष्मात् सारिपुत्र शावस्ती में समाचपिण्डिक के काराम जैतसन में विदार करते थे।

तक पूर्वाक्क में व्यक्तुव्यान् सारियुत्र पहन और पात्रवीवर के बावस्त्री में सिहादन के किने पेंडे ।

मिछादन से कीट भोजब कर कवे पर दिन के विदार के लिपे वहाँ सन्धवन है वहाँ गये। जञ्जवम में पैर किसी कुछ के भीचे बैठ गये।

तव संस्था समय माञ्चामान् सारिपुत व्याग से उठ वहाँ अमाधारिष्टक का माराम बेठवन है वहाँ साथे ।

मायुरमान् भानन्त्र ने जायुष्मान् चारियुत्र को तृर ही संबादे देखा। देलकर व्ययुष्मान् चारियुत्र संकदा "बादुस मारियुत्र! व्यपकी इत्त्रियों बहुद प्रश्रक हैं श्रुव्य की कारित वसी स्रुद्ध हो रही है। आज वाप कैसे विदार कर रहे थे ?

चातुमः । यह में कामा से विशिष्क हो पाप धर्मों से विशिष्क हो विदार्कवाके विधारवाके नवा विशेष्ठक मी तिसुता वाके मध्यम प्याण का काम कर विदार करता था। बायुसः ! तक मी वह नहीं समझ रहा या कि में सबस प्याण को बाह कर रहा हूँ या सथम प्याण को बाह कर किया हूँ या स्थम प्याण में दर रहा हूँ।

ध्यक्षप्पान् सारिपुत्र के बहुद्वार अमझार, आप बीर अनुसार बहुत पहले ही नह ही जुने से । इसकिये जनको इसका भी पता नहीं था कि मैं प्रथम न्यान को प्राप्त कर रहा हूँ, या मयम ज्वान को प्राप्त कर किया हूँ, या प्रथम स्थान से उठ रहा हूँ।

#### § २ अधिस**म्फ सुत्त** (१७ २)

क्रितीय प्यान की अवस्था में

भावस्ती ।

[प्रीकर ]

आपुरा! वह में जिसकें जीत विश्वार के साम्य हो जाने सं, आप्यास मंत्रसाव विश्त की ननामता स्थितके अभिकार समाधिक सीतिसुर कार्य दिसीव प्यान मात्र हो विद्यार नर रहा या। व्यवस्थात स्वी नद नदीं समस रहा था कि ही दितीव प्यान को भास कर रहा हैं। या दिसीन प्यान को मास कर किसा हैं। या दिसीय प्यान के कर दूरा हैं।

मानुष्माम् मारिपुत्र के बहुद्वार 🚚

## § ३. पीति सुत्त (२७३)

वतीय ध्यान की अवस्था में

श्राचस्ती'''।

आनुस । यह में प्रांति से ओर विराग से उपेखा रखते हुये विहार कर रहा था-विसे पणिडत छोग कहते हें कि उपेक्षा के साथ स्मृतिमान् हों सुख्यपूर्वक विहार करता है उस तृतीय ध्यान की प्राप्त हों विहार कर रहा था ।

अायुष्मान् सारियुत्र के अहद्वार ।

s ४. उपे**क्छा सु**त्त (२७ ४)

चतुर्थ ध्यान की अवस्था मे

आवुत ! यह में खुर ओर हु के प्रहल हो जाने से, पहले ही सीमनस्य-दीर्मनस्य के शस्त हो जाने से सुरान्ह ल से रहित उपेक्षा स्वतिवरिक्षद वाले चतुर्व प्यान को प्राप्त हो विदार कर रहा था ।

आयुग्मान् सारियुत्र के अहङ्कार ।

s ५. आकास सुत्त (२७ ४)

. आव द्यानस्यायतन की सबस्था में

निक्षुक्षी । यह में इत्य-साझा का विक्कुछ समितिकमण कर, प्रतिचसझा के अस्त हो जाने से, गानासम-साझा के सन से न आने से, 'आकाश अनन्त हैं' ग्रेसा आकाशानस्व्यायतन की प्राप्त हो बिहार कर रही था।

आयुक्सान् सारिपुत्र के अहङ्कार ।

६ ६ विङ्ञाण सुत्त (२७ ६)

विशासानश्यायतन की अवस्था में

आहुस । यह में आफाशानन्यायतन का विव्हुङ समतिक्रमण कर, "विज्ञान अगन्त है" ऐसा विज्ञानानन्यायतम की प्राप्त ही विहार कर रहा था ।

भाग्रदमान सारिप्तत्र के अहङ्कार ।

८ ७ आकिञ्चञ्ज सुत्त (२७ ७)

आकिञ्चन्यायतन की अवस्था में

आसुस ! यह मैं विज्ञातानस्थायतन का बिल्कुल समितिकमण कर, "फुळ नहीं है" ऐसा माकिन्नन्यायतन को प्राप्त हो विहार कर रहा था।

भागुष्मान् सारिपुत्र के अहङ्कार ।

§ ८, नेवसञ्ज सुत्त (२७८),

नैवसवानासंशायतन की अवस्था मे

आतुस । यह में आकिल्वन्यायतन का विरक्तुरु समतिकमण कर नैवयश्रानासज्ञायतन को भास हो विदार कर रक्षा था ।

आयुप्सान् सारिषुत्र के अहङ्कार ।

## §९ निरोध सत्त (२७ ९)

### र्धंडावेदियसनिरोध की अवस्था में

मानुस ! यह मैं नैवर्सकामार्गजायतन का विश्वक समितिकमण कर संज्ञावेदयितिनिरोध को मास हो विद्वार कर रहा था ।

मासुप्पान् सारित्रत्र 🕏 भडतार ।

## १ १० स्विम्सी स्व (२७ १०)

भिक्ष घमप्रयक्ष महार प्रद्रण करते हैं

एक समय भायुष्मान् सारिपुत्र नाजगृह में बेखुवन कछम्बक निवाप में विदार करते थे। दव अत्याप्ताम् सारिपुत्र वृद्धाह समय पहण और पात्र बीवर के राजधार में मिश्रासन के सिवे परे। राजपुर में हार-द्वार पर शिक्षा के उस मिक्षाब को एक दीवास से कमे बैठकर ला रहे थे। तर दाविसकी परिवाजिका नहीं भाषप्मान सारिएत ये वहीं बार्ड और बोली "अमन ! शीचे हैंड किम क्यों का का है ह

बहन ! में बीचे हुँद किय नहीं का रहा हूँ ।

भमम ! तो अपर हाँव करके पता रहे हा ? बहन ! में करर मेंह करके भी नहीं सा रहा हैं ।

ममज ! ता चारों भार में इ समा पुगानर सा रह हा ?

बहन ! में चारों और ख़ैंह धुमा धुमानर भी नहीं गा रहा हूँ ।

मनज ! जब तुम सभी में 'नहीं कहत हा ता मका फैस रत रह हो ?

बहुत ! का भ्रमण या जाहरण परमुक्तिया विरहतीय विद्या के मिथ्या जाजीय से जीवन विद्यार करते हैं ये मीच मुँह करके लानेवाले कहे जाते हैं।

बहन ! जो धमन था माहान नक्षमनिया के निकाजीय ता जीवन निवाह करत हैं वे उत्तर मैंड करके सरामचारे कहे कर है।

बहन ! जो असल वा माहाण वृत्त के काम क जिल्लाकीय स बीक्य निर्वाह करते हैं। ये दिसाओ में हैंद करक न्यानशाने बड़े जाते हैं।

बहन । यो असन या माझम अहनिया के विष्यातीन छ। जीवन निर्वाह करते हैं व विनिधानों में मेंद्र करके गाने बाल कह असे हैं।

वहन | इनमें में किमी तरह जीवन निवाह नहीं बरना । में वर्म-पूर्वक मिझाइन करक साता हैं तर शाबिमुनी परिमाजिका राजगृह में एक गर्शा में दूसरी गली और पृक्ष चीराहे से वृत्तरे काराहे वर मा माकर करने कारी-मानवतुत्र समान पार्मवृक्त जाहार महत्र करने हैं। साववतुत्र अनिन्य अकार महत्त करत हैं । शाक्यपुत असमा को शिक्षा था ।

सारिवय-संयुक्त समाप्त

# आठवाँ परिच्छेद

## २८. नाग-संयुत्त

§ १. सुद्धिक सुत्त (२८ १)

चार नाग योनियाँ

श्रावस्ती'''।

भिश्वर्थाः । नाम-योजियः चार ऐ । कान मां चार १ (१) अण्डज नाग, (३) पिण्डज नाग, (३) मानेज्ज नाग, (৬) প্রথোলিক নাग । নিধ্রুগা । বার্চ আবে দাস-योजियों है ।

§ २. पणीततर सुत्त (२८. २)

चार नाग-योनियाँ

श्राचस्ती ।

भिक्षको । नाम-योनियाँ धार है।

भिक्षको । अवदान नारा से ऊपर के तीन नारा ऊँचे हैं।

भिक्षुओं । अव्हज और पिण्डज नाम में कपर के हो नाम केंचे हैं।

भिक्षुओ । अण्डल विण्डल आर सस्बेटज नाग से ओपपातिक नाग ऊंचा है।

§ ३ पठम उपोसथ सुत्त (२८.३) कछ नाग उपोसथ रखते हैं

आवस्ती

जान रता। । तव, कोई मिक्षु जहाँ भगवान् थे वहाँ आया, बोर भगवान् का अभिवादन कर एक ओर सेट गया। एक और वेट, वह मिक्षु भगवान् से बोला, "भन्ते। क्या हेतु = प्रत्यय है कि कुछ अध्वक्त नाग उपोक्षय स्पत्ते हे और अच्छे तसीर वाले हो जाते हैं ?

भिक्षु ! कुछ अण्डज नागां के मन में पेसा होता हैं, "हम पहले शरीर में, बचन में और मनसे

पुण्य-पाप करने वाले थे, सो हम मरने के बाद अगढज नाग-योनि में उत्पन्न हुये।

ती, हम अब दारीर, क्वन ओर मन से खदाबार करें, जिसमें मरने के बाद हम स्वर्ग में उत्पन्न ही सुगति को प्राप्त करें।

मिक्कुओ ! यही हेतु = प्रत्यव है कि कुछ अण्डन नाग उपोसन रखते हैं और अच्छे दारीर चाले हो जाते हैं।

§ ४-६, दृतिय-तृतिय-चतुत्थ उपोसथ सुत्त ( २८, ४-६ )

कुछ नाम उपोसथ रखते है

भन्ते ! क्ष्मा हेतु = प्रत्यम है कि कुछ विष्टज नाम , सस्त्रेदिक नाम ? श्रीपरातिक नाम----

### § ७ पठम तस्स स्त सुत सुत्त ( २८ ७ )

#### साग-गासि में सत्पद्ध होते का कारण

भावस्ती ।

पुक्ष कोर बट वह सिक्षु समावास् स बोला 'शन्तां । क्या हेतु = प्रथम है कि कुछ कोम प्रश्य के बाद करवज कार-बोनि में उत्पक्त होते हैं ?

सिम्ला ! इक कोग सरीर पणन भीर प्रमास पुरय-पाप करने बाके दांत हैं। वे सुनते हैं—स्पदत बाग दांच पु सुनद कार सुन्नी दोते हैं। बता उनके मनसे दीता हूं "करें ! इस सरने के बाद अध्यक्ष कार्ती में तनक कोई।

वे मरने के बाद अवदय भागों में उत्पन्न होते हैं।

सिद्धापदी हेत = प्रत्यव है ।

8 ८१० दतिय-त्रतिय चतस्य तस्स सत्त सत्त (२८ ८-१०)

#### भाग-योगि में संपद्म होने का कारण

मन्ते }क्या हेतु=प्र पत्र है कि कुछ कोग सहने के शह पिण्डत संस्थेदक औरपाठिक कार-पोति में उपस्क होते हैं ?

#### § ११ पठम दानुपकार सुच (२८ ११)

#### नाग-मोनि में उत्पद्म होने का कारण

इसके मन में पंसा दाता है। करे ! इस भी मरने के बाद बन्दात नाग-वीनि में बन्दा की !? बद क्षत्र पान बख सवारी आखा गान्य विकेदन सच्चा पर प्रदीप का दान करता है। बद मरने के बाद बन्दात बाग कीने से जनका होता है।

सिश ! वडी डेत = प्रत्यव है ।

ई १२-१३ दतिय-तिय-चतस्य दानुपकार सक्त (२८ १२-१४)

#### साम-भारि में उत्पन्न होत का कारण

'वह सरम के वाद पित्रहत जास दोनि सें संस्वदृत वास-सामि सें भीपपातिक नाग-चावि से बराक होता है।

नाग संयुक्त समाप्त

# नवाँ परिच्छेद

# २९. सुपर्ण-संयुत्त

## § १. सुद्धक सुच (२९ १)

चार ख़पर्ण-योनियाँ

थायस्ती ।

मिश्चलो । चार सुपर्ण-योनियाँ हैं। कौन स्वी चार १ अण्डज, पिण्डज, सस्वेटज, और श्रीप॰ पासिक ।

> § २ ह**रन्ति सुत्त** (२९ २) इ.र. ले जाने हैं

थावस्ती "।

मिक्कुओ । अण्डल सुपर्ण अण्डल नागों को हर हो जाते हैं, पिण्डल, सत्वेटल और औपपातिक को नहीं।

पिण्डज सुपर्ण अण्डज और पिण्डज नागां को हर छे जाते हैं, सस्त्रेवज और औपपातिक को नहीं। सस्त्रेवज सुपर्ण अण्डज, पिण्डज और सस्त्रेवज नागों को हर छे जाते हैं, औपपातिक को नहीं। औपपातिक सुपर्ण सभी छोगों को हर छे जाते हैं। जिक्षुओं। यही चार सुपर्ण-मानियों हैं।

> § ३. पटम द्वयकारी सुत्त (२९ ३) स्रुपर्ण-योनि में उत्पन्न द्वोने का कारण

आवस्ती

पुक्त और बैठ, बह भिक्षु भगवान् से बोला, ''भन्ते । क्या देतु=प्रस्थय है कि कुछ कोन मरने के बाद अपदक्त सुपर्ण बोगि में उत्पन्न होते हैं ?

मिश्च ! कुछ लोग सरीर, वधन और मन से युण्य-पाप करने बाले होते हैं। वे युनते हैं—अयरख युग्यं टीघाँयु, युन्दर और सुची होते हैं। जय , उनके मन में होता है, "अरे ! हम मरने के बाद अपडल सुग्यों में उत्पन्न होयें।

वे सरने के बाद अण्डज सुषणों में उत्पन्न होते हैं।

भिक्षु <sup>।</sup> यही हेतु=अत्यय ।

§ ४-६, दुतिय-तिय-चतुत्य द्वयकारी सुत्त (२९ ४-६)

सुवर्ण-योनि में उत्पन्न होने का कारण

श्रावस्ती

मन्ते । क्या हेतु=प्रात्यय है कि क्षुण्य लोग मरमे के बाद पिण्डल , यन्वेटल , ऑपपातिक सुपर्ण योगि में उत्पन्न होते हैं ? 8 ७ पठम दानुपकार मुच (२९ ७)

वान भावि वेन से संपर्ण योगि में

उसके सक में पूसा होता है 'वरे ! इस भी सरने के बाद अध्यक्ष सुपर्ण-पोनि में उत्पन्न हों'।

वह अब पान वस्त्र सवारी आका शन्य त्रिकेपन अभ्या वर प्रदीप का दान करता है। वह सरने के बाद अपहर सुपर्ण कोनि में उत्पाद होता है।

सिक्ष ! पद्दी देत्र≕प्रस्वय ।

६ ८-१ • द्विय-तिथय चतुत्थ दानुपकार सुत्त ( २९ ८-१० )

वान भावि दने से सुपर्ण थोनि में

बहु मरण के बाद पिय्कब सुपण-योजि में संस्थेवस सुपण सीनि में सीपपातिक स्वय-तीनि में बताब होता।

सुपण संयुक्त

# दसवाँ परिच्छेद

## ३०. गन्धर्वकाय-संयुत्त

#### ६१. सुद्धस सुत्त (३०१)

गन्धर्वकाय देव कौन है ?

श्राबस्तीः ।

भिक्षको । सन्धर्वकाय देवों के विषय में कहेंगा। उसे सुनो ।

भिक्षओ । गन्बर्धकाय देव कांन से है १

मिश्रुओं ! मुख्यान्य से बास्य करने बाले देव हैं । सारगान्य में बास्य करने वाले देव हैं । सुरुषों एकडी के गान्य में बास्य करने बाले देव हैं । एक्ट के गान्य में बास करने वाले देव हैं । पपटी के गान्य में । पत्तों के गान्य में । कुल के गान्य में । कुल के गान्य में । ग्रस्थ ने गान्य में । गान्य के गान्य में ।

भिक्षको । यहाँ गन्पर्यकायिक देव कहलाने हैं।

## § २ मुचरित सुत्त (३० २)

#### ग्रह्मर्थ-ग्रोनि में उत्पन्न होने का कारण

थावस्ती ।

एक ओर बैठ, वह सिक्षु अगवान से बोला, "भन्ते ! क्या हेतु=अल्पच है कि कोई यहाँ सरकर गन्धवंक्षायिक नेदों के बीच उपनक होता है ? सिक्षा कोई हारीर, बचन ओर सन से सडाचार करता है । वह कहीं सुरू पाता है—गन्धवं-

कापिक देव दीवांचु, सुन्दर और सुखी होते हैं।

त्तव, उसके मन में ऐसा होता है, "कोरे! सरने के बाट में भी गन्यपंकायिक देवों में उत्पक्त होकें। बहु टीक में मरने के बाद गन्वपंकायिक देवों में उत्पन्न होता है।

मिछा । यही हेत,=प्रत्यय है कि कोई यहाँ मरकर गन्धर्यकायिक देवें। के बीच उत्पन्न होता है।

## § ३. पठम दाता सुत्त (३० ३)

#### दान से गन्धर्व-योनि में उत्पत्ति

थावस्ती

उसके मन में यह होता है—जरे ! मरने के पाट मैं सूलगन्य में वास करनेवाले टेवो के बीच उत्पन्न होड़ें। वह मूलगन्यों का वान करता है। वह मरने के वाट मूलगन्यों में वास करने वाले टेवो के बीच टरपड़ होता है।

### ६ ४-१२ दाता सुच (३० ४-१२)

#### जाम से सलार्थ-ग्रोति में सत्पनि

यह सारतभ्यों का बाल करता है। यह मरने के बाद सारतभ्यों में वास करने बाध देवों के भीय उत्पन्न होता है।''

बार बायशी के राज्यों कर साथ बराता है।

बह बाद्ध के गर्न्सों का वान करता है।

पपद्रीके ।

पर्लीके ।

प्रकार के 1

पूर्व के १ यह के १

स्य के ।

सम्बद्धे ।

मिक्समो ! वही हेतु=पत्मव ।

#### § १३ पठम हानपकार सत्त (३० १३)

#### दान से गम्बर्व वोति में रत्परि

धावस्ती

मन्ते ! क्या हेतु=प्रायव है कि कोई वहाँ भर कर भूक्यान्य में वाल करने वाले देनों के वीच क्रमच कोला है ?

वसके नाम में ऐसा होता है—भरे | मरने के बाद में मुकान्या में बास करने बाके देखीं के बीच करना होतीं। वह बाक पान बाक सवारी का दान करता है। वह मरने के बाद मुकान्य में बाम करने बाके देखीं के बीच करना होता है।

मिश्र ! यही हैत=मत्यम ।

वान से गम्बव-पोनि में चत्पक्ति

ि प्रेप इस गान्वकों के साथ भी क्याकर समग्र केना न्यहिने ]

गन्धवैकाय-संयक्त समाप्त

# ग्यारहवाँ परिच्छेद

## ३१. वलाहक-संयुत्त

## § १. देसना सुत्त (३१. १)

#### वलाहक देव कौन हैं ?

श्रावस्ती ।

भिक्षुओं । वलाहककाबिक देवा के विषय में कहूँगा। उसे सुनी ।

मिक्षुओ। वलाहककायिक देव कीन से हैं ? भिक्षुओ। दाति वलाहक देव हैं। जण वलाहक देव हैं। अभ्र वलाहक देव हैं। बात वलाहक देव हैं।

मिश्रुओ । इन्हीं को वलाहककायिक देव कहते हैं।

### ६ २. सुचरित सुत्त (३१ २)

#### बलाइक योनि में उत्पन्न होने का कारण

मिश्च ! कोई झरीर, बचन और सन से सराचार करता है । वह कहीं खुन रुंता है । उसके मन में ऐसा होता है । मरने के बाद वह बराहककायिक देवों के बीच उत्पन्न होता है ।

सिश्च! यही हेत्र = प्रत्यय ।

## § ३. पठम दानुपकार सुत्त (३१३)

### दान से बलाहक-योनि में उत्पत्ति

पद अल, पान, वस्त्र का दान करता है। वह सरने के बाद क्षीत बळाहक देवों के बीच उत्पन्न फोला है।

§ ४-७. दानुपकार सुत्त (३१ ४-७)

## दान से वलाहक-योगि में उत्पत्ति

सप्ण वलाइक देवां के शीच उत्पन्न होता है।

अभ बलाहक देवी के बीच उत्पन्न होता है।

वात थलाहक देवां के बीच उत्पन्न होता है।

वर्षा वलाहक देवों के बीच उत्पन्न होता है।

## § ८ सीत सुत्त ( ३१ ८ )

शीत होने का कारण

थावस्ता । एक ओर बैठ, यह श्रिश्च भगवान् से बोला, "भन्ते । क्या हेतु = प्रत्यय है कि कर्मा शीत होता है ?! सिक्षु ! दक्ति बखाहक मास के देव हैं। बनके सन में अब वह होता है—हमकोग अपनी रिठ से समय करें तब बनके सब में पेसा होने से अंति होता है।

इ.९ सण्हस्य (३१९)

गर्मी होने का कारण

भिशु देख्या थ्याहक स्था के दंव है।

§ १० अब्स सुत्त (३१ १०)

वावस्थ होते का कारण

मिश्र ! अब वखाइक न स के देव हैं। \*\*

हु ११ पाष सुच (३१ ११)

वायु होने का कारण

सिम्नु ! बात वकाइक नाम के देव हैं ।

§ १२ वस्स सुच (३१ १२)

वर्षा होने का कारण सिक्ष ! वर्षा क्वाहक शास के तेव हैं।

वस्राहक संयत्त समाप्त

# बारहवाँ परिच्छेद

## ३२. वत्सगोत्र-संयुत्त

**६१. अञ्जाण सुत्त (३२**१)

अज्ञान से माना प्रकार की मिथ्या दृष्टिया की उत्पत्ति

#### शास्त्रज्ञी ।

त्तव, वस्सनोश परिज्ञाजक जहाँ भगवान् थे वहाँ आया, और कुगल क्षेम पूछ कर एक ओर बैठ गया।

एक और बैठ, वस्तागीय परिवाजक मगजान् से बोला, "गौतम ! क्या हेतु—मस्वप है कि ससार में इतनी अनेक प्रकार की प्रिप्या-दृष्टियों उपच होता है— "लोक शास्वत है, वा लोक अशास्त्रत है। लोक सान्त है, या लोक अनन्त है। जो जीव है वहां सरीर है, या जीव दुसरा और सरीर दूररा है। मरीने के यात तथात होता है, या मरने के बाद तथायत नहीं होता है। मरने के बाद तथायत होता है भी जीर नहीं भी होता है। मरने के बाद तथायत नहीं होता है। या हो होता है। मरने

वस्त <sup>1</sup> रूप के अञ्चान से, रूप-समुदय के अञ्चान से, रूपनिरोध को अञ्चान से, रूप-निरोधगामिनी प्रतिपदा के अञ्चान से, ससार में इतनी अनेक अकार की मिथ्या दृष्टियाँ उत्पन्न होती है—"लोक शाहबत है ।

#### § २-'-, अञ्जाण सुत्त (३२ २-५)

#### अह्यान से मिथ्या दृष्टियों की उत्पत्ति

यस्त । घेउना के अज्ञान से ।

दस्ता । सङ्काके अज्ञान से ।

बल्ल । संस्कार के अज्ञान से ।

यास । विज्ञान के अज्ञान से, विज्ञान-समुद्रण के अज्ञान से, विज्ञान निरोध के अज्ञान से, विज्ञान-निरोधवामिनी प्रतिपदा के अज्ञान से, ससार में इवनी अनेक प्रकार की सिच्या-दृष्टियाँ उत्पन्न होती हैं—"कोक साम्रत हैं ।"

### § ६-१०. अदस्सन सुत्त (३२ ६-१०)

अटर्जन से मिथ्या-दिएयों की उत्पत्ति

### आवस्ती ।

एक ओर बैठ, चत्त्वमोत्र परिचाजक भगवान् में वोला, गीतम ! क्या हेतु≔प्रत्यय है कि ससार में इतनो अनेक प्रकार को सिप्या-टिप्यॉ उत्पन्ने होती है—"लोक साश्वत हैं∙ " ?

वत्सारूप के अदुर्शन से । वेदना । भंजा । संस्कार । विज्ञान ।

```
६ ११-१५ अनिससमय सच (३२ ११-४५)
                                              क्राप्त न होने हैं जिच्छा-क्रप्रियों की उत्पत्ति
भागमं
                            बरस । क्रम में अभिसमय नहीं होने स
                            बला । बेबना में ।
                            क्रम । श्रेक्त में ।
                            बारद विशेषकात्र कें
                             बच्चा विकास में।
                             ६ १६-२० अनुस्रोध सप्त (३२ १६-२०)
                                 मुखी प्रकार न जानने से मिच्या प्रशियों की उत्पत्ति
  भागमी
                              बला ! अप्य में अनुकोध नहीं दीने से ।
                               बरस ! बेदबा में "।
                               क्रम । संक्रम में ।
                               बन्ध । संस्कार में ।
                               बल्स क्रिकार में ।
                                 8 २१ – २५ अप्पटिवेध छत्त (३२ २१ – २४)
                                                      अवस्थित ए होने से क्रिया-हरियाँ
           क्ता ! क्य के बारसिकेश से विकास के धारतिकेश से ।
                                  ८ २६-३० असऋक्तम सच (३० २६-१०)
                                           अभी ब्रहार विचार न करने से मिष्णा श्रीयाँ
           'सतर । कर के असलकाय से विकास के असलकाय सं।
                               § ३१-३५ अनुपलभक्तम सच (३२ ३१-३५)
                                                              अनुपद्धसाय से मिच्या दक्षियाँ
             बत्त । क्य के अनुपद्धान से विद्यान के अनुपत्रयाय से ।
                             8 ३६-४० अपच्छपलक्क्षण स्त (३२ ३६-४०)
                                                             शत्रस्पुपससम्ब से ग्रिच्या-सप्तियाँ
                बरस ! कप के बायस्थयक्रमांग से विज्ञान के बावस्थयक्रमांग से ।
                                   ६ ४१ ४५ असमपेक्सच सत्त (३२ ४१-४५)
                                                                भसमग्रेसन से विश्वा रहियाँ
                बस्ताकपके मसमावेशक से विकास के ।
                                 ह ४६ ५० अपच्युपेक्सुण श्रम (३२ ४६-५०)
                                                            अप्रस्थाप वेक्षण से विषया-ररियाँ
            म्बर्ग्स क्रिय के अञ्चलोधनेक्षण के विशास के
```

#### ह ५१ अपन्यसम्बद्धम्य सूत्त (३२,५१)

### अग्रत्यान वर्म सं मिथ्या राणियाँ

धावस्ती ''।

्र सब, सरस्तोध परिद्यालक जनाँ भगतन् वे वहाँ आया, जीर कुशन क्षेम पूछकर एक ओर

रैंड मथा। एक शोर चैंठ, मध्यमांन पन्तिवाह भगवान में थोटा, "गीवम ! क्या हेतु=प्रत्यय है कि संसार

में इतनां अनेवा प्रकार की क्षिण्या-परियाँ ज्यान रोती रै—''रोक प्राव्यत है' ।'' यम्म ! इत्य से अप्रायक्षण में में रूप नशुष्य के प्राप्यक्ष कर्म से, रूपनिरोध के अप्रयक्ष कर्म से, रूप निरोधगामिनी प्रनिष्या है अप्रायक्ष कर्म से इतनी अनेठ प्रकार की मिण्या-रिष्टियाँ उपन्न होती है ।

§ ५२-५५ अवच्चुवेक्सण सुत्त (३२. ५२-५५)

## शप्रत्यक्ष कर्म से मिथ्या-रिप्टयॉ

धासा प्रेटना के अप्रकास दमें ने ।

• यस्स ! मका में अवस्यक्ष वर्ग स

धन्म ! सक्तार के अप्रयक्ष वर्गम ।

"याम् । विज्ञान के अध्यक्ष कर्म से ।

वहसतीय संयुक्त समाप्त

# तेरहवाँ परिच्छेद

## ३३ ध्यान संयुत्त

## § १ समाधि-समापत्ति सत्त (३३ १)

#### च्याची चार हैं

भावस्त्री ।

मिश्रका । प्यापी चार हैं। सीन ने चार ी

निशुक्ता [आराज जार है। वान ज वार ] निशुक्ती ! कोई प्याची समाचि में ममाचित्रक होता है समाचि में समाचित्रकार गर्ही ! मिशुक्ती ! कोई प्याची समाचि में समाचित्रकार होता है समाचित्रकार गर्ही ! निशुक्ता ! कोई प्याची न समाचि में समाचित्रकार होता है न समाचि में समाचित्रकार । सिशुक्ती ! काई ज्याची समाचि में समाचित्रकार भी होता है और समाचि में समाचित्रकार भी ।

भिद्यभो ! का प्याची समाचि में समाचि नुषक भी होता है और समाचि में समापत्ति नुषक

भी बड़ी हुन बार प्यापियों में लक्ष=क्षेद्र= सुरक्ष=क्ष्यमच्यावर ह ।

सिक्षको क्षेत्र भाष सन्ध्य नृष्य से नृष्य हो इसी समयपन मक्काव से भी और भी से भी
सब्द करना महाना काना है। निश्चको ! क्षेत्र को व्यापी समापि में नमाधि-क्याक भी डोता है

## भीर समाचि में समाचिक्त-इशकंत्री वही इत्र यार ज्याविया में नग≕केंड=ग्रुग्य≕येचस=श्रवर है। \$२ ठिखि सुच (११ )

#### न्धिति कुशस स्थायी थेए

भायम्ति ।

मिशुभा । प्याची चार है। बान म चार !

भितुओं। बाई रवाबी समाधि में समाधि वृद्धान द्वारा है समाधि में स्थिति वृद्धान नहीं। मितुभी। वाई रवाबी समाधि में रिकाल कुष्यन दोता है समाधि-कृष्यन नहीं। भितुभी। काई रवाधी न समाधि में समाधिकाल दाता है जात न समाधि में रिवतिकृतन। निकाली। काई रवाधी समाधि में समाधिकाल मी और समाधि में रिवतिकृत्यन में होता है।

भिगुणे | जो प्यापी जमापि में समाधिकुराज भी आहे समापि में स्वितिहमस भी होता है। वही इस बार प्यापियों में सम्बन्धेयळक्याच्याक्याक्य का सामा है।

मिश्रणी ! जर्मगाव से क्या ।

#### <sup>है</sup> वै युद्वान सुप (३३ ३)

प्युरधान कुशास ध्यायी अनम

मिद्युभी ! म्लाबी बार शारे हैं । बाब स बार १

भिभुवां ! कोई व्याची गमापि 🎚 समाविष्ट्रमान वीगा है। समावि 🖁 स्कुष्टाबहुराम नहीं ।

भिक्षुको ! कोई प्याची समाधि सः व्याचानपुरात तेवा है, समाधि में समाधिपुरात नहीं। निष्त्री ! कीई त्यायी व समाधि में स्तुतानकुमल तीना ते, न समाधि में समाधित्रश्रह । विश्वको ! कोई प्यापी समाधि में समाधिर कर भी होता है, कोर समाधि में व्याधानकराल भी। भिक्षपो ! जो प्याची समाधि से समाधित शत भी होता है, और समाधि में व्युत्यानकशाल भी. परी हत पार ध्यायियो से अव='तेष्ट=स् म=उत्तम=प्र सर गाना है।

## १ ४. कल्हित सत्त (३३ ४)

कल्य कवाल ध्यायी श्रेष्ट

थायस्त्री ।

भिक्षुओं। ध्याणी बाद होते हैं। गाद से बाद? भिक्षुओं ! कोई ध्यायी समाधि में समाधितुकाल होता है, समाधि में कल्य-दुवाल नहीं । भिक्षतो । कोई ध्यायां समाधि से कल्बहराल होता है, समाधि से समाधिकुराल नहीं । भिक्षुओं । जोई ध्यायों न समाधि में समाधि गुगल होता है, ओर न समाधि में क्ल्यकुवाल । भिक्षुओं। कोई श्यारी समात्रि में समाधि उनल भी होता है और समाधि में बल्यकारक भी। भिक्षको । नो ध्यायी समाधि में समाधिकुतल भी होता है, और समाधि में करवकुत्तक भी. यही इस चार ध्यायियों से अब = अेच्ड ासि हैं।

भिक्तओं । जैसे, गाय से इप ।

## § ५ आरम्मण सुत्त (३३ ५)

आलम्बन ऊशल ध्यायी थेए

श्रावस्ती '।

भिद्धभो । चार ध्यायी ।

मिश्रुओ ! कोई ध्यार्था समाधि में समाधिकुशक होता है, समाबि में आरूम्यनकुशक नहीं । मिक्षुओं। जो प्यायी समाधि में समाधिकृत्रल भी, और समाधि में आलस्थनकुशक भी हैं, वे ही इन चार प्यायियों से अग्र=धेष्ठ ।

§ ६, गोचर सत्त (३३ ६)

गोचरकुश्रुष्ठ ध्यायी

चार ध्यायी । भिक्षुओं । कोई ध्यायी समाधि में समाधिकुशल होता हे, समाधि में गोचरकुशल नहीं । भिञ्चली ! जो ध्यायी समाधि में समाधिकुशल भी, और समाधि में गोवरकुशल भी हैं, वे ही

ध्य

६ ७. अभिनीहार सुच ( ३३. ७ )

अभिनीहार-कुञ्चल ध्यायी

निक्षओं । कोई ध्वाबी समाधि में समाधिकुवाल होता है, समाधि में अभिनीहार-कुवाल नहीं । ।

विद्युक्त । आ भ्यार्था समाधि में सभाधिकृतक भी भार समाधि में समिमीहार-कृतर मी है यंती स्थाः ।

गीरय करनेवाला प्याची

'चार व्यापी ।

मिशुको ! कोइ प्याची समाधि में समाधिकुशक होता इंसमाधि में गीरण करनेमाका नहीं ! मिशुको ! आ प्याची समाधि में समाधिकुशक सी, आर समाधि में गीरक करनेमाक भी हैं वे ही 'काम ।

> ६९ सातम सुन्न (३३ ९) निरम्बद समा रहतेयासा स्वापी

चार प्याची ।

मिनुमा ! कोई प्याची समाधि में समाधिकुष्ठक दावा है समाधि में सावत्वकारी नहीं।

भिद्युक्ता ! को प्यापी समाधि में समाधिहराल भी दोवा दं भीर समाधि में आसपदारी भी वहीं अम≅बंद

> 8 १० मधाय सुच (३३ १०) सम्मक्ति स्वारी

स्थायकारा च्याय सिक्षुको १ जो व्यायी समाधि में समाधिकुशन मी हाता है। और समाधि में समायकारी भी

§ ११ निविसम (३३ ११)

रवाची स्तर है

धाषस्त्री ।

ਵਈ ਸ਼ਹ≥ਪੰਦ ।

'नार भागी ।

...

सिशुची ! कोई प्यार्थ जमापि में जमापिक्शम होता दे जमापि में रिपविक्रमस नहीं । बिशुको ! कोई प्यार्थ जमापि में ज्यितिक्सल हाना है अमापि में समापिक्सस नहीं ।

सिप्तुनी | कोई प्राची समाधि में म समावित्रपुत्रात्व क्षोता है। और व रिपरिप्रपात ।

ामपुष्पा | कार्य पराचा रामाच्या स्टब्स न्यावाच्या अन्य द्वारात द्वारा व स्थारा स्टब्स स्थार स्थार स्थार स्थार जिल्लामी | कोर्य च्याची समाच्या स्थारची स्थार स्थार

शिक्षुची । को रुपाणी समाधि में समापतिपूत्तन भी बोता है और रिपतिपूत्रन भी व भग्रस्थीहर ।

६१२ पृष्टान गुल (३३ १०)

श्यित कुणाम

ीं अंत्रभा हं के नवारी शक्तियाँ वे शक्तारिकृष्ण और काला है और अनुवासकृष्ण भी कर अपना ह

#### § १३ कल्लित सुत्त (३३ १३)

#### कल्य-कडाल

ं मिधुओं । जो ध्यायी समाधि में त्यमापत्तिकुतल भी होता है, और कल्यकुशल भी, वह भग्न ∙।

#### ८ १४. आरम्पण सत्त (३३ १४)

#### शालावन कहाल

" भिक्षुओं । जो ध्यायी समाधि में समापत्ति कुशल होता है, और समाधि में आरुस्यमकुशल भी, यह अग्रः ।

#### ६ १५ गोचर सुत्त (३३ १५)

गोचर-कशल •

" सिक्षुओं। जो ध्यायी समाधि में समापत्तिकुवाल होता हे, और समाधि में गोचरकुवाल भी, वह अप्तः।

#### ११६, अभिनीहार सत्त (३३, १६)

#### अभिनीहार-क्रशल

' भिक्षुओ ! लो ध्यायी समाधि में समापित्रेशल होता है, और समाधि में अभिनीहारकुशल भी. यह अस

## ८ १७ सक्कचसत्त (३३ १७)

गौरव करने में क़शल

भिक्षुओं ! जो ध्यायी समाधि में समापिक्ककल होता है, और समाधि में सरकृत्यकारी भी, यह अप्र ' 1

## ६ **१८ सातच्य सुत्त** (३३ १८)

निरन्तर छगा रहने वाला

भिद्धुको । को प्यायी समाधि से समापिक काल होता है, और समाधि में सासस्यकारी भी, वह क्षप्र''।

#### 8 १९, सप्पाय सुत्त (३३ १९)

सप्रायकारी

भिद्धको । जो ध्वाबी समाधि में समापत्तिकुशल होता है, और समाधि में सप्रायकारी भी, घर आम ।

### § २० ठिति सुत्त (३३.२०)

स्थिति-फुराल

चार ध्यायी । मिछुली ! कोई ध्यायी समाधि में स्थितिकुसल होता है, समाधि में स्युत्यानकुसल नहीं । मिछुली ! को ध्यायी समाधि में स्थिति कुशक होता है, और समाधि में स्युत्यानकुसल भी, यह अप्र । § २१-२७ पुरुषे आगत समन्ता सम (३३ ४ २१-२७)

[ दूसी तरह 'रिवति के साथ करणकुराक आसम्बन्दकार गांचर-कुरास धामगाहार सन्द्रस्यकारी सारायकारी के साथ भी समझ केंग चाहिने ]

§ २८–३४ पुद्धान सुच ( ३३ २/~३४ )

सिक्षुओं | कोई व्यापी समाधि में प्युत्वाल इशस्त्र होता है समाधि में कश्यकुशक गर्ही । [इसी तरह आकारम इसक गोजरकुशक अभिनीहोर कुशक संस्कृत्यकारी सावालकारी समाधकारी के साथ भी समझ केवा चाहियाँ।

§ ३५-४० करिलव सच (३३ ३ --४०)

सिक्षुचा ! कोई थावी समाधि में करवड्यक होता है समाधि में मास्मानकुराक नहीं।
[इसे ठाइ गोवाकुसक अमिनीहार कुसल सकुलकारी सातत्मामारी समाधकारी के साथ
भी समझ केना वाहिय |

§ ४१-४५ आरम्मण सच (३३४१-४५)

[इसी तरह गोचरकुक्तल अभिग्रेशस्त्रकाल सन्कृत्यकारी मालपकारी नवायकारी के साव मी समझ केंगा नाहिये ]

ु ४६-४९ गोचरसुच (३३ ४६-४९)

[इसी टाइ विमिनीहारकुक्तक सरहस्यकारी सातत्वकारी समायकारी के साथ मी समाप्त केवा चाहिये :]

§ ५०~५२ अभिनीद्वार सप्त (३३ ५०~५२)

[इस्रो तरह सत्कृत्वकारी सातत्त्वकारी सप्राथकारी के साथ भी समझ सेना व्यक्ति ]

§ ५३-४४ स**क्टच्य सु**च (३३ ५३-५४)

[ इसी तरह सातत्वकारी समावकारी के साथ भी समझ छेना वाहिये ]

§ ५५ सातच-सप्पाय सुच (३३ ५५)

भाषस्ती ।

ध्यायी चार 🕻

सिक्षको | प्याची चार है । काम से चार १

मिसूनो ! कोई व्यापी समावि में सन्तत्मक्रशी द्वादा द समावि में समावकारी वहीं ।

मिल्लामी ! कोई भागी समाधि म सप्राचकारी होता है साव-क्कारी वहीं ?

मिक्कमी ! कोई व्याची समाधि में व सालव्यकार्य होता है और न समायकारी !

सिद्युजी ! की<sup>ई</sup> व्याची समाधि में सातत्त्वदारी होता है बार सभावकारी भी ।

भिद्धानों | को काची समाधि में सालारकारी दोता है कीर समावकारी भी वह इन वार क्वापिनों में समान्त्रेय-अरव-अस्त्र-अवर होता है !

सिद्धनों किसे नाम से कुन बुक्त से कही वहाँ से सरकान अच्छन से की भी से अच्छ कच्छा सेता है। किस ही मिशुओं ] को ज्यापी सत्ताकि से स्वाताकर होता है और समस्वकारी भी नह इन नार पारियों में नाम-कोड-मुक्क-अपनावाद होता है।

मगवान् वेद बोछे । शंतुष्ट दोकर धन मिशुओं वे भगवान् के कई का बनुमीद्व किया ।

ध्याम संयुक्त समाप्त सम्बद्ध वर्ग समाप्त

## परिशिष्ट

## १. उपमा सची

अनाध ६२ **अरुधकार में जानेवाला प्रूप ८३** भवराधी चोर २३५ सम्मापवाछे स्थान का जक ८१ आकाश में चाँद १५० आकाश २७७ भागा की हेर २३९ लागका गद्धा २३५ आभाइवर देव ९९ भाम के गुरुष्टे ६८८ उरपन्न ३८२ ब्रह्मक क्षा सक्षा ३०८ ऊपर जामेबाङा प्रस्प ८४ कपर से नीचे काने बाका पुरुष ८४ एणिस्स १८ औपधि तारका ६४ अंक्रवी फेंक्नेबाळा २८७ केंद्रशाका खोपडी में सँग छिपाना ८ कञ्चली का पश्चिम २८८ कटी चास १०६ क्सद्य की माळ से पर्वत मधना १०७ फाल्तार पाथेय २३४ काम्सार-मार्ग का कुँआ २४२ कालानुसारी ३८८ केसर ३८५ क्रमहार का श्रमा ८५ **छन्हार का आँडा हो जिकला बरोन २२९** ष्टामार २३६, ३०६, ३८८ केला २९५ कोसल की धाली ५२ कीये को सींचना ३६% विष्यारी का गर्भ प्रत्य, २९०

48 48

गङ्गा मद्दी २७३, ३८२ रादगदासा हुआ सेघ ८७ शवगणले मेच की विकली ०> गाडी की हाल ९४ गाय का वहन ३०७ आध अधद ग्रह २६३ श्रमसरका ३८८ ची २६१ खण्ड कत्ता २९६ वकवर्ती का जेठा प्रत्र १५२ चक्रवर्ती राजा १५६, ६८८ चहान से विर टकरामा ३०७ चन्द्रभा ३८८ चाँद सरज की सेघी ३०८ चाँद २७७, २८० खॉल खगी गाय २३ ४ छोडी नदियाँ का चढ़ा पानी ९४ जम्बू द्वीप के घास-सक्की ३६० बर श्रयाङ ३१० बाल के धुलबुले ३८० अस्पर ३८३ जाल में पक्षी का फैंसना ४६ जहीं ३८८ जेतवन के नुण-काष्ठ ३३० अगली हाथी १०६ द्रापरने वाला क्षीता १०५ सरुण बाधा २३ १ तेक २६१ तेल प्रदीप २३० दसारहाँ का मानक सदरा ३०८ टाम्प्र पिया हुआ १६९

क्य २६१ **दो चंशुक भर प्रजाबाक्षी १ ९** दो पुरुष ६६८ घनुर्धर ६ ७ भाई का कपना १६३ त्ररा द्वा हमा गावीवान व तक्सी हरहरू ७५ शक्त १९५ नकडकाय २६ पक्षी का भूक बदाना १५० प्रम ११५ पर्वत पर धाका प्रदय ११ ५ पर्वतः १८६ मरीप का श्रष्टका ३२४ पदाद को बचासे खोदना ६ ७ पुण्यी फरमा ९४ ३ १ पातास का अन्त को बका १ ० यीने का बढ़ोरा १३९ पीय २६५ प्रतना मार्ग १३७ प्ररामा श्रीमा २०० पुर्जिमा की राष्ट्र का चाँद ३८४ फुस की झोपकी १२० १२८ केंका सुवी ६२ फैडायी बाड ७१ बहेरी बैसा भ्रम १ १ यहेल सामा की मान ९२ बर्म्का वस्का १८० परग्रद की साक्षाचे १६५ पर्वा । • बस्रवात् प्रदय ११० १७६ १९० बहुत दिलीवाका कुछ ३ ६ बाबर २३६ वाल्य का क्षम ६५ चालाका बंद ४ ६ दिना पद्यक्षार की बाज ८९ विकार ३ ९ बीखरीववा ११३ थीस १४ १९३ ब्दा स्थाब १४९

बंध १०५ श्रद्धीतार की पटाई ९२ भाषा भुभवा ५६ भेवा १८८ प्रक्रती का साम कारता ५४ सम्बद्ध अरीविका ३८२ सहस्र पर चना ११५ सदासेष १५३ सहाबस १३ सदानवियों का संपम १५1 महापूर्णी २५१ २६५ महास पर्वत २० माचा ३६३ माठा द्वारा द्वन की रक्का ४७ माञ्चया करा १६५ सर्गी के भग्ने १८७ संब १६६ सूम का चौंक्ता 14 सुधराज सिंह १५४ मेव के समाव पर्वत ८० रीका १६ १ रीका काचेकाचा पिक्तः १८८ मेका करका ३७८ रझ-कम १ ६ ECC PF शाही १६९ सीका कादा १ ० रंगनेश्व १३६ सकवियों की रगक १६४ कथवी २६३ **WE 241** काचार केंक्द्र १ ५ श्राप्ती २०२ काकचन्त्र १८८ लकारी १५५ कोई भी वृति से चयाता ३ ७ कांद्री का कार 13% कोड़े से बिश नगर २०३ विषेत्रे सीर भुमा १८९

विश्व का सूर्य को खुँह क्याना १७५ वेख २५५ वेस्प्य हवा २८९ वेस्प्य हवा २८९ वेस्प्य हवा का सामा ६६ द्वारत काल का सूर्य ६६ द्यारत काल का सूर्य ६६ द्यारिक की योलों १५२ इमराण की लक्दी २६२ समुद्र में चलने वाली नाव ३८७ सार्वे १६६ ६५ द्यारा गोलियाँ २५१ सार्वे १६९ १६ रारा-गांवेपक २८२ सिखाया इला घोडा ८

सिंह २७, ९५

खुमें है २५२ सुँह बैवने बाला २८२ सुत की गोली ४३८ सुरंग ३६८ सोने का आसूरण ६४ सो वर्ष की आसु के प्रायक २७३ स्वच्छन हु सुग ५५५ हिसरता से बढ़ने बाला नाम १३७ हुरे गरकट का फटना ५ हाबी का वैर ७९ हिसालव २५२ हुँगा हुँजा कर रोनेबाला सियार ६५

## २ नाम-अनुक्रमणी

धागाक्य १४९ बन्गाकव वैद्य १४८ श्वतिस ( = तव ) ७६ भरितक मारद्वाच १३३ भवपाछ निस्रोध ४९ ९ १ ७ ११७ ११५ अञ्चातदातु (= मगचराज बेर्नेद्दीपुत्र ) ७६ ७७ 998 8 4 मक्ति ११५ मक्तिकेलकरनकी ६० मञ्जनवन स्वादान ५६ धान्ताकोरहरूम १५४ भव्य (नरम् ) १२४ सवायपिक्टिक १ ६ १६ ६ 2 86 46 49 49 96 94 98 1 6 118 136 94 141 148 144 188 180 186 181 107 १४५ १९६ १९४ ११६ ११४ ११६ रक्षत्र रहक-२५५ व व व्यक भक्तक १२ १२४ १५९ १६० १६ श्रास्थात यस १ ८ सरमाध्या १ ११ शम्बक्षविन्द ११५ मध्द्रम् (तरक) १२४ मनिश्च १७९ मधिभू (बप्रवासक) १२६ ६२० मिमान भक्ष (माझन) १४२-१४६ श्रध्यकाह्यः ४६९ भवोष्या ३८१ भरदि (मारकन्दा) १ ४ १ ६, १ ० अदलबती (नगर) १२६ १२७ **बद्धारान् (रामा) ११६** ११७ अक्रुप-क्रोच 11 सञ्जूष (नरक) 193 सवन्ती १९४ १९६

समिद्व (महाकोक) १५ ११ असम ६ व असरेन्द्रक मारहाथ 181 शसुरेग्द्र शह ५२ बारसाबि ३०५ मश्रद ( नरक ) १२४ महिसक मार्गात 12२ अक्रियाध्यस्यावतव १२४ आकिंचन्यायत्तव १२८ भाकोरक ६४ ६५ काळाणीय १८ भागक ( शूर्यंग ) ३ ८ भागम्ब ५८ इद् ७९ १२४ १४६ १५ 318 81 स्केर २३८ रम 444 44 २०९ २८२ १९४, देदे 240 204 # 2 FE **आभाइवर देव ५**९ णाराम (विद्वार) १ ६ ६६, २ . २५, ४४ 40 48 44 40 1 6 114 116 शास्त्रक 10 **भाकक इंटबक** १९३ भाकविका (शिञ्चयी)। ४ माध्यी १४४ १७९ १७ १७१ EPR 99, 141 इन्ह्रक १६६ व्यव्य १६४ ईशाम १७१ उक्रम्पक (शेग) ३१ बरब्ध ( बड़ीसा ) ३५३ बक्तर वैषयुक्ष ५० बत्तरा १६८ बरपक ( नरक ) १२४ उत्पक्षमधी शिवस्थी १३ वस्य बाह्यस १३५

```
दध्यामसंज्ञी देवता २४
                                           कररघर ३२४, ३२६
उपक ३५
                                           क्रक जनपट २३२, २३८
रपचाला १११ ( -भिक्षणी )
                                           कशाधती ३८४
उपवत्तन १२८
                                           कजीनारा १२८
उपवान १४०, २१२
                                           कृटागारशाला २८, २९, ९८, १८२, १०८, ३,१४,
उपाछि २६०
                                               इपर, ३७२
                                           क्रशागौतमी (मिश्रणी) १०९
उरुवेला ८९, ५०, ५१, १०४, ११४, ११५
अधिगिरि १०३, १५५
                                           क्षपिमारदाज १३८
व्यविशिक्ति दिला ३७४
                                           क्रिका ३८३
ऋषिवसम सुगदाय ९०, ९३, २३९, २७६, २८५,
                                           कोकनदा २८, २९, (-छोटी) २९
    ३५१, ३७९, ३९४
                                           कोकनद ७५
                                           कोकालिक १२२, १२३, १२४
एकमाला १३८
एकचाला ( -- ब्राह्मण-प्राम ) ९६
                                           कोणागमन (-बुद्ध) १९७, २७५
पुणिसृग ६८
                                           कोण्डडन १५४
                                           कोशल ६२, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१-८७, ९६.
एलगला ३२३
                                                १००, १२४, १३४-१४४, १५७ १६२
औपधि तारका (= हाक तारा) ६४
                                           क्रोधमक्ष यक्ष १८७, १८८
क्षक्रथ देवपुत्र ५६
                                           कौदाम्बी २४०, १६१, ३७७, ३७९
<del>रहासम्ब ( -युद्ध ) १९७, २७४</del>
                                           क्षेमदेवपुत्र ५९
कतमोरक तिरसक सिक्ष १२२
                                           श्रेमा ३९३
 फडकिस्टा ३८४
                                           खण्डदेव ३५
 कविकवरसु २६, ३६३
                                           खुउन्नसरा २९२
 कृष्य ११९, ३९५
                                           खेमक ३७७
 किप्पन ( - सहा) १२०
                                           खोटासुँह (-भारहाज ब्राह्मण) १३०, १३१
 फरमासदस्य २३२, २३८
                                           खीमदुस्स १४६, १४७
 फलम्दक निवाप ( - बेलुबन ) ५४, ६४, ९३,
                                           शासास १५५
     १०६, १२९, १६०, १३१, १६६, १०४,
                                           गङ्गा ११९, १६५, १७०, २७१, ६८२
     189, 900, 968
                                           गम्धर्वकायदेव ४३७
 कलार क्षत्रिय २१६, २१७, २१८
                                           गया १६४
  कलिंग राजा ३०४
                                           गरुव १२१
  कात्यायन शील २००, २०१
                                           गिक्षकाधसथ २२५, २५९
  काल्यायन २५९
                                           ग्रह्यकुट पर्वत ९७, १२५, १८६, २६०, २७२,
  कासद-वेषपुत्र ५०
                                                २७४, २९७, ६०१, ३०२, ६०४, ३७४
  कालदिका ( राजगृह में ) १०३, १५५
                                           गोविक १०३, १०४
  कालानुसारी ३८८
                                           गीतम २७, ३४, ४४, ४४, ४९, ५४, ६२, ६७,
  काशी ७४, ७६, ७७, २७०
  काइयम (- ग्रुड्, ) ३६, (- देघमुत्र ) ४८,
                                               ९५-९९, १०५, १०७, १३८, २२९-१६०,
      ( - महा ) १२०, ( - गोत्र ) १५८, ( बुद्ध)
                                               १३८-१४७, १५० (-इल), १५५, १५८,
                                               १५९, १८७, २०२, ३८३, ४४३
      १९७, २०२, २७५, २७६, २८९, २८१, ३०४
                                           घटीकार देवपुत्र ६१,
   काञ्चपकाराम ३७५
                                           घोषितारास २४०, १६३, १७७
   इसुद ( नरक ) १२४
```

```
क्यांदर्शी राजा ३८८
भम्दन (-प्राप्ती का ) ७४
चन्त्रम देवपण ५५
चन्त्रनंगसिक सपासक ७५ ७६
चन्त्रमा स्वपन्न ५२
चन्द्रिमस देवपूर्व ५२
चापा १५३
चारी महाराज १८४
चाका मिझली ११ १११
विश्व शहपति ३९६
चीरा सिमाची १०
केच १४८
रहर्ष है क
जब भारताम १६२ १६३
बेतवन १ ६ १९ २ - ४६ १५ ६ - ६६,४८
     वर मद ५ दक दव दम दक व द
     116 114 188 14 144 166 166
     107 107 161 165, 158 156 714
     PR4 प्रदेश क्षेत्र क्षेत्र अस्त अस् व व
     the bis be bed bee bee to
 समयर २६ ८५ १ १ १ २ १३६ १४६
 बन्द देवपुत्र ६९
 सम्बद्धीय १६९
 ज्ञानकोचि २१६
 बाडिमी १५९ १६
 वहीं ३८८
 सगीबी (एक पर्ष) 181
 हरापाल (माझन) १४३
 व्यातिक १९५, १५९
  टंक्तिमळ १६४
  मार्गाक्षिणी ४१
  सभागत ४५ 1
                 119 341 915
  त्रपोदाराम ९ १ (=गर्ल-कुण्ड) १३
  सायम देवपुर ५३ ५२
  Brare ? v
  शिवर व ४
  तिच्य १६
   Att $ 40'5 2 1%
   तुर् अप्रेड मधा १२०
   H44 311
```

त्रणा (भार-कम्पा) ३५ १ ६ १ ७ त्रपश्चित्त ( :=बुक्द कीक ) ६ ३३३, ३५५, ३०६ 189 184 161 169 168 169 166 163 विद्याकोक ( च्लेब-सोक ) द श्रावक्षणम्या २८३ भुषकतिस्या २४२ १४६ उक्षिणागिरि १६४ वदासका २ ७ स्थातह ३०४ रामकि,देवपुत्र ४९ ५ शीर्षपति देवपत ५५ देवबत्त १२५ २९५ १९६ ३६ ३६१ रेपरास १४८ वेषवित माद्याचा १४ प्रवस्ति १९ नक्कविता ३२१ नम्बद्धासम्बद्धाः १९९ मन्दम हेमपुत्र ५५ नन्द देवपुत्र ६३ ६१५ गश्चिमाक देवपुत्र १३ मक्कार्मिक भागवास १५३ १५४ नाग २० २८ गागवस १६ भारत्रुक रक्षक रथक माक्रम्या २८४ निकारक १५ निगम्ब भारतपुत्र ६५ ६७ विशोध ४९ ९ १ ७ ११४ ११५ नियोधक्षक १४४ १४५ Bullionna 364 विस्तीयती १११ मरभूररा ८९, ६ 1 ४ ११४ ११५ वैषयंतामासंज्ञानसम् ३९४ पत्रय कातिशाम ६५ ६७ वश्यमादि ३५ पश्चवर्गीच ( - भिन्न ) ३५) प्रधास भगा ५ ५१ पञ्चसाळ (असम्बन्धस ) ८ परवारियों के बाह

```
पद्म ( – नरक) ३२३, ५२४
                                            वोधिसस्व १९५, १९६, ३३४
परिनासक रतन ३८४
                                            वहादेव (-भिक्ष) ११६, ११७
पलगण्य ३५
                                            वसमार्ग ११७
पाचीसबदा २७४
                                            सता-स्वया १२७
पारिलेखक ३६३
                                           ब्रह्मकोक ११६, ११७, ११८, ११९, १२०, १२१,
पावा २७४
                                                3 7 8
विक्षिय ३५
                                           ब्रह्मा ११५, ११७, ११८, १२० (-सहा), १२२
पुग्दरीक १६२
पुण्णसन्तानि-पुत्र २६०
                                           भारत ३५३
पुनर्वसु १६८, १६७
                                           अपन २७९
                                           मस्यि ३५
पुराणकाञ्चप ३५२
प्रसिन्दद १८१
                                           भर्ग ३२३
                                           भारहाज १२९, १३०, १३१, १३४, १३६, १३७,
पुर्वाराम ७४. १५२, ३६५
मजापति ३७३
                                               १४४, २७५
मग्र∓न की बेटी २८, २९
                                           मिक्षक बाह्मण १४५
मध्येक बुद्ध 👣
                                           भिरुवो २७५
प्रसेननित् ६७. ६८. ६९, ७०-८७
                                           भामित २११, २१२
प्रिय<del>क्कर-</del>माता १६७
                                           भेसकलावन ३२१
                                           मोजपुत्र (ऋषि) ६२
यक ११८
                                          धक्खिक गोसाल ६५, ६७
यदरिकाराम ३७७
                                          मगाच ७६, ७०, ९८, १६७, १२५, ११८, १५९,
वस्यल ३८१
वीरण ३८१
                                               984
बळाहरू देव ४३९
                                          मधवा १८१, १८५, १८८
                                          मणिभन्न १६५
बहुपुत्रक चेस्य २८४
षडेलिया १५८
                                          मणिमालक १६५
                                          सहकृक्षि २७, ९५
याधिन १२१
                                          सन्तानिपुत्र पूर्ण ३६७
यात्रसम्बद्धाः ३५
विकंशिक भारद्वाल १३१, १३२
                                          महळ १२८
                                          मस्लिकादेवी ७१, ७८
विस मर, २७, २७, २९, ३१, ३४, ४४, ४८,
                                          सरीचि ३८३
    पर, पर, पथ, प८, ६३, ६६, ६७,
                                         महावन (कपिछवस्तुमें) २६, २८, (वैशालीमें) ९८,
    (-मस्येक) ८१, ८८, ९२, ९३, ९७, ९६,
                                              167, 318, 347, 341, 369
    ९८, १०६, १०७, १११, ११२, ११९, १२०,
                                         महामोद्रस्यायन ११९, १२०, १२२, १२३, १५५,
    १२३, १२५, १२७, ९२८, १२९, १३५,
                                              २६०, २७५, २९२, ३०१, ३०२, ३११, ३१२
    139, ૧૪૦, ૧૪૮, ૧૫૧, ૧૫૨-૧૫૨,
                                         महान्काद्यप १२०, २६०, २७८, २८३, २८७
    १६२, १६४, १६७, १६८, १७१, १८२,
                                         महा-कृष्पिस १२०, ३१६, ३१७
    १८२-१७५, २०५, २०७, २९०, ३०८,
                                         महा-वसा १२०
    398, 362
                                         महा-कात्यायन ३२४, ३२६
 वुद्योप (-आचार्य) १४
                                         महा-कोद्दित २३९, ३०४
 वद-चक्ष ११५
                                         महालि १८३
 युक्तनेत्र ५१५
```

```
संग्रम निकाय
HHC+C
मदा-प्रच्यी १८५
                                        विकाश्यर (ल्युक्त) १६१
सागक २५५
                                        पता मिश्राणी 11%
                                        पण (-मसर ) ४९
सागय-प्रेषपत ४९
साधन्त्रिय ३३५
                                        परम १७३
शाध-देवपुत्र ४८
                                        बसवर्ती ( देव ) ३५ १११
माजबनामिय ६६
                                        बस्स ६५३
                                        बस्सयोध परिवासक ४४९ ४४३
आविक, १०२ १७० १८४ १८५ १८६
झातुपीपक माद्याय १४५
                                        कारावासी व देश रहेद रेक्ट रेट्स ३५%
मार ३५ ९० ४९, ९१ ९३ (-सेवा) ९७ ९४
                                            209, 298
    1 1 1 1 111 114 4 4 4
                                        धारिक १६२
मिकिन्द्र प्रश्न (प्रव्य) ११
                                        वास्य १०५ १०६ १८१ १८५, १८६
                                        विजया निअन्त्री १०६ ११
श्वगारमाता (विद्याचा) ०४ १५२ ३६५
स्सिक २० २७७
                                        विशामायन्त्रापसम् १९८
 मोक्कि क्यान १९६ ११६
                                        विद्वार २०४
 यस ११
                                        विषस्ती ३९५ 1९६
                                        विपदमी क्षय १५६
 पसक १६९
                                        विप्रक (न्यर्वेत) ६६
 पाम १११
 रपा (सारकान्य) १ ५ १०६ १ ७
                                         विस्त्रपण्ड बीजा १ ४
 रामगुद्ध १ १७ ५७ ६७ ६५ ६१ ६१
                                         विश्वाच पाक्षाकपुत्र ६१४
     94 1 7 184 189, 17 187 188
                                         विस्वतिमाना ( प्रम्य ) ११
                                         वेदावरी ६७ ६५
     949 341 349 344,344 344 34R
                                         बेल १२५
     206 26 262, 269 254, 2 6
                                         बेर्ड्ड वेब्युच ( व्यविद्यु ) ५४
     2 2 200 212 218 202 200
                                         बैव १८
     201 204, #27
                                         वेदेशस्ति अभन्य २८१ १८३
                                         वेप्रविधि अञ्चरेन्द्र भए भई १७४ १७५ १७६
  राष ३५६ ७ ५-१४
  राह ५३
                                             199 196 1 3 166
  VIEW 89# 899 3
                                         मेपुरक २०२ २०४ १ ५
                                         मेरम्य (माधु) २८५
  क्षप-क्षोच 13
                                         वैद्वद्ववद्वकिय गण्यमाता १९१
  शेविससा ( मनुष्य ) २०५
                                         नेमुबन ककन्त्रक विवाद (राजपृक्ष में ) ५४ ६४,
  शोवितस्य वैष्युक ६१
  रीरव (=नरक) २९ ४२
                                            पर परे १ है, १२५ १६
                                                                   127 147
   श्रक्रमाक महित्र ११४
                                             155 39 3 5 5 5
                                             497 491 494 44
   WW-1 1
                                                                   441 1 1
   काक्ष्ममूच ६४४
                                             दान दश्य देश्य देण्य देण्य, स्ट्र
   विषयकि १८१ ३ ८
                                         मेरलम् ( श्वद्र ) १९०
                                         नेक्रकिय ३६
   कोकापतिक १२६
                                         मैश्रमण (प्रासाद) १८४ १८५ १८६ १८४
   धंकड २०४
```

बैदारशी ( पम भी ) ११

बक्दकि ६७६

बोगीसा ३ क अ. १ वर्ष १ पर १ पर १ पर १ पर १ पर १ पर में बार्य अनि ६ व

वेरीचन १७८	सर्पिणी नदी १२५
वैशाली २८, २९, ९८, ६६१, १८२, ३०८, ३१४, ३५२, ३७३	सिबिद्व २४०, २४१, २४२ सहस्पति बहार ११४, ११५, ११४, १२२,
द्याक ( इन्द्र ) १२८, १६४, १०२-१८९	१२४, १२५, १२६, १२८, १८४, ३६५
शास्य २६, ७९, १०५, १०२, १४६, ३२२, ३६१	सहस्रो ६४, ६५
बाक्य-कुल ६९२	सहस्र नेत्र ( इन्द्र ) १७९
शास्त्र जनपर ७९	सहसाक्ष ( हन्द्र ) १८१
शास ( =साख्) ६१०, १२८, १४४	सायेत ५६
शास्त्रम उपवत्तन ( कुक्शनारा में ) १२८	सासु १६६
निखी ( हुद्र ) १२६, १२७	सारिपुत्र ३३, ५८, ६३, ६४, ४२२, १३३, १५१,
शिव ५८	उपर, नवक, स्ट्रा, स्वस, क्वम, क्वम
शीलयन १६८, १६९	२९७, २१८, २१९, २६०, २७५, २७६,
भीलवसी ( अदेश ) ६०३, ३०२	२९२, ३११, ३१२, १२१, १२६, १४९
वीवक १६८	भर्क, भर्द, भर्द
प्रीपेरियाला ११२ ( -सिक्षुणी )	सिस्तो ( बुद्ध ) १९६
गुका भिक्षणी १६९, १७०	सिंह २७, २८
गुद्धावास २६, १२९, १२२	सुगत २९ ( = शुद्ध ), ६४, २८४
श्रुव्हिक भारद्वाज १६३	सुदत्त ५६, १६९
श्चिमुखी परिवाजिका ३३२	सुधमा सभा १७४, १८९
पैका सिद्धणी १९२, ११६	सुजम्पति १८२, १८५, १८६, १८८
स्पेत (≈ केळाञा) ६६	सुवा १७८, १८३
श्रामस्त्री (जैतवर ) ३, ६, १९, २०, २३६०५,	बुकार २१३
30, 84, 84, 42, 48, 48, 48, 49, 44,	श्चित् २७५
ৰ্থ, ৬০-৫৬, এই-৭৭, ৭০৫-৭৭ <sup>ছ</sup> , <sup>ছণুন্</sup>	सुदर्शन माणवक ७६
9 R & . 9 B R . 5 R R . 9 R R . 9 R R , 9 R O . 1 M M .	विन्दारका बद्धा व इह
186, 286, 202-268, 398, 384, 384,	सुन्दरिक् भारद्वातः ११४, १३५ सुवर्षे ४३५
<b>૨૦૦-</b> ૨૧૮, 꾸료용, >૪૨, ૨૪৩, <sup>૨૬૦-૧૫</sup> ,	सेतस्य २७४ सेतव हर्
२०६, ६९९, १९२, १२७, १६५, १६७,	सुरिवर २७५
६८०, ६८३, ४३०	सुमहा देवी १८४
समारव १४६ , समय वेळहिपुत्र ६०	सुमेह ३८७
ेसेबीय २७४	सुराध ३५६
समुख्छपकाधिक देवला१९,२०,२१,३२,३६,२६,२६	सुवीर १०२
चनकुमार (अक्षा ) १२५	श्रीका ४५ त
समुद्धि १०, १६, १०२	सुसिस देवपुत्र ६३, १७३, २४३, २४४, २४५
सम्बर १७५, १८०	and -4
सम्बद्धी प्राप्ता ( अवतः ) १८८	सुम्रका १२१, १२२ सुंसुमार शिरि ३२१
सम्बद्ध २, ४९, १०२ ११४, ११६, १२१, १२६,	
1 ₹ ८, ६ <b>२ ९</b> , १५३, १५६, <sup>१७२, २००, ०</sup>	स्वदेव युव ५२, ७३
194, २३७, २८४, ३०४, ३५३,	m - mt. 1,3 - d

मंत्रानी ग्राम ९३ मेर्रा दंवपुर्व ६ , ६३ मोग्र ६७६ सोमा मिश्रुणी १:८ ३ ९ सोमानिक (नरक) १६७

441+50

संयुत्त-निकाय

हुँस १२१ हिसक्त ६२ हिसाक्त ६६ १ हारिक ६ ४ हाकिडिकानि ६२६

## ३. शब्द-अनुक्रमणी

थरास्कि ३७४ (=बिना देरीने मफन होने पाला ) भक्तालियो ३०१ (क्यांग्र हा सफाउ होने वाल्य ) अपून ४१८ (= भगिमित) পদুনজনা ১৩১ विवासार्व ३०३ গলং ३ ৩ भगोरम (=पुरा) ४६ গনি ৮३ अस्मिशायम १३३, १३७ अपर-पर-सामी (=नियाण सामी) ५०० শভীৰ ৭৪৭, ৭৭৪ अहरुमा (=अर्थकशा≡माग्य) १, ३, ४, ७ भेपएज ४३३ भतीत (=मृत=त्रीता हुना) २६० ধর্ম ১১৩ अधर्म ६० अधिप्रचन पथ ३०३ अ<u>भ</u>ुत्र १७८ अध्ययमाय २४९ अनम्त ४१९ अनम्तदर्श ११८ अनागत (=भवित्यत्) ११६, ≥६० भनागामी १२२, ९७४, १८३ अनाताप २७६ जनारम ५५० नेनार्थ ५० घनासक्त २३, ३२, ४८, ५५, ६४ समित्य १२८, १४९, १७०, १७८, १७९ अनित्थता ६२ अनुताप ५१ अंतुत्तर १०६, ९९६, ९४४, ९४५, ९७३, ९७४, 305

अनुपळक्षण ३४२

जनुप्राप्तस्पद्धं (=िनदांग-प्राप्त) ३९० अनुवीध ४४२ ात्रमोदन ४४८ अनुरोध ०६ अनुशासन ४८, ७८, ०६ <del>গলু</del>গ্র ২৪১ अञ्चल १००, १७३ अनोसापी २०६ अमीम (= युव ) १२, १८५ अभ्तक (= सार ) ८९, ००, ९७, १६० भन्तर करर ४१८ अन्तर्धांन ४८, ५१, ५६, ५८ अस्तवाला ४**१**० अग्रवाच ४४ अन्यथास्य ३६८ अपग्रपा ( = संकोच ) २८० अपराजेय १५२ अवरान्त २०६ सम्मत्त ५४, ८०, १०१, १०२, १०३, ११६ 120, 148, 101, 144 भत्रसाद ६२, ७८, ८०, १२८, २४९ अपेक्षा ७३ aca जिलासीय १६९ भागतिसेस ४४२ भग्रत्युपळक्षण ४४१ आप्सरा ३२ अटबुद (= गर्भ में सत्व की करुक अवस्था के वाद की दूसरी अवस्था ) १६४ असय १७४ अभिजातियाँ ४१६

अभिनिवेश ४००

अभिनिर्देति २६७

अभिनीहार ४४५

```
समियास २३
                                          बसरेन्द्र १७४ १७३ १७० १४८ १७९ १८
श्रीसात ३९
समितिक ३११
                                         धर्मप्रक ६२
व्यक्तियेक ८०
                                          andres as
मधियसच १११
                                          धर्मकर ७५
सरायप्य १६८
                                          मार्गातप्र २०८ । १५५
                                          धार्मातम २६७
स्रात्य ७३
संयक्त ११५ (-पद् ) १५४ १६६ ११६
                                          कर्तिया १६६
बरूप ( अरेबता ) ३ ३३३
                                          भारीक (=निर्धारत) २८
भर्षेष (बीकन्छक=निर्वाण गास) ३ ३६,३५.
                                         महेत्रवादी १५३
    १० २६ १८ (न्यह) पर पर पर
                                         WENT B
    (-TER) 99 1 2 1 E
                                         आबार परिविद्यक्ष २०१
                             339 338
    42
           111 121
                     111
                             11
                                   332
                                          आकासीतलपापतम २५८
    128 124, 120 18
                            191, 144
                                          withmenton and
     144 155 101 102
                            199
                                 248
                                          भाषाच्या १३५
                                          वासीयक (ऋर्या छात्र) ११८
     144
 watter se au es
                                          आधीवम १ ४
 maira de tea
                                          वाद-वहव १७४ (क्वोसापति-मार्गस्य स्रोतापदि
 अवसीकद १७३
                                              करूपः सङ्गरायासी-मार्गस्य सङ्गरागामी-
 स्रवितर्के १ क
                                              कारणः कालवासी-सार्वास्य असारासी-कारणः
 willer 1 19 10 00 114 114 144 143
                                              महत्त-गार्थस्य धरंत चहस्य)
 अविदिया १४९
                                          भारतापी (=इसीगी=क्छेग्नॉ को सपाने बाका) १ १
 सचीत-राय १७३
                                              1 2 1 2 116 12
 अजीत हैय १७३
                                          धारम-इ.स. १४ ११३ ११३
 अवीतसीह १७३
                                          कारम-भाव १०४
  मशास्त्रत ४१९
                                          भारत-संचय ९३
  बद्धत-सावना १५
                                          च्याचा-ब्रह्मा १ व
  मनीश्व ८६ ( =घर्रत )
                                          भारता १९४
  बाइबयंद्य ६७
                                          व्यक्ति २९९ (≔पाएमम)
  व्यक्तमेय ७३
                                          माहीतम २६५, ३५०
  water 188
                                          काकीम ३५३
  क्रष्टोगिक २०२ १६९
                                          नाध्यास्य १३५ ६
  असमाहित ( म्हन्युक्तम ) १४ ६९ १६१
                                          नावज्ञ (=नकश्य) ११४
   भागगण १९९
                                          व्यापीवास २६६
   अस्तरकस्ता ४४३
                                           SURE PAGE
                                           वाशिवेतश्चिक १११
   अस्तिस्य २ ३
                                           भाषसभ (छ ) 13३ 1५६ ६ ५
   अस्तिव-विवस १६७
                                           लालुष्यांक्ष १४ ३ र ३ ३ ३ ३ <sub>११</sub>६ १३
   MHT 89, 100
   श्रम्रा-क्रम्या १४३
                                               124 124, 120 12 124 124
                                           MITTER 344
   MHI-AL JOS 300
```

	टपादास स्प्रन्थ ( पाँच ) ९७, १९३
आरसः ७३	उपाचास २३५ (=परेशानी), २५९
भाराम (विहार) १, ९५०, १५६, १५६, १५५,	उपासक १३९, १४०, १४१, १४२, १४४,
१६६, १६७, १७२, १८३, १८०	विष्ठमं विष्ठ विष्ठमं विषयं विष्ठ विष्ठ विष्ठ
आर्त-स्वर ३०१	
सार्य १२३	उपोस्पथ ६२, १६६, ३६७ द्धाण १०६
जार्यभागे ८, ३,२	ऋजुप्रतिपन्न १७४
આર્વધર્મ ૨૧	**-
आर्थ अधारिक मार्ग ७०	प्रस्तु भृत १८३
भाग्रेमस्य ( चार ) २, १६८	गरिहरू १०३, १६०, १२०, १२१
सालकान ४४५	ऋदिपाड ३०० ( ≃चार )
	ऋद्वितल १२७
आल्मी ४७	मृह्दिसान् ६२, १२१ १५६
भारत्य ८६	<sub>महिं</sub> चि ३१, ५८, ६२, ६४,१०९, १५३, १७९, १८६
आवारासन १८, ३३४, ३६०, ३८७	π्करच २०७
भावुस १७०	एकशाटिक ७४ (= एक बसवारी)
आध्य ३३ ( = सृह् ), ३°	एकान्त ४८, ९२ ( -वास ), ९६, १००, १०२,
आध्रव ६३ (= २६०), र आध्रव (= चित्त सह ) ३२०, (चार ) १३३,	१०८, ११६, १२६, १६५, १६१
₽०८, <b>६८</b> ६	व्रहिपस्सिको (='आओ देख छो' कहा जाने योग्य)
आसस्त १४०	303
आसक्ति १३, १६९	ऐइबर्य ४५, ६६, ८७, १७५
आहुति ६५७	सोंक्ला (= तीका ) ३००
इच्छा ध१	क्षीच (=थाइ, खार) १
इन्द्रिय-सवर ५६	
इन्द्रिय-सवर ५६ इरियापथ ( चार ) ३७ ( = शारीरिक अवर्थाये ;	अधिनेयिको (= परमपद तक छे जानेवाळा) १०
इपुलोम ३००	बोलारिक ३१२
<b>ध्रे</b> ववर ११८	आहरूय-कोकृत्य (=उद्धरापन-पश्चासाप, नीवरण)
जनस्य १९५	2, 68
उक्कवणक ( — शेवा ) २८९	जीवपातिक (= अन्योनिज सस्य ) ४६३
रच्छेद-बाद २०३	श्रीपाचिक १८३, १८४
शरथान-सत्ता ( = ठउने का विचार ) ९२	औरस्भागीय ३४७ (=निषरु बन्धन, पाँच )
उरपाद २६७	क्तंत्राक ६०१
चवक-ग्रुद्धिक १४६	क्षप्रस्य ३०५
उदम-चित्र १५२	कर्म ३३, ५८
वदान २८ ( = प्रीवि वाक्य )	कमैवादी २०९
बद्ध १६२	क्त्र्ता ११८
उद्योगी ४७	क्छक १६४
उपविष्ट १८२	कळेचर ( = शरीर ) ६३
वपिस ६२,९३ उपाधि १०५,३०६,१ <sup>१२२</sup> , ११४,१ <sup>१७</sup> , १	eq, कटफ २७१
चपाधि १०५, १०६, ११४,	कल्याणभिश्र ७९
१६९, २३८	कवि ३९
रपसम्पदा ३६०	

```
कटापम ( = कार्यायम ) ७६
                                          चीवर (ब्यमिश्र वच्च ) १ ८ १३४ १३८ १ ८
कास 1 1 क (-विचार) १६१ (-मुख्या) ११
                                              305
   (-मोग) १
                                          कैस १६५, १८६
क्षाराच्यास्य ५ ८६
                                          CEPT BY
व्याचरान्यः स्वासि १५००
                                          धम्बराय ३५४
कायवन्त्रम १०५
                                          जय (ऋष्णा) १४
कावीं ३ ७
                                          afar ...
कार्यापण वर (अवद्यारण)
                                         स्रोतपास ८५
कार्ड (= सृत्यु आक्र ) १
                                         MTT BR 40, 554 150 152
क्रमण्ड १ १ (= यहा)
                                          जातरूर (≔मीना) १९१
SHEET 1. 9 1%
                                         साति ११४ १९२
क्रानार १८४ ( = Watch tower )
                                         क्यो तिन्तम पराचण ४६ ४४
केवणी १३४ १३९
                                         क्योसि क्योति-परायध्य ८३ ८४
कोकनद ( = क्रमस ) ३५
                                          श्रीव १ ९
कोक्टी ११३ ( = बेर का बीम )
                                          शायी १९६ १४९ १६४ १६९
कोसकराज ६७ ६८ ६९ ७०-८७
                                         संबंद है द
श्चामा १ ६
                                         सम्बाद ४५
समित्र प्रकादक दक्षात्रक दद १२५ ११६
                                         तप हे द
श्रान्ति १७१ १७५ १४६ १४५
                                         वयन्त्री १४
क्षीनामव (≠ महेत्) १९ ३७, ३५ १७ ४
                                         तम-तम-पराचन ४३ ४४
    44 44 180 184 140
                                         तम-स्वोति-परायण ८३ ८४
 मेस १५१
                                         सार •६ 1 ६ 1६♦
 म्बारी १३७
                                         विस्मीन ( व्यक्क ) १९६ (-योनि) ११६ ६८६
 राग्य ५७ ५८ ५५ ५१
 शस्त्रकोर १६६
                                         विषेद्वर (ज्जीन-साह्रु) ५१ ६०
सामा (ऋकोका) १२३ ७ ५ ६ ७
                                         भूष्या १ १२ १७ १३ १६ १८ ४ ४१
 चीव ३९ ( = गासा )
                                             92 42 1 9 1 9 11 142
 गुरुषर ७४
                                         तंत्रस्थी १ ६
 ग्रहपति का १६४
                                         तेओ पात २६६
 सोचर ४४५
                                         रीविक २४३
 सीम देरे ४० ५८ ११९
                                         विविध प्रश्न अपर अपर अपन अपन अपन अपन
 गीतम १४
 पश्चिम १७
                                         त्यम् ५५
 ग्डान-सत्त्व ( क्लोसी का पटन ) २ ८
                                         यूज ( = शक्ष-स्तस्य ) ७३
 र्यक्रमण ५१ १६
                                         त्म १०१ (= वृत्रिव-एमन)
 WEIR 42 44 122
                                         शन्त २८ ६४ ११७ १३
 चापुर्महाभूतिक (=2व्यी कक बाबु स्तरित से
                                         बाच ४७
      विक्ति ) १३३
                                         विकास ११ १७६
  चार-मार्ग ५
                                         दिग्व-बहु 115
  चारिका ( अस्मत ) १५४
                                         रिम्प-क्रीक 19
```

```
म्यानी ४८. ५०, ५५
द्वाच ४२, १५०
रेगाति २०
                                           ध्याची ४४८
दर्भावित १७६
                                           ध्वजा १३
हिंग्रिस्थान २४३
                                            ध्वनाय ५७३
                                           नरक २१, २९, ५१, ८२, ८४, १२३, १६१,
देव-कस्या १५९
देवरव १५०
                                                160, 166
हेबपुत्र ४८, ४९, १७२, १७३
                                           नलकलाप (=नरकट का बोह्मा ) २४०
                                           नाग २७, ५३७
देपलोक २७, २९, १६०, ५८२
वैवासुर-संज्ञास १७३, १७४, १७६, १७७, १७९
                                           नागवास ४१८
देवेम्ट १०८, १७०, १७३, १७६-१८०, १८४,
                                           नाम ४०, ४५
                                           नामरूप १२, १४, १६, २७, २६, २६, ३५,
    965-969
                                               १९३, २३१
टो-स्टब्स २०३
क्षेप ५०, १७, ३५, ३६, ६८, ८५, १४७, १६५,
                                           नालि ७६
                                           नास्तिकवादी ३५३
    964
धर्म (= ब्रह्म धर्म) १०, १९, ३२, ३३, ३४,
                                           नास्तित्व २०१
    રૂપ, ર્દ, ૪૦, ૪૩, ૪૪, ૪૫, ૪૧, ૫૧.
                                           निराण्ट ७४
    45-40, 45, 86, 64, 66, 88, 909.
                                           निद्रा ८, ४५
     900, 999, 998, 998, 998, 984.
                                           निध्यदा २०८
     ૧૩૬, ૧૨૫, ૧૨૬, ૧૪૮, ૧૫૬, ૧૫૬.
                                           नियास १५६
     ૧૬૨, ૧૬૮, ૧૭૧, ૧૭૪, ૧૭૫, ૧૭૭.
                                           निरगंख (यज्ञ) ७२
                                           निरहकार ५०
     १८७, १८७, ३७४
 थर्मकथिक (= धर्मापटेलक ) २०१, ३९२
                                           निरुक्ति-पथ ३५३
                                           निरुद्ध १२८, १६०, २२७ (=शान्त )
 धर्म-वेशना ९१ (= धर्मोपडेश)
                                           निरोध ६३, ७९, ११ (= निर्वाण ), ११२, १९३,
 धर्माञ्जधर्म प्रतिपन्न २०३
                                               ११४, १९२, २३७
 धर्म-धातु २५६
                                           निर्मन्धि-गर्भ ४१८
 धर्मासन २८०
                                           निर्वाण ३, २३, ३२, ३९, ४०, ५९, ५८, ९९,
 धर्म-दर्शन १८३
                                               १०६, ११८, १३०, १३८, १४८, १४९,
 भनेपद १६१
                                               वेभव, वभवे, वण्ट, व्युद, वृख्य, वृख्य,
 धर्मानुसारी ४२४
                                           १७३, २४१, २७६, २८५, २९०
 धर्मराज ( = बुद्ध ) ३३, ५८
 धर्म-विसय १०, १८२, १२७, १७३, १७५, १८२,
                                           निर्मोध २ ( जनियांण )
                                           निर्भाता ११८
     283
                                           निर्वेद २०१, ४०९
  भात ११३, १५६
                                           निर्वेधिकप्रज्ञ २१९
  थारा १६, १७
                                           निपाद ८३
  असाग २६०
                                           नियाप पष्ट, इष्ट, ९२, ९३, १०३, १२९, १३०,
  भूम ११८
                                               १२१, १६२, १६९, १७०, १८२
  भूम ४३
                                           निच्छ २९३
  प्रति (= धेर्य ) १७१
                                           निम्ना३६ ४
  ध्यान १०७, १२८
                                           निष्पाप १६९
```

ध्यानरत ५५

## संयुच-मिकाष

```
विकास स्थल
                                         प्रकरिमी १५५ १६२, १८६ १५
बीबरम (पर्रेंच) ॥
                                         पूर्वकोडि (= पडका सिरा साथि ) २६९
मैबर्सकामसङ्ख्यायस्य २५३
                                          वर्षान्त ३ ६
मैकस्य २५९
                                         प्रयक्त-जन १९२ १६९ २३३
धानस्क्रम १ ४
                                         वेशी ३६४ ( = धर्म में सरद की शह व के पहचात
वस्त्रीयसेस २८
                                             वीसरी अवस्था )
वसीरिक साम ११
                                         वैभाष ४१८
परमपद (अनिवीप ) १ ३३, ५८
                                         प्राचिक १६
परमार्थ वर १६ ३ ६ ११६ १७३ १७५,
                                         प्रकृति ३५३
                                         मका (-इक्रिय) ॥ १३ ३७ ४७ ५८ ८९
    140
सरकोष्ट १२ ६ ६१ ०८ ९४ ११५ १७१
                                             1 2 115 184 191 162 168
वरियक्ष्मा १३४
                                         সমাবার ৭৯ ৭৭ ৬৮ 10
वरिकार हे ९ % है
                                          महाविश्वक १५२ २४४
धनिकालगा ३९ ४ ६
                                         प्रजासकाम < ६
                                         मिचिति १५९
वरिक्षेत्र ४ ६
 परितक्षमता ३२८
                                         धनाती अध्य
                                         प्रतिस्र १४
प्रविक्रियांच १ व १२८ २०६
 वरिकास ७४ २४३
                                         मितपशा १८५
                                         ¤तिएक १५
 परिष्यक ३५९
 पाँच-जनर-भागीय बन्तम १
                                         मविक्रोस २५६
 पाँच-इन्द्रिय ४
                                         मसीत (चार) १६ ४६ ४७ ४९
 वाँक-अध्यो-आयीय बन्धन २
                                         मसीत्वसञ्चलाव १९३ २ ५ ३३३
 पाँच-धामगुच १४ ७४ ७५
                                         मध्याच्या २१३
 पाँच-बीबरण व
                                         मञ्जू १६६
 OTHER TO
                                         प्रमंगर १६
 पश्चिम २७८ २८७
                                         शमक २१०
 पांसक्षिक २०३, ३३%
                                         ममच १ ४
  प्रतास है। १ क
                                         ममाद ४५ १५६
  97W 1 6 1R4
                                         प्रमिक्तिभा १२ १ ७ १५६ १५८ १७६
  पारकी किय ८ १०१
                                             399
  Gunn unn
                                         DERENT 12
  पिण्डपात (= यात ) ०१ १ ८
                                         महील को अरे वर १५
  पिण्डपातिक २७३, २०४ ३१%
                                         महिलासम् (= श्रंपारी) १ १ १ १ १ ॥ ११६
  विशास ३१ (-धीनि) १६७
                                             18 194 348
  STEP 43, 44 133
                                         मश्रीकेष ( = शान्ति ) १
  Ted fo £ 63 48 (-88) 108
                                         माविद्यार्थ १६६
  प्रकारमा ३ ३
                                         मामीस 1 (= विश्रांत )
  प्रक्रम ३९
                                         मासार १८४
  27 ( = TIET ) 3ª
                                         प्रेमविक्डोपस १४१ ( =पानी के साब के समात )
   नद्दरीय (-यश) ००
                                         सम्बद्ध ११
```

मानानुशय ३०० बहत्तर (नवशा ) ११४ भाषा १८८ यहभूत २६१ मारिय १२०, १२१, १७४, १७८, १८२, १८७ बुदुरच ६७, ८०, ९०, ११४, ११५, १४५, १४६, मिण्या ६ (-दृष्टि) १, (-मार्ग) १९५ ९९६, २३६, २३४ सनि ९२. (सहा) ९२, १४०, १४९, १५५, १५६ बोधिसस्य २३६ सनिभाव २८ चोध्यम ५६ मधांभिपिक ३८४ द्याराचर्य ३०, ३५, ५६, ५२, ६३, ६०, ९१, ५४, मूळ ४३, ४९, १०३, १२९, १४५ १९६, ९७६, ९३५, १४७, १८५ स्मदाव ५६ क्रवाचये यास ३७, ११७, १३० मृस्य ४१, ४२ बताचारी ४३% मृत्यक्षय १०३, १५५ ब्राह्म १८५ स्ट्रा ३०८ ब्राह्मण ४४, १३३, १३७, १४७, १७१ मेवाची १७२ प्राप्त्रण-प्राप्त १६४ ग्रेजी-भाषना १६६ अदस्त ६, ९०, ९३, १०६ मांश ॰ (निर्वाण) भव १, १९२, २४१ मोहः १२, ३५, ३६, ६८, ८५, १४७ भवनेसि (= तृष्णा) ४०६ ब्रह्म ५७, १४१, १६७, १६४, १६८, १६६, १६८ भवलागर २५, ३७, ७७, ९७, ११८ यक्षिणी १६७ भारवाहक २८, ३६ यथाभूत (= यथार्थ) २६० भावितात्म ५७, ११७ योगक्षेम २७६ भिक्ष-लंघ ३६, ४४, ६८ योशि ४२६. २७२ भूस ४१७ भीता १० ( पाँच कासगुण ), ११, २४, ४६ करन ३७ €थ ४३ श्चमग १०१ रयकार (-वावि) ४३ मण्ड (=तमा हुआ घी) ४४८ रथगुद्ध ८७ सध्यम-सार्ग १, १६६ ₹₹ \$0, \$6, \$9, 100 सन १४, ४४ शाग १२, १७, ३५, ३६, १०६, १३७, १६५ १८५ मञ्जूष्य-योनि ६४, ३५ शगहेप १४ ससकार ३०० राष्ट्र ४३ मरण १९३ रूप ९७, ९८, ११०, १११, १६४ मल ३९ रूपसंज्ञा १४ सहल्लक ( =बुद्ध ) ३२३ लघु-चिषा १६० महर्षि ३२, १३४, १३५ छोक १०, ३०,३०, ४०,∼४७,६३⊷६३, ७८, महाकटप ३१८ લગ, ગુગુગ, ગુગુગ, ગુગુગ, ગુરુવ, ગુગુગ, महाज्ञानी ४४ १६५, १७१, १८९, ४१९ महाप्रज्ञ ६८, ९०३ छोक-विद् १७३ महायम् ७२ छोभ ४५, ६८, ८५ सहाविष ४३ क्षीकिक २२६ महावीर १७, ५२, ९७, १०३, १७३ शाचन ४४ महाससुद्र २४२ यास्रपेय (यज्ञ) ७२ माणवक ( =बाह्मण तरुण ) ७६, १८९

6443

```
बाल-जोग १०
                                       श्रम्बासन् २ ४
विद्यास २५६
                                       वक्षि १७३
Butter 1 m1
                                       शाहबत ३८१
विचिकित्सा (जीवरण) ४ २५० ३६९
                                       गाविकत बाच ११८ १२ १३
बिजिल्लीपास १८७
                                       सासम 1 ३ ११२ १२० १५६
बिका १ १
                                       शास्ता ( प्रक्र ) २
पिञान ९० (-भायतक) ९६ १ ४ १९३
                                       Biller B4
विशानानन्यावद्यम् २५४
                                       शिक्ष्यसाचा ३०५
निवर्भ ७ ०९, ४९,३ १११६
                                       शील १८ इइ ३७ भ भट ७४ ८९ ११५
    114 140 142 144 100
                                            182 184 162 168
विच श्री
                                        राज्याना १७६ १८५
विदर्शना १५
                                        शीकवात ५४ १ १
विद्या देहे, प्रष्ट १८ ११५
                                       शीकरक्षण ४६
 विजयसम् ३६९
                                       शीवधिक-वार १६८
 विविज्ञान्य ४ %
                                        द्यम १५४
 विपाक 1३ (फल)
                                        ह्मिया १७१
 विसान्त १६६
                                        TER 44, 133
 विसम्बद्ध के दे पर प्रकृति के विकास करते
                                        वीक्ष्य ५ १ व १२६ १८५ ४८६
     169 169
                                        र्शिक ८८ ११५, ११९
 विमिक्ति १ ६ ११६ १५५
                                        शोक ११४
 विमन्द्रिनकम्प ४६ ९३ ३ ६
                                        श्राद्धा ( इतिहम ) २ ४ २२ २६ ३७ ३५,४४
 विशन्द ९७
                                            84. 46 44 1 4 122, 124 148
 वियोध १८
                                            146 167 160 10 167 168
  विजेश २ ( विर्याण ) ७९ १५७
                                        अध्यम (-भाष) ४ ५१, ४७ ५१ ५५-५६,
  विवेदधील १४
                                            1 4 114 114 144 12
  विदिया ३६३
                                            188 188 188 168 164 16 181
  वीगडेच १०४
                                        धारक देश देश पढे १ है 18 184, 14
  र्धानमोड १०४
                                            147 144, 146 149, 108
  बीतराग १ १५० १०४
                                         श्रीवास् ३९३
   नीयें (इन्द्रिय) ४
                                         प्रवृत्तिम् १५०
   वेदमा ।
                                         पहाबतन (अधः भावतव ) १९६
   finnes . .
                                         र्मेकीशना १४१
   GTT 68 66 122
                                        शंग र (वित्तज्ञन पाँच)
   CTYS 35 55
                                         almatan 117
   ररापाद ५ (शीवरण ) 145
                                         STORE 1 T 100 14V 144
   PUTE 53
                                         efer 24 47 46 124 144, 124, 144
   रपादकविम १६७
                                             1 7 142, 147
    ब्युन्साम-पुत्राम ४४४
                                         र्माधारी १ २४४
    स्प्रसम्ब १६
                                         लेवेनमा ३३५
    PRT 9 94 95 11
                                         शीलाय १ व
```

```
मर्पेडा, २९, ३२, ६०३
मजावेदियानीतरीय ४३३
                                             អស់ប្រក ១១៥
सर्वद्योत्त-प्राधीण ५५
संबचार ३३०
                                             सर्वाभिभ ३५६
## THE 125
                                             สามพิต 255
मयस १९५, ६८८
मंमार ४३, ४५, ४५, ४५, ५५, ५०, ५६, ६२, ६४०,
                                             व्यानसम्बद्धारी २२६
                                              दर्श विद्याहर
     149 353, 350, 356
 MEDIT 90, 552, 558, 527, 500, 508,
                                              meiger 55%
                                              सिंग्टाय्या २७, ९२
     103
                                              भगति, ८३, ८४, १६२, १४२
 सहर्या ९०
                                              सप्रतिपन १७४
 கூர்விலே . 33
  मार्टिए ( =भाँगो के सामने गल देने तला ) १०.
                                              खुमापित १५५, १७६, १७७
                                              समेध ३५"
      209, 950
                                              मुस्त ६४. (-भाव) ८६
  मकुदानामी १ -४, १८३
                                              सचिरांस ३०३
  सहस्र ५०%
                                              स्पन्नार ३८३
  क्वित्यतीस ३०२
                                              न्त्रोतापत्ति १०४, १८२
   परकाय ३३८, ३८०
                                              स्रोतापद्ध ५२६, २६०, ४२४
   कालास-दृष्टि ५३
                                               सीजस्य १७७
   सरमञ्जूनारी ४३६
                                              स्वीधानस्य ३४०
   नरपुरूष ०४
                                               स्रोहत्य • ३ ३ ८
   व्यक्त १७१
                                               क्कम्ध ११ (पॉच), १२३, १८६
   भागमार्ग १९१
                                               स्त्यानसृत ४ ( नीवरण )
    #173 W.O
                                               स्थियर ३०९
    क्रम्बर ३८
                                               म्बर्श ९७ (-आयसन), ९८, ११०, १६५, १९३
    मदसे १०७, ११६
                                               म्मृति ( इन्द्रिय ) ४, ( = होश ) १२, ३३, ४७,
    महमानुसारी ४२४
                                                    49. 500. 706
     मस्त १४७, १७८
                                               सम्रतिप्रस्थान १५४
     सप्रायकारी ४३६
                                               म्ब्रुतिसान् १२, १३, २०, २७, २९, ५४-५६, ७६
     नभागह १४६
                                                    <9, 92, 95, 96, 900, 125, 188,</p>
     सक्य १५३
     समाधि ( इन्द्रिय ) ४, १४, ८९, १०२, १०३,
                                                    300, 988, 980, 988, 900
                                                स्वर्श १२, २४, २६, ३०, ३३, ३४, ६१, ४०, ४४
          १८३, (स्कन्ध) ८६, ११६
                                                    930, 988, 184, 169
     समाधिस्य १५०
                                                स्वारयात १७३, १७४
      मधापशि ३४६
                                                स्वाध्याय १६१
      समाहित ५१, ५५, १०९, १३७
                                                क्थिति २६७
      समदय १९६, २३७
                                                विधासम्बद्धाः ५०
      समुद्र ३१
                                                हस्ति-युद्ध ८७
      सम्प्रदास ११२
                                                ह्य्यावदीप १३४, १३७
      ध्यस्थोधि २८७
      सस्यकृ १०, १०२, १७३,१७४,१८५,(पाझ-) ७२.
                                                 ही (= लज्जा) ३२
                                                 हेलु ११३
```

220+16

कामजीता १७

```
क्रियास २५१
                                      बास्य १५६
Bester 9as
                                      साउपसं ३४३
विचिकित्सा (भीवरण ) ४ २१७ ३६९
                                       साक्तरा नाम ३३४ ३२ १ ३
विधित्तरीयास १८४
                                      बासन १ दे ११२ १२० १५६
विकार १ १
                                       भाएता (श्रद्धः) २
विनाम ९० (--भाषतम्) ९९ १ ४ १९२
                                       WITTER BY
विज्ञानाभस्याचतन २५४
                                       विकास सामा ३ ५
विसर्जेष ७ ७९, ४९,३ १२१६
                                       शीख १४ ३३ ३७ भ भ८ ७४ ८९ ११५
    117 140 142 144 100
                                           124, 124 148 148
 किस भड़े
                                       शीकवल १७९ १८५
 विदर्भमा १४
                                       शीकवाय ५५ १ २
 विद्या ३३, ४४ ५८ १३५
                                       शीकस्कम्य ४१
                                       जीवकिय-दार १६८
 क्रितयक्षर १६९
 विविवन्ध ४ ३
                                       धाम ३५८
 विवाद १३ ( ५% )
                                        श्रमण १७३
 विद्यास्त १६२
                                        EF 44 44, 111
 विसम्बद्ध ३५, ४८ ५१ १ ० ११२ १५५
                                        बीक्य भ १ ३, १२६ १४५ २८९
                                       88 44 174 R19
     159 159
 विमुक्ति १ ६ ११६ १ ५
                                        mlx 114
  बिम्सि-स्काय ४६ ६१ १ ३
                                        धावा (प्रतिवय ) २ ४ २२ २६ ३० ३९,४४
  विशन १७
                                           WY. YE ER 1 R 188 186 198
  विशोध १४
                                           946 188 188 18
                                                                  148 143
  विवेक २ (निर्वाण) ७९, ३५७
                                        ध्रमुण (–माम) ४ ५१ ४०
                                                                 41 44.44
  Glasfin su
                                            1 6 11% 116 125 12 126
  feffert 189
                                           100 101 100 150 154 10 101
  बीतप्रेय १०४
                                        आरक्ष दर दक्ष प्रदेश में असे अमेप, अभ
   शीनमाह १०४
                                           144-144 146 145 108
   चीतराम १ ६ ३५० ३०४
                                        भत्रवात् ३९३
   बीर्व (इन्द्रिय) ४
                                        यहमित्र ३५१
   वंदना क
                                        पदायतम ( = छः भाषतम ) १९३
   बजारच ३ ०
                                        सर्वाजना १४३
   ETT 44 44 122
                                        मंग र (विशासन पाँच)
   स्वताम ३६ ६३
                                        श्रीमामित् ११५
   ग्यापाइ ४ (जीवरण ) 141
                                        NUTS 168 168 148 144
    रराज ६३
                                        rfq 24 47 44 174 175 175, 147
    स्वादस्थित १६४
                                            208 262, 268
    श्वामनुराम ४४४
                                         शंबादी २ २८४
    स्परमाम १६
                                        र्शनेत्रता ३३५
    STEE 44 44 4 19
                                         शंका ५० १ व
```

दायनामान ३ ८

```
समावेशीय विशेष ३३२
संप्रक्ष ६६, ३५, ३०, ९३, ९६, ३५९
संप्रमान २३ ७
स्वत् १०६
स्यम १६३, १८६
सीमाह ४३, ४४, ४०, ४६, ४०, ४६, ६२, ६२, ६४०,
     129, 171, 183, 156
मस्तार १ , १९३, ९१४, १०८, १५० १५०,
     193
सम्प्रदर्ग ००
सम्बंदित ५३३
 मार्टिय (=ऑर्यो रे मामने फल देनेवाला ) १०.
     202. 200
 सक्रदागामी १७५, १८३
 77 FE 12 6 14
 लिक्सिक ३०३
 नकाय ३३८, ३८०
 मनकाय-दृष्टि १३
 प्रकारकारी ४४६
  सामुरम ९३
  स्वस्य ६७५
  स्वत्यक्षात्रं ५०%
  स्वरंत ५०
  सम्बद्धाः २८
  सहमें १०७, ११६
  महमाँचुमारी ४०४
  मन्त १३७, १७८
  समायकारी १४३
   लभागृह ३२६
   सम्य १७१
   समाधि (इन्द्रिय) ४, ३४, ८९, ३०२, ३०३,
       १८३, (स्कन्ध) ८६, ११६
   समाधिस्य १७०
   समापत्ति ३३६
   लमाहित ७३, ०५, ३०९, १३७
   समुदय १०६, २३७
   ममूह ३१
   सम्प्रदास ११२
   सम्बोधि २८५
    सम्बर्भ १०, १०२, १७३,१७४,१८५,(पादा-) ७३,
```

```
सर्वेडा, २९, ३२, ३०३
सर्वेदिक ३६०
सर्वद्योग्रन्थरीय ५५
मर्गाभिक्ष ३१६
महत्रासिक २५५
सावनाकची ५५१
माचारी ३०
मार्घवात १५%
सिंहशय्या २७, ५३
मुपति दे , ८३, १००, १८०
सप्रतिपद्म १७३
सुनापित १७१, १७६, १०७
समेध १६७
मुख्त १२, (-भाव) ८६
सुचिलीम ३०३
संपक्तन ३८३
न्योद्यापनि १७२, १८२
कोतायन १२६, २५०, ५३५
मीजन्य १७५
मीग्रहण ३००
मांगरव १३४
म्बन्ध ११ ( वॉच ), १९३, ९७६
स्पानसूद्ध ४ ( नीवरण )
स्थविर ३०९
स्पर्ध ९७ (--आयतन), ९८, १९०, १६४, १९३
स्मृति ( इन्डिय ) ३, ( = होश ) १०, ३०, ४७,
    49. 900, 908
स्मतिप्रस्थान १५४
स्मृतिसान् १३, १३, २५, ३७, २९, ८३⊸५६, ७६
    49, 90, 95, 96, 900, 906, 988.
     १७७, १६४, १६५, १६६, १७५
स्वर्ग १२, २८, २६, ३०, ३३, ३४, ६१, ४०, ८४
    130, 188, 180, 159
स्वारयात १७३, १७४
स्वाध्याय १६९
स्थिति २६७
स्थिरात्म ५०
हस्ति-युद्ध, ८७
ह्यावशेष १३३, १३०
 ही (= लज्जा ) ३०
 हेत् ११३
```